३८

(नवम्बर १९२८–फरवरी १९२९)

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

३८

(नवम्बर १९२८–फरवरी १९२९)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय

भूमिका

इस खण्डमें १ नवम्बर १९२८ से ३ फरवरी १९२९ तककी सामग्री संकलित है। यह वह अवधि है जिसमें तीन सालके अन्तरालके बाद गांधीजीने फिरसे राष्ट्रके राजनीतिक क्षेत्रमें प्रत्यक्ष हाथ बँटाना प्रारम्भ किया था। जब साइमन कमीशन आया और जनताने उसके प्रति अपना विरोध प्रदर्शित किया, तो शासनने उसे कुचल डालनेका प्रयत्न किया। लाहौरमें लाला लाजपतराय और लखनऊमें जवाहरलाल नेहरूपर पुलिसने लाठीसे हमलातक किया। इन काण्डोंसे देशमें राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षाके लिए कोई निश्चित कदम उठानेकी इच्छा जागृत हुई। यद्यपि गांधीजीको अहिंसात्मक आन्दोलनमें जनताको साथ लेकर चलनेकी अपनी शक्तिमें पूरा-पूरा विश्वास नहीं था (पृष्ठ ६) तथापि उन्होंने मोतीलाल नेहरूकी अपीलको मान लिया (पृष्ठ ३०९-१०) और वे कलकत्ता कांग्रेसके दिसम्बर अधिवेशनमें शामिल हुए। वहाँ समझौतेका एक प्रस्ताव तैयार किया गया जिसमें देशकी माँगको स्वीकार करनेके लिए सरकारको एक वर्षका समय दिया गया। इस प्रस्तावको तैयार करनेमें गांधीजीने बहुत मदद की। उसके बाद गांधीजीने एक महीनेतक आश्रममें विश्राम किया और फिर वे सिन्धके दौरेके लिए रवाना हो गये। यहीं यह खण्ड समाप्त होता है। सिन्धका दौरा तीन फरवरी १९२९ को ही शुरू हुआ था और इसी तिथिके 'नवजीवन' में आत्मकथाकी अन्तिम किश्त प्रकाशित हुई।

गांधीजीने लाजपतराय और जवाहरलाल नेहरूको पुलिस द्वारा पीटे जानेपर बधाई दी। उन्होंने कहा कि लोगोंको "देशपर मर मिटनेकी कला" सीखनी है, इसलिए "यदि नेताओंपर हमला किया जाता है अथवा उनपर गोली चलाई जाती है तो यह हमारे लिए बहुत लाभकी चीज होगी।" (पृष्ठ ३१) अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध लोगोंपर किये जानेवाले अत्याचारोंसे उतना लाभ नहीं हो सकता। साथ ही उन्होंने लोगोंसे कहा, "बड़ीसे-बड़ी उत्तेजनाके बावजूद अहिंसाकी अपनी आनपर दृढ़ रहना चाहिए।" यदि ऐसा हुआ तो हमारे प्रदर्शन "अहिंसापूर्ण संघर्षके ऐसे पूर्वाभ्यास माने जा सकते हैं जो हमें अपने अन्तिम संघर्षके लिए तैयार करेंगे।" उन्होंने कहा: "वह शुभ दिन तेजीसे निकट आ रहा है; हम जितना समझते हैं उससे कहीं अधिक तेजीसे।" (पृष्ठ १७१) पुलिस द्वारा किये गये इस हमलेके फलस्वरूप कुछ ही दिनों बाद लाला लाजपतरायकी मृत्यु हो गई और गांधीजीने उनकी मुक्तकण्ठसे कुछ वैसी ही प्रशंसा की, जैसी लोकमान्य तिलककी की थी। (पृष्ठ ८१-८२ और ३०१)

यद्यपि गांधीजी संघर्षको अनिवार्य मानते थे और मानसिक रूपसे उसकी तैयारी भी कर रहे थे, किन्तु उन्हें परिस्थितियाँ कांग्रेसका नेतृत्व सँभालनेके योग्य नहीं लगी थीं। कांग्रेसके प्रभावशाली दलोंके साथ उनका मौलिक और जबरदस्त वैचारिक मत-

भेद था और इसलिए कई बार वे लगभग विवशताका अनुभव करते थे। तत्कालीन परिस्थितियोके विषयमे मोतीलाल नेहरूको लिखते हुए उन्होने कहा. "मुझे धैर्यपूर्वक और निरन्तर काम करते हुए इन कठिनाइयोमें से गुजरकर अपना रास्ता बनाना चाहिए। आखिरकार डा० विधान और सुभाष एक निश्चित विचारधाराका प्रतिनिधित्व करते है . . . आज हमारे सामने देशमे प्रतिक्षण जो नये-नये चित्र बनते-बिगडते रहते है, उन्होने मुझे बडे असमजसमे डाल दिया है। . . . लेकिन मै जानता हूँ कि आप ऐसी परिस्थितियोके उतने ही अभ्यस्त है, जितना अभ्यस्त मै चरखेका हूँ।" (पृष्ठ १११-१२)

विवशताका यह इजहार करनेका तात्कालिक कारण उपस्थित हुआ कलकत्ता अधिवेशनमे होनेवाली प्रदर्शनीको लेकर। स्वागत-समितिके विचारोसे गांधीजीका मतैक्य नही हो पा रहा था। समितिने प्रदर्शनीमें मिलोका बना कपडा और कुछ चुनी हुई मशीने रखनेकी योजना तय की और यह भी कहा गया कि वे प्रान्तीय सरकारोसे प्रदर्शित होनेवाली कुछ चीजें मुहैया करनेकी कोशिश भी कर रही है। यह बात असहयोगके मूलभूत सिद्धान्तोके विरोधमे जाती थी और रचनात्मक कार्यक्रमके केन्द्र-विचार खादीके विरोधमें भी थी। गाधीजीने इस योजनाको अस्वीकार किया, किन्तु स्वागत-समितिके अध्यक्ष डा० विधानचन्द्र रायको यह भी लिखा, "मै नही चाहूँगा कि आप जैसा सम्माननीय सहयोगी मुझे प्रसन्न करनेकी खातिर अपने विचारोका अथवा अपने सिद्धान्तोका त्याग करे। . . . मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मै आपके सिद्धान्तोका उतना ही आदर दूँगा, जितना आपके और अन्य सभी लोगोंके द्वारा अपने सिद्धान्तोको दिये जानेकी अपेक्षा रखता हूँ।" (पृष्ठ ८ और १०)

कलकत्ता काग्रेसके अवसरपर गांधीजीने जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोसकी बातको ध्यानमें रखकर नेहरू रिपोर्टके आधारपर समझौता करते हुए और उसे "राजनीतिक प्रगतिकी दिशामें एक बडा कदम" (पृष्ठ २८६) मानते हुए एक प्रस्ताव तैयार किया और इंग्लैंडकी संसद द्वारा उसे माननेके लिए एक निश्चित अवधि निर्धारित की। असहमत नेताओकी इच्छाको मान देनेके विचारसे यह अवधि ३० दिसम्बर १९३० की बजाय ३१ दिसम्बर १९२९ तय की गई। गांधीजीने इसका कारण बताते हुए कहा : " . . . हमारा निरन्तर विकसित होनेवाला राष्ट्रीय जीवन एक निरन्तर संघर्ष भी है और यह संघर्ष न केवल उस वातावरणके विरुद्ध है जो हमें कुचलना चाहता है, बल्कि हमारे अपने दलोके बीच भी है। . . . यदि हम एकता चाहते है, तो हमे विभिन्न मतोमें से समझौता करके तालमेल बैठाना पडेगा और एक नही, ऐसे अनेक निर्णय लेने होगे जो दोनो पक्षोके लिए सम्मानजनक हो।" (पृष्ठ ३०३-३०५) अपना विचार व्यक्त करते हुए उन्होने कहा : "हमारे बीच कुछ ऐसे लोग है जो कही भी रुकनेको तैयार नही है और जो उतावले होकर सर्व-नाश तकको गले लगानेको तैयार है। . देशके उन चुनिन्दा वीरोसे जिन्हे उसकी आजादी अगर ज्यादा नही तो उतनी प्यारी जरूर है जितनी मुझे, मै क्या कहूँ?" (पृष्ठ ३०५)

उनका खुदका विचार तो यह था कि सत्याग्रह आन्दोलनको चलानेके लिए दो वर्षकी तैयारी भी कम है। किन्तु उन्होने मानो स्वगत भाषण करते हुए कहा: "यदि इन सब अधीर नौजवानोकी यही इच्छा है कि मै सालके आखिरतक कुछ न कर सकनेकी बदनामीका भागी बनूँ, तो इससे क्या फर्क पड़ता है। मै इसका भागी बनूँगा।" (पृष्ठ ३१३) इस आत्मीय और मानवीय दृष्टिकोणके द्वारा गाधीजीने बड़े-बडे मतभेदो और विरोधी मानसिक स्थितियोके बावजूद कांग्रेसके पक्षोको एक संगठित दलके रूपमे ढाला।

वे देशके सभी दलोके साथ सम्मानजनक शर्तोपर समझौतेके लिए तैयार थे, इतना ही नही, यदि असहयोगके सिद्धान्तको सँभालकर वाइसरायसे मिलना आवश्यक लगे, तो वे उसे भी त्याज्य नही समझते थे। भारतीय दलो और अग्रेज शासनके प्रति वे एक ही ढंगसे सोचते थे और दोनोके प्रति उनकी भाषा भी एक-सी ही होती थी: "मेरा असहयोग बदीके साथ है, नेकीके साथ नही। मेरा असहयोग व्यक्तियोसे नही है, मेरा असहयोग तो शासन-पद्धतिसे है।... यदि वाइसराय आज मुझे बराबरीके आधारपर ऐसे मामलोमे विचार-विमर्शके लिए बुलाये जो देशके लिए महत्त्वपूर्ण है, तो मै नंगे पैर वहाँ चला जाऊँगा और फिर भी अपने असहयोगकी रक्षा करूँगा।" यह तो खुद काग्रेसका काम है कि वह अपनी आन्तरिक शक्तिको समृद्ध करे और इंग्लैंडकी लोकसभामें भीख माँगनेवालोकी हैसियतसे नही, अनुबन्ध करनेवाले "एक शक्तिशाली दलके रूपमें" जाये। (पृष्ठ ३०८)

चूंकि गाधीजीने कलकत्ता कांग्रेसके अवसरपर ब्रिटिश सरकारको अन्तिम चेतावनी देनेवाले प्रस्तावमें हाथ बँटाया और असहयोग आन्दोलनका कार्यक्रम निर्धारित किया, उन्हे आवश्यक लगा कि वे अपनी पूर्व निश्चित यूरोप यात्राका विचार छोड़ दें। उन्होने अपने इस निर्णयके लिए यूरोपीय मित्रोसे क्षमा माँगी, क्योकि वे बहुत दिनोसे गाधीजीकी यात्राकी प्रतीक्षा कर रहे थे। गांधीजीने कहा: "मुझे लगता है कि अगर मै ऐसे समय विलायत चला जाऊँ, तो वह मैदान छोड़कर भागने-जैसा होगा।" (पृष्ठ ४४७) उन्होने कहा कि पहले मै सोचता था कि मै केवल वचनसे पश्चिमके सामने सच्ची अहिंसाका रूप स्पष्ट कर पाऊँगा। किन्तु "जैसे-जैसे मै इस विषयमें अधिक गहरा विचार करता हूँ, वैसे-वैसे मैं अपने-आपको इस कामके लिए अधिक असमर्थ पाता हूँ। अहिंसाके विश्वव्यापी प्रचारके लिए समुचित निमित्त बननेके लिए अभी बहुत ज्यादा तैयारी और बहुत अधिक आत्मशुद्धिकी आवश्यकता है। (पृष्ठ ४४८)

भारतमे भी गांधीजीके अहिंसाके सन्देशको लोग भली-भाँति नही समझ पाये थे। बीच-बीचमें राजनीतिक हत्याएँ होती रहती थी और लगता था कि लोग मन-ही-मन ऐसे कामोंका समर्थन भी करते है। लाहौरके सहायक पुलिस निरीक्षक श्री साडर्सकी हत्याके बाद गांधीजीने लोगोसे कहा कि हमे, "बहादुरी, देशभक्ति, धार्मिकता तथा ऐसे ही अन्य शब्दोको" नये ढंगसे परखना चाहिए। (पृष्ठ २९४) उन्होने कहा कि मनुष्य-जातिके धर्म और सच्ची सभ्यताका विकास खून और मिलते-जुलते दूसरे

दुष्कृत्योसे नही होता। (पृष्ठ २९४) स्वतन्त्रता-देवीके मन्दिरके लिए लाखो नर-नारियो, युवा और वृद्धोके धैर्य और बुद्धियुक्त रचनात्मक कामोकी जरूरत है। उन्होने कहा कि हिंसक कामोसे शान्तिपूर्ण रचनात्मक कामोकी प्रगतिको हानि पहुँचती है। (पृष्ठ २९४)

उन दिनो वातावरणमे एक नई स्फूर्तिका सचार हो रहा था। जनवरी १९२९ में गुजरात कालेज, अहमदावादके विद्यार्थियोने साइमन कमीशनका वहिष्कार किया और एक दिनकी हडताल की। कालेजके प्राचार्यने सभी विद्यार्थियोपर जुर्माना जड दिया। विद्यार्थियोने इसके विरोधमें भी हडताल की और यद्यपि मामला बिलकुल ही स्थानीय था, इसका देश-व्यापी असर हुआ। गाधीजीने इसके महत्त्वको समझा और विद्यार्थियोसे कहा "यदि मै कहूँ कि आप आज एक नये युगका प्रादुर्भाव कर रहे है, तो इसमे कोई अतिशयोक्ति नही होगी।" (पृष्ठ ४४३)

इस खण्डमे मौलाना शौकत अलीके नाम गाधीजीका दुखसे भरा हुआ, वह लम्बा और ऐतिहासिक महत्वका पत्र भी है जो इन दोनो नेताओंके अन्तिम रूपसे अलग-अलग हो जानेको सूचित करता है। मौलानाके कानपुरमे दिये गये भाषणका उल्लेख करते हुए गांधीजीने कहा कि उस भाषणमे उन्होंने हिन्दुओकी भावनाओको चोट पहुँचाई है और इसलिए उन्हे हिन्दुओसे क्षमा माँगनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा: "हिन्दुओके अनेक कुकर्मोके लिए मै भी उन्हे उसी तरह दोषी माननेको तैयार हूँ, जिस तरह आप मानते है। लेकिन मै आपकी इस बातसे सहमत नही हो सकता कि हर मामलेमें हिन्दू ही हमला करते आये है, उन्हीने अत्याचार किया है और उनके मुसलमान भाई केवल सहते ही चले आये है, भोगते ही रहे है। . . . आपके कानपुरके भाषणमे आप जरूरतसे ज्यादा कट्टर और दुराग्रही दिखाई दे रहे है। आपका यह मानना कि आपसे कोई गलती हो ही नही सकती, आपको शोभा नही देता।" (पृष्ठ १३७) गाधीजी स्वयं इस पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करनेके लिए उत्सुक नही थे, लेकिन उन्होने कहा· "अगर आप यह समझते हो कि आपके लिए अब घोर शत्रुताके अलावा और कोई रास्ता ही नही रह गया है, तो बखूबी आप इस पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करवा डालिए।" (पृष्ठ १३९) अपनी हदतक उन्होने दावा किया, "मेरी मित्रता एक-तरफा है और इसलिए आपके साथ और दूसरे मुसलमानोके साथ मेरी दोस्तीकी भावना कभी खण्डित नही हो सकती। वे भले ही मुझे लाख बार ठुकरायें, मै तो उनका बना रहूँगा।" (पृष्ठ १३९) कुछ दिनोंके बाद हिन्दू महासभाके प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता डा० मुंजेको गाधीजीने जो पत्र लिखा, उससे भी यह स्पष्ट होता है कि मौलानाने गांधीजीपर सार्वजनिक रूपसे जो दोष लगाये थे, उनके कारण गाधीजीके मनमें मुसलमानोकी ओर कोई कटुता उत्पन्न नही हुई थी। उन्होने लिखा. "यदि अफगानिस्तानके दृष्टान्तको स्वीकार कर ले, तो फिर आप इस बातकी आशा क्यो करते है कि हिन्दुस्तानके मुसलमान हिन्दू बनकर ही रहे? . . हिन्दुस्तानकी सेवाके लिए मुसलमानो, यहूदियो, ईसाइयो सभीको, हिन्दुओको भी हिन्दुस्तानी बनना चाहिए।" (पृष्ठ २४५-४६) भारतीय ईसाइयोको भी गाधीजीने इसी प्रकारके उदार राष्ट्रवादके लिए समझाया। (पृष्ठ ३४५)

इस अवधिमे गाधीजीके मनमें आश्रमकी बातोंको लेकर भी बड़ी उथल-पुथल होती रही। उन्होने "नम्रता और सत्यकी खातिर" आश्रमका नाम सत्याग्रह आश्रम-की बजाय उद्योग मन्दिर कर दिया और लोगोको भ्रम हुआ कि शायद सत्य और ब्रह्मचर्यका आदर्श छोड़ दिया गया है। गाधीजीने इस भ्रमका निराकरण करते हुए कहा: "आश्रमका नाम सत्याग्रह आश्रम सोच-समझकर रखा गया था और उसके निहितार्थोको पूरी तरह निभानेका उद्देश्य था। लेकिन जब धीरे-धीरे नामका वास्तविक अर्थ स्पष्ट हुआ, तो लगा कि हम इस नामके लायक नही है।" (पृष्ठ ३५) आश्रमकी बहनोके नाम एक सन्देशमे उन्होने कहा: "जैसी हो, वैसी दिखना। जो करना हो, सो खुले तौर पर करना।" (पृष्ठ २०६) गांधीजीने कहा कि सार्व-जनिक रसोई-घर एक तरहकी पाठशाला है जहाँ "अनाज शास्त्रीय ढंगसे रखा जाना चाहिए, पकाया जाना चाहिए और शास्त्रीय रीतिसे खाया जाना चाहिए।" क्योकि शरीर "ईश्वरका मन्दिर है" और उसे साफ रखा जाना चाहिये और उचित रूपसे पुष्ट रखा जाना चाहिए। (पृष्ठ २५१) उन्होने कहा कि अगर आश्रमके लोग आत्म-शुद्धिका निरन्तर प्रयत्न करते रहे, तो वे "अपनी, अपने देशकी और समस्त ससारकी सेवा करेगे।" (पृष्ठ १३६)

आश्रमके सचिव छगनलाल जोशीको गांधीजीने जो अनेक पत्र लिखे, उनसे स्पष्ट होता है कि समय-समयपर आश्रममे उत्पन्न होनेवाली समस्याओको जो प्रायः नाजुक और व्यक्तिगत होती थी, गाधीजी किस तरह सुलझाते थे। उनसे यह भी जाहिर होता है कि गाधीजी अपने सहयोगियोको किस प्रकार प्रशिक्षण देते रहते थे। स्व० मगनलाल गांधीकी विधवा पत्नी और कन्याओकी समस्या ऐसी ही एक समस्या थी। अनिच्छा रहते हुए भी गाधीजीको आश्रमके कुछ नियमोंके पालनके सम्बन्धमें कुछ ढील देनी पडी। आश्रमके निवासियो द्वारा बीच-बीचमे नियमोंकी अवज्ञा और कर्त्तव्य-पालनमें त्रुटियाँ उभरती दिखाई देती थी। ऐसे अवसरोपर गाधीजीको अपनी शक्तिके विषयमें शंका हो जाती थी। उन्होने छगनलाल जोशीको लिखा: "कह सकते हैं, मेरी मनुष्यों-को पहचाननेकी कला तो भूलके बराबर सिद्ध हुई हैं। . . . ये बादल मुझे व्याकुल कर देते है। अभी और भी घने बादल घिरेगे।" (पृष्ठ २५७) तथापि बड़ीसे-बडी कठिनाइयोके बीच भी उन्हे भीतरी सहारा अवश्य मिल जाता था। उन्होने लिखा: "ज्यो-ज्यो अन्तरात्माकी आवाज सुनते जाओगे, त्यो-त्यो तुम्हारे निर्णय शुद्ध होगे, तुम शुद्ध बनोगे, निर्भय बनोगे, शान्ति मिलेगी और शरीर भी स्वस्थ होगा।" (पृष्ठ २०९)

गांधीजी काम लेनेमे कठोर थे। वे महादेवभाईकी गलतियोकी ओर इशारा करनेमे भी कभी नही चूकते थे। (पृष्ठ १६६ और १९९) उन्होने अनेक अपरिचितोको उनकी व्यक्तिगत समस्याओको समझने-सुलझानेमें मदद दी। (पृष्ठ १९४-९५, ४०४ और ४४१) उन्होने प्रभावती नारायणकी ओरसे श्वसुरके नाम पत्रका मसविदा तक तैयार किया। गाधीजी लोगोको सलाह-मशविरा तो देते थे, किन्तु उन्हे अन्ध-श्रद्धाके विरोधमें जागृत रखते थे और हमेशा इस बातपर जोर देते थे कि जो बात तर्कसंगत लगे, वही मानी

जाये। "मैं जिन सिद्धान्तोका निरूपण करता हूँ, उनमें तुम्हे श्रद्धा भले ही हो, किन्तु कुछ विशेष तथ्योके आधारपर किये गये मेरे अनुमानोपर तो श्रद्धा नही हो सकती। जो केवल तर्क-ग्राह्य है, उसमे श्रद्धाको स्थान नही है। इसलिए तथ्योके विषयमे जहाँ मेरी भूल दिखाई दे और उसके कारण यदि मुझसे वहाँ त्रुटि होती हो, तो सुधार अवश्य सूचित करना।" (पृष्ठ २२९)

धर्मके नामपर होनेवाले अमानवीय कृत्योकी ओर उनकी आत्मा किस प्रकार व्याकुल हो उठती थी, यह कलकत्ताके काली-मन्दिरमे होनेवाले पशुओके बलिदानके विषयमें लिखे गये एक पत्रसे प्रकट होता है। किन्तु वे मानते थे कि इस प्रकारकी क्रूर प्रथाएँ भी हृदय-परिवर्तनसे ही समाप्त की जानी चाहिए। उन्होने लिखा: "जब-तक मैं उनके हृदय नही जीत लेता, तबतक अपने अपूर्ण अस्तित्वके अभिशापको मुझे अपने कन्धोपर सलीबकी तरह ढोना ही पडेगा।" (पृष्ठ २५९) इसके पहले कलकत्ता प्रवासके अवसरपर भी उन्होने ऐसी वितृष्णा और विवशता व्यक्त की थी। ('आत्मकथा' भाग ३, अध्याय १८)

प्रार्थनाको गाधीजी जीवनमे और इसलिए आश्रम-जीवनमे भी बहुत बड़ा स्थान देते थे। आश्रमके निवासी जब कभी उस ओरसे उदासीनता व्यक्त करते, तो गाधीजी उन्हे समझाते: "शरीरको जिस प्रकार खुराककी जरूरत है और उसे उसकी भूख है, उसी प्रकार आत्माको प्रार्थनाकी जरूरत है और उसकी भूख है। प्रार्थना ईश्वरके साथ अपनेको जोड़नेका माध्यम है।" (पृष्ठ २०८) जब एक पत्र-लेखकने प्रश्न किया कि कायरता और मनोविकारोको जीतकर शाश्वत द्वन्द्वसे किस तरह उद्धार पाया जा सकता है तो गाधीजीने लिखा कि एक बार यदि हम यह निश्चय कर ले कि हमें दैवी शक्तियोके पक्षमे अपनी शक्तिका उपयोग करना है, या आसुरी शक्तियोके पक्षमें, तो फिर मनुष्य देखेगा कि प्रार्थना विकासका बडा ही शक्तिशाली साधन है। वह देखेगा कि मनुष्य अपने और ईश्वरके बीचमे पवित्र तादात्म्य स्थापित करके अपने-आपको आसुरी शक्तियोकी जकडसे सर्वथा मुक्त कर ले सकता है। "हमें अपने अन्दर मौजूद विकारोके दशाननको रामकी सहायतासे पराजित करना है।" (पृष्ठ २६८) गाधीजीने रामकी सहायता पानेका उपाय बताते हुए आश्रम-वासियोको लिखा: "यदि आप रोज सुबह आँख खुलते ही ईश्वरका स्मरण करे और दिनमें उपस्थित सघर्षोंमें उसकी सहायताके लिए प्रार्थना करे और सोनेसे पहले दिन-भरकी त्रुटियों और चूकोका लेखा-जोखा कर ले और उसको ईश्वरके समक्ष स्वीकार करके सच्चे हृदयसे प्रायश्चित्त करे, तो इस प्रकार आप अपने चारो ओर जैसे रक्षाकी एक सुदृढ दीवार खड़ी कर लेगे और फिर आपके लिए प्रलोभनोका आकर्षण धीरे-धीरे घटता चला जायेगा। अपनी चूकके लिए प्रायश्चित्त करनेका सबसे सही तरीका यही है कि उसे दुबारा कभी न होने दिया जाये।" (पृष्ठ २७२)

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम साबरमती आश्रम, संरक्षक तथा स्मारक न्यास (साबरमती आश्रम प्रिजर्वेशन ऐंड मैमोरियल ट्रस्ट) और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट तथा गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद; गांधी स्मारक निधि और संग्रहालय, नेशनल आर्काइव्ज ऑफ इंडिया और नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय नई दिल्ली तथा श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, बम्बई; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता; श्री जयरामदास दौलतराम, नई दिल्ली; श्री रामनारायण पाठक, भावनगर; श्री लक्ष्मीनारायण पण्ड्या, बम्बई; श्री वालजी देसाई, पूना; श्री शान्तिकुमार मोरारजी, बम्बई; श्री हरिभाऊ उपाध्याय, अजमेर; श्रीमती गंगाबहन वैद्य, बोचासन; श्रीमती तहमीना खम्भाता, बम्बई; श्रीमती मीराबहन, गाडेन, आस्ट्रिया; श्रीमती राधाबहन चौधरी कलकत्ता; श्रीमती वसुमती पण्डित, सूरत; और 'ए बंच आफ ओल्ड लैटर्स', 'बापुना पत्रो: आश्रमनी बहेनोने'; 'बापुना पत्रो: गं० स्व० गंगाबहनने'; 'बापुना पत्रो: श्री छगनलाल जोशीने'; 'बापुना पत्रो: श्री नारणदास गांधीने'; 'बापुनी प्रसादी'; 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके ४३ वें अधिवेशनकी रिपोर्ट' पुस्तकोंके प्रकाशकों और निम्नलिखित समाचारपत्रों और पत्रिकाओंके आभारी हैं: 'अमृत बाजार पत्रिका', 'आज', 'इंग्लिशमैन', 'ट्रिब्यून', 'नवजीवन', 'प्रजाबन्धु', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'फॉरवर्ड', 'यंग इंडिया', 'साबरमती', 'हिन्दुस्तान टाइम्स', और 'हिन्दू'।

अनुसन्धान और सन्दर्भकी सुविधाओंके लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके पुस्तकालय, इंडियन काउंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स पुस्तकालय, सूचना और प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान तथा सन्दर्भ विभाग, नई दिल्ली और श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र हैं। कागज-पत्रोंकी फोटो-नकल तैयार करनेमें सहायता देनेके लिए हम सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्लीके फोटो-विभागके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमे गाधीजीके स्वाक्षरोमे मिली है उसे अविकल रूपमें दिया गया है, किन्तु दूसरो द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जोकी स्पष्ट भूले सुधार दी गई है।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय भाषाको यथासम्भव मूलके निकट रखनेका पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही उसे सुपाठ्य बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमे प्राप्त हो सके है, हमने उनका उपयोग मूलसे मिलाने और सशोधन करनेके बाद किया है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखनेकी नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारणके बारेमें सशय था उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गाधीजीने अपने गुजराती लेखोमे लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमे दिये गये अंश सम्पादकीय है। गांधीजीने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। भाषणोकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजीके कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोडे गहरी स्याहीमें छापे गये है। भाषणो और भेंटकी रिपोर्टोंके उन अंशोमें जो गाधीजीके नही है, कही-कही कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दायें कोनेमे ऊपर दी गई है। जहाँ वह उपलब्ध नही है वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमे दी गई है और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोमे केवल मास या वर्षका उल्लेख है उन्हे आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गांधीजीकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है, अथवा जहाँ किसी निश्चित आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ है, वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोमें 'एस० एन०' सकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गांधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्लीमे उपलब्ध कागज-पत्रोका और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गाधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गाधी) द्वारा संगृहीत पत्रोका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमि देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये है। अन्तमे साधन-सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

१. शोकांजलि

श्रीयुत एस० आर० दासकी[1] मृत्युपर मैं श्रीमती एस० आर० दास और उनके परिवारके साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ। यद्यपि राजनीतिक क्षेत्रमे मेरे और उनके विचार नही मिलते थे, तथापि मैं उनकी अपूर्व उदारता और निश्छलता-की प्रशसा किये बिना नही रह सकता। यह बात बहुत कम लोगोको मालूम है कि किसी सदुद्देश्यको लेकर आनेवाले किसी भी व्यक्तिको अपने दरवाजेसे खाली हाथ न लौटने देनेके लिए इस महान् व्यक्तिने अपने-आपको कगाल बना लिया था।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १-११-१९२८

२. टिप्पणियाँ

'स्वतन्त्र लोगोके लिए स्वतन्त्रता'[2]

आज जब कि हम धर्मके नामपर एक-दूसरेका गला काट रहे है और हममे से कुछ लोग स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी झूठी उम्मीदमे सवैधानिक आयोगकी[3] ओर दौड रहे है, एक मित्रने मुझे जेम्स एलनका निम्नलिखित अश भेजा है, जो हमे याद दिलाता है कि तथाकथित स्वतन्त्रताके देशमे भी अभी सच्ची स्वतन्त्रता नही आई है:

> आज बाहर जितना भी उत्पीड़न दिखाई देता है वह सब अन्तरके वास्त-विक उत्पीड़नका ही परिणाम और उसका छायामात्र है। युगोसे उत्पीड़ित जन स्वतन्त्रताकी माँग करते आ रहे हैं, लेकिन मानव-निर्मित हजारों विधान भी उन्हें यह स्वतन्त्रता नहीं दिला पाये है। अपनेको स्वतन्त्रता तो वे स्वयं ही दे सकते हैं; वे उसे अपने हृदयोंपर अंकित ईश्वरीय विधानोका पालन करके ही प्राप्त कर सकेंगे। वे यदि इस आन्तरिक स्वतन्त्रताको प्राप्त कर लें तो उत्पीड़न-की कालिमा पृथ्वीपर से स्वयं धुल जायेगी। यदि लोग अपने अन्तरको उत्पीड़ित करना बन्द कर दें तो वे अपने भाइयोका उत्पीड़न भी नही करेंगे। लोग बाह्य स्वतन्त्रताके लिए तो कानून बनाते हैं, लेकिन आन्तरिक दासताका पोषण करके फिर स्वयं ही उस स्वतन्त्रताको प्राप्त करना असम्भव बनाते रहते हैं।

१. वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्के सदस्य।

२. इसका गुजराती रूपान्तर *नवजीवन*के ४-११-१९२८ के अंकमें प्रकाशित हुआ था, जिससे इसका मिलान कर लिया गया है।

३. साइमन कमीशन।

इस प्रकार वे बाहरी छायाके पीछे भागते हैं, लेकिन आन्तरिक सारकी उपेक्षा कर देते हैं। जब मनुष्य वासना, भ्रान्ति और अज्ञान की क्रीत दासताके स्वेच्छासे स्वीकार किये गये बन्धन तोड़ देगा, तब हर तरहके बाहरी बन्धन अपने-आप टूट जायेंगे और सारा उत्पीड़न स्वयं समाप्त हो जायेगा।

इसलिए हम एक क्षण-विशेषमे जितनी बाह्य स्वतन्त्रता प्राप्त करेंगे वह ठीक उस क्षणतक प्राप्त की गई हमारी आन्तरिक स्वतन्त्रताके बराबर ही होगी। और यदि स्वतन्त्रताका यह दृष्टिकोण सही हो, तो हमें अपनी असली शक्ति अपना आन्तरिक सुधार करनेमे ही लगानी चाहिए। इच्छा रखनेवाले सभी लोग इस अत्यावश्यक कार्यमे समान रूपसे भाग ले सकते हैं। इस महान प्रयत्नमे भाग लेनेके लिए हमे न वकील होनेकी जरूरत है और न विधायक बननेकी। जब यह सुधार राष्ट्रीय पैमानेपर सम्पन्न हो जायेगा, तब कोई भी बाहरी ताकत हमारी प्रगति नही रोक सकेगी।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १-११-१९२८

३. दस वर्षोमें ?

इस पत्रके पिछले अकोमे प्रकाशित प्रोफेसर सी० एन० वकीलके शिक्षाप्रद लेख[१] भारतकी गरीबीके सम्बन्धमे हालमे प्रकाशित उनकी लेख-मालाके[२] पूरक हैं और इन्हे उस मालाके साथ रखकर पढना चाहिए। उन्होने उसी मालासे सम्बन्धित एक लेख और भेजा था, जिसमे गरीबी दूर करनेके उपाय सुझाये थे। लेकिन मैंने उस लेखको रोक लेनेकी धृष्टताकी, क्योंकि उसमे उपायोका स्पष्ट और निश्चित निरूपण नही किया गया था। फिर उन्हे इसे अधिक ठोस उपाय सुझाते हुए नये सिरेसे लिखनेको राजी किया, और उन्होने उपर्युक्त चार लेखोमे उन उपायोका विस्तारपूर्वक निरूपण किया है। मैं नही समझता कि विद्वान प्रोफेसरने जो कार्यक्रम तैयार किया है, उसे दस वर्षमे पूरा किया जा सकता है। स्थितिको सुधारनेके लिए ऐसा कोई भी कार्यक्रम सुझा पाना शायद असम्भव है, जिसे दस वर्षके अन्दर इस पूरे देशमे, जो इतना विशाल और इतना निर्धन है, लागू किया जा सकता हो।

फिर भी, हम प्रोफेसर वकील द्वारा सुझाये भारतकी इस मुख्य बीमारीके इलाजो पर जरा नजर डाल कर देखे। उनका यह कहना बिलकुल सही है कि असली समस्या

१. २७ सितम्बर और ४, ११ व १८ अक्तूबर, १९२८के अंकोंमें।

२. १२, १९, २६ जुलाई, २ और ९ अगस्त, १९२८के यंग इंडियामें, देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ४७ और २४८-४९ भी।

यह है कि उत्पादनमे वृद्धि कैसे की जाये और उसका लोगोमे न्यायोचित वितरण कैसे हो। मै मानता हूँ यहाँ लोगोसे उनका तात्पर्य करोडो क्षुधार्त्त जनोसे है। इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके लिए विद्वान लेखकके निम्न सुझाव है :

१. जमीनके छोटे-छोटे अलाभकर टुकडोको नये सिरेसे बडे-बडे चकोमे मिला दिया जाये।

२. रैयतके कर्ज, सम्पत्ति-बन्धक तथा सहकारी बैंकोकी व्यवस्था करके चुका दिये जाये।

३. राजस्व-विषयक कानूनमे सुधार किये जाये और भूमि-करको आय-करसे मिलता-जुलता स्वरूप दिया जाये जिससे भूमिसे होनेवाली एक न्यूनतम आयपर कोई कर न लगे।

४. अलाभकर टुकडोकी चकबन्दीसे जो कृषक विस्थापित हो जाये, उन्हे परती जमीनको — जो कुल क्षेत्रका २३ प्रतिशत है — कृषिके लायक बना कर और बडे-बडे उद्योगोका राष्ट्रीयकरण करके और इस प्रकार उनका विकास करके फिरसे रोजगार दिया जाये।

५. छोटी-बडी पूँजी एकत्र करनेके लिए देशकी बैंक व्यवस्थाको, आज वह हमारी आवश्यकताओके जितनी अनुकूल है, उससे अधिक अनुकूल रूप दिया जाये।

६ श्रमकी परिस्थितियोमे सुधार करके मालिको और मजदूरोके झगडोकी सम्भावना दूर की जाये।

७ बाल-विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियोको, जिनसे जनसख्यामे अवाछनीय वृद्धि होती है और कमजोर सन्तान उत्पन्न होती है, दूर किया जाये।

८ शिक्षा-पद्धतिमे आमूल परिवर्तन किया जाये, जिससे जन-साधारणमे शिक्षाका प्रसार हो सके और वह जनताकी आवश्यकताओकी पूर्ति करनेमे समर्थ बने।

९ सेनापर होनेवाले व्ययमे कटौती की जाये और सरकारी सेवाओमे अपने देशके लोगोकी भरती करके, यहाँसे जो धन विदेशोमे चला जा रहा है, उसे रोका जाये।

यह कार्यक्रम तो बडा आकर्षक है। लेकिन जब मै इन लेखोको दोबारा पढ रहा था तो मेरे मनमे यह सवाल बार-बार आता रहा कि आखिर बिल्लीके गलेमे घटी कौन बाँधेगा? उनका एक भी सुझाव ऐसा नही है जिसे सरकारी सहायताके बिना लागू किया जा सकता हो। और जो सरकार जान-मान अपनी प्रजाके शोषण-पर ही आधारित है वह कभी भी इन प्रस्तावित परिवर्तनोको उस तत्परतासे जो जल्दी कोई नतीजा दिखा सकनेके लिए आवश्यक है — लागू नही करना चाहेगी और चाहेगी भी तो कर नही सकेगी। वह करोडो रुपयेके खर्चसे सध सकनेवाली विशाल सिंचाई योजनाओको तो हाथमे ले सकती है लेकिन कुछ लाख रुपयेके खर्चसे सध सकनेवाला कुओकी खुदाईका काम हाथमे नही लेगी। इसलिए प्रोफेसर वकील सबसे पहले जो चीज चाहते है वह है जल्दी स्वराज्य दिला सकनेवाला कार्यक्रम, और स्वराज्य पानेमे मुख्य भूमिका अदा करनेके बाद फिर उन्हे इस देशकी गरीबीको निकाल बाहर करनेके लिए खोले गये विभागका मुख्य अधिकारी नियुक्त किया जा सकता है।

लेकिन यह एक साहसिक उपाय है और पण्डित मोतीलाल नेहरू और उनके साथ इस रिपोर्टपर जिन अन्य लोगोने हस्ताक्षर किये है वे ही उस उपायको आजमाने लायक व्यक्ति है। हमारे लेखकका काम केवल यह था कि जो भी सरकार देशकी इस सबसे विकट समस्याको सुलझाना चाहे उसके लिए एक योजना प्रस्तुत कर दे।

लेकिन मैंने यह आशा की थी — विशेषकर इसलिए कि वे ये लेख 'यग इडिया' के लिए लिख रहे थे — कि वे उस एक सर्वोत्तम उपायपर जरूर विचार करेगे, जिसकी वकालत इन पृष्ठोमे बराबर की जाती रही है और जिसे जहाँतक आजमाया गया है, वहाँतक कुछ कम सफलता नही मिली है। यह सच है कि प्रोफेसर साहबने उस नन्हेसे चक्र — चरखे — को अपने सुझावोके विशाल वृत्तके अन्दर एक छोटा-सा स्थान, जिसकी ओर सहज ही ध्यान नही जा सकता, तो दे दिया है। लेकिन मै इसके लिए एक विशाल वृत्तमें छोटे-से बिन्दुके जैसा स्थान दिये जानेका नही बल्कि उस केन्द्रीय स्थानका दावा करता हूँ जहाँसे असख्य दूसरी चीजे शाखाओकी तरह फूटकर निकल सकती है और इनमे कई वे चीजे भी शामिल है जो विद्वान लेखकने सुझाई है। लेकिन तथ्य यह है कि जहाँ धैर्य और मनोयोगपूर्वक तथा बहुत ही प्रीतिकर ढगसे लिखे अपने लेखो द्वारा भारतकी गहरी और दिन-दिन अधिकाधिक गहरी होती जा रही गरीबीको सिद्ध कर पाना उनके लिए सम्भव था, वहाँ इस बीमारीकी जडका पता लगाना और उनके सुझाये ,इलाजको बरदाश्त कर सकनेकी रोगीकी क्षमता समझ पाना उनके लिए असम्भव था। यह सम्भव तो तभी होता जब उन्होने अपने दिमागको खुला और वास्तविकताओको ग्रहण करनेके लिए तैयार रख कर निकटसे कुछ गाँवोका अध्ययन किया होता, मगर उन्होने वैसा नही किया। ग्रेग[1] जैसे व्यक्तिको पूरे साल-भर अध्ययन करना पडा और ग्रामीण लोगोंके बीच रहना पडा। तब कही वे इस देशकी गरीबीका सही इलाज जान पाये और तभी उन्होने उस इलाजकी क्षमता एक ऐसे नये दृष्टिकोणसे सिद्ध की जो अन्यत्र दुर्लभ है। समझनेकी असली चीज यह है कि यहाँ पहलेसे ही करोडो मेहनतकश लोगोको भयकर बेरोजगारी, विवशताकी बेरोजगारीका सामना करना पड रहा है, क्योकि उन्हे वर्षके कमसे-कम चार महीने कोई काम नही मिलता। इस तथ्यको हृदयगम कर लेनेके बाद स्वभावतः यह निष्कर्ष निकालना पडेगा कि इन करोडो लोगोको क्षण-भरकी भी देर किये बिना कोई धन्धा सुलभ करानेका प्रयत्न करना चाहिए ताकि इनके बरबाद होते समयका सदुपयोग हो सके। जो दूसरी बात समझनी है वह यह कि यदि इस देशके लोगोकी औसत दैनिक आय सात पैसा अर्थात मुद्रा-विनिमयकी वर्तमान दरके अनुसार इग्लैंड की दो पेनीसे भी कम है तो इसे देखते हुए उन करोडो मेहनतकश लोगोकी औसत आमदनी स्पष्टत. इससे भी कही कम होगी। जो कोई भी उनकी आयमे प्रतिदिन दो पैसेकी वृद्धि करेगा और सो भी बिना कोई बडी पूँजी लगाये, वह वास्तवमे उनकी आयमे राजसी वृद्धि करेगा और इन करोडो लोगोंके निराश हृदयोमे फिरसे आशाका

१. रिचर्ड बी० ग्रेग।

संचार करेगा सो अलग। इस कार्यक्रमके पक्षमे एक और बात यह है कि यह पहले से ही बिना किसी सरकारी सहायताके चलाया जा रहा है। लेकिन इसे जितना प्रोत्साहन मिल रहा है, उससे बहुत अधिक प्रोत्साहन देनेकी जरूरत है और इसमे विस्तारकी असीम सम्भावनाएँ हैं। 'यग इडिया' के इस अकमे अन्यत्र प्यारेलालने[1] यह दिखाया है कि अपनी क्रान्तिके दिनोमे अमेरिकाने चरखेके बलपर कितना-कुछ कर दिखाया था। मै भारतके अर्थशास्त्रियोको इस आन्दोलनको खुद ही मौकेपर आकर देखने-परखनेके लिए आमन्त्रित करता हूँ। अपने अध्ययनके लिए वे लगभग दो हजार गाँवोमे से जिन्हे भी चाहे, चुन ले। फिर अगर वे इस आन्दोलनकी भर्त्सना कर सके तो अवश्य करे या फिर नीतिसत्ताके विचारसे या सरक्षककी हैसियतसे अपनी योजना-मे इसे स्थान देनेमे कजूसी न करे बल्कि एक ऐसा केन्द्रीय स्थान दे जिसका यह सचमुच हकदार है।

[अग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १-११-१९२८

४. तार : लाला लाजपतरायको

१ नवम्बर, १९२८

हार्दिक बधाई। हमले और अपनी हालतका पूरा ब्यौरा तार द्वारा सूचित करे।[2]

[अग्रेजीसे]
ट्रिब्यून, ३-११-१९२८

५. भेंट : 'सिविल ऐंड मिलिटरी गज़ट' के प्रतिनिधिसे[3]

१ नवम्बर, १९२८

मै अब भी भारतका नेतृत्व कर सकता हूँ। लेकिन मै भारतका नेतृत्व केवल तभी करूँगा जब वह उसके लिए मेरे पास आयेगा, जब राष्ट्र मुझे नेतृत्वके लिए आमन्त्रित करेगा।

१. **ए लीफ फ्रॉम अमेरिकन हिस्ट्रीमें।**

२. लालाजीके उत्तरके लिए देखिए "अवश्यम्भावी", ८-११-१९२८।

३. फ्री प्रेस ऑफ इंडिया द्वारा लाहौरसे जारी। अहमदाबादसे ६ नवम्बर, १९२८ को जारी किये एक सन्देशमें एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इडियाने कहा था : "महात्मा गाधीका कहना है कि उनके साथ हुई मुलाकातोंके जो विवरण **पायनियर** और **सिविल ऐंड मिलिटरी गज़ट**में छपे है, वे कई बातोंमें गलत हैं। उन्होंने कहा है कि इस विषयपर वे **यंग इंडिया**में लिखनेका इरादा रखते है।" देखिए "तथ्य और कल्पना", ८-११-१९२८।

इससे पहले मै नही जाऊँगा। मै तवतक नही जाऊँगा जवतक मुझे जनतापर अपनी शक्तिका विश्वास नही हो जाता। मै फिरसे भारतका नेतृत्व तवतक नही कर सकता, जवतक मुझे यह नही लगता कि मेरे नेतृत्वको स्वीकार करनेवालोकी सख्या इतनी ज्यादा है कि उनके वलपर अहिंसाकी नीतिका पालन किया जा सकेगा और जवतक मुझे यह नही महसूस होता कि मै उन लोगोको नियन्त्रणमें रख सकता हूँ। लेकिन, इस समय तो मुझे उसके कोई आसार दिखाई नही देते। इसलिए मुझे नेतृत्व करनेकी अभी कोई उत्सुकता नही है। शायद वह दिन मेरे जीवन-कालमें न आये। हो सकता है, वह मेरे उत्तराधिकारीके समयमें आये।

मै इस समय किसी उत्तराधिकारीका नाम नही ले सकता। भारतमे ऐसा कोई व्यक्ति अवश्य होगा जो आज देशका नेतृत्व कर सकता है, लेकिन मै उसका नाम नही ले सकता। सचमुच मुझे इस प्रकार निष्क्रिय रहनेपर शर्म आनी चाहिए, लेकिन शायद मेरे जीवन-कालमे यह जरूरी हो। हो सकता है ऐसा कोई व्यक्ति कभी सामने आये, लेकिन अभी नही है।

[अग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, ३-११-१९२८

६. तार : मीराबहनको

सावरमती
३ नवम्बर, १९२८

मीरावहन
मारफत खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर

तुम अपना वाकी समय विहार और वगालमे व्यतीत कर सकती हो। स्वास्थ्य विलकुल ठीक रखना। भाग-दौड करनेकी कोई जरूरत नही।

बापू

अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५३२१ तथा जी० एन० ८२११) से।
सौजन्य : मीराबहन

७. पत्र : एन० आर० मलकानीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय मलकानी,

तुम्हारा पत्र मिला। जैसे ही क्षण-भरकी भी फुरसत मिली, मैं रिपोर्टको पढ जाऊँगा।

यदि तुम खुद टाइप करनेमे निपुण हो तो टाइपराइटर अपने साथ ला सकते हो। तुम मुझे अपने आनेकी निश्चित तारीख और तुम्हारी क्या शर्ते है सो बता देना। शर्तोंके बारेमे मैं सब-कुछ भूल गया हूँ।

महादेव यहाँ नही है, वह तो बारडोली जाँचके सम्बन्धमे बम्बई गया हुआ है।[1]

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीयुत एन० आर० मलकानी
हैदराबाद (सिन्ध)

अंग्रेजी (जी० एन० ८८९)की फोटो-नकलसे।

८. पत्र : जी० एस० शर्माको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। हमें कर्मके सिद्धान्तपर इतना जोर नही देना चाहिए कि वह बेमानी ही हो जाये। प्रत्येक जीव अलगसे केवल अपने नये कर्मका निर्माण तो कर रहा है, लेकिन उसपर दूसरोके सहस्रातिसहस्र कर्मोका भी प्रभाव पडता रहता है।

मैं बछडेके शरीरके नाशको[2] निःस्वार्थ-भावसे किया गया कृत्य मानता हूँ, क्योंकि मुझे उसकी सेवा करनेसे तो कोई सकोच था नही। मैंने तो यह देखा कि मैं उसकी कोई सेवा ही नही कर सकता।

अब मच्छरोके सम्बन्धमे विदेशमे बनी मच्छरदानीको उपयोगमे लानेमे कोई बुराई नही। मच्छरदानी कोई पहनने-ओढनेका वस्त्र तो है नही। छतरीके बारेमे

१. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ८६-८८।
२. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ३२३-२७।

मेरे जो विचार है, वही विचार मच्छरदानीके बारेमे भी है। बेशक, खादीकी मच्छरदानियाँ प्राप्त की जा सकती है, लेकिन वे महँगी पडती है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत जी० एस० शर्मा
लेखा-पद्धतिके प्राध्यापक
सनातन धर्म कालेज
नवाबगज, कानपुर

अंग्रेजी (एम० एन० १४५४७)की माइक्रोफिल्मसे।

९. पत्र : डॉ० वि० चं० रायको[1]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० विधान,

आपका पत्र मिला। पण्डित मोतीलालजी जब पिछले रविवारको यहाँ आये थे, तब मैंने प्रदर्शनीके बारेमे उनसे बातचीत की थी। उन्होने मुझे आपका तार दिखाया था। मैंने अपनी बातचीतके दौरान उनसे जो-कुछ कहा था, वही मै यहाँ फिर कहूँगा। मुझे दुःख है कि आपको मेरा पत्र 'अस्पष्ट और बच-बचकर' लिखा गया जान पडा। मेरे सामने जो तथ्य थे, उनके आधारपर जितना साफ लिख सकता था उतना साफ लिखनेकी कोशिश मैंने की। आप-जैसे मित्रोको लिखते समय मुझे बच-बचकर लिखनेकी तो कभी जरूरत ही नही होनी चाहिए। लेकिन मेरा पत्र सक्षिप्त अवश्य था, मगर यह जरूरी था।

और अब बातचीतके आशयके बारेमे। आपने पण्डितजीके आगे जो प्रस्ताव रखा है और जिसे आपने अपने पत्रमे भी दोहराया है, उससे हालाँकि मेरे अहम्‌की तुष्टि होती है, फिर भी मै नही चाहूँगा कि आप-जैसा सम्मान्य सहयोगी मुझे प्रसन्न करने की खातिर अपने विचारोका अथवा अपने सिद्धान्तोका त्याग करे। ऐसी चीजे जीवनमे केवल एक-आध बार ही की जा सकती है, मगर इस तरहकी वैयक्तिक रियायते भी स्वीकार करनेपर खुद स्वीकार करनेवाले, रियायत करनेवाले और सम्बन्धित राष्ट्रीय उद्देश्य, सबका नुकसान होता है। और मेरा खयाल है आप यह सुनकर पूरी तरह निश्चिन्त हो जायेंगे कि मैंने पण्डितजीको वचन दिया है कि यदि सब-कुछ ठीक-ठीक रहा तो मै बिना किसी शर्तके कांग्रेस अधिवेशनमे शामिल होऊँगा।

लेकिन मुझे खेद है कि मै प्रदर्शनीमे अखिल भारतीय चरखा सघके शामिल होनेके सम्बन्धमें यह बात नही कह सकता। मेरा तर्क यह है जहाँ यह सोचना गलत

१. विधानचन्द्र रायके २८ अक्तूबर, १९२८को शिलाँगसे भेजे गये पत्र (देखिए परिशिष्ट १)के उत्तरमें।

है कि यन्त्रके रूपमें मैं यन्त्र-मात्रको नापसन्द करता हूँ, वही मैं यह भी महसूस करता हूँ कि करोड़ो मेहनतकश लोगोके लिए कोई यन्त्र, चाहे वह जितना छोटा हो, उपयोगी है या नही, इसका निर्णय करनेके योग्य हम नही है। इसका निर्णय करने योग्य हम तभी हो सकेंगे, जब हम निर्भीक और धन्धेकी जानकारी रखनेवाले किसानो तथा अन्य व्यवसायियोको काग्रेसकी ओर खीच सकेंगे। मै आपको बता दूँ कि आश्रममे हमारे पास भी सीधे-सादे ढगके कुछ यन्त्र है—जैसे हल, घास काटनेका यन्त्र, आटा पीसनेकी चक्की आदि। लेकिन, आपको दु खके साथ बताना पडता है कि इस दिशामे लगाई गई हमारी पूँजीसे न कोई विशेष लाभ हुआ और न उसकी कोई सम्भावना ही दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि हम सब शौकिया किसान है। और यह बात मै आपसे अपने १३ वर्षोके अनुभवके आधारपर कह रहा हूँ। इसलिए मेरा सुझाव यह है कि अगर आपमे साहस हो तो आप फिलहाल एक-एक यन्त्रको, विशेषकर विदेशी यन्त्रको, अलग ही रखिए और सारी शक्ति एक ऐसी प्रदर्शनीके आयोजनपर केन्द्रित कीजिए जिसका केन्द्र-विन्दु खादी हो और जिसमे ज्यादा नही, किन्तु पर्याप्त सख्यामे उपयोगी ढगकी असली स्वदेशी चीजे प्रदर्शित की जाये।

भारतीय मिलोका कोई भी कपड़ा प्रदर्शनीमे रखा जाये, यह बात मेरे मनको किसी भी तरह मंजूर नही है। इसका कारण बिलकुल सीधा-सादा है। मिल-मालिक हमारे साथ समझौता करनेको बिलकुल तैयार नही हैं। इसके लिए मै उन्हे दोष नही देता, क्योकि अगर वे मुझसे समझौता करेंगे तो सरकारी सहायताकी सारी आशासे वचित हो जायेंगे। उस हालतमे अगर सरकार उन्हे कुछ सहायता देगी भी तो उतनी ही जितनी कि उसे लोकमतके सामने मजबूर हो कर देनी पडेगी। इसके अलावा, इन कपडोको हमारे विज्ञापनकी भी कोई जरूरत नही है। उनके पास तो विज्ञापन करने-वालो, निरीक्षको, विक्रेताओ आदिकी पूरी फौज है। और अन्तमे, खादीके साथ-साथ मिलके कपडोकी प्रदर्शनी करनेका मतलब अवाछनीय तुलनाकी स्थिति उत्पन्न करना और इस तरह खादीको जान-बूझकर गौण बना देना होगा।

मै आपको याद दिला दूँ कि इस तरहकी सबसे पहली प्रदर्शनी १९२१ मे अहमदाबाद काग्रेसमे आयोजित की गई थी[1]। इसे देखनेके लिए लोग बहुत बडी सख्यामे आये थे। प्रवेश-शुल्क हालाँकि बहुत कम था, फिर भी काफी पैसेकी बचत हुई थी। जहाँ-कही भी शिक्षाप्रद ढगकी प्रदर्शनियोकी व्यवस्था अच्छे और कुशल ढगसे की जाती है, वहाँ वे न केवल उपयोगी और शिक्षाप्रद साबित होती है, बल्कि उनसे आर्थिक लाभ भी होता है। बिहारमे ऐसा ही हुआ था। काग्रेस-प्रदर्शनियोकी एक अनिवार्य शर्त यह होनी चाहिए कि हमे उनका आयोजन उनपर हुआ खर्च निकालने और अगले साल काग्रेसका कारोबार चलानेके लिए कुछ बचा लेनेके उद्देश्यसे कभी नही करना चाहिए। दुर्भाग्यसे मद्रासमे यही अवाछनीय बात हुई, जिससे हम इस बुरे प्रलोभनमे फस गये हैं। मै चाहता हूँ कि बगाल, जिसमे पर्याप्त

१. देखिए खण्ड २२, पृष्ठ १४०-४१।

देश-भक्ति और आत्म-त्यागकी भावना है और जो सूक्ष्म विचार-बुद्धिसे युक्त है, इस प्रलोभनसे ऊपर रहे।

यदि इस पत्रमे आपको कोई चीज साफ-साफ न लिखी दिखाई दे तो आप मुझे अवश्य लिखे। इस सम्वन्धमे कोई भ्रम नही रहना चाहिए। मैं प्रदर्शनीमे भाग लेना चाहता हूँ। लेकिन ऐसा मैं राष्ट्रीय हितको — जैसा कि मैं उसे समझता हूँ — ध्यानमें रखते हुए ही करना चाहता हूँ। परन्तु मैंने मन-ही-मन तय कर लिया है कि यदि मैं प्रदर्शनीमे भाग नही ले सकता तो मैं प्रदर्शनीके दौरान अथवा उसके बाद प्रदर्शनीके खिलाफ एक भी शव्द नही वोलनेवाला हूँ। मैंने मद्रासकी प्रदर्शनीके सम्वन्धमे इस तरहका मौन धारण करनेकी जरूरत महसूस नही की थी, क्योकि उस समयकी परिस्थितियाँ भिन्न थी। इसलिए मैंने प्रदर्शनीका उद्घाटन करते समय उसपर खुले मनसे अपने विचार व्यक्त किये[1] और उसके उद्घाटनके वाद 'यग इडिया' मे लिखे एक अग्रलेखमे[2] और भी खुल कर उसकी चर्चा की।

मुझे ढेर सारे पत्र मिले हैं जिनमे मुझसे प्रदर्शनीके सम्वन्धमे अपने विचार विना विलम्ब किये, खुल कर व्यक्त करनेका अनुरोध किया जा रहा है। अवतक मैं इन सारे पत्र-लेखकोका अनुरोध अस्वीकार करता रहा हूँ और आशा है, आगे भी करता रहूँगा। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अपने उद्देश्यसे, जिसे सम्भव है कि आप राष्ट्रके हितमे एक अनुल्लघ्य सिद्धान्तपर आधारित मानते हो, पीछे न हटे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपके सिद्धान्तोको उतना ही आदर दूंगा जितना मैं आपसे और अन्य सभी लोगोसे भी अपने सिद्धान्तोको आदर दिये जानेकी अपेक्षा रखता हूँ, चाहे वे दूसरोको कितने भी गलत जान पडे।

अस्पताल[3] प्रगति कर रहा है, यह जानकर वडी खुशी हुई। वेशक, मैं नये वार्डकी उद्घाटन-विधि सम्पन्न करने आऊँगा और जहाँतक सम्भव होगा, उसके लिए समय निकालनेकी कोशिश करूँगा।

हृदयसे आपका,

डॉ० विधानचन्द्र राय
३२ विलिंगटन स्ट्रीट, कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १४८५३)की माइक्रोफिल्मसे।

१. देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ ४३१-३३।
२. देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ ४५१-५६।
३. देशबन्धु चित्तरंजनदास स्मारक अस्पताल।

१०. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय मोतीलालजी,

इस समय आप संघर्षमें आकण्ठ डूबे हुए होंगे, लेकिन जबतक आपको यह पत्र मिलेगा तबतक संघर्ष खत्म हो चुका होगा। मैं आशा कर रहा हूँ और भगवानसे यह प्रार्थना भी कि आप दिल्लीमें भी उतने ही सफल हों, जितने लखनऊमें हुए।[1]

साथमें डॉ० विधान रायको[2] प्रदर्शनी सम्बन्धी समस्याके बारेमें लिखे अपने पत्रकी नकल भेज रहा हूँ। उनके लिखे पत्रकी नकल तो आपके पास भेजनेकी जरूरत नहीं ही है, क्योंकि उन्होंने अपने पत्रमें जो-कुछ लिखा है वह सब उस तारमें मौजूद था जो आपने मुझे पढ़ कर सुनाया था। मैंने उन्हें जो उत्तर दिया है, आपको उसका खुलासा देनेकी भी कोई जरूरत नहीं है।

कमलाका स्वास्थ्य अब कैसा चल रहा है? दिसम्बरमें आपपर जो भारी बोझ पड़नेवाला है, उसके लिए अपने शरीरको ठीक रखिएगा।

हृदयसे आपका,

संलग्न पत्र : १

पण्डित मोतीलालजी
मारफत डॉ० अन्सारी
दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १३७१६) की फोटो-नकलसे।

१. २८ अगस्त, १९२८ को हुए सर्वदलीय सम्मेलनमें।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

११. पत्र : मुहम्मद हबीबुल्लाको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं श्रीयुत शास्त्रीके सुझावके[१] बारेमें जानता था। हाँ, मैं ऐसा मानता हूँ कि दक्षिण आफ्रिकी पत्रकारोंके भारत आनेसे परस्पर एक-दूसरेको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकनेकी सम्भावना है।

हृदयसे आपका,

सर मुहम्मद हबीबुल्ला साहब बहादुर, के० सी० आई० ई०
वाइसरायकी परिषदके सदस्य, नई दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० ११९९७) की फोटो-नकलसे।

१२. पत्र : उर्मिला देवीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

आपका पत्र मिला। आपका पत्र मिलनेसे पहले मैं धीरेनको सन्देश भेज चुका था।

साथमें मेरे नाम देवधरका लिखा एक पत्र भेज रहा हूँ। मुझे उम्मीद है, आप देवधरसे मिल चुकी होंगी।

महादेव बारडोली जाँचके सिलसिलेमें अभी बारडोलीमें ही है।

आशा है, पूनाकी आबोहवा आपके अनुकूल पड रही होगी।

हृदयसे आपका,

श्रीमती उर्मिला देवी
जाह्नवी विला
डेकन जिमखाना, पूना

अंग्रेजी (एस० एन० १२९७८) की फोटो-नकलसे।

१. दक्षिण आफ्रिकासे पत्रकारोंके एक दलको भारत आनेका निमन्त्रण देनेका सुझाव।

१३. पत्र : वी० के० यू० मेननको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मुझे खुशी है कि आप कृष्णस्वामीकी सहायता कर रहे हैं। मैं कुरुर नीलकण्ठन नम्बूद्रिपादको जानता हूँ। वे अच्छे आदमी हैं। लेकिन मुझे उनकी कारोबार चलानेकी योग्यताके बारेमें कोई जानकारी नहीं है और न मैं स्थानका चुनाव करनेमें ही कोई राय दे सकता हूँ। मोटे तौर पर कहें तो बारडोलीमें जिस तरहका काम किया गया है, वैसा काम ब्रिटिश भारतमें ज्यादा अच्छी तरह हो सकता है। लेकिन मैं चाहूँगा कि आप श्रीयुत राजगोपालाचारीके साथ तिरुचेनगोडु, दक्षिण भारतके पतेपर पत्र-व्यवहार करें और उनके निर्देशानुसार काम करें।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत वी० के० यू० मेनन
१० सत्तार बिल्डिंग्स, माहिम
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १२९७९)की फोटो-नकलसे।

१४. पत्र : साबरमतीके पोस्टमास्टरको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

पोस्टमास्टर
साबरमती

प्रिय महोदय,

आपने जो पूछताछ की है, उसके सम्बन्धमें आपको सूचित करना चाहता हूँ कि आपने जिस पत्रके बारेमें तहकीकात की है, वह यथासमय आश्रमको पहुँचा दिया गया था और उसे श्री सी० एन० जोशीने प्राप्त किया था। श्री जोशीको रजिस्ट्री द्वारा या साधारण डाक द्वारा आये सारे कागज-पत्र प्राप्त करनेका अधिकार मिला हुआ है। आप पत्र-लेखकको सूचित कर सकते हैं कि यह जरूरी नहीं कि मेरे नामसे आश्रममें आनेवाले सारे पत्रोंको मैं पढ़ ही लेता हूँ।

आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १२९८०)की फोटो-नकलसे।

१५. पत्र : बालाजी रावको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्रिय बालाजी राव,

आपका पत्र मिला, साथमे 'इडियन टेक्सटाइल जरनल' से उद्धृत अश भी। मै श्रीयुत तलचरकरकी रचनाको बडे ध्यानसे पढ गया हूँ। लेकिन उनके तर्कका कायल न हो सकनेके कारण मैंने उनसे पत्र-व्यवहार किया। वे मुझे अभी भी इस बातका कायल नही करा सके हैं कि चरखेका सूत कुल मिला कर मिलके सूतसे ज्यादा मजबूत होता है। हमने आश्रममें एकके बाद एक बहुतसे प्रयोग करके देखे हैं और उनसे यही निष्कर्ष निकलता है कि यदि हम हाथसे मिल-कते सूतकी अपेक्षा ज्यादा अच्छा सूत तैयार करना चाहते हैं तो हमे विशेष सावधानीसे काम लेना होगा, जो एक साधारण कतैयेके बसकी बात नही है। श्रीयुत तलचरकरका सुझाव सैद्धान्तिक ढगका है, जो पढनेमे तो ठीक लगता है लेकिन यदि उसे व्यावहारिक रूप दिया जाये तो वह खरा नही उतरता। आप समझ सकते हैं कि चरखेपर कता औसत सूत मिलके बने औसत सूतसे ज्यादा मजबूत है, यह बात जानने और साबित करनेको मै कितना उत्सुक हूँ।

हृदयसे आपका,

अग्रेजी (एस० एन० १३७१५) की फोटो-नकलसे।

१६. पत्र : शौकत अलीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
३ नवम्बर, १९२८

प्यारे दोस्त और भाई,

आपका पत्र[1] मिला। इसे मै बहुत ध्यानसे पढ गया हूँ। आपने डॉ० अन्सारी और मोतीलालजीपर लगाये अपने आरोपके समर्थनमे जो सबूत दिया है, मुझे उससे ज्यादा सबूत चाहिए। उनसे आपका दृष्टिकोण भले ही न मिलता हो, मगर किसी से मतभेद होनेके कारण ही उसकी नीयतपर तो शक नही करने लगना चाहिए। लेकिन मै आपसे तर्क नही करूँगा। मै जानता हूँ कि किसी-न-किसी दिन आपको प्रकाश दिखाई देगा ही, या अगर मै भ्रममे हूँ तो मेरा भी अज्ञान अवश्य दूर

१. २३ अक्तूबर, १९२८ का पत्र, इसके कुछ अंश परिशिष्ट २ में उद्धृत किये गये हैं।

होगा; क्योंकि सत्यकी सेवा करनेके अलावा मेरे जीवनका कोई उद्देश्य नहीं है और यदि मैं आपको ठीक समझता हूँ तो कहूँगा कि आपका भी इसके अलावा और कोई उद्देश्य नहीं है।

हृदयसे आपका,

मौलाना शौकत अली
केन्द्रीय खिलाफत समिति
सुल्तान मैन्शन, डोंगरी, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १३७११)की फोटो-नकलसे।

१७. पत्र : वालजी गो० देसाईको

आश्विन वदी ६, [३ नवम्बर, १९२८][1]

भाई वालजी,

अवकाश मिलनेपर तुम गोरक्षाका काम तो हाथमें ले ही लोगे, ऐसा मैंने मान लिया है। सारी बातें भाई नगीनदाससे मालूम कर लेना। हिसाब आदि तो तुम्हें ही देखना होगा। इसकी जानकारी तो मुझे मिल गई है, फिलहाल तो तुम्हीं मन्त्री और तुम्हीं झाड़ूवाले, अभी काम इसी तरह चलाना है। काम बढ़ जानेपर अधिक खर्चकी व्यवस्था करूँगा। और बन सके तो सदस्य बनाते रहना। मुझे विश्वास है कि गोरक्षा आन्दोलनके विकाससे सम्बन्धित सामग्रीकी खोज करके तुम उसके विषयमें लिखनेका प्रयत्न करोगे। इस विषयमें विशेषज्ञों और आनन्दशंकरभाईके साथ पत्र-व्यवहार करना। आश्रममें कुछ पुस्तकें हैं, उन्हें देख लेना।

चमड़ेके व्यापारका साहित्य इकट्ठा करो? मैं चाहता हूँ कि जिस प्रकार तुम 'डेरी एक्सपर्ट' हो — इसे गुजरातीमें क्या कहेंगे? दुग्ध-विशेषज्ञ? — वैसे ही तुम चमड़ेके विशेषज्ञ भी बनो। यह काम आश्रममें जिस तरह चलता है, सो भी देखना और वहाँकी गोशालाका काम भी बारीकीसे समझना।

मैं और क्या लिखूँ? सारी जिम्मेदारी सिर आ पड़नेपर तुम जिस तरह काम करोगे उसी तरह इस समय करना। मैंने तो पहले ही कह दिया था कि मेरा गोरक्षा कार्य करनेका अर्थ है एक अच्छा मन्त्री ढूँढ़ लेना और उसे अपने सिद्धान्त समझा कर उनके अमलमें लगा देना तथा उसे मेरे नामका उपयोग करनेकी छूट दे देना। तुमसे ऐसी आशा रख सकता हूँ न?

अपने स्वास्थ्यका खयाल रखना।

मोहनदासके वन्देमातरम्

1. गोरक्षा आन्दोलनके उल्लेखसे।

[पुनश्च :]

इसके साथ ग्रेगका पत्र और उसकी भेजी हुई पुस्तकोकी सूची भेज रहा हूँ। इनमें से जो पुस्तके मिल जायें उन्हे पढ लेना। अगर कुछ मँगानी पडी तो कहीसे खोजेंगे। इन दोनोको दफ्तरमे दर्ज तो कर ही लेना।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७३९७)की फोटो-नकलसे।

सौजन्य : वालजी गो० देसाई

१८. हमने हिन्दुस्तान कैसे गँवाया?

देशबन्धुके स्वर्गवासके कुछ ही दिन पहले जलपाईगुडीमे व्यापारी मण्डल द्वारा दिये गये मानपत्रके उत्तरमे मैंने उन्हे सम्बोधित करते हुए कहा था कि हिन्दुस्तानकी स्वतन्त्रता व्यापारियोने गँवाई और अब वे ही उसे प्राप्त कर सकते है। यह काम न तो वकीलोका है, न डाक्टरोका और न सिपाहियोका ही। यह ठीक है कि बहुत से अग्रेज अभिमानपूर्वक यह कहते है कि हमने हिन्दुस्तानको तलवारसे जीता है और तलवारके बलपर ही उसपर शासन कर रहे है, किन्तु इस कथनमे सचाई आधेसे भी कम ही है। यदि व्यापारी चाहे तो इस तलवारकी धारको कुठित कर सकते है। एक व्यापारी मण्डल द्वारा अन्य व्यापारी मण्डलोको भेजी गई नीचे दी गई गश्ती चिट्ठी[1] हमे इस बातकी याद दिलाती है

अंग्रेजोकी यह विशेषता है कि जिस देशसे वे धन नही बटोर पाते उस देशको वे खाली कर देते है। सन् १८८४ मे ट्रान्सवालके सम्बन्धमे उन्होंने ऐसा ही किया था और जब उन्हे वहाँ धन दिखाई दिया तो १९०० मे उसपर अधिकार करनेके लिए युद्ध किया। जब सोमालीलैंडसे धन मिलना बन्द हो गया तो उन्होंने उस देशको भी छोड दिया। राज्य उन्हे राज्य करनेके लिए नही चाहिए किन्तु व्यापार करनेके लिए चाहिए। इसी कारण नेपोलियनने उन्हे 'दुकानदारोंके वशज' कहा था।

इसलिए अग्रेजोका शासन पशुबलसे नही, बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि हमारे व्यापारियोकी मददसे चलता है। हमारे व्यापारी यदि उनके साथ कपडेका व्यापार करना छोड दे या जनता विदेशी कपडा पहनना छोड दे तो अग्रेजोके लिए हिन्दुस्तानपर अपना कब्जा जमाये रखनेका कोई कारण ही न बच रहे।

किन्तु क्या व्यापारी वर्गमे त्याग करनेकी शक्ति है? प्राय. यह देखनेमे आता है कि व्यक्ति यो तो बहुत त्याग कर देता है, किन्तु जिस धन्धेसे वह धन कमाता है, उसे मुश्किलसे ही त्यागनेको तैयार होता है। व्यापारियोकी उदारताकी हमेशा सराहना की जाती है। किन्तु जब कभी उनसे अपना कारोबार बन्द करनेको कहा

१. गश्ती चिट्ठी तथा उसके बादके दो अनुच्छेद यहाँ नही दिये जा रहे हैं; उनके लिए देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ४१४-१५।

जाता है तो वे नाराज हो जाते हैं। वकील हजारो रुपये दानमे देनेको तैयार हो सकते हैं किन्तु दासकी[1] तरह वकालत छोडनेको तैयार होनेवाला कोई बिरला ही निकलेगा। डाक्टर लोग भी दानमे बहुत दे देगे परन्तु डाक्टरी छोडनेको तो शायद ही कोई तैयार हो।

इसके बावजूद यदि हम सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते हो तो व्यापारियोको अपना धन्धा समेटकर देश-सेवाके लिए तैयार रहना होगा। इस प्रकारका त्याग व्यापारियोका प्रायश्चित्त माना जायेगा। यदि यह बात सच हो और सच तो है ही कि उनके लोभके कारण हिन्दुस्तान हमारे हाथसे निकल गया था तो उनके त्यागसे ही हिन्दुस्तान हमे वापस मिल सकेगा।

किन्तु व्यापारियोसे मै जिस त्यागकी आशा करता हूँ वह तो सामान्य ही है। मै उनके व्यापारमे तबदीली-भर कराना चाहता हूँ, उसे मिटाना नही चाहता। मै उनके व्यापारको मर्यादित करना चाहता हूँ। विदेशी कपडेके बहिष्कारके बावजूद करोड़ो रुपयोकी खादीका व्यापार तो व्यापारी ही करेगे। व्यापारियोके बिना लोक-व्यवहार नही चल सकता। व्यापारका तो अर्थ ही व्यवहार करना है। जो व्यवहारी है वही व्यापारी है। जो दूसरोसे उचित व्यवहार बनाये रखता है वह व्यापारी है।

व्यापारीकी सामर्थ्यका आज अपव्यय हो रहा है। वह विदेशी व्यापारीको पचान्नवे देकर खुद पॉच कमाता है। मै उसकी सामर्थ्यका सदुपयोग कराना चाहता हूँ। वह देशकी जनताको पचान्नवे देकर खुद पॉच रखे तो इस प्रकार उसके पाँचके-पॉच तो बने ही रहेगे, वह उसकी शुद्ध कमाई भी मानी जायेगी। आज तो वह करोड़ो कमाता है, किन्तु वह दोषपूर्ण कमाई है। यह ठीक है कि आज पॉच-दस लोगोके पास जो करोडो रुपये जमा हो रहे हैं, नई व्यवस्थाके अन्तर्गत वे सैंकडो व्यापारियोमे बँट जायेगे। किन्तु इसे दु:खकी बात नही मानना चाहिए। हरएक व्यक्ति इस बातको स्वीकार करेगा कि थोडेसे लोगोके हाथमे करोडो रुपये होनेकी बजाय बहुतसे लोगोके हाथमे हजारो-लाखो हो, यह कही अच्छी व्यवस्था है। और मेरे कहनेका तात्पर्य यह है कि जो व्यापारी इस सीधे-सादे गुरको नही समझते तो हिन्दुस्तानमें अराजकता, लूट और दगे-फसादोको रोकना करीब-करीब असम्भव हो जायेगा। पश्चिमकी तरफसे जो जहरीली हवा बह रही है उसे किसी और उपायसे रोकना सम्भव नही है।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ४-११-१९२८

१. चित्तरंजनदास।

१९. लालाजीपर आक्रमण

यह देश गरीब है, इसके भीतर उपद्रव, उसपर बाहरसे दवाव और लगता है उसके चारो ओर घोर अन्धकार छाया हुआ है। फिर भी वह भाग्यशाली जान पडता है। लालाजीपर लाहौरमे पुलिस द्वारा किया गया आक्रमण उसके भाग्य-शील होनेका शुभ लक्षण है। लालाजीने कोई गलती नही की थी और वे जिस जुलूसका नेतृत्व कर रहे थे उसने भी कोई गलत कदम नही उठाया था। जुलूस पर लालाजीका पूर्ण नियन्त्रण था। इसलिए इस सम्बन्धमे किये गये निश्चयके सिवा लालाजी या जुलूसका कोई और दोष तो नही बताया जा सकता। निश्चय किया गया था कि साइमन कमीशनके आनेपर उसके विरोधमे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया जाये। इस विरोधका प्रदर्शन करनेके लिए जुलूसको पुलिस द्वारा बनाये गये घेरे तक पहुँचना था। जुलूस इस घेरे तक पहुँच कर ऊँची आवाजमे 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगा रहा था। इस जुलूसमे लाला लाजपतरायके अलावा लाला हसराज, डाक्टर आलम और कई दूसरे नेता थे।

पुलिसको यह प्रदर्शन और प्रदर्शन करनेवालोकी यह दृढता बहुत अखरी, इसलिए उसने लालाजीको 'सबक सिखाने'का निश्चय किया और उनपर आक्रमण कर दिया। आक्रमण खतरनाक नही हो पाया, इसका श्रेय पुलिसको नही दिया जा सकता। आँखके पास चोट लगी तो वह आँखपर भी लग सकती थी। छातीपर गम्भीर चोट आनेकी बजाय कुछ हलकी चोट आई, इसमे भी दोष दैवका था, पुलिसका नही। समाचारपत्रोमे जो विवरण छपा है उससे मालूम होता है कि पुलिसने तो अपना हस्तलाघव दिखानेमे कोई कमी नही रखी थी।

लालाजीने दृढतापूर्वक कहा है कि पुलिसने जो सफाई दी है वह बिलकुल झूठी है। पुलिसका कहना है कि उसने राहगीरोके लिए थोडा रास्ता खुला छोड दिया था। जुलूसने उस रास्तेसे घुसनेका प्रयत्न किया और पत्थर फेके। लालाजीने इन दोनो आरोपोसे इनकार किया है और कहा है कि यदि पुलिस इस बातपर मान-हानिका मुकदमा चलाना चाहे तो अवश्य चलाये। वे अपने कथनकी सचाई सिद्ध करनेके लिए तैयार है।

अब देखना है कि पुलिस उनकी इस चुनौतीको स्वीकार करती है या नही?

जब लालाजी जैसे वीर नेता चोट खायेगे तभी जनता और ससारका ध्यान आकर्षित होगा। एक मामूली मनुष्यकी मृत्युसे जितना ध्यान आकर्षित होता है, लालाजी पर किये गये इस आक्रमणसे उसकी अपेक्षा बहुत अधिक ध्यान आकर्षित हुआ है तथा अभी लोगोका और भी अधिक ध्यान इस ओर आकर्षित होगा।

इतनी ही बात ध्यानमे रखनेकी है कि लोग शान्ति भग करके कही जीती हुई बाजी हार न जाये। लोगोके सर्वथा निरपराध होनेपर भी सरकार अन्याय

करती रहेगी तो उसकी किश्ती अपने-आप ही डूब जायेगी। इसलिए मै आशा करता हूँ कि लोग तनिक भी मर्यादा भंग नही करेगे और अपने नेताओके शान्ति बनाये रखनेके आदेशोका पूरी तरह पालन करेगे।

मै लालाजीको बधाई देता हूँ। वर्षोसे वे पजाब केसरीके रूपमे विख्यात है। इस बार उनकी इस उपाधिको शोभान्वित करनेमे सरकारी पुलिसने भी हाथ बँटाया है और लालाजीने जो देशसेवा की है, इस आक्रमणसे इसमे और भी वृद्धि हुई है।

इस लेखको लिखनेके बाद मुझे लालाजीका यह तार मिला[1] है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, ४-११-१९२८

२०. टिप्पणी

एक उलझन

एक मित्र लिखते है:

> **आप तो कहते है कि शरीरके रहते हुए अहिंसाका सम्पूर्ण पालन असम्भव है। देहधारीसे तो कहीं-न-कहीं हिसा होती ही रहेगी। हिसाके बिना उसका शरीर कायम ही नहीं रह सकता। फिर आप अहिंसाको धर्म क्यो कहते है? जिसका पूर्ण रूपसे पालन न हो सके वह धर्म कैसे कहा जा सकता है?**

मेरी विनम्र सम्मतिमे तो जिसका इस शरीरसे पूर्णत. पालन किया जा सकता है, वह धर्म हो ही नही सकता। श्रद्धाके बिना धर्मकी परीक्षा नही होती, हो ही नही सकती। और यदि इस अपूर्ण, क्षणभगुर शरीरमे रहकर भी मनुष्यके लिए पूर्णता प्राप्त करना सम्भव हो तो श्रद्धाके लिए कोई स्थान ही न रह जाये। आत्माका गुण अनन्त माना गया है। यदि इस देहसे पूर्णता सम्भव हो तो उससे आत्माकी अनन्तताके गुणका खण्डन होता है। यदि इस देहसे पूर्णता प्राप्त करना सम्भव होता तो आज कर्त्तव्याकर्त्तव्यका अन्वेषण करनेके लिए जो ऊहापोह करनी पडती है, वह करनी ही न पडे, क्योकि किसी एक पूर्ण उदाहरणको देखकर सभी उसीके अनुसार चलने लगे। यदि इस शरीरसे पूर्णता प्राप्त करना सम्भव होता तो आज लोग अलग-अलग सम्प्रदायोके बजाय किसी एक ही सर्वसामान्य धर्मपर चलते होते।

आदर्शकी आदर्शता उसकी अनन्ततामे, अर्थात् उसकी दूरस्थतामे निहित है। आप उसके चाहे जितने निकट जाइए, वह तो दूरका-दूर ही रहता है। और फिर भी वह निकट ही है, क्योकि उसके अस्तित्वके सम्बन्धमे, उसके सत्यके विषयमे हमारी श्रद्धा अविचल होती है। यह श्रद्धा ही हमारा जीवन है, सर्वस्व है।

१. तार यहाँ नहीं दिया गया है; देखिए "अवश्यभावी", ८-११-१९२८। लालाजीने लिखा था कि लोग सर्वथा निर्दोष थे और उनपर जान-बूझकर आक्रमण किया गया था। उन्हें दो गहरी चोटें लगी है, किन्तु वे चिन्ताजनक नही है।

हमारे चारो ओर सुलगती हिंसाकी आगमे जो अहिंसा देख सकता है, उसकी श्रद्धा वन्दनीय है, वह ससारपर वडेसे-वडा उपकार करता है। लेकिन हिंसाकी होली के वीच रहकर हिंसा करते हुए भी हम पूजा अहिंसाकी ही करते है और इसीसे देहधारीकी हिसापूर्ण स्थितिमें से मोक्ष प्राप्त करनेकी हमारी इच्छा प्रति-दिन वलवती होती जाती है। इसीलिए रायचन्दभाईने कहा है.

[यह ऐसा पद है] जिस पदको श्री सर्वज्ञने भी केवल ध्यानमे देखा और जिसके विषयमे श्री भगवान भी कुछ नही कह सके।

अहिंसाका ध्यान करते-करते जिसकी अहिंसा वृत्ति अत्यधिक वढ जाती है, वह देहके मोहसे मुक्त हो जाता है। इसलिए ऐसे व्यक्ति इस शरीरका नाश होने पर दूसरा शरीर धारण नही करते, लेकिन इस शरीरमे रहते हुए तो शरीर-रक्षाके लिए उन्हे आवश्यक हिंसा करनी ही पडती है। यह तो देहका धर्म है, फिर देह उसे छोड कैसे सकती है?

[गुजरातीसे]
नवजीवन, ४-११-१९२८

२१. भैसोंकी हत्या

घाटकोपर सार्वजनिक जीवदया विभागके उपप्रधान श्री नगीनदास अमूलखरायने निम्नलिखित पत्र लिखा है:[1]

उपर्युक्त पत्रमें जिन अन्य पत्रोका उल्लेख है वे सव मै पढ गया हूँ। मुझे लगता है और पाठकोको भी यही लगेगा कि नगरपालिका ही भैसोकी हत्या कर रही है। जिस भैसका मास कोई नही खाता उसे कत्ल करना तो अधेर ही माना जायेगा और इस तरहके अधेरको वम्वईके नागरिक सहन कर रहे है, यह आश्चर्यकी वात है। इस प्रश्नका सम्वन्ध सिर्फ हिन्दुओसे ही नही वल्कि मुसलमान, पारसी, ईसाई, यहूदी आदि वम्वईके हर नागरिकसे है। इसके अतिरिक्त यह प्रश्न न केवल जीवदया विभागका है वल्कि जनताके कल्याणका है, वच्चोके स्वास्थ्यका है। एक तरफ तो देशकी गरीवी बढती जा रही है और दूसरी तरफ बम्वई जैसे शहरो मे देशका पशुधन नागरिकोकी उपेक्षाके कारण क्षीण किया जा रहा है। जो गायें अथवा भैसे दूध देने लायक है उन्हे जिवह करना या उनके वच्चोको भूखे-प्यासे मर जाने देना एक प्रकारसे सम्पत्तिका क्षीण किया जाना ही है। और इसका कारण है नगरपालिकाको

१. पत्र यहां नहीं दिया जा रहा है। लेखकने अपने पत्रके साथ प्रमाण-स्वरूप कुछ अन्य पत्र भी भेजे थे। पत्रका साराश यह था कि वम्बई और कुर्लामें लगभग २०,००० भैसें प्रतिवर्ष मारी जाती हैं; हालांकि इतने मासकी आवश्यकता नहीं है। वम्बईकी म्युनिसिपल कमेटी जानवरोंको मारनेके लिए प्रतिदिन लाइसेंस देती है जिससे कमेटीको तीन लाख रुपये प्रतिवर्ष मुनाफा होता है। हालैंडसे आनेवाले जमे हुए दूधने इस समस्याको और भी उलझा दिया है।

होनेवाली थोड़ी-सी आय। श्री नगीनदासके हिसाबसे गाय-भैसोको इस प्रकार अधाधुध कत्ल करनेसे कमसे-कम दो करोड बीस लाख रुपयेका नुकसान होता है। और अंतमे, जिस देशमे पानीकी तरह दूध सर्वसुलभ होना चाहिए उस देशमे हमे विदेशसे आनेवाला सारहीन दूध पीना पड रहा है। विदेशसे आया हुआ दूध और घीके नामपर हमारे हाथ वेचा जानेवाला वनस्पति तेल हमे ताजे दूध-घीके अभावमे खाना पडता है, यह हमारे लिए कुछ कम शर्मिन्दगीकी वात नही है। वम्वई तथा अन्य शहरोमे वहुत हदतक वेकारकी चीख-पुकार तो मच सकती है किन्तु जीवदया मण्डलोके अतिरिक्त अन्य किसीको ऐसे महत्त्वपूर्ण मामलेके वारेमे आवाज उठाने और प्रभावशाली आन्दोलन करनेकी वात नही सूझती।

जैसा कि उपर्युक्त पत्रमे सुझाया गया है, इस व्याधिको दूर करनेके उपाय सरल और सहज है। यदि शहरसे गाय-भैसोके वाडे हटा दिये जाये और विशेषकर बम्बईमे दूध वितरणका काम, किसी भी कीमतपर, नगरपालिका अपने हाथमे ले ले तो एक भी गाय या भैस अकारण कसाईखाने नही भेजी जायेगी। यह कितने आश्चर्यकी वात है कि वम्वईमे जो भैसे सूखी हुई मान ली जाती है उन भैसोको वारडोलीके किसान हँसी, खुशी ले जाते है और उनसे चार पैसे पैदा कर लेनेकी आशा रखते है। जो वारडोलीमे सम्भव है वह वम्वईमे असम्भव नही होना चाहिए।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, ४-११-१९२८

२२. विचारकी कीमिया

प्रसिद्ध लेखक आचार्य जैक्सकी एक पुस्तक है जिसका शब्दार्थ 'विचारकी कीमिया' है। उक्त पुस्तकके आधारपर 'यग इडिया' के इसी सप्ताहके अकमे प्यारेलालका एक लेख प्रकाशित हुआ है। गुजराती पाठकोको ध्यानमे रखकर उसीके आधारपर तैयार किया गया यह लेख यहाँ दिया जा रहा है।

'विचारकी कीमिया' का यह अर्थ हुआ कि विचार कीमियाका काम करता है। यह तो कोई नही कह सकता कि कोई कीमियागर कभी लोहेसे सोना बना सका है या नही, किन्तु विचार तो निरन्तर कीमियाका काम करता ही रहता है। एक विचार करनेसे आदमी भयसे पीला पड जाता है, तो उससे उलटा दूसरा विचार करनेसे उसके चेहरेपर लाली छा जाती है। 'मेरे पेटमे मरोड उठ रही है', 'मेरा तो अन्त समय आ गया है' आदि सोचूँ तो तुरन्त ही मेरा चेहरा उतर जायेगा। और अगर यह सोचकर कि मरोडमे क्या रखा है, यह तो अभीके अभी ही मिट जायेगी, मै उसकी परवाह न करूँ तो इसका असर दूसरा ही होगा। कोई अनजान आदमी मेरे घरपर आ धमकता है तो उसके विषयमे मेरे मनमे शका होती है; मै उसे चोर-डाकू मान बैठता हूँ और डर जाता हूँ। मेरा लडका आकर कहता है, "ये तो हमारे कुटुम्वके पुराने स्नेही है। वचपनसे परदेशमे रहने के कारण आप इन्हे

पहचानते नही, ये आज हमारे यहाँ मेहमान है, और अच्छी ख़बर लेकर आये है।" यह सुनकर मेरा मन स्वस्थ हो जाता है। जिससे पहले मै डरता था, अब उसका स्नेहसे स्वागत करता हूँ। यह सब विचारकी कीमिया है। विचार हमे घडी-भरमे राजा बनाता है और घडी-भरमे ही रक। ऐसा है विचारका साम्राज्य। वाणी अथवा अन्य किसी शारीरिक क्रियाकी बनिस्वत विचारकी शक्ति अनन्त गुनी प्रबल है। शारीरिक क्रिया विचारका स्थूलतम रूप है, वाणी भी उसका स्थूल रूप है। ये क्रियाएँ विचारको मर्यादित करती है। ऐसा होना ठीक ही है। अगर ऐसा न हो तो दुनियाका नाश ही हो जाये। मगर यह तो विचारकी शक्तिको स्पष्ट करनेवाली बात हुई। इसके आधारपर यह कहा जा सकता है कि विचारके बिना वाणी या कार्य जड है और उनकी कोई कीमत नही है।

इस विचारसरणीका अनुसरण करते हुए आचार्य जैक्स कहते है कि धर्मके समान महान् और व्यापक शक्ति पोथीमे लिखे हुए नियमोका खेल नही है। वह 'हाँ' या 'ना' की तिजोरी नही है, विधि-निषेधका भण्डार नही है। जो धर्मका, अहिंसाका, नीतिका पालन करना चाहता है उसे तलवारकी धारपर चलना पड़ता है। वह शब्दकोषमे अहिंसाके हिज्जे या किसी ग्रन्थमे की गई उसकी मीमासाके सहारे अहिंसाकी परीक्षामे सोलहो आने पूरा नही उतर सकता। धर्मपालन कोई ऐसी निरापद वस्तु नही है। यह तो अनुभवकी खानमे दबा हुआ रत्न है। उसे करोडो अन्वेषकोमे से कोई एकाध ही जानपर खेलकर खोज पाता है। जैक्स साहब कहते है कि जो सुरक्षाका रुक्का माँगता है, धर्म उसके लिए नही है। धर्मका क्षेत्र तो शका और निश्चयके बीचमे स्थित है। यह धर्म ही है या यही धर्म है, यह मानने या कहनेवाला धर्मको नही जानता। धर्मका जिज्ञासु यह कबूल करता हुआ कि यह 'धर्म हो सकता है और नही भी हो सकता' अपने अन्तर्नादके इशारेपर दृढतापूर्वक और निश्चिन्त भावसे अपना काम करता है। स्वय सर्वज्ञ न होनेसे जहाँ एक तरफ उसके मनमे वह जितना जानता है उसके प्रति दृढता है, वही वह भूल हो जानेकी शकाके लिए भी अवकाश रखता है।

यह विद्वान फिर आगे चल कर कहता है:

> जिस तरह हम छाती ठोककर गणितशास्त्रमे कह सकते है कि दो और दो मिलकर चार ही होते है, उस तरह छाती ठोककर, निश्चयपूर्वक नीतिशास्त्रमे नही कह सकते कि यही कर्तव्य हो सकता है, दूसरा कदापि नही। धर्म या अहिंसाका रहस्य ऐसे परिणामको खोजकर सामने नही रखता जिसे सिद्ध किया जा सके। प्रमाणोके परे जानेमे और ऐसे प्रमाण जहाँ असम्भव है, वहाँ कुछ विशेष खतरा उठानेमे ही धर्म या अहिंसाका रहस्य प्रकट होता है।

हमारी भाषामे इसका नाम श्रद्धा है। धर्म तो श्रद्धाके ऊपर गठित वस्तु है। पचेन्द्रियोसे जिसको प्रमाणित नही किया जा सकता, उसका प्रमाण श्रद्धा है। इस-लिए अन्तर्नादको श्रद्धापूर्वक स्वीकार करके ही हम कभी भविष्यमे धर्मका साक्षात्कार कर सकनेकी आशा रख सकते है। इसलिए श्री जैक्स कहते है:

> जो आदमी अन्तर्नादकी परीक्षा कर चुकनेके बाद ही उसे सुननेको तैयार होता है, वास्तवमे उसने अन्तर्नाद ही नही सुना है, वह हृदयमे रहनेवाली शक्तियोको पहचानता ही नही है। वह अन्तमे नीतिहीन स्थितिको प्राप्त हो जाता है; और तब उसके विषयमे यह कहा जा सकता है कि उसके हृदयमे अन्तर्नाद नामक कोई वस्तु ही नही है।

तो फिर आदमी जब-जब दु.खो या जुल्मोको देखे तो क्या करे? जैक्स साहबका कहना है:

> मेरे लिए इन दो मे से एक ही रास्ता है कि या तो प्रयोग करूँ या हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहूँ। इसलिए वस्तुस्थितिका जितना ज्ञान प्राप्त किया जा सके, उसे प्राप्त करके अपने प्रयोग करना ही मेरा धर्म हो जाता है। परन्तु इसमे अपने हिसावमे कही भूलकी गुँजाइशकी आशका तो रहती ही है। कयामतके दिन भी अगर मुझसे कहा जाये कि तुम्हारे प्रयोग मिथ्या है तो भी मै बचे हुए क्षण इन प्रयोगोको पूर्ण करनेमे ही बिताऊँगा। जो वस्तु मुझे सत्य जान पडती है, उसे क्रियान्वित करनेके लिए मै अपने विशिष्ट प्रयोगोमे भूल करनेका खतरा भी उठा लूँगा।

श्री जैक्स ऐसा मानते हैं; और हम देखते है कि यो भूल करनेका खतरा उठा कर किये गये प्रयोगोसे कितने ही सत्योका पता लगाया जा सका है, क्योकि ऐसी भूलके मूलमे शुद्ध हेतु होता है, सत्यकी उपासना होती है। और अनजाने हुई भूल कालान्तरमे विस्मृत हो जाती है।

मनुष्यको 'भूलका पुतला' कहा गया है। स्वराज्यकी एक व्याख्या है 'भूले करनेका अधिकार' और यह व्याख्या सच्ची है। मै जबतक भूलका दर्शन न करूँ, तबतक तो मै जिसे सत्य मानता हूँ, मुझे उसी धर्मका आचरण करना चाहिए; अगर बाहरी दबावके कारण मैने जिसे सत्य माना है, उसका आचरण न करूँ तो मेरी भीरुता, और जिसे मै अपनी हदतक असत्य मानता हूँ, वे दोनो मुझे कुतर खायेगे।

इसके अलावा श्री जैक्स यह भी सुझाव देते है कि जिस समाजमे बाहरसे घडे हुए नीति-नियम ही प्रमाण गिने जाते हैं, वहाँ भले ही एक तरहकी सुव्यवस्था देखनेमे आती हो और लोग बाह्य सुखोका उपभोग करते हो, किन्तु वहाँ समाजमे से वीरता, प्रयत्न, निर्भयता, शोधकी प्रवृत्ति विलुप्त हो जाती है, और इससे उन्नतिका मार्ग बद हो जाता है। महान सिद्धान्तोका महत्त्व उनके अर्थकी अपरिमिततामे छिपा रहता है। इस अपरिमित खानको खोदते ही रहें, तभी ऐसे सिद्धान्तोसे ससार शोभायमान हो सकता है और आगे बढ सकता है। किन्तु हमारा आजका समाज बेडियोमे जकडा हुआ-सा लगता है। अपने पूर्वजोका गुण-गान करने और कुछ शुष्क बाह्याचारोके पालनमे धर्मकी मर्यादा सिमट गई-सी जान पडती है।

किन्तु धर्म कोई ऐसी जड वस्तु नही है। अहिंसा चेतन-तत्त्वसे युक्त प्रचण्ड शक्ति है। उसके अन्त या विस्तारको कोई माप नही सका है, माप भी नही सकेगा।

अहिंसाका अर्थ है विश्वप्रेम, जीवमात्रके प्रति करुणा और उससे उत्पन्न होनेवाली वह शक्ति जो अपनी देह तकको होम कर देनेकी क्षमता रखती हो। ऐसा प्रेम प्रकट होनेतक बहुत-सी भूले हो तो भी इस धर्मके विस्तारकी शोधको तिलाजलि नही दी जा सकती। शुद्ध मार्गकी खोजमे होनेवाली भूले भी हमे उस मार्गकी खोज-मे एक कदम आगे ले जाती है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, ४-११-१९२८

२३. सत्याग्रह आश्रम

इस आश्रम नियमावलीका[1] मसौदा कुछ ही दिन पहले 'नवजीवन'मे प्रकाशित किया गया था। उसके बारेमे बाहरके लोगोकी राय माँगी गई थी। आश्रममे भी उसपर काफी चर्चा चली तथा उसमे महत्त्वपूर्ण फेरफार करनेके सुझाव प्राप्त हुए। कुछ-एक सुझावोपर अमल भी प्रारम्भ किया गया। मगर उन्हे प्रकाशित करनेका अवसर मिलनेके पहले ही अखबारोमे भडकानेवाली काल्पनिक खबरे छपने लगी। इसलिए हाल मे जिन परिवर्तनोका प्रयोग चल रहा है, उन्हे पाठकोके[2] सामने रखना मेरे लिए आवश्यक है।

सत्याग्रह आश्रमका नाम गुणवाचक रखे जानेके कारण आश्रममे हमेशा सत्यका ही अनुसरण करने, उसीके आधारपर चलनेका प्रयत्न किया जाता रहा है। हम उसमे हमेशा सफल ही हुए हो सो नही कहा जा सकता। ऐसा दावा भी नही किया जा सकता कि आश्रममे सभीने सदा सत्यकी ही आराधना की है। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि यहाँ कुल मिलाकर सत्यका ही अनुसरण किया गया है। कठिन प्रसगोपर भी बहुतोने, जिनमे छोटे-बडे सब शामिल है, सत्यका पालन किया है।

सत्यका आग्रह रखते हुए आचरण करते-करते आश्रमवासियोने अपनी एक त्रुटिको समझा। सत्याग्रह आश्रमके अनुरूप नियमोका सूक्ष्म रूपसे सख्तीके साथ पालन करनेमे बहुतसी कठिनाइयोका अनुभव हुआ। धीरे-धीरे समय बीतनेपर कतिपय नियमोका जो सूक्ष्म अर्थ हमारी पकडमे आया और हमने देखा कि उनका तदनुसार पालन करनेकी शक्ति हममे नही है, इसलिए हम इस निश्चयपर पहुँचे कि उन नियमोको कायम तो रखा जाये किन्तु आश्रमका नाम बदल डाले। सत्याग्रह आश्रमके अनुरूप परिग्रहकी इच्छा मनमे भी न हो, किसीकी ऐसी मानसिक स्थिति शायद ही देखनेको मिली। सत्याग्रह आश्रमके योग्य सत्यका पालन करनेमे स्वप्नमे भी प्रमाद नही होना चाहिए ऐसा माननेपर भी अतिशयोक्तिके दोषोमे से बचना मुश्किल जान पडा। ब्रह्मचर्यके पालनमे मनोविकार भी न होने चाहिए, यह समझते हुए भी मन

१. देखिए खण्ड ३६, पृष्ठ ४१९-२१।
२. देखिए "महात्मा होनेका नुकसान", ८-११-१९२८ भी।

पर अपना काबू हम बहुत कम देख सके। सत्याग्रह आश्रमके योग्य अहिंसाका पालन करनेके लिए हममे क्रोध न होना चाहिए, एक दूसरेके प्रति ईर्ष्या न होनी चाहिए। यदि चोर आये तो उसे प्रेमपूर्वक भेटनेकी शक्ति हममे होनी चाहिए और हममे इतना आत्मबल होना चाहिए कि सर्पादि भले ही हमे काटे, मगर हम उन्हें न मारे। इस अहिंसासे हमने अपनेको दूर पाया। इस विचारधाराके कारण हमने सोचा कि सत्याग्रह आश्रमको आदर्श रूपसे चला कर, उसकी सभी बाह्य प्रवृत्तियोको दूसरे नामसे चलाये। सत्याग्रह आश्रमका बाह्य स्वरूप रहा है निरन्तर उद्यम और उद्योग; और यह दावा किया जा सकता है कि यहाँ उद्यम अथवा उद्योग भलीभाँति किया जाता रहा है। इसलिए उसे सत्याग्रह आश्रमके बदले उद्योग मन्दिर नाम दिया गया। यह निश्चित हुआ कि सत्याग्रह आश्रम अपने सारे काम उद्योग मन्दिरको सौप दे और अपने अस्तित्वके लिए आवश्यक, प्रार्थना करनेका जो छोटा-सा खुला मैदान है, उसे रख ले।

इसपर हालमे कोई एक महीनेसे अमल हो रहा है। मन्दिरका कार्यवाहक मण्डल जो फेरफार करना चाहे उसे उन्हे करनेका पूरा अधिकार है। मगर तो भी उसने खूब सोच-विचार कर आश्रमके ही नियमोका पालन करनेका निश्चय किया है। केवल वे नियम अब उसके सामने आदर्शरूपमे रहेगे और प्रत्येक सदस्य उन नियमोके पालनका प्राणपणमे निरन्तर प्रयत्न करता रहेगा। खबर छपी है कि अबसे ऐसे स्त्री-पुरुष भी आश्रममे रह सकेंगे जो ब्रह्मचर्यका पालन करनेको तैयार नही है, वह बिलकुल निराधार है। प्रबन्धक समितिने इस विषयपर विशेष रूपसे विचार करके निश्चय किया है कि ब्रह्मचर्यके बिना उद्योग-मन्दिरको यज्ञके भावसे चलाया ही नही जा सकता। आश्रममे मनचाहे कार्यक्रमोको स्थान नही दिया जा सकता, बल्कि वही कार्य हाथमे लिए गये है, जिनसे जनताके गरीब तबकेको लाभ पहुँच सकता है, जिनसे उनकी आर्थिक स्थितिमे सुधार और उन्नति हो सकती है। प्रबन्धक समितिने दृढतापूर्वक एकमतसे यह निश्चय किया है कि ऐसी प्रवृत्तियाँ तभी चल सकती है जब कि उनके चलानेवाले स्त्री-पुरुष ब्रह्मचारी हो। और यह सही है। आश्रममे कोई भी काम रुपयेके लाभकी दृष्टिसे नही चलाया जा सकता। कोई विशेष कार्यक्रम जनताके बीच कैसे चल सकता है इसी दृष्टिसे उसका अभ्यास किया जाता है। अपनी वशवृद्धि या भोग भोगनेमे लगे हुए स्त्री-पुरुष यह शिक्षा न तो स्वय ग्रहण कर सकते है और न दूसरोको दे सकते है।

इसलिए साराश यह निकला कि सत्याग्रह आश्रमके जो नियम है और उन नियमोके अनुसार आज जो लोग काम कर रहे है, वही उन कामोको उद्योग-मन्दिरके नामसे चलायेगे। नाम बदल देना नम्रता और सत्यकी खातिर आवश्यक था। कार्यकर्त्ताओमे आत्मविश्वास उत्पन्न हो जानेपर वे फिरसे उसका नाम 'सत्याग्रह आश्रम' रख ले सकेंगे।

हाँ, एक उल्लेखनीय परिवर्तन और हुआ है, जिसे सत्याग्रह आश्रममे करना असम्भव जान पडता था। आश्रममे एक ही भोजनालय चलानेका प्रयत्न कोई तीन महीनेसे चल रहा है। आश्रमके नियमोमे अस्वाद व्रत भी है। उसके अनुसार

रसोईमे मसाले वगैरह त्याग दिये गये थे। यह त्याग कितने ही लोगोको बहुत कठिन जान पडा किन्तु सयुक्त भोजनालय बद करना भी उचित नही जाना पडा। इसलिए उसे बनाये रखकर, बिना मसालेका और मसालेदार, दोनो तरहका खाना बनानेकी व्यवस्था की गई। जब कुटुम्ब अलग-अलग रसोई बनाते थे तो वे आश्रममे मसालोका उपयोग करते थे। नई नियमावलीके अनुसार सयुक्त रसोईमे मसालोको कोई स्थान नही था, किन्तु अब वे काममे लाये जाने लगे है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, ४-११-१९२८

२४. पत्र : जहाँगीर बी० पेटिटको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
४ नवम्बर, १९२८

१३ वर्ष पूर्व आप मुझे अन्धोके पालन-पोषण और शिक्षणसे सम्बन्धित सस्था तथा जे० जे० पारसी अस्पताल दिखाने ले गये थे। जूनागढसे मेरे पास एक अर्ध-अनाथ युवक आया है। उसके पिताकी मृत्यु हो गई है, माँ जीवित है। उनके पास जीविकोपार्जनका कोई साधन नही है। किसी व्यक्तिने यह कहकर उन्हे मेरे पास भेजा है कि मै सम्भवत उनके लिए कोई ऐसी सस्था ढूँढ सकूँ जो इस युवकको अपने यहाँ आश्रय दे सके और कुछ शिक्षा दे सके। उसे गुजरातीके अलावा और कोई भाषा नही आती। क्या आप मुझे जल्दीसे-जल्दी सूचित कर सकेंगे कि आपकी सस्था इस युवकको आश्रय दे सकती है या नही।[1] सात वर्ष पूर्व उसे बडे जोरकी चेचक निकली थी, जिसमे उसकी आँखे जाती रही।

विधवा माँ और उसका अन्धा बेटा इस समय यहाँ अहमदाबादमे टिके हुए है। मै आशा करता हूँ कि यह नवयुवक आपकी सस्था-जैसी किसी लोकोपकारक सस्था द्वारा अपने जीवनकी आकाक्षा पूरी कर पायेगा।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत जहाँगीर बी० पेटिट
आरगेनाइजर ऑफ द इन्स्टीट्यूशन फॉर द सपोर्ट
एण्ड इन्स्ट्रक्शन ऑफ ब्लाइंड
पेटिट भवन, ३५९ हार्नबी रोड
फोर्ट, बम्बई।

अंग्रेजी (एस० एन० १२९८४)की फोटो-नकलसे।

१. ७ नवम्बर, १९२८ के पत्रमें जहाँगीर बी० पेटिटने उत्तरमें यह लिखा कि वे बालकको तारदेव-स्थित विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल फॉर द ब्लाइंडमें लेनेको तैयार है, बशर्ते कि स्कूलके नियमोंके अधीन वह अस्पृश्य न हो।

२५. पत्र : मीराबहनको

साबरमती
[५ नवम्बर, १९२८][1]

चि० मीरा,

उम्मीद है, तुम्हे मेरा तार[2] मिल गया होगा। तुम्हे अपने-आपको थकाना [नही][3] चाहिए। भाग-दौड करनेकी कोई जरूरत नही है। और अपने स्वास्थ्यके लिए तुम्हें जिन चीजोकी निश्चित तौरपर जरूरत है, उन्हे हर हालतमें लो। मेरी वीमारीके बारेमे कोई खबर पढकर चिन्तित मत होना। मुझे हलका-सा मलेरिया हो गया था। आज बिलकुल ठीक हूँ।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीरावाई
खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर, विहार

अंग्रेजी जी० एन० ८२१२ एव (सी० डब्ल्यू० ५२२२)से।
सौजन्य : मीराबहन

२६. पत्र : प्रताप एस० पण्डितको[4]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
५ नवम्बर, १९२८

प्रिय प्रताप,

मेरे अनुरोधका उत्तर देनेमे इतनी तत्परता दिखानेके लिए धन्यवाद। हाँ, सुरेन्द्रजी आश्रमके सबसे पुराने और विश्वस्त लोगोमे से है। उन्होने मुझे अपने पत्रमे लिखा है कि आपका व्यवहार बडा सौजन्यपूर्ण रहा, लेकिन उन्होने यह भी लिखा कि उस भेदको, जो कि स्पष्टत: उनके मनमे है, छिपाकर रखनेका बन्धन वे नही

१. डाककी मुहरसे।

२. देखिए "तार : मीराबहनको", ३-११-१९२८।

३. स्पष्ट है कि मूलमें अनजाने ही यह भूल रह गई थी।

४. १ नवम्बर, १९२८ (एस० एन० ११३९९)के अपने पत्रमें प्रताप एस० पण्डितने लिखा था: "श्रीयुत सुरेन्द्र आपका परिचय पत्र साथ लाये है — मैं समझता हूँ कि वे काफी समयसे आपके आश्रममें हैं और इसलिए हम उनपर विश्वास कर सकते है कि वे हमारे प्रतिद्वन्द्वियोंको हमारे भेद नहीं देंगे।"

चाहते। सच तो यह है कि आश्रममे किसी भी धन्धेका कोई गुर छिपा कर रखनेकी मनाही है। लेकिन अगर कोई आश्रमके लोगोको विश्वासमे लेकर कोई जानकारी देगा और उसे गोपनीय रखना चाहेगा तो उसका आदर तो वे लोग स्वभावत. करेगे ही। खैर, शायद आपके पास सिखानेको दूसरी बहुत सारी बाते है और आप वह सब सिखानेके बाद ही अपने धन्धेका असली गुर बताना चाहेगे। इस बीच मै उनके साथ पत्र-व्यवहार करूँगा और उनसे आपको वचन देनेको कहूँगा। जब वे आपको वचन दे देगे तब आप पूरा भरोसा रख सकते है कि वचनका पूरी निष्ठाके साथ पालन किया जायेगा। वह दिन मेरे लिए कितनी खुशीका होगा, जब आप सुरेन्द्रजीको इस बातका प्रमाणपत्र दे देगे कि वे, जिस तरहका चर्म-शोधनालय मै चाहता हूँ, उसे सँभाल सकते है और आप जानते ही है मै किस तरहका चर्म-शोधनालय चाहता हूँ।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत प्रताप एस० पण्डित
वेस्टर्न इंडिया टैनरीज लिमिटेड
पोस्ट बॉक्स सं० ४०३, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० ११४००)की फोटो-नकलसे।

२७. पत्र : महादेव देसाईको

[५ नवम्बर, १९२८][1]

चि० महादेव,

इस बार यह पत्र मैंने तुम्हे समयसे लिखनेकी सावधानी नही रखी। मेरे बीमार होनेकी खबर सुनो तो घबराना नही। कल कुनैन ली है। आज बुखार नही है। उम्मीद है कि अब नही आयेगा।

पिछले हफ्ते आखिर आत्मकथाका अनुवाद नही मिला। लेकिन प्यारेलाल इस समय अनुवादका ढेर लगा रहे है इसलिए बहुत चिन्ता नही है—यद्यपि वे और सुब्बैया, दोनो बीमार कहे जा सकते है। सुब्बैयाको आज बुखार है। निर्मलाको भेज दिया जाये, ऐसा पत्र आया है। बीमारीमे मदद करनेके खयालसे। दुर्गाने फिरसे पूछा है [कि क्या भेजना नितान्त जरूरी है।] बिलकुल जरूरी हो तो भेज दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री महादेव देसाई
स्वराज आश्रम, बारडोली

गुजराती (एस० एन० ११४३)की फोटो-नकलसे।

१. डाककी मुहरसे।

२८. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

मौनवार, ५ नवम्बर, १९२८

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारे पत्र मिले है। पूरक सामग्री मै पूरी तो नही पढ पाया।

लगता है महादेवने तुम्हे मेरा सन्देश दिया नही। यहाँ डबल-रोटी बनानेका प्रयोग चल रहा है। शहदके उत्पादनका प्रयोग चलाना है। ब्रेडमेकिंग [रोटी बनाने][1] और बी-कीपिंग [मधुमक्खीका पालन][2] पर कुछ अच्छी पुस्तके ढूँढकर भेज देना। रोटी बनानेकी पुस्तकके बारेमे मैंने महादेवको लिखा था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७०७)की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

२९. पत्र : विलियम स्मिथको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
७ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र पाकर बडी प्रसन्नता हुई। पशुओको न्याय दिलानेसे सम्बद्ध कौसिल की रिपोर्ट मै देख गया हूँ। मै नही समझता कि जिस ढगका काम यह कौसिल करती है, वैसा काम भारतमे कुछ ज्यादा पसन्द किया जायेगा[3], लेकिन यदि कौसिलका कोई एजेट भारत आये और पशुओका वध करनेवाले लोगोको समझाये कि वे पशुओका वध करनेमे मानवीय और कम कष्ट देनेवाले तरीकोसे काम ले तो मुझे इसमे कोई हर्ज नही दिखाई देता।

मुझे अपना यह वादा बराबर याद रहा है कि मै हमारे यहाँकी दुग्धशालाके सम्बन्धमे एक लेख आपको दूँगा। मुझे उम्मीद है, मै किसी न किसी दिन यह वादा अवश्य पूरा करूँगा। मै आश्रमके आन्तरिक संगठनके कार्यमे और अन्य बातोंमे

१ और २. गांधीजीने मूलमें अंग्रेजी शब्दोंका ही प्रयोग किया है।

३. विलियम स्मिथने अपने पत्रमें पूछा था : "क्या इस तरहकी किसी संस्थाके भारतमें काम करनेकी सिफारिश की जा सकती है।"

इतना ज्यादा व्यस्त रहा हूँ कि आपके लिए जो रिपोर्ट तैयार करनेका वादा किया था, उसके लिए कुछ घंटोका समय भी नही निकाल सका।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत विलियम स्मिथ
इम्पीरियल डेरी एक्स्पर्ट
बंगलोर

अंग्रेजी (एस० एन० १२९२५) की माइक्रोफिल्मसे।

३०. तार : आर्य समाज, सुआको[1]

[७ नवम्बर, १९२८ या उसके पश्चात्]

आर्य समाज
सुआ

बछडा घोर पीडा से मरा जा रहा था। डाक्टरकी सलाह और मददसे उसे बिना कोई कष्ट दिये मार दिया गया।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १४७२३) की माइक्रोफिल्मसे।

३१. अवश्यंभावी

धन्यवाद! हमला जानबूझकर और अकारण किया गया। दो जगह गहरी चोटें लगीं, एक बाईं तरफ छातीपर और दूसरी कन्धेपर, लेकिन संगीन नहीं। बाकी वार मित्रोंने बचाये। सत्यपाल, गोपीचन्द, हंसराज, मुहम्मद आलम और अन्य मित्रोपर भी हमले हुए और उन्हे चोटें आईं। चिन्ता करनेकी कोई बात नहीं। — लाजपतराय।

मैंने लालाजीको बधाईका और पूरी जानकारी प्राप्त करनेके लिए जो तार[2] भेजा था, उसके उत्तरमें लालाजीने अविलम्ब यह तार दिया है। लालाजीने पंजाब केसरीकी उपाधि उस समय अर्जित की जब वर्तमान पीढीके अधिकांश लोग अपनी

१. यह तार ७ नवम्बर, १९२८ को प्राप्त एक तारके उत्तरमें दिया गया था। उस तारमें कहा गया था, "**फीजी टाइम्स** का कहना है कि आपने एक बछड़ेको मारनेका आदेश दिया। इससे हिन्दू लोग क्षुब्ध हैं। सचाईकी जानकारी तार द्वारा दें।"

२. देखिए "तार : लाला लाजपतरायको", १-११-१९२८।

किशोरावस्थामे ही थे। वे अभीतक अपनी इस उपाधिको सार्थक बनाये रहे हैं। क्योकि उनके बारेमे और उनके विरुद्ध चाहे जो कहा जाये, वे अब भी पंजाबके निर्विवाद नेता और भारतके प्यारे तथा सम्मानित नेताओमे से एक है। वे राष्ट्रीय काग्रेसके अध्यक्ष रहे है, यूरोप तकमे उनकी ख्याति है और वे उन चन्द लोकसेवी जनोमे से है, जो गलत समझे जाने और अक्सर विवेकरहित कहे जानेका खतरा उठाकर भी अपने मनकी बात साफ कह देते है। वे अपनी इस आदतको छोडनेवाले नही है, क्योकि वे अपने मनमे कुछ रख ही नही सकते। वे जैसा सोचते है, वैसा अवश्य बोलेगे। इसलिए जब मैंने अखबारोमे 'लालाजीपर हमला' शीर्षक देखा और पढनेपर मुझे यह मालूम हुआ कि कैसे और क्यो उनपर हमला हुआ, तब मैं सहसा कह उठा: बहुत खूब! अब हमे स्वराज्य मिलनेमे देर नही लगेगी। क्योकि क्रान्ति चाहे अहिंसात्मक हो अथवा हिंसात्मक, इसमे कोई सन्देह नही कि देशके लिए मर मिटनेकी कला सीखनेके बाद ही हम अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकेगे। जबतक हम पूरा प्रयत्न नही करेगे तबतक सत्ताधारी अहिंसात्मक तरीकोके दबावके आगे भी नही झुकेगे। आदर्श और पूर्ण अहिंसाके द्वारा मै सत्ताके स्वरूपमे सम्पूर्ण परिवर्तनकी कल्पना कर सकता हूँ। लेकिन जहाँ सर्वागपूर्ण कार्यक्रमकी कल्पना सम्भव हो वहाँ भी कार्यक्रमको पूरी तरहसे क्रियान्वित करना सम्भव नही है। इसलिए यदि नेताओपर हमला किया जाता है अथवा उनपर गोली चलाई जाती है तो यह हमारे लिए बहुत लाभकी चीज होगी। अभीतक अप्रसिद्ध व्यक्तियोपर ही हमले होते रहे है, या ऐसे ही व्यक्तियोकी जाने ली जाती रही है। यदि कुछ लोगोको गोलीका शिकार भी बना दिया जाता तो लोगोका ध्यान उसकी ओर भी जितना आकर्षित होता, उससे कही ज्यादा लालाजीपर हमला होनेकी वारदातकी ओर आकर्षित हुआ। लालाजी और अन्य नेताओपर हुए हमलेने भारतके उन लोगोको सोचनेपर मजबूर कर दिया है जो राजनैतिक दृष्टिसे सजग है, और इससे सरकार भी अवश्य ही चिन्तित हो उठी होगी। मेरा मन यह माननेको नही होता कि स्थानीय सरकारको एक पूरे संगठनके रूपमे इस हमलेकी योजनाकी पहलेसे कोई खबर थी। यदि वह जानती थी और हमला जान-बूझकर और सोच-विचार कर किया गया है, जैसा कि पहले किया जाता था, तो यह सरकारके हकमे और भी बुरा है। तब तो सरकारका चिन्तित होना चिन्तित होनेका ढोग ही हो सकता है। सामान्य परिस्थितियोमें मै ऐसी सम्भावनाकी चर्चा नही करता, लेकिन सरकारके बारेमे मेरा जो विचार है—और यह विचार अनुभवपर आधारित है—उसके अनुसार जहाँ मुझे यह जानकर दु.ख होगा कि हमला जान-बूझकर और योजनापूर्वक किया गया था, वही ऐसा कुछ पता लगनेपर भी मुझे आश्चर्य नही होगा। मै स्वीकार करता हूँ कि पुलिसने जो झूठी कहानी गढी है, उसकी बात न ले तो भी वहिष्कार, चाहे वह कितना ही शान्तिपूर्ण क्यो न हो, सरकारको उत्तेजित कर देनेके लिए अपने आपमे एक पर्याप्त कारण था। मै पुलिसके बयानको झूठा इस लिए कहता हूँ कि पुलिस अपनी सहायताके लिए भले ही अपने क्षुद्र स्वार्थकी सिद्धि

करनेवाले गवाहोंकी एक पूरी फौज खड़ी कर ले, लेकिन उसके मुकाबले मैं लालाजीकी बातका सदैव अधिक विश्वास करूँगा। यदि मुझे इस बातका विश्वास न हो गया होता कि यह शासन-प्रणाली जोर-जबरदस्ती और फरेबपर आधारित है तो मैं आज जैसा पक्का असहयोगी बन गया हूँ, वैसा न बना होता। दरअसल लोवस डिकिनसनने तो युद्ध और उसके कारण तथा निराकरणपर लिखे अपने लेखमें यथेष्ट प्रमाण देकर यह दिखाया है कि युद्ध छल-कपटके बिना चल ही नहीं सकता। इसके साथ ही, यह भी कहना गलत न होगा कि हमारी यह सरकार, जो तलवारके बलपर भारतको वशमें रखनेका दावा करती है और जिसकी नींव फरेबपर ही रखी गई थी, इन दोनों चीजोंमें से किसीके बिना नहीं चल सकती, बशर्ते कि उसमें आमूल परिवर्तन न हो जाये और उसका आधार लोकमत और जनताका विश्वास न बन जाये।

हमें यह भी नहीं समझ लेना चाहिए कि इस कमीशनके कार्य-कालमें सरकार पंजाबमें हुई इस घटनाकी पुनरावृत्ति करनेकी बर्बरता आगे नहीं करेगी। साइमन कमीशनका बहिष्कार सरकार और कमीशन दोनोंके लिए एक रिसता हुआ जख्म है। सर जॉन साइमन और उनके सहयोगी इस बहिष्कारके देखते हुए शान्तचित्त होकर नहीं बैठे रह सकते। उनमें पराजय स्वीकार करनेका साहस नहीं है। पंजाबके नेताओंपर जो अकारण हमला हुआ है, उससे खुद बहिष्कार ज्यादा जोर पकड़ गया है। इसलिए सरकार अब यथा सम्भव सभी उपायोंसे बहिष्कारका दमन करना अपना कर्त्तव्य समझेगी। अतएव पंजाबकी घटनाको मैं शक्तिकी प्रथम परीक्षा मानता हूँ — हिंसाकी शक्तिके मुकाबले अहिंसाकी शक्तिकी परीक्षा। पुलिस द्वारा उत्तेजित किये जानेके बावजूद लालाजीको अपने पीछे खड़े विशाल जनसमूहको नियन्त्रणमें रखनेमें कोई कठिनाई नहीं हुई। और इस अवांछनीय कमीशनके भारतमें रहनेतक यदि अहिंसाकी इस नीतिका सफलता और कुशलताके साथ पालन किया जा सके तो सरकारकी बहुत-सी गतिविधियाँ अपने आप खत्म हो जायेंगी। इसलिए राष्ट्रकी सेवा करनेवाले लोगोंसे मैं इस घटनासे जो शिक्षा लेनेकी अपेक्षा रखूँगा वह यह है कि इससे हताश या स्तम्भित रह जानेके बजाय, इसे वे उस कामका एक हिस्सा समझें जो उन्हें करना है और इस मदान्धतापूर्ण हमलेसे उत्पन्न क्षोभको एक सजीव शक्तिका रूप दें तथा उसका पोषण-परिवर्धन और हमारे भावी कार्योंके लिए उसका उपयोग करें।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ८-११-१९२८

३२. तथ्य और कल्पना

एक मित्रने मुझे 'पायनियर'मे से एक कतरन भेजी है। कतरनके अनुसार यह मुझसे हुई एक भेट वार्ताका विवरण है। मैंने बम्बईके समाचारपत्रोमे प्रकाशित एक और समाचार भी पढा है, जिसमे एक अन्य विवरणका साराश दिया गया है। इन दोनोको पढकर मुझे बहुत दु.ख हुआ है। इन विवरणोको तैयार करनेवाले है श्री वाइल्ड।[1] बहुत अच्छा होता यदि उन्होने अपने विवरण प्रकाशित करनेसे पहले मुझको उनके प्रूफ भेज दिये होते। 'इग्लिशमैन'के स्वर्गीय साडर्स जिन व्यक्तियोसे उनके सवाददाता भेट किया करते थे उन व्यक्तियोके पास सशोधन या पुष्टिके लिए भेट-वार्ताके विवरणके प्रूफ भेज दिया करते थे। कितना अच्छा हो, अगर सब लोग उनकी इस प्रशंसनीय और वाछनीय आदतका अनुकरण करे। श्री वाइल्डके लिए ऐसा करना इसलिए और भी जरूरी था कि वे अपने प्रमुखकी ओरसे एक सम्मानित अतिथिके रूपमे आश्रममे आये थे और जिस समय वे मुझसे बातचीत कर रहे थे, उस समय उन्होनें उसकी कोई टीपे नही ली थी। वैसे तो देखा गया है कि होशियार सवाददाता बिना कोई टीप लिये भी अपनी याददाश्तसे, वे जो-कुछ सुनते है, उसका ठीक-ठीक साराश तैयार कर लेते है, लेकिन होशियारसे-होशियार सवाददाता भी भेट-वार्ताकी टीप लिये बिना उसे शब्दश. प्रस्तुत नही कर सकता। श्री वाइल्ड-से दोनो तरहके अपराध हुए है — जो करना चाहिए था उसे न करनेका भी और जो न करना चाहिए था उसे करनेका भी। उन्होनें मुझे प्रूफ नही भेजे और यद्यपि उन्होने कोई टीपे नही ली, फिर भी उन्होने विवरणमे ठीक-ठीक मेरे ही शब्दोको प्रस्तुत करनेका दावा किया है। परिणाम यह कि एकके बाद एक कई गलतबयानियाँ हो गई है, जो बडे दु खका विषय है। कई दृष्टियोसे तो ये विवरण तथ्यका उपहास-मात्र है।

फिर भी, मै इन रिपोर्टोके बारेमे विस्तारसे चर्चा नही करना चाहता। मै सिर्फ एक ही शरारतभरी गलतबयानीका प्रतिवाद करके सन्तोष कर लूँगा। श्री वाइल्डने मेरे मुँहसे कहलवाया है कि "आज भारतमे ऐसा कोई व्यक्ति नही है जिसे मै राष्ट्रीय नेता कह सकूँ।" मै कभी भी ऐसी झूठी, अहकारपूर्ण और धृष्टता-पूर्ण बात नही कह सकता। भारतके सौभाग्यसे आज उसके पास एक नही, अपितु बीसो ऐसे राष्ट्रीय नेता है जो अपनी नेतृत्व-शक्तिका अच्छा परिचय देनेमे सक्षम है और जिन्हे मुझसे अथवा किसी भी व्यक्तिसे किसी प्रकारके प्रमाणपत्रकी जरूरत नही है। कदाचित् श्री वाइल्डने उत्तराधिकारीके प्रश्नको नेताओके प्रश्नके साथ गड-बडा दिया है। जब उन्होने मेरे सम्मुख उत्तराधिकारीका प्रश्न रखा, तो मै उस प्रश्नको सुनकर भौचक्का रह गया। क्योकि मैंने उत्तराधिकारियोके बारेमे कभी सोचा

१. देखिए "पत्र : रॉलैंड जे० वाइल्डको", १४-११-१९२८।

ही नही है। मै मानता हूँ कि जब किसी उत्तराधिकारीकी आवश्यकता होगी तब वह विना किसी प्रयत्नके मिल जायेगा। लेकिन उत्तराधिकारी तो एक गरीब भगी अथवा कतैया भी हो सकता है। इसके लिए उसे नेता बननेकी जरूरत नही। एक बार जब मुझसे अपने उत्तराधिकारीका नाम लेनेको कहा गया था, तब मैंने मौलाना मुहम्मद अलीकी बेटी गुलनारका नाम लिया था। लेकिन अब वह भी इस स्पृहणीय स्थानको ग्रहण करनेके योग्य नही रह गई है। अब वह बच्ची नही है। उत्तराधिकारीके सम्बन्धमे मेरे विचार आज भी उतने ही पुराने ढगके है जितने कि आजसे सात साल पूर्व थे जब यह प्रश्न मुझसे पहले-पहल पूछा गया था।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ८-११-१९२८

३३. महात्मा होनेका नुकसान

किसी महात्माकी कठिनाइयाँ और मुसीबते उन लोगोकी कठिनाइयो और मुसीबतोसे, जिनके नामके साथ श्रीमान या श्रीयुत जुडा रहता है अथवा जिन्हे सरकारकी ओरसे 'नाइट' या 'बैरोनेट' की उपाधि मिलती है, कम गम्भीर नही होती, बल्कि अक्सर तो बहुत ज्यादा गम्भीर होती है। अपने जीवनमे मुझे अनेक बार विरोध-भावसे आलोचना करनेवालोके द्वारा खडी की गई ऐसी कठिनाइयो और मुसीबतोसे जूझना पडा है, और ऐसी आलोचनाका कारण अक्सर यह रहा है कि अगर मुझसे सम्बन्धित कोई अफवाह कही अखबारोमे छप जाती है तो मित्रगण खुद जाँच-पडताल करके सचाईका पता लगानेकी तकलीफ उठाये बिना उस अफवाहको परम सत्य मान लेते है।

अब अखबारोमे सत्याग्रह आश्रमके विषयमे जो-कुछ छपा[1] है उसका कोई भी विश्वसनीय आधार नही है। जब आश्रममे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करनेका फैसला किया गया तो इस विषयमे सदस्योके बीच मतभेद था कि इस महान परिवर्तनको आजमा कर देखे बिना जनताको इसके अपनाये जानेकी सूचना दी जाये अथवा नही। मैंने अपने कतिपय विश्वस्त सहयोगियोकी इस स्पष्ट इच्छाको स्वीकार कर लिया कि अभी परिवर्तनकी घोषणा न की जाये। मगर उनकी सलाह मानते समय भी मै जानता था कि इसका परिणाम क्या होगा। मै जानता था कि मुझसे सम्बन्धित कोई भी चीज पत्र-सवाददाताओकी नजरोसे नही बच सकेगी। जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, वह सर्वथा भ्रामक है।

इससे सम्बन्धित सीधे-सादे तथ्य इस प्रकार है:

आश्रमके नियम-विधानमे, सिवाय उसके नामके, और किसी बातमे कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नही किया गया है। रिपोर्टमे ब्रह्मचर्यके नियममे परिवर्तन किये जानेकी बात भी छपी है। जहाँ कुछ हलकोसे इस परिवर्तनके लिए मुझे अकारण ही बधाइयाँ

१. देखिए "सत्याग्रहाश्रम", ४-११-१९२८ भी।

मिली है, वहाँ कुछ मित्रोने इसपर बड़ी चिन्ता व्यक्त की है। मगर सचाई यह है कि ऐसा कोई परिवर्तन कभी किया ही नही गया। मैंने यह बात पूरी तरह अपने सहयोगियोपर छोड दी कि वे जैसा परिवर्तन चाहे, करे। ब्रह्मचर्य व्रतमे ढिलाई देने और प्रवन्ध समितिकी इच्छानुसार ब्रह्मचर्यका पालन करनेको जो विवाहित लोग तैयार न हो, उन्हे भी आश्रममे दाखिल करनेके प्रस्तावपर आपसमे खूब विचार-विमर्श करनेके वाद उन्होने एकमत होकर यह निर्णय किया कि यह परिवर्तन न किया जाये। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निर्णयके कारणोके सम्वन्धमे मै किसी आगामी अकमे लिखूँगा।

जिस दूसरे परिवर्तनकी खवर छपी है, वह है आश्रममे मसालोके प्रयोगका शुरू किया जाना। शुरूमे आश्रममे एक ही सामूहिक रसोईघर था और तब खाना विना मसालेके तैयार किया जाता था। वादमे जव बहुत-से परिवार आश्रममे आकर रहने लगे तो अलग-अलग रसोईघरोकी व्यवस्था कर दी गई, जिनमे वे अपनी मर्जी के मुताबिक मसालोका उपयोग कर सकते थे। लेकिन, कुछ महीने पहले यह निर्णय किया गया कि फिरसे सामूहिक रसोईघरकी व्यवस्था अपनाई जाये। हमने कुछ समय तक विना मसालेके काम चलानेकी कोशिश की, लेकिन चूँकि मैंने सघबद्ध जीवनके लिए सामूहिक रसोईकी व्यवस्थाको एक महत्त्वपूर्ण चीज माना और चूँकि अलग-अलग रसोईघरोकी व्यवस्था होनेपर बहुत-से लोग फिरसे मसाले खाना शुरू कर देते, इसलिए यह तय किया गया कि सामूहिक रसोईघरमे मसालेदार और सादा, दो तरह का खाना तैयार किया जाये। आश्रममे रहनेवाली महिलाओको जितनी सहायता और स्वतन्त्रता दरकार हो, हम उन्हे देना चाहते है। वहुत-सी महिलाएँ आश्रममे सिर्फ इसलिए आई है कि यहाँ उनके पति रहते है। वे जो-कुछ करती है, उसके पक्षापक्षको ठीकसे समझ सकनेकी क्षमता अभी उनमे नही आई है।

मेरे विचारसे वास्तविक परिवर्तन सिर्फ नामके सम्बन्धमे किया गया है। आश्रमके सस्थापकोने इस प्रश्नपर विचार करते हुए कई राते बेचैनीमे बिताई है। हम विशुद्ध सत्यके उपासक होनेका दावा करते है, और इसलिए हमे बुनियादी सत्यो-की परिभाषाओकी कुछ नई सम्भावनाएँ दिखाई दी है। इसका नाम सत्याग्रहाश्रम सोच-समझकर और उसके अर्थोको पूरा अंजाम देनेके इरादेसे ही रखा गया था। लेकिन, जब धीरे-धीरे हमे इस नामका असली अर्थ समझमे आया तो लगा कि हम इस नामके लायक नही है। इसलिए हमने विना किसी नामके बन्धनके स्वेच्छासे आत्म-सयम करनेका निश्चय किया और आश्रममे सामूहिक जीवनका विकास जिस हदतक हो पाया है, उसको ध्यानमे रखते हुए हमने एक दूसरा नाम चुना। आश्रमने और कुछ भले ही न किया हो, किन्तु उसने कमसे-कम अपने लिए किये जानेवाले श्रमकी ही नही, वल्कि सम्पूर्ण राष्ट्रके लिए श्रमकी आवश्यकता और उपयोगिता तो सिद्ध कर ही दी है। इसलिए मुझे लगा कि अबतक हमारा जितना विकास हुआ है, उसको देखते हुए सत्याग्रहाश्रमकी अपेक्षा 'उद्योग मन्दिर' अधिक सार्थक नाम है। सहयोगियोने यह सुझाव स्वीकार कर लिया, लेकिन काफी हिचकिचाहटके साथ। जिस प्रकार एक जीवन्त राष्ट्रके रूपमे भारतके विशाल जनसमुदायकी उत्कट आकाक्षा

का वोध करानेवाले शब्द स्वराज्यका सही पर्याय अंग्रेजीका 'डोमिनियन स्टेट्स,' वल्कि 'इडिपेडेस' भी नही हो सकता, उसी प्रकार 'इडस्ट्रियल होम' कभी भी उस अर्थका वोध नही करा सकता जो उद्योग मन्दिरमे छिपा हुआ है। हम चाहे जिस उद्योगको नही अपना लेते है। हम ऐसे ही उद्योगको चुनते है, जिसे एक पुनीत कार्य, एक यज्ञ, एक कुरबानीकी तरह चलाना हमारे लिए आवश्यक है। 'इडस्ट्रियल होम' से ऐसे उद्योगोके समूहका वोध होता है जो कुछ लोगोको तो ठीक लग सकते है लेकिन जो सभी लोगोके लिए ठीक नही हो सकते। 'मन्दिर' शब्दके साथ एक प्रकारकी पवित्रताका भाव जुडा हुआ है और यदि 'उद्योग' शब्दको 'भगवद्गीता' के प्रकाशमें देखे तो यही बात उसपर भी लागू होती है। इसलिए मै सद्भावनाके साथ आलोचना करनेवाले लोगोको आमन्त्रित करता हूँ कि वे अपनी कवित्व-शक्तिका प्रयोग करके अंग्रेजीका कोई मुहावरा सुझाये जो 'उद्योग मन्दिर' का बिलकुल सटीक पर्याय हो सके। जबतक कोई ठीक पर्याय नही मिलता, तबतक तो इस शब्दको अनुवादसे परे ही मानना है।

लेकिन, सत्याग्रहाश्रमका अस्तित्व सर्वथा लुप्त नही हो गया है। जहाँ यह अपनी वाहरी प्रवृत्तियोको बन्द किये दे रहा है और जिस जमीनपर आश्रम है उसका उपयोग करनेकी सुविधा उद्योग मन्दिरको दे रहा है — इस शर्तके साथ कि जब चाहे, फिर इसे अपने कब्जेमे ले सकता है — वही जिन प्रवृत्तियोको उसने आज त्याग दिया है उन्हे फिर कभी अपनानेकी क्षमता प्राप्त कर सकनेकी आशासे वह प्रार्थना-स्थलको अपने पास रख रहा है, जिसका मतलब है सबसे बडी जीवनदायिनी प्रवृत्तिको कायम रखना। सत्याग्रह आश्रम नामके साथ कुछ इतनी पावन स्मृतियाँ जुडी हुई है कि उसको समग्रत पुनरुज्जीवित कर सकनेकी आशाके बलपर ही हम नाममे किये गये उक्त परिवर्तनको स्वीकार कर पाये है।

एक बात और है जिसकी चर्चा मुझे कर देनी चाहिए। कुछ लोगोने खुलेआम, लेकिन अधिकाशने कानाफूसीमे ही, यह बात कही है कि महादेव देसाईको प्रबन्ध समितिका अध्यक्ष इसलिए नियुक्त किया गया है कि मुझपर से आश्रमवासियोका विश्वास उठ गया है और इस नियुक्तिका मतलव मनुष्यकी कमजोरीके साथ एक रियायत करना है। यह बात बिलकुल झूठी है। यदि पाठकोको इन पृष्ठोमे आश्रमका जो वर्णन पहले छपा है, वह याद हो तो वे देखेंगे कि प्रबन्ध-समितिकी नियुक्ति बहुत पहले ही हो चुकी थी। इसकी कार्यवाहीका विधिवत निर्देशन मैं बहुत दिनोसे नही कर रहा था। इसके बाद समितिके कहनेपर मै इसका सक्रिय निर्देशन करने लगा। लेकिन, जब नाममे परिवर्तन किया गया तब अध्यक्षका दायित्व कुछ हलका होता दिखाई दिया। इसलिए मै अलग हो गया और महादेव देसाई एक बार फिर इसके अध्यक्ष बन गये। लेकिन, आश्रमका वास्तविक नियन्त्रण अब भी मेरे हाथोमें है और जबतक मुझे साथियो और सहयोगियोका विश्वास प्राप्त है तबतक आगे भी मेरे ही हाथोमे रहेगा।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ८-११-१९२८

३४. ग्राम-इंजीनियर

'इकनॉमिक्स ऑफ खद्दर' नामक पुस्तकके लेखक श्री रिचर्ड बी० ग्रेग अमेरिका रवाना होनेसे पहले कुछ दिन आश्रममें ठहरे थे। उन्होंने साबरमतीमें अखिल भारतीय चरखा संघके तकनीकी स्कूलके विद्यार्थियोंके सम्मुख दो व्याख्यान दिये थे। पहला व्याख्यान सूर्यकी शक्तिके बारेमें था और इसमें उन्होंने अपनी पुस्तकके तत्सम्बन्धी अध्यायका साराश दिया था। पाठकोंसे मैं उस पुस्तकको पढ़नेका अनुरोध करूँगा और दूसरे व्याख्यानका सार जिसे एक श्रोताने तैयार किया है, नीचे दे रहा हूँ।[1]

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, ८-११-१९२८

३५. पत्र : जहाँगीर बी० पेटिटको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
८ नवम्बर, १९२८

प्रिय श्री पेटिट,

पत्रका उत्तर देनेमें तत्परता दिखानेके लिए धन्यवाद। अब मैं उस अन्धे लड़केको[2] आपके पास भेज रहा हूँ। उसका नाम दया अर्जुन है। वह जूनागढ़का रहनेवाला है। वह लुहार है, अस्पृश्य नहीं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत जहाँगीर बी० पेटिट
पेटिट बिल्डिंग
३५९, हॉर्नबी रोड, फोर्ट
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १२९८४)की फोटो-नकलसे।

१. यहाँ नहीं दिया जा रहा है।
२. देखिए "पत्र : जहाँगीर बी० पेटिटको", ४-११-१९२८।

३६. पत्र : जहाँगीर बी० पेटिटको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
८ नवम्बर, १९२८

प्रिय श्री पेटिट,

मैंने अन्धे बालकको जो पत्र[1] दिया है, उसकी एक प्रति साथमे भेज रहा हूँ। यह प्रति मै आपके फोर्टके पतेपर भेज रहा हूँ, क्योकि मूल पत्र मैंने बालकको स्कूल ले जानेके लिए कहा है। लेकिन हो सकता है कि आप अभी वहाँ न जा सके हो और आपने स्कूलमे इस सम्बन्धमे कोई हिदायत न दी हो, इसलिए मै आपको यह पत्र लिख रहा हूँ जिससे आप जो जरूरी हो वह कर दे।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १२९९०)की फोटो-नकलसे।

३७. पत्र : सत्यानन्द बोसको[2]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय सत्यानन्द बाबू,

आपका पत्र मिला। कलकत्ता आनेपर[3] तो, जैसे पहले होता रहा है, मुलाकाती और सलाह-मशविरा लेनेवाले मित्र लोग मुझे चैन नही देगे। इन दिनो मेरा स्वास्थ्य जैसा है,[4] उसको देखते हुए कलकत्ता आनेकी बात सोच कर अब भी मेरा मन काँप जाता है। इसलिए सोशल कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता करनेके भारसे मुक्त कर दे तो कृपा होगी। मै तो कलकत्ता सिर्फ पण्डित मोतीलालजीके लिए आ रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सत्यानन्द बोस
४, नन्दी स्ट्रीट, बालीगज, कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १२९८५)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. सत्यानन्द बोसके ४ नवम्बर, १९२८ के पत्र (एस० एन० १२९८५) के उत्तरमें, अपने इस पत्रमें सत्यानन्द बोसने गाधीजीसे कांग्रेस सप्ताहके दौरान कलकत्तामें आयोजित की जानेवाली 'इंडियन सोशल कॉन्फ्रेंस' की अध्यक्षता करनेका अनुरोध किया था।

३. २६ दिसम्बर, १९२८ को होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें भाग लेनेके लिए।

४. देखिए "पत्र : महादेव देसाईको", ५-११-१९२८।

३८. पत्र : शंकरनको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय शकरन,

तुम्हारे पत्र मिले। लेकिन बहुत ज्यादा व्यस्त रहनेके कारण उनका उत्तर नही दे पाया। अब मुझे तुमको आश्रमके बारेमे सब-कुछ बतानेकी जरूरत नही रह गई है। तुम सब-कुछ 'यग इडिया' और 'नवजीवन' के पृष्ठोमे देख सकोगे।

मुझे हल्का-सा बुखार हो गया था, लेकिन अब ठीक हूँ।[1]

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीयुत शकरन
विक्टोरिया लॉज
माथेरान
जिला कोलाबा

अग्रेजी (एस० एन० १२९९१) की फोटो-नकलसे।

३९. पत्र : करीम गुलाम अलीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपने जिस तरहके हस्तक्षेपका सुझाव दिया है, किसी इतर धर्मवालेके द्वारा वैसा हस्तक्षेप करनेका निश्चय ही गलत अर्थ लगाया जायेगा और वह बेमानी साबित होगा। उदाहरणके लिए, वैष्णव महाराजाओके कुकृत्योके बारेमे किसी प्रसिद्ध ईसाई धर्मवेत्ताकी सन्तुलित रायका हिन्दुओके लिए क्या महत्व हो सकता है?

हृदयसे आपका,

करीम गुलाम अली
खारादर
कराची

अग्रेजी (एस० एन० १२९९२) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र : मीराबहनको", १२-११-१९२८।

४०. पत्र : ए० शंभुनाथनको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपने 'यंग इंडिया' के पृष्ठोंमें आश्रमकी नियमावलीके[1] बारेमें सब-कुछ पढ़ ही लिया होगा।

इतना तो कहूँगा ही कि आपको महिलाओंके बारेमें अपशब्द नहीं कहने चाहिए थे। आपको बिलकुल चुप रहना चाहिए था।

जहाँतक 'गीता' का सम्बन्ध है, आपको तमिल अनुवाद प्राप्त करना चाहिए, जो आसानीसे पढ़ा जा सकता है।

आजकल मैं इतना व्यस्त हूँ कि अपना पत्र-व्यवहार मैं स्वयं लिख कर नहीं निबटा सकता।

हृदयसे आपका,

ए० शंभुनाथन
मारफत श्रीयुत टी० रत्नसभापति मुदलियार
३२, आफिस वेंकटाचला मुदली स्ट्रीट
ट्रिप्लिकेन, मद्रास

अंग्रेजी (एस० एन० १२९९३) की फोटो-नकलसे।

४१. पत्र : मुहम्मद हबीबुल्लाको[2]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए और शास्त्रीजीके उत्तराधिकारीकी नियुक्तिके सम्बन्धमें आपने मुझे जो विश्वास दिया है, उसके लिए धन्यवाद।

१. देखिए खण्ड ३६, पृष्ठ ४१९-३१ और "महात्मा होनेका नुकसान", ८-११-१९२८ भी।

२. मुहम्मद हबीबुल्लाके ५ नवम्बर, १९२८ के पत्रके उत्तरमें। अपने पत्रमें उन्होंने लिखा था: "सर के० वी० रेड्डी, जो मद्रासके पहले मन्त्रिमण्डलके सदस्य रह चुके हैं, . . . भारतमें शायद उतने प्रसिद्ध नहीं हैं जितने कि शास्त्री या जयकर हैं। लेकिन, मैं उन्हें कई वर्षोंसे जानता हूँ। उनकी ख्याति न हो पानेका कारण वास्तवमें यह है कि वे अपेक्षाकृत कम उम्रके हैं और उनका काम अपने ही प्रान्ततक सीमित रहा है। लेकिन स्थानीय स्वशासनके क्षेत्रमें और मन्त्रीके रूपमें प्रशासनके बृहत्तर क्षेत्रमें भी उन्होंने अपनी लगन, ईमानदारी और देशभक्तिके बलपर विशिष्ट कार्य करके दिखाया है।" (एस० एन० ११९९८)

सर के० वी० रेड्डीकी नियुक्तिका सुझाव मुझे तनिक भी नही जँचता। मुझे इन सज्जनको जाननेका सौभाग्य प्राप्त नही है। आपका कहना है कि सर के० वी० रेड्डी पक्ष-विशेषसे सम्बद्ध है मगर ऐसे व्यक्तिकी नियुक्ति करना घातक होगा। जो भी एजेंट नियुक्त किया जाये, उसे वहाँके समस्त भारतीयोका और यहाँके सारे पक्षोका विश्वास प्राप्त होना चाहिए। मेरा खयाल है, सर के० वी० रेड्डी शायद ही वह विश्वास प्राप्त कर सकेंगे।

इस पदपर नियुक्तिका कार्य अत्यन्त कठिन है और श्री शास्त्रीके स्थानकी पूर्ति करना कोई आसान काम नही है। मेरा अपना सुझाव यह है कि इस स्थान-को स्वय आपको ही ग्रहण करना चाहिए।[1] शास्त्रीजीने जो भी किया है आप उसे खूब जानते-समझते हैं। इसलिए यदि आप इस स्थानको ग्रहण करेंगे तो कामका सिलसिला पूरी तरह जारी रहेगा। जब आप दक्षिण आफ्रिकामे शिष्टमण्डल[2] लेकर गये थे तब आपने अपनी योग्यताका बहुत सुन्दर परिचय दिया था। जहाँतक मुझे मालूम है, आपपर किसी पक्ष-विशेषसे सम्बद्ध होनेका सन्देह नही किया जाता। अगले कुछ वर्ष दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय समाजके जीवनके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वर्ष हैं और एजेंटकी नियुक्तिमे कोई गलती करना अनर्थकारी सिद्ध होगा। इसलिए यदि आपमे इस पदको ग्रहण करनेके लिए पर्याप्त साहस और विनयशीलता है तो सारी कठिनाई दूर हो गई मानिए। लेकिन यदि आप इस कर्त्तव्यसे बचना चाहे अथवा यदि आपका जाना सर्वथा असम्भव हो तो मेरा सुझाव है कि आप प्रोफेसर पराजपेको प्राप्त करनेके लिए पूरा जोर लगा दे। यदि यह प्रयास विफल हो जाये तो शास्त्रीजीकी इस सलाहके बावजूद कि किसी सरकारी अधिकारीकी नियुक्ति नही की जानी चाहिए, आप कुँवर महाराज सिंहकी सेवाएँ प्राप्त करें। मैं उनका नाम इसलिए नही ले रहा हूँ कि मै उन्हे जानता हूँ अथवा मै उनसे कभी मिला हूँ बल्कि इसलिए कि चार्ली एन्ड्रयूजको उनपर पूरा भरोसा है और वे उन्हे शास्त्रीजीके बाद दूसरा सबसे योग्य व्यक्ति मानते है।[3]

यदि आपको मेरे तीनो सुझाव मान्य न हो तो मै कहूँगा कि आप शास्त्रीजीसे ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करनेके लिए कहे। मैं इससे ज्यादा कुछ नही कह सकता। भगवान सही निर्णय लेनेमे आपका सहायक हो। मगर मेरे पहले सुझावको बिना विचार किये ही रद न कर दीजिएगा।

हृदयसे आपका,

सर मुहम्मद हबीबुल्ला साहब बहादुर, के० सी० आई० ई०
वाइसरायकी कौंसिलके सदस्य, नई दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १३२८२)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र : मुहम्मद हबीबुल्लाको", १६-११-१९२८।
२. देखिए खण्ड ३३, पृष्ठ १२७-२९।
३. ऐसा प्रतीत होता है कि इसके बादका एक पृष्ठ किसी दूसरे पत्रका है। अतः उसे छोड़ दिया गया है।

४२. पत्र : निरंजन पटनायकको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय निरजन बाबू,

सम्बलपुरके लोग मुझपर इस बातके लिए बहुत जोर डाल रहे हैं कि कलकत्ता जाते हुए रास्तेमे चाहे एक दिनके लिए ही क्यो न सही मैं सम्बलपुर अवश्य जाऊँ।[1] आप क्या कहते हैं?

क्या मैंने आपको उत्कलके खादी कार्यके बारेमे बिजौलियासे आये पत्रकी एक प्रति नही भेजी है?[2] मेरा खयाल था कि भेजी थी, और इसलिए मैं आपके उत्तरकी राह देख रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत निरजन पटनायक
स्वराज्य आश्रम, बरहामपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १३७१९) की माइक्रोफिल्मसे।

४३. पत्र : सी० वी० रंगम् चेट्टीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आप अपने रुखमे कुछ नरमी ला पाते तो अच्छा होता। मगर जो भी हो, इस समय तो सघके[3] कामकी सीधी जिम्मेदारी मुझपर नही है, और मैं हाथमे लिये अन्य कार्योको पूरा करनेमे इतना ज्यादा व्यस्त हूँ कि और कुछ कर ही नही सकता। लेकिन एक अन्य अब्राह्मण सज्जन, अर्थात् सेठ जमनालालजी सघकी देख-रेख करते हैं और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वे होशियार और सुयोग्य व्यवसायी हैं। यदि आप उन्हे अपना पक्ष समझा सके तो वे हस्तक्षेप करनेमे तनिक भी सकोच नही करेगे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सी० वी० रंगम् चेट्टी
नारायणवरम

अंग्रेजी (एस० एन० १३७२०) की माइक्रोफिल्मसे।

१. देखिए "पत्र : अच्युतानन्द पुरोहितको", २७-११-१९२८।
२. देखिए "पत्र : निरंजन पटनायकको", २७-११-१९२८।
३. अखिल भारतीय गोरक्षा संघ।

४४. पत्र : वि० ल० फड़केको

शुक्रवार ९ नवम्बर, १९२८

भाईश्री मामा,

तुम्हारा पत्र मिला। थोडा बीमार पड़ जानेके कारण जवाबमे देरी हो गई है। मुझे लगता है कि यह मामला घाचियो[1] और हिन्दुओका नही है किन्तु चार साहूकारोका है। इसमे कुछ विशेष करने लायक बात मुझे तो दिखाई नही देती। भगी विद्यार्थी अहिंसावादी नही था, यह तो स्पष्ट ही है। उसने अपने ढगसे काम लिया। अब मुझे तो इसमे हमारा कुछ करना जरूरी नही लगता। यदि यह प्रश्न घाचियो और हिन्दुओका ही है तो भी हमे भविष्यकी दृष्टिसे तो घाचियोको ही अपनाना चाहिए। आश्रमके दो-चार लोग मर-मिटे तो भी मैं चिन्ता नही करूँगा। यह अहिंसावादीकी अन्तिम कसौटी है; इसपर खरा उतरे बिना उसे प्रमाणपत्र नही मिल सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३८२१)की फोटो-नकलसे।

४५. पत्र : एफ० डब्ल्यू० विलसनको[2]

१० नवम्बर, १९२८

पत्रके लिए धन्यवाद। श्री वाइल्डके लेखोके बारेमे मैंने 'यग इडिया' मे जो लिखा है[3] उसे शायद आपने देखा होगा। उनके लेख पढकर मुझे बहुत दु:ख हुआ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १२९८७)की फोटो-नकलसे।

१. तेल-निकालनेका काम करनेवालोंकी एक जाति-विशेष।

२. एफ० डब्ल्यू० विलसनने अपने ७ नवम्बर, १९२८ के पत्रमें लिखा था कि "यदि मैंने ऐसा कुछ प्रकाशित किया हो जो सही नही है या जिससे गलत धारणा बनती है तो मुझे बहुत दुःख है। पायनियरमें मैंने वही छापा जो श्री वाइल्डने पूरी सदाशयताके साथ लिखा था और मैंने सोचा कि वे जो-कुछ कहने जा रहे है, वह आपको बताकर उसपर उन्होंने आपकी स्वीकृति ले ली है।" (एस० एन० १२९५७) यह पत्र उसीके उत्तरमें लिखा गया है।

३. देखिए "तथ्य और कल्पना", ८-११-१९२८।

४६. पत्र : श्रीमती वायलेटको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१० नवम्बर, १९२८

प्रिय वायलेट,

तुम्हारा पत्र मिला। हिन्दू धर्ममे जो बुराइयाँ और अन्धविश्वास आ गये है, उन्हे निस्सन्देह दूर किया जाना चाहिए। तब उसके विकल्पके रूपमे किसी अन्य धर्मकी जरूरत न होगी। मेरे विचारसे हिन्दू धर्ममे सब-कुछ है और यह हर दृष्टिसे पर्याप्त है।

मुझे उम्मीद है, तुम्हारी 'आट' अब ठीक होगी।

हृदयसे तुम्हारा,

[श्रीमती वायलेट
द्वारा] कुमारी बावा गुनासेकेरा
५५ हेम्डन लेन, वेल्लवेटी, कोलम्बो

अंग्रेजी (एस० एन० १२९९४)की फोटो-नकलसे।

४७. न्यायके नामपर निर्दयता

सूरतमे हिन्दुओ और मुसलमानोके बीच जो लडाई हुई उसकी चिनगारियाँ अभीतक उड रही है। लाठियो और छुरोकी लडाई तो बन्द हो गई है किन्तु अब अदालती लडाई चल रही है। मुझे इस सम्बन्धमे चिट्ठियाँ तो मिलती ही रहती है, किन्तु मेरी स्थिति ऐसी नही है कि मै इन झगडोमे पड सकूँ। मै इस मामलेमे इतना कुशल भी नही हूँ, किन्तु एक घटनाके सम्बन्धमे मुझे दो-तीन चिट्ठियाँ मिली हैं। उसके सम्बन्धमे जाँच-पडताल करना मैने अपना कर्तव्य समझा है। शिकायत की गई थी कि स्थानीय 'हिन्दू' पत्रके सम्पादक श्री चिमनलाल जोशी अदालतमे हथ-कडियाँ पहनाकर लाये गये। मुझे इस बातपर विश्वास नही हुआ है। इसलिए मैने एक विश्वस्त मित्रसे इस सम्बन्धमे पूछताछ की। उन्होने लिखा है।[1]

ऐसा व्यवहार तो खूनीके प्रति भी नही किया जाना चाहिए फिर एक सम्भ्रान्त व्यक्तिके प्रति तो किया ही कैसे जा सकता है। इसमे हिन्दू-मुसलमानका कोई प्रश्न

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पत्र-लेखकने उक्त समाचारकी पुष्टि करते हुए लिखा था कि चिमनलाल जोशी हथकडियाँ पहनाकर पाँच मील दूर अदालततक पैदल ले जाये गये थे क्योंकि पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट हथकडियाँ खोल देनेका आदेश देना भूल गए थे।

नही है। कोई भी मुसलमान जिसकी आत्मा मर नही गई है किसी हिन्दूके प्रति ऐसे व्यवहारको सहन नही कर सकता तथा कोई आत्मवान् हिन्दू भी किसी मुसलमानके प्रति ऐसी निर्दयता सहन नही कर सकता। यदि ऐसी निर्दयताका व्यवहार किया जाये और उसको सहन किया जाये तो अदालतोमे ताले जड दिये जाने चाहिए, क्योकि इससे तो न्यायकी निन्दा होती है। इसलिए इस मामलेपर तटस्थ भावसे विचार करना चाहिए।

जिस अभियुक्तको अभी सजा नही सुनाई गई है उसको इस प्रकार जानवरकी तरह कैसे लाया लेजाया जा सकता है। इस तरहके व्यवहारका कारण समझमे नही आता। यदि यह कहा जाये कि उसके ऊपर गम्भीर आरोप है, इसलिए ऐसा किया गया है तो इसका अर्थ अभियुक्तको मुकदमा चलानेसे पहले ही दण्ड देना हो गया। फिर बेडियाँ पहनानेकी बात दण्ड-विधानमे कही नही है। हथकडियाँ डालनेका विधान सजा देनेकी दृष्टिसे नही है। जहाँ कैदी उपद्रव करे अथवा उसके मारपीट करने या भाग जानेका भय हो, वहाँ उसे मारपीट करने और भागनेसे रोकनेके लिए हथकडियाँ पहनाई जाती है। यहाँ ऐसा दिखाई नही देता कि अभियुक्त श्री चिमनलाल जोशीके भागने या मारपीट करनेका भय था। इसलिए यह मानना चाहिए कि केवल निर्दयता-की खातिर और उनका अपमान करनेकी खातिर ही उन्हे हथकडियाँ पहनाई गई थी। ऐसी निर्दयताके विरुद्ध हिन्दुओ और मुसलमानो — दोनोको विरोध करना चाहिए।

जान पडता है जेलकी हालत ऐसी ही भयानक है। इस सम्बन्धमे[1] एक शिकायत पहले भी आई थी और मैने उसपर टिप्पणी लिखी थी।

सूरतके हिन्दू और मुसलमान अपने परमेश्वर और खुदाके नामपर चाहे तो जी-भरकर लड ले; किन्तु इस दुनियामे परमेश्वर या खुदा है ही नही ऐसा मानकर वे इस तरहकी निर्दयता और बर्बरताको कैसे सहन कर सकते है?

[गुजरातीसे]
नवजीवन, ११-११-१९२८

१. पत्र-लेखकने लिखा था कि जेलमें स्नानागार और पाखाने बहुत ही शर्मनाक हालतमें हैं।

४८. पत्र : अभय शर्माको

नवेंबर ११, १९२८

भाईश्री ५ अभय शर्मा,

आपका पत्र मीला है।

बलबीरको[1] पैसे हि भेज देनेका इरादा नहिं था। यदि वह सोता है मेरे पास तो भी दूसरोकी देखभालमें तो रखता हु। सोमाभाईके सिपुर्द कीया, नारणदास-को भी दीया था। आजकल कृष्ण नायर और गगाबहिनके पास है। अब मुझको कह रहा है मेरे पाससे बहोत काम लीया जा रहा है। मै देखता हु [2]. चर्खेके काममें समय काफी देते थे परतु बुध्धिका उपयोग कम करते थे। खेतीमें काम तो कीया परतु किसी पर अपने कर्तव्य परायणताकी असर नहिं डाल सके। गगा बहिनको तो सतोष हि नहिं दीया। और गगाबहिनको खुशामतखोरीकी गध आइ। उनकी दोष-दर्शनकी आदत हदसे ज्यादा थी। इसलीये जो कोई भी बाते हो चले उसको सुननेकी इच्छा बहोत रखते थे। मीराबहिन . .[3]

आर्य समाजका मैंने ब्रह्म समाजके जलसेमें उल्लेख कीया था। गुण और दोष दोनो बताये थे। क्योकी उल्लेख प्रस्तुत था। अखबारोमे क्या छपा मैं नहिं जानता हुं। न० जी० मे किसीके साथ चर्चा करनेमे पडना नहिं चाहता था। मेरे ख्याल तो वही है। आर्य समाजने बडी सेवा की है परतु अनुदारता अवश्य बताई है।

आपका,
मोहनदास

जी० एन० ६७५७ की फोटो-नकलसे।

१. चरखा-संघका एक विद्यार्थी जो खादी-कार्यका प्रशिक्षण लेने आया था।
२ और ३. साधन-सूत्रमें यहाँके शब्द पढ़े नहीं जा सके है।

४९. पत्र : मीराबहनको

१२ नवम्बर, १९२८

चि० मीरा,

आश्रमवासियोकी आलोचना करते हुए तुमने जो पत्र लिखा है, मुझे मिल गया है। आश्रममे किये गये परिवर्तनोके सम्बन्धमे तुमने 'यग इडिया' मे मेरा लेख[1] पढ़ा होगा। अगर तुम्हे आश्रम वापस आनेमे अब भी भय लगता हो तो बेशक तुम यहाँ मत आओ और जब कभी मै आश्रमसे बाहर जाऊँ, तभी मुझसे मिलो। तुम चाहे जहाँ रहो, मै जानता हूँ, तुम मेरा ही काम कर रही होगी। और जहाँ तुम अच्छी तरह सुखसे रह सको वहाँ इसे और अच्छी तरहसे करोगी। बहुतसे खादी-केन्द्र है। जो अच्छा लगे, वही रहकर काम करो।

आस्ट्रियाई मित्रगण जल्दी ही जानेवाले है, उनका जहाज २१ तारीखको प्रस्थान करेगा। यहाँसे वे १८ या १७ को चल देगे।

मुझे हलका-सा मलेरिया हो गया था। अब ठीक हूँ — पिछले छः दिनोसे। अभी सिर्फ फल ही लेता हूँ। महादेव दो दिनोके लिए आया है। कल वह बारडोली[2] वापस चला जायेगा।

पुरबाई उडीसा चली गई है। छगनलाल और उसकी पत्नी भी जल्दी ही वहाँ जानेवाले है। कृष्णदास अभी सोदपुरमे है। राजेन्द्र बाबू यही है — उपवास द्वारा दमेका उपचार कर रहे है। ग्रेग जहाजसे अमेरिका जा चुके है।

प्यारेलाल और सुब्बैया भी मलेरियाकी चपेटमे आ ही गये। अब दोनो अच्छे हो गये लगते है, मगर कमजोर तो है ही।

सस्नेह,

बापू

अग्रेजी (जी० एन० ८२१४ तथा सी० डब्ल्यू० ५३२४) से।
सौजन्य : मीराबहन

१. देखिए "महात्मा होनेका नुकसान", ८-११-१९२८।
२. देखिए "पत्र : उर्मिला देवीको", १४-११-१९२८।

५०. पत्र : रामी गांधीको

१२ नवम्बर, १९२८

चि० रामी,

बा के नाम तुम्हारा पत्र पढा। अबतक बुखार उतर गया होगा। बुखारने तो यहाँ सबको पकड लिया था—मुझे भी। बाको और नीमूको भी बुखार हो गया था। रसिक दिल्लीमें है। रामदास बारडोलीमें। देवदास तो दिल्लीमें है ही। नवीन भी वहीं गया है। बच्चे मजेमें होंगे? चि० सुशीलाके बेटी हुई है। बा को लेकर २२ या २३ को वर्धा जाऊँगा। तुम दोनोको आगामी वर्षकी [बधाई][1]

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

बा की ओरसे भी बधाई।

गुजराती (एस० एन० ९७१२)की फोटो-नकलसे।

५१. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

अमावस्या, १२ नवम्बर, १९२८

भाई घनश्यामदासजी,

आपको लीखते हुए शरम आती है क्योंकी इतने दिनो तक मैं कुछ न लीख सका। आपके पत्र तो आये हि थे—

अब तो वर्धेमें मीलेंगे इसलीये ज्यादा लीखना नहिं चाहता हु।

द० आ०के वर्तमान कष्टोंके बारेमें तो मैंने तार[2] भेज दीया था।

बछडे और बन्दरके प्रकरणने मुझको तकलीफ तो दी परन्तु जन स्वभाव समझनेका और क्रोध रोकनेका मुझको अच्छा अवसर मीला।

आपकी बहोतसी बाते महादेवने सुनाईं और सुनकर दिल खुश हुआ। ऐसे तो मैं बहोत कुछ जानता हि था।

१. यहाँ शब्द अस्पष्ट है तथापि देखिए "पत्र : देवदास गांधीको", १२-११-१९२८।
२ देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ३०४।

वर्धा ता० २४ को पहोचनेका इरादा है।
बाकी मिलनेसे।

आपका
मोहनदास

[पुनश्च :]
जमनालाल आज मुबई जाते है। महादेव आजकाल बारडोलीमे रहता है। तीन दिनके लीये यहा आया है।

सी० डब्ल्यू० ६१६५ से।
सौजन्य : घनश्यामदास बिडला

५२. पत्र : लक्ष्मीनारायण पण्ड्याको

१२ नवम्बर, १९२८

भाई लक्ष्मीनारायण,

तुम्हारा पत्र मिला।

जव दो नेताओके विचार परस्पर-विरोधी जान पडे और दोनोके प्रति मनमे वरावर सम्मान हो तो अन्तरात्मा जिस मतको स्वीकार करे उसे ही मानना चाहिए।

विद्यार्थी-जीवनके दौरान राजनीतिमे वहुत अधिक नही पडना चाहिए।

शिक्षकोको आदरकी दृष्टिसे देखना चाहिए और केवल उनके सद्गुणोका अनुकरण करना चाहिए।

ग्रहणके विषयमे प्रचलित रिवाजको मै नही मानता।

इसीको मेरा सन्देश समझना।

मोहनदास गांधीके वन्देमातरम्

भाईश्री लक्ष्मीनारायण मौजीलाल पण्ड्या
नागरवाडो
लुणावाडा

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २६५८) से।
सौजन्य · लक्ष्मीनारायण पण्ड्या, बम्बई

५३. पत्र : देवदास गांधीको

अमावस, मौनवार
[१२ नवम्बर, १९२८][1]

चि० देवदास,

आज अमावस है और मौनवार भी। इसलिए लिखनेकी खातिर ही लिख रहा हूँ। तुम्हारा भेजा हुआ हिसाब मैंने सँभाल कर रख दिया था, आज पाई-पाईका हिसाब देखा। एकाध जगह कहने लायक कुछ मिलता तो है; किन्तु कुल मिलाकर आपत्ति करने लायक कुछ नहीं है। अच्छे बनो और स्वस्थ रहो, मेरी ओरसे तुम्हे नये वर्षके लिए यही आशीर्वाद है। नवीन और रसिकके लिए भी यही चाहता हूँ। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

देवदास गाधी
जामिया मिलिया
करौलबाग, दिल्ली

गुजराती (जी० एन० २१२६) की फोटो-नकलसे।

५४. पत्र : नानाभाई मशरूवालाको

अमावस [१२ नवम्बर, १९२८][2]

भाई नानाभाई,

अहिंसा सम्बन्धी तुम्हारा निर्मल पत्र मैंने आजतक सँभाल कर रखा था। आज मौनवार अमावस्याके दिन उत्तर देनेके लिए हाथमे लिया तो लगा कि तुम्हारे साथ बहसमे क्यो पड़ूँ। जहाँ हृदयका सम्बन्ध हो वहाँ सब-कुछ अपने आप समझमे आ जायेगा। यदि किसीसे भूल होगी तो वह स्पष्ट दिखाई दे जायेगी और हम सौजन्य-पूर्वक उसे स्वीकार कर लेगे। यह समझकर मैं तुम्हारे साथ निरर्थक बहस नही करना चाहता। अकोलासे वर्धा आ सको तो आ जाना। यदि इच्छा होगी तो थोड़ी बातचीत कर सकते है।

तुम सबको मेरा आशीर्वाद।

बापू

श्री नानाभाई मशरूवाला
अकोला, मध्य प्रान्त

गुजराती (जी० एन० ६६७८) की फोटो-नकलसे।

१ और २. डाककी मुहरसे।

५५. तार : मीराबहनको

साबरमती
१३ नवम्बर, १९२८

मीराबाई
खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर

तुम भाग ले सकती हो। सूत भेज रहा हूँ। सस्नेह।

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० ८२१५ तथा सी० डब्ल्यू० ५३२५) से।
सौजन्य : मीराबहन

५६. पत्र : ए० गॉर्डनको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१४ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके २१ सितम्बरके पत्रका उत्तर मैं इतने दिनोतक नही दे पाया। आशा है, आप इस विलम्बके लिए मुझे क्षमा करेंगे। तथ्य यह है कि आश्रममें किसीको दाखिल करनेकी व्यवस्था एक प्रबन्ध-समितिके हाथमे है। इस समितिको मैंने आपका पत्र दे दिया था और मुझे अभी-अभी उसके निर्णयके बारेमे मालूम हुआ है। समिति-का निर्णय यह है कि चूंकि आश्रमका उद्देश्य बिलकुल भिन्न है इसलिए, और आश्रमकी वर्तमान स्थितिको देखते हुए भी, विकलांगोको उसमे शामिल करना सम्भव नही है। मुझे सचमुच इस बातका दु:ख है कि आश्रम उस नवयुवकको[1] आश्रय नही दे पा रहा है; लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि आप प्रबन्ध-समितिकी दिक्कतको समझ सकेंगे।

१. अपने २१ सितम्बर, १९२८के पत्र में रेवरेंड ए० गॉर्डनने लिखा था कि एम० मोजेज नामक एक २० वर्षीय युवक है। वह पचम वर्णका है और उसके माता-पिता नहीं है। उसके पैरको लकवा मार गया था, जिसे ऑपरेशन करके काट दिया गया। वह ८वें दर्जेतक पढा है और सिलाई, बुनाई तथा चटाइयाँ बनानेका काम कर सकता है।

लेकिन अगर मेरी नजरमें कोई अन्य ऐसी संस्था[1] आ जाती है जो उसकी देख-भाल करनेकी जिम्मेदारी ले सके तो क्या आप उसे उसमें भेजना पसन्द करेंगे? कहनेकी जरूरत नहीं कि मैं ऐसी कोई संस्था नहीं बताऊँगा जिसके बारेमें मुझे खुद निश्चित तौर पर मालूम न हो कि वह ऐसे लोगोंकी देखभाल अच्छी तरह कर सकती है।

हृदयसे आपका,

रेवरेंड ए० गॉर्डन
कैनेडियन बेपटिस्ट मिशन
वुयुरु, कृष्ण जिला

अंग्रेजी (एस० एन० १२९७४)की फोटो-नकलसे।

५७. पत्र: रॉलैंड जे० वाइल्डको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१४ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

कतरनोंके साथ आपका पत्र[2] मिला। मैंने उनपर जो टीका[3] की है, उसे शायद आपने पढ़ा हो। आपने बहुत-सी ऐसी बातें मेरे मुँहमें रखकर कही हैं, बहुतसे ऐसे विचार मुझपर आरोपित किये हैं, जो बातें न मैंने कभी कहीं और न जो विचार कभी मेरे रहे। उनमें से कुछ तो देखते ही इतने ज्यादा असंगत लगते हैं कि मेरी समझमें ही नहीं आता कि आप ये बातें मुझपर कैसे आरोपित कर पाये। क्या आप यह नहीं समझते कि आपको मुझे उनके प्रूफ दिखा देने चाहिए थे?

हृदयसे आपका,

रॉलैंड जे० वाइल्ड
'द सिविल ऐंड मिलिटरी गजट'
पोस्ट आफिस बॉक्स सं० ३६, लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १२९८८) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र: च० राजगोपालाचारीको", २८-११-१९२८।
२. ७ नवम्बर, १९२८का।
३. देखिए "तथ्य और कल्पना", ८-११-१९२८।

५८. पत्र : उर्मिला देवीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१४ नवम्बर, १९२८

श्री देववरने आपको लिखे पत्रोंकी प्रति मुझे भेजी है और उन्होंने मुझे बताया है कि आप डॉ० सेनके घर बीमार पड़ी हुई हैं। क्या बात है? अब आप कैसी हैं? ये डॉ० सेन कौन हैं?

महादेव तीन दिनके लिए यहाँ आया था। वह कल रात बारडोली गया है और शुक्रवार अथवा शनिवारको वापस लौटनेकी उम्मीद रखता है।

हृदयसे आपका,

श्रीमती उर्मिला देवी
मारफत डॉ० सेन
मारफत मिटिओरोलॉजिकल आफिस, पूना

अंग्रेजी (एस० एन० १२९९७)की फोटो-नकलसे।

५९. पत्र : च० राजगोपालाचारीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१४ नवम्बर, १९२८

साथमें एक पत्र और उसका मैंने जो उत्तर दिया है, उसकी नकल भेज रहा हूँ। या तो आप खुद ही शिकायत करनेवालेको लिख दें[1] या फिर मुझे इस शिकायतसे सम्बन्धित जानकारी लिख भेजें, ताकि मैं स्वयं उसे एक और पत्र लिख सकूँ।

आपके तारसे मुझे बहुत हैरानी हुई। मैं इतनी दूर तो नहीं जा सकता था, जितनी दूर जानेकी बात आपने लिखी है। इसके साथ, सर मुहम्मद हबीबुल्लाको लिखे पत्रकी[2] नकल भेज रहा हूँ। कृपया इस विषयपर किसीके साथ आगे कोई चर्चा न करें और साथके पत्रको नष्ट कर दें।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत च० राजगोपालाचारी
खादी वस्त्रालय
एस्प्लेनेड, मद्रास

अंग्रेजी (एस० एन० १२७८८)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र : कन्नाइरम पिल्लेको", २९-११-१९२८।
२. देखिए "पत्र : मुहम्मद हबीबुल्लाको", ९-११-१९२८।

६०. पत्र : के० सन्तानम्को

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१४ नवम्बर, १९२८

प्रिय सन्तानम्,

आपका पत्र मिला। मै ज्यादासे-ज्यादा यही कर सकता था कि आपका पत्र श्रीयुत अम्बालाल साराभाईको भेज दूँ।[1] इससे ज्यादाकी आप मुझसे अपेक्षा नही रखेगे।

कृष्णाके बारेमे मुझे दु ख है।[2] आशा है वह जल्दी अच्छी हो जायेगी। उसकी लम्बी चुप्पीका कारण उसकी यह बीमारी ही तो नही है?

आपने पजाबकी राजनीतिके बारेमे जो लिखा है[3], उसपर मैने गौर किया है।

हृदयसे आपका,

पण्डित के० सन्तानम्
लक्ष्मी बीमा कम्पनी लिमिटेड
पोस्ट आफिस बॉक्स स० ३७
लाहौर

अग्रेजी (एस० एन० १२९९६)की फोटो-नकलसे।

६१. अखिल भारतीय चरखा संघ

सघको काम करते अब दो सालसे ऊपर हो गये है। यह व्यापारकी दृष्टिसे बराबर प्रगति करता रहा है। इसका सगठन धीरे-धीरे सुदृढ किया जा रहा है। इसकी आर्थिक स्थिति मजबूत है। यह अपनी क्षमतासे बाहर कोई जिम्मेदारी नही लेता। लेकिन जहाँतक सदस्यताका सवाल है, यह ज्यादा लोगोको अपनी ओर नही खीच पाया है। मै स्वीकार करता हूँ कि सदस्य बनानेके लिए बहुत ज्यादा प्रयत्न भी नही किये गये है। सघकी परिषदने इस दिशामे प्रचार करनेके लिए सार्वजनिक पैसेका उपयोग करना ठीक नही समझा है। उसने सोचा कि जो लोग हाथ-कताईके

१. अपने १० नवम्बर, १९२८ के पत्रमें सन्तानम्ने गाधीजीको लिखा था कि वे अम्बालाल साराभाईसे उनकी लक्ष्मी बीमा कम्पनी लिमिटेडकी चर्चा कर दें, क्योंकि अम्बालाल साराभाई अपने विभिन्न व्यापारिक प्रतिष्ठानोंके कर्मचारियोंका बीमा करानेका विचार कर रहे थे।

२. वह पिछले दो महीनोंसे बीमार थी।

३. सन्तानम्ने लिखा था कि वे इस समय राजनीतिमें सक्रिय रूपसे भाग नहीं ले रहे हैं, क्योंकि पजाब काग्रेसमें बहुत गुटबन्दी है।

राष्ट्रीय महत्त्वको पहचानते है और मेहनत करनेमे गौरवका अनुभव करते हैं वे लोग खुद-बखुद संघमे शामिल हो जायेंगे। लेकिन जैसा उसने सोचा, वैसा हुआ नही। लोग राष्ट्रीय कार्यके इस रचनात्मक पहलूकी ओर आकृष्ट नही हुए हैं और न उनमे यश-प्रतिष्ठाकी अपेक्षा किये विना निश्चित गतिसे काम करनेकी क्षमताका ही विकास हुआ है। शुरूमे जो लोग इस संघमे शामिल हुए थे, उनमे से भी अनेक इसमे से निकल गये हैं।

फिर भी, संघकी परिपद सदस्यताके नियमोमे कोई परिवर्तन नही करना चाहती; क्योंकि उसका विचार है कि किसी-न-किसी दिन सार्वजनिक कार्यकर्त्ता राष्ट्रके लिए और इस तरह अपने लिए हाथ-कताईके महत्त्वको अवश्य पहचानेंगे और एक दिन ऐसा आयेगा जब न कातना हर किसीके लिए शर्मकी बात मानी जायेगी —— ठीक वैसे ही जैसे आज अपनी देशभक्ति प्रकट न करना और समुचित अवसरोपर आम सभाओमे भाग न लेना शर्मकी बात समझी जाती है।

हालाँकि संघकी सदस्यतामे वृद्धि नही हुई है और इसमे ऐसे लोग नही आये हैं जो इस तरहकी विशाल आर्थिक सस्थाओको ठीकसे चलानेकी क्षमता रखते हो, फिर भी इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती गई है। इसलिए यह जरूरी समझा गया है कि इसके कोपकी देख-रेखके लिए न्यासियोके एक स्थायी मण्डलकी नियुक्ति की जाये। इस बात को ध्यानमे रखते हुए श्रीयुत जमनालाल बजाज, श्रीयुत च० राजगोपालाचारी और श्रीयुत राजेन्द्रप्रसादने निम्नलिखित प्रस्ताव तैयार किये हैं:

१. चूँकि हाथ-कताई और खद्दरके विकासके लिए एक विशेषज्ञ तथा स्वतन्त्र संस्थाके रूपमें २३ सितम्बर, १९२५ को अखिल भारतीय चरखा संघकी स्थापना की गई थी और इसे उक्त उद्देश्यके लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी ओरसे पूंजी दी गई थी;

चूँकि अखिल भारतीय चरखा संघके विधानके अन्तर्गत बनाई गई प्रथम कार्यकारी परिषदकी कार्यावधि पाँच वर्ष निश्चित की गई थी और उसे न केवल संघकी पूंजीकी व्यवस्था करने और संघके कामके लिए और भी पैसा जुटानेका अधिकार दिया गया था, बल्कि अपने अनुभवके आधारपर जब वह आवश्यक समझे तब संघके विधानमें संशोधन करनेका अधिकार भी दिया गया था;

चूँकि कार्यकारी परिषदने अपनी स्थापनाके बाद जनतासे काफी पैसा एकत्र किया है और संघके बढ़ते हुए कामको देखते हुए आगे भी समय-समय पर लोगोंसे बहुत पैसा इकट्ठा करना पड़ेगा;

चूँकि ऐसे करार करना, पैसा जुटानेके लिए संघकी सम्पतिको जमानत रखकर ऐसे कर्ज लेना और ऐसे अनुबन्ध करना अक्सर आवश्यक पाया जाता है जो कार्यकारी परिषदकी कार्यावधिसे अधिक समयतक चालू रहनेवाले होते हैं;

और चूँकि इन और अन्य कारणोंसे, पिछले तीन वर्षोंके अनुभवने संघके विधानमें ऐसा संशोधन करना वांछनीय सिद्ध कर दिया है जिससे कि संघका कोष और उसकी समस्त सम्पत्ति एक स्थायी न्यासी मण्डलको सौंप दी जाये, जो संघके प्रयोजनोंके लिए उस कोषके कर्त्ता-धर्ताका काम करे और साथ ही संघके संचालक-मण्डलकी तरह भी काम करे;

इसलिए यह निश्चय किया जाता है कि:

१. अखिल भारतीय चरखा संघ और इसकी विभिन्न शाखाओंके पास इस समय जो कोष और सम्पत्ति है वह अबसे एक न्यासी-मण्डलके कब्जेमें रहे, यह मण्डल संघका कार्यकारी मण्डल भी होगा।

२. कथित न्यासी-मण्डल और कार्यकारी परिषदमें निम्नलिखित बारह व्यक्ति होंगे, जो आजीवन इसके सदस्य रहेंगे, बशर्ते कि वे संघके सदस्य बने रहें और इनके अलावा तीन अन्य व्यक्ति भी मण्डलमें होंगे, जिन्हें चरखा संघके सदस्य प्रतिवर्ष अपने 'क' वर्गके सदस्योंमें से चुना करेंगे, मगर जिनके चुनावमें किसी भी ऐसे व्यक्तिको वोट देनेका अधिकार नहीं होगा जो चुनावके समय दो वर्षोंसे लगातार संघका सदस्य न रहा हो।

न्यासी-मण्डल और कार्यकारी परिषदके सदस्यके नाम हैं:

. . . .[1]

३. मण्डलके किसी सदस्य द्वारा त्यागपत्र दिये जानेपर अथवा किसीकी मृत्यु हो जानेपर जो स्थान रिक्त होगा उस स्थानपर मण्डलके शेष सदस्य संघके 'क' वर्गके सदस्योंमें से किसी की नियुक्ति करेंगे।

ख. निश्चय किया जाता है कि यदि कोई सदस्य छः महीनेतक अपने हिस्सेका सूत नहीं भेजेगा तो वह संघका सदस्य नहीं रह जायेगा।

ग. निश्चय किया जाता है कि उपर्युक्त बातोंको लागू करनेके लिए संघके विधानमें संशोधन किया जाये।

घ. निश्चय किया जाता है कि प्रस्ताव १ की धारा २ के अन्तर्गत न्यासी-मण्डल और कार्यकारी परिषदके लिए तीन सदस्योंका चुनाव करनेके लिए संघके सदस्योंकी बैठक जल्दसे-जल्द बुलाई जाये।

यह मसविदा परिषदके सदस्योंको भेजा जा रहा है और आगामी १८ दिसम्बरको वर्धामें जो विशेष बैठक हो रही है, उसमें इसे स्वीकृतिके लिए पेश किया जायेगा।

इस प्रस्तावका अनुमोदन मैं हृदयसे करता हूँ। इन प्रस्तावोंमें एक विशेष बात यह है कि न्यासियोंकी नियुक्तिके लिए चुनावकी व्यवस्था शुरू की गई है। जब परिषदकी स्थापना हुई थी, उस समय हममें से किसीने भी इस सम्भावनापर

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

विचार नही किया था। इसके पीछे आशय यह है कि अखिल भारतीय चरखा संघको जितनी जल्दी हो सके, एक लोकतात्रिक सस्था बनाया जाये। इस प्रस्तावपर मै 'यग इडिया'के पाठकोसे अपने-अपने सुझाव भेजनेका अनुरोध करता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १५-११-१९२८

६२. सदाकी भाँति

लालाजी तथा अन्य नेताओपर बिना किसी कारण किये गये हमलेके विषयमे पजाब सरकारने अपनी विज्ञप्ति प्रकाशित की है। उसमे पुलिसको सारे दोषसे मुक्त कर दिया गया है। इसका मतलब यह हुआ कि पुलिस और सेनाके लोग चाहे जो करे, उन्हे निर्दोप ठहरानेकी पुरानी सरकारी नीतिका सदाकी भाँति आज भी पूरा वोलवाला है। इसमे आश्चर्यकी कोई वात नही। जबतक सरकार जनताकी भावनाका ख्याल करना नही सीखती, जवतक वह उसके प्रति अपनी जिम्मेदारी स्वीकार नही करती तवतक उसे पुलिस और सेनाके इशारेपर चलना ही होगा।

सरकार इस मामलेकी विभागीय जाँच करवानेकी सोच रही है। यह एक और ढकोसला है। जिस समितिपर सन्देह करनेका जनताके पास पूरा कारण मौजूद है, लालाजी और दूसरे नेता उसके सामने बयान देनेकी मूर्खता करेगे, यह सोचना एक विलकुल ही बेतुकी बात है। यदि सरकार इस वारदातसे सम्बन्धित सचाई जाननेको सचमुच उत्सुक होती तो वह अदालती ढगकी एक ऐसी समिति नियुक्त करती जिसमे सभी पक्षोका समुचित प्रतिनिधित्व हो पाता और जिसे जनताका विश्वास प्राप्त होता तथा जिसके निर्णयको सभी सम्मानकी दृष्टिसे देखते। विभागीय समितिके सामने बयान न देनेका जो निर्णय लाला लाजपतराय और उनके मित्रोने किया है, उसके लिए मै उन सबको बधाई देता हूँ। लालाजीने अपनी ओरसे चुनौती दे दी है। उन्होने सरकारको इस बातके लिए आमन्त्रित किया है कि वह उनपर मान-हानिका मुकदमा चलाये। लालाजी ऐसे किसी भी मुकदमेमे उस बातको सिद्ध करनेके लिए तैयार है जिस बातको सरकारने बडे निर्लज्ज भावसे यो ही अस्वीकार कर दिया है।

लेकिन इस घटनासे जो सवाल उठता है वह केवल लालाजीके कथनकी सचाई सिद्ध करनेकी वातसे वहुत बडा है। जबतक सरकार असन्दिग्ध रूपसे यह साबित नही कर देती कि लालाजीका कहा सच नहीं है, तबतक जनता तो उनकी कही बातोको वरावर सच ही मानेगी। बडा सवाल यह है कि जनता इस गैरजिम्मेदार सरकारके रूपमे मौजूद बुराईको दूर कैसे करे। यह हमला और उसका समर्थन किया जाना, ये दोनो बाते गुलामी-रूपी जबरदस्त वीमारीके लक्षण-मात्र है। काश कि हम इस बुराईकी शाखाओंको, जो कटते ही रावणके सिरोकी भाँति फिर उग आती हैं, काटनेकी कोशिश करते रहनेके बजाय इस बुराईकी जडको काटनेके लिए कटिबद्ध

होकर जुड जाये। दूसरे शब्दोमे, हमे असली बीमारीको रोकनेके लिए अपने भीतर पर्याप्त शक्ति विकसित करनी है।

मगर मै इसके उपायके बारेमे कुछ कहने नही जा रहा हूँ। मेरा अपना उपाय क्या है, सभी जानते है। अभी मै इस या किसी अन्य उपायके अपनाये जानेका आग्रह नही करूँगा। मेरा अनुरोध सिर्फ यह है कि जनमतको दिशा देनेवाले तमाम नेतागण पराधीनताकी इस बुराईको दूर करनेके लिए कोई प्रभावकारी और जल्दी सफलता दिला सकनेवाला उपाय ढूँढनेमे सकल्पपूर्वक जुट जाये।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १५-११-१९२८

६३. टिप्पणियाँ

विश्रामके लिए

आश्रममे, जिसका नाम अब उद्योग मन्दिर रखा गया है, लगभग ग्यारह महीने तक रहनेके बाद अब मै इस महीनेके अन्तिम सप्ताहमे शान्तिपूर्वक विश्राम करनेके लिए सत्याग्रहाश्रम, वर्धा जाना चाहता हूँ। हमेशाकी तरह इस बार भी समाचार-पत्रोने मेरे इस निश्चय और जानेकी तारीखका अनुमान पहले ही लगा लिया है। अभीसे सवाददाता लोग अपने-अपने समाचारपत्रकी ओरसे भेंट करनेके लिए मेरे पीछे पडे हुए है। मै बता दूँ कि मै २४ तारीखसे पहले वर्धा पहुँचनेवाला नही हूँ और न २२ से पहले साबरमती छोडनेवाला ही हूँ।[1] लेकिन जब मै वर्धा जाऊँगा तब मै वहाँ विश्राम करनेके लिए जाऊँगा, भेंटो आदिके लिए नही। इसलिए मै वर्धाके आसपास रहनेवाले लोगोसे अनुरोध करूँगा कि वे मुझपर मुलाकात वगैराका बोझ न डाले और मुझे विश्राम करने दे, जिसका कि मै शायद अधिकारी हूँ।

कराचीके भंगी

कराची नगरपालिकामे उसके कर्मचारियो द्वारा खद्दर पहने जानेके प्रश्नको लेकर अभी हालमे जो चर्चा हुई थी, उसके सम्बन्धमे भगी सघने एक प्रस्ताव पास किया है। भगी सघके अध्यक्षने उसका पाठ अब मुझे भेजा है। वह निम्न प्रकार है

> नगरपालिकाकी अभी हालकी बैठकमें खादीकी वर्दीको लेकर जो चर्चा हुई थी, उसपर संघ खेद प्रकट करता है तथा कराची नगरपालिकाके अध्यक्षने भंगियोके लिए जो चिन्ता व्यक्त की है, उसके लिए संघ उनका हृदयसे आभार मानते हुए अत्यन्त आदर तथा विनम्रताके साथ उनका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकर्षित करना चाहता है कि खेती करनेवाले लोगोंकी तरह भंगी एक लम्बे

१. गांधीजी २३ नवम्बरको साबरमती आश्रमसे चले थे, देखिए "पत्र: घनश्यामदास बिड़लाको", २२-११-१९२८।

अर्सेसे खादी पहनते आये है और खादीकी वर्दी उनके लिए कतई असुविधा-जनक नहीं है। इसके विपरीत खादीका उपयोग करनेमें जो राष्ट्रीय भावना निहित है उस भावनाकी वे (भंगी लोग) कद्र करते है और अपने उन भाई-बहनोंके साथ सहानुभूति प्रकट करते है जो चरखा चलाकर और खादी तैयार करनेसे सम्बन्धित दूसरे काम करके अपनी आमदनीमें थोड़ा-कुछ जोड़ पाते है, जिसकी उनको सख्त जरूरत है। अतएव यह संघ नगरपालिकासे अनुरोध करता है कि वह भविष्यमे खादीकी वर्दीको जारी रखे।

मै नही जानता कि यह प्रस्ताव केवल आधे दर्जन भगियो द्वारा पास किया गया है अथवा नगरपालिकाके सारे भंगियोको इसकी जानकारी थी और उन्हे इसके बारेमे सब-कुछ बता दिया गया था। मन्त्रीका कहना है कि प्रस्ताव पास किये जानेसे पूर्व इसे सब भगियोको अच्छी तरह समझा दिया गया था। यह एक ऐसा प्रस्ताव है, जिसे मै नगरपालिकाके सभी कर्मचारियोके सामने सहर्ष रख सकता हूँ। खादी या कोई भी चीज उनपर जबरदस्ती लाद कर बहुत दिनोतक नही चलाई जा सकती, लेकिन जिस प्रकार कराचीके भगियोके बीच उन्हे खादीका महत्त्व समझा कर उसका प्रचार किया गया है, उस प्रकारका प्रचार यदि समस्त भारतकी नगरपालिकाओके कर्मचारियोंके बीच किया जाये और यदि वे खादीकी वर्दीकी माँग करे तो कोई भी नगरपालिका लम्बे समयतक उनकी इस माँगको अस्वीकार नही कर सकती। अतएव मै भंगी सघको उसके इस प्रस्तावपर बधाई देता हूँ।

'ईश्वर है'

'यग इडिया' (११-१०-१९२८)मे यह लेख पढनेके बाद एक पाठकने एमर्सनकी ये सुन्दर पक्तियाँ लिख भेजी है:

प्रतिदिन हमारे चारों ओर जो-कुछ घटित होता रहता है, उसपर यदि हम तनिक-सा विचार करें तो हम तुरन्त देख सकते है कि हमारी इच्छासे ऊपर भी कोई शक्ति है जो दुनियाके इस व्यापारका नियमन करती है; हम ख्वामखाह जिस भाग-दौड़में लगे रहे है, वह अनावश्यक और व्यर्थ है; केवल हमारा सहज-साध्य, सीधा-सादा और सहज कर्म ही हमें बल देता है और उस नियमका पालन करनेसे ही हममें देवत्व आता है। विश्वास और प्रेम— विश्वासजनित प्रेम सचमुच हमें सारी चिन्ताओके भारसे मुक्त कर सकता है। ऐ मेरे भाइयो, ईश्वर है। प्रकृतिके केन्द्रमें, मनुष्यकी इच्छासे ऊपर कहीं कोई दिव्य शक्ति विद्यमान है, और वह शक्ति हमें ब्रह्माण्डके नियममें कोई व्यतिक्रम नहीं डालने देती।

यह सब मानो हमारी आँखोंमें अँगुली डाल-डालकर यह दिखाता है कि जीवन, हमने उसे जैसा बना दिया है, उससे बहुत अधिक सुखद और सहज हो सकता था; दुनिया आज जैसी है, उससे कहीं अधिक सुख-शान्तिका

स्थान हो सकती थी; इन सारे संघर्षोंकी, भयकी, निराशाकी, हाथ मलने और दाँत पीसनेकी कोई जरूरत नहीं है। वास्तवमें हम अपने सारे दुःखोंका सृजन स्वयं करते हैं। हम प्रकृतिके कल्याणकारी और सहज व्यापारमें व्यवधान डालते हैं।

यदि हममे थोडी-सी श्रद्धा हो तो हमे ईश्वर और उसका प्रेम सर्वत्र देखनेको मिलेगा।

सब्जियाँ और आहार-विषयक अहिंसा

कलकत्तासे एक मित्र लिखते हैं

आहारके विषयमें लिखे अपने पिछले लेखमें आपने कहा है कि चूँकि सब्जियोको पकानेसे विटामिन नष्ट हो जाते हैं, इसलिए उन्हें पकाया नहीं जाना चाहिए। मगर जैन लोग मानते हैं कि पके हुए फलोंको छोड़कर सभी सब्जियोंमें असंख्य कीटाणु होते हैं जो दिखाई नहीं देते और यदि सब्जियोंको पकाया न जाये तो वे उनमें सड़न पैदा करके अनेक बीमारियोंको जन्म देते हैं। जैन साधु तो बिना उबाला जलतक भी ग्रहण नहीं करते हैं। इस तरह उनका विचार आपके विचारसे बिलकुल मेल नही खाता। इनमें से कौन-सा विचार सही है? क्या आप इस विषयपर कुछ प्रकाश डालेंगे?

मै 'नवजीवन' मे पहले ही इस बारेमे अपने विचार व्यक्त कर चुका हूँ।[१] यदि कोई व्यक्ति पके हुए फल उबाले बिना ले सकता है, तो मुझे समझमें नही आता कि वह कच्ची सब्जियाँ क्यो नही ले सकता, बशर्ते कि वह उन्हे अच्छी तरहसे हजम कर सकता हो। आहार-शास्त्रियोका विचार है कि यदि कोई अपने खानेकी चीजोमे थोडी मात्रामे कच्चा खीरा, सब्जियोकी पत्तियाँ, लौकी आदि भी शामिल कर ले तो यह उसके स्वास्थ्यके लिए, इन चीजोको पकाकर लेनेकी अपेक्षा निश्चय ही अधिक लाभदायक होगा। लेकिन अधिकाश लोगोकी पाचनशक्ति पका हुआ भोजन बहुत ज्यादा खानेसे इतनी खराब हो चुकी होती है कि यदि शुरू-शुरूमे वे कच्ची सब्जियोको पचा नही पाये तो इसमे आश्चर्यकी कोई बात नही, हालाँकि मै व्यक्तिगत अनुभवसे कह सकता हूँ कि यदि कोई भोजनके साथ एक या दो तोला कच्ची सब्जियाँ भी नियमसे खाने लगे तो उससे कोई नुकसान नही होता, बशर्ते कि उन्हे अच्छी तरह चबा कर खाया जाये। यह एक प्रमाणित तथ्य है कि कोई जितना खाना पकाकर खाता है, यदि उतना ही बिना पकाये अच्छी तरह चबा कर खाये तो उससे उसे ज्यादा पोषण मिलेगा। इसलिए बिना पकाई-उबाली सब्जियाँ लेनेसे भोजनको ठीकसे चबा-चबाकर खानेकी जो आदत पड जाती है, उससे यदि और कोई लाभ न भी हो तो कमसे-कम इस तरह खानेवाले व्यक्तिका काम अपेक्षाकृत कम भोजनसे तो चल ही जाता है और साथ ही जीवित रहनेके लिए खाना

१. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ २६६-६७।

खाकर मनुष्य जो हिंसा करता है, उसमे भी कमी आ जाती है। इसलिए चाहे आहारके दृष्टिकोणसे देखिए या अहिंसाको नजरमे रखते हुए विचार कीजिए, बिना पकाई-उबाली सब्जियाँ खाना किसी प्रकारसे आपत्तिजनक तो क्या, इसके विपरीत सबके अपनाने योग्य है। हाँ, यह तो है ही कि अगर सब्जियाँ कच्ची खानी हो तो इस बातका खास ध्यान रखना होगा कि वे बासी, बहुत ज्यादा पकी हुई या सडी हुई या अन्यथा गन्दी न हो।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १५-११-१९२८

६४. पत्र : के० एम० वैद्यको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१५ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मै बेहद थक गया हूँ। इस बार जबतक वर्धामे रहूँगा तबतक मेरी इच्छा किसी भी कार्यक्रममे भाग न लेनेकी है। मै चाहता हूँ कि शोर-शराबेसे दूर शान्तिपूर्वक जितना विश्राम कर सकूँ, करूँ। मुझमे ऐसा भाषण देनेकी शक्ति भी नही है जो सुनने योग्य हो। इसलिए आप कृपा करके मुझे क्षमा करेंगे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत के० एम० वैद्य
हितवाद प्रेसके पीछे, क्रैडाक टाउन, नागपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १२९९८)की फोटो-नकलसे।

६५. पत्र : एवलिन सी० गेजको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१५ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। बडी इच्छा है कि मै आपके मित्रके[1] लिए कुछ कर सकूँ। लेकिन उनकी इच्छा पूरी करना मेरे लिए मुश्किल है। हमारे यहाँ आश्रममे मुख्यत:

१. कुमारी गेजकी बस्तीमें श्रीमती कामा नामकी एक छात्रा थी। उसका पति प्रादेशिक सिविल सेवामें था; मगर उसकी नौकरी रिश्वत स्वीकार करनेके अभियोगमें उससे छिन गई थी। सजा भी हो गई थी और साबरमती जेलसे सजा काटकर निकलनेके बाद अब वह कोई काम करना चाहता था। कुमारी गेजने गांधीजीसे उसे कोई रोजगार देने या अम्बालालकी मारफत कोई काम दिलवा देनेका अनुरोध किया था। (एस० एन० १२९७७)।

शारीरिक श्रम ही किया जाता है – यथा कातना, बुनना, खेती करना और पशुपालन करना। हम जो पारिश्रमिक देते हैं, वह भी बहुत कम है।

हृदयसे आपका,

कुमारी एवलिन सी० गेज
यूनिवर्सिटी सेटलमेंट
वाछागाधी रोड, डाकघर ७, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १२९९९)की फोटो-नकलसे।

६६. पत्र : मेडेलिन आर० हार्डिंगको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१५ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

रेवरेड एफ० बी० मेयरके लिखे परिचय-पत्रके साथ आपका पत्र पाकर बडी खुशी हुई। श्री मेयरसे परिचय-पत्र लेकर आनेवाले व्यक्तिसे मिलकर मुझे बेशक बडी प्रसन्नता होती, और मै आशा करता हूँ कि हम कभी-न-कभी अवश्य मिल सकेगे। जब आप श्री मेयरको पत्र लिखे तब उन्हे मेरा नमस्कार लिख दीजियेगा और उनसे कहियेगा कि उन्होने अपने पत्रमे जोहानिसबर्गमे हुई जिस मुलाकातका जिक्र किया है, उसकी याद मेरे मनमे अभी भी ताजा है।

हृदयसे आपका,

कुमारी मेडेलिन आर० हार्डिंग
जोशी विला
नैनीताल

अंग्रेजी (एस० एन० १३०००)की फोटो-नकलसे।

६७. सन्देश : आन्ध्र सम्मेलनके लिए[1]

मै सम्मेलनकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आपके जैसे गरीब जिलेमे चरखेको यथोचित महत्त्व दिया जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १६-११-१९२८

१. जो १७ नवम्बर, १९२८को नन्दयालमें शुरू होनेवाला था।

६८. पत्र : लांगमैन्स ग्रीन ऐंड कम्पनी लिमिटेडको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१६ नवम्बर, १९२८

मेसर्स लांगमैन्स ग्रीन ऐंड कम्पनी लिमिटेड
३९ पेटरनास्टर रो, लन्दन ई० सी० ४

प्रिय मित्र,

'आत्मकथा'के बारेमे स्वामी आनन्दको लिखा आपका पत्र मिला। इसके अंग्रेजी संस्करणके प्रकाशनके अधिकार कुछ समय पहले मैंने न्यूयार्ककी मैकमिलन कम्पनीको दे दिये। आपने जैसा काम करनेका इरादा जाहिर किया है, कुछ उसी ढंगका काम आजकल श्री एन्ड्रयूज कर रहे हैं। इसलिए मैं चाहूँगा कि आप श्री एन्ड्रयूज (११२, गोवर स्ट्रीट, लन्दन, एस० डब्ल्यू १)के साथ बात करें।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १४८४४)की माइक्रोफिल्मसे।

६९. पत्र : देवी वेस्टको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१६ नवम्बर, १९२८

तुम्हारे पत्र और बा के लिए भेजी तस्वीरें मिली। यहाँकी गतिविधियोंके बारेमे तुमसे ज्यादा-कुछ कहनेका समय मेरे पास नहीं है लेकिन 'यंग इंडिया'के पृष्ठोंके द्वारा तो मैं तुमसे सम्पर्क बनाये हुए ही हूँ। इसीलिए मैंने तुमको केवल स्नेह-पत्र भेजकर ही सन्तोष कर लिया है।

हृदयसे तुम्हारा,

कु० देवी वेस्ट,
२३ जॉर्ज स्ट्रीट, लाउथ, लिंकनशायर

अंग्रेजी (एस० एन० १४४०६)की फोटो-नकलसे।

७०. पत्र : म्यूरियल लेस्टरको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१६ नवम्बर, १९२८

मुझे आपके दो पत्र मिले। आपने उद्‌घाटन समारोहका[1] जो विवरण लिखकर भेजा है, उसे पढ़कर बहुत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ आपको निरन्तर अधिकाधिक सफलता मिलेगी। अपनी गतिविधियोंके बारेमें मुझे अवश्य सूचित करते रहिएगा।

श्रीमती विनीफ्रेड डिकन्सन[2] जब यहाँ आयेगी, उनसे मिलकर मुझे निस्सन्देह बहुत खुशी होगी।

आश्रमके बारेमें आपको किसी तरहकी जानकारी देनेकी जरूरत नहीं, क्योंकि आप 'यंग इंडिया' के पृष्ठोंसे आश्रमके बारेमें सारी जानकारी प्राप्त कर ही लेती होंगी।

हृदयसे आपका,

कुमारी म्यूरियल लेस्टर,
किंग्सले हॉल, पाविस रोड, बो, ई० ३
इंग्लैंड

अंग्रेजी (एस० एन० १४४१४)की फोटो-नकलसे।

७१. पत्र : मुहम्मद हबीबुल्लाको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१६ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका कृपा-पत्र मिला। मुझे दुःख है कि आपके लिए मेरे प्रथम सुझावको[3] स्वीकार करना सम्भव नहीं है। आपने जो आपत्ति उठाई है, उसे मैं समझता हूँ।[4]

१. नये प्रार्थनाभवनका।

२. कुमारी म्यूरियलकी एक मित्र और सहयोगिनी, जो मद्रासके समीप एक स्कूलमें अध्यापन-कार्य करनेके लिए भारत आ रही थीं।

३. देखिए "पत्र : मुहम्मद हबीबुल्लाको", ९-११-१९२८।

४. अपने ९ नवम्बर, १९२८ के पत्र (एस० एन० १२७८६) में मुहम्मद हबीबुल्लाने घरेलू परिस्थितियोंके कारण ऐसा कोई कार्य-भार अपने सिर लेनेमें असमर्थता बताई थी, जिसके लिए भारतसे बाहर जाना पड़े।

आपके पत्रसे प्रकट होता है कि सर के० वी० रेड्डीके वारेमे पहले ही निर्णय लिया जा चुका था।[1] मुझे तो लग रहा है कि मैं इस नियुक्तिका समर्थन नही कर सकूँगा और सम्भवतः इसका विरोध करनेको भी वाध्य हो जाऊँ। आपने शायद समाचारपत्रोंमे देखा होगा कि यह वात अव लोगोसे छिपी नही है। स्वय मुझे एक पत्र मिला है, जिसमे मुझसे इस प्रस्तावका विरोध करनेका अनुरोध किया गया है। लेकिन, अभीतक मुझे अपना रास्ता साफ-साफ नही दीख पाया है, जिससे मैं कोई कदम उठा सकूँ। क्या आपने सर के० वी० रेड्डीकी नियुक्तिके वारेमे शास्त्रीजीकी राय जान ली है?

हृदयसे आपका,

सर मुहम्मद हवीवुल्ला साहव वहादुर, के० सी० आई० ई०
नई दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १४८५४)की फोटो-नकलसे।

७२. तार: लाला अमृतरायको

१७ नवम्बर, १९२८

लाला अमृतराय
लाहौर

आपके तारसे[2] मैं स्तब्ध रह गया। लालाजीकी मृत्यु एक वहुत बडी विपत्ति है। मैं आपके, आपकी माँ और परिवारके अन्य सदस्योके प्रति गहरी समवेदना प्रकट करता हूँ। आशा करता हूँ, भगवान आपको उनके चरण-चिह्नोपर चलनेकी शक्ति प्रदान करेगा।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० २४५६) से।

१. अपने पत्रमें उन्होंने यह भी कहा था: "अत्यन्त सावधानीपूर्वक सारी परिस्थितिपर विचार करनेके बाद ही हमने रेड्डीको नियुक्त करनेका निश्चय किया।"

२. देखिए "पजावका सिंह सो गया", १८-११-१९२८।

७३. तार: वल्लभभाई पटेलको

१७ नवम्बर, १९२८

बारडोली
वल्लभभाई पटेल
स्वराज्य आश्रम

आज सवेरे हृदय की गति रुक जानेसे लालाजीकी मृत्यु हो गई। वहाँ शोक सभा करे।

बापू

अंग्रेजी (एस० एन० २४५६)से।

७४. पत्र: हेरीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१७ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्र मिले। सबसे पहले मैं यह जानना चाहूँगा कि आप मुझसे किस विषयपर बातचीत करना चाहते हैं। मैं आपको साबरमती अथवा वर्धा, जहाँ मैं जल्दी ही जानेवाला हूँ, आनेका कष्ट देना तो ठीक नही समझता।

आश्रममें आकर कुछ दिन रहनेका आपका जो विचार है, उसके बारेमें मुझे खेदके साथ कहना पडता है कि यह सम्भव नही है। आश्रम, अथवा यो कहे कि उद्योग मन्दिर एक प्रबन्ध-समितिके नियन्त्रणमें है।

हृदयसे आपका,

श्री हेरी
मारफत श्री एस० के० घोष
एक्जिक्यूटिव इजीनियरका कार्यालय, नागपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १२७९०)की फोटो-नकलसे।

७५. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको[1]

सत्याग्रहाश्रम, सावरमती
१७ नवम्बर, १९२८

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे पत्रने मुझे सभी चिन्ताओंसे मुक्त कर दिया है। जवतक तुम एजेंटके रूपमें काम करनेको तैयार हो तवतक कोई परिवर्तन करनेकी जरूरत नहीं है और तवतक तो कतई नहीं ही है, जवतक तुम्हारे गिरफ्तार किये जानेकी अफवाह है। जव वैसा होगा तव देखा जायेगा। जव तुम इस भारको वहन करनेकी स्थितिमें नहीं रहोगे, तव कृपलानीको एजेंट वनानेका खयाल मुझे व्यक्तिगत रूपसे पसन्द है। यदि तुम १८ दिसम्वरको वर्धा आ सको तो हम इस विपयपर और वातचीत करेंगे, नहीं तो कलकत्तामें करेंगे।

सीतलासहाय कुछ महीनोंके लिए आश्रममें रहना चाहते थे, खासकर मानसिक शान्ति प्राप्त करनेके लिए। वे घरेलू और अन्य प्रकारकी चिन्ताओंसे ग्रस्त हैं। वे कुछ समय शान्तिके साथ रहना चाहते थे और अव वे उसी तरह रह रहे हैं।

कमलाके वारेमें जानकर दु:ख हुआ।[2] स्पष्टत: वह स्विट्जरलैंडमें कभी पूरी तरह ठीक ही नहीं हो पाई। मुझे खुशी है कि तुम उसे कलकत्ता ले जा रहे हो। वहाँ उसे कमसे-कम अच्छीसे-अच्छी डाक्टरी सलाह तो मिल सकेगी।

मुझे उम्मीद है, तुम शक्तिसे वाहर काम नहीं कर रहे होगे। लालाजीकी मृत्यु तो सचमुच एक भारी वज्रपात है।

हृदयसे तुम्हारा,

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
आनन्द भवन, इलाहावाद

[अंग्रेजीसे]

एस० एन० १२७९१ की फोटो-नकल तथा गांधी-नेहरू कागजात, १९२८
सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

१. यह पत्र जवाहरलाल नेहरूके १४ नवम्वर, १९२८ के पत्र (एस० एन० १२७८७) के उत्तरमें लिखा गया था। पत्रमें श्री नेहरूने लिखा था: "...अनेक कारणोंसे अ० भा० च० संघकी परिषद्के लिए यह अभीष्ट होगा कि वह संयुक्त प्रान्तमें एजेंटके रूपमें काम करनेके लिए मुझसे किसी ज्यादा योग्य व्यक्तिको नियुक्त करे।...मेरे कहनेका मतलव यह नहीं कि मैं इस जिम्मेदारीसे वचना चाहता हूँ।... लेकिन यदि ज्यादा अच्छी व्यवस्था हो सके तो मैं उसका स्वागत करूँगा।...

"संयुक्त प्रान्तमें यदि मैं किसी व्यक्तिके वारेमें सोच सकता हूँ तो केवल कृपलानी हैं। वे अव हर दृष्टिसे संयुक्त प्रान्तके निवासी वन गये हैं, यहां खादीके क्षेत्रमें उनका अच्छा नाम है और वे इस काममें सारा समय दे रहे हैं।

"इस मामलेमें वहुत जल्दी करनेकी अभी कोई जरूरत नहीं है। चूँकि आजकल मेरे गिरफ्तार किये जानेकी अफवाह है, मैं चाहता था कि अ० भा० च० संघकी परिषद् इस वातको ध्यानमें रखकर विचार करे।"

२. अपने पत्रमें जवाहरलाल नेहरूने कहा था: "कमलाकी हालतने हम सवको चिन्तामें डाल दिया है।"

७६. पत्र : पेरीन कैप्टेनको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१७ नवम्बर, १९२८

मेरे पास तुम्हारे दो पत्र पडे है। महादेव यहाँ नही है। मै अब बीमारीसे मुक्त हूँ, हालाँकि अभी कुछ कमजोरी है और इसलिए सावधान रहना है।

मै नही जानता कि कलकत्तामे मै कहाँ रहूँगा। अभी कुछ निश्चित नही है। लेकिन मै जहाँ-कही भी ठहराया जाऊँगा, तुम मेरे साथ ही रहोगी। इसलिए कलकत्तेमे तुम्हे अपने रहनेके बारेमे चिन्ता करनेकी कोई जरूरत नही। यह बताना कि कौन आयेगा। मै तुम्हे कलकत्ता पहुँचनेकी तारीख वर्धासे समय रहते बता दूँगा, और मै जिस गाडीसे कलकत्ता जाऊँगा, सम्भव है, तुम भी उसी गाडीसे चल सको।

श्रीमती पेरीन कैप्टेन
इस्लाम क्लब भवन, चौपाटी, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १२७९२) की फोटो-नकलसे।

७७. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१७ नवम्बर, १९२८

प्रिय सतीश बाबू,

आपका पत्र मिला। जब वकीलको 'यग इडिया' मे भारतकी गरीबीके बारेमे लिखनेकी अनुमति एक बार दे चुका हूँ, तो अब मै गरीबी दूर करनेके उपायोके सम्बन्धमे लिखे उनके लेखोको[1] जगह देनेसे कैसे इनकार कर सकता हूँ। उनसे एक लाभ तो हुआ ही है। वे इस प्रश्नमे खुद दिलचस्पी ले रहे है और उन्होने लोगोमे भी थोडी और दिलचस्पी पैदा कर दी है। मेरी आलोचनासे[2] उनके मुख्य तर्कका उत्तर मिल जाता है।

पता नही, आपको यह मालूम है या नही कि अनिल बरन राय 'फ्रॉनिकल' मे बडे जोरदार शब्दोमे खादीके विरुद्ध लिखते रहे है। लेख लगभग ठीक उसी शैलीमे लिखा गया है जिस शैलीमे कुछ वर्ष पहले 'वेलफेयर' वाला लेख लिखा गया था।

१. "गरीबीको दूर करनेके उपाय" शीर्षकसे ये लेख यंग इंडियाके २७ सितम्बर, ४, ११ और १८ अक्तूबर, १९२८ के अंकोंमें प्रकाशित हुए थे।

२. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ४७ और २४८-४९।

सामाजिक सम्मेलनके सम्बन्धमे, मुझे सम्मेलनके लोगोकी ओरसे एक पत्र मिला था और मुझे मजबूरन 'ना' कहना पड़ा था।[1]

जब मैं कलकत्ता आऊँगा तब प्रतिष्ठानके कार्य-कलापकी जाँच करूँगा और देखूँगा कि उसके बारेमे क्या-कुछ किया जा सकता है।

मुझे खुशी है, बैजनाथजी[2] आपके निकट आ रहे है। वे एक नेक-दिल आदमी है और सक्रिय सेवा करना चाहते हैं। उन्हे तो मैं यही सुझाव दूँगा कि या तो वे वर्धा आकर अपनी योजनापर बातचीत करे अथवा बातचीतको तबतकके लिए स्थगित रखे जबतक मैं कलकत्ता न आऊँ। एक ही कठिनाई है कि कलकत्तामे निश्चिन्त होकर बातचीतका समय शायद न मिल पाये। बैजनाथजीसे जिरह किये बिना और यह जाने बिना कि उनके मनमे क्या है, मेरे लिए कोई योजना तैयार करना मुश्किल है।

कृष्णदास आपके साथ है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। उम्मीद है, उसका स्वास्थ्य ठीक चल रहा होगा। उससे मेरा स्नेह कहेगे। यदि सोदपुरकी आबोहवा उसे अनुकूल बैठे तो मैं चाहूँगा कि वह कुछ समयतक आपके साथ रहे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त
खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १२७९३)की फोटो-नकलसे।

७८. पत्र : रामनारायण पाठकको

१७ नवम्बर, १९२८

भाई रामनारायण,

तुम्हारा पत्र मिला। [गु]फामे बैठना भी एक क्रिया तो है ही। उसमे भी आसक्ति आदि दोषोकी सम्भावना है। जबतक शरीर है तबतक काम तो रहेगे ही। देशसेवाके कार्यमे आसक्ति आदि होनी ही चाहिए यह जरूरी नही है। हम अपने जो दोष दिखाई दे उन्हे कम करनेका प्रयत्न करे, इसीमे पुरुषार्थ है।

बापूके आशीर्वाद

श्री रामनारायण नागरदास पाठक
श्री गांधी अन्त्यज आश्रम
छाया (पोरबन्दर)

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७८४)से।
सौजन्य : रामनारायण पाठक

१. देखिए "पत्र : सत्यानन्द बोसको", ९-११-१९२८।
२. बैजनाथ केडिया।

७९. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१७ नवम्बर, १९२८

भाईश्री खम्भाता,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अच्छी तरह वापस पहुँच गये यह बहुत ही अच्छा हुआ और यह जानकर बहुत आनन्द हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य आगेसे अच्छा है। पानीके उपचारके विषयमें कोई नया अनुभव हो तो लिखना। स्वास्थ्यमें जितना सुधार हुआ है उसे बनाये रखना। तुम दोनोंको मेरा आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०१८)से।
सौजन्य . तहमीना खम्भाता

८० भेंट : एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिसे

१७ नवम्बर, १९२८

यह दु:खद समाचार मुझे आज सुबह दिवंगत देशभक्तके पुत्रसे मालूम हुआ। ऐसे नाजुक समयमें लालाजीकी मृत्युको मैं राष्ट्रके लिए एक बहुत बड़ी विपत्ति मानता हूँ।[1] उनके स्थानकी पूर्ति करना कठिन और असम्भव है। लालाजीके समान दीर्घ काल तक और निरन्तर जन-सेवाका कार्य करनेवाले लोग आज बहुत कम हैं। लोग चाहे जो कहें, मेरा यह दृढ विश्वास रहा है कि लालाजी मुसलमानोंके मित्र थे और वे सच्चे हृदयसे हिन्दू-मुस्लिम एकताके अभिलाषी थे। कितना अच्छा हो, अगर हममें से प्रत्येक इस सत्यको हृदयगम कर ले और जिस एकता और सहिष्णुताकी शिक्षा लालाजी हमें जीवन-भर देते रहे, हमारा राष्ट्र उस एकताकी स्थापना करके और सहिष्णुताको बढावा देकर लालाजीकी मृत्युके रूपमें आई विपत्तिको एक लाभप्रद रूप दे सके। मैं जानता हूँ उनके मनमें किसीके प्रति दुर्भाव अथवा वैर नहीं था। उनका जीवन एक खुली पुस्तक था। एक सहकर्मीके रूपमें उनके साथ काम करना प्रसन्नताका विषय था, एक मित्रके रूपमें वे अत्यन्त वफादार व्यक्ति थे। विद्यार्थी-जगतके लिए वे शक्ति-स्तम्भ थे। मैं जानता हूँ अनेक लोग उनकी सूझ-बूझ भरी सलाह, मार्ग-दर्शन और सरक्षणकी साक्षी सहर्ष देंगे। मुझे मालूम है उनकी स्मृतिमें एक स्मारककी स्थापना भी की जायेगी, लेकिन उनका सबसे सच्चा स्मारक तो यह

१. देखिए "तार· लाला अमृतरायको", १७-११-१९२८।

होगा कि लोग स्वराज्यके लिए और 'स्वराज्य' शब्दसे जिन चीजोका बोध होता है, उन चीजोके लिए दुगुने उत्साहसे काम करे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १९-११-१९२८

८१. लाजपतरायको श्रद्धांजलि[1]

अहमदाबाद
१७ नवम्बर, १९२८

महात्माजीने कहा, लालाजीकी मृत्युसे जो स्थान रिक्त हुआ है, उसे भरना कठिन है। उन्हें गौरवमय और देशभक्तके लिए वांछनीय मृत्यु प्राप्त हुई। महात्माजीने आश्रमके निवासियोंसे कहा कि वे लालाजीके जीवनसे सबक लें और उनकी उच्च कर्त्तव्य-भावनाका अनुकरण करें।

मै नही मानता कि लालाजीकी मृत्यु हो गई; वस्तुत. वे जीवित है।

[अंग्रेजीसे]

ट्रिब्यून, २०-११-१९२८

८२. अहिंसा-सम्बधी कुछ समस्याएँ

वछडेसे सम्बन्धित पत्र तो अमीतक आते ही चले जा रहे हैं। मैं जितना समझा सकता था, उतना समझा चुका। जिन पत्रोका उत्तर देना कुछ भी जरूरी था, उनके उत्तर भी दे चुका। इसलिए विशेष लिखना नही चाहता। किन्तु कितने ही पत्र-प्रेषक सच्ची उलझन सुलझानेके लिए या मुझे उलझनमे डालनेके लिए मुझसे जो प्रश्न पूछते है, उनका उत्तर देना मैं धर्म समझता हूँ।

(१)

ऐसा एक पत्र यह रहा:

> **मेरा लड़का चार महीनेका है। वह जन्मके पन्द्रहवें दिनसे बीमार पड़ा है और उसकी बीमारी किसी तरह नहीं जाती। कितने ही डाक्टरों और वैद्योकी दवा कराई किन्तु जरा भी आराम नहीं हुआ। कुछ डाक्टरोंने तो दवा देनेसे इनकार कर दिया है। इलाज करनेवाले डाक्टरको तथा मुझे ऐसा जान पड़ता है कि**

१. निम्नलिखित प्रस्तावनाके साथ फ्री प्रेस द्वारा प्रसारित: "आज शाम सत्याग्रह आश्रममें प्रार्थनाके बाद आश्रमवासियोंको सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधीने विह्वल स्वरमें लालाजीकी मृत्युका दु.खद समाचार सुनाया।"

> अब यह लड़का जियेगा नहीं। मेरा कुटुम्ब बहुत बड़ा है और मैं दुःखी हूँ। मेरे सिरपर कर्जका भी बड़ा बोझ है। मुझसे उस लड़केका दुःख देखते नहीं बनता। कृपया मुझे बतलाइए कि मैं क्या करूँ?

अगर इन सज्जनने ध्यानपूर्वक 'नवजीवन' पढा होता तो इन्हे प्रश्न करनेकी भी जरूरत न रहती। अगर करोडो डाक्टर उस बच्चेके जीनेकी आशा छोड दे तो भी उस बालकके प्राण नही लिये जा सकते, क्योकि न तो बाप ही उसकी सेवा करनेकी शक्ति खो बैठा है और न बालक ही ऐसी स्थितिमे है कि उसकी सेवा न की जा सके। बालकको करवट बदलवाना, उसे गोदमे लेना, उसकी दूसरी अनेक सेवा-सँभाल करनी शक्य है। जब कि सेवा अशक्य हो जाये, और सामान्य तौरपर ऐसा जान पडे कि प्राण जाना निश्चित ही है, और उस प्राण-हरणमे अपना कोई स्वार्थ न हो, तभी प्राण-हरण किया जा सकता है। यहाँ सेवा तो शक्य है ही, और उसके अलावा बाप अपनी दु खी स्थितिको आगे ला धरता है। वह आप बडे कुटुम्बवाला है, ऋणी है, आदि बाते प्राणहरणका कारण कभी नही हो सकती। मुझे तो यहाँ बापका स्पष्ट धर्म लडकेकी सेवा करते ही जाना जान पडता है। हाँ, बाप अगर समझे तो अवश्य ही एक दूसरा धर्म उसके लिए और है — लडका बचे या न बचे, किन्तु अबसे वह सयमका पालन करके सन्तान-वृद्धिको रोकनेका निश्चय करे।

(२)

दूसरा पत्र यह है। पत्र हिन्दीमे है।[1]

> मै . गोशालाका मन्त्री हूँ। इसमे लगभग ५०० पशु है। वे बिलकुल बेकार है, खर्च अधिक पडता है। यहाँ रोज एकके हिसाबसे सालमे लगभग ३५० से ४०० पशु मौतके किनारे पहुँचते रहते है — उनकी ठीक वही हालत रहती है जैसी कि आपने बछडेकी वर्णित की है — और अन्तमे मर तो जाते ही है। अब मै क्या करूँ?

ऊपरके पत्रसे यह स्पष्ट है कि खर्चका अधिक होना अहिंसाकी दृष्टिसे प्राण-हरणका कारण कभी नही हो सकता। और अगर रोज एक पशु आश्रमके बछडेके समान बुरी स्थितिमे रहता है तो गोशाला बन्द कर देनी चाहिए, क्योकि ऐसी भयकर स्थिति वहाँकी दुर्व्यवस्था सूचित करती है। उस बछडेका पैर तो किसी आकस्मिक दुर्घटनाके कारण टूट गया था, और उसके बाद वह बीमार पड गया था। किसी भी सुव्यस्थित सस्थामे जानवर रोज इस स्थितिमे हो ही नही सकते। यहाँ धर्म स्पष्ट है। और ऐसे पिंजरापोलोमे विशेष धर्म यह है कि उक्त स्थितिके पशुओकी सेवा करनेके अच्छेसे-अच्छे उपाय ढूँढकर, उनका जीवन सुखी बनाया जाये। इस बारेमे मै बहुत बार लिख चुका हूँ कि आदर्श पिंजरापोल किसे कहना चाहिए और उसे कैसे चलाया जाना चाहिए। पत्र-लेखकको मेरे वे लेख पढकर विचार कर लेना चाहिए।

१. यहाँ इसका अनुवाद गुजराती पाठसे किया गया है।

कोई कुनबी किसान भाई लिखते हैं :

हमारे गाँवके नजदीक ढोरोंकी चरागाह है। उसमें पाँच-सात हजार हरिण हैं। वे हमारी कपासके अंकुर खा जाते हैं। हम बहुत हैरान होते हैं। ठाकरड़ा लोगोंको रखें तो वे इन्हें मार सकते हैं। मगर वे तो इनका माँस भी खाते हैं। हमारे जैसे लोगोंको आप क्या सलाह देंगे? इनके अलावा खापरडा[1] हमारे बीज और अनाज खा जाते हैं। खेतमें आग जलानेसे उसमें ये आ पड़ते हैं। यदि इस उपायसे हमारे अनाजकी रक्षा होती हो तो हमें आग जलानी चाहिये या नहीं?

यह प्रश्न ऊपरके दो प्रश्नोसे भिन्न जातिका है। यह प्रश्न बन्दरवाले प्रश्नसे मिलता-जुलता है, बछडेके प्रश्नसे नही। मै हिंसाके पथपर किसीका भी नेतृत्व करनेमे असमर्थ हूँ। अन्य कोई आदमी यह नही बतला सकता कि किसीको किस हदतक हिंसा करनी चाहिए, सभीको अपनी-अपनी शक्तिके अनुसार अपना रास्ता स्वय ढूंढना चाहिए। सामान्य रीतिसे यो कहा जा सकता है कि यदि किसी स्थितिमे बन्दरको मारना मै अनिवार्य मानूँ तो इस कारणसे दूसरोका हरिणोको मारनेके लिए तैयार हो जाना न्यायवुद्धि नही है, यह अन्धानुकरण ही होगा। फिर मै बन्दरोको मारनेका निर्णय नही कर पाया हूँ। मुझे यह आशा भी नही दिखती कि मै इस निर्णयपर जल्दी आ सकूँगा। ऐसे निर्णयसे जहाँतक दूर रहा जा सके, रहनेका मेरा प्रयत्न आज है और हमेशा रहेगा। इसके अलावा हरिणको दूर रखनेके कई ऐसे उपाय मिल सकते है भले ही वे बहुत कठिनाईसे वशमे आ सकनेवाले बन्दर जैसे पशुके सम्बन्धमे अशक्य सिद्ध हो। यह तो हरएक किसान क्षण-क्षण अनुभव करता है कि खेतीके लिए छोटे-छोटे कीडोका नाश अनिवार्य है। इस वस्तुको इससे आगे ले जाना मेरी शक्तिके बाहर है। हिंसा करनेसे जिस अंशतक बचना सम्भव हो, उस अंशतक बचना सबका धर्म है— यह अवश्य कहा जा सकता है।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, १८-११-१९२८

८३. आरामकी टोहमें

जैसा कि समाचारपत्रोमे पहले ही प्रकाशित हो चुका है इस मासकी १५ तारीखको तो नही किन्तु २५ के आसपास मै वर्धा, सत्याग्रहाश्रम पहुँचनेकी आशा करता हूँ। किन्तु वहाँ पहुँचकर दैनिक कार्योके अतिरिक्त मै और कुछ कर पाऊँगा इसमे मुझे सन्देह है। मै यथासम्भव अधिकसे-अधिक आराम करना चाहता हूँ। अतः मै सभी लोगोसे प्रार्थना करता हूँ कि वे वर्धा, सत्याग्रहाश्रममे मुझसे मिलने या भाषण सुननेकी आशा न करे। वर्धामे रहते हुए मुझे जो काम करना है, अपनी आजकी स्थितिको देखते हुए मै जितना समय निकाल सकूँगा उतनेमे इस कामको शायद ही

१. एक प्रकारका कीड़ा।

पूरा कर पाऊँगा। अत. मेरा सभी लोगोसे अनुरोध है कि वे मेरी उपर्युक्त प्रार्थनाको ध्यानमे रखनेकी कृपा करे।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १८-११-१९२८

८४. पंजाबका सिह सो गया

शनिवारको जब 'नवजीवन' के पृष्ठ मशीनपर छपने जा रहे थे तब लाला लाजपतरायके पुत्रका यह तार मिला. "आज सुबह हृदयकी गति बन्द हो जानेसे लालाजी चल वसे।" लालाजीके देहान्तका अर्थ है भारतके सौर-मण्डलसे एक महान नक्षत्रका अस्त हो जाना। लालाजी पजाबके सिंह, भारतके वीर पुत्र, सच्चे सेवक और खरे देशभक्त थे। लालाजीने आधी सदीमे जो सेवा की उसका ठीक-ठीक मूल्याकन करना लगभग असम्भव है। भारतके सकटके समय लालाजीकी मृत्युको बर्दाश्त करना बहुत ही कठिन है। इसके बावजूद मेरी सलाह है कि लोगोको शोकाकुल होनेकी बजाय उनके साहस, त्याग, सहनशीलता, उदारता, वीरता, देशभक्ति आदि महान गुणोको अपने भीतर उतारना चाहिए और जिस स्वराज्यके लिए वे जिये और मरे उसके लिए लोगोको भगीरथ प्रयत्न करना चाहिए। धन्य है वह देश जिसमे लालाजी जैसे नर-रत्न उत्पन्न हुए। ईश्वर उनकी आत्माको शान्ति और उनके परिवारको धैर्य बँधाये। समस्त भारत इस शोकमे उनके साथ है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १८-११-१९२८

८५. भ्रम

जान पडता है, अहमदावादमे यह गलतफहमी फैली हुई है कि पिंजरापोलके भाइयोका कोई शिष्टमण्डल बछडे और बन्दरोके मामलेमे मुझसे मिलनेके लिए आया था। ऐसा नही है। वास्तविकता तो यह है कि खुद मैंने उनसे कुत्तोके उत्पात और पिंजरापोलके सम्बन्धमे बाते करनेकी प्रार्थना की थी और वे कृपापूर्वक मुझसे बाते करनेके लिए आये थे। जब वे मेरे पास आये तो मैंने बछडोके मारे जाने और बन्दरोसे सम्बन्धित अपने धर्म-सकटके बारेमे उनसे चर्चा भी की थी और उस विषयपर हम लोगोमे स्नेहके साथ बातचीत हुई थी।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १८-११-१९२८

८६. एक बालकका संकट

साढे सोलह सालका एक लडका लिखता है[1]:

ऐसी करुण स्थिति अनेक नवयुवकोकी होगी। यह कैसी परतन्त्रता है कि वे अपने नाम लिखा पत्र भी न पा सके! मै यह नही मानता कि सोलह वर्षकी उम्रको पहुँचे हुए अपने पुत्र-पुत्रियोपर माता-पिता द्वारा ऐसी चौकसी या ऐसा अकुश रखने-से उनका हित होता है। यह स्पष्ट है कि जवान होनेपर भी जिन बच्चोको इस तरह बच्चा बनाकर रखा जाता है वे स्वतन्त्रता देवीकी पूजा कभी नही कर सकते। ऐसी दयनीय स्थितिमे पडा हुआ व्यक्ति कभी स्वतन्त्र रूपसे धर्मको भी नही पहचान सकता। धर्म कोई मेडिया धसान तो है नही। धर्मका अर्थ है परम पुरुषार्थ।

जहाँ ऐसा वातावरण हो, वहाँ मै नवयुवकोको सविनय अवज्ञाके सिवाय और क्या सलाह दे सकता हूँ? इस नवयुवकमे अगर हिम्मत हो तो वह विनयपूर्वक माताके आगे अपना धर्म रखे। माता राष्ट्रीय शालामे जानेकी मनाही करे तो वह वहाँ भले ही न जाये, किन्तु जहाँका वातावरण गदा हो ऐसी शालामे तो कदापि न जाये। घर बैठ कर जो उद्योग हो सके सो करे, काते, रुई धुने, कपास ओटे, कपडा सिये, बढईके कुछ औजार लेकर लकडीका काम करे, अच्छी पुस्तके पढे, उनपर विचार करे, उनसे उद्धरण चुने, भागवतमे से माताको प्रह्लादका चरित्र पढकर सुनाये, रोज टहलने जाये, कसरत करे और शरीर तथा मनके आसपास आदिका वातावरण शुद्ध और निर्मल बनाये।

साढे सोलह वर्षके बालकके घर-गृहस्थी हो ही नही सकती। इसलिए वह मातासे विनयपूर्वक कह दे कि इक्कीस या पच्चीस वर्षका होनेके पहले तो वह पत्नीके साथ रहनेकी बात ही नही सोच सकता। इस तरह अगर यह युवक और ऐसी स्थितिमे पडे हुए अन्य युवक माता-पिताको अपना शुभ निश्चय जता दे और साथ-साथ विनयका पालन करे, माता-पिताकी सेवा करे और पवित्र रहे तो उनकी उन्नति होगी, माता-पिता भी एक नया पाठ सीखेंगे और देश तथा धर्मका कल्याण होगा।

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नही दिया गया है। बालकने लिखा था कि १६ वर्षकी आयुमें उसका विवाह हो गया था। और उसके बड़े भाई उसे अपने साथ सिनेमा आदि दिखाने ले जाते और अश्लील उपन्यास पढनेको देते थे। फलस्वरूप उसे बुरे-बुरे सपने आने लगे और उसका शरीर निर्बल हो गया। फिर **'नीतिनाशने मार्गे'** [अनीतिकी राहपर] नामक पुस्तक उसके हाथ लगी और उसे पढ-समझकर उसकी आदतोंमें कुछ सुधार हुआ। बालकने उसके बाद किसी राष्ट्रीय शालामें पढनेकी इच्छा प्रकट की किन्तु उसकी माँको यह बात पसन्द नहीं आई। माँने कहा कि राष्ट्रीय शालामें हरिजनोंके बच्चे भी पढते है और उसे ऐसी शालामें भेजकर वे अपनी नाक नहीं कटवाना चाहती। बालकने यह भी लिखा था कि उत्तर **नवजीवन**में ही दिया जाये क्योंकि उसके नाम लिखे पत्र खुद उसके हाथमें न पड़ें तो उसे फिर नहीं दिये जाते।

ऐसा लगता है कि उक्त नवयुवक इस बातको समझता है कि केवल अपना प्रयत्न निरर्थक है। यह प्रत्यक्ष प्रमाणकी बात है कि भगवानकी कृपा बिना कुछ भी नही होता, उसकी इच्छाके बिना एक पत्ता तक नही हिलता। इसलिए पुरुषार्थी बननेकी इच्छा रखनेवाले नवयुवक पुरुषार्थकी मर्यादा समझे और अडिग श्रद्धापूर्वक नित्य अपने शुद्ध सकल्पोके बारेमे भगवान्‌से प्रार्थना करे। फिर भले ही वे उसे रामके नामसे भजे या कृष्णके नामसे, अथवा जो नाम उनका परिचित और प्रिय हो, उसी नामसे उसे भजे।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, १८-११-१९२८

८७. मारा नहीं

एक भाई लिखते है :[1]

उक्त पत्र मैने पढा नही है। किन्तु यदि मुझसे मिलनेके लिए आये हुए किसी भाईने यह बात लिखी हो तो यह खेदकी बात है। 'नवजीवन'मे[2] खण्डन करने पर भी यदि कोई इसपर विश्वास करे तो मै उसे और भी खेदजनक मानूँगा। यह बात समझमे नही आती कि किसी प्रसग-विशेषपर यदि मैंने बन्दरोका मारा जाना इष्ट माना होता और वे मारे गये होते तो मै उसको छिपाता क्यो? उन चार जैन सज्जनोको ऐसा कहते समय सोचना था। किन्तु जिन्हे सत्यके विपरीत बोलना या लिखना हो उनकी जबान या कलमको कौन रोक सकता है? मै दोहराता हूँ कि मैंने आश्रममे या अन्यत्र न तो किसी बन्दरको स्वय मारा या घायल किया है और न किसी अन्यसे ही ऐसा करवाया है। वे अभीतक मारे या मरवाये नही गये है। इस सम्बन्धमे मेरे मनमे कोई शका नही है, क्योकि अबतक इस बातपर कडा प्रतिबन्ध रहा है। हाँ, किसी बन्दरको कोई चोट आ गई है या नही, यह बात मै उतने निश्चयपूर्वक नही कह सकता । क्योकि एक या दो दिन तीर-कमान काममे लाये गये थे और गोफन तो अभीतक काममे लिया जाता है। मै यह लिख चुका हूँ कि ज्यो ही मुझे यह मालूम हुआ कि तीर-कमानसे बन्दरोके बुरी तरह घायल हो जानेकी सम्भावना है त्यो ही मैंने उसका व्यवहार बन्द करा दिया। इस समय गोफनसे ही काम लिया जाता है, किन्तु मै तो देखता हूँ कि बन्दर उसे एक खेल ही मानते है। फिर भी बन्दरोको गोफनके प्रहारसे कुछ चोट तो अवश्य पहुँच सकती है। किन्तु जहाँतक मै जानता हूँ गोफनसे या तीरसे आश्रममे कोई बन्दर घायल

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नही दिया गया है। इसमें लेखकने कहा था कि **नवजीवनमें** गांधीजीके खण्डन करनेपर भी एक जैन पत्रमें यह खबर प्रकाशित हुई है कि चार जैन सज्जनोंने गांधीजी द्वारा मारे गये बन्दरोको देखा है।

२. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ३२६-२७, ३५३ और ४२९-३०।

नही हुआ। बन्दरोको जानसे मारनेकी बात तो भविष्यमे भी बहुत दूरकी बात है। मै जानता हूँ कि इसमे हिंसा निहित है। इसलिए ऐसी हिंसा करनेसे पूर्व मै बार-बार सोचूँगा और इस हिंसासे बचनेके जितने भी उपाय सूझेगे उन्हे काममे लूँगा। फिर भी इतना विश्वास मै दिला सकता हूँ कि यदि मेरे जीवनमे कभी हिंसा करनेका समय आयेगा तो दुनिया-भरको उसका पता चल जायेगा।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, १८-११-१९२८

८८. कराचीके अन्त्यज भाई

कराचीकी नगरपालिकामे खादीके सम्बन्धमे जो चर्चा हुई उसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ है कि वहाँके अन्त्यज सघके अध्यक्षके प्रयत्नसे सघने निम्न प्रस्ताव स्वीकार किया है :[1]

यह प्रस्ताव जब प्रकाशनार्थ मेरे पास आया तो मेरे मनमे प्रश्न उठा कि यह प्रस्ताव बहुतसे अन्त्यज भाइयोने सोच-समझ कर पास किया है या केवल कुछ लोगोने एकत्रित होकर इसे बिना सोचे-समझे बाहरी दिखावेके लिए पास कर दिया है। फिर यह प्रश्न भी मेरे मनमे उठा कि कूडा-कचरा उठानेवाले लोगोको किसानके रूपमे माननेमे कोई सचाई है या नही या प्रतिष्ठाके विचारसे ऐसा मान लिया गया है। इसपर मैने मंत्रीसे पूछताछ की तो मुझे उनका यह उत्तर मिला :[2]

इस स्पष्टीकरणसे उक्त प्रस्तावका महत्त्व बढ जाता है। ऐसी सस्थाओमे जहाँ भी ऐसे प्रस्ताव पास किये जाये, सोच-समझ कर पास किये जाये और उनपर समझदारीसे चर्चा हो तो उनका महत्त्व बढ जाता है, क्योकि यदि ऐसे प्रस्ताव बिना सोचे-समझे सिर्फ बाहरी दिखावेके लिए स्वीकार किये या कराये जाये तो कुछ समयमे लोग उन्हे भूल जाते है। इतना ही नही, उनसे हानि भी होती है। आजकल ऐसे प्रस्ताव कही-कही केवल दिखावेके लिए पास किये जाते है। इसलिए जैसा कि ऊपर कहा गया है मुझे वैसी सावधानी रखनेकी आवश्यकता जान पडी। मुझे आशा है कि अन्त्यज भाई अपने उक्त प्रस्तावके अनुसार आचरण करेगे। यदि वे ऐसा करेगे तो उससे उनका और देशका, दोनोका लाभ होगा। वे केवल नगरपालिकाका काम करते वक्त ही खादी पहने, इतना ही काफी नही है; यदि उनमे प्रस्तावमे व्यक्त की गई भावना हो तो वे अपने घरमे भी खादीको ही स्थान दे। अन्त्यज सघको चाहिए कि वह खादीको टिकाऊ और सस्ता बनाये, अभी हालमे मैसूरमे खादी सहकारी सघ बना है। ऐसे सघ बना कर, सहकारी खादी भण्डार खोल कर बहुत सस्ती खादी प्राप्त

१. देखिए "टिप्पणियां", १५-११-१९२८ का उपशीर्षक "कराचीके भगी"।

२. उक्त पत्रका अनुवाद यहां नही दिया गया। अन्त्यज संघके मन्त्रीने लिखा था कि भंगियोंको इसलिए किसान माना गया है कि उनका मूल धन्धा खेती ही था और गांधीजीके सुझावके अनुसार अन्त्यज भाइयोंको प्रस्ताव समझानेका प्रयास भी लगातार किया जा रहा है।

की जा सकती है अथवा जैसे मद्रासमे चिट्ठीकी प्रथा चलाकर गरीबोके लिए खादी सस्ते दामोमें मुहैया की जा सकी है, वैसा कर सकते हैं। अंग्रेजीमे एक कहावत है, जिसका अर्थ है 'जहाँ चाह वहाँ राह'। यह कहावत अनुभव-सिद्ध है। भगी भाई और उनके नेता भी इसकी सत्यताका अनुभव कर सकते हैं।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १८-११-१९२८

८९. पत्र: क० मा० मुन्शीको

१८ नवम्बर, १९२८

भाईश्री मुन्शी,

तुम्हारा तार मिला। मुझे खेद प्रदर्शन करनेका मोह नही है। पजाबसे तार आये है और कई भाई सलाह-मशविरा करने आ रहे है। मैं जो बनेगा सो करूँगा, ऐसा मानना।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५११)से।
सौजन्य. क० मा० मुन्शी

९०. भाषण: शोक-सभामे[1]

[१८ नवम्बर, १९२८][2]

मेरी स्थिति थोडी कठिन है। लालाजीके साथ मेरा इतना घनिष्ठ सम्बन्ध था कि इस अवसरपर बोलते हुए मुझे उसी प्रकार सकोच होता है जैसा कि अपने मित्र, साथी या भाईकी प्रशसा करते हुए होता है। फिर भी मुझे लगता है कि मुझे दो-चार शब्द तो कहने ही चाहिए। लालाजीको मैंने पहली बार सन १९१४मे विलायतमे देखा था। उस समय उनकी देशभक्तिकी मेरे मनपर गहरी छाप पडी। यद्यपि समाचारपत्रोके द्वारा मुझे उनका परिचय मिल गया था किन्तु समाचारपत्रो पर मेरा विश्वास कुछ कम था, इसलिए समाचारपत्रोमे जो-कुछ कहा जाता उसे मै एकाएक स्वीकार नही करता था। सन् १९२० मे वे भारत आये तो लोगोने उन्हे राष्ट्रीय काग्रेसका अध्यक्ष चुना। तबसे मै लालाजीके निकट सम्पर्कमे आया। काग्रेसके कलकत्ता अधिवेशनमे मेरे और उनके बीचमे कुछ मतभेद था, किन्तु उसके कारण हमारे बीचमे कोई मनमुटाव नही हुआ।

लालाजीके साथ ऐसा कुछ होना सम्भव भी नही था क्योकि वे अपने मनमे कुछ छिपाकर नही रखते थे और अपने विचार पूरी स्पष्टतासे प्रकट करते थे।

१. यह सभा लाला लाजपतरायकी मृत्युपर शोक मनानेके लिए अहमदाबादमें साबरमतीके तटपर की गई थी।

२. बॉम्बे क्रॉनिकल, १९-११-१९२८ से।

युवकोको लालाजीके जीवनसे सबक लेना चाहिए। वे एक वसीयतनामा छोड़ गये है। लगभग पन्द्रह दिन पूर्व उन्होने अपने एक सन्देशमे कहा था कि मेरे जीवनके अब चन्द दिन ही शेष रह गये है, मै बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे ऊपर जो आक्रमण हुआ है उससे सम्बन्धित आन्दोलनमे मै विशेष भाग नही लेना चाहता। यह काम नवयुवकोका है और वह उन्हीको उठा लेना चाहिए।

लालाजीने ५० वर्षतक स्वराज्यके मन्त्रका जप किया। उनका स्वराज्य-सम्बन्धी काम नवयुवकोको उठा लेना चाहिए। स्वराज्यकी सिद्धिके लिए अपने प्रयत्नमे लालाजीने न तो स्वय कभी चैन लिया, न दूसरोको लेने दिया। उनके समयमे जेल जाना या काले पानीकी सजा भुगतना बडी असाधारण-सी बात थी। जेल जानेके सम्बन्धमे लोगोमे आज जो निर्भयता पाई जाती है वह उस समय नही थी। लालाजीको जब निर्वासनका दण्ड दिया गया उस समय मै भारतमे नही था। निर्वासनकी अवधिमे या उसके बाद लालाजीने कभी कोई दुर्बलता नही दिखाई। लालाजी अपने वसीयतनामेमे जिस धर्मका आदेश कर गये है हमे उसका पालन करना चाहिए। लालाजीके स्मारकके सम्बन्धमे अनेक तरहके सुझाव दिये जायेंगे। लेकिन लालाजीका सच्चा स्मारक तो स्वराज्य लेना ही है। इसके अभावमे बाकी सारे सुझाव व्यर्थ होगे।

प्रस्तावमे लालाजीको गरीबोका सरक्षक कहा गया है। इस कथनमे बहुत अर्थ है। लालाजीने जहाँ-कही भी दु.ख देखा, वही उनका हृदय द्रवित हो जाता था। उनकी भाषा अवश्य तीखी थी किन्तु उसमे तिरस्कार नही था। लालाजीके हृदयमे तो विश्वप्रेमका निवास था। वे लोगोसे कुछ भी छिपाते नही थे, अपने साथियोसे कुछ छिपानेका तो प्रश्न ही नही था। लालाजी का मन इतना दयालु था कि भारतमे या भारतके बाहर भी वे किसीका दुःख देखते तो उनका हृदय द्रवित हो जाता था। मुसलमानोके प्रति उनके हृदयमे बिलकुल भी द्वेष-भाव नही था। उनकी आन्तरिक इच्छा थी कि हिन्दू-मुसलमान भाइयोकी तरह रहे। उनकी आकाक्षा थी कि भारतमे हिन्दू राज्य या मुस्लिम राज्य नही, बल्कि सारी जनताका राज्य होना चाहिए। लालाजीके जीवनका आरम्भ धर्म और समाज-सुधारसे हुआ था किन्तु उन्होने शीघ्र ही देख लिया कि जबतक भारतको स्वराज्य नही मिलता तबतक धार्मिक या सामाजिक सुधारके क्षेत्रमे कुछ भी नही किया जा सकता। लोकमान्यकी तरह उन्हे भी राजनीतिके क्षेत्रमे परिस्थितियोकी अनिवार्यताके कारण ही प्रवेश करना पडा।

छोटे और बड़े सभी लोगोका पहला कर्त्तव्य तो यह है कि वे देशको परतन्त्रताकी जंजीरोसे मुक्त करें। यदि हम इस बोझको उठानेमे कोई योग नही देते तो लालाजीकी प्रशसा करना भाटो या चारणोकी नकल करने जैसा ही होगा। वे स्वराज्यके लिए एकाग्र मनसे, किसी भी तरहकी निराशाका अनुभव किये बिना पचास वर्षतक काम करते रहे। अपने जीवनके अन्तिम दिनोमे भी केवल स्वराज्यकी ही बात सोचते रहे। भगवान हमे उस उद्देश्यको पूरा करनेकी शक्ति दे जिसके लिए उन्होने अपना सारा जीवन अर्पित किया।

[गुजरातीसे]

प्रजाबन्धु, २५-११-१९२८

९१. तार : सत्यपालको[1]

१९ नवम्बर, १९२८

सत्यपाल

आपका तार मिला। मै चाहूँगा कि आप गरीबोको भोजन करानेका विचार छोड़ दे।

गाधी

अग्रेजी (एस० एन० १३३२६) की माइक्रोफिल्मसे।

९२. पत्र : मीराबहनको

[१९ नवम्बर, १९२८][2]

चि० मीरा,

इस समय ज्यादा लिखनेकी फुर्सत नही है। यहाँके लोगोके बारेमे तुम्हारा जो विचार है, उससे हालाँकि मै सहमत नही हूँ, फिर भी यदि तुम काम करनेके लिए बिहारके किसी स्थानको चुन सको तो मुझे कोई आपत्ति नही होगी। बिहारके लोग सचमुच दुनियाके उन लोगोमे से है जो हमे सहज ही अपने प्रति आकृष्ट करते है। आस्ट्रियावासी मित्र आज चले गये।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च.]

तुम्हारा अगला पत्र वर्धाके पतेपर होना चाहिए। मै यहाँसे शुक्रवारको रवाना होऊँगा और शनिवारको वहाँ पहुँचूँगा।

बापू

श्रीमती मीराबाई
खादी भण्डार, मुजफ्फरपुर
बिहार

अग्रेजी (जी० एन० ८२१३ तथा सी० डब्ल्यू० ५३२३) से।
सौजन्य : मीराबहन

१. इनके १९-११-१९२८ के तारके उत्तरमें। तार यह था : "प्रान्तीय काग्रेस समिति अनुरोध करती है कि डॉ० अन्सारी घोषणा कर दें कि लाला लाजपतरायका क्रिया-दिवस, २९ नवम्बर, समस्त भारतमें लाजपतराय दिवसके रूपमें मनाया जाये और उसका निम्नलिखित कार्यक्रम रखा जाये : "सुबह प्रार्थना सभायें, शामको जुलूस और सार्वजनिक सभा, गरीबोंको भोजन कराना।" कृपया इसे समाचारपत्रोंमें प्रकाशित करा दें।"

२. डाककी मुहरसे।

९३. श्रमिक संघके सदस्यता-शुल्कके सम्बन्धमे निर्णय

अहमदाबाद
२१ नवम्बर, १९२८

श्रमिक संघ प्रत्येक मिलको मिलोमे काम करनेवाले अपने सदस्योकी एक सूची सुलभ करायेगा, और सूचीमे शामिल सभी सदस्योसे उनके वेतन मिलनेके दिन सघ द्वारा निर्धारित दरोपर सदस्यता-शुल्क एकत्र किया जायेगा। यदि सदस्यताकी प्रामाणिकताके बारेमे अथवा किसी सदस्य द्वारा त्यागपत्र दे दिये जानेके सम्बन्धमे विवाद हो और उस विवादको श्रमिक सघ तथा सम्बन्धित मिल आपसमे न निबटा पाये और यदि मिल-मालिक संघ तथा श्रमिक सघ भी आपसमे मिल-बैठकर उसका कोई फैसला न कर सके तो उस मामलेको पंच-फैसलेके लिए सौप दिया जायेगा एवं जबतक कोई अन्तिम निबटारा नही हो जाता तबतक वह सदस्य श्रमिक सघको पूर्ववत चन्दा देता रहेगा। सघ ऐसे हर मजदूरको चन्दा वापस लौटा देगा जिसके बारेमे यह प्रमाणित हो जायेगा कि चन्दा इकट्ठा करनेके समय वह श्रमिक सघका सदस्य नही था। पचोका विचार है कि चन्दा इकट्ठा करनेकी जो चालू पद्धति है, उसमे अनियमितताकी गुजाइश है। इसलिए पच अनुरोध करते हैं कि श्रमिक सघके गठनमे मिल-मालिकोको पूरा-पूरा समर्थक होना चाहिए तथा ऊपर बताये गये तरीकोके अलावा अन्य किसी तरीकेसे चन्दा नही वसूल किया जाना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २२-११-१९२८

९४. लालाजी अमर रहें[२]

लाला लाजपतराय नही रहे। लालाजी चिरायु हो। जबतक भारतीय आकाशमे सूर्य चमकता है तबतक लालाजी-जैसे व्यक्ति मर नही सकते। लालाजी अपने-आपमे एक सस्था थे। अपनी युवावस्थासे ही उन्होने देश-सेवाको अपना धर्म बना लिया था और उनकी देशभक्ति सकीर्ण नही थी। वे अपने देशसे इसलिए प्रेम करते थे कि उन्हें समस्त ससारसे प्रेम था। उनकी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीय कल्याणकी भावनासे अनुप्राणित थी, इसीलिए उनका यूरोपीय जन-मानसपर इतना प्रभाव था।

१. श्रमिक संघ और मिल मालिक संघने, श्रमिक संघके सदस्योंका चन्दा इकट्ठा करनेके सिलसिलेमें उठनेवाले विवादका निपटारा करनेके लिए मामलेको पचोंके एक बोर्डके सिपुर्द कर दिया था, जिसने उपर्युक्त निर्णय दिया था। इस बोर्डके दो सदस्य थे — गांधीजी और सेठ मगलदास गिरधरदास।

२. इसी विषयपर गाधीजीका एक लेख **नवजीवन**, २५-११-१९२८ में भी प्रकाशित हुआ था।

यूरोप और अमेरिकामे उनके वहुत ज्यादा मित्र थे। वे जानते थे कि लालाजी क्या है और इसीलिए वे उनसे प्रेम करते थे।

उनकी प्रवृत्तियाँ विविध थी। वे वडे ही उत्साही समाज और धर्म-सुधारक थे। हम-जैसे अनेक लोगोके समान वे भी इसलिए राजनीतिज्ञ वन गये कि उनकी धार्मिक और सामाजिक सुधारकी लगनका यह तकाजा था कि वे राजनीतिमे भाग ले। अपने सार्वजनिक जीवनके प्रारम्भिक कालमे ही उन्होने यह देख लिया कि जिस तरहका सुधार वे चाहते थे उसमे से अधिकांश तवतक सम्भव न था जवतक देश विदेशी शासनसे मुक्त नही हो जाता। हममेंसे अधिकाश लोगोकी तरह उन्हे भी ऐसा लगा कि विदेशी शासनका विष जीवनके हर क्षेत्रको दूषित कर रहा है।

ऐसे एक भी सार्वजनिक आन्दोलनका नाम लेना असम्भव है, जिसमे लालाजीने भाग न लिया हो। उनकी सेवाकी भूख कभी नही मिटती थी। उन्होने शैक्षणिक सस्थाओकी स्थापना की, वे दलितोके मित्र और हमदर्द बने; देशमे जहाँ-कही भी दु ख दारिद्र्य देखनेको मिला, वे उसी ओर दौड चले। युवकोंसे उन्हे विशेष प्रेम था, जिससे वे लोग उनको आसपास घेरे रहते थे। किसी युवकने उनसे मदद माँगी हो और उसे मदद न मिली हो, ऐसा कभी नही हुआ। राजनीतिक क्षेत्रमे तो उनके विना काम ही नही चल सकता था। वे निर्भीक होकर अपने विचार अभिव्यक्त करते थे। इसके लिए उन्हे वहुत कष्ट सहना पडा—सो भी उस समय जव देशके लिए कष्टसहनकी प्रथा प्रचलित भी नही हुई थी। उनका जीवन खुली पुस्तक था। उनकी अत्यधिक स्पष्टवादितासे यदि उनके आलोचक चक्करमे पड़ जाते थे, तो वहुधा उनके मित्रोको भी वह असमजसमे डाल देती थी। मगर उनकी यह आदत छूटनेवाली नही थी।

अपने मुसलमान मित्रोके प्रति पूर्ण आदर-भाव रखते हुए मै दृढतापूर्वक कहता हूँ कि वे इस्लामके दुश्मन नही थे। हिन्दू धर्मको शुद्ध और सवल वनानेकी उनकी इच्छाको मुसलमानो अथवा इस्लामके प्रति घृणाभावका द्योतक नही समझना चाहिए। वे सच्चे हृदयसे हिन्दू-मुस्लिम एकताको वढावा देना और उसे सम्पन्न करना चाहते थे। वे हिन्दू राज्य नही, अपितु हिन्दुस्तानी राज्य चाहते थे, उनकी इच्छा थी कि उन लोगोमे पूर्ण समता हो जो अपने-आपको हिन्दुस्तानी कहते है। काश! लालाजीकी मृत्युसे हम परस्पर एक-दूसरेका विश्वास करना सीख सके। यदि हम भय छोड़ दे तो ऐसा वडी आसानीसे कर सकते है।

उनके लिए एक राष्ट्रीय स्मारक वनाये जानेकी माँग की जायेगी और की जानी भी चाहिए। मेरी विनम्र रायमे कोई भी स्मारक तवतक पूर्ण नही हो सकता जवतक हम उस स्वाधीनताको प्राप्त करनेका दृढ़ निश्चय नही कर लेते जिसके लिए वे जिये और अन्तमे गौरवमय मृत्युको प्राप्त हुए। हम उस चीजका स्मरण करे जिसे हम उनकी अन्तिम इच्छा मान सकते है। वे भारतको स्वतन्त्रता और सम्मान दिलानेका काम युवा पीढीको सौप गये है। उन्होने उनके प्रति जो विश्वास दिखाया, क्या वे अपने-आपको उसके योग्य सावित करेगे? और क्या हम पुरानी पीढीके समस्त स्त्री-पुरुष उन अनेक दिवगत देशभक्तोके स्वप्नको, जिनमे लालाजीका

अपना एक विशिष्ट स्थान है, साकार करनेके लिए मिल-जुलकर नये ओज और पूरी शक्तिसे प्रयत्न करके अपने-आपको लालाजी-जैसा देशबन्धु पानेका अधिकारी सिद्ध कर सकेंगे?

और न लोक सेवक मण्डलको[1] ही भूलना चाहिए, जिसकी स्थापना उन्होंने उन अनेक प्रवृत्तियोंको बढ़ावा देनेके लिए की थी जिन्हें उन्होंने देशहितके लिए प्रारम्भ किया था। इस समाजके सम्बन्धमें उनकी आकांक्षा बहुत बड़ी थी। वे चाहते थे कि सारे देशके बहुत सारे युवक एक सामान्य उद्देश्यके लिए साथ होकर एक मनसे काम करें। यह समाज अभी अपनी शैशवावस्थामें ही है। उन्हें अपने इस महान कार्यको मजबूत पायोंपर खड़ा करनेका समय भी नहीं मिला। यह राष्ट्रको सौंपी गई एक थाती है, जिसकी फिक्र और देखभाल राष्ट्रको ही करनी है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २२-११-१९२८

९५. विदेशोंसे प्राप्त शोक-सन्देश

पोर्ट लुई, मॉरिशससे अनाविल समाजके युवकोंने मुझे निम्नलिखित सन्देश भेजा है:

लालाजीकी मृत्युसे बहुत दुःख हुआ। उनकी मृत्युसे राष्ट्रको अपूरणीय क्षति पहुँची है। शोक-सन्तप्त परिवारसे हम हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

ट्रान्सवाल खत्री मण्डल, जोहानिसबर्गने निम्नलिखित सन्देश भेजा है:

खत्री समाज महान देशभक्त लालाजीकी मृत्युसे अत्यन्त दुःखी। कृपया शोक-सन्तप्त परिवारको हमारा संवेदना सन्देश पहुँचा दें।

पाटीदार मण्डल, जोहानिसबर्गने तार दिया है:

पाटीदार समाज महान देशभक्त लाला लाजपतरायकी मृत्युसे बहुत दुःखी। कृपया शोक-सन्तप्त परिवारको मण्डलका संवेदना सन्देश पहुँचा दें।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २२-११-१९२८

१ सर्वेंट्स ऑफ पीपुल्स सोसाइटी।

९६. अजमल जामिया कोष

मैं जानता हूँ इस कोषको इकट्ठा करनेमे वडी-वडी कठिनाइयोका सामना करना पडेगा। इसे इकट्ठा करनेवालोको पूर्वग्रहकी कठोर चट्टानमे से अपना रास्ता वनाना होगा। इस पारस्परिक घृणा-द्वेषके समयमे अनेक कट्टर हिन्दू यह तर्क करेगे कि किसी मुसलमानकी स्मृतिको स्थायी वनानेके लिए और विशेष रूपसे मुसलमानोंके हितोको वढावा देनेके लिए स्थापित किये इस कोषमे कोई हिन्दू पैसा क्यो दे। और कट्टर मुसलमानोका तर्क यह होगा कि कोई मुसलमान ऐसे व्यक्तिकी स्मृतिमे स्थापित किये गये कोषमे चन्दा क्यो दे, जो हिन्दू-प्रेमी था, ऐसी सस्थाके लिए चन्दा क्यो दे जिसे आशिक रूपसे मूर्तिपूजक हिन्दुओका समर्थन प्राप्त है। मगर इस दोहरी वाधाके वावजूद मुझे इस कोषके लिए चन्दा देनेकी अपील करते रहना है। जामिया मिलियाकी नियमावलीमे आमूल परिवर्तन किया गया है, जो वाछनीय भी था, अब यह ज्यादा मजवूत पायोपर खडी है। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि इस कोषके लिए एक हिन्दू मित्र पहले ही १०,००० रुपयेकी रकम दे चुके है और मैं स्वीकार करता हूँ कि इन हिन्दू मित्रके विश्वासका आधार स्वय मेरा विश्वास है। मुझे राष्ट्रीयता, सहिष्णुता और मित्रताकी भावनाको वढ़ावा देनेके लिए अविश्वास तथा निराशाके वातावरणके वावजूद आशा तथा विश्वास करनेके अलावा और कोई रास्ता दिखाई नही देता। यदि कभी किसीने धोखा खाया हो अथवा उसकी आशाएँ वालूकी भीतपर खडी सावित हुई हो तो इससे कोई फर्क नही पडता। सच्ची आशा तो वही है जो "मानव हृदयमे स्वत — वाहरी परिस्थितियोकी प्रेरणाके विना — फूट निकले।" विश्वासकी कोई सीमा नही होती। यदि किसी चीजमे अच्छाई और वुराई दोनोकी सम्भावना दिखाई देती हो तो यह उसे वुरा न मानकर अच्छा मान लेता है। विश्वास न करना कही-कही भूल तो सावित हो ही सकता है। ऐसी हालतमे वैसी भूल करनेके वजाय लाखो वार धोखा खाना अच्छा है। जो व्यक्ति अपने-आपको दूसरोके हाथो छलने देता है, वह कभी कुछ नही खोता। दरअसल, अन्तत. फायदेमे वही रहता है, न कि तथाकथित सफल छली व्यक्ति। मुझे भले ही हजारो वार धोखा खाना पडे, लेकिन उससे मुझे कोई पश्चात्ताप नही होगा। यह लिखते समय मुझे कुछ कटु अनुभवोकी याद आ रही है, लेकिन इसके वावजूद मेरा निजी अनुभव यह है कि मेरे आसपासके लोगोने मुझे जिस विश्वासी स्वभावका श्रेय दिया है, उसके लिए कभी मुझे कोई पश्चात्ताप नही करना पडा। मेरी यह निश्चित धारणा है कि मुझे और मेरे विश्वासके कारण किसी वस्तुमे विश्वास करनेवालोको कुछ खोना नही पडा है, भले ही हम यह सिद्ध न कर सके कि हमे वरावर लाभ ही हुआ है। कोई व्यक्ति तभी कुछ खोता है जव उसकी आत्माका गला घोट दिया जाये और किसी अन्य व्यक्तिके हाथो छला जानेपर ऐसा कभी नही होता।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २२-११-१९२८

९७. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

अहमदाबाद
२२ नवम्बर, १९२८

घनश्यामदास बिडला
बिडला पार्क, कलकत्ता

कल सवेरे वर्धा के लिए रवाना हो रहा हूँ। अब मैं वर्धामें आपके और मालवीयजीके उत्तरकी बाट जोहूँगा। इस विपत्तिको[1] ध्यानमें रखते हुए मैं चाहूँगा कि यदि सम्भव हो तो आप जल्दीसे-जल्दी वर्धा चले आयें।

गांधी

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७८७९) से।
सौजन्य. घ० दा० बिडला

९८. पत्र : छगनलाल जोशीको

२३ नवम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

चि० सन्तोक[2] मेरे सुझाये हुए १२ रुपयेमें निर्वाह करनेके नियमका पालन करनेमें अभी असमर्थ है इसलिए उसने चि० राधा[3] और रुखीके[4] साथ राजकोटमें रहनेका निश्चय किया है। उसका कहना है कि राजकोटमें उसे प्रति मास ६० रुपयेकी जरूरत होगी। यह रकम मुझे बहुत ज्यादा लगती है, तो भी मैं उसका जी दुखी नहीं करना चाहता, इसलिए मैंने इतनी रकम भेजनेकी बात मान ली है। रातके समय विचार करते हुए मुझे लगा कि यह रकम पेन्शनके तौरपर मानी जाये और उसे आश्रमके खातेमें डाल दें, यही सबसे सीधा मार्ग है।

मैं यही उम्मीद करता हूँ कि चि० सन्तोक और बालिकाएँ इस रकमको बादमें कम कर सकेंगी।

यह निर्णय करते समय मैंने मनमें संकोचका अनुभव किया और दुखका भी। अभी तो मैं यह सोचकर सन्तोष मान ले रहा हूँ कि वे किसी दिन आश्रमके आदर्शको मनसे स्वीकार करेंगी और आश्रममें आकर रहने लगेंगी।

१. तात्पर्य लालाजीकी मृत्युसे है।
२. मगनलाल गांधीकी पत्नी।
३ और ४. मगनलाल गांधीकी पुत्रियाँ।

इसे अपवाद रूप मान लेना है। चि० सन्तोपके वारेमे यह निर्णय करनेका कारण स्पष्ट है। इसलिए इस मामलेका दृष्टान्त देकर दूसरे कुटुम्वोके लिए इस प्रकार प्रवन्ध नही किया जा सकता। दूसरे लोगोको आश्रममे रहनेपर ही आजीविका प्राप्त हो सकती है।

जवतक मै दूसरा कोई निर्णय न करूँ तवतक उपर्युक्त रकम भेजते रहना है। मेरा देहान्त हो जानेपर कार्यकारी मण्डल जमनालालजीको लिखकर दूसरा निर्णय करना चाहे तो कर सकता है।

चि० सन्तोक वहाँ फिलहाल दसेक दिन रहेगी। इस वीच अगर वह कोई दूसरी माँग करे तो मुझे पूछ लेना। मै समझता हूँ कि अव किसी दूसरी माँगकी गुजाइश नही है।

इसकी एक नकल मुझे और एक चि० सतोकको देना।

यह रकम प्रतिमास चि० नारणदासको दे देना ही काफी होगा।

वापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
वापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

९९. पत्र : छगनलाल जोशीको

[२३ नवम्बर, १८२८][1]

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। छगनलालने जो माँग की है उसमे स्त्रियोके लिए धन स्त्रियोके कोषसे भेजना। उडीसाके लिए और मदद भेजनेकी जरूरत हो तो वल्लभभाईके पास अकाल कोष है, और थोडा-सा धन उडीसाका पहलेसे पडा है उसीमे से भेजना।

वल्लभभाईको लिखना। उसीसे छगनलालका प्रवन्ध हो जाना चाहिए, क्योकि यह सारा काम अकालसे सम्वन्धित है। जो पैसा विट्ठलभाईने अकाल कोषमें दिया है, उसमे से हम और भी रकम ले सकते है, ऐसा उन्होने लिखा है। इसमे कुछ वाधा आये तो अपने कोषमे से दे देना।

चार विद्यार्थियोका १२ रुपयेके अलावा खर्च आश्रम कोषसे दे देना। कृष्णमैया देवीसे[2] मिलो। इस विषयमे चूक न होने देना।

मैंने शारदावहनको कुछ स्थितियोमे आश्रम छोड देनेके लिए लिखा था। तुम्हारा भेजा हुआ पत्र उस पत्रका जवाव नही है। उनके मनमे शुद्ध वैराग्यकी भावना आये तो वहुत अच्छा होगा।

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

२. नेपालके एक काग्रेसी कार्यकर्त्ताकी पत्नी जो पतिकी मृत्युके पश्चात् बच्चों सहित आश्रममें रहने लगी थी।

म तो पाँच तोला अलसीका तेल खा जाता हूँ। आजसे दूधके साथ बादाम लेने लगा हूँ इसलिए खुराक कम हो जायेगी। मुझे स्वादकी चिन्ता तो होती ही नही है। तेल अनुकूल न आता हो सो बात भी नही है। सिर्फ तेल और रोटीसे वजन नही बढा सका, इसलिए आजसे बादाम और फल शुरू किये हैं। अलसीके तेलकी जरूरत हो तो लिखना ताकि समय-समयपर ताजा भेज सकूं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१००. पत्र : छगनलाल जोशीको

शुक्रवार [२३ नवम्बर, १९२८][1]

भाई छगनलाल,

एक बात लिखना भूल गया। डा० तलवलकर या डा० कानूगाको बुलाकर काशीको[2] दिखा दो। मुझे डर है कि उसे पेचिश हो गई है। यदि ऐसा हो तो शायद 'इपीकाकुन्हा' की सुई देनी पडे। जो भी डाक्टर आये उसे मेरी यह राय बता देना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१०१ पत्र : छगनलाल जोशीको

सूरत
२३ नवम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल जोशी,

साथका पत्र पढकर पारनेरकरको दे देना। जेठालालके विषयमें सोच-समझकर किन्तु दृढतापूर्वक जो भी करना ठीक हो वही करना।

गगादेवीने सिलाईका काम मॉगा है सो उसे दे देना। और कुछ नही तो अलग-अलग मापकी टोपियाँ या तकियाके गिलाफ बनवा लेना। उन्हे मैं बेच दूंगा। ग्राहक सहज न मिले तो अगर उसे जालीदार बड़े-बडे रूमाल बनाना आता हो तो जितने वह बना सके उससे उतने रूमाल बनवा लेना।

१. साधन-सूत्रके अनुसार।
२. छगनलाल गाधीकी पत्नी।

चम्पाबहन आये तब उसे गंगादेवीके साथ कामपर लगा देना। स्त्री विभागमें किसीके सोनेका प्रबन्ध तो हो ही गया होगा। हरसुखरायका ध्यान रखना और उसके विषयमें खबर भी देते रहना।

अमीनाके लिए बन्दोबस्त कर दिया होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

पूर्ण श्रद्धा और हिम्मतसे सब काम करना। नारणदासको जीतनेका[1] काम तुम्हें करना है। उसे जीतनेका काम मुश्किल मत समझना।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१०२ पत्र : गंगाबहनको

शुक्रवार, २३ नवम्बर, १९२८

चि० गंगाबहन,

तुम्हें छोड़ते हुए मुझे दुःख हुआ। तुमपर जो भार आ पड़ा है उसे तुम खूब हिम्मतसे सहन कर रही हो, तो भी मैं देखता हूँ कि उसके कारण तुम्हारा चित्त कुछ विचलित जरूर हो गया है। किन्तु 'गीता' तो यही शिक्षा देती है कि चाहे जैसी भी स्थिति आ जाये हम चित्तको अस्वस्थ न होने दें।

स्वास्थ्यके लिए जितना जरूरी हो, उतना दूध अवश्य लेना। उसमें कुछ दोष न मानना।

कुसुमको[2] वहाँ रहने दिया है। उससे काम लेना। वह नियमपूर्वक काम करनेवाली है। उसके साथ मिलने-जुलनेमें तनिक भी संकोच नहीं करना चाहिए। मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ६ : गंगाबहेनने

१. देखिए "पत्र : नारणदास गांधीको", २६-११-१९२८।

२. देखिए अगला शीर्षक।

१०३. पत्र : कुसुम देसाईको

२३ नवम्बर, १९२८

चि० कुसुम,[1]

तुम्हे समझ लेना चाहिए कि मुझे वही रहना है जहाँ मेरा काम है।

सस्थामे रहनेके जो नियम हो उनके अनुसार ही रहे। उसमे रहनेके लिए तो अनेक व्यक्तियोकी अनुमति लेकर चलना पडता है। स्वतन्त्रताका अर्थ स्वेच्छाचार कदापि नही है, अथवा किसी एक व्यक्तिको आधार मानना भी नही है।

समाजमे रहनेवालेको तो समाजके अनुसार ही चलना चाहिए। इसीका नाम सस्था है। इससे भिन्न वस्तु तो किसी एकका राज्य कहलायेगा। इस मर्मको समझकर तुम स्वस्थ चित्त होकर कर्त्तव्यपरायण बनो, यही मै चाहता हूँ।

शरीरका पूरा ध्यान रखना।

सबके साथ मित्रता करना।

मनुके विषयमे, बालमन्दिरमे और यदि रसोईमे जाना अच्छा लगे तो वहाँ काम करके सबको पूरा सन्तोष देना।

मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८५३) की फोटो-नकलसे।

१०४. पत्र : प्रभावतीको

शुक्रवार, २३ नवम्बर, १९२८

चि० प्रभावती,

तुमारा दुख मैं समज सका हु। परतु शारीरिक वियोग तो हमेशा रहेगा हि। निश्चि[त] होकर रहो और कर्तव्यमे दृढ और स्थिर चित्त बनो।

मुझको लीखा करो। द्वारिका जानेका दिल है तो जाना, नहिं तो नहिं जाना।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३४३ की फोटो-नकलसे।

१. हरिभाई देसाईकी पत्नी।

१०५. पत्र : प्रभावतीको

[२३ नवम्बर, १९२८ के पश्चात्][1]

चि० प्रभावती,

काम जितना दिल चाहे इतना करो परतु शरीर बिगडना नहिं चाहीये। वियोगका दु:ख हरगीज न मानो। प्रियजनोका वियोग तो हमारे लीये हमेशा है हि। तस्मादपरिहार्यर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।[2] इसका अर्थ मालुम नहि तो चि० पुरुषोत्तमसे पुछ लो। 'गीताजी' मे है।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३२५की फोटो-नकलसे।

१०६. सन्देश : आमलनेरके खादी कार्यकर्त्ताओंको[3]

[२३ नवम्बर, १९२८के पश्चात्][4]

गांधीजीने उनके कामकी तफसीलके बारेमें कुछ प्रश्न पूछने और अपनी जरूरतकी रुई खुद धुननेकी आवश्यकता समझानेके बाद उनसे कहा :

हमारे शास्त्रोमे कहा गया है कि किसी कामको शुरू न करना प्रथम कोटिकी बुद्धिमानी है, लेकिन एक बार उसे शुरू करके बीचमे छोड देना गलत है। अब जब कि आपने पूरी तरह सोच-समझकर अपनी योजना प्रारम्भ कर दी है तो मुझे आशा है कि आप उसे सम्पन्न करके ही छोडेंगे।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १३-१२-१९२८

१. इस और इससे पहलेके शीर्षकमें 'वियोग' के उल्लेखसे।

२. गीता, अध्याय २ श्लोक २७।

३. प्यारेलाल नैयर द्वारा लिखी 'वर्धाकी चिट्ठी' से। उसमें समर्थ उद्योग मन्दिर, मुनित (पश्चिमी खानदेश) के कार्यका वर्णन इन शब्दोंमें किया गया था . "ये लोग खादी उत्पादनकी व्यवस्था 'समेकित पद्धति' नामसे जाने जानेवाले तरीकेसे कर रहे है। इसके पीछे जो विचार काम कर रहा है वह है एक ही घरमें एक ही परिवारके सदस्यों द्वारा खादी तैयार करनेसे सम्बन्धित यथासम्भव अधिकसे-अधिक काम करवाकर हाथ-बुनाईके आन्तरिक अर्थशास्त्रका विकास करना। बिजोलियामें इस पद्धतिका प्रयोग बड़ा सफल रहा है और इसे यदि अन्यत्र भी शुरू करवाया जा सके तो यह खादी-संगठनके विकासमें एक नये युगका सूत्रपात होगा।"

४. गाधीजी २३ नवम्बर, १९२८ को साबरमतीसे रवाना होकर २४ नवम्बर, १९२८ को वर्धा पहुँचे थे।

१०७. बातचीत: शंकरराव देवके साथ[1]

[२३ नवम्बर, १९२८ के पश्चात्]

मुझे तो इसमे तनिक भी सन्देह नही है कि आज भारतमे १९२०-२१ के 'सफेद टोपी' के दिनोकी अपेक्षा दरअसल कही अधिक लोग चरखा चलाते हैं और सच्ची भावनासे खादी पहननेवालोकी सख्या भी अधिक है। और जहाँतक खादीके सगठित उत्पादनका सम्बन्ध है, इसमे कमसे-कम दसगुनी वृद्धि हुई है। लेकिन बात यह है कि हम पत्तियाँ तो गिनते हैं, मगर पेड नही देखते। नही तो अ० भा० च० सं० के अलावा हिन्दुस्तानमे आज कौन-सा सगठन है जो लगभग २००० गाँवोमे काम कर रहा है? यह एक सुसगठित सस्था है, जनतापर इसका प्रभाव है, क्योंकि इसने उसके साथ एक जीवन्त सम्बन्ध कायम किया है। लेकिन खादी कार्यकर्त्ताओको धीरजके साथ उचित अवसरकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। उनकी श्रद्धा कसौटीपर चढी हुई है। उन्हे उत्तेजना और सनसनी पैदा करनेवाली राजनीतिके चक्करमे पड कर अपने उद्देश्यसे भटक नही जाना चाहिए। मुझे इसमे कोई सन्देह नही है कि देश निकट भविष्यमे शक्तिके इस अजस्र स्रोतको कृतज्ञतापूर्वक याद करेगा। जरा देखिए तो कि किस प्रकार एकके बाद एक नेता निराशाके अन्धकारसे घिर जानेपर सान्त्वनाके लिए इसकी ओर उन्मुख हो रहे हैं। इसे देशबन्धुदासने याद किया और अपनी मृत्युसे सप्ताह-भर पहले इसके प्रति अपनी आस्था प्रकट की, और जब लालाजीको अपने मार्गमें निराशा हुई तो वे भी शक्ति प्राप्त करनेके लिए इसकी शरणमे आये। क्या आपको मालूम है कि उन्होने शिमलामे महादेवसे कहा था कि मैं खादीका पूरी तरहसे कायल हो गया हूँ और कताई सीख रहा हूँ? मुझे इसमे जरा भी शक नही कि जब राष्ट्र निराशाके अन्धकारमे डूब रहा होगा, उस समय खादी ही उसका त्राता बनकर आयेगी।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १३-१२-१९२८

१. प्यारेलाल नैयरकी 'वर्धाकी चिट्ठी' से। शकरराव देव जलगावतक गाधीजीके साथ गये। दोनोंमें बातचीत होती रही और आखिर वे इस विषयपर आ गये कि खादी प्रगति कर रही है या नहीं।

१०८. मारवाड़ियोंके शिष्टमण्डलका शंका-समाधान[1]

[२४ नवम्बर, १९२८के पश्चात्]

गांधीजी: आपकी आपत्ति धार्मिक और सैद्धान्तिक है अथवा सामाजिक रीतियोंके कारण ही आप आपत्ति कर रहे हैं?

हम लोग पढ़े-लिखे पण्डित नहीं हैं, हमारी आपत्तिका आधार तो सामाजिक रीतियाँ ही हैं।

तब तो आपको सेठजीके साथ निभाना चाहिए। अगर आप सेठजीके ऐसे ‘अस्पृश्यों’के साथ खाने-पीनेपर आपत्ति करते जो शराबी हों या गन्दे तरीकेसे रहते हों तब तो आपकी आपत्ति मेरी समझमें आ सकती थी लेकिन हम नैतिक माहनके अभावमें ऐसा मानते चले जायें कि किसी तथाकथित अस्पृश्य परिवारमें उत्पन्न व्यक्तिके स्पर्श मात्रसे — चाहे वह व्यक्ति अन्यथा सर्वथा पवित्र और धर्मनिष्ठ ही क्यों न हो — भोजन अपवित्र हो जाता है तो वह धर्म विरुद्ध होगा। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि जब किसी सामाजिक रीति-रिवाजका उद्देश्य समाजको सुरक्षा प्रदान करना हो तब उसका आदर किया जाना चाहिए — भले ही कोई निजी तौर पर उसका पालन करनेकी जरूरत न महसूस करे। लेकिन जब कोई रीति-रिवाज अत्याचारपूर्ण बन जाये तब भी उसका आदर करना जीवन नहीं, मृत्युका द्योतक है और ऐसे रीति-रिवाजको तो त्याग ही देना चाहिए।

जमनालालजीने सेवाके लिए एक बृहत्तर क्षेत्र चुना है। वे किसी एक ही जातिके बनकर नहीं रह सकते। सारा संसार उनका परिवार है और वे मानवताकी सेवा करके ही अपनी जातिकी सेवा कर सकते हैं। इसलिए जमनालालजीको आप अपनी राह चलने दीजिए। विरोधको तो प्रेमसे ही जीता जा सकता है, असत्यको सत्यपर दृढ़ रहकर ही जीता जा सकता है, उससे डिगकर नहीं। हम जिस समाजमें रह रहे हैं, उसकी दशा तो देखिए। झूठ, पाखण्ड और घृणाका कैसा साम्राज्य फैला हुआ है? हमारे पंचोंको हमारे समाजकी गंगोत्री होना चाहिए। लेकिन आज वे भ्रष्ट हो गये हैं। अगर गंगाकी धारा अपने उद्गम-स्थलपर ही अपवित्र हो जाये

१. यह प्यारेलाल नैयरकी ‘वर्धाकी चिट्ठी’ शीर्षक लेखमें “रूढ़िवादिताके दो-दो हाथ” उपशीर्षकसे छपा था। लेखमें प्यारेलाल नैयर बताते हैं कि जमनालाल बजाजने वर्धाके लक्ष्मीनारायण मन्दिरके द्वार तथाकथित अस्पृश्योंके लिए खोलकर अपनी जातिके रूढ़िवादियोंके बीच बड़ी खलबली पैदा कर दी थी। उन्होंने उनको जाति-बहिष्कृत कर दिया। मगर इसका उनपर कोई असर नहीं हुआ और अभी हालमें उन्होंने रिवाड़ीमें तथाकथित अस्पृश्य लड़कों द्वारा पकाया खाना खाकर इस दिशामें एक कदम और उठा लिया। यह कदम उन्होंने किस उद्देश्यसे प्रेरित होकर उठाया, यही समझनेके लिए अग्रवाल-मारवाड़ियोंका एक शिष्टमण्डल गांधीजीसे मिला।

तो फिर गगामे क्या पवित्रता रह जायेगी? इसलिए हम तपश्चर्या करके, सत्यकी खातिर कष्ट-सहन करके अपने पचोंको शुद्ध बनाये। यही काम जमनालालजी कर रहे हैं। अगर आप उनकी राहपर नही चल सकते तो कमसे-कम उन्हे अपना आशीर्वाद तो दीजिए ही। क्योकि एक दिन ऐसा आयेगा जब केवल आप ही नही, बल्कि कट्टर रूढ़िवादी भी यह स्वीकार करेगे कि अपने इस कार्यके द्वारा जमनालालजीने हिन्दू-धर्मकी सबसे बड़ी सेवा की है। भावी पीढ़ियाँ इसके लिए उनका आभार मानेगी।[1]

[अग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १३-१२-१९२८।

१०९. जीवनमें संगीत

कालेजके विद्यार्थियोके प्रश्नोमे आखिरी प्रश्न यह है:

संगीतका आपके जीवनपर क्या असर हुआ है?

सगीतसे मुझे शान्ति मिली है। मुझे ऐसे मौके याद हैं, जब मैं किसी कारण परेशान था और जब सगीत सुननेसे मनको शान्ति मिली थी। यह भी अनुभव हुआ हैं कि सगीतसे क्रोध मिट जाता है। ऐसे तो कई उदाहरण याद है कि गद्यमे लिखी हुई चीजोका असर नही पड़ा और उन्हीके बारेमे भजन सुननेपर मनपर उनका असर हो गया। मैंने यह भी देखा है कि भजनके बेसुरे गाये जानेपर उसके शब्दार्थने मुझे नही छुआ। और जब वही भजन मधुर सुरमे गाया गया, तो उसमे भरे हुए अर्थका असर मनपर बहुत गहरा हुआ। 'गीता' जब मीठी आवाजमे एक सुरसे गायी जाती है, तब मैं उसे सुनते-सुनते थकता ही नही, और गाये जानेवाले श्लोकोका अर्थ दिलमे ज्यादा-ज्यादा गहरा पैठता हैं। मीठे स्वरमे जो 'रामायण' बचपनमे सुनी थी, उसका असर अबतक चला आ रहा है। एक बार एक मित्रने 'हरिनो मारग छे शूरानो' भजन गाया, तो उस बार उसका जैसा गहरा असर हुआ, वैसा पहले कई बार सुन चुकनेपर भी नही हुआ था। सन् १९०७ मे ट्रान्सवालमे मुझे आक्रमणके कारण बहुत चोट आई थी। डाक्टर घावोपर टाँके लगाकर चला गया था। मुझे दर्द हो रहा था। जो दुःख मैं स्वय गाकर या मनन करके नही मिटा सकता था, वह *ओलिव डोकसे एक मशहूर भजन सुनकर मैं भूल गया। यह बात 'आत्मकथा' मे* लिखी जा चुकी है।

मेरे यह लिखनेका कोई यह मतलब न लगा ले कि मुझे संगीत आता है। यह कहा जा सकता है कि सगीतका मेरा ज्ञान नही के बराबर है। यह भी नही कहा जा सकता कि मैं सगीतकी अच्छाई-बुराईकी परीक्षा कर सकता हूँ। यह ईश्वरकी देन ही है कि कोई-कोई सगीत मुझे अच्छा लगता हैं या अच्छा सगीत मुझे अच्छा लगता है।

१. यह १६-१२-१९२८ के नवजीवनमें भी छपा था।

मुझपर संगीतका असर इस तरह हमेशा अच्छा ही हुआ है, इससे मैं यह सार नही निकालना चाहता कि सबपर ऐसा ही असर होता है या होना ही चाहिए। मैं जानता हूँ कि गायन द्वारा बहुतोंने अपनी विषय-वासनाओको उत्तेजित किया है। इससे यह सार निकाला जा सकता है कि जिसकी जैसी भावना हो उसे वैसा ही फल मिलता है। तुलसीदासने ठीक ही कहा है:

जड़ चेतन गुण-दोषमय विश्व कीन्ह करतार।
सन्त हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार।।

परमेश्वरने जड, चेतन सबको गुण-दोषवाला बनाया है। किन्तु जो विवेकी है वह जैसे कहानीका हस दूधमे से पानी छोडकर मलाई ले लेता है वैसे ही दोष छोडकर गुणकी पूजा करेगा।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २५-११-१९२८

११०. टिप्पणियाँ

गो-संवर्धन योजना

काठियावाडके एक अनुभवी गो-सेवक लिखते है:[1]

यह योजना अच्छी है और अमल करने लायक है। किन्तु लेखकका जैसा खयाल है यदि वैसी प्रेरणा देनेकी शक्ति मुझमे हो तो मैं काठियावाडके सभी राज्योमे आदर्श गो-सेवाकी व्यवस्था करवा दूँ। किन्तु जनताकी तरह राज्योको भी रचनात्मक कार्य अधिक नही रुचता। इसके अतिरिक्त यदि राज्य धन-सग्रह करनेके लिए अधीर न हो और हानिकर प्रथाओके निवारणमे लग जाये तथा इस कार्यके अनुकूल लोकमत तैयार करे तो ऐसे कार्य जल्दी पूरे हो सकते है। हमे अपने राष्ट्रीय विद्यालयोमे छात्रोसे ऐसे प्रश्नोका अध्ययन कराना चाहिए। जब शिक्षित समाजका गाँवोके साथ सम्बन्ध होगा तब ऐसे प्रश्नोका समाधान करनेमे कम कठिनाई होगी।

एक घातक रिवाज

वीसावदरसे एक भाई लिखते है:[2]

इस पत्रमे बताई हुई प्रथाके बारेमे मुझे अपना अज्ञान स्वीकार करना चाहिए। यह तो स्पष्ट है कि जहाँ ऐसी प्रथा हो, वहाँ वह बन्द होनी चाहिए। पशुपालन

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने दुधारू पशुओंके सवर्धनके बारेमें कुछ सुझाव दिये थे तथा गाधीजीसे अनुरोध किया था कि वे एक या दो राज्योंमें काम करनेवाली बड़ी-बड़ी संस्थाओंमें किसी एकके पदाधिकारियोंको यह कार्य अपने हाथमें ले लेनेके लिए प्रेरित करें।

२. पत्रका अनुवाद यहाँ नहीं दिया गया है। इसमें पत्र-लेखकने कमजोर बछड़ोंको दागकर साडोंकी तरह छोड देनेकी कुप्रथाका उल्लेख किया था।

सम्बन्धी हमारे अज्ञानमे अन्धविश्वास मिल जानेसे यह काम दुगुना मुश्किल हो गया है। हर गाँवमे सयाने आदमी होते हैं। पर जनताका सुख सम्पादन करनेके प्रश्नपर बारीकीसे विचार करनेकी फुरसत उन्हे नही होती। वे जानते हैं कि गोसवर्धनका काम ऐसा नही है जिससे लाखोकी कमाईकी जा सके, और आरम्भमे खर्च करानेवाला तो यह है ही। इसलिए कौन इसमे उनकी दिलचस्पी पैदा करा सकता है? फिर भी उल्लिखित योजना राजा-प्रजा दोनोके समझने और विचारने लायक है। इसीलिए उसे कई मासतक अपनी फाइलमे रखनेके बाद आज 'नवजीवन'मे छापनेका साहस किया है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २५-११-१९२८

१११. तार: डॉ० मु० अ० अन्सारीको

एक्सप्रेस

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२५ नवम्बर, १९२८

डॉ० अन्सारी
महल, भोपाल

मै आपके, मालवीयजीके और मन्त्री तथा कोषाध्यक्षके रूपमे घनश्यामदास बिडलाके हस्ताक्षरो से लालाजी स्मारक के लिए अपील[1] जारी करना चाहता हूँ। अपील लालाजी के राजनीतिक कार्योको आगे बढानेके लिए एकत्र किये जानेवाले कोषके लिए की जायेगी। आप तीनो कोषके उचित उपयोग के निर्णयके अधिकारसे युक्त न्यासी होगे। कृपया वर्धाके पतेपर तार द्वारा अपीलमे अपना नाम देनेकी अनुमति सूचित करे।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३३९) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "अपील: लाजपतराय स्मारक कोषके लिए", २६-११-१९२८।

११२. तार: मीराबहनको

वर्धागंज
२६ नवम्बर, १९२८

मीराबाई
खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर

तुम्हारे पत्र मिले। तुम आ सकती हो। सस्नेह।

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ८२१६ तथा सी० डब्ल्यू० ५३२६से।
सौजन्य . मीराबहन

११३. तार: डॉ० विधानचन्द्र रायको

[२६ नवम्बर, १९२८][1]

डॉ० विधान
३६ [विलिंगटन स्ट्रीट]
कलकत्ता

पिछले सप्ताह मोतीलालजीने लिखा था कि आपने प्रदर्शनीके बारेमें मेरा दृष्टिकोण स्वीकार करनेका निश्चय किया है। आपकी ओरसे कोई जानकारी नहीं मिली है। वर्धाके पतेपर तार द्वारा उत्तर दें।[2]

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३३९) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको", २७-११-१९२८, और "पत्र: मोतीलाल नेहरूको", २८-११-१९२८।

२. २८ नवम्बरको डॉ० विधानचन्द्र रायने जो उत्तर भेजा वह इस प्रकार था: "आपका तार मिला। स्वागत समितिकी बैठक आज रातको होनेवाली है। उम्मीद है कि मिल्के कपड़ेका निषेध किये जानेपर आप और अ० भा० च० संघ प्रदर्शनीमें भाग लेंगे। कृपया तार द्वारा अपने विचार सूचित कीजिए।"

११४. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
२६ नवम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

तीसरे दर्जेमे तनिक भी कठिनाई नही हुई। ट्रेनमे कही भी भीड नही थी। हम सब पूरा समय सो सके। यात्रियोने हमे जगह दे दी थी। किन्तु भीड नही थी इसलिए उन्हे हमारे कारण कठिनाई नही हुई। मै तो बहुत खुश हुआ। पहले और दूसरे दर्जेमे मुझे हमेशा दम घुटने-जैसा लगता है। और शर्म तो आती ही है। मन ही मन खुशी हुई कि गरीबोके लिए कमसे-कम तीस रुपये बचे।

मैने इस बार यही रहते हुए आश्रम-कार्यमे पूरा भाग लेनेका निर्णय किया था। इसलिए तीनो वक्त आश्रमवासियोके साथ खाना खाया और जो खुराक उन्हे मिलती है वही मैने भी ली। यहाँ दोपहरके भोजनके बाद सब लोग अनाज साफ करते है। उसमे मैने भी साथ दिया। घनश्यामदास बिडला यहाँ आ गये है, उन्होने भी भाग लिया। यहाँ भोजनके समय तथा काम करते समय कैसी निराली शान्ति रहती है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

११५. पत्र : आश्रमकी बहनोंको

वर्धा,
मौनवार, २६ नवम्बर, १९२८

बहनो,

हम जलगाँव एक घटा देरसे पहुँचे। इसलिए जो गाडी मिलनेवाली थी सो चूक गये और वर्धा देरसे पहुँचे।

यहाँ जो एक बात देखी, उसकी तरफ तुम्हारा ध्यान तुरन्त खीचता हूँ। मै तो आश्रमके रसोईघरमे ही खाने लगा हूँ। तीनो बार वही खाया, परन्तु शोर-गुल जैसी बात ही नही। इससे बहुत शान्ति रही और हमारा शोर-गुल याद आया। यहाँ न बर्तनोकी खड़खड़ाहट सुनाई देती थी और न लोगोकी आवाज। इतना फर्क जरूर है कि हमारे वहाँ बच्चे है, यहाँ नही है। फिर भी तुम चाहो तो बच्चोको चुप रहना सिखा सकती हो और तुम खुद भी बाते करना बन्द रख सकती हो। हमारे रसोईघरमे शोर बना रहता है, यह बडी भारी खामी है।

तुम्हारा वियोग मुझे सबसे ज्यादा खटकता है, क्योंकि तुमसे बहुत-सा काम लेना अभी बाकी है। रहा हुआ काम तुम पूरा करना।

तुम अपना कर्त्तव्य तो जानती ही हो। रसोईघर, बाल-मन्दिर और प्रार्थनाके काम तो चालू ही हैं। और जब सेवाके काम हाथमें लो, तब — जो-जो काम लिये हैं — उन्हें हारकर कभी न छोड़ना। उनके लायक बननेके लिए सबसे जरूरी बात यह है:

जिस बहनने जो काम लिया हो उसे वह पूरा करे, मर्जीमें आये तब उसे छोड न दे। गैरहाजिर रहनेकी आवश्यकता जान पडे, तब दूसरा बन्दोबस्त करे; और न हो सके तो अपना काम कभी न छोड़े।

तुम सब बहनें प्रफुल्लित रहना, शान्त रहना। मन्दिरके सभी कामोंमें अपना हिस्सा पुरुषोंके जैसा और पुरुषोंके जितना ही पूरा करनेका आग्रह रखना। यह तुम्हारी शक्तिके बाहर तो कतई नहीं है। इतनी ही बात है कि तुम्हें यह इच्छा रखनी चाहिए और कोशिश करनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — आश्रमनी बहेनोने

११६. पत्र: प्रभावतीको

मौनवार [२६ नवम्बर, १९२८][1]

चि० प्रभावती,

तुम्हे मेरा खत हमेशा चाहीये? यह कैसी लडकी? अच्छा मैं लीखनेकी कोशीष तो करुंगा।

मेरे सब हाल आश्रम — मंदिर — खतमें है। इसलीये आज ज्यादा नहिं लीखुंगा।

बापूके आशीर्वाद

मौनवार

जी० एन० ३३२४ की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

११७. अपील : लाजपतराय स्मारक कोषके लिए[1]

२६ नवम्बर, १९२८

काग्रेस अध्यक्ष डॉ० अन्सारी, पण्डित मदनमोहन मालवीयजी और सेठ घनश्यामदास बिड़लाके हस्ताक्षरोसे निम्नलिखित अपील जारी की गई है.

पाँच लाखके लिए अपील

भारतके नागरिकोसे

यह उचित ही है कि लाला लाजपतराय जैसे वीर, महान और आत्मत्यागी देशभक्तकी स्मृतिमे एक राष्ट्रीय स्मारककी स्थापना की जाये। इसलिए नीचे हस्ताक्षर करनेवाले हम लोगोने उदार जनतासे कोषके लिए अपील करनेका दायित्व अपने सिर लिया है, और हम आशा करते हैं कि सब लोग इसमे खुले दिलसे चन्दा देंगे। यदि हम धनिकोसे बडी रकमकी अपेक्षा रखते है तो हम यह भी जानते हैं कि लालाजीकी आत्माको गरीबो द्वारा दिये गये तावेके सिक्कोसे परम सन्तोष मिलेगा। कोषका धन किस तरहसे खर्च किया जायेगा, इसके वारेमे हमारा बादमे घोषणा करनेका इरादा है। लेकिन हम अपने-आपको इस कोषके न्यासियोके रूपमे नियुक्त करते है और हमे कोपकी व्यवस्था करनेमे औरोका भी सहयोग लेनेका अधिकार होगा। लेकिन हम मोटे तौरपर आपको यह बता दे कि हम उसका उपयोग लालाजी द्वारा शुरू की गई उन अनेक राजनीतिक प्रवृत्तियोको आगे बढानेके लिए करेंगे, जिनको सफल बनानेके लिए लालाजीने अपने जीवनका सबसे अच्छा हिस्सा लगा दिया। स्वभावत. हम उनके द्वारा स्थापित और उनकी योजनाओको कार्यान्वित करनेके साधनका काम करनेवाली उस महान सस्था, लोक सेवक मण्डलको तो ध्यानमे रखेंगे ही।

हमने कोषके लिए कमसे-कम ५,००,००० रुपयेकी रकम निश्चित की है। एक कृतज्ञ देशको उनकी स्मृतिमे इससे कम देना भी क्या चाहिए? आज हम जिस बुरे दौरसे गुजर रहे हैं, उसको देखते हुए हम बहुत बडी राशि एकत्र करनेकी बात नही सोच सकते थे। किन्तु, साथ ही लालाजीकी देशव्यापी महत्ताका और जिस कार्यमे यह राशि लगाई जायेगी उसका ध्यान रखते हुए इससे कमका लक्ष्य नही रखा जा सकता था।

१. इस अपीलका मसविदा गाधीजीने तैयार किया था और इसमें उन्होंने अपने हाथों सशोधन भी किया था। देखिए "तार: डा० मु० अ० अन्सारीको", २५-११-१९२८। यह अपील २९-११-१९२८ को यंग इंडियामें प्रकाशित हुई थी।

चन्दा, श्रीयुत घनश्यामदास बिडलाको, ८, रायल एक्सचेज प्लेस, कलकत्ताके पतेपर भेजा जाना चाहिए। बिडलाजीने कृपापूर्वक कोषका मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष बनना स्वीकार कर लिया है।

२६ नवम्बर, १९२८

मु० अ० अन्सारी
मदनमोहन मालवीय
घनश्यामदास बिड़ला

मैंने काग्रेस अध्यक्ष द्वारा जारी की गई वह अपील भी देखी है, जिसमे उन्होने इस महीनेकी २९ तारीखको स्वर्गीय लालाजीके स्मृति-दिवसके रूपमे मनानेका अनुरोध किया है। मै इन दोनो अपीलोका हृदयसे अनुमोदन करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि देशभरमे सभाएँ की जायेगी, जहाँ प्रस्तावित स्मारकके लिए चन्दा इकट्ठा किया जायेगा। यदि सभी लोक-सेवी जन यह सकल्प कर ले कि अपीलपर हस्ताक्षर करनेवाले उन मान्य सज्जनोने पाँच लाख रुपयेकी जो न्यूनतम राशि देनेको कहा है, वह सारीकी-सारी स्मृति-दिवसपर ही एकत्र कर लेनी है तो यह लालाजीके प्रति हमारे प्रेमका प्रभावशाली प्रमाण होगा।

मै जानता हूँ कि ऐसे बडे कार्यको सगठित करनेके लिए अब समय बहुत कम बच रहा है, लेकिन जहाँ सारे लोग एक मन होकर एक ही उद्देश्यके लिए जुट जाये, वहाँ समयकी कमी कोई बाधा नही है। लोग जरा १९२०-२१ के उन शानदार दिनोकी याद करे जब एक ही दिनमे पाँच लाख क्या, १० लाख रुपये इकट्ठे किये गये थे। आखिरकार एक करोड रुपयेका लक्ष्य लगभग एक ही महीनेमे तो पूरा कर लिया गया था। यदि विश्वस्त स्वयसेवक २९ तारीखको सिर्फ इस कामके लिए अलग कर ले और चन्दा इकट्ठा करनेके काममे जुट जाये तो इस रकमको प्राप्त करनेमे कोई दिक्कत नही होनी चाहिए।

चन्दा इकट्ठा करनेवालोको यह याद रखना चाहिए कि उन्हे इकट्ठी की गई रकम तुरन्त ही अपीलमे दिये गये पतेपर सेठ घनश्यामदास बिडलाको भेज देनी होगी। यदि उगाही करनेवाले मुझे अपना-अपना नाम भेजते हुए यह सूचना दे देगे कि उन्होने चन्देकी रकमे श्रीयुत बिडलाको भेज दी है, तो मै इस बातका ध्यान रखूंगा कि उनके नाम और चन्देकी राशियाँ 'यग इडिया' मे विधिवत् प्रकाशित हो जाये। वे चन्देकी रकमे सीधे 'यग इडिया' के कार्यालयमे भी भेज सकते है, जहाँसे वे कोषाध्यक्षको भेज दी जायेगी। लेकिन यदि, हमारी वर्तमान विश्रृखल अवस्थाको देखते हुए एक दिनमे सारी रकम इकट्ठा करनेका काम हमे अपनी सामर्थ्यसे बाहर लगे तो चन्दा-सग्रह समितिको यह तिथि आगे बढा देनी चाहिए।

चूँकि कोई निश्चित नियम नही है, इसलिए मेरा सुझाव है कि प्रत्येक जिला अथवा ताल्लुका अपनी आबादीके मुताबिक अपने हिस्सेका चन्दा खुद तय कर ले। कमसे-कम इतना तो करना ही चाहिए। सीधा तरीका तो यह है कि प्रत्येक जिला,

ताल्लुका अथवा हलका अपना हिस्सा खुद तय करे, जो किसी हालतमे आबादीको देखते हुए एक न्यूनतम राशिसे कम न हो। उसे यह भी तय कर लेना चाहिए कि अमुक तिथितक वह अपने हिस्सेकी पूरी रकम इकट्ठी कर लेगा। मै यह भी सुझाव देता हूँ कि प्रत्येक सभामे स्वराज्यकी दृष्टिसे कुछ-न-कुछ रचनात्मक कार्य करनेका प्रस्ताव भी पास किया जाना चाहिए। इस कार्यको सम्पादित करनेके लिए स्थानीय कार्यकर्त्ता सबसे उपयुक्त हो सकते है, बशर्ते कि उनमे उस प्रस्तावको क्रियान्वित करनेका सकल्प हो। यदि ऐसा कोई प्रस्ताव पारित नही किया जाता तो इससे दिवगत देशभक्तकी स्मृतिका कोई अनादर नही होगा, लेकिन जबतक हम उनकी स्मृतिको एक ऐसी पवित्र धरोहर मानते है जिसके प्रति हमारे कुछ कर्त्तव्य है तबतक ऐसे प्रस्ताव पास करके उन्हे भूल जाना उनकी स्मृतिका अनादर करना होगा।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २८-११-१९२८
तथा (एस० एन० १३३४० और १३३४१) की फोटो-नकलसे।

११८. हमारा कर्त्तव्य[1]

२७ नवम्बर, १९२८

मुझे आशा है कि काग्रेस-अध्यक्ष डॉ० अन्सारी, भारतभूषण पं० मदनमोहन मालवीय और सेठ घनश्यामदास बिडलाने लालाजीके स्मारकके सम्बन्धमे लोगोसे जो अपील की है, वे उसका पूरा और तत्काल उत्तर देगे। अग्रेजीमे एक कहावत है जिसका अर्थ है कि जो तत्काल देता है वह दूना देता है। हमारे यहाँ भी ऐसी कहावत है, 'तुरन्त दान महा कल्याण।' ये दोनो विभिन्न देशोके ज्ञानियोके अनुभवकी सूचक है। हम इस कहावतको भूल गये है। आज तो हमारे सम्बन्धमे यह कहा जाता है कि हम सदा विलम्बसे जागते है अर्थात् ठीक समयपर दान देने या काम करनेकी बजाय समय बीतनेपर उतावलीमे हतबुद्धिसे होकर कुछ थोडा-बहुत दान देते या काम करते है। इससे उस दान या कामकी शोभा जाती रहती है और उसकी कीमत आधी रह जाती है। मुझे आशा है कि इस स्मारकके सम्बन्धमे ऐसा नही हो सकेगा। लालाजी जैसे लोकप्रिय नेताके स्मारकके लिए तो माँगते ही धन मिल जाना चाहिए।

आशा है, ऐसी आपत्ति कोई नही करेगा कि अपीलपर तीन ही लोगोके हस्ताक्षर क्यो है? अधिक नामोको पानेमे कठिनाई हो रही थी और यदि देर की जाती तो २९ तारीख निकल जानेका भय था। फिर ऐसे काममे ढिलाई करना भी खतरनाक होता है।

१. देखिए "लालाजी स्मारक", २९-११-१९२८ भी।

सत्य तो यह है कि लालाजीके नाममे यदि जादू न होता तो तीनकी बजाय तीस नेताओके हस्ताक्षर होनेपर भी उसका महत्त्व कुछ रुपया आ जाने योग्य भी न हो पाता। अच्छे कामके लिए महापुरुष ही धन निकलवा सकते है।

इसका अर्थ यह है कि दानियोको तो दी जानेवाली रकमकी सुरक्षा और उसके सदुपयोगके विषयमे विश्वास-भर हो जाना जरूरी होता है। इस दृष्टिसे इन तीन नामोके सम्बन्धमे कुछ कहनेकी जरूरत ही नही रहती। और जहाँ घनश्यामदास बिडला जैसे कोषाध्यक्ष और मन्त्री हो वहाँ हिसाब-किताबपर निश्चय ही पूरी नजर रहेगी, यह सभी दानियोको समझ लेना चाहिए।

इस प्रकार यह जान लेनेपर कि स्मारकके लिए कितने धनकी आवश्यकता है और उसकी देखरेख कौन करेगा, सभी देशभक्तो और स्वराज्यवादियोका कर्त्तव्य स्पष्ट हो जाता है। अत इस कोषमे हरएकको अपने सामर्थ्यके अनुसार धन दे देना चाहिए। मेरा आग्रह तो यह है कि यह पूरी रकम २९ तारीखको ही मिल जानी चाहिए। मै यह लेख २७ तारीखको लिख रहा हूँ। मैने २९ तारीखतक पूरी रकम दे देनेका अनुरोध तो किया है, किन्तु मै ऐसी आशा बहुत अधिक नही कर सकता। इसलिए मै ऐसा मानकर ही यह लेख लिख रहा हूँ कि पाठकोके हाथोमे प्रस्तुत लेख पहुँचने तक पूरी राशि नही मिलेगी। यदि मेरी यह आशका ठीक ही निकले तो जिन्होने अपना चन्दा न दिया हो अथवा पडोसियोसे चन्दा न उगाहा हो, वे समयपर रकम उगाह कर कोषाध्यक्षको भेज दे। यदि कोई 'नवजीवन' की मारफत भेजना चाहे तो वे 'नवजीवन'की मारफत भेज सकते है। उनकी रकमकी प्राप्ति 'नवजीवन'मे स्वीकार की जायेगी और वह कोषाध्यक्षको भेज दी जायेगी।

मुझे आशा है कि इस कोषको पूरा करनेके लिए स्त्री, पुरुष और विद्यार्थी आदि सभी अपना-अपना भाग भेजेंगे। कालेजो और हाई स्कूलोमे पढनेवाले छात्रोकी सख्या ही २७,००,००० है। यदि वे अपना आधा-आधा जेब खर्च दे दे और इतना स्वार्थ-त्याग करे तो उनकी ओरसे अनायास ही एक बडी रकम इकट्ठी हो सकती है। पाँच या दस धनी सज्जन पाँच लाख रुपया दे उसकी अपेक्षा पाँच लाख स्त्री-पुरुष मजदूर, अन्त्यज और विद्यार्थी मिलकर उतना ही रुपया दे तो वह अधिक अच्छा है। जिनमे कम रुपया देनेकी सामर्थ्य है उनसे सख्या-बलके कारण जिस अनुपातमे अधिक रकम मिलने लगती है स्वराज्य लेनेकी हमारी शक्ति भी उसी अनुपातमे बढती है, यह स्पष्ट है। कहनेकी जरूरत नही कि पाँच लाख स्त्री-पुरुषोसे प्राप्त पाँच लाख कुछ ही धनिकोसे प्राप्त उतने ही रुपयोसे बहुत अधिक मूल्य रखते है। इस प्रकार बहुतसे लोगोसे थोडा-थोडा रुपया लेकर धन-सग्रह करनेसे दो प्रयोजनोकी सिद्धि होती है। अत. मुझे आशा है कि प्रत्येक स्वयसेवक इस बातको याद रखेगा और जहाँतक सम्भव होगा, अपने सगे-सम्बन्धियो और परिचितोसे चन्दा इकट्ठा करेगा।

मै यह भी आशा करता हूँ कि अन्त्यज भाई-बहन भी इस बारेमे चूकेगे नही। वे चाहे ताँबेके पैसे ही क्यो न दे, उनसे स्मारककी और स्वय उनकी भी प्रतिष्ठा बढेगी। लालाजीने अपना जीवन अन्त्यजोकी सेवासे ही आरम्भ किया था और अन्त

तक वे अपने कार्यकर्त्ताओंसे यह काम लेते रहे थे। मुझे आशा है कि अन्त्यज भाई-बहन इस बातको नही भूलेगे।

मै आशा करता हूँ कि स्मारक किसी दूसरे हेतुसे बनाया जाता तो अधिक अच्छा होता या अधिक रुपया आता, इस प्रकारकी आलोचना करनेमे कोई अपना समय न खोयेगा। इस ससारमे मनुष्यका किया कोई भी कार्य पूर्ण नही होता। उसमे आलोचनाके लिए सदा अवकाश रहता है। किन्तु कोई अच्छा कार्य आरम्भ होनेपर उसकी आलोचनामे समय नष्ट करना अथवा स्मारककी योजना अपनी पसन्दकी न होनेसे उसके लिए रुपया न देना उचित नही माना जा सकता। लालाजीका स्मारक अखिल भारतीय होना चाहिए। और जो यह मानते है कि उसकी कल्पना और अपील करनेवाले लोग योग्य है, उनका कर्त्तव्य है कि वे कोषमें स्वय यथाशक्ति रुपया दे, दूसरोसे दिलाये और उसके बाद देशके दूसरे काममे लगे।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २-१२-१९२८

११९. तार : श्रीनिवास आयंगारको[1]

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२७ नवम्बर, १९२८

अन्सारी, मालवीयजी और बिडला के हस्ताक्षरो से लालाजी स्मारक के लिए अपील जारी कर दी गई है।[2] कृपया २९ तारीखको चन्दा इकट्ठा करनेकी व्यवस्था करे।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३४३) की फोटो-नकलसे।

१२०. पत्र : किशनचन्द भाटियाको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२७ नवम्बर, १९२८

प्रिय लाला किशनचन्द,

श्रीयुत वैकरने मुझे आपके उस पत्रकी[3] प्रति भेजी है, जिसमे आपने खादीकी फेरी लगाने और चन्दा इकट्ठा करनेके लिए लाजपतराय सप्ताह निश्चित करनेकी

१. यह तार जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्रप्रसाद और जयरामदास दौलतरामको भी भेजा गया था।
२. देखिए "अपील : लाजपतराय स्मारक कोषके लिए", २६-११-१९२८।
३. तारीख २१ नवम्बर, १९२८ के।

बात कही है। इससे ज्यादा खुशीकी बात मेरे लिए और कुछ नही हो सकती। लेकिन खादीके लिए अथवा किसी भी चीजके लिए लालाजीके नामका अनुचित लाभ उठानेकी मेरी तनिक भी इच्छा नही है। इसलिए मै लालाजी सप्ताह तभी निश्चित कर सकता हूँ जब लोक सेवक मण्डलके सभी सदस्य हृदयसे वैसा चाहते हो और महसूस करते हो -- जैसा कि लालाजी पिछले कुछ महीनोसे महसूस करने लगे थे -- कि खादीको करोडो लोगोके हितमे किये जानेवाले समस्त रचनात्मक कार्योका केन्द्र होना चाहिए। इसलिए मैने तो लालाजीके नामपर कुछ करनेकी बात कभी स्वप्नमे भी नही सोची। लेकिन अब चूँकि आपने इसकी चर्चा की है और डॉ० गोपीचन्द आपके इस सुझावको ठीक समझते है, इसलिए मैने इसके बारेमे लाला जगन्नाथसे बातचीत की। आप इस पत्रको मण्डलके अन्य सदस्योको दिखा सकते है और यदि वे सब लोग खादी-प्रचारके लिए एक सप्ताह मुकर्रर करनेको हृदयसे इच्छुक हो और यदि उसे भविष्यमे अपनी तमाम प्रवृत्तियोका केन्द्र बनाना चाहते हो तो मै खुशीके साथ ऐसा सप्ताह मुकर्रर कर दूँगा। लेकिन यदि उन्हे ऐसा कोई विश्वास नही तो मै निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि आपके सुझावको मानना गलत होगा। उस हालतमे खादीको उस उपयुक्त क्षणकी प्रतीक्षा करने दीजिए जब सभी लोगोका मन उसे स्वीकार करनेको तैयार हो जायेगा, और आज देशके विभिन्न हिस्सोमे जो लोग खादी सम्बन्धी सस्थाओके काम-काजकी देख-रेख कर रहे है, यदि उनमे से कुछ थोडे-से लोगोमे भी खादीके प्रति जीवन्त आस्था होगी, यदि वे इस कामके प्रति पूरे ईमानदार रहेगे और अपनी सारी शक्ति इसकी सफलताके लिए लगायेगे तो किसी-न-किसी दिन वह शुभ क्षण अवश्य आयेगा।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

लाला किशनचन्द भाटिया
अ० भा० च० सघ पजाब शाखा
आदमपुर दोआबा (जालन्धर)

अग्रेजी (एस० एन० १३३४४) की फोटो-नकलसे।

१ इसकी एक प्रति अ० भा० च० सं० के मन्त्रीको उनके २४ नवम्बर, १९२८के पत्र संख्या ७४८के उत्तरमें अहमदाबाद भेज दी गई थी।

१२१. पत्र : अच्युतानन्द पुरोहितको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२७ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं कलकत्ता जाते समय सम्बलपुर आनेका इरादा अवश्य रखता हूँ।[1] मुझे उम्मीद है, आप खादी-कार्यकी एक अच्छी प्रदर्शनीका आयोजन करेंगे और अखिल भारतीय चरखा संघके लिए अच्छी खासी रकमें इकट्ठी करके देंगे।

इस समय मैं कोई निश्चित तारीख बतानेमें असमर्थ हूँ, लेकिन यह २० दिसम्बरके आसपास ही होगी। मैं आपको दो दिन देनेकी कोशिश करूँगा — जिस दिन वहाँ पहुँचूँगा वह दिन और उसके बादका दिन।

वहाँ कैसे पहुँचा जा सकता है, इसके बारेमें आपने जो-कुछ बताया था वह मुझे याद है। फिर भी, समयका हिसाब फिर बता दें तो कृपा होगी।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत अच्युतानन्द पुरोहित
वकील
सम्बलपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १३७३५) की माइक्रोफिल्मसे।

१२२. पत्र : निरंजन पटनायकको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२७ नवम्बर, १९२८

प्रिय निरंजन बाबू,

मैंने महादेवको लिखा आपका पत्र देखा। महादेव मेरे साथ नहीं है, क्योंकि बारडोली जाँचके सिलसिलेमें उसका बारडोलीमें रहना जरूरी था। मेरे भोजनके समयमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आहार भी लगभग वही है। मैंने दूधकी मात्रा कम कर दी है, लेकिन इसके लिए पहलेसे ही कोई सावधानी बरतनेकी जरूरत नहीं है कि बकरीका दूध अथवा फल एक निश्चित परिमाणमें हों ही। मेरी निजी सुविधाके लिए जितना कम खर्च किया जायेगा, मुझे उतनी ही ज्यादा खुशी होगी। ऐसी चीजों

१. पुरोहितने गांधीजीसे अनुरोध किया था कि चूँकि दिसम्बर १९२७ की उत्कल-यात्राके दौरान वे सम्बलपुर नहीं जा सके थे, इसलिए इस बार अवश्य आयें।

पर खर्च किये जानेवाले हर आनेका मतलब गरीबोको उससे वंचित करना होगा। सम्बलपुर समितिको भी मेरी इस मन स्थितिसे अवगत करा दे।

अब देखता हूँ कि जिस पत्रके बारेमे मै यह सोचे बैठा था कि मै आपको भेज चुका हूँ, वह कभी भेजा ही नही गया। अब मै उसे अनुवाद करवाकर आपको भेजनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३७३६) की माइक्रोफिल्मसे।

१२३. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२७ नवम्बर, १९२८

प्रिय सतीश बाबू,

आपके दो पत्र मिले। आपने वैद्यनाथजीके बारेमे जो कहा है, उसे मैने ध्यानमे रख लिया है।

हाँ, राजेन्द्रबाबूने 'क्रॉनिकल' मे अनिल बाबूके लेखोका उत्तर दिया है। उन लेखोका आपकी तरफ भले ही कुछ असर न हुआ हो, लेकिन बम्बईमे उनका कुछ असर हो सकता है—विशेष रूपसे इसलिए कि 'क्रॉनिकल' ने उनके लेखोको प्रमुख स्थान दिया। लेकिन मै आपकी इस बातसे पूर्णतया सहमत हूँ कि आम तौर पर विरोधका आभास देनेवाले इस तरहके निरर्थक लेखोकी उपेक्षा करनेमे कोई हर्ज नही है।

प्रदर्शनीको लेकर तो मेरी उलझन बढती ही जा रही है। मोतीलालजीने मुझे लिखा है कि प्रदर्शनी कैसी होनी चाहिए, इसके सम्बन्धमे समितिने मेरा विचार स्वीकार कर लिया है। लेकिन अभी तक मुझे डॉ० विधानका कोई पत्र नही मिला है। इसलिए कल उन्हे तार[1] दिया है और अब उनके उत्तरकी राह देख रहा हूँ। आपने मुझे जो कतरन भेजी है, वह सचमुच बुरी है।

कृष्णदासके बारेमे जानकर दु:ख हुआ। उससे कहिए कि उसे भला-चंगा और मजबूत हो जाना चाहिए। कलकत्ता आनेपर मै उसे स्वस्थ देखना चाहता हूँ।

सामूहिक रसोईके सम्बन्धमे आपकी प्रगति उत्साहवर्धक है।

अब हमने आश्रममे अपनी बेकरी तैयार कर ली है। आपको याद होगा कि मैने आपसे इसकी चर्चा की थी। इसमें तैयार की गई डबल रोटी खूब अच्छी बनी

१. देखिए "तार डॉ० विधानचन्द्र रायको", २६-११-१९२८।

है और इसे लोगोने बहुत पसन्द किया है। तथा इससे समय, श्रम और ईंधन की भी बहुत बचत हुई है। रसोईमे काम करनेवालोका अधिकाश समय चपाती बनानेमे ही चला जाता था। चपातियाँ अब भी बनती है, लेकिन डबल रोटियाँ बनाई जाने लगी है, बहुत-से लोग चपातियोके बदले यही खाते है। सवेरे कलेवा करते समय और रातके भोजनमे तो सब लोग केवल डबल रोटियाँ ही खाते है, दोपहरके खानेमे अब भी काफी लोग चपातियाँ लेते है।

आशा है, हेमप्रभा देवी स्वस्थ एव प्रसन्न होगी। तारिणीको अपने गिरे हुए स्वास्थ्यको अवश्य सुधारना चाहिए।

हृदयसे आपका,
बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १५९९) की फोटो-नकलसे।

१२४. पत्र : कुसुम देसाईको

२७ नवम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तुम्हारे दोनो पत्र मिल गये है। मुझे तो बुखारका डर था ही। फिर न आने देना। चिरायता खाओ या सुदर्शन चूर्णका सेवन करती रहो तो अच्छा होगा। या फिर कुनैन लेती रहो और साथ-साथ कटिस्नान भी। स्वस्थ होनेपर तुम काजू खाया करती थी यह बा ने मुझे आज बताया है। यदि यह सच है तो मुझे दु:ख है। क्योंकि तुम्हे तो स्वादको जीत लेना चाहिए। इधर-उधर खा लेनेकी आदत छोड़ दो तो तुम्हे लाभ ही होगा।

दो-तीन लोगोसे पूछना पडता है इस बातपर तुम्हे आश्चर्य हुआ है। . . मन्त्रीसे पूछना तो उचित है ही किन्तु जिस विभागमे काम कर रहे हो उसके अधिकारीसे अवश्य पूछना चाहिए। बडी संस्थाओमे अकेला मन्त्री आज्ञा देनेकी जिम्मेदारी नही ले सकता। यदि उससे अनुमति लेना हो तो अपने विभागके अधिकारीकी मारफत ले। जो व्यक्ति सस्थाके प्रति अपने कर्त्तव्यको समझता है वह सुविधा देखकर छुट्टी माँगेगा। मैने तुम्हारी बात टालनेके लिए यह नही कहा था। मेरा विचार था कि तुम मेरी बात फौरन समझ गई होगी। न समझ पाई हो और अभी भी मनमे यह विचार हो कि मैने टाल देना चाहा तो यह दु:खपूर्ण बात है। यह बतानेपर भी कि मैने टाला नही था यदि तुम्हे आश्चर्य हो तो यह विचित्र बात है।

जिसे सब काम प्रेमभावसे करना है, उसका काम शून्य बने बिना कैसे चल सकता है? यह मैं तुम्हे कितनी बार समझाऊँ? प्रेम तो नम्रताकी पराकाष्ठा है। इस विषयमे आज तो इतना ही लिखता हूँ।

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

बा मनुके विषयमे चिन्ता करती रहती है। उसके बाल कौन धोता-सँवारता है। उसके कपडोका क्या होता है, आदि अनेक प्रश्न करती है। इन सबमें तुम या कोई और मदद करता होगा — ऐसा मैंने बा से कहा है।

सरोजिनी देवी अपने हिस्सेका काम करती ही होगी। क्या वह प्रसन्न रहती है?

मेरा एक रूमाल वहाँ रह गया है। प्रभावतीको मालूम होगा। देख लेना। अगर मिल जाये तो सँभाल कर रख लेना।

स्वास्थ्य ठीक न रहे यह तो उचित नही है।

सूरजबहनके[1] लिए मैंने तो तुरन्त तार भेज दिया था। किन्तु वह क्यो नही मिला, यह तो ईश्वर ही जाने।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८५४)की फोटो-नकलसे।

१२५. पत्र : छगनलाल जोशीको

२७ नवम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारे दोनो पत्र मिल गये हैं। चि० सतोक जो अनाज दे उसका पैसा उसे नही मिल सकता। यह अनाज तथा और भी जो अनाज उसके पास हो, वह आश्रमकी सम्पत्ति है। यह बात चि० रुखी वगैरहको धीरजपूर्वक समझाना या नारणदाससे समझानेको कहना। अगर सत्यके साथ प्रेमका मिश्रण होगा तो तुम्हारा निर्णय ठीक ही होगा। लेकिन भूल होनेके भयसे अपना धर्म न छोडना।

नारणदासके यहाँसे लोग निकलते जा रहे हैं। वहाँ बदलेमे और लोगोंको रखना हो तो रखना। तुम दोनो एक-हृदय हो सको, यह बहुत आवश्यक है। कैसे हो सकते हो, यह तुम जानो।

. . .[2] बहनके विषयमे तुम जो लिख रहे हो वैसा तो गगाबहनने मुझसे कभी कुछ कहा नही। तुमने जो लिखा है, उसने तो मुझे चौका दिया है। इस सबके बावजूद हमे निर्लेप रह कर बहनोकी सेवा करनी है। श्रीपतराव रह जाये तो बहुत अच्छा हो। दूधके सम्बन्धमे कल लिखनेका विचार है। आज घीका इन्तजाम कर रहा हूँ। लेकिन, अभी कुछ पक्का नही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१. एक महिला जो कृष्णदास चितालियाकी मारफत आश्रमके जीवनका अनुभव करने आई थी।
२. साधन-सूत्रमें नाम नही दिया गया है।

१२६. पत्र : छगनलाल जोशीको

मगलवार [२७ नवम्बर, १९२८][1]

भाईश्री छगनलाल,

आज मेरे पास ज्यादा लिखनेका समय नही है। . . . का[2] किस्सा पढकर बहुत दु ख हुआ है। मेरा सारा दु ख ऊपरी ही होता है। इससे काममे रुकावट नही पडती। किन्तु वह मनमे घुमडता रहता है। उसे पत्र लिखा है। शायद तुम्हे दिखायेगा।

तुम्हे हिम्मत नही हारनी है। अपने पदकी शोभा बढाना। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१२७. पत्र : प्रभावतीको

२७ नवम्बर, १९२८

चि० प्रभावती,

तुमारे दोनो खत मीले है। द्वारिका जानेकी इच्छा है तो अवश्य जाना। मेरी गैर हाजरीका दु ख कुछ भी मत मानो। कोई रोज तो हमेशाके लीये यह शरीरका जाना है हि। उसके वियोगका दु.ख क्या? जिस कार्यके लीये हमारा जाना सार्थ है उस कार्यमे परायण रहे, वही हमारा आनद है।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३४१ की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिया गया है।

१२८. पत्र : विधानचन्द्र रायको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० विधान,

आपका तार[1] मिला। मैंने निम्नलिखित उत्तर दिया है :

"आपका तार मिला। प्रदर्शनी सम्बन्धी विज्ञापनको पढनेसे लगता है कि प्रदर्शनीके आदर्शके सम्बन्धमे मेरे और आयोजकोके बीच बहुत अधिक वैचारिक विरोध है। इसलिए मै अनुरोध करूँगा कि आप अपनी इच्छानुसार काम कीजिए और मुझे इसमे शामिल न कीजिए। — गाधी"

आपका तार मिलनेसे पहले आज बिलकुल सुबह ही मैंने पण्डित मोतीलालजीके नाम एक पत्र लिखवाया। उसका प्रासगिक अनुच्छेद साथमे भेज रहा हूँ।

मुझे इससे आगे ज्यादा-कुछ नही कहना है। मैंने विज्ञापनवाला कागज देखा है, जिसके बारेमे सिर्फ दो शब्द कहना चाहूँगा। इसमे प्रदर्शित की जानेवाली वस्तुओपर कोई प्रतिबन्ध नही है। इसमे अन्य बातोके साथ सरस्वतीकी धूम-धामसे पूजा करनेकी भी योजना बताई गई है। कहते हैं प्रदर्शनीकी व्यवस्था करनेवालोने सभी प्रान्तीय सरकारोसे अपनी-अपनी वस्तुएँ प्रदर्शनीमे भेजनेका अनुरोध किया है। स्थानीय सरकारोसे इस तरह अनुरोध करनेकी बातकी ताईद मै किसी तरह नही कर सकता। उनमे से एक प्रान्तकी सरकारने तो अभी हालमें भारतके एक परम वीर सपूतके साथ निर्लज्जतापूर्ण व्यवहार किया और फिर उनपर अकारण ही किये गये हमलेका समर्थन करनेकी भी उद्धतता दिखाई। इसी तरह मेरा मन गायन-वादन और धूम-धाम-भरे प्रदर्शनोके आयोजनको भी स्वीकार करनेके लिए तैयार नही है। लेकिन मुझे आपके कार्यक्रममें दखल देनेका कोई हक नही है। आपके दृष्टिकोणसे राष्ट्रके लिए कौन-सी बात लाभदायक है, इसका निर्णय तो सबसे अच्छी तरह आप ही कर सकते हैं। मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि प्रदर्शनीमे मै अपने-आपको बिलकुल एकाकी महसूस करूँगा। मेरे और आप लोगोके विचारोमे साफ-साफ विरोध है। मै पत्रोके द्वारा आपको अपने विचारोका कायल कर सकनेकी आशा नही रखता और न आप ही मुझे कायल करनेकी आशा रखेंगे। इसलिए निश्चय ही मुझे बिलकुल अलग छोड देना ज्यादा अच्छा है। मै किसी भी तरह यह नही चाहूँगा कि सिर्फ मुझे खुश करनेके लिए आप अपने रास्तेसे विमुख हो जाये।

हृदयसे आपका,

डॉ० विधान राय
३६, वेलिंगटन स्ट्रीट, कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३३०३) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "तार : डॉ० विधानचन्द्र रायको", २६-११-१९२८की पाद-टिप्पणी २।

१२९. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय मोतीलालजी,

आपका इस १५ तारीखका पत्र मिला। मै इतने दिनोतक डॉ० विधान राय अथवा सुभाषकी ओरसे पुष्टिकी प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन इस पत्रको लिखवाने तक, अर्थात् २८ तारीखकी सुबह तक, मुझे उनकी ओरसे कोई जवाब नही मिला है। मैने सोमवारको डॉ० विधानको तार[1] दिया मगर उसका भी कोई उत्तर नही मिला है। इस बीच मैने एक कतरन देखी है, जो मै आपको इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। जाहिर है, वे लोग प्रान्तीय सरकारोको सहयोग करनेके लिए आमन्त्रित कर रहे है। यह भी स्पष्ट है कि अब कोई भेद नही रह गया है और यह प्रदर्शनी अब गरीब किसानो और अन्य आम लोगोको कुछ शिक्षा देनेवाली प्रदर्शनीके बजाय एक आँखोको अच्छी लगनेवाली प्रदर्शनी-भर होगी। यो ही खादीका भी जिक्र कर दिया गया है। लेकिन इस प्रदर्शनीमे सच्चे अर्थोमे मेरे अथवा खादीके लिए कोई जगह नही है। स्पष्टत. प्रदर्शनीमे विदेशी वस्त्र अथवा अन्य किसी विदेशी वस्तुको शामिल करनेकी मनाही नही होगी। यह मै नही कह सकता कि मै इस बातसे दु.खी नही हूँ, लेकिन मै नही चाहता कि आप इस विषयपर आगे कुछ करे। मै आपको यह पत्र केवल जानकारी देनेके लिए लिख रहा हूँ। मै नही चाहता कि आप इसमे हस्तक्षेप करे, क्योकि मै नही चाहता कि वे दिलसे कायल हुए बिना अपना विचार यन्त्रवत् बदल ले अथवा यह कि हृदयमे कुछ और भावना रखते हुए यन्त्रवत् मेरी इच्छाओका आदर करे। मुझे धैर्यपूर्वक और निरन्तर काम करते हुए इन कठिनाइयोमे से होकर अपना रास्ता आप बनाना चाहिए। आखिरकार डॉ० विधान और सुभाष एक निश्चित विचारधाराका प्रतिनिधित्व करते है। जिस प्रकार मै यह अपेक्षा करता हूँ कि वे मेरे मतका आदर करे, उसी तरह मुझे भी उनके विचारोका आदर करना चाहिए। अन्ततोगत्वा वही मत हावी होगा, जो जनताके हितमे होगा। इस बातका निश्चय पहलेसे ही कौन कर सकता है कि कौन-सा मत जनताके हकमे है?

मै देखता हूँ कि अपनी रिपोर्टको लेकर आपको अपने मुसलमान मित्रोकी ओरसे बहुत परेशानी उठानी पड रही है। लेकिन देखता हूँ कि आप बड़े धैर्यके साथ और कुशलतापूर्वक इस गुत्थीको सुलझा रहे है। भगवान करे, आप अपने इस महान प्रयत्नमे पूर्ण रूपसे सफल हो।

आपकी चिट्ठीसे मालूम होता है कि सम्मेलन २२ दिसम्बरको न होकर २६, २७ और २८ दिसम्बरको अर्थात् जो तिथियाँ मुस्लिम लीगके सम्मेलनके लिए तय की गई है, उन्ही तिथियोको होगा। या मै यह समझूँ कि सम्मेलन औपचारिक रूपसे २२ तारीखको आरम्भ होगा और २८ तक चलेगा? अपने पत्रमे आपने जिस

१. देखिए "तार : डॉ० विधानचन्द्र रायको", २६-११-१९२८।

पुर्जीका उल्लेख किया है, वह मुझे नही मिली है। इसीलिए मेरे मनमे कुछ उलझन आ गई है। निस्सन्देह, आप मुझसे यह अपेक्षा तो नही करते कि मै इन सभी दिनो कलकत्तामे रहूँ।

साबरमतीमे हम दोनोमे परस्पर जो बातचीत हुई थी, उससे मैंने यही समझा था कि आप मुझसे सम्मेलनमे नही, अपितु काग्रेस अधिवेशनमे शामिल होनेकी अपेक्षा रखते है। जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, मै खुद नही जानता कि मै सम्मेलनमे क्या सेवा कर सकता हूँ। आज हमारे सामने देशमे क्षण-क्षण जो नये-नये चित्र बनते-बिगडते रहते है, उन्होने मुझे बहुत असमजसमे डाल दिया है। मै तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि आपकी स्थिति कोई ईर्ष्या योग्य नही है। लेकिन मै यह भी जानता हूँ कि आप ऐसी परिस्थितियोके उतने ही अभ्यस्त है जितना कि मै चरखेका अभ्यस्त हूँ। और यदि आप यह व्यवस्था स्वीकार कर ले तो मै केवल चरखा चला कर ही सन्तुष्ट रहूँ और राजनीतिकी भूल-भुलैयामे विचरनेका आनन्द उठानेके लिए आपको छोड दूँ। लेकिन जबतक आप अपना निर्णय नही दे देते तबतक मेरा भाग्य आपके हाथोमे है। इस बीच जमनालालजीने वर्धामे जिस शान्त और सौम्य वातावरणमे मेरे रहनेका प्रबन्ध किया है, उसका मै पूरा-पूरा उपभोग कर रहा हूँ।

आपने लालाजी स्मारकके लिए जारी की गई अपील देखी होगी। पजाबके मित्रोको बहुत बार तार आदि देनेके बाद मैंने निश्चय किया कि इस अपीलमे उन तीन व्यक्तियोसे ज्यादाके हस्ताक्षर नही होने चाहिए, जिनके हस्ताक्षरोसे अन्तत यह अपील जारी की गई है। यदि बहुत-से लोगोके हस्ताक्षर लिये जाते तो उन सबकी सम्मति प्राप्त करनेमे बहुत ज्यादा समय लग जाता। उन लोगोका कहना था कि हस्ताक्षर करनेवाले तीनो व्यक्तियोके साथ कमसे-कम मेरा और आपका नाम भी शामिल होना चाहिए। लेकिन मैंने यह सोच कर सुझावको अस्वीकार कर दिया कि आप भी मेरी अस्वीकृतिका समर्थन करेगे। तथापि अपने अत्यधिक व्यस्त जीवनको देखते हुए आप कोषके लिए जो-कुछ कर सकते है, करे।

मै देखता हूँ कि आपको कमलाका इलाज तो फिर बिलकुल शुरूसे ही करना पडेगा। तथापि मुझे इस बातकी खुशी है कि वह डॉ० विधान जैसे सुयोग्य व्यक्तिके इलाजमे रहेगी और आवश्यकता पडनेपर उनकी सहायताके लिए सर नीलरतन बराबर तत्पर रहेगे।

हृदयसे आपका,

सलग्न : १

पण्डित मोतीलाल नेहरू
आनन्द भवन, इलाहाबाद

[पुनश्च :]

इस पत्रको लिखानेके बाद मुझे डॉ० विधानका तार मिला जिसके उत्तरमे सलग्न पत्र[1] लिखा है।

अग्रेजी (एस० एन० १३३०२)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

१३०. पत्र : टी० के० श्रीनिवासनको[1]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[2]
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय श्रीनिवासन,

आपका पत्र मिला। 'यग इडिया' के पृष्ठोमे उसका जवाब देनेका मेरा इरादा नही है, क्योकि मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे लेखोसे कोई भी वह निष्कर्ष नही निकालेगा, जो निष्कर्ष, लगता है, आपने और आपकी बहनने निकाला है। दयासे प्रेरित होकर किसी प्राणीका जीवन समाप्त करनेके पक्षमे जो-कुछ कहा जा सकता है, उसका आधार दो मान्यताएँ है — एक तो यह कि चाहे वह जीव मनुष्य हो या पशु-पक्षी अथवा कीट-पतग, यदि उसमे सज्ञा है तो जिन परिस्थितियोम वह बछडा पडा हुआ था उन परिस्थितियोमे वह — जैसा कि मैंने बछडेके बारेमे भी माना — कभी भी जीना नही चाहेगा और दूसरी यह कि उसका जीवन समाप्त कर देनेके अलावा उसकी और कोई सेवा करना असम्भव था। अब आप अपनी बहनकी बात लीजिए। आप और दूसरे लोग हर क्षण उसकी सेवाके लिए तत्पर है और आप सब उसके कष्टोको — चाहे थोडा-सा ही सही — कम करनेके लिए उसकी जो-कुछ सेवा कर सकते है, वह करना अपना सौभाग्य समझते है और ऐसा समझना सर्वथा योग्य है। अपना प्राणान्त कर लेनेकी उसकी क्षणिक इच्छा विशुद्ध रूपसे परमार्थकी भावनासे प्रेरित थी। उसने सोचा कि इस तरह वह अपनी सेवा करनेवालोकी परेशानी दूर कर सकेगी। लेकिन उसका सोचना गलत था। जिसे उसने अपनी सेवा करनेवालोकी परेशानी समझा वह चीज वास्तवमे उनका एक सौभाग्य थी या कमसे-कम उनके दृष्टिकोणसे उसे सौभाग्य होना चाहिए। और अगर उसमे मृत्युकी इच्छा थी भी तो उसकी सेवा करनेवाले लोग उसकी वह इच्छा स्वीकार नही कर सकते थे, क्योकि उसे स्वीकार करनेका मतलब अपने स्पष्ट कर्त्तव्यसे जी चुराना होता।

कर्मका प्रश्न तो दोमे से किसी प्रसगमे नही उठता। यह बात 'यंग इडिया' मे बार-बार समझाई गई है। अगर हम ऐसे मामलोमे कर्मके सिद्धान्तको घसीटेंगे

१. यह टी० के० श्रीनिवासनके २१ नवम्बर, १९२८ के पत्र (एस० एन० १३७२९) के उत्तरमें लिखा गया था। श्रीनिवासनने अपने पत्रमें लिखा था: "मेरी बहन, जिसकी आयु २० वर्ष है, पक्षाघातसे पीड़ित है। बहुत-से चिकित्सा-विशेषज्ञोंसे उसका हर तरहका उपचार करवाया। किसी भी डाक्टरने अबतक यह आशा नहीं दिलाई है कि वह ठीक हो जायेगी।. . .जब मैं आश्रममें बछड़ेको मारनेके सम्बन्धमें आपका लेख पढ़ रहा था, उस समय सयोगसे वह मेरे पास ही थी। उसने बडे अनुनयपूर्ण स्वरमें कहा कि क्या तुम मुझे अपना जीवन समाप्त कर लेने दोगे?. . .फिर क्षणभर रुकी और कुछ सोच कर बोल उठी, "मैं अपने कर्मफलसे कैसे बच सकती हूँ? उसे टाला नहीं जा सकता; मर कर मैं उसे कुछ कालके लिए स्थगित ही कर सकती हूँ? इसलिए मैं मानती हूँ कि गांधीजीने बछड़ेको मारकर ठीक नही किया।" क्या मैं आपसे इस विषयपर यंग इंडियामें विचार करनेका अनुरोध कर सकता हूँ? कारण यह है कि मैं मानता हूँ कि शायद बहुत-से अन्य लोग भी ऐसा ही सोचते हों।"

२. स्थायी पता।

तो उसका मतलब सारे प्रयत्नोका मार्ग ही बन्द कर देना होगा। कर्मका सिद्धान्त तो सतत क्रियाशील रहता है, वह एक अविराम सतत प्रक्रिया है, लेकिन स्पष्ट ही आपने और आपकी बहनने यह मान लिया कि कुछ कर्मोंने अपना प्रभाव डालना शुरू किया और उनका वह प्रभाव एक निश्चित दिशामे निर्बाध रूपसे पडता चला गया और जो दूसरे कर्म किये गये उनका प्रभाव उन कर्मोके प्रभावकी दिशामे कोई परिवर्तन नही कर पाया। तथ्य यह है कि प्रकृतिका एक-एक व्यापार कर्मके नियममे निरन्तर हस्तक्षेप करता रहता है। खुद यह नियम ही ऐसे हस्तक्षेपकी सुविधा देता है। कारण, यह नियम कोई निर्जीव, कठोर और निष्क्रिय चीज नही है, बल्कि यह तो एक सजीव और सतत विकासशील प्रबल शक्ति है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत टी० के० श्रीनिवासन
शक्ति निलयम, पलैयूर
बरास्ता – मुतुपेट

अंग्रेजी (एस० एन० १३३०७)की फोटो-नकलसे।

१३१. पत्र: लाला गिरधारीलालको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय लाला गिरधारीलाल,

मुझे आपका लम्बा तार मिला था, और अब एक लम्बा पत्र भी मिला है, जो आपने साबरमतीके पतेपर भेजा था और वहाँसे फिर मुझे भेजा गया है। सम्भवत यही कारण है कि 'ट्रिब्यून' की कतरन मुझे नही मिली है और मै अब तक उसे नही देख पाया हूँ। लाला जगन्नाथ मुझे बताते है कि उन्होने 'ट्रिब्यून' अथवा किसी अन्य समाचारपत्रको कोई तार नही भेजा है। कतरनमे क्या लिखा है, यह जाने बिना मेरे लिए उसके बारेमे ज्यादा-कुछ कह सकना कठिन है।

स्मारकके बारेमे आपने डॉ० अन्सारी, पण्डित मालवीयजी और सेठ घनश्यामदास बिडलाके हस्ताक्षरोसे युक्त अपील[1] देखी होगी। मै नही समझता कि इस कोषसे कांग्रेसका खर्च भरा जा सकता है। इसी तरह किसी महान व्यक्तिके नामपर प्रान्तीय कांग्रेसकी ओरसे अपील करना भी ठीक नही है। प्रत्येक सगठनको अपने गुणोके आधारपर अपना अस्तित्व कायम रख सकना चाहिए और अपने-ही गुणोके बलपर अपने प्रति अपने प्रदेशके धनिक लोगोमे विश्वास जगाना चाहिए। कुछ भी हो, यह मेरा निश्चित मत है। मै नही जानता कि हस्ताक्षरकर्त्ताओपर आपके सुझावकी क्या प्रतिक्रिया होगी। मेरे लिए तो यह एक अचरज ही है। मेरे विचारसे,

१. देखिए "अपील: लाजपतराय स्मारक कोषके लिए", २६-११-१९२८।

इस चन्देका उपयोग एक ही तरीकेसे किया जा सकता है, वह यह है कि सबसे पहले तो खुद लालाजीकी बनाई संस्था, लोक सेवक मण्डलको सुदृढ आधार प्रदान किया जाये और फिर लालाजी द्वारा आरम्भ की गई उन राजनीतिक प्रवृत्तियोको आगे बढ़ाया जाये जो अखिल भारतीय स्तरकी है। अखिल भारतीय स्मारकके अतिरिक्त अलग-अलग प्रान्त या समुदाय भी स्मारक बनवा सकते हैं, लेकिन ऐसे स्मारकोके कोषोका भी उपयोग प्रान्तीय कांग्रेस-जैसी विकासशील और विविधरूप-संस्थाके लिए नही किया जा सकता।

हृदयसे आपका,

लाला गिरधारीलाल
दीवान भवन, दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १३३४५) की फोटो-नकलसे।

१३२. पत्र : डॉ० सत्यपालको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० सत्यपाल,

आपका तार मिल गया था और पत्र भी। समय न मिलनेके कारण ही आपको इतने दिनोसे नही लिख पाया हूँ। आप 'यंग इंडिया' परसे देखेंगे कि मैंने आपके तारपर गौर किया और उसकी उचित टीका[1] भी कर दी है। मैंने 'यंग इंडिया'मे प्रकाशित अपनी टिप्पणीमे जो शर्त रखी है, यदि आपका तार उसे पूरा करता है तो वह अत्युत्तम है। मेरे लिए यह सावधानी बरतना जरूरी था, क्योकि यदि मुझे ठीक-ठीक याद है तो आपने कुछ महीने पहले लालाजीके जीवन-कालमे मुझे जो पत्र लिखा था, उसमे अपने-आपको अन्यायका शिकार होनेवाले व्यक्तिके रूपमे पेश किया था। यदि आप अब भी वैसा ही महसूस करते हैं तो आपका तार निरर्थक है। हम अपने देशके इतिहासके इस कठिन समयमे कृत्रिम और निर्जीव एकता नही चाहते। वह एक सतही चीज है। हम तो हृदयकी एकता चाहते हैं, जो किसी भी दबावके कारण टूट नही सकती। आज जब कि हमे पूरे साहस और बहादुरीके साथ जी-तोड़ कोशिश करनेकी जरूरत है और किसी भी तरहकी एकतासे, जैसे-तैसे किये गये सुलह-समझौतेसे हमारा काम नही चल सकता।

हृदयसे आपका,

डॉ० सत्यपाल
४२, निस्वत रोड, लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १३३४६)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "सच है तो अच्छा", २९-११-१९२८।

१३३. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[1]
२८ नवम्बर, १९२८

मैं साथमे रेवरेड गॉर्डनका पत्र भेज रहा हूँ। उन्होने अपने पत्रमे जिस लगडे युवकका जिक्र किया है, वह स्पष्टत अन्य प्रकारसे समर्थ व्यक्ति है। क्या आप उसे अपने यहाँ ले सकते है? वह हमपर भार नही होगा और यदि हम उसे अपने यहाँ जगह दे सके तो यह एक अच्छी बात होगी। उसे लेनेमे साबरमती आश्रमकी समितिके सामने यह कठिनाई थी कि उसे हिन्दी नही आती और श्री गॉर्डनका कहना है कि वह भी हिन्दी न जाननेके कारण वहाँ खुश नही रहता। यदि आप ऐसा सोचते हो कि उसे लिया जा सकता है तो कृपया आप श्री गॉर्डनको लिखे।

अगले महीने आपके यहाँ आनेकी उम्मीद रखता हूँ। लालाजी स्मारकके लिए जो-कुछ किया जा सकता है सो कीजिए। आपने नये एजेट जनरलकी[2] नियुक्तिके बारेमें पढा होगा। इसपर कुछ कहनेकी कोई जरूरत नही है।

श्रीयुत चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
गाधी आश्रम
तिरुचेनगोडु

अग्रेजी (एस० एन० १३७३८) की फोटो-नकलसे।

१३४. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे यदि नगरपालिकामे पुन. प्रवेश करना हो तो इसी शर्तपर करो कि वह तुम्हारे आदेशोका पूरा पालन करेगी। अन्यथा तुम्हारे प्रवेश करनेपर सचमुच मुझे बहुत दु ख होगा। यदि तुम्हे केवल झगडोका निपटारा करनेके लिए ही प्रवेश करना है तो फिर उसका कोई मतलब नही है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि तुम नगरपालिकाकी ठोस सेवा करते हुए पूरे देशके प्रति अपनी जिम्मेदारी नही निभा सकते। नगरपालिकाकी ठोस सेवा करना अपने-आपमे एक बड़ा और पूर्ण

१. स्थायी पता।
२. के० वी० रेड्डी; देखिए "पत्र: मुहम्मद हबीबुल्लाको", ९-११-१९२८।

कार्य है और अगर किसीको यह काम करना हो तो उसके लिए उसमे अपनी सारी शक्ति लगा देना आवश्यक है और मै नही चाहता कि तुम ऐसा कोई काम करो जिसे ठोस नही कहा जा सकता हो।

मै ईसाई सम्मेलनमे शामिल होनेके लिए मैसूर जानेवाला था। वर्षके मध्यमे मैने मित्रोको यही उम्मीद दिलाई थी, लेकिन मैने लगभग एक महीने पहले उन्हे सूचित कर दिया था कि यदि मुझे कुछ आराम करना ही है तो मेरा वहाँ जाना असम्भव है।

तुमने कमलाके बारेमे जो समाचार दिया है, वह खराब है। उसका इलाज कलकत्तामे करवानेका विचार मुझे पसन्द है। वहाँ उसके इलाजके लिए अच्छेसे-अच्छे डाक्टरोकी सलाह मिल सकेगी।

मुझे उम्मीद है कि तुम यहाँ होनेवाली बैठकमे शामिल होनेका समय अवश्य निकाल सकोगे।

हृदयसे तुम्हारा,

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
आनन्द भवन
इलाहाबाद

अंग्रेजी एस० एन० १३७३९ तथा गांधी नेहरू कागजात, १९२८ से।
सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

१३५. पत्र : सरसीलाल सरकारको[1]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[2]
२८ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र और पुस्तिका[3] मिली, धन्यवाद। यदि आपको मालूम होता कि मेरे पास समयकी कितनी तंगी है तो आप मुझे मेरे कार्यक्षेत्रसे बाहरकी कोई चीज पढनेके लिए न कहते।

मै आशा करता हूँ कि आप मुझे रामनामके जप और मै जो तथाकथित आत्मकथा सम्बन्धी अध्याय लिख रहा हूँ उनके बारेमे और कुछ लिखनेके लिए नही कहेगे।

१. सरसीलाल सरकारके १९ नवम्बर, १९२८के पत्रके उत्तरमें।
२. स्थायी पता।
३. रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी कविताओंके सम्बन्धमें।

आपने अपने पत्रमे कविवरके जिस पत्रका[1] उल्लेख किया है, यदि उसका अनुवाद नही तो क्या कमसे-कम उसका सार लिखकर आप भेज सकेंगे? मुझे यह कहते हुए दुःख हो रहा है कि वह पत्र मेरी नजरसे चूक गया, क्योंकि मुझे लज्जापूर्वक यह स्वीकार करना पडता है कि मै बंगला नही पढ सकता।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सरसीलाल सरकार
१७७ अपर सरकुलर रोड, श्याम बाजार, कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३७४०) की फोटो-नकलसे।

१३६. पत्र: लेटेंट लाइट कल्चरके अध्यक्षको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[2]
२८ नवम्बर, १९२८

अध्यक्ष
लेटेंट लाइट कल्चर
तिन्नेवेली

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मुझे दुःख है कि मै आपकी पुस्तकको अभीतक पढ नही पाया हूँ और अब चूँकि मै फिर बाहर जा रहा हूँ, इसलिए कह नही सकता कि इसे कब पढ सकूँगा? आपने कृपापूर्वक जिन पाठोको भेजनेकी बात कही है, निस्सन्देह मै नही चाहूँगा कि आप उन्हे भेजनेका कष्ट उठाये। उन्हे पढनेका मेरे पास समय नही होगा और मै नही समझता कि आश्रमके अन्य सदस्य भी — उनके व्यस्त जीवनको देखते हुए — नई चीजोको हाथमे लेनेके लिए समय निकाल पायेगे।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३७४१) की माइक्रोफिल्मसे।

१. चरखेके बारेमें।
२. स्थायी पता।

१३७. पत्र : बलवीर त्यागीको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[1]
बुधवार [२८ नवम्बर, १९२८ के पश्चात्][2]

चि० बलवीर,

तुमारे तो मुझको खत लीखना था। क्यो नहिं लीखा है? हफ्तेमे एक समय तो लीखना ही चाहीये।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ६६३५ की फोटो-नकलसे।

१३८. किसे रोना चाहिए?

मेरे सामने जबलपुरकी आम सभामे आचार्य कृपलानी द्वारा दिये गये भाषणकी टीपे पड़ी हुई है, जिनमे से मै निम्नलिखित प्रभावपूर्ण अंश प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसे पढनेसे स्पष्ट हो जाता है कि लालाजीकी मृत्युसे वास्तवमे अंग्रेजोको क्षति हुई है। यद्यपि अधिकांश अंग्रेज आज अंग्रेजोके प्रति लालाजीकी सच्ची मित्रतासे अनभिज्ञ है तथापि एक दिन ऐसा आयेगा जब उन्हे मालूम हो जायेगा कि लालाजी-जैसे देश-भक्तोने उनकी क्या सेवा की है।

> लेकिन एक और भी पक्ष है, जिसे हमारी इस महान क्षतिमें हमारे साथ होकर शोक मनाना चाहिए, यद्यपि आज शायद उसे यह मालूम न हो कि उसने क्या खोया है। हमारे शासकोंको एक बहुत बड़े साम्राज्यकी चिन्ता करनी है। और लालाजीके रूपमें उन्होंने एक सच्चा और ईमानदार मित्र खो दिया है। उस मित्रको विचारशून्य और मदान्ध सत्ताधारियोने जब-जब दण्डित किया तब-तब उसने उनकी सहायता ही की।
>
> बंग-भंग आन्दोलनके दिनोंमें सरकारने लालाजीपर बिना मुकदमा चलाये उन्हें देश-निकाला दे दिया था, फिर भी वापस आनेपर उन्होंने कांग्रेस राज-नीतिज्ञोंमें से तथाकथित गरमदलीय पक्षके कार्योंका विरोध किया। उन्होंने फीरोजशाह और गोखलेके नेतृत्वमें चलनेवाले नरमदलकी सहायता की। यद्यपि

१. स्थायी पता।

२. पत्रके शीर्षनामेके कारण यह पत्र १९२८का प्रतीत होता है। १९२८में ही गांधीजीने ऐसे कागजका उपयोग किया है। देखिए "पत्र. अभय आश्रमको", ११-११-१९२८। गांधीजीने यह पत्र वर्धा पहुँचनेके पश्चात्, अर्थात् २४ नवम्बरके बाद पड़नेवाले बुधवारको ही लिखा होगा।

उनपर सबसे अधिक अत्याचार किया गया, फिर भी उन्होंने अपना बायाँ गाल ईसामसीहके गुणोको भूल जानेवाले नाममात्रके ईसाई लोगोके आगे कर दिया। . . .

असहयोग आन्दोलनके दौरान एक बार फिर उन्हें जेल भेजा गया, यद्यपि उस समय उनपर जो आरोप लगाया था, वह कानून और न्यायकी दृष्टिसे बिलकुल थोथा था। लेकिन जब उन्हें जेलसे रिहा किया गया तब उन्होंने एक बार फिर अपने ऊपर जुल्म करनेवालोकी मदद की। उन्होने विवेकपूर्ण समर्थनके लिए कौंसिलोमें प्रवेश करनेकी वकालत की।

. . . इसलिए इस अवसरपर अंग्रेजोंको रोना चाहिए; और यदि वे सत्ताके नशेमें चूर और अन्धे न हो गये होते, तो अवश्य रोते।

यदि ऐसे विश्वस्त, सच्चे और परखे हुए भारतीय मित्रोकी मृत्युके बाद भी अंग्रेज लोग अपना दुराग्रह नही छोडते तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब भारतकी भावी पीढ़ियाँ हमेशा-हमेशाके लिए इंग्लैंडसे शत्रुता निभानेका संकल्प कर लेगी। और यह शत्रुता उसी तरहकी हो सकती है जिस तरहकी शत्रुताकी शपथ ईसामसीहके सूलीपर चढ़ाये जानेके कारण ईसाइयोने यहूदियोके खिलाफ ली थी और जिसे वे शताब्दियोतक निभाते रहे। यह सम्भव है कि उनका शासन एक पूरे राष्ट्रके सूलीपर चढ़ाये जानेके रूपमें देखा जाने लगे और तब भावी पीढ़ियोके मनमें उनके प्रति रोष और घृणा पैदा हो जाये, इसलिए ब्रिटिश साम्राज्यके कर्णधार जरा सोचें-विचारें, उन अवांछनीय सम्भावनाओका कुछ खयाल करें और उस काली रातके आनेसे पूर्व ही अपनी भूल सुधार ले जब परिस्थितियाँ अपरिवर्तनीय रूप धारण कर चुकी होंगी और जब लौटने या समझौतेका कोई सवाल ही नहीं रह जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २९-११-१९२८

१३९. लालाजी स्मारक

मै पाठकोका ध्यान पाँच लाख रुपयोके लिए जारी की गई उस अपीलकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जिसपर डॉ० अन्सारी, पण्डित मदनमोहन मालवीयजी और श्रीयुत घनश्यामदास बिड़लाने हस्ताक्षर किये है। हस्ताक्षर जान-बूझकर केवल उन्ही व्यक्तियोतक सीमित रखे गये है, जिनके हस्ताक्षरोके बिना किसी भी स्मारकको सच्चे अर्थोमे राष्ट्रीय नही कहा जा सकता। अन्य नामोको चुननेमे बहुत ज्यादा दिक्कत थी। और अगर कुछ थोड़े-से नाम दिये भी जा सकते थे तो उन सबकी सहमति प्राप्त करनेके लिए हमारे पास पर्याप्त समय नही था। आखिर चन्दा तो लालाजीके नामके साथ जुडी कीर्तिके ही कारण मिलेगा। अगर वह कीर्ति इसके लिए पर्याप्त नही है तो चाहे जितने नाम दिये जाये और चाहे वे कितने भी विशिष्ट लोगोके हो वे चन्दा प्राप्त करनेमे सहायक नही हो सकते। इसलिए इस तरहके स्मारकोके लिए जनताको जिस आश्वासनकी जरूरत है वह केवल यही है कि अपील उन्ही लोगोकी ओरसे की जाये जिनके नाम इस बातका भरोसा उत्पन्न करनेवाले हो और जिनसे आशा होती हो कि पैसेका उपयोग ईमानदारीसे किया जायेगा। तीनो हस्ताक्षरकर्त्ताओके नाम इन दोनो मुख्य बातोकी पर्याप्त गारटी है।

मुझे उम्मीद है, जनता इस अपीलके उत्तरमे शीघ्रतासे और उदारतासे दान देगी। यह अपेक्षा की जाती है कि जो लोग लालाजीके कल्याणकर प्रभावमे आये हैं, वे लोग यथाशक्ति दान भेजेगे। यदि पाँच लाख रुपयेकी कुल रकम छोटे-छोटे चन्दोके रूपमे प्राप्त होगी तो उससे स्मारकका महत्त्व बढेगा ही। यदि हम पाँच लाख रुपये पाँच लाख नर-नारियोसे इकट्ठा कर सके तो यह बात अपने आपमे स्वराज्यका एक ठोस प्रचार होगी। और यदि हस्ताक्षरकर्त्ताओ द्वारा निर्धारित न्यूनतम रकम मुख्यतः छोटे-छोटे चन्दोसे पूरी हो जाती है तो इससे इस कठिन समयमे किसीपर अनुचित बोझ नही पडेगा। यदि ऐसे मामलोमे धनिकोका विशेष कर्त्तव्य है तो इस कारण अन्य लोग सामर्थ्य-भर न देनेके अपने कर्त्तव्यके भारसे मुक्त नही हो जाते।

इसलिए मैं विभिन्न सस्थाओ और सगठनोको सुझाव देता हूँ कि वे अपने सभी सदस्योसे या अपने प्रभावमे आनेवाले सभी लोगोसे तत्काल पैसा इकट्ठा करना शुरू कर दे। हमारे यहाँ हाई स्कूलो और कालेजोमें कमसे-कम २७,००,००० विद्यार्थी है। वे इस कोषमे एक खासी रकम देनेके लिए अपने जेबखर्चमे से हमेशा कुछ-न-कुछ बचा सकते है। और अपने हिस्सेका चन्दा देनेमे दलित वर्गोको भी पीछे नही रहना चाहिए।

हम बहुधा अनेकानेक सुझावोको लेकर बहस-मुबाहिसे और खीचतान करनेमे बहुत-सा समय और शक्ति नष्ट करते हैं और बहुत-से सम्भावित सुधारोको आजमाकर भी देखते हैं। ऐसे आलोचकोको याद रखना चाहिए कि मनुष्य द्वारा उठाये किसी भी कार्यमे पूर्णता सम्भव नही है। इसलिए हम भले ही ज्यादा अच्छी बाते

सोच सकते हो, लेकिन जो बाते हमारे सामने स्वीकार करनेके लिए रखी गई है उनके खिलाफ जबतक कोई भारी आपत्ति न हो तबतक तो हमे उन बातोको अपनी शक्तिभर भली-भाँति करना ही चाहिए — और विशेषकर जब ऐसी बाते हमारे तपे-परखे और विश्वस्त नेता लोग सुझाये।

'यग इडिया' कार्यालयको भेजे प्रत्येक चन्देकी प्राप्ति इन स्तम्भोमे स्वीकार की जायेगी।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २९-११-१९२८

१४०. सच है तो अच्छा

डॉ० सत्यपालने २२ नवम्बर, १९२८ को मुझे निम्नलिखित तार भेजा है :

> लाला लाजपतरायकी मृत्युसे पंजाबको अपूरणीय क्षति हुई है। आजके दुःखपूर्ण और संकटमय समयमें इस महान नेताकी मृत्युपर मै उन्हें अत्यन्त विनम्रताके साथ अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मै अपनी ओरसे तथा जिन अन्य मित्रोका लालाजीसे मतभेद था उनकी ओरसे अपने उन मित्रोंको, जो हमारे इस मतभेदको लेकर हमसे नाराज थे, विश्वास दिलाता हूँ कि हमने आजसे सारे मतभेदोको मिटा डाला है और अतीतको भुलाकर नये सिरेसे काम करनेका निश्चय किया है। हमारे मनमें कोई दुर्भावना नहीं है, कोई पूर्वग्रह नहीं है और हम लालाजी द्वारा आरम्भ की गई समस्त राजनीतिक प्रवृत्तियोंमें दिलसे सहयोग करनेको तैयार है और हम ऐसे मित्रोके आगे बिना किसी शर्तके इस प्रस्तावको रखते है कि वे हमसे चाहे जो सेवा लें। हम उन सारे मित्रोंको, जो अबतक कांग्रेससे दूर रहे हैं, इस बातके लिए हृदयसे आमन्त्रित करते है कि वे हमारे साथ होकर पूरी शक्तिसे स्वराज्यकी लड़ाईमें जुट जायें — स्वराज्य, जिसके लिए लालाजी जिये और मरे। लालाजीकी पुनीत स्मृतिमें हम निश्चय करते है कि आजसे हम सब लोग एक संयुक्त मोर्चा बनायेंगे — भले ही उसके लिए हमें व्यक्तिगत भावनाओकी पूरी वलि ही क्यो न देनी पड़े।

तारमे व्यक्त किये गये उद्‌गार यदि हार्दिक है तो यह उसके लेखकोके लिए वडे गौरवकी वात है। 'यदि' कहकर मैने एक मर्यादा लगा दी है। अवसर वीत जानेपर निष्फल पश्चात्ताप करनेके इतने उदाहरणोसे मै अवगत हूँ कि यह कह सकना अक्सर कठिन होता है कि ये पश्चात्ताप सच्चे है अथवा क्षणिक आवेशमे किये गये है अथवा जो बात इससे भी बदतर है, वाहरी दबावमे आकर किये गये है। तारके लेखक यदि मन-ही-मन यह महसूस करते हो कि लालाजीके प्रति उनका विरोध

उचित था और परिस्थितियोका भी यही तकाजा था तथा उसके पीछे कोई व्यक्तिगत स्वार्थकी भावना या क्षुद्र उद्देश्य नही थे, बल्कि वह विशुद्धतम देशभक्तिसे ही प्रेरित था तब तो वे कभी भी अपने वैर-विरोधको भूल नही सकेगे। यदि बात ऐसी हो तब तो पश्चात्तापका कोई कारण ही नही होगा। कोई किसी मृत व्यक्तिकी स्मृतिके प्रति केवल न्याय ही कर सकता है, वह मृत व्यक्ति द्वारा वास्तवमे किये गये अन्याय-की स्मृति अपने मनसे मिटा नही सकता। सच्चे पश्चात्तापकी अनिवार्य शर्त यह है कि व्यक्ति अपनी गलतीका कायल हो गया हो। इसलिए यदि तारके लेखक यह महसूस करते हो कि कुल मिलाकर उन्होने लालाजीके जीवन-कालमे उनके प्रति अन्याय किया या यह कि उनके विरोधके पीछे जो उद्देश्य थे वे स्वार्थकी भावनासे परे नही थे तो पश्चात्ताप सच्चा है और उसे स्थायी होना चाहिए। इस शर्तके साथ मै डॉ० सत्यपाल और उनके साथियोको इस देशभक्तिपूर्ण सन्देशके लिए बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि लालाजी द्वारा विरासतमे छोडे गये कामको पूरा करनेके लिए पंजाबमे सभी लोग मिल-जुलकर दृढ और अविश्रान्त प्रयत्न करेगे। यदि पजाबके लोग चाहे और यदि पाँच नदियोवाले उस प्रदेशमे दलगत भावना और साम्प्रदायिकताका अन्त हो जाये तो पजाब अनेक बातोमे समूचे राष्ट्रका नेतृत्व कर सकता है। पजाबके कुछ अखबार अक्सर गाली-गलौज और व्यग-वक्रोक्ति करते रहते है। यदि वहाँके सारे अखबार इस रवैयेको छोडकर लोकमतको सही दिशामे प्रशिक्षित करे तो मुझे तनिक भी सन्देह नही कि शेष भारत उनका अनुकरण करेगा। लालाजीकी स्मृतिमे इससे बडा स्मारक और कुछ नही हो सकता कि पजाब समस्त भारतको सही रास्तेपर चलनेकी प्रेरणा दे।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २९-११-१९२८

१४१. बम्बईका कलंक

घाटकोपर सार्वजनिक जीवदया खाताके श्रीयुत नगीनदास अमूलखरायने बम्बई नगर निगमके अध्यक्षको बम्बईमे दुग्ध-आपूर्तिके सम्बन्धमे एक तर्कपूर्ण पत्र भेजा है, जो नीचे दिया जा रहा है:[1]

बम्बईको सौन्दर्यस्थली कहा गया है। यदि बम्बईका अर्थ केवल मलाबार हिल और चौपाटी है और, यदि सुन्दरताका सम्बन्ध केवल उसके बाह्य रूपसे है तो बम्बई नि.सन्देह सुन्दर है। लेकिन यदि बम्बईके हृदय-स्थलमे प्रवेश करके देखा जाये तो हमारे अधिकाश शहरोकी भाँति बम्बई देखनेमे भी और यथार्थमे भी कुरूप है। नगर

१. यहाँ नही दिया जा रहा है: पत्र-लेखकने अधिकृत व्यक्तियोके मतोंका हवाला देते हुए दिखाया था कि दूधके ऊँचे दामोंका कारण ठीक शहरके बीच गोशालाओंका होना, चारेका महँगा होना तथा असमय पशुओंका वध किया जाना है।

निगमके सदस्य अपने शहरमे दुग्ध-आपूर्तिकी ओर जैसी उदासीनता बरत रहे हैं वह सचमुच अपराधपूर्ण है तथा उपर्युक्त पत्रमे जो तथ्य दिये गये हैं वे सुन्दर बम्बई पर 'कलंक'के समान हैं। लेकिन केवल नगरपालिकाके सदस्योको दोष देना मुझे निरर्थक जान पड़ता है। आखिरकार वे लोग तो वैसे ही होते हैं जैसा उन्हे मतदाता बनाते हैं। यदि बम्बईके लोग सस्ता शुद्ध दूध चाहते है तो इसके लिए मतदाताओको शिक्षित करनेका काम बड़े पैमानेपर किया जाना चाहिए। उन्हे इस बातकी शिक्षा दी जानी चाहिए कि उन्हे किसी भी उम्मीदवारको तबतक वोट नही देना चाहिए, जबतक कि वह नगरमे जल्दसे-जल्द दुग्ध-आपूर्तिकी समुचित व्यवस्था करनेकी शपथ नही ले लेता। ब्लैचफोर्डके शब्दोमे दूधको डाक टिकटोके समान मानना चाहिए। इस प्रश्नको निजी क्षेत्रपर नही छोड़ देना चाहिए, अपितु यह प्रत्येक नगरपालिकाका सबसे पहला काम होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २९-११-१९२८

१४२. मैसूरमें हाथ-कताई

भारतके किसी भी राज्यने हाथ-कताईको मैसूर राज्यकी तरह व्यवस्थित ढंगसे प्रोत्साहन नही दिया है। मेरे सामने मैसूरके उद्योग विभागके निदेशक श्रीयुत जी० रंगानाथ साहब द्वारा तैयार की गई टिप्पणीकी एक प्रति पडी हुई है। यह टिप्पणी 'हाथ कताईके प्रश्नपर विचार करनेके लिए बनाई गई' राजकीय उपसमितिके सामने प्रस्तुत की जानेके लिए तैयार की गई है। पूरी टिप्पणी मैं नीचे दे रहा हूँ:[1]

राष्ट्रके इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पूरक उद्योगके पुनरुद्धारके लिए निदेशक महोदय और उप-समितिकी ओरसे जैसा सम्यक् प्रयत्न किया जा रहा है उसके लिए मैं उन्हे बधाई देता हूँ। निदेशक महोदयने अपनी टिप्पणीमे स्वभावतः बड़ी सतर्कता बरती है। यह भी स्वाभाविक ही है कि हाथ-कताईको संगठित करनेके लिए जो भी कदम उठाया जा रहा है, वह काफी सोच-विचार कर उठाया जा रहा है। इसका परिणाम यह है कि विभागको शुरूसे ही पूँजीगत लागतपर कोई नुकसान नही उठाना पड़ा है। विभागने अखिल भारतीय चरखा सघके प्रयत्नोंसे लाभ उठानेमे अथवा उसके द्वारा दी गई तकनीकी सहायताको स्वीकार करनेमे संकोच नही किया है। रिपोर्टसे यह बात स्पष्ट है कि जिस क्षेत्रमे चरखेका प्रचार करना है वह इतना विस्तृत है कि इस क्षेत्रमे काम करनेवाले सभी कार्यकर्त्ताओकी शक्तिको वह खपा सकता है। मै आशा करता हूँ कि गाँवोके लिए एक निर्दोष धुनकी बनानेके लिए जो प्रयोग किये जा रहे है, उनमे सफलता मिलेगी। वही धुनकी कामकी मानी जायेगी जिसे गाँव-

१. इसका अनुवाद यहाँ नहीं दिया जा रहा है। इसमें बादनवळ गाँवमें 'हमारे किसानोंके एक पूरक धन्धेके रूपमें हाथ-कताई शुरू करवाने'के प्रयत्नोंका वर्णन किया गया था।

वाले आसानीसे चला सके। मेरी विनम्र राय यह है कि हमारे गाँवोमें इस समय जो धुनकी प्रचलित है उसमें सुधार करनेकी गुंजाइश नही है। अखिल भारतीय चरखा सघके तकनीकी विभागने जिस धुनकीका प्रयोग प्रारम्भसे होता आया है उसमे कुछ परिवर्तन करनेकी कोशिश की थी, लेकिन यदि हम इस बातको ध्यानमे रखे कि धुनकीका क्या उद्देश्य है तो उसके आधारभूत रूपमे परिवर्तनकी सम्भावना नही दिखाई देती है। इसके अलावा यदि धुनी जानेवाली रुई अच्छी है, उसको अच्छी तरहसे चुना और साफ किया गया है तो धुनकीसे धुननेका कार्य अत्यन्त आसान और सीधा-सादा होता है तथा यह कार्य शीघ्रतासे किया जा सकता है और इसे नाजुक शरीर-वाले स्त्री और पुरुष भी कर सकते है। और मेरा अपना अनुभव यह है कि ३० अकका जितना सूत एक घटेमे काता जा सकता है, उतने सूतके लायक रुई धुनने तथा पूनियाँ बनानेमे पाँच मिनटसे ज्यादा देनेकी जरूरत नही है। ३० अकके आधे तोले सूतकी लम्बाई ३२० गज होती है, और घटे-भरमे इतना कात लेना एक अच्छे कतैयेके लिए बहुत अच्छी औसत गति है। किसी हदतक अच्छा धुन लेनेवाले व्यक्तिके लिए आधा तोला रुई धुननेके लिए पाँच मिनटका समय काफी है और यदि हजारो कातनेवालोको, जिनका निदेशक महोदयने जिक्र किया है, धुनाई सीखनेके लिए राजी किया जा सके तो वे अपनी पूनियाँ आप तैयार कर सकते है और इस तरह अपनी प्रति घटेकी कमाईमे कुछ और वृद्धि कर सकते है, क्योकि अपनी जरूरतकी रुई स्वय धुन लेनेवाले कतैयोको थोडी ज्यादा मजदूरी देना सम्भव हो सकेगा। दूसरोकी बनाई पूनियाँ कातनेवालोकी अपेक्षा थोडी ज्यादा मजदूरी देना सम्भव होगा।

मैसूर राज्यको गरीब रैयतके कल्याणके प्रति ऐसा उत्साह रखनेके लिए बधाई देते हुए मै मैसूर राज्यके सम्पन्न नागरिको और अधिकारियोको भी यह याद दिला देना चाहूँगा कि खादी मैसूरके लोगोके घरोमे तबतक स्थायी स्थान ग्रहण नही कर सकती जबतक ये दोनो वर्ग भी इसे अपने पहनावेके लिए अपना नही लेते। वे अब जानते है कि वे जितनी उम्दा खादी खरीदना चाहे उतनी उम्दा खादी खरीदना सम्भव है। उन्हे सरल ग्रामवासियोको यह सोचनेका अवसर देकर कि तथाकथित उच्च वर्गके लोग जिस बातका उपदेश देते है उसे व्यवहारमे लानेके लिए तैयार नही है, उन्हे दुविधामे नही डालना चाहिए। उन्हे 'भगवद्गीता' के ये शब्द याद रखने चाहिए :

"साधारण जनता श्रेष्ठ पुरुषोके कार्यका (वचनोका नही) अनुकरण करती है।"[१]

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २९-११-१९२८

१. गीता, ३-२१।

१४३. विदेशसे प्राप्त संवेदना-सन्देश

काठियावाड आर्य-मण्डल और सौराष्ट्र हिन्दू-सघ, डर्बन और भारतीय सघ, ग्लासगो विश्वविद्यालयकी ओरसे क्रमश निम्नलिखित तार[1] प्राप्त हुए हैं।

[अग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २९-११-१९२८

१४४. पत्र : जे० कृष्णमूर्तिको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२९ नवम्बर,१९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके[2] लिए धन्यवाद। मै आशा करता हूँ कि अब आप पूर्णत· स्वस्थ हो गये होगे। आप जब-कभी मुझसे मिलने आनेका समय निकाल सके, निस्सन्देह मुझे बडी प्रसन्नता होगी। मै कमसे-कम २० दिसम्बरतक वर्धामे हूँ। उसके बाद मै लगभग एक सप्ताहके लिए कलकत्ता जाऊँगा और तत्पश्चात् साबरमती लौट जानेकी उम्मीद रखता हूँ।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत जे० कृष्णमूर्ति
मारफत—श्री आर० डी० मोरारजी
वसन्त विहार, माउट प्लेजैट रोड, बम्बई

अग्रेजी (एस० एन० १३००६) की फोटो-नकलसे।

१. नही दिये जा रहे हैं। इन सब संस्थाओंने लाला लाजपतरायके निधनपर शोक सन्देश भेजे थे।

२. जे० कृष्णमूर्तिने गांधीजीको अपने २२ नवम्बर, १९२८ के पत्रमें लिखा था कि: "मैं आपसे मिलनेकी बड़ी उत्कटताके साथ प्रतीक्षा कर रहा था . . . लेकिन बदकिस्मतीसे सख्त जुकाम हो जानेके कारण मुझे अपनी यात्रा रद्द कर देनी पड़ी . . .। मुझे उम्मीद है कि हम लोग शीघ्र ही मिलेंगे।"

१४५. पत्र : एम० के० गोविन्द पिल्ले और विज्ञानचन्द्र सेनको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
२९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्रो,

आपका पत्र मिला। आप लोग मुझे अपनी-अपनी उम्र बताइए और यह भी कि क्या आप विवाहित है, आपके माता-पिता हैं अथवा नही, क्या आप मलयालमके अलावा कोई और भाषा जानते है, आपने अंग्रेजी कहाँतक और कहाँ सीखी है। आपकी सस्थाके प्रधानकी आपके बारेमे क्या राय है? मेरे जानने योग्य अन्य सब बातें भी आपको लिख भेजनी चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत एम० के० गोविन्द पिल्ले
श्रीयुत विज्ञानचन्द्र सेन
आर्य समाज, कोट्टायम (त्रावणकोर)

अंग्रेजी (एस० एन० १३००८) की फोटो-नकलसे।

१४६. पत्र : कन्नाईराम पिल्लेको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
२९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

जैसा कि मैंने अपने पिछले पत्रमे आपसे वादा किया था, मैंने मामलेकी तहकीकात कर ली है और अब मै पूरी तरह आश्वस्त हो गया हूँ कि कुछ भण्डारोका जिक्र करके कोई पक्षपात नही किया गया था। केवल उन्ही भण्डारोंका जिक्र किया गया था जहाँ भारी बिक्री होनेकी उम्मीद थी। परचा केवल उन्ही स्थानोको भेजा गया था जिनके नाम सूचीमे थे। इसमे निजी तौरपर व्यापार करनेवालोको नीचा दिखानेका कोई सवाल नही था। चरखा-संघ वस्त्रालय धोतियो और थानोकी फुटकर बिक्री

अवश्य करता है। वास्तवमे आपको अपनी शिकायते श्रीयुत वरदाचारीके सम्मुख पेश करनी चाहिए, जिनके साथ और अधीन आप काम करते है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत कन्नाईराम पिल्ले
तमिलनाड खादी वस्त्रालय
तिरुपुर (दक्षिण भारत)

अंग्रेजी (एस० एन० १३२९२) की माइक्रोफिल्मसे।

१४७. पत्र : हन्ना लेजरको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
२९ नवम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका मनको छूनेवाला पत्र मिला। मुझे खुशी है कि आपने मुझे अपना विश्वास दिया है। पूरे हालातको जाने बिना इतनी दूरीसे आपका मार्गदर्शन करना मेरे लिए मुश्किल है। लेकिन आम तौरपर मैं यही कहूँगा कि 'तलाक नही।' लेकिन यदि आप दोनोके स्वभाव परस्पर एक-दूसरेके विपरीत हो तो आपको स्वेच्छासे पतिसे अलग रहना चाहिए।

कुछ भी हो, मैं उम्मीद करता हूँ कि आपको मानसिक शान्ति मिलेगी।

हृदयसे आपका,

श्रीमती हन्ना लेजर
वेस्ट बैंक, विक्टोरिया स्ट्रीट
आउटोबारा, सी० पी०

अंग्रेजी (एस० एन० १३७४३) की माइक्रोफिल्मसे।

१४८. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
२९ नवम्बर, १९२८

तुमने साबरमतीके पतेपर मुझे जो तार भेजा था, वह वहाँसे वर्धाके पतेपर मुझे भेज दिया गया और २६ तारीखको यहाँ मिल गया। पहले तो मुझे इसे समझनेमे दिक्कत हुई। मुझे लगा कि तुम्हे लालाजीकी मृत्युके बारेमे कुछ मालूम नही है। लेकिन जब मैंने देखा कि तुम्हे पहले ही इस आशयके चिन्ताजनक तार मिल चुके थे कि लालाजीको जो चोटे आई थी, उनके कारण उनकी मृत्यु हो गई। मेरी अपनी राय यह है कि शारीरिक चोट उतनी गम्भीर नही थी, हालाँकि चोट हृदयके आसपास लगी थी और घातक भी हो सकती थी। और यदि मित्र लोग बीचमे न आ जाते तो चोटे निश्चय ही बहुत गम्भीर होती, लेकिन वे बडी बहादुरीके साथ उन्हे घेरकर खडे हो गये और बहुत-से वार उन्होने अपने ऊपर झेल लिये। लेकिन इसमे कोई सन्देह नही कि लालाजीको मानसिक आघात लगा था, जिससे वे कभी सँभल नही पाये। इस घटनाके बादके उनके सारे लेख, सारे भाषण मेरे इस कथनके स्पष्ट प्रमाण है। इस मामलेके प्रति सरकारने घोर उदासीनता दिखाई और एक लम्बा-चौडा वक्तव्य प्रकाशित करके लालाजीकी चुनौतीको बिना कोई विचार किये खारिज कर दिया, यहाँतक कि उसने लालाजीके नामकी भी चर्चा नही की। इस सबने उनके हृदयमे सुलग रही आगमे घीका काम किया। उन्हे इस बातका इतना दु ख नही था कि उनके साथ अन्याय हुआ है जितना इस बातका कि सरकारने इस अन्यायके रूपमे समस्त राष्ट्रके साथ अन्याय किया है। जनताकी पस्तीने उस अपमानको और भी तीखा बना दिया। तुम देखोगे 'यग इडिया'मे लालाजीके लिए राष्ट्रीय स्मारक बनानेके लिए एक अपील[1] जारी की गई है। सेठ घनश्यामदास बिडलाने १५,००० रुपयेकी विपुल राशि देकर उस कोषका शुभारम्भ किया है। मुझे उम्मीद है, लोग इस अपीलके उत्तरमे उदारतापूर्वक दान देगे।

मैं कमसे-कम २० दिसम्बरतक वर्धामे हूँ। मुझे कुछ दिनोके लिए कलकत्ता जाना होगा। वहाँसे मैं वापस साबरमती जाना चाहता हूँ। वहाँके जीवनमे खो जानेकी हिम्मत अभी मुझमे नही है। जाने क्यो मैं यह अनुभव करता हूँ कि मुझे कुछ समयके लिए बाहर अवश्य जाना चाहिए और फिर मेरी यूरोपकी यात्राकी बात भी तो है, जिसे मैंने कई बार स्थगित कर दिया है। यदि तुम्हारा विचार बदल गया हो और तुम यह समझते हो कि मुझे यूरोपकी यात्रापर नही जाना चाहिए तो मुझे तार देना। तुम्हारा निर्णय मेरे लिए अन्तिम होगा। यदि तुम 'हाँ' कहते हो तो तुम्हे तार देनेकी कोई जरूरत नही, क्योकि यूरोप जानेकी मेरी इच्छाके बावजूद अनेक

१. देखिए "अपील: लालाजी स्मारक कोषके लिए", २६-११-१९२८।

ऐसी बाते हो सकती है जो मुझे न जाने दे। इसलिए मेरा जाना अपने समयसे ही हो सकेगा।

इसके साथ मै मैकमिलन कम्पनीकी ओरसे भेजे गये पत्रकी एक प्रति भी भेज रहा हूँ। मुद्रणाधिकार प्राप्त करनेके बाद अब वे लोग उसका अनुचित लाभ उठाना चाहते है। सोचता हूँ कि अगर मै इसमे न पड़ा होता तो अच्छा था। इसमे मै रेवरेड होम्सके कारण पड़ा। खैर, जैसा है ठीक ही है। कदाचित् वे तुम्हे मजूरी दे देगे। यदि वे लोग आत्मकथाको खण्डोमे प्रकाशित कर दे तो मुझे कोई आपत्ति नही होगी। आत्मकथा लिखनेका सारा काम कब पूरा होगा, इसके बारेमे मै कुछ कह नही सकता, हालाँकि मै अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओको छोडता जा रहा हूँ और जल्दी ही असहयोगके दिनोतक पहुँच जानेकी कोशिश कर रहा हूँ। मै कलकत्ताके विशेप अधिवेशनके वारेमे लिखनेके वाद समाप्त कर देना चाहता हूँ, क्योकि घटनाएँ अभी बहुत ताजा है और यदि आगे लिखूँ तो अनेक समकालीन नेताओका वर्णन भी मुझे करना पड़ेगा। मै यह भी महसूस करता हूँ कि इसे यही समाप्त कर देना युक्तिसगत भी होगा, क्योकि उसके बादसे मेरा जीवन बहुत ज्यादा सार्वजनिक हो गया है। इसलिए उसपर और लिखनेकी कोई जरूरत नही। और फिर 'यग इडिया' तो है ही, जो मुझे देखना चाहे वह इस दर्पणमे देख सकता है।

महादेवको इस बार बारडोली जाँचके सिलसिलेमे बारडोलीमे ही छोड देना पडा। जाँच अच्छी तरहसे चल रही है।

उम्मीद है, तुम अच्छी तरहसे होगे।

मुझे गोपबन्धुदासपर लिखा तुम्हारा लेख मिल गया है, हालाँकि देरसे मिला है। लालाजीके बारेमे तो अपने सस्मरण तुम भेजोगे ही।

कुमारी मेयोके बारेमे तुमने जो भूल-सुधार भेजी है, वह भी मुझे मिल गई है। उसे 'यग इडिया'के आगामी अकमे प्रकाशित कर दिया जायेगा।[1]

'ब्रिस्टल टाइम्स'की कतरन चौका देनेवाली है, लेकिन आधुनिक पत्रकारिता ही ऐसी है और ऐसी ही है सत्यके बारेमे उन लोगोकी कल्पना जो हवाई उडान करके दो-चार दिनोके लिए कही जाते है और उतने ही समयमे जो-कुछ देखते है, उसीके आधारपर एक फतवा दे देते है।

श्री सी० एफ० एन्ड्रयूज
११२, गोवर स्ट्रीट, लन्दन, डब्ल्यू० सी० १

अग्रेजी (एस० एन० १५०९९)की फोटो-नकलसे।

१. यह भूल-सुधार ६ दिसम्बर, १९२८ को प्रकाशित हुई थी और इस प्रकार थी: "मुझे खेद है कि भारतके सम्बन्धमें कुमारी मेयोकी लिखी पुस्तकके बारेमें लिखे मेरे लेखमें अनजाने ही एक भूल चली गई। मुझे किसी अधिकारी व्यक्तिने बताया था कि कुमारी मेयोको युद्धके तुरन्त बाद प्रचार-कार्यके लिए एक पुस्तक लिखनेके लिए नियुक्त किया गया। मैंने उसकी बातपर बिना कोई छान-बीन किये विश्वास कर लिया। अब मैं देखता हूँ कि 'नियुक्त' शब्द जिससे यह प्रकट होता है कि पुस्तक लिखनेके एवजमें लेखिकाको कुछ पैसे दिये गये, सही नहीं था। इसलिए मैं इस शब्दको क्षमा-याचनाके साथ वापस लेता हूँ।

१४९. पत्र : नारणदास गांधीको

२९ नवम्बर, १९२८

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला।

'नारणदासको जीतने'[1] का जो अर्थ तुमने लगाया है यदि उसका वही अर्थ होता तो तुम्हारा दुःख मानना उचित होता। किन्तु तुम्हे ऐसा अर्थ लगाना नही चाहिए। इस वाक्यके आगे-पीछे हुई बातचीतका अनुमान तुम्हे किस प्रकार हो सकता है? यह वाक्य भाई छगनलालके साथ हुई बातके सन्दर्भमे था। तुम दोनोके बीच दूरी है यह तो स्पष्ट है। छगनलाल मत्री है। अपनी दुर्बलता वह जानता है और मै भी जानता हूँ। 'नारणदासको जीतने' की बात लिखनेका अभिप्राय यह था कि तुम्हे समझना, तुम्हारी बात सुनना और मेलजोल करके तुम्हारे अनुकूल बनना उसका धर्म है। यह वाक्य मैंने इस अर्थमे कहा था। वह तुम्हारे दोषका सूचक नही है। यदि वह तुम्हारे दोषका सूचक होता तो मै जीतनेकी बात न लिखता। और वाक्य इस प्रकार होता 'नारणदासको प्रेमपूर्वक सुधारना', इसके सिवा तुम्हारा दोष होता तो मै पहले तुम्हे कहता। मैंने तुममे ऐसा कोई दोष नही देखा इसलिए तुमसे कुछ कहनेकी बात नही थी। तुम चुप रहो या जहाँ भूल देखो उसे न बताओ, यह तो मेरी इच्छा नही है। यदि न बताओ तो मै इसमे तुम्हारा दोष मानूंगा। अब तो बात समझ गये? यदि कोई और बात स्पष्ट करानी हो तो लिखना। यह पत्र भाई छगनलालको दिखा सकते हो। मुझे यह भी लगता है कि दिखा देना ही ठीक है। लेकिन बताना, न बताना मै तुम्हारी मर्जीपर छोड़ता हूँ।।

चलालाके[2] विषयमे थोड़ी पूछताछ कर लूं तो पीछे लिखूंगा।

साथके पत्र दे देना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

पुरुषोत्तम कैसा है? जीवनसे[3] कुछ फायदा हुआ? जमना कैसी है?

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७७२२)से।
सौजन्य : राधाबहन चौधरी

१. देखिए "पत्र : छगनलाल जोशीको", २३-११-१९२८।

२. सौराष्ट्रमें रचनात्मक कार्यका एक केन्द्र।

३. एक दवा।

१५०. पत्र : छगनलाल जोशीको

गुरुवार, २९ नवम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

साथके पत्र मुझे भूलसे ही भेज दिये है न? ऐसे ही, दूसरे कई पत्र भी जो मुझे नही भेजे जाने चाहिए यहाँ आ जाते है।

भाई शकरलालके पत्रके सम्बन्धमे तुमने कोई बात नही लिखी। क्या मै यहाँ कोई नया प्रस्ताव पास कराऊँ?

चलालामे जो कुछ हुआ है, उसके बारेमे मै वहाँ और जाँच करानेके बाद लिखूँगा। . . . बहन[1] और . . . लालके[2] पत्र वापस कर रहा हूँ। यह प्रकरण निश्चय ही दुःखद है।

महावीर, दुर्गा और मैत्री बीमार पडे है। इसका कारण केवल उनकी खुराक है।

अपने सम्बन्धमे तुम्हे अवकाश मिलनेपर लिखनेका विचार था। मै जो प्रयोग कर रहा हूँ, उसमे अधीरता बिलकुल नही है। यहाँ आनेके बाद भोजनमे तेलका प्रयोग तो मै करना ही चाहता था। फल तो मै वहाँ भी नही लेता था। फिर भी रेलगाडीमे फल ही खाये। यहाँ भी मैने उनका सम्पूर्ण त्याग नही किया है।

आज लालाजी दिवस मनाया जा रहा है, इसलिए तथा अन्य कारणोसे मैने फल ही लिये है। दूध नही लेता, यही एक फर्क है। तुम लोगोके साथ प्रतियोगिता करनेका मन तो जरूर होता है। किन्तु उसमे तुम्हे घबरानेका कोई कारण नही है। यहाँ कोई नही घबराता। सब जानते है कि मै अपने साथ कोई जोर-जबर्दस्ती नही करूँगा। जीनेका लोभ तो अनेक वर्ष पहले ही छोड दिया था। यह नई बात नही है।

तुम प्रयत्नशील हो इतना ही काफी है। मेरी समानता तुम नही कर पाते, इसमे चिन्ता करनेका कोई कारण नही है। तुम्हे जहाँ कठिनाई लगे वहाँ अपनेको ईश्वरके हाथमे सौप दो। चिन्ता छोड दो तो तुम्हारा प्रयत्न ज्यादा सफल होगा। जहाँ योग्यताकी कमी होगी वहाँ प्रयत्नसे उसकी पूर्ति हो जायेगी। इसके बाद भी कुछ पूछना शेष हो तो पूछना।

चि० सन्तोक और केशुकी समस्या कठिन है। क्या करना होगा उसका विचार कर रहा हूँ। गेहूँमे से तो यह पैसा नही निकल सकता[3]। इसके बारेमे फिर लिखूँगा।

सोमाभाईको मुक्त कर दिया यह ठीक हुआ। उसे छ: माहतक तो क्या, एक माहके लिए भी नही रखा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो: श्री छगनलाल जोशीने

१ और २. नाम छोड दिये गये है।

३. देखिए "पत्र: छगनलाल जोशीको", २७-११-१९२८।

१५१. पत्र : छगनलाल जोशीको

[२९ नवम्बर, १९२८][1]

भाईश्री छगनलाल,

सब लोगोके सामने पढनेका पत्र तो लिख चुका। गायका घी तुम्हे मिल गया है, इसलिए अब मै जल्दीमे कुछ नही करना चाहता।

लालाजीके स्मरणमे जो दिन मनाया जा रहा है, उस दिन क्या यही उचित नही होगा कि हम हर तरहकी मजदूरीकी समान कीमत लगाये। इस नियमका अमल जहाँ आसानीसे किया जा सकता हो वहाँ करना ज्यादा अच्छा है। इसलिए जैसा मैंने सुझाया है, वैसा एक रजिस्टर बनाना चाहिए। यानी एक घटा मजदूरीका पारिश्रमिक एक आना या पौन आना हो और रजिस्टरमे यह दिखाया जाये कि हर तरहकी मजदूरी एक घटेमे कितनी होनी चाहिए। उदाहरणके लिए, कातनेके सम्बन्धमे हम कहे कि एक घटेके तीन सौ या जितने हम तय करे उतने तार होने चाहिए। इसी तरह हमे पीसने, बुनने, खोदने, अनाज साफ करने, जमीन साफ करने, निवाड बुनने, बढईका काम करने आदिके सम्बन्धमे भी कामका प्रमाण निश्चित कर देना चाहिए। ऐसा एक कोष्ठक तैयार हो जाये तो हमे आसानी होगी। सब लोग डायरी तो रखते ही है। उससे हम अपनी जानकारीके लिए हरएकके परिश्रमका हिसाब तैयार कर सकते है। मतलब यह है कि यदि यह सिद्धान्त स्वीकार्य मालूम होता हो तो इस तरह हम उसकी शास्त्रीय जाँच कर सकते है।

कृष्णमैया देवीके सम्बन्धमे मै विचार कर रहा हूँ। इस मामलेमे तुम्हे आगे बढकर हिस्सा लेना पडेगा। यदि वह कामचोरी करती है या ऐसी ही कोई और चीज करती है तो तुम्हे उससे कहना चाहिए।

शारदाबहनके सम्बन्धमे तुम जो सुनते हो वह तुम्हे मुझे लिखना चाहिए। सुना हुआ कुछ तो झूठ भी होता है। गगाबहनको किस प्रकारका असन्तोष है? शारदाबहनके साथ भी तुम्हे खुलकर बातचीत कर लेनी चाहिए।

सप्ताहमे एक दिन सब लोग निश्चित घटे काम करे यह बात मुझे जँचती है। मन्दिरमे कही भी गन्दगी नही होनी चाहिए।

मै मीराबहनसे बात करूँगा। 'मन्दिर-समाचार'के दोनो सप्ताहोके अक इतने बुरे छपे है कि पढे नही जा सकते।

शामलभाईका खर्च मन्दिरमे से लिया जाये, इसमे मुझे तो कोई आपत्ति नही है। विद्यापीठसे लेनेमे भी कोई दोष नही देखता। जिसमे काकाको ज्यादा सन्तोष हो वैसा ही करे। मुझे ऐसा लगता है कि बारह रुपये मासिक खर्चका प्रयोग काका

१. पत्रमें लालाजी-स्मृति-दिवसका उल्लेख है, यह दिन इसी तारीखको था।

नही कर सकेगे। एक तो वे शरीर-सम्बन्धी प्रयोगोके जानकार नही है कि जैसा मनमे आये वैसी छूट ले सके।

बालका पत्र नही आया। उसकी माँग सुनकर चौका हूँ। कुछ लोग बारहसे ज्यादा माँगेगे यह सुननेके लिए तो मै तैयार था किन्तु बीस रुपयेकी माँग सुननेके लिए मै तैयार नही था। तुम उससे कुछ मत कहना। उसका निबटारा मै कर लूँगा।

चरखा सघके साथ हमे किस तरहका समझौता करना होगा सो मै समझ गया हूँ। अब भाई शकरलालके साथ पत्र-व्यवहार करूँगा। तुम निश्चिंत रहना। तुम लोगोके अभिप्राय इकट्ठे कर रहे हो यह भी ठीक है। सब बातोपर तटस्थ भाव से विचार करना।

अपना शरीर ऐसा बनाओ कि सरदी-वरदी कभी कुछ न हो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

१५२. पत्र: शान्तिकुमार मोरारजीको

वर्धा
२९ नवम्बर, १९२८

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारे पत्र और पुस्तक मिली थी। उसका उपयोग हो रहा है। आजकल आश्रममे रोटी बनाई जाती है। बिस्कुट बनानेके विषयमे कोई सरल पुस्तक देखनेमें आये तो भेज देना। रोटी सम्बन्धी पुस्तकमे बिस्कुटोके विषयमे कुछ नही है।

भाई जेराजाणीके भाईके विषयमे पूछताछ कर रहा हूँ। शहद बनानेवाले किसी और व्यक्तिका पता चले तो लिखना।

सुमन्तकी व्यवस्था कर रहा हूँ। जैसा तुमने लिखा है यदि वैसा ही हो तो मै अखबारमे अवश्य लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७०८)की फोटो-नकलसे।
सौजन्य: शान्तिकुमार मोरारजी

१५३. पत्र : सुरेन्द्रको

२९ नवम्बर, १९२८

चि० सुरेन्द्र,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिल गया है। चर्मालयके विषयमे तुम्हारी तन्मयता मुझे प्रिय है। यदि उसमे तुम पूरी तरह कुशलता प्राप्त कर लोगे तो मनुष्य और पशु, दोनोकी भारी सेवा कर सकोगे। यह सम्पूर्ण क्षेत्र धर्मसे वचित रहा है क्योकि आजके हिन्दू समाजने इस धधेको अधर्ममय मान लेनेका महादोष किया है। हमे इस धन्धेमे धर्मकी भावना पैदा करके अब अपना पाप धोना है। यहाँ मै करोड-पतियोके साथ गोसेवाकी बात कर रहा हूँ। उसमे भी मुझे यही बात दिखाई दे रही है। वहाँके अपने अनुभवोका विशेष वर्णन लिखना जिससे पूरा चित्र मेरे सामने आता जाये। छोटेलाल मेरे साथ आ गया है, यह तो मैंने लिखा ही होगा?

यहाँका काम ठीक चल रहा है। अभीतक दैनन्दिनी लिखना आरम्भ न किया हो तो कर देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३०९३)की फोटो-नकलसे।

१५४. भाषण : वर्धा आश्रमके निवासियोंके सम्मुख[1]

२९ नवम्बर, १९२८

हमारे शास्त्रोका कहना है कि बचपन, जरा और मृत्युका सम्बन्ध तो केवल हमारे इस नश्वर शरीरसे है, किन्तु मनुष्यकी आत्मा अमर है। फिर हमे मृत्युसे क्यो डरना चाहिए? और जहाँ मृत्युका भय नही वहाँ उससे दु:खी होनेकी भी कोई बात नही। इसलिए हमारे लिए यह उचित नही है कि हम लालाजीकी मृत्युपर आँसू बहाये, हमे चाहिए कि हम उनके गुणोको अपने जीवनमे उतारे और उनका अनुकरण करे। उनके चरित्रका केन्द्र-बिन्दु मातृभूमिकी सेवा करनेकी उनकी तीव्र आकाक्षा थी और जब वे नवयुवक ही थे, तभी उन्होने अपने जीवनका आरम्भ देशके

१. यह प्यारेलालके 'वर्धाकी चिट्ठी', शीर्षक लेखमें "लाला लाजपतराय दिवस" उप-शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। इसके पूर्व-प्रसंगपर प्रकाश डालते हुए वे कहते हैं: "२९ नवम्बर, अर्थात् लालाजीकी मृत्युपर राष्ट्रीय शोक दिवस, विधिवत् मनाया गया।...वर्धा आश्रमके निवासियोंने, यह राष्ट्रीय दिवस गरीबोंकी तरह शारीरिक श्रम करके, अपनी एक दिनकी मजदूरी चन्देमें देकर तथा सप्ताह-भरके लिए अपने आहारके एक मात्र स्वादिष्ट पदार्थ गुड़का त्याग करके मनाया।"

दलितोकी अर्थात् तथाकथित अस्पृश्योकी सेवासे किया था। उन्होने विधानसभामे जिस शानदार ढँगसे अपने कार्यका सम्पादन किया — वैसे यह उनके जीवनकी एक छोटी-सी ही घटना है — उसका अनुकरण करनेका अवसर भले ही हर किसीको नही मिले, लेकिन बलिदानकी उस भावनाका विकास तो अपने जीवनमे प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है जो उनके जीवनमे धागेके समान पिरोई हुई थी। और बलिदानका अर्थ है, आत्म-शुद्धि। इसलिए इस पवित्र अवसरपर मै आप सबसे अनुरोध करूँगा कि आप आत्मशुद्धिके लिए अधिकाधिक प्रयत्न करनेका सकल्प करे। इसके द्वारा आप अपनी, अपने देशकी और समस्त ससारकी सेवा करेगे।

[अग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १३-१२-१९२८

१५५. पत्र : शौकत अलीको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
३० नवम्बर, १९२८

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला। कानपुरमे दिया आपका भाषण मैने पढवा कर सुना। एसोसिएटेड प्रेसकी रिपोर्ट और आपकी भेजी इस रिपोर्टमे[1] मुझे कोई खास फर्क नही दिखाई देता। जो भयकर धमकियाँ और उनसे भी भयकर अतिरजनाएँ अग्रेजीकी रिपोर्टमे है, वे सबकी-सब उर्दू रिपोर्टमे भी है। हिन्दुओकी गुलामी, आँखे निकाल लेनेकी बात, चुनौती, हिन्दुओकी स्पष्ट निन्दा और भर्त्सना सब-कुछ अपनी समस्त नग्नताके साथ उसमे भी मौजूद है। अगर आप समय निकाल सके तो मै चाहूँगा कि मेरी भेजी कतरनको पढ जाइए, या अगर आपने उसे नष्ट कर दिया हो तो दूसरी प्रति मँगवाकर पढिए। आपने मुझे जो रिपोर्ट भेजी है उसमे आपको अग्रेजी रिपोर्टका लगभग एक-एक वाक्य देखनेको मिल जायेगा और तब बताइए कि क्या आप अब भी वक्ताको, जैसा कि अग्रेजी रिपोर्टमे कहा गया है, गँवार और असभ्य कहना चाहेगे और चाहेगे तो क्यो। साथ ही मुझे यह भी बताइए कि अग्रेजी रिपोर्ट और मेरे पास जो उर्दू रिपोर्ट है उसमे क्या फर्क है।

नही, कानपुरमे भाषण देनेवाला मौलाना वह मौलाना नही है जिसको मै इतने दिनोसे जानता आया हूँ और जिसके साथ मैने सगे भाई और अन्तरग मित्रकी तरह उतने सारे सुखद दिन बिताये। कानपुरके उस मचसे बोलनेवाला मौलाना मेरे लिए बिलकुल अजनबी है। जिस मौलानाको मै जानता हूँ, उसने तो यह शपथ ली थी कि हिन्दुओ द्वारा खिलाफत आन्दोलनमे दी गई मददने मुझे उसके साथ ऐसे अटूट

१. १८ नवम्बर, १९२८ के *खिलाफत* (मौलाना हसरत मोहानी द्वारा प्रकाशित पत्र) में प्रकाशित रिपोर्ट।

बन्धनमे बाँध दिया है कि यदि कोई हिन्दू मेरी बहनके साथ दुर्व्यवहार करे तो उसे भी मैं सह लूँगा और जहाँतक मेरा और जिन मुसलमानोपर मेरा प्रभाव है उनका सम्बन्ध है, हम सब हमारे साथ इतनी नेकी करनेवाले अपने हिन्दू भाइयो द्वारा दिये हुए कष्टको सहनेको तैयार है। मै यह तो नही चाहता कि वह उतना-कुछ सहे जितना सहनेका उसने वादा किया था, लेकिन मैं उसके कदमोमे गिर कर उससे विनती करता हूँ कि वह अपने कानपुरके भाषणपर फिरसे विचार करे, वह स्वीकार करे कि वह उस समय आपेमे नही था और कानपुरके भाषण द्वारा अपने हिन्दू भाइयोकी भावनाको ठेस पहुँचानेके लिए उनसे माफी माँगे। यदि हिन्दू लकीरका फकीर रहा है, पुरातनताका गुलाम रहा है तो खूनके रिश्तेके कारण, उसके साथ अविच्छेद्य साझेदारी स्वीकार करनेके कारण आप भी उस गुलामीके हिस्सेदार है। १९२० मे आपने हिन्दुओकी अच्छाई-बुराई, शक्ति और दुर्बलता सबका साझेदार बननेका निर्णय किया था।

हिन्दुओके अनेक कुकर्मोके लिए मै भी उन्हे उसी तरह दोषी माननेको तैयार हूँ जिस तरह आप मानते है। लेकिन मैं आपकी इस बातसे सहमत नही हो सकता कि हर मामलेमे हिन्दू ही हमला करते आए है, उन्होने अत्याचार किया है और उसके मुसलमान भाई सहते ही चले आये है, भोगते ही रहे है। आप जो-कुछ कह रहे है, यदि मुझे वैसा महसूस होता तो आप देखते कि मैं सबमे आगे बढ कर, सबसे ऊँची आवाजमे इस बातको स्वीकार कर रहा हूँ। लेकिन; मै आपके साथ कोई विवाद नही छेडना चाहता। मैं तो आपको सिर्फ यह बताना चाहता हूँ कि मेरे विचारसे आपकी यह सारी उत्तेजना गलत है, आपका निष्कर्ष एकागी है और मुसलमान यदि हिन्दूसे अधिक नही तो कमसे-कम उसके बराबर दोषी तो है ही। यह मानते हुए कि आप मुझे सदाशयताका श्रेय देगे और स्वीकार करेगे कि मैं जो-कुछ कहता हूँ, सच कहता हूँ, मै आपसे ऐसा मानकर चलनेका अनुरोध करूँगा कि आपका निष्कर्ष गलत भी हो सकता है। आप कानपुरके भाषणमे जरूरतसे ज्यादा कट्टर और दुराग्रही दिखाई दे रहे है। आपका यह मानना कि आपसे कोई गलती हो ही नही सकती, आपको शोभा नही देता। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप हमारी मैत्रीकी खातिर इस अहंकारको त्याग दीजिए।

एक व्यक्तिगत चीजके सम्बन्धमे आपकी भूल मुझे अवश्य सुधार देनी चाहिए। ठीक है कि खिलाफत कमेटीने एक समय मेरा खर्च उठाया था — लेकिन मेरे अनुरोध पर नही, बल्कि आपके कहनेपर। और यह तो निश्चित है कि उसने उस वजहसे मेरा खर्च नही उठाया जो वजह आपने बताई है। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि मैंने कभी भी — एक बार भी — कांग्रेसके खर्चपर यात्रा नही की — तब भी नही जब मुझे सिर्फ काग्रेसके ही कामसे यात्रा करनी पडी है। मेरी यात्राका खर्च बराबर मित्रोने उठाया है। और जब मैंने आपके अनुरोधपर खिलाफत कमेटीके पैसेसे यात्रा करना स्वीकार किया था, तब भी मेरे जिम्मे २५,००० रुपये थे। वह रकम एक मित्रने, जिन्हे आप भी जानते है, सुलभ कराई थी और सिर्फ मेरी

यात्राके ही खर्चके लिए, क्योकि वे चाहते थे कि मै इन वातोमे कभी कंजूसी न करूँ और न इनपर सार्वजनिक कोषका ही पैसा खर्च करूँ। मैंने यह वात आपको वता दी थी, लेकिन साथ ही आपके इस विचारसे सहमत हो गया कि अगर अपनी यात्राका खर्च मै आपको भरने दूँ तो वह ज्यादा शोभनीय होगा। लेकिन, अव आप इस वातको जिस तरहसे रख रहे है, उसे देखते हुए मेरा मन मुझपर खर्च हुई सारी रकम मय सूदके आपको वापस कर देनेको होता है, वशर्ते कि आप उसे स्वीकार करनेमे अपमानका अनुभव न करे और उसका वुरा न माने। मेरा खयाल है कि महादेवने उन खर्चोका हिसाव कही रख छोड़ा होगा।

एक और भी भारी भूल आपसे हुई है, जिसे मै सुधार देना चाहूँगा। तिलक स्वराज्य कोषका तो लेखा परीक्षक द्वारा जाँचा गया पूरा हिसाव-किताव मौजूद है। छपे हुए हिसावमे प्राप्त हुए एक-एक पैसेका व्योरा दर्ज है। यह सारा हिसाव वर्षोंसे जनताके सामने है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा और शायद दु:ख भी कि २० लाखकी वात तो जाने दीजिए, तिलक स्वराज्य कोषके लिए मुसलमानोसे दो लाख भी नही मिले थे। मै इसकी कोई शिकायत नही करता, लेकिन मै चाहता हूँ कि आप सत्यको एक पवित्र चीज मानकर चले। और अगर आप मुझसे खिलाफत कोषमे हिन्दुओ द्वारा दी गई मोटी-मोटी रकमोकी जानकारी लेना चाहे तो मै आपको वह जानकारी देनेके लिए तैयार हूँ और जो-कुछ वताऊँगा वह शायद आपके लिए दूसरा आश्चर्य होगा। याद कीजिए उन उत्साहपूर्ण दिनोकी जव हम दोनो साथ-साथ दुकान-दुकान जाकर चन्दे माँगा करते थे। क्या आपको याद है कि तव हिन्दू लोग तिलक स्वराज्य कोषकी ही तरह खिलाफत कोषके लिए भी चन्दा देनेके लिए एक-दूसरेसे किस तरह होड किया करते थे? क्या मै आपको नमूनेके तौरपर एक सूची भेजूँ? अगर मै गलती कर रहा हूँ तो आप उसे सुधार दे, लेकिन विरोधी दावा करके नही, वल्कि आँकडे देकर। लेकिन अगर आपके पास आँकड़े न हो तो मै चाहता हूँ कि आप जल्दवाजीमे यह खेदजनक भूल कर वैठनेके लिए क्षमा माँगिए — मुझसे नही, जनतासे नही, वल्कि ईश्वरसे।

कावसजी जहाँगीर हालकी सभाके वारेमे आपने जो-कुछ कहा, उसकी रिपोर्ट पढ़वाकर मैने सुनी। श्रोताओका व्यवहार इतना अभद्र था जिसका शब्दोमे वर्णन नही किया जा सकता। पश्चिमी दुनियाकी इस नकलको मैने सदा एक अधम और हमें अधम वनानेवाली चीज माना है। यह घिनौनी नकल अभी शायद हमारा वहुत कुछ अनिष्ट करनेवाली है। आपकी वात आदरपूर्वक सुनना श्रोताओका कर्त्तव्य था। विशेषकर शोकसभामे तो ऐसा आचरण करना अपराधपूर्ण काम था। जिस चीजको मै आपका कुछ समयके लिए गुमराह हो जाना मानता हूँ, उसके वावजूद सभाको मातृ-भूमिकी आपके द्वारा की गई अनेक शानदार सेवाओको याद करना चाहिए था। लेकिन, इस सवालपर हम दोनोमे जो मतैक्य है, वह यही समाप्त हो जाता है। आपने समस्त हिन्दू समाजको हर तरहसे निन्दनीय ठहरानेके लिए जो निष्कर्ष निकाला है, उससे मै सहमत नही हूँ। जिस श्रोता समुदायमे सिर्फ मुसलमान ही रहे हो, उस

श्रोता समुदाय द्वारा भी इतना ही अभद्र व्यवहार करनेके उदाहरण मिलते है। उस सभामे उपस्थित लोगोका आचरण हिन्दू मनोवृत्तिका नही, बल्कि आजके भारतके शहरी लोगोंकी मनोवृत्तिका द्योतक है। आपको और मुझे, मुसलमानो और हिन्दुओको एक-दूसरेपर कीचड उछालनेके बजाय इस बढती हुई बुराईको अपने बीचसे मिटा देनेके लिए मिल-जुलकर प्रयत्न करना चाहिए। जिस प्रकार आप सभामे अविचलित रहे, उसी प्रकार जब घर लौटकर आपने अपनेको मित्रोसे घिरा पाया तब भी आपको अविचलित रहना चाहिए था। ऐसे वाकयोको तो मैने आपको अक्सर बडी उदारतापूर्वक हँसकर उड़ा देते देखा है और मेरी इच्छाके विरुद्ध इन्हे उत्साही नौजवानोकी क्षम्य विचार-शून्यता कहकर उन्हे माफ कर देते पाया है। सो आपको इस वाकयेको भी हँस कर उडा देना चाहिए था। आप तो अक्सर कहते रहे है कि वे लोग जो कहते है, करने दीजिए, बेचारे बहुत दिनोतक गुलामीमे रहे है।

मुझे जो-कुछ कहना था, कह चुका। अगर आप अब भी वही है जो पहले थे तो मुझे व्यक्तिश. हमारे बीच हुए पत्र-व्यवहारको प्रकाशित देखनेकी[1] कोई उत्सुकता नही है। लेकिन अगर आप यह समझते हो कि आपके लिए तो अब घोर शत्रुता-के अलावा और कोई रास्ता ही नही रह गया है तो बखूबी इस पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करवा डालिए। लेकिन अगर आप आज भी वही नेक दिल भाई हो जिस भाईके रूपमे मैने आपको जाना है, तो इस पत्रको एक बार पढनेसे सन्तोष न होने पर इसे बार-बार पढ़िए। मुहम्मद अलीके साथ पढिए। मुझे कोई जल्दी नही है। और फिर अपने सारे काम छोडकर आप दोनो भाई वर्धा आ जाइए, आप अपने मनमे यह सकल्प लेकर कि मै तो गाधीको अपनी जेबमे रख ही लूँगा। हाँ, आप देखेंगे कि मुझे अपनी जेबमे रखकर ले जाना आपके लिए बडा आसान हो गया है, मेरा वजन कुछ इतनी ही तेजीसे घट रहा है। लेकिन, अगर काफी बुद्धि-पूर्वक सोच-विचार कर लेनेके बाद आप कोई ऐसा बहादुरी-भरा कदम न उठा सके तो इस पत्र-व्यवहारको प्रकाशित कर दे और मुझे जनताके सामने कोई वक्तव्य देने की जहमतसे छुटकारा दिला दे। और सच मानिए, आप अपनी जेबमे मेरी मौजूदगी महसूस करते हो या नही, लेकिन मै उसीमे हूँ। मेरा अटल धर्म अहिंसा और सारे ससारको अपना भाई मानना है। इसलिए जो बात मैने हजार-हजार मचोसे कही है, उसे एक बार फिर दोहराता हूँ — मेरी मित्रता इकतरफा है और इसलिए आपके साथ और दूसरे मुसलमानोके साथ मेरी दोस्ती की भावना कभी खण्डित नही हो सकती। वे मुझे लाख बार ठुकराये, मै उनका बना रहूँगा और ईश्वरसे यही प्रार्थना है कि जब कसौटीका समय आये तब वह मुझे उसपर खरा उतरनेकी शक्ति दे।

अखिल भारतीय चरखा संघके सम्बन्धमे मै आपके फैसलेकी कद्र करता हूँ। मै उसे गलत न समझूँगा। आपका फैसला सही है और आपका इस्तीफा मंजूर कर लिया जायेगा। लेकिन मै आपसे यह अपेक्षा रखूँगा कि जब भी आपको लगे कि

१. अपने २५ नवम्बरके पत्र (एस० एन० १३७३३) में शौकत अलीने गांधीजीसे पूछा था कि क्या मैं इस पत्र व्यवहारको या इसके एक अंशको प्रकाशित कर सकता हूँ।

एक राष्ट्रवादीके नाते ही नहीं, बल्कि मुसलमानके नाते भी चरखा चलाना आपका कर्त्तव्य है, जब भी आप यह महसूस करें कि केवल एक भारतीयके नाते ही नहीं, बल्कि एक मुसलमानके नाते भी — यदि मैंने इस्लामको ठीक समझा है तो — अपने करोड़ो देशभाइयोंके प्रति आपका यह कर्त्तव्य है, तब आप फिर चरखा संघमें शामिल हो जायेंगे।

हृदयसे आपका,

मौलाना शौकत अली
केन्द्रीय खिलाफत कमेटी
मुलतान मैन्शन्स, डोंगरी, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १३७४४) की फोटो-नकलसे।

१५६. पत्र : छगनलाल जोशीको

शुक्रवार [३० नवम्बर, १९२८][1]

भाईश्री छगनलाल,

आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला।

चलालाके बारेमे मैं विचार कर चुका हूँ। फिलहाल तो काम जयसुखलालके बजटके अनुसार चलने दो। मेरा मतलब यह है कि हमारे खादी विभागमें जो पैसा है उसीसे आवश्यक धन लेकर काम चलाया जाये। यह पैसा चलालाके खातेमे डाल दे या हमारे पास अमरेलीकी जो खादी पड़ी है उसमें से वसूल करे। यदि वह खादी तत्काल बिक जाये तो हमे पैसा नही देना पडेगा। इसलिए मुझे तो अभी इतना ही निर्णय करना है कि चलालाके काममे आगामी वर्षतक ८०० रुपयेकी हानि होती हो तो उसकी चिन्ता न करें। यह हानि अमरेलीकी खादीसे भरनी होगी। उसे चलालाकी खादीकी दरें बढ़ाकर पूरा नही करना है। इससे ज्यादा जिम्मेदारी लेनेकी बात सामने आये तो मुझसे पूछना।

यदि आश्रममे श्रीपत रावकी जरूरत हो तो उसे जरूर बुला लेगे।

यहाँ आश्रमवालोंने कल लालाजीके स्मारकके लिए मजदूरीकी और आजसे वे सात दिनके लिए गुड़ छोड़ेंगे। प्रात-काल प्रत्येक व्यक्तिको काँजीमें तीन तोले गुड़ दिया जाता है। अब गुड़के बदले नमक डाल रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० १४८२२) की माइक्रोफिल्मसे।

1. आश्रमवासियों द्वारा २९ नवम्बरको लाला लाजपतरायकी स्मृतिमें की गई मजदूरीके उल्लेखसे।

१५७. पत्र: महादेव देसाईको

३० नवम्बर, १९२८

चि० महादेव,

तुम्हारा पत्र बहुत दिनोके बाद मिला। तुम्हारा तो सब-कुछ माफ किया जा सकता है। बेशक न रोज कातो और न दैनन्दिनी लिखो। मै, हम दोनोमे दृष्टिकोण का जो भेद है सो देखता हूँ। किन्तु उससे क्या होता है? मेरी ही आँखोसे तुम्हे सब-कुछ देखना चाहिए या हम दोनोकी आँखे एक-सी होनी चाहिए, यह कहाँका न्याय है? मै चरखा नही छोड़ सकता क्योकि मैने उसे यज्ञरूप मान लिया है। दूसरे नित्यकर्म तो है ही और उनके परिणाम मै रोज देखता हूँ। उन्हे देखते हुए मुझे आनन्द होता है। चरखा रूपी यज्ञका परिणाम श्रद्धापर निर्भर है। इसलिए हमारे इस प्रकार कातनेसे दरिद्रनारायणका दारिद्र्य दूर होता है यह किसने देखा है। पर मेरी श्रद्धा मुझे कहती है कि वह दूर होता है इसलिए मै नित्य कातता हूँ। इस यज्ञके लिए जो अश मै देता हूँ, यदि वह न दूँ तो मुझे चोरी करनेका पाप लगेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

डायरी लिखनेपर दूसरी ही दलील लागू होती है। यह आश्रमका — मूलता हूँ — मन्दिरका[1] अनुशासन है; इसलिए मै ऐसा करता हूँ। मेरे लिए उसकी जरूरत चाहे न हो पर दूसरोके लिए वह आवश्यक है; इसीसे रोज डायरी न लिखकर मै बुद्धि-भेद पैदा नही करूँगा।

सन्तोक सम्बन्धी फैसला तुम्हारी समझमे न आये तो भी उसे इस समय सहन कर लो। इस मामलेने मुझे परेशान कर दिया है।

मुझे कोई कष्ट नही होता। मै जो-कुछ कर रहा हूँ उसके लिए यहाँका वातावरण बहुत अनुकूल है। स्वास्थ्य बिगाडकर कुछ नही करूँगा। उड़ती अफवाहो परसे कोई अनुमान मत लगा लेना। जब आशका हो, पूछ लेना। समय मिले तो मै स्वय ही तुम्हे सब-कुछ लिखूँ। हालके प्रयोगोके विषयमे मेरा कोई आग्रह नही है। मैने सिर्फ दूध ही फिरसे छोडा है — इतना ही परिवर्तन किया है। किन्तु छोडना और फिर शुरू करना यह तो ठीक ज्वारभाटेकी तरह चलता ही रहेगा, क्योकि जैसा तुम जानते ही हो मुझे दूध लेना पसन्द नही आता।

डायरीका नमूना नही मिला। घनश्यामदास अभी यही है। जगन्नाथजी भी यही है। और लोग तो बढते ही जा रहे है।

रामदाससे कभी-कभी पत्र लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ११४४२) की फोटो-नकलसे।

१. सत्याग्रहाश्रमका नाम बदलकर उद्योग मन्दिर रख दिया गया था।

१५८. पत्र : रमणीकलाल मोदीको

३० नवम्बर, १९२८

भाईश्री रमणीकलाल,

इस पत्रके साथ तुम्हे एक कतरन पढनेके लिए भेज रहा हूँ। इसमे व्यक्त किये गये विचारोको क्या सामान्य जैन समाज कबूल करेगा? 'जैन जगत' के सम्पादकको जानते हो? उसने मुझे एक मधुर पत्र भी लिखा है।

तुम दोनोका स्वास्थ्य कैसा है, सो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४१४३) की फोटो-नकलसे।

१५९. पत्र : नारणदास गांधीको

३० नवम्बर, १९२८

चि० नारणदास,

मेरा कलका पत्र मिल गया होगा।[1] क्या पूनावाली उन स्त्रियोको जो महीन सूत चाहती है हम दससे बीस सेरतक सूत प्रति मास नही भेज सकते? न भेज सकते हो तो यह हमारे लिए शर्मकी बात होनी चाहिए। यदि ऐसा महीन सूत और कही नही मिलता तो हम क्यो न आश्रममे ही कात कर तैयार करे। क्या सब रोज एक तोला सूत नही कातते? सभी महीन सूत काते और फिर उसे बेच दिया जाये। सभीको रुई देना जरूरी हो तो हम उसका प्रबन्ध भी करे।

मै आजकल जैसा कातता हूँ उसमे ३० नम्बरका सूत तो आसानीसे निकल आता है। एक तोला ३० नम्बरका सूत कातनेके लिए ३८० तार चाहिए। इसलिए देखता हूँ कि लोग औसतन शायद इतना न कात पाये; पर आधा तोला तो काता ही जा सकता है। मै तो अमेरिकाके बीजसे यही आसपास पैदा की गई रुई कात रहा हूँ। उसके बारेमे और पूछताछ कर रहा हूँ।

इसके साथ मीराबहनका पत्र तुम्हारी जानकारीके लिए भेज रहा हूँ। उसके क्रोधकी हम चिन्ता न करे किन्तु उसकी शुद्ध आलोचनाको ठीकसे समझ ले। उसकी सरलताका पार नही है। वह आज यहाँ आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७७२३) से।
सौजन्य : राधाबहन चौधरी

१. देखिए "पत्र : नारणदास गाधीको", २९-११-१९२८।

१६०. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

३० नवम्बर, १९२८

चि० गंगाबहन [बड़ी],

प्रभावतीने मुझे अपने पत्रमे लिखा है कि इन दिनो तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नही चल रहा है। अगर यह सच है तो इसका कारण मानसिक तनाव और तुमपर जो भारी वोझ है, वही होगा। अपने भारको हल्का करो। शारीरिक श्रमको तो हर हालतमें कम करो। यदि तुम बीमार पड गई तो इसके लिए मै तुम्हीको दोष दूंगा। तुम्हे जिस मार्गका अनुसरण करना है, वह स्पष्ट है और तुम्हें उससे विचलित नही होना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८७१०) से।
सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

१६१. पत्र : छगनलाल जोशीको

[३० नवम्बर, १९२८के पश्चात्][1]

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। शारदाबहनवाले पत्रमे हस्ताक्षर करके भेज रहा हूँ। शारदाबहनके सम्बन्धमे अभी विचार तो करना ही है। पत्र आज नही भेज सकूँगा। सारी डाक नही पढ़ पाया हूँ।

चलालाके बारेमें नारणदासकी रायकी जरूरत है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

१. चलालाके मामलेके उल्लेख और ३०-११-१९२८ को छगनलाल जोशीको लिखे पत्रके आधारपर।

१६२, एक बढ़िया शुरुआत

[१-१२-१९२८][1]

लालाजी स्मारकके लिए चन्दा जमा करनेके कामकी शुरुआत बढिया ढगसे हुई है। श्रीयुत घनश्यामदास बिडलाका नाम वर्षाकी सूचीमे सबसे ऊपर है। उन्होने १५,००० रुपये दिये है। पजाबमे एक प्रभावशाली प्रान्तीय समितिका बनना और यह लेख लिखनेके समय (पहली तारीख) तक २५,००० रुपयेके चन्दोकी सूची बन जाना भी बतलाता है कि इसका भविष्य उज्ज्वल है। मेरी यही कामना है कि सभी प्रान्त इसका अनुकरण करेगे और चन्देकी अपनी न्यूनतम सीमा निर्धारित करके उसे जमा करनेपर जुट जायेगे। मैने भी एक तरीका सुझाया था कि जनसख्याके आधारपर अपना-अपना अश निर्धारित कर लिया जाये, लेकिन इस तरीकेको स्पष्ट ही उन प्रान्तो, जिलो या नगरोपर लागू नही किया जाना चाहिए जो कही अधिक अशदान कर सकते है। उदाहरणके तौरपर, यदि बम्बई अपनी जनसख्याके आधारपर अपना निश्चित अश कोषाध्यक्षको सौपकर छुट्टी कर ले, तो वह हास्यास्पद ही लगेगा। उसका हिस्सा तो बम्बईकी विश्वव्यापी ख्यातिके अनुरूप ही निर्धारित किया जाना चाहिए। दुर्भाग्यकी बात यह है कि हमारे देशमे भारी असमानताएँ मौजूद है — कोई क्षेत्र अत्यधिक समृद्ध है तो कोई अत्यधिक निर्धन। देशकी जनसख्याका दसवाँ नही बल्कि पाँचवाँ भाग ऐसा है जो भुखमरीकी हालतमे रहता है और इसलिए वह बिलकुल भी चन्दा नही दे सकता। उनका भार नगरो और अन्य समृद्ध क्षेत्रोको ही वहन करना पडेगा।

हम अब पजाब केसरीकी दहाड नही सुन पायेगे। लेकिन इस स्मारकके कोषमे लोग जितनी तेजीसे चन्दा जमा करेगे, उसीसे पता चलेगा कि जनताको पजाब केसरी की स्मृतिको स्थायी बनाये रखनेके कामपर कितनी निष्ठा है। पर इतना याद रखिए कि प्रतिष्ठित हस्ताक्षरकर्त्ताओने जितनी राशिके लिए अपील की है उसकी दोगुनी राशिसे भी हमारी आजकी आवश्यकताओकी पूर्ति नही हो पायेगी। दिन-दिन इस बातका अधिकाधिक प्रमाण मिलता जा रहा है कि लालाजीपर क्रूरतापूर्ण आक्रमण करके जिस राष्ट्रीय प्रतिष्ठाकी पीठमे छुरा भौका गया था उसे फिर बहाल करनेके लिए हमे स्वराज्यका दिन निकट लानेका कोई उपाय खोजना पडेगा। ऐसा एक उपाय — और सबसे नरम उपाय — यही है कि लालाजी द्वारा शुरू किये गये कामको पूरा किया जाये। उन्होने नेहरू-प्रतिवेदनके प्रचारका काम शुरू किया था। इस दिशामे प्रयत्न करना निश्चय ही वाछनीय है और बिलकुल व्यावहारिक भी है। प्रतिवेदनके लिए जनताका सर्व-सम्मत अनुमोदन प्राप्त करना राष्ट्रकी प्रगतिमे योग देना ही होगा। अपने आपमे तो उससे 'डोमीनियन स्टेटस' औपनिवेशिक स्वराज्य भी हमे नही मिल

१. गांधीजीने स्वयं ही इसके १-१२-१९२८ को लिखे जानेका उल्लेख किया है।

जायेगा। अपनी किसी भी माँगको मनवानेके लिए कोई भी सम्मिलित कार्रवाई करनेसे पहले जरूरी है कि हम अपनी माँगोके पीछे सर्वसम्मत लोकमत पैदा कर ले।

मेरा विनम्र मत यह है कि अभी इस समय हमे औपनिवेशिक स्वराज्य और विशुद्ध स्वतन्त्रताके तुलनात्मक गुण-दोषोके विवेचनसे कुछ लेना-देना नही। लगता है कि हर आदमी इस वातपर सहमत है कि यदि हमे औपनिवेशिक स्वराज्य मिल जाता है तो वह हमारे अपने गन्तव्यकी ओर एक बड़ा कदम होगा। लेकिन स्वतन्त्रता की पैरवी करनेवाले शायद कुछ इस तरहकी दलील देते है कि औपनिवेशिक स्वराज्य तो हमे कभी मिलनेवाला है नही, और चूंकि औपनिवेशिक स्वराज्य हमारा अन्तिम ध्येय है भी नही, इसलिए व्यर्थकी भाग-दौड़मे राष्ट्रकी शक्तिका अपव्यय क्यो किया जाये, फिर हम सीधे-सीधे शुद्ध स्वतन्त्रताके लिए ही प्रयत्न क्यो न करे? इस दलीलमे काफी वजन होता अगर यह सिद्ध हो जाता कि औपनिवेशिक स्वराज्यकी प्राप्ति असम्भव है और स्वतन्त्रताके प्रश्नपर सर्वसम्मत लोकमत तैयार किया जा सकता है। लेकिन स्थिति जैसी है उसमे यदि हम स्वतन्त्रताके लिए प्रयास कर सकते है और उसके फलीभूत होनेकी थोड़ी आशा भी हो, तो फिर यदि हम उतना ही प्रयास औपनिवेशिक स्वराज्यके लिए करें और जब नेहरू प्रतिवेदनने इसके पक्षमे सर्वसम्मत लोकमत तैयार करना सम्भव भी बना दिया है, तो स्वतन्त्रताकी अपेक्षा औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करनेमे हमारी सफलता कही अधिक सुनिश्चित हो जायेगी। इसलिए मेरा यही कहना है कि स्वतन्त्रताके सूत्रको लेकर जो लोग मन्त्र-मुग्धसे हो गये है, उनको स्वतन्त्रताके पक्षमें अपना प्रचार बन्द करनेकी तो जरूरत नही, वे करते रहे, पर साथ ही वे अपने लक्ष्यकी एक बीचकी मंजिलके रूपमे ही औपनिवेशिक स्वराज्य को स्वीकार कर ले और उसका पूरे हृदयसे समर्थन करे। मेरा दावा है कि इन दोनोमे परस्पर कोई विरोध नही है, इस शर्तपर कि भारतको मिलनेवाला औपनिवेशिक स्वराज्य दक्षिण आफ्रिका या कनाडाके औपनिवेशिक स्वराज्यसे किसी भी अर्थमे भिन्न न हो। इसलिए लालाजीकी स्मृति और विवेक दोनोका यही तकाजा है कि नेहरू प्रतिवेदनके समर्थनमे लोकमतको सुदृढ बनाया जाये और यह काम इसी समय किया जाये। इसलिए कि हमे याद रखना चाहिए कि यह कोई स्थायी या अन्तिम दस्तावेज नही है। यह तो एक बीचका, मध्यम मार्ग है, अधिकाश विभिन्न दलोके प्रतिनिधि जिसपर सहमत हो पाये है वह अधिकसे-अधिक यही है। अब यदि लोकमत इसीपर केन्द्रित न किया जा सका तो इसपर अबतक जितना भी परिश्रम किया गया है सब व्यर्थ चला जायेगा और यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अनुपयुक्त और असामयिक हो जायेगा। इसका सारा महत्त्व केवल इसी वातपर निर्भर है कि सभी बड़े-बड़े राष्ट्रीय संगठन इसे तत्काल स्वीकार कर ले।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ६-१२-१९२८

१६३. पत्र : कुसुम देसाईको

१ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तुम मूर्ख हो यह कह सकता हूँ न? तुमसे एक बात पूछी, इसलिए तुम्हे दु.ख क्यो हुआ? इस तरह दु ख मानकर बैठ जाओगी तो मै कुछ किस तरह पूछ पाऊँगा?

मैंने तुम्हारे बारेमे जैसी कल्पना की है, मै तुमको वैसा ही देखना चाहता हूँ। और अधिक लिखनेका आज समय नही है। मनुकी तुम ठीक-ठीक देखभाल करती हो इसके विषयमे मेरे मनमे कोई शका ही नही।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६१) की फोटो-नकलसे।

१६४. तार : शंकरलाल बैंकरको[2]

[१ दिसम्बर, १९२८को या उसके पश्चात्][3]

शकरलाल बैंकर

कोई अधिकृत सूचना नही मिली। अन्य आपत्तिजनक बाते बरकरार है। जो भी हो, बढिया प्रदर्शनीके आयोजनका समय नही रहा।

गांधी

अग्रेजी (एस० एन० १३३०६) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र : कुसुम देसाईको", २७-११-१९२८।

२. १ दिसम्बर, १९२८को वर्धामें मिले उनके इस तारके उत्तरमें कि : "कलकत्ता स्वागत-समितिके प्रस्तावके सदर्भमें प्रदर्शनीमे मिलके बने वस्त्रको स्थान नही दिया जायेगा। बिहारने पूछा है क्या उनको शामिल होनेकी अनुमति है। अन्तिम निर्णय कृपया तार द्वारा सूचित कीजिए।" (एस० एन० १३३०६)।

३. उपर्युक्त तारकी तिथिसे।

१६५. तार: सन्तानमको

[१ दिसम्बर, १९२८ को या उसके पश्चात्][1]

आशा है जहाँ भी हो सके आप चन्दे जमा करनेकी कोशिश करेंगे।

गाधी

अग्रेजी (एस० एन० १३३०६) की फोटो-नकलसे।

१६६. 'एक युवक हृदय'

'एक युवक हृदय'के उपनामसे किसी सज्जनने मुझे एक पत्र लिखा है। ऐसे पत्रमे भी यह 'युवक' अपना नाम देनेमे डरता है अथवा सकोच करता है, इसका कारण मेरी समझमे नही आता। हम लोगोमे इस तरहकी भीरुता अथवा सकोच एक सामान्य बात हो गई है। यह स्थिति स्वतन्त्रताकी इच्छा करनेवाली जनताके लिए शोभनीय नही है। अखबारोका नियम गुमनाम पत्रोको न पढने और फेक देनेका है। यदि मै इस नियमका पालन करता होता तो 'एक युवक हृदय'का भ्रान्तिपूर्ण होकर भी ठीक तर्कयुक्त विनय पत्र मै पढ ही नही पाता। इसलिए ऐसे युवको और दूसरोको मेरी सलाह है कि उन्हे अपना हृदय-दौर्बल्य छोडना चाहिए और जो कहना हो, विनयपूर्वक कहना चाहिए। विनय-अविनयका विवेक न आये तो भी जो भाषा कलम या जीभपर आये उसीमे अपनी बात प्रस्तुत करनेसे चूकना नही चाहिए, और डरके मारे तो प्रस्तुत-अप्रस्तुत कुछ भी कहनेसे कदापि हिचकना नही चाहिए। जो बोलेगा ही नही, वह न तो विनय सीखेगा और न यही जानने पायेगा कि प्रस्तुत है क्या।

बछड़ेके बारेमें

अब 'एक युवक हृदय' के विषयपर आना चाहिए। एक विषय अभीतक असमाप्त बछडा-प्रकरण है। यह कहनेके बाद कि बछडेका प्राणहरण करके मैंने बडा पाप किया है, युवक लेखक तर्क पेश करता है। तर्कोका जवाब तो इस पत्रमे दे दिया गया है इसलिए उन्हे यहाँ उद्धृत नही कर रहा हूँ। उसने विषयका उपसहार करते हुए लिखा है:

> विशेष रूपसे कहना यह चाहता हूँ कि अगर वह बछड़ा मूक प्राणी न होता तो जरूर ही आपको उक्त पिचकारी देनेसे मना करता और समय आ जाने पर कुदरती मौतसे मरनेकी इच्छा करता। आपने सचमुच ही दया-भावनाकी

१. साधन-सूत्रमें यह तार उसी पृष्ठपर पिछले शीर्षकके ठीक बाद दिया गया है।

अतिशयतासे इस कार्यमें गम्भीर भूल की है और अपने पवित्र हाथको अपवित्र किया है। मुझे विश्वास है कि अगर आप फिरसे विचार करेंगे तो इस बातकी सच्चाई आपके ध्यानमें आ जायेगी और वह भूल दीपकके समान स्पष्ट दिखलाई पड़ेगी। निस्सन्देह आपके समान सत्यका साक्षात् अनुभव करनेवाले महात्माको विशेष लिखना अनुचित है। मगर तो भी एक विनती करनेकी इच्छा होती है। अगर ऊपर लिखा हुआ काम आपको अपनी भूल जान पड़े और आप उसे अपने स्वभावके अनुसार प्रदर्शित करे तो संसार जरूर आपका आभारी होगा, और विशेष अनर्थ होनेसे रुकेगा। निःसंशय आपके कृत्यसे अनर्थ होनेका भय और उसका पाप आपके सिर रहेगा। इसलिए आप जितनी जल्दी भूल कबूल करेंगे, उसमें आपका और जगतका लाभ है, कल्याण है। अस्तु, प्रभु सबको सन्मति दे।

इस लेखक और ऐसे ही दूसरोसे मै केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मेरी स्थिति ऐसी नही है कि मैं उनके कहनेसे भूल मान लूं। मै इतनी प्रतिज्ञा अवश्य कर सकता हूँ कि इस विषयमे मुझे अपनी भूल जिस क्षण मालूम होगी, उसी क्षण मै उसे नम्रतापूर्वक कबूल कर लूँगा और की हुई भूलका प्रायश्चित्त भी करूँगा। मै यह भी कबूल करता हूँ कि मैंने जो किया है वह अगर भूल ही है तो वह छोटी नही गिनी जायेगी क्योंकि वह धर्मके नामपर, भले ही अज्ञानमे, अधर्मका आचरण करना सिद्ध होगा। ऐसा करना किसीके लिए शोभनीय नही हो सकता। मेरे आचरण का अनुकरण बहुत लोग करते है, इसलिए मेरे लिए तो वह कभी शोभनीय हो ही नही सकता। मुझे अपनी इस जिम्मेदारीका पूरा भान है।

साथ ही मेरा यह भी विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति निर्दोष बुद्धिसे भूल कर बैठे तो उसके लिए दूसरेको या ससारको कष्ट नही भोगना पडता। निर्दोष व्यक्तियोकी भूलके दुष्परिणामोसे ईश्वर जगत्को बचा लेता है। जिन्हे मेरे भूलभरे आचरण जैसा आचरण करना होगा वे तो मेरे वैसा किये बिना भी यही करते। आखिर तो मनुष्य अपने मनके अनुसार ही चलता है। दूसरेका आचरण तो निमित्तमात्र होता है। बात ऐसी हो या न हो, मगर इतना मै जानता हूँ कि मेरी भूलोके कारण आजतक ससारको पश्चात्ताप नही करना पडा है। क्योंकि मेरी भूलोके मूलमे केवल मेरा अज्ञान ही था। मुझे ऐसा दृढ विश्वास है कि मै जानबूझकर भूले नही करता और इसलिए मुझे उनसे अनिष्ट होनेकी आशका नही है। अगर यह मेरी भूल ही रही हो, तो दैव ही जाने मै उसे कब देख सकूँगा। तुलसीदासने गाया है:

रजत सीप महँ भास जिमि, यथा भानुकर बारि।
जदपि असत तिहुं काल सोइ, भ्रम न सके कोउ टारि।।

मेरी ऐसी दशा है और ऐसी दशा सभी सत्य-शोधकोकी नित्य रहती है, और रहनी चाहिए।

बन्दरोंके बारेमें

इनका दूसरा प्रश्न बन्दरोके सम्बन्धमे है। वे लिखते है:

बन्दरोंके बारेमें इतना ही लिखना चाहता हूँ कि स्वप्नमें भी उन्हें मरवा डालनेके विचारको स्थान न दीजियेगा। जैसे कि दूसरे किसान बन्दरको डरानेके उपाय करते हैं वैसे पत्थर फेंकना, शोर मचाना आदि उपाय करें। फसलका नुकसान रुकवाइएगा; मगर कृपया थोड़ी-सी निर्जीव फसलके लिए उनका प्राण-हरण न कभी करें, न करवायें। यह तो 'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्' के समान जान पड़ता है। इसमें दो मत हो ही नहीं सकते कि यह हिंसा ही गिनी जायेगी। हिन्दू हृदय कल्पान्तमें भी उसे दूसरा नाम नही दे सकता। ऐसे ही प्रसंगोंमें अहिंसाकी कसौटी होती है। थोड़ीसी फसलके लिए प्राण ले लेना भला कहाँका न्याय है? कैसी अहिंसा है? आप जैसे पुरुषोंके मुँहमें से तो ऐसे वचन भी नहीं निकलने चाहिए। मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप अपने पशुबलके द्वारा उन्हे मरवा डालेंगे तो वे मरेंगे तो जरूर, मगर साथ ही उसका फल आपको भी भोगना पड़ेगा। उस महान् न्यायाध्यक्षके समक्ष आपकी दलीलें काम नही आयेंगी। इसलिए दयाकी खातिर आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप ऐसे कार्योंसे अपना हाथ और अधिक न रंगें और हिंसाको हिंसा ही मानें। आपके समान सत्यनिष्ठ व्यक्तिको विशेष क्या लिखूँ?

यह आश्चर्य है कि यह प्रश्न अब इस रूपमे उठता है। मैं कबूल कर चुका हूँ कि बन्दरोकी जान लेनेमे हिंसा तो है ही; बल्कि उनपर पत्थर फेकनेमें, उन्हे कष्ट पहुँचानेमे भी हिसा है। केवल प्राणहरणमे हिंसा शब्दका अर्थ समाप्त कर देनेके कारण इस देशमे हम लोग क्रूरतापूर्ण हिंसा करते रहते है, और अगर हमारी यह करुणाजनक स्थिति बनी ही रही तो अहिसा-प्रधान देशके निवासी होनेका हमे जो अभिमान है, उस स्थानसे हम च्युत हो जायेंगे। मुझे बन्दरोको मारने, और उनपर पत्थर फेकने, दोनो ही से बचना है। उसमे मैंने अहिंसक पाठकोकी मदद माँगी है। बहुतसे तो मेरे लेखोको पढनेका कष्ट उठाये बिना मदद देनेके बदले, केवल टीकाकी वर्षा कर रहे है। 'एक युवक हृदय' भी इस दोषसे मुक्त नही है। मै यह समझ सकता हूँ कि मेरे साथ किसीका मतभेद हो, मगर जो कुछ मैंने लिखा ही नही है, उसे भी लिखा हुआ मानकर मुझे जो शिक्षा दी जायेगी, भला उसे मैं कैसे ग्रहण कर सकता हूँ?

हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न

इसके अलावा हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पर 'एक युवक हृदय' ने जो लिखा है, उसमे से नीचेके वाक्य उद्धृत कर रहा हूँ:

यह समझकर कि हिन्दू-मुसलमानोंके बीच एकता करानेके आपके प्रयत्न निष्फल जाते है, आपका उस सम्बन्धमें लगभग मौन धारण कर बैठना मुझे

ठीक नहीं लगता। साधारणतया इस सम्बन्धमें आप मौन रहना चाहे तो रहे; किन्तु क्या आपका यह फर्ज नहीं कि जहाँ-कही दंगे हो जायें वहाँकी पूरी हकीकत मँगाकर, विचार करके दोषीको दोषी कहें। आप कोई सक्रिय भाग भले ही न ले, मगर दोनो पक्षोकी बातें निष्पक्ष भावसे सुननेके बाद, आपकी निगाहमें जो कुसूरवार ठहरे, उसे स्पष्ट शब्दोमें कुसूरवार कहना क्या देशके हितकी हानि करनेवाला है? गोधरा तथा सूरतमें जो झगड़े हुए हैं, उनके बारेमें आपने जो ढंग अख्तियार किया वह सचमुच ही योग्य नहीं है। कानेको काना कहनेकी जो शूरवीरता आप अन्यथा दिखलाते हैं, वह इस प्रसंग पर कहाँ चली जाती है? हरि! हरि! मुझे सचमुच ही आपके इस ढंगपर आश्चर्य होता है। अन्तमें इस सम्बन्धमें आपसे मेरी यह नम्र प्रार्थना है कि आप अपनी व्याख्यावाली अहिंसाका पालन न कर सकने और निष्कारण हैरान किये जानेपर हिन्दुओंको इस प्रकार हैरान करनेवालोका विरोध करनेकी सलाह दें और जो मुसलमान भाई हिन्दुओंको दुश्मनके रूपमें देखते हो उनके प्रति तिरस्कारकी भावना सख्त और स्पष्ट शब्दोमें प्रकट करे।

इस विषयपर भी मै अपनी स्थिति बतला चुका हूँ। मेरी समझमे मै किसीके डरसे अपनी राय प्रकट न करता होऊँ, ऐसी कोई बात नही है। जहाँ मेरा लिखना प्रस्तुत न हो, या राय कायम करने लायक काफी मसाला मेरे पास न हो अथवा जो मेरा क्षेत्र न हो वहाँ मै मौनको ही अपना धर्म मानता हूँ। हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नके बारेमे मेरी दवा अभी दोमे से एक पक्ष भी कबूल करनेको तैयार नही है। इसलिए मेरा कहना अप्रस्तुत हो जाता है और फिलहाल तो यही गिना जायेगा कि यह प्रश्न हालमे तो मेरे क्षेत्रके बाहर चला गया है।

अब बात रही, हुए और होनेवाले दगोके बारेमे सम्मति दर्शानेकी। जब मैंने इस प्रश्नको अपने क्षेत्रके बाहर गिन लिया, तब मुझे उसके बारेमे सम्मति देनेकी जरूरत भी नही रह जाती है और जबतक मै दोनो पक्षोका जो कुछ कहना हो, उसकी जाँच न कर लूँ, तबतक मेरा राय देने बैठना अयोग्य और अविनयपूर्ण गिना जायेगा। इसमे अन्याय भी हो जा सकता है। जिस प्रश्नको मैं सुलझा न सकूँ, उसके बारेमे अपने आप ही पूछताछ करने भी क्यो जाऊँ?

किन्तु इसपरसे कोई यह न माने कि मैंने इस प्रश्नके सम्बन्धमे हमेशाके लिए अपने हाथ धो लिये है। मै तो एक कुशल वैद्यके समान, जिसे अपनी दवापर श्रद्धा है, उचित समयकी राह देख रहा हूँ। मेरा दृढ विश्वास है कि इस असाध्य जान पडनेवाले रोगके लिए मेरी ही दवा रामबाण है और उसका प्रयोग एक या दोनो पक्षोको करना ही पडेगा।

इस बीच जिन्हे लडना होगा, वे मेरे बिना कहे भी लड बैठेंगे। उसमे किसीके प्रोत्साहनकी आवश्यकता नही रहती है। मैं यह तो चाहता ही नही कि कोई अपनी निर्बलताके कारण न लडे और नामर्दी दिखलाये। अहिंसासे सम्बन्वित वीरता नामर्दी

मे से पैदा नही हो सकती। हिंसा और अहिंसा दोनोमे बहादुरीकी आवश्यकता तो है ही। अहिसा वीरताकी पराकाष्ठा है।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, २-१२-१९२८

१६७. विरोधको कैसे जीते?

कोई व्यक्ति यदि सार्वजनिक कामोंमें जिम्मेवारीके पदपर हो और उसकी द्वेष-भावसे अथवा किसी दूसरे कारणसे झूठी टीका होती हो, यह कहा जाता हो कि वह सार्वजनिक धनको हड़प जाता है, तो उसे क्या करना चाहिए। क्या वह झूठे इलजाम लगानेवालोंपर अदालतमें दावा करे? अपनी सार्वजनिक जिम्मेदारियोंका खयाल करके दावा करना क्या उसका धर्म नहीं है? यदि वह नालिश न करे तो क्या कुछ लोग ऐसे झूठे इलजामोंको सच नहीं समझ बैठेंगे? और यदि यह कहें कि नालिश किसी हालतमें नही की जानी चाहिए तो क्या यह भय नहीं है कि लोग इससे नाजायज फायदा उठायेंगे; ऐसे शख्स दरअसल आपकी सलाहका दुरुपयोग करके जबरदस्त बनकर बेफिक्रीसे मौज उड़ायेंगे और रुपया हड़प करते चले जायेंगे? और यदि यही तय किया जाये कि अदालतमें कदापि नही जाना चाहिए तो फिर ऐसे आरोपोके विरोधका कुछ-न-कुछ इलाज तो होना ही चाहिए।

इसका साधारण उत्तर तो सरल है। महान पुरुपोकी निन्दा करनेवाले हमेशा ही पाये जाते है और विरोधका जवाब अविरोध है, यह न्याय यहाँ लागू होता है। अदालतमे नालिश करनेसे, और उसमे सफल हो जानेसे, सच पूछिए तो निर्दोषता सिद्ध नही होती। ऐसे चालाक और बदमाश लोग भी दुनियामे मौजूद है जो अदालतोसे भी प्रमाणपत्र प्राप्त करके अपनी बुराईको पालते-पोसते और आगे पनपाते चले जाते है। फिर पापीका मुँह सजा पा जानेसे बन्द नही हो जाता। जो बात पहले वह खुले आम कहता था, अदालतसे सजा होनेके बाद वही बात चुपके-चुपके कह सकता है। इसलिए साधारण तौर पर तो मेरी सलाह यह है कि झूठे इलजामो की बिल्कुल चिन्ता नही करनी चाहिए। जो लोग ऐसे आरोप लगाते है उनपर दया दिखानी चाहिये और ईश्वरसे ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि कभी न कभी वे अपनी भूल समझे। फिर भी राष्ट्रके पास झूठे सेवकोसे बचनेके बहुत-से साधन है, सेवकोपर जो आरोप किये जाते है, जनतातक वे पहुँच तो जाते ही है। जनताको हिसाब-किताब देखनेका पूरा अधिकार है, इसलिए उसका धर्म है कि वह सेवकका हिसाब-किताब देखे-जाँचे। यदि जाँच करनेपर सन्देह हो तो सेवकको अलग किया जा सकता है। उसपर अदालतमे मामला भी चलाया जा सकता है। पचके द्वारा जाँच कराई जा सकती है। साराश यह कि निन्दकपर दावा करनेकी

अपेक्षा उत्तम मार्ग तो यह है कि सेवकको चाहिए कि वह अपने समाज या राष्ट्रको जाग्रत रखे और समाजको चाहिए कि वह जाग्रत रहे। और यही सच्चा मार्ग भी है।

यदि इतनेसे भी काम न चले और अदालतमे जानेका ही मौका दिखाई दे तो उसके बजाय निन्दकको पचके इजलासमे पेश होनेके लिए कहा जा सकता है और सेवकको खुद भी पचके सामने जानेके लिए तैयार रहना चाहिए। पक्के बदमाश और गुण्डे आदमीके लिए यह उपाय बेकार है; क्योकि वह पचके सामने जायेगा ही नही। हाँ, जिसके आरोपमे कुछ जिम्मेदारीका भाव है, या जिसे सचमुच सन्देह हुआ हो, उन्हे अवश्य पचके मारफत अपनी आशका दूर कर लेनेके लिए कहा जा सकता है।

अब प्रश्न रह जाता है उन लोगोका, जो सचमुच चोर है। इस सलाहको अपनी ढाल बनाकर यदि वे अपने पापोको पुष्ट करते रहे तो इसका क्या उपाय है। उत्तर यह है कि यदि समाज जाग्रत हो तो पापी अपने पापको पुष्ट नही कर सकता। यदि समाज सोया हुआ और गाफिल हो तो अदालतमे घसीटा जानेपर भी पापी अपने पापोको छिपा सकता है। क्या हम ऐसी घटनाएँ अपनी आँखोके सामने नही देखते? कितने ही सफेदपोश ठग तो मोटरोमे हवा खाते है और महलोमे विराजते है, उन्हे कौन छू सकता है? कार्लाइल जैसे समझदार आदमी कह गये है कि जहाँ भोले लोग रहते है वही ठगोका निवास होता है। इसलिए जिनका दिल साफ है उनका काम स्वच्छ है। उनके लिए नीचे लिखा भजन शान्तिदायक और मार्गदर्शक है

> निन्दक बाबा बीर हमारा।
> बिन ही कौड़ी बहे विचारा।।
> कोटि कर्म के कल्मष काटे।
> काज संवारे बिन ही साटे।।
> आपन डूबै और को तारे।
> ऐसा प्रीतम पार उतारे।।
> जुग जुग जीवो निन्दक मोरा।
> रामदेव! तुम करो निहोरा।।
> निन्दक मेरा पर उपकारी।
> दादू निन्दा करे हमारी।।

हम निन्दा-पात्र न बने, यह हमारे लिए सुवर्ण-मार्ग है। फिर भले ही सारा ससार हमारी निन्दा क्यो न करे।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २-१२-१९२८

१६८. पत्र : छगनलाल जोशीको

आश्रम, वर्धा
२ दिसम्बर, १९२८

भाई छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

मजदूरोके बारेमे तुमने जो लिखा है वह सही है। और जो हिसाब किया है वह ठीक है। जो अपना यज्ञ-कार्य करनेके बाद दूसरे काम मुल्तवी कर सके, वही मजदूरी करे। वे उस दिन अध्ययन न करे और उतना समय मजदूरीमे लगाये। पर उन्हे जो काम दिया जाये, उसकी सचमुच आवश्यकता होनी चाहिए, नही तो ऐसा माना जायेगा कि आश्रमके पैसेमे से दान किया गया।

बरसात तो यहाँ भी हो गई है। कहते है कि यहाँ ऐसा ही होता है। डाक चली गई, पर तार न भेजकर बारह आने बचा लिये सो ठीक ही किया।

मेरे पत्रके दो पृष्ठ मिले, सो ठीक ही था। उनमे कही सम्बन्ध छूटा हुआ तो नही लगा होगा। मैंने तीनका अक तीसरे पृष्ठके लिए दिया था। पीछेके पृष्ठ पर मै अक लिखता नही हूँ किन्तु उसे गिनता जरूर हूँ।

मैं जानता हूँ कि मुझे कपडेवाले लिफाफेकी कीमत देनी पडती है। मै सुब्बैया, प्यारेलाल या महादेवसे ऐसा नही करा सका तो भी इस लिफाफेका उपयोग इस प्रकार है: उसे चाकूसे खोलना चाहिए और बद करनेके समय हर बार नया मोटा कागज लेकर बद करना चाहिए। जिधर पता लिखा जाता है वहाँ हर बार नया कागज चिपका दे। ऐसा करने पर कपडेके एक ही लिफाफेसे काफी समयतक काम लिया जा सकता है। सादे लिफाफोका खर्च बचानेके लिए भी सरकारी जेलोमे ऐसी कई युक्तियोसे काम लिया जाता है। यह तो तुम्हे मालूम ही होगा?

भाई शंकरलालके प्रश्नसे तुम्हे कुछ परेशानी न हो तो मुझे तो नही ही है। यदि नारणदास सस्थाके और तुम्हारे अधीन रहकर काम करे तो इससे हमारा काम और संघका काम सँभल जायेगा। भाई शंकरलाल मुझे पूछेगे तो मै बात कर लूँगा। मेरे लिए मुख्य प्रश्न उन्हे सन्तुष्ट करनेका नही बल्कि तुम्हे सन्तुष्ट करनेका है। तुम्हारा काम अच्छी तरह चलना चाहिए, इसके लिए तुम्हे जो सुविधा आवश्यक लगे माँग लेना।

शकरभाई स्वस्थ हो गये है यह तो खुशीकी बात है। उनसे कहना फिर बीमार न पडे।

क्या गंगादेवीको सिलाईका कुछ काम दिया है? न दिया हो तो अब दे देना।

आजकी डाक दोपहरको मिली। नारणदास परेशान है। उसका पत्र भेज रहा हूँ। तुम सबको ठीक लगे तो जैसा नारणदासका कहना है, वे सब आश्रममे रह

सकते है और रावाको वेतन देना शुरू किया जा सकता है। इसमे मुझे आपत्ति तो है ही, किन्तु मै आग्रह नही करना चाहता। नारणदासका दिल भी नही दुखाना चाहता।

शनाभाईको रखनेकी वात ही तय हुई है न? उनके विरुद्ध सिर्फ शक ही हो तो इसीलिए न रखना ठीक नही माना जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५३७०) की फोटो-नकलसे।

१६९. तार : डॉ० वि० चं० रायको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
[३ दिसम्बर, १९२८][1]

डॉ० विधान राय
३६, वेलिंग्टन स्ट्रीट, कलकत्ता

प्राप्त पत्र प्रदर्शनी सम्बन्धी प्रकाशित विवरणोसे मेल नही खाता। मुझे तो लगता है कि प्रदर्शनीमे समुचित रूपसे हाथ बँटानेका समय अब नही रह गया है, पर मै इसकी छूट दे रहा हूँ। स्थानीय खादी सघकी देखभालका जिम्मा आपका है।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३१६)की फोटो-नकलसे।

१७०. तार : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
[३ दिसम्बर, १९२८][2]

खादीस्थान, कलकत्ता

प्रदर्शनीमे भाग लेनेके वारेमे अधिकृत पत्र मिला। प्रतिवन्ध हटा रहा हूँ। सम्भव हो, तो आप खादी-मण्डपका आयोजन कर सकते है।

गाधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३१८)की फोटो-नकलसे।

१ व २. देखिए "पत्र : डॉ० वि० च० रायको", ३-१२-१९२८।

१७१. तार : मन्त्री अ० भा० च० सं०, अहमदाबादको

[३ दिसम्बर, १९२८][1]

चरखा
अहमदाबाद

अविकृत पत्र अभी-अभी मिला। प्रदर्शनीमे भाग लेनेके इच्छुक व्यक्ति शामिल हो सकते है। समाचारपत्रोमे बयान दे रहा हूँ।[2]

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३१८)की फोटो-नकलसे।

१७२. तार : शंकरलाल बैंकरको

[३ दिसम्बर, १९२८][3]

बैंकर
मिर्जापुर, अहमदाबाद

यदि सघ द्वारा सचालित भण्डार प्रदर्शनीमे चीजे रख सके तो अवश्य रखे।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १३३०७)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र : डॉ० वि० चं० रायको", ३-१२-१९२८।

२. देखिए "तार : फ्री प्रेस और एसोसिएटेड प्रेसको", ३-१२-१९२८।

३. वर्धामें प्राप्त उनके ३ दिसम्बरके तारके उत्तरमें, देखिए "पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको", ३-१२-१९२८ भी।

१७३. तार: फ्री प्रेस और एसोसिएटेड प्रेसको

[३ दिसम्बर, १९२८][1]

फ्री प्रेस, एसोसिएटेड प्रेस

बगाल समितिके निर्णयको देखते हुए गाधीजीकी सलाह है कि इतने थोडेसे बचे समयमे जो भी खादी सस्थाएँ काग्रेस प्रदर्शनीमें भाग ले सकती हों, अवश्य ले।

अग्रेजी (एस० एन० १३३१९)की फोटो-नकलसे।

१७४. पत्र: डॉ० वि० च० रायको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० विधान,

आपका पत्र पढकर अफसोस हुआ। विचित्र बात है कि उलटे आप मुझपर आरोप लगाते है कि मैंने समितिके साथ समुचित व्यवहार नही किया, जब कि आरोप मुझे लगाना चाहिए था। मै तो यह समझ रहा था कि मैंने समितिकी भावनाओका अधिकसे-अधिक ख्याल रखा है और इसकी कोशिशमे खुदकी अपनी भावनाओको दबा कर रखा है। समितिको कही ऐन वक्तपर बुरा न लगे, इसी ख्यालसे मैंने आपका ध्यान जबरन इसकी ओर आकर्षित किया और आप सबके साथ इसपर बहस करनेकी कोशिश की है, जिससे कि आप बादमे अपनी पसन्दका फैसला ले सके और मुझे समाचारपत्रोमे उसकी आलोचना भी न करनी पडे।

अच्छा अब कामकी बात। यदि प्रकाशित विवरणोमे सच्चाई है तो आपके पत्रमे नही है। एक मजेदार खबर लीजिए। प्रदर्शनी अधिकारियोंने सभी प्रान्तीय मण्डल सरकारोसे चीजे भेजनेका अनुरोध किया है। लेकिन आपको शायद जानकारी नही है कि क्या हुआ है।

और पण्डितजीकी इच्छाके आगे इतना अधिक झुकना भी मुझे पसन्द नही आया। मैंने वचन दे दिया है कि मै हर हालतमे काग्रेस अधिवेशनमे शरीक होऊँगा। समिति व्यक्तिगत सुविधाओ और विचारोसे ऊपर उठकर अपनी एक नीति निर्धारित क्यो नही करती? मै प्रदर्शनीमे शरीक नही हुआ या अखिल भारतीय

१. देखिए "पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको", ३-१२-१९२८।

चरखा संघने अपने प्रतिनिधि उसमे नही भेजे, तो इस बातको लेकर जनताके मनमे कोई गलतफहमी क्यो पैदा होनी चाहिए?

परन्तु स्थिति यही है। आपने अपना पहलेवाला प्रस्ताव रद कर दिया है। इसलिए मैंने आपको और अखिल भारतीय चरखा सघके मन्त्री और बंगालमे इस कामके लिए जिम्मेदार सतीश बाबूको भी तार द्वारा सूचित कर दिया है। मै नही जानता कि खादी मण्डपका आयोजन करना कितना सम्भव होगा। आप कृपया सतीश बाबू और अन्य कार्यकर्त्ताओको साथ लेकर जितना भी कर सके करे।

दुःख तो मुझे है ही। आपके निर्णय और पत्रसे उसमे कोई कमी नही आई। पूरी स्थितिमे कुछ अटपटापन है। हे ईश्वर! हमे सच्चा, वास्तविक मार्ग दिखाओ।

इस पत्रमे व्यक्तिगत बात कुछ भी नही है। ये तो एक व्यथित आत्माके उद्गार ही हैं।

हृदयसे आपका,

डॉ० विधानचन्द्र राय
३६ वेलिंग्टन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३७५८)की माइक्रोफिल्मसे।

१७५. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय सतीश बाबू,

आपके सभी पत्र मिल गये। साराका-सारा मामला गड़बड़ है। पर हमे विरोध नही करना चाहिए। इसलिए मैंने आपको तार दिया[1] है। कृपया अन्य केन्द्रोको सूचित कर दीजिए। अब आपसे जितना कुछ बन सके, उतना करना चाहिए। मैंने शंकरलालको भी एक तार[2] दिया है और समाचारपत्रोके लिए एक छोटा-सा सन्देश भी भेजा है[3]। हमारे पत्र-व्यवहारकी नकले मौजूद हैं।

आज अधिक कुछ नही, बस स्नेह ही जिसकी अब आपको काफी आवश्यकता रहेगी।

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० ८९२१)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "तार : सतीशचन्द्र दासगुप्तको", ३-१२-१९२८।
२. देखिए "तार : शंकरलाल बैंकरको", ३-१२-१९२८।
३. देखिए "तार : फ्री प्रेस और एसोसिएटेड प्रेसको", ३-१२-१९२८।

१७६. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय जवाहर,

मेरा स्नेह लो। सब कुछ बड़ी बहादुरीके साथ किया। अभी तो तुमको कहीं ज्यादा बहादुरीके करतब करने हैं। ईश्वर तुमको लम्बी उम्र दे और भारतको परतन्त्रतासे[1] मुक्ति दिलानेका मुख्य साधन तुमको ही बनाये।

तुम्हारा,
बापू

[अंग्रेजीसे]
ए बंच ऑफ ओल्ड लैटर्स

१७७. पत्र : आश्रमकी बहनोंको

वर्धा
सोमवार ३ दिसम्बर, १९२८

बहनो,

गंगाबहनका लिखा हुआ आप लोगोंका पत्र मुझे मिल गया है। शोर-गुलके बारेमें तुमने जो लिखा है, उससे इस दोषका कुछ बचाव होता है सही। परन्तु इसमें सिर्फ बच्चोंकी ही जिम्मेदारी नहीं, बड़ोंकी भी है। इसके अलावा खाते समय या काम करते समय शान्ति रखना या बच्चोंसे रखवाना बड़ी बात न होनी चाहिए। खास बात यह है : तुम बहनें यह न मान बैठो कि बातोंके बिना खानेका या काम करनेका समय कटेगा ही नहीं, या बच्चोंको शान्त रखा ही नहीं जा सकता। शान्तिसे काम करनेवाले करोड़ों मनुष्य हैं। तुम जानती हो न कि बड़े कारखानोंमें मजदूरोंको जबरदस्ती शान्ति रखनी पड़ती है। जो वे जबरदस्तीसे करते हैं, वह हम स्वेच्छासे क्यों न करें?

अब तुम्हारे पास हफ्तेमें एक बार काका साहब आया करेंगे। क्या फिर भी वालजीभाईसे आग्रह करनेकी जरूरत मालूम होती है? मैं आग्रह करूँगा तो वे

१. जवाहरलालने अपनी पुस्तिकामें इसका खुलासा इन शब्दोंमें किया था : "मेरा खयाल है कि यह खत लखनऊकी घटनाके तुरन्त बाद ही लिखा गया था। वहाँ हममें से कई लोगोंने साइमन कमीशनके आनेके विरोधमें एक शान्तिपूर्ण ढंगसे प्रदर्शन किया था। हमें पुलिसने डण्डों और लाठियोंसे बुरी तरह पीटा था।"

आयेंगे तो सही। मगर चूँकि मैं जानता हूँ कि वे हमेशा काममें लगे रहते हैं, इसलिए जहाँतक होता है मैं उनपर ज्यादा बोझ नही डालता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३६८३)की फोटो-नकलसे।

१७८. पत्र : महादेव देसाईको

मौनवार [३ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० महादेव,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। तुम तो [उद्योग] मन्दिरमे जितना करते थे उससे भी ज्यादा बडे काममे लगे हो। उसमे सफलता मिल रही है, इससे मुझे सन्तोष है। जब पत्र लिख सको तब लिखना।

हारकरका लेख[2] छापनेके लिए भेज दिया है। उसने 'यग इंडिया' के बारेमे पूछा है। उसका जवाब तुम्ही दे देना।

बाकी समाचार तुम्हे प्यारेलाल और सुब्बैया लिखते होंगे। उसीसे सन्तोष कर लेना।

तुम्हारी टिप्पणी मैंने पढ़ ली है। उसमे कही गई बात समझमे आ गई है। तुम लिखते या कातते नही हो, तो उसका मुझे दुःख नही है। अगर मैं यह मानूँ कि तुम आलस्यवश कोई काम नही कर रहे हो तो दु.ख होगा। सच्चा मनुष्य काम करे तो भी ठीक है और न करे तो भी ठीक है। तुम्हे मैं सच्चे मनुष्योंमें गिनता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

साथका पत्र मणिलाल जहाँ हो, वहाँ भेज देना।

गुजराती (एस० एन० ११४४५)की फोटो-नकलसे।

१ एमा हारकरके ६-१२-१९२८ के **यंग इंडियामें** प्रकाशित लेखके उल्लेखसे। उससे पूर्व मौनवार, ३-१२-१९२८ को था।

२. देखिए "पत्र . महादेव देसाईको", ३०-११-१९२८।

१७९. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

वर्धा
३ दिसम्बर, १९२८

चि० मणिलाल और सुशीला,

सुशीलाने बच्चीके लिए नाम माँगा है, किन्तु नाम नानाभाई भेज चुके है, इसलिए दूसरे नामकी जरूरत नही रहती। धैर्यबाला भी अच्छा है। आलस्य रहित धैर्यके अभ्यासके लिए अन्य बहुतसे गुणोकी जरूरत होती है। भर्तृहरिने धैर्यको पिताकी उपमा दी है। 'धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी, शान्तिश्चिरगेहिनी' यह श्लोक न आता हो लिखना, भेज दूंगा।

तारा और शान्ति यहाँ चार दिन रहकर गये है। नानाभाई रास्तेमे मिले थे।[1] फिलहाल किशोरलाल विलेपारलेमे रहेगे।

मेरे साथ बा, प्यारेलाल, सुब्बैया और छोटेलाल है। महादेवको बारडोली रहना पडा है।

हम सब ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

लालाजीके स्मारकके लिए वहाँ चन्दा इकट्ठा कर सको तो करना।

गुजराती (जी० एन० ४७४५)की फोटो-नकलसे।

१८०. पत्र : प्रभावतीको

मौनवार [३ दिसम्बर, १९२८][2]

चि० प्रभावती,

तुमारे पत्र ठीक आ रहे है। बाबुजीको मै तुमारे बारेमे लीखता हु।

बालमदिरमे लडके नियमित आते है और ध्यान रखते है? बिमला अब बिलकुल अच्छी हो गई?

अब तो द्वारिका जानेका समय आ गया लगता है।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३३८ की फोटो-नकलसे।

१. वर्धा जाते हुए।
२. द्वारिका जानेके उल्लेखसे। देखिए "पत्र : प्रभावतीको", ९-१२-१९२८ भी।

१८१. टिप्पणी

लालाजीका स्मारक

४ दिसम्बर, १९२८

यह टिप्पणी देते समयतक (चार दिसम्बर) उक्त स्मारकके विषयमे मुझे जो खबरे मिली है, वे आशाजनक है। श्री घनश्यामदास बिड़लाने वर्धाकी सभामे स्वय १५,००० रुपया देकर इसका शुभारम्भ किया है। पजाबमे खासी अच्छी समिति निर्मित हो गई है और आशा की जाती है कि वह काफी चन्दा इकट्ठा कर लेगी। गुजरात और गुजरातियोके बारेमे मेरी आशा है कि वे सदाकी तरह इसमे भी उन्हे शोभा देने योग्य हाथ बँटायेगे। यदि हमारे मनमे 'पजाब केसरी' के प्रति सच्ची भावना हो, यदि हम इस स्मारकके औचित्यको स्वीकार करते हो, और यदि हमे कोषके सयोजको और उसकी देखरेख करनेवालोपर विश्वास हो, तो इस निधिकी रकम पूरी हो जानेमे समय लगना ही नही चाहिए। समय न लगे, इसीमे हमारी शोभा है। इसलिए मै आशा करता हूँ कि गुजरातको जो-कुछ देना है, सो वह तुरन्त दे देगा। विद्यार्थी और वेतन-भोगी कर्मचारियोके पास दानमे देनेके लिए पर्याप्त पैसा नही होता; जो लोग मुश्किलसे अपना खर्च चलाते है, उन्हे क्या करना चाहिए, उसके उदाहरणस्वरूप मै दक्षिण आफ्रिकाके संघर्षमे बरसो पहले, श्रद्धानन्दजीके गुरु-कुलके विद्यार्थियोने जो-कुछ किया था, उसकी याद दिलाऊँगा। उन्होने उस समय शारीरिक श्रम करके उसके द्वारा ३००-४०० रुपये कमाकर दानके रूपमे दिये थे। यदि कोई उनकी तरह मजदूरी करके अपना अशदान नही कर सकता, और जिन्हे मजदूरी करना या तो रुचता नही है या रुचते हुए भी जिन्हे उसके लिए समय नही मिलता, वे इस प्रकारके निमित्तसे निश्चित अवधितक भोग-त्याग करनेका मार्ग अपना सकते है; यह मार्ग तो उनके लिए खुला हुआ ही है। यदि किसी व्यक्तिको कोई व्यसन हो तो वह उसे कम अथवा अधिक अवधि तक छोडकर पैसा बचा ले अथवा खाने-पीनेकी चीजोपर कम खर्च करे — ऐसा बारडोलीके समय देहरादूनके कन्या गुरुकुलकी शिक्षिकाओ और छात्राओने किया था। कहनेका अभिप्राय यह है कि जो इस निधिमे चन्दा देना चाहते है उनके सामने मार्ग है। हममे एक ऐसी कुटेव पड गई है कि जबतक कोई चन्दा माँगने न आये तबतक हम कुछ देते ही नही है। वाछनीय तो यह है कि लालाजी जैसे देशभक्तके स्मारकसे सम्बन्धित चन्देके लिए हम इस तरह चन्दा माँगनेवालोकी राह न देखे।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ९-१२-१९२८

१८२. पत्र : अच्युतानन्द पुरोहितको

वर्धा
४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला और तार भी। मैंने आपको कोई भी उत्तर इसलिए नही दिया कि मैं तिथि निर्धारित नही कर सका हूँ। २० और २३ के बीचकी कोई तिथि रखी जायेगी।

मेरे साथ मेरी पत्नीके अलावा तीन-चार अन्य सज्जन भी होंगे, पर उनके लिए कोई खास प्रबन्ध करनेकी परेशानी मत उठाइए। वे वही ठहरेंगे जहाँ आप मुझे ठहरायेंगे। मेरे लिए भी कोई खास इन्तजामकी जरूरत नही। मैं चाहता हूँ कि आप जितना भी चन्दा इकट्ठा करें उसकी पाई-पाई बचानेकी कोशिश करें। मेरे लिए कोई फल मँगानेकी जरूरत नही। साधारण भोजन ही पर्याप्त है। इन्तजाम अगर कोई करना है तो बस सेर-भर बकरीके दूधका ही करना है। मुझे बस एक चीज जरूर चाहिए — किसी साफ जगहमे कमोड रखा जाये। कृपया कलकत्तासे कोई फल न मँगाये।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३००९)की फोटो-नकलसे।

१८३. पत्र : पद्मजा नायडूको[1]

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय पद्मजा,

यह पत्र बोलकर लिखवाया गया है, इसका बुरा मत मानना। तुमको पत्र लिखनेमें देर करनेसे कही अच्छा है कि मैं बोलकर लिखवा दूं। आखिर तुम अपने स्वास्थ्यके बारेमे क्या कर रही हो? इसके लिए क्या अधिक दोषी तुम्हारा दिमाग ही नही है? तुम स्वस्थ बनने और बनी रहनेका सकल्प क्यो नही कर पाती? तुम्हारे स्वास्थ्यमें इस बार जो गिरावट आई है उससे अमेरिकामे उस बेचारी बूढी कोकिलाको[2] परेशानी तो हो ही जायेगी। तुमको एक अच्छी पुत्री बनना चाहिए।

श्रीमती पद्मजा नायडू
हैदराबाद

अंग्रेजी (एस० एन० १३०१३) की फोटो-नकलसे।

१. पद्मजा नायडूके दिनांक १६ नवम्बरके पत्रके उत्तरमें, जिसमें उन्होंने लिखा था: "पिछले पखवाड़े-भर मेरी हालत काफी खराब रही।" (एस० एन० १३००१)।

२. सरोजिनी नायडू।

१८४. पत्र : बी० एस० मुंजेको

वर्धा
४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० मुंजे,

आपका पत्र अभी-अभी मिला। यदि आप और जल्दी चाहें और आपको सुविधाजनक हो तो आगामी गुरुवार, अर्थात् ६ तारीखको ४ बजे शामका समय कैसा रहेगा? यदि वह सुविधाजनक न हो तो फिर ११ तारीख मंगलवारको ४ बजे शामका समय रख सकते हैं।

हृदयसे आपका,

डॉ० बी० एस० मुंजे
नागपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १३०१४)की फोटो-नकलसे।

१८५. पत्र : एच० एम० जगन्नाथको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया। इस अपीलपर दस्तखत करनेवाले लोग लाला लाजपतरायके राजनीतिक कार्योंको आगे बढ़ानेपर खर्च करनेके लिए पाँच लाख रुपये जमा करना चाहते हैं। जाहिर है कि इन कार्योंमें दलित वर्गोंके कल्याणका काम भी शामिल है। आपको मालूम होगा कि लालाजीके कुछ कार्यकर्त्तागण अपनी समूची शक्ति केवल दलित वर्गोंकी सेवामें लगा रहे हैं।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत एच० एम० जगन्नाथ
सभापति
अखिल भारत अरुधतीय केन्द्रीय सभा
मद्रास

अंग्रेजी (एस० एन० १३०१६)की फोटो-नकलसे।

१८६. पत्र : सर मोहम्मद हबीबुल्लाको

वर्धा
४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका खत मिल गया। शुक्रिया। आप देखेंगे कि मैंने नियुक्तिके बारेमें अब तक एक लफ्ज तक नहीं कहा और जबतक हो सकेगा मैं चुप्पी ही साधे रहूँगा।

हृदयसे आपका,

सर मोहम्मद हबीबुल्ला खान बहादुर
सी० आई० ई०
वाइसराय परिषदके सदस्य
नई दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १५०९४) की फोटो-नकलसे।

१८७. पत्र : मन्त्री, 'खालसा दीवान सोसाइटी', वैंकूवरको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
४ दिसम्बर, १९२८

मन्त्री
'खालसा दीवान सोसाइटी'
गुरुद्वारा, वैंकूवर बी० सी०

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। हम लोगोंकी समझमें ही नहीं आया था कि यह राशि किसी कामके लिए किसने भेजी?[१] अब मैं राशिकी प्राप्ति सूचना भेज रहा हूँ और इसका उपयोग आपकी इच्छाके अनुसार ही किया जायेगा।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५११६)की माइक्रोफिल्मसे।

१. सोसाइटीके मन्त्रीने बारडोली संघर्षके सिलसिलेमें एक हजार रुपये भेजे थे, पर यह निर्देश नहीं दिया था कि राशि किस कामपर खर्च की जानी है। इसी बीच संघर्ष सफलताके साथ सम्पन्न हो चुका था और उसका समापन किया जा चुका था। इसपर सोसाइटीके मन्त्रीने लिखा था कि उस राशिको बारडोली संघर्षके दौरान कष्ट पानेवालोंपर खर्च किया जाये।

१८८. पत्र : जगदीशचन्द्र बसुको

वर्धा
५ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

मैं तो कूप-मण्डूक हूँ, जिसे पता नहीं कि कूपसे बाहरकी दुनियामें क्या हो रहा है। आपके जन्म-दिवसकी बात मुझे कल ही पता चली। देरसे ही सही, मेरी बधाई भी आप अन्य बधाइयोंके साथ स्वीकार करें — यही मेरा अनुरोध है। ईश्वर आपको दीर्घायु बनाये जिससे भारत आपकी दिन-दिन बढ़ती शक्ति और महानतासे लाभान्वित होता रहे।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (जी० एन० ८७३६)की फोटो-नकलसे।

१८९. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

आश्रम, वर्धा
५ दिसम्बर, १९२८

भाईश्री विट्ठलदास,

तुम्हारा पत्र मिला। शहदकी बात समझी। अपनी आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक गरीबीका ठीक-ठीक दर्शन कर रहा हूँ।

खादी-प्रचारके विषयमें तुमने ज्यादा विचार किया है। इस प्रयत्नमें यदि तुम्हें आर्थिक सहायता मिली तो तुम ज्यादा काम कर सकोगे — ज्यादा यानी सारे देशकी खादीका। अपना स्वास्थ्य अच्छा बनाना। माथेरान जाकर और स्वास्थ्य सुधारकर आना। बम्बईमें रहकर पिसते रहनेसे ज्यादा अच्छा है। वेलाबहनके वियोगका दु:ख ज्यादा तो नहीं करते हो? नरसी मेहताकी यह उक्ति याद करना: "अच्छा हुआ जंजालसे छूट गया। अब श्री गोपालका मिलना ज्यादा सरल होगा।"

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९७६५)की फोटो-नकलसे।

१९०. पत्र : महादेव देसाईको

बुधवार [५ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० महादेव,

मै तो अभी लिख ही नही सकता। लेकिन इस वार तुमने भी न लिखनेका ही इरादा कर लिया दिखता है, ऐसा मत करो।

क्या तुम्हे याद आता है कि सूरजवहनके पतिके सम्बन्धमे मैने करसनदासको भेजनेके लिए एक तार तुम्हारे हाथमे दिया था। किसीको मैने दिया तो अवश्य था। किन्तु यह तार करसनदासको मिला नही लगता।

वापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

इस वार 'यग इडिया' मे ऐसा कुछ था नही जो तुम्हे भेजा जाये। छपने पर यदि तुम्हें कोई चीज अनुवादके योग्य दिखे तो अनुवाद कर डालना और मुझे तुरन्त खबर देना।

गुजराती (एस० एन० ११४४१)की फोटो-नकलसे।

१९१. पत्र : कुसुम देसाईको

वर्धा

बुधवार, ५ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। वहाँके ब्योरेवार समाचारोकी मै तुझसे आशा रखता हूँ। रसोईघरके समयका पालन होता है? शोर कम हुआ है? गंगावहनको सब मदद देते है? कोई बीमार है? वलवीर कैसे रहता है? पद्माका क्या हाल है?

तू मेरे वारेमे खबर चाहती है। मुझे कुछ समय मिले तव तो लिखूं। परिस्थिति यह है कि यहाँ तो किसीके साथ वात करनेका समय नही मिलता। प्यारेलालको अच्छी तरह काममे लगा लिया है, इसलिए वह भी समय नही दे सकता। जरा धीरज रखना।

१. करसनदासको भेजनेके लिए दिये गये तारके न पहुँचनेके उल्लेखसे स्पष्ट है कि यह पत्र महादेव देसाईको लिखित ९-१२-१९२८ के पहले लिखा गया था।

प्रभावती अब चली गई होगी, इसलिए पत्र नही लिख रहा हूँ। विद्यावती[1] वहाँ होती तो पत्र लिखता। हो तो कहना — उसे बीमार हरगिज न पड़ना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६३२)की फोटो-नकलसे।

१९२. पत्र : छगनलाल जोशीको

बुधवार [५ दिसम्बर, १९२८][2]

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी सलाह है कि मैं जो भी पत्र तुम्हे लिखता हूँ, सब नारणदासको दिखाते जाओ। इससे तुम्हारा रास्ता सुगम होगा और उसे भी मदद मिलेगी। नारणदासको तटस्थ न रहनेके लिए लिखा तो है।

सन्तोकबहन राजकोट जाये तो जाने दो। तुम बेशक उसके पास जाओ और उसे समझाओ। आश्रमका वातावरण उसे अच्छा लगे और वह वहाँ रहे तो मुझे बडी खुशी होगी। लेकिन मुझे रोज-रोज उसकी मान-मनोती करनी पड़े और तब वह रहे, यह मैं नही चाहता।

देश-सेवाके कार्यमे सगे-सम्बन्धी साथ दे, यह स्वाभाविक है और इष्ट है। मुश्किल तो तभी आती है जब स्वार्थ साधनेकी बात उठती है। मनमे इस बातकी पूरी प्रतीति हो जानेके बाद कि हममे कोई निजी स्वार्थ नही है, हम सभी सगे-सम्बन्धियोको आमन्त्रित कर सकते है, उनका आना तो अपने-आपको यज्ञमे होमनेके लिए आना समझा जायेगा।

रामके साथ उनके सगे ही लोग थे। युधिष्ठिरके साथ भी ऐसा ही था। यही बात पैगम्बर मुहम्मदके साथ भी थी। ईसाके साथियोमे उनका भाई था। लॉर्ड सेलिसबरी अपने आस-पास अपने सग-सम्बन्धियोको रखते थे। इसपर किसीने उनकी आलोचना की तो उन्होने कहा: "इस बलिदानमे अगर मैं अपने सगोको न होमूँ तो किसको होमूँ? इनपर विश्वास न करूँ तो किसपर करूँ? अगर मेरे दूसरे सगे भी ऐसे योग्य निकले तो मैं उन्हे भी होमना चाहूँगा। मेरे लिए यह पैसा कमानेका नही, बलिदानका स्थान है।"

बाल्फर लॉर्ड सेलिसबरीके सगे थे। इससे उलटे अर्थात् सगोको विभिन्न पदोपर स्वार्थ-सिद्धिके लिए नियुक्त किये जानेके दृष्टान्त भी असख्य है। इसका सार यह हुआ कि जहाँ स्वार्थ नही है वहाँ सगे और पराये समान है और जहाँ स्वार्थ है,

१. प्रभावतीकी बहन, राजेन्द्रबाबूके पुत्र मृत्युजयबाबूकी पत्नी।

२. नारणदासको २९-११-१९२८ को लिखे पत्रके उल्लेखसे। २९ नवम्बरके बाद आनेवाला बुधवार ५ दिसम्बरको पड़ा था।

वहाँ पराया होनेसे ही क्या अन्तर पड सकता है? फिर भी, जैसा कि तुमने लिखा है सबको सँभल-सँभलकर चलना चाहिए। मेरा विश्वास है कि मुझे तो अपने प्रयोगमे कुछ गँवाना नही पडा है। ऐसा ही हम-जैसे सभी लोगोके बारेमे समझना। हमारे देशमे बराबरीके लोग सहज ही एक साथ हो कर काम नही कर सकते, क्योकि अभी हमारे लोगोमे त्याग-भावनाका पर्याप्त विकास नही हुआ है।

गोशालाके विषयमे तुम्हारा प्रश्न मै ठीक-ठीक समझ नही पाया हूँ। तुम विस्तारसे लिखोगे, तभी समझ सकूँगा।

लाहोरी राम जबतक खाट न पकड ले और अपनी राह चलता जाये तबतक तो हमे उसको अपने बीच रहने ही देना चाहिए। वह अपनी जीभ पर अकुश न रखे तो बात और है। अगर हमे निश्चय हो कि जो हमारे पास आया है, वह अच्छा आदमी है तो हमें उसे अपनी ओरसे ढकेल कर निकालनेकी बात नही सोचनी चाहिए। यदि शुरूमे ही उसे न रखा होता तो बात दूसरी होती।

लुटेरोके आनेपर हम अपने आपको बलिदान कर देनेके लिए तैयार रहे तो इतना हमारे लिए काफी है। अच्छा तो यह हो कि हममे से कोई उन लुटेरोंके बीच जाकर [उन्हे सही रास्ता दिखानेके लिए] काम करना शुरू कर दे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

दोबारा नही पढा। कल वाला लिफाफा चिथडा हो गया था। उसे धागेसे बाँध देना चाहिए था।

बापू

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१९३. टिप्पणी

'उसकी और हमारी दृष्टि एक जैसी है'

श्री एन० एम० बैल एक छोटी-सी पत्रिका 'इटरनेशनल सनबीम'के सह सम्पादक है। २ शिलिंग वार्षिक मूल्यकी यह पत्रिका ५९, मेरीज रोड, क्राइस्ट चर्चसे प्रकाशित होती है। श्री बैलने अपनी मासिक पत्रिकाकी एक प्रति मुझे भेजनेकी कृपा की है। उसका एक दिलचस्प लेख मै नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ।[1]

> हम जिन वातायनोंसे जीवनको देखते हं, भारत उनसे भिन्न वातायनोसे देखता है; लेकिन उसकी दृष्टि हमारी दृष्टि जैसी ही है और उसकी इच्छाएँ भी वही हं जो हमारी है।

१. यहाँ केवल कुछ अंश ही दिये जा रहे हैं।

शान्तिकी एकमात्र भौतिक गारंटी विश्वव्यापी पूर्ण निःशस्त्रीकरण ही है। पूर्ण निःशस्त्रीकरण मनुष्यके आन्तरिक, वैचारिक निःशस्त्रीकरणका ही बाह्य और सर्वथा प्रत्यक्ष लक्षण होना चाहिए, क्योंकि बाह्य शान्तिका एकमात्र निरापद आधार यह वैचारिक निःशस्त्रीकरण ही हो सकता है। परन्तु जबतक एक राष्ट्रके लोग दूसरे राष्ट्रकी जनताको अधिक बड़ी सैन्यशक्तिके बलपर पराधीन बनाये रहेंगे, तबतक सचमुच ही मानना चाहिए कि इस आन्तरिक, वैचारिक निःशस्त्रीकरणकी ओर हमने प्रारम्भिक प्रयत्न भी नहीं किया है।

भारतसे इसका क्या सरोकार? पूरा-पूरा सरोकार है।

'लीग ऑफ नेशन्स' की निःशस्त्रीकरण विशेष समितिके सामने जब रूसी प्रतिनिधि मण्डलने विश्वव्यापी पूर्ण निःशस्त्रीकरणका अपना ऐतिहासिक प्रस्ताव रखा था तो ग्रेट ब्रिटेन, वास्तवमें किस कारण उससे सहमत नहीं हो सका? भारतके ही कारण। भारतमें लगभग ७०,००० ब्रिटिश सैनिक और लगभग १,४०,००० भारतीय रंगरूट मौजूद हैं और लगभग ३५,००,००,००० भारतीयोंको ब्रिटिश शासनके अधीन बनाये रखनेका वार्षिक खर्च लगभग ७,००,००,००० पौंड आता है। मिस्रकी जनता समय-समयपर ब्रिटिश पराधीनतासे अपने देशको शान्तिपूर्ण ढंगसे स्वतन्त्र करानेके लिए जब प्रयत्न करती है तो ब्रिटेन किस कारण उनके आग्रहको ठुकरा देता है? भारतके कारण ही। इसलिए कि भारत जानेका मुख्य मार्ग स्वेज नहर होकर ही जाता है।

ग्रेट ब्रिटेनके लिए निःशस्त्रीकरणका अर्थ होगा — ब्रिटेनके साम्राज्यीय मुकुटका सबसे 'चमकदार रत्न' खो देना और आम तौरपर अपने पूरे साम्राज्यका अन्त कर देना। . . . सुननेमें अच्छी तो नहीं लगती, पर कहावत है बिलकुल सच कि साम्राज्य शस्त्रोंके बलपर खड़े रहते हैं।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ६-१२-१९२८

१९४. उसका रक्त-रंजित इतिहास[1]

ऐसा लगता है कि पजाब सरकारने अपने यहाँकी पुलिसको प्रमाणपत्र दे कर लखनऊ पुलिसके हौसले बढा दिये है और वह खुलकर लाठी-भालोके इस्तेमालमे पजाब पुलिससे भी आगे बढनेपर तुल गई है। पण्डित जवाहरलाल नेहरूके कथनानुसार, लखनऊ पुलिस तो एक बिलकुल ही निर्दोष भीडको तितर-बितर करनेके लिए ईंट-पत्थरोके इस्तेमालसे भी नही चूकी। हम मान लेते है कि प्रदर्शनकारी सर्वथा वैध समझे जानेवाले आदेशोका उल्लघन कर रहे थे, फिर भी मै कहूँगा कि प्रदर्शनकारियोपर हमला करनेका पुलिसके पास तबतक कोई औचित्य नही हो सकता जब तक प्रदर्शनकारियोकी ओरसे सरकारी सम्पत्ति या पुलिसके लोगोको कोई नुकसान पहुँचनेका खतरा बिलकुल सामने न दिखने लगे। मै पण्डित जवाहरलाल द्वारा जुटाये गये विवरणको ही आधार मानकर चल रहा हूँ। उसके अनुसार, भीड सर्वथा नियन्त्रित और शिष्टतापूर्ण थी। किसीको भी हानि पहुँचानेका उसका कोई मशा नही था। जाहिर था कि उसका मशा बस इतना ही था कि लखनऊमे एक ऐसे आयोगके विरोधमे शान्तिपूर्ण ढगसे प्रदर्शन करे जिसे जनतापर उसकी इच्छाके विरुद्ध थोपा जा रहा है। ऐसी परिस्थितिमे पुलिस द्वारा दमनकारी शक्तियोका प्रयोग निरकुशतापूर्ण, अनावश्यक और क्रूरतापूर्ण था। लेकिन इतनी बडी उत्तेजनाके बावजूद और उनके मनोनीत नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा उनके साथियोपर हुए कायरतापूर्ण आक्रमणके बाद भी, प्रदर्शनकारियोने जो बर्ताव किया वह आश्चर्यजनक और अनुकरणीय था। जनताने भी उतने ही अधिक आत्मसयमसे काम लिया जितना कि उसके नेताओने। मेरा दावा है कि लखनऊके प्रदर्शनकारियोने जितने शान्त चित्त रह कर वह सब सहा है, भारतके अलावा अन्य किसी भी देशकी जनता वैसी परिस्थितिमे उतनी शान्त चित्त नही रह पाती।

लेकिन लगता है कि सशस्त्र पुलिसकी रक्षामे चलनेवाले शूरवीर कमिश्नर इस शान्तिप्रियताको शायद कायरता समझ बैठे है। वे रक्तपातके बलपर ही आगे बढनेपर तुले मालूम पडते है। पजाबमे निर्दोष जनताका रक्त बहाया गया था और लखनऊ पुलिसने भी उतनी ही निर्दोष जनताको उससे कही अधिक गम्भीर चोटे पहुँचाई है। दो व्यक्ति तो इतनी बुरी तरह जख्मी हो गये है कि उनकी जान पर ही आ बनी है। वैसे तो अग्रेज कमिश्नरोके आचरणका औचित्य समझना ही काफी कठिन है, लेकिन उनके अधीनस्थ भारतीय अफसरोके आचरणका औचित्य सिद्ध करना तो और भी कठिन काम है। लगता है कि वे यह महसूस नही करते कि उनके और जनताके बीचकी खाई दिन-दिन कितनी चौडी होती जा रही है, वे उस जनतासे कितने दूर पड़ते जा रहे है जिसके वे प्रतिनिधि माने जाते है और

१. देखिए "रक्त-रँजित पथ", ९-१२-१९२८ भी।

जिसे (जिसमे से कुछ तो भारतके श्रेष्ठतम सपूत है) वे इस अवाछित आयोगके विरुद्ध प्रदर्शन करनेका साहस दिखानेके जघन्य अपराधपर घोडोकी टापोसे रौदने, लाठियोसे पीटने और संगीनोके बलपर पशुओकी तरह हाँकनेमे सन्तोष महसूस करते है।

क्रुद्ध पिता और देशभक्त पण्डित मोतीलाल नेहरूने सरकारको यह चेतावनी देकर सर्वथा उचित कदम उठाया है कि "यदि इस शहरमे या देशके किसी भी भागमे कोई हिंसापूर्ण उपद्रव हुआ तो उसके लिए ऐसे ही अफसर जिम्मेदार माने जायेगे जैसे अफसरोने पिछले तीन दिनोमे लखनऊमे दुर्व्यवहार किया है।" मुझे तो आशका है कि सरकार वास्तवमे ऐसे उपद्रव खुद चाहती है और यदि नही तो उसे कमसे-कम इसकी परवाह तो नही ही है। यदि ऐसा कोई उपद्रव हुआ तो सरकारको एक बार फिर अवसर मिल जायेगा कि वह ब्रिटिश सिंहका लहूसे रँगा पंजा जनतापर ताने और डरी हुई जनताको आतकित करके उसे अपनी निरकुश इच्छाके सामने झुकने पर विवश कर दे।

इसलिए कि यदि सरकार सचमुच नही चाहती कि जनता हिंसात्मक उपद्रवोमे पडे और आयोग भी यात्राके इरादेपर कायम रहनेकी जिद करे तो सरकारको आयोगसे कह देना चाहिए कि उसे स्थान-स्थानपर स्वय जानेकी बजाय एक किसी केन्द्रीय स्थानमे बैठकर वही गवाहोको बुला कर अपना काम पूरा करना चाहिए। परन्तु सरकारसे इतनी बुद्धिमानी और लोकभावनाके प्रति इतनी उदारताकी आशा नही ही की जा सकती।

ऐसी परिस्थितिमे जनताका अपना कर्त्तव्य स्पष्ट है—उसे बडीसे-बडी उत्तेजनाके बावजूद अहिंसाकी अपनी आनपर दृढ रहना चाहिए। हम बिलकुल नि शक भावसे इन बडे-बडे प्रदर्शनोको अपने अहिंसापूर्ण सघर्षके पूर्वाभ्यास मान सकते है, जो हमे उस अन्तिम संघर्षके लिए तैयार कर रहे है जिसमे जनता स्वेच्छासे, प्रतिशोधकी भावना रखे बिना, वीरतापूर्वक अपने प्राणोकी बलि देगी। वह शुभ दिन तेजीसे निकट आ रहा है, हम जितना समझते है उससे कही अधिक तेजीसे। मै जितना समझ पाया हूँ, उससे मै यही निष्कर्ष निकालता हूँ कि चाहे हमारा सघर्ष पूर्णतः अहिंसात्मक रहे या मुख्यत हिंसात्मक, अपने पैरो खडे होनेकी सामर्थ्य अपने अन्दर पैदा करनेके लिए हमे अनेक मूल्यवान प्राणोकी बलि चढानी ही पडेगी। मै अपने तई तो यही आशा सजोये हूँ और ईश्वरसे यही प्रार्थना करता हूँ कि हमारा सघर्ष अपने चरम बिन्दुपर पहुँचनेपर भी पूर्णत अहिंसात्मक ही बना रहे।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ६-१२-१९२८

१९५. मनुष्यका दोष

मैं जानती हूँ कि दूसरोंको सलाह देना हमारे लिए सबसे आसान काम है, लेकिन यह तो भुक्तभोगी ही समझते हैं कि बन्दर कितनी बर्बादी कर जाते हैं और चूँकि मैं भी उनके छोटे-छोटे शरारती हाथोंमें कुछ नुकसान उठा चुकी हूँ इसलिए मुझे ऐसे लोगोंसे पूरी हमदर्दी है।

लेकिन प्रश्न है कि इस संकटपूर्ण स्थितिके लिए दोषी कौन है — मनुष्य या बन्दर? बन्दर शहरोंमें आते क्यों हैं; वे अपनी जान हथेलीपर लेकर, अपने प्यारे बच्चोंकी जिन्दगी जोखिममें डालकर भोजनकी तलाशमें मनुष्योंके रिहायशी मकानोंके पास आते ही क्यों हैं?

माउंट आबूमें एक अधिकारीने इधर हाल ही में मुझसे कहा: "बन्दर बड़ी मुसीबत ढाते हैं, फिर भी हम उनको गोलीसे नहीं मार सकते। बन्दरोंका संकट साल-दरसाल बढ़ता ही जा रहा है, पता नहीं क्यों।"

तिसपर भी कारण स्पष्ट है। जंगलका एक-एक पेड़ इस बातकी गवाही दे रहा है कि मनुष्य अपने स्वार्थमें अन्धा होकर किसीके भी हिताहितका जरा ख्याल नहीं करता। जम्बू, करेण्ड और बोड़के हर पेड़को उसने एकदम फलविहीन बना दिया है।

आबूके भील लोग सैकड़ों, हजारों डलियाँ भर लेते हैं। आप उन फलोंको आबू रोडपर सड़ते देख सकते हैं।

साहबोंके खानसामोंने करेण्डका मुरब्बा बनाना सीख लिया है। सिर्फ इतनी ही मेहनत तो दरकार है कि फल इकट्ठे करके चीनी जुटा ली जाये।

मनुष्य खुद तो पशुओं और पक्षियोंके अधिकारोंका निर्दयतापूर्वक हनन करता है, लेकिन अपने अधिकारोंको अनुल्लंघनीय मानकर उसमें हस्तक्षेप करनेवालोंको कठोर दण्ड देता है।

क्या देवी-देवता भी मनुष्यके साथ ऐसा ही बर्ताव करते हैं? मनुष्य जातिपर जो अनेक विपत्तियाँ आती हैं, उनके पीछे मुझे यही भाव दिखाई पड़ता है कि प्रकृति इस तरह पशु-पक्षियोंके अधिकारोंके लगातार हननका भयंकर प्रतिशोध लेती है।

यह प्रकृतिका प्रतिशोध है: ऐसा प्रतिशोध जैसा कि जहाजोंके उन नाविकोंके सिरपर टूटता है जो आनेवाले तूफानकी सूचना देनेवाले सभी पक्षियोंको गोलीका निशाना बना चुके हैं। मनुष्यने हजारों लाखों पक्षियोंको नष्ट

करके ही यह फल भुगता है कि आज मलेरियाके मच्छर उसके प्रियजनोंको संत्रस्त कर रहे हैं और उनकी संख्या इतनी तेजीसे बढ़ती जा रही है कि मनुष्यके लिए पार पाना मुश्किल है।

पशु-पक्षियोकी प्रेमी, एक पत्र-लेखिकाने ये उद्‌गार व्यक्त किये है। दुर्भाग्यकी बात यह है कि उन्होने मेरी कठिनाई हल करनेके बदले और बढा दी है। मनुष्य-जाति द्वारा किये गये अत्याचारोको देखकर, अब क्या मै खेती-बारी छोडकर गुफामे शरण ले लूँ, या मै बन्दरोका उत्पात बन्द करानेकी कोशिश करूँ? मै इससे इनकार नही करता कि उनके तर्कका स्वाभाविक परिणाम यही निकलता है कि मुझे अपना बगीचा बन्दरोके हवाले कर देना चाहिए, दूसरी तरह कहे तो यह कि मेरे साथियो, अन्य मनुष्योने बन्दरोंको जिन चीजोसे वचित कर दिया है मुझे वे ही चीजे उनके लिए सुलभ बनानी चाहिए ! ! !

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, ६-१२-१९२८

१९६. पत्र : डॉ॰ वि॰ चं॰ रायको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय डॉ॰ विधान,

पण्डितजीकी बडी इच्छा है कि उनके कलकत्ता पहुँचनेपर मै जल्दसे-जल्द उनसे मिलूँ और वहाँ मेरे ठहरनेका प्रबन्ध उनके जितना भी निकट हो सके, किया जाये। अब उनका तार आया है कि स्वागत-समितिने हम दोनोके ठहरनेका प्रबन्ध एक ही इमारतमे कर दिया है। जैसा कि आप जानते ही है मेरे साथ हमेशा एक बडा जत्था चलता है। मुझे पूरा यकीन है कि स्वागत समितिको उतने सारे आदमियोको उसी इमारतमे ठहरानेका प्रबन्ध करनेमे काफी असुविधा होगी जिसमे पण्डितजीको ठहराया जायेगा। इसलिए मेरा सुझाव है कि उसमे मेरे लिए थोड़ा ही स्थान सुरक्षित किया जाये, जिससे कि आवश्यकता पडनेपर मै अपने साथके लोगोसे अलग होकर अकेला पण्डितजीके साथ ठहर सकूँ। लेकिन यदि समिति पसन्द करे तो मै श्रीयुत जीवनलालका दावतनामा स्वीकार कर लूँ। वे मेरे सभी साथियोको एक जगह ठहरानेकी बात कह रहे है। मैने इसी आशयका एक तार आपको दिया है।

मै नही जानता कि औपचारिक रूपसे मुझे किसे लिखना चाहिए। इसलिए यदि जरूरत हो तो आप ही यह पत्र ठीक-ठिकानेपर पहुँचा दे।

अबतकके कार्यक्रमके अनुसार, मैं कलकत्ता मेलसे २३ तारीखकी सुबह कलकत्ता पहुँच रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

डॉ० विधानचन्द्र राय
३६ वेलिंग्टन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३३१२)की फोटो-नकलसे।

१९७. पत्र : सुभाषचन्द्र बोसको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

आपका पत्र मिला। मेरी सुख-सुविधाका ध्यान रखनेका जो भाव इस पत्रसे झलकता है, उसके लिए आपका आभारी हूँ। पर स्वयसेवकोके चुनावके बारेमें मेरी अपनी कोई पसन्द नही। किसी भी स्वयसेवकसे काम चल जायेगा।

मैं डॉ० विधान रायको[1] पहले ही लिख चुका हूँ कि मोतीलालजी मुझे अपने निकट ही रखना चाहते है इसलिए उनके ठहरनेकी इमारतमे तो थोडी-सी जगह मेरे लिए सुरक्षित कर ही दी जाये, पर मै अपने स्वयके और अपने जत्थेके ठहरनेके लिए श्रीयुत जीवनलालकी दावत स्वीकार कर रहा हूँ। मेरे साथ इतने अधिक लोगोका जत्था होगा कि उतना सब प्रबन्ध करना आपके लिए सचमुच कठिन हो जायेगा और फिर उन सभीकी देखभाल करनेकी जरूरत भी नही है।

मोहनलाल बूथ हमेशाकी तरह इस बार भी मेरे साथ जुड सकते है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सुभाषचन्द्र बोस
१, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३३१३)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

१९८. पत्र : निरंजन पटनायकको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय निरंजन बाबू,

मैंने सम्बलपुरके बारेमे आपको आज एक तार भेजा है। मै यहाँसे 'पेसेन्जर' गाड़ीसे २० को चल कर २१ की शामको सम्बलपुर पहुँचूंगा और २२ की शामको वहाँसे चल दूंगा। मेरी सुख-सुविधाके लिए कोई ज्यादा तैयारी करनेकी जरूरत नही। हाँ, बकरीका दूध अवश्य सुलभ रहे। कलकत्तासे फल लानेकी कोई जरूरत नही।

म अब श्रीयुत जेठालाल गोविन्दजीके पत्रका अनुवाद आपके पास भेज रहा हूँ। 'यग इडिया' के स्तम्भोके माध्यमसे आप उनसे परिचित है ही। वे आत्म-निर्भरता योजनासे सम्बन्धित बिजोलिया केन्द्रके व्यवस्थापक है। मै चाहता हूँ कि आप उनके पत्रको उन आँकड़ोंके साथ रख कर पढे जो आपने अपने एक पत्रमे दिये थे और जिन्हे मैंने 'यग इडिया'मे[1] प्रकाशित किया था। आप मुझे बतलाइए कि उन्होने कहाँ गलती की है।

हृदयसे आपका,

सह-पत्र १

अंग्रेजी (एस० एन० १३७६२)की माइक्रोफिल्मसे।

१९९. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय सतीश बाबू,

प्रदर्शनीके सम्बन्धमे मेरा तार[2] आपको मिला होगा। अब तो बात खतम हो चुकी है। आप जितना कर सकते है, करेंगे। पता नही वे आपको अपने ढगसे काम करनेकी छूट देंगे या नही।

मै २१ तारीखको सम्बलपुर पहुँच रहा हूँ और २२ को वहाँसे चलकर मेल द्वारा २३ को कलकत्ता पहुँच जाऊँगा। मुझे जीवनलालके साथ ठहरना पडेगा। पण्डितजी

१. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ २४४-४६।
२. देखिए "तार: सतीशचन्द्र दासगुप्तको", ३-१२-१९२८।

चाहते है कि मै २३ के बाद कलकत्तामे मौजूद रहूँ और मै अपनी शक्तिभर उनकी सहायता करना चाहता हूँ। उनके सिरपर भारी जिम्मेदारि ाँ है।

आप जानते ही है कि इस बीच श्रीयुत बिडला मेरे साथ ही थे और हमने खादी इत्यादि कई विषयोपर बातचीत की है। मैने उनको सुझाया था कि जहाँ भी खादीका स्टाक बहुत ज्यादा बढ़ जाये वहाँ सारी अतिरिक्त खादी उनको ले लेनी चाहिए जिससे उत्पादनमे कोई बाधा न पडे। उन्होने इस विचारको पसन्द किया और हो सकता है कि वे शुरूमे पूरी सावधानी रखते हुए तुरन्त ही कोई कदम उठाये भी।

उन्होने मुझसे पूछा था कि यदि वे यह काम कलकत्तासे शुरू करे और भारत-भरकी सभी सस्थाओसे खादी जमा करनेके लिए वहाँ एक खादी भण्डार खोले तो आपको उसपर कोई आपत्ति तो नही होगी। मैने उनसे कह दिया था कि उनकी बतलाई हुई परिस्थितियोमे तो मुझे नही लगता कि आपको कोई आपत्ति होगी।

कीमतोको समानरूप देनेके अपने मूल विचारको अमलमे लानेकी बात मै फिर सोच रहा हूँ। पर आप इस प्रस्तावपर विचार करे और यदि आपको कोई आपत्ति हो तो कृपया मुझे बतलाये।

महावीरप्रसादने श्रीयुत बिडलाका नया भण्डार चलानेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनेका प्रस्ताव किया है। आप शायद इनको जानते है। वे बड़े ही उत्साही और ईमानदार कार्यकर्त्ता है और इन दिनो गोरखपुरमे है। वे आज कलकत्ता रवाना हो रहे है। मैने उनसे कहा है कि आपसे मिलकर सब बातोके बारेमे बातचीत कर ले। उनके वहाँ पहुँचनेके चौबीस घण्टे बाद यह पत्र आपको मिल जायेगा।

आशा है कि आप और हेमप्रभा देवी दोनो ही इतने सारे कामके बावजूद बिलकुल चगे होगे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर

अग्रेजी (एस० एन० १३७६२)की फोटो-नकलसे।

२००. पत्र : आर० वेंकटरामको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय वेंकटराम,

पत्र मिला और आपकी पत्रिकाके अंक भी। आपने पत्रकारिताके सम्बन्धमें मेरी आम रायका काफी ठीक-ठीक अनुमान लगाया है। आप अगर मुझे पूरे चौबीसों घंटे काम करते देखें तो आपको मुझपर तरस आ जायेगा। और आप फिर मुझसे किसी भी पत्रिकाको पढ़नेका आग्रह नहीं करेंगे फिर मेरा अपना रुख चाहे जो हो। सचमुच बहुत चाहनेपर भी, मुझे वह सारा साहित्य पढ़नेके सुखसे अपने आपको वंचित रखना पड़ता है जो चारों तरफसे मेरे ऊपर बरसता रहता है। इसलिए आप मुझे माफी देनेकी मेहरबानी करें।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत आर० वेंकटराम
सम्पादक
'इंडियन स्टेट्स जरनल'
एम्पायर बिल्डिंग
फोर्ट, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १३७६३) की माइक्रोफिल्मसे।

२०१. पत्र : अच्युतानन्द पुरोहितको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

मैं अपनी रवानगीकी तारीख आज जाकर तय कर पाया हूँ, इसलिए मैंने आपको आज ही तार दिया है। मैं वर्धासे २० तारीखको 'पैसेंजर' गाड़ीसे चलकर २१ तारीखकी दोपहर १.५३ पर जारसूगुडा पहुँचूँगा। आपके पत्रकी सूचनाके अनुसार इसके तुरन्त बाद जारसूगुडासे सम्बलपुरके लिए एक गाड़ी मिलती है। मैं अगले दिन (२२ तारीखको) शामको सम्बलपुरसे चल देना चाहता हूँ। इस तरह डेढ़ दिन मिल जायेगा, जो मैं समझता हूँ काफी होगा। मुझे २३ तारीखको कलकत्ता पहुँच जाना चाहिए।

अपने साथ आनेवाले लोगोकी संख्या और उनके नाम मैं आपको नही बतला सकता, क्योंकि मैं अभी तय नही कर पाया हूँ कि किन-किनको साथमे लूं। हाँ, आप इतना तो निश्चित मान सकते है कि मेरी धर्मपत्नी सहित कमसे-कम तीन व्यक्ति तो मेरे साथ रहेंगे ही।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३७६४) की माइक्रोफिल्मसे।

२०२. पत्र : विलियम आई० हलको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आश्रम — अब जिसे उद्योग मन्दिर कहते हैं — के मन्त्रीने आपका पत्र मेरे पास भेज दिया है। २३ तारीखके बाद किसी समय भी कलकत्तामे मुझे आपसे और श्रीमती हलसे मिलकर बडी प्रसन्नता होगी। कलकत्तामे मेरा पता होगा. मारफत — श्रीयुत जीवनलाल भाई, ४४ इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता। मुलाकातके समयके बारेमे आप इस पतेपर पूछताछ कर ले।

धन्यवाद। कुमारी एडम द्वारा भेजा परिचय-पत्र मुझे साबरमतीसे मिल गया था।

दर्शकोका प्रवेश-पत्र खरीदनेमे कोई कठिनाई नही पडेगी और आप कलकत्ता पहुँचनेपर ऐसा कर सकते हैं। आप चूँकि काफी पहले कलकत्ता पहुँच रहे हैं, इसलिए वहाँ पहुँचनेके बाद सारा इन्तजाम करनेमे कोई असुविधा नही पडेगी। आप जानते ही हैं कि कांग्रेस अधिवेशन २९ तारीखको शुरू होगा।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३७६५) की माइक्रोफिल्मसे।

२०३. पत्र : विलियम स्मिथको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपने पिछली बार बंगलौरमे मुझे भली-भाँति प्रशिक्षित कुछ ऐसे भरोसेके नवयुवकोके नामोकी एक सूची देनेकी कृपा की थी जो डेरियाँ चालू करनेके लिए मुझे मिल सकते हैं। वह सूची मेरे पास यहाँ नही है और हो सकता है कि आपने जिनके नाम दिये थे वे कही ठीक-ठिकाने लग भी चुके हो। क्या आप मेरे लिए फिरसे ऐसे नवयुवकोके नामो, उनके पतो और उनके अपेक्षित वेतन इत्यादिकी जानकारी जुटानेकी कृपा करेगे? उनके नाम और पतेकी सूची पाकर, मै उनके साथ स्वय सम्पर्क स्थापित कर लूंगा। मुझे कमसे-कम दो ऐसे युवक तो चाहिए ही।

मै साबरमतीमे यह जो एक छोटा-सा प्रयोग कर रहा हूँ उसके बारेमे आपकी राय जाननेको उत्सुक हूँ।

मै वर्धामे २० तारीखतक हूँ, उसके बाद बाकी महीने-भरके लिए मेरा पता रहेगा. ४४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

हृदयसे आपका,

श्री विलियम स्मिथ
इम्पीरियल डेरी विशेषज्ञ
बंगलौर

अंग्रेजी (एस० एन० १३७६६) की माइक्रोफिल्मसे।

२०४. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
६ दिसम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। चि० सन्तोकने बिलके एवजमे गेहूँके पैसे लिये है, इसमे मुझे तो शका ही नही है। चि० नारणदासका ख्याल अलग है, यह मै समझ सकता हूँ।

चि० सन्तोक और उसके बच्चोकी त्याग-शक्तिकी तुलना तुम्हारी अथवा अन्य लोगोकी त्याग-शक्तिके साथ नही की जा सकती। ऐसी बातमे किसी की तुलना किसीके साथ करनी ही नही चाहिए। हो सकता है कि किसी एकका सारी वस्तुओका

छोड़ देना भी दूसरे व्यक्तिके स्वल्प दिखनेवाले त्यागकी तुलनामे कुछ भी न हो। सन्तोक और उसके बच्चोसे मैने जितनी अपेक्षा की थी उतना नही मिल रहा है, इससे मुझे दु ख होता है। किन्तु इस विषयमे चि० नारणदास जितना चाहे उससे आगे मैं नही जाना चाहता। इसलिए मैने लगाम ढीली कर दी है। यदि अब राधा वेतन लेकर काम करे तो वैसा ही होने दो।

तुम तो वही कहना जो तुम्हे ठीक लगे। और, जहाँ तुम्हे अपनी स्वतन्त्रताका उपयोग करना है वहाँ वैसा ही करना। ऐसा करोगे तो तुम्हे अपनी जिम्मेदारी हलकी मालूम होगी। कोई कदम उठानेके बाद फिर किसीके साथ उसकी चर्चामे मत पडना। मुझे समझानेकी जरूरत हो वहाँ समझा देना, यह एक अलग बात है। अपनी तुलना किसी औरके साथ करनेके बजाय अपनी अन्तरात्मासे ही पूछना और जहाँ उसे सन्तोष हो और जहाँ तुम्हारे कार्य और कथनमे राग एव द्वेष न हो वहाँ बिलकुल निर्भय रहना।

शनाभाईके सम्बन्धमे तुम्हारा निर्णय अन्तिम माना जाना चाहिए। बुनाईशालाकी बुनाईके सम्बन्धमे मैं भाई शकरलालको लिख चुका हूँ कि वे तुमसे मिलकर सब-कुछ तय कर दे। इस काममे जो कठिनाइयाँ है उन्हे कैसे हल किया जाये, इसपर विचार करना बाकी रह जाता है। अब यह बात निकली है, इसलिए उसका अन्तिम निर्णय कर ही डालूँगा।

कुसुमबहनको बुखार बना ही रहता है, यह बात चिन्ताजनक है। उसे मै अपने साथ नही लाया, इसे भी मै बुखारका एक कारण मानता हूँ। मानसिक विक्षोभ सारी व्याधियोको बढाता है। मलेरिया इत्यादिमे उसका असर और भी ज्यादा होता है, यह मैने देखा है। इस बार उसके मनमे मेरे साथ आनेकी तीव्र इच्छा थी। मै मानता हूँ कि उसका वही रहना उसके लिए तथा अन्य सभी दृष्टियोसे श्रेयस्कर था। इसलिए मैने उससे वही रहनेका आग्रह किया।

यहाँ छोटालाल फिर बीमार पड़ गया है, उसकी बीमारीमे भी मनका हिस्सा काफी है; दूसरी भूले तो की ही है। यहाँकी बेकरी तैयार हो गई है। किन्तु रोटियो-का पहला घान सफल नही हुआ। वहाँकी रोटियोका क्या हाल है?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

२०५. पत्र : कुसुम देसाईको

सत्याग्रहाश्रम
६ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

ऐसा क्यो? बुखार फिर कैसे आ गया? इसमे मानसिक क्षोभ भी एक कारण है ही। रमणीकलाल भाईके पास इटलीकी बनी हुई गोलियाँ रख आया हूँ। यदि उनका कोई हानिकारक असर न मालूम हो तो उन गोलियोको लेना। कुनैनके बदले कई लोग इन गोलियोका सेवन करते है। मोतीलालजीने उनकी प्रशसा की थी, तब शायद तू वहाँ थी। ये गोलियाँ उन्होने भेजी है। प्रयोग करके देखना अन्यथा तुम्हे कुछ दिनतक कुनैन लेना चाहिए। यदि इसके साथ कटि-स्नान किया जाये तो उसका हानिकारक असर चाहे पूरा नष्ट न हो किन्तु कम अवश्य हो जाता है। मेरी दूसरी सलाह यह है कि बीमारीके जानेतक यानी कमसे-कम दस दिनतक लगातार दूध और फलोपर रहना। मनचाहा खर्च करना। ऐसे मामलेमे फल न खाना अपराध है। पहली बार जब तुझे बुखार आया तब भी फलोने मदद की थी यह तो तू जानती ही है। मै मान लेता हूँ कि मेरी इस सलाहपर तू अमल करेगी।

बुखारकी अवधिमे और जबतक कमजोरी रहे, शारीरिक परिश्रमका आग्रह मत रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६३) की फोटो-नकलसे।

२०६. तार : खादी भण्डार, श्रीनगरको

७ दिसम्बर, १९२८

खादी भण्डार
श्रीनगर

आपका तार। खादी-भण्डारो को प्रदर्शनी मे भाग लेनेकी पूरी छूट।

गांधी

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से।

२०७. तार : बनारसीदास चतुर्वेदीको

७ दिसम्बर, १९२८

बनारसीदास चतुर्वेदी
९१, अपर सर्कुलर रोड
कलकत्ता

आपका तार। अध्यक्षता इस शर्त पर स्वीकार कि सम्मेलन में दिखावा कम कामकाज ज्यादा हो।

गांधी

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से।

२०८. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

वर्धा
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मोतीलालजी,

आपके दो पत्र मिले। बादके पत्रके साथ सुभाष बोसके पत्रकी एक प्रति थी। परन्तु मैं उनके लिखनेसे पहले ही डॉ० विधानका पत्र आनेपर हथियार डाल चुका था। मेरे उत्तरके साथ उस पत्रकी एक प्रति आपके पास मौजूद है। आपने देखा होगा कि मैं खादी संघोंको इतने कम समयमें जितना सम्भव हो, प्रदर्शनीमें उतना भाग लेनेकी हिदायतें भेज ही चुका हूँ।

हृदयसे आपका,

पण्डित मोतीलालजी नेहरू
आनन्दभवन
इलाहाबाद

अंग्रेजी (एस० एन० १३७७४) की फोटो-नकलसे।

२०९. पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय सतीश बाबू,

आपका पत्र मिला। आपने कुछ कठिनाइयाँ गिनाई है, मैं उनको समझता हूँ। परन्तु यह भी अपने आपको दबाकर रखनेकी ही बात है। मुझे जो भी कहना था, मैं कह चुका हूँ। हम प्रदर्शनीमें शामिल-भर हो रहे है जितनेतक हमसे बन पड़े उतनेतक और जितने तटस्थ हम रह सके उतने तटस्थ भावसे।[1] बिलकुल स्पष्ट है कि समिति मिलके बने वस्त्रोकी प्रदर्शनीसे बड़ी-बड़ी आशाएँ लगाये थी और इसीलिए उनके दृष्टिकोणसे मिलके वस्त्रोको हटा देना एक काफी बड़ी बात हुई।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३७७५) की फोटो-नकलसे।

२१०. पत्र: एक्सेल जी० नडसेनको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

सचमुच मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं आपका अनुरोध तुरन्त मान लूँ। परन्तु मेरे लिए वास्तवमें शारीरिक रूपसे वह कर पाना लगभग असम्भव है। इस 'लगभग' शब्दका प्रयोग मात्र शिष्टतावश किया गया है, अर्थकी दृष्टिसे नही। इसलिए मेरी शुभकामनाएँ-भर लेकर मुझे क्षमा कर दीजिए। हाँ, आप अपनी पत्रिकाके लिए मेरे लेखोमें से जो भी चाहे ले सकते है।

हृदयसे आपका,

एक्सेल जी० नडसेन
व्रेडगेड
९० स्कर्न, डेनमार्क

अंग्रेजी (एस० एन० १३७७६) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको", १३-१२-१९२८।

२११. पत्र : भगवानदासको

७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं तो समझता हूँ कि समुचित उपचारसे आप अब भी अपने तपेदिकसे छुटकारा पा सकते हैं।

मैं 'नवजीवन' की एक प्रति आपको भेज रहा हूँ। यदि आप ग्राहक बनना चाहें, तो बन सकते हैं। आप अगर गुजराती पढ़ सकते हैं, तो गुजरातीमें क्यों नहीं लिखते?

हम यहाँ स्वतन्त्रता पानेके लिए यथासम्भव प्रयत्न कर रहे हैं।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत भगवानदास
मारफत आस्ट्रेलिया-इंडिया लीग
सिडनी
न्यू साउथ वेल्स
आस्ट्रेलिया

अंग्रेजी (एस० एन० १५०७३) की फोटो-नकलसे।

२१२. पत्र : कार्लो लुकारोको

७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। मुझे दुःख है कि आप अपने मनपर ऐसी छाप लेकर गये कि यहाँ आप मिलने आये तो मुझे कोई प्रसन्नता नहीं हुई थी। बात इतनी ही है कि आप मुलाकातियोंके लिए नियत समयके बाद आये थे और इसी-लिए मैं आपको अधिक समय नहीं दे सका था।

हृदयसे आपका,

श्री कार्लो लुकारो
ताउरमिना
सिसली
इटली

अंग्रेजी (एस० एन० १५०८७) की फोटो-नकलसे।

२१३. पत्र : फ्रान्सिस्का स्टैंडेनथको

७ दिसम्बर, १९२८

आपका पत्र मिला। उसपर सत्यवानके भी हस्ताक्षर हैं। जाहिर है आप ठीक अपनी पसन्दके मुताबिक ही भूषा धारण करेंगी, मेरी हिदायतो और मनाहीके मुताबिक नही। सदा मुस्कराती रहिए।

मैं फिलहाल वर्धामे हूँ। मीराबहन मुझसे मिलने यहाँ आ गई है। शीघ्र ही वह फिर चली जायेगी। बा मेरे साथ ही है। हम सब अच्छी तरहसे हैं।

आशा है कि आप दोनो भी वहाँ प्रसन्न होगे। आपको प्रसन्न रहना चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्रीमती फ्रान्सिस्का स्टैंडेनथ
ग्राज

अंग्रेजी (एस० एन० १५०९१) की फोटो-नकलसे।

२१४. पत्र : क्लास स्टॉर्मको[1]

७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय स्टॉर्म,

आपका हर पत्र मेरे मनमे हर्ष और प्रसन्नताका सचार कर देता है। मुझे बडी खुशी है कि आपकी इतनी अच्छी तरहसे निम रही है। आपके अध्यापक और उनके परिवारके चित्रवाला कार्ड पाकर मन बडा प्रसन्न हुआ।

जब-तब मुझे लिखते रहनेकी बात मत भूलिएगा।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५१०७) की फोटो-नकलसे।

१. हालैंडकी एक सस्था 'हाउस ऑफ मदरहुड' में प्रशिक्षणार्थी। यह संस्था एक इंजीनियर और ईसाई मिशनरी, कीस बोंकने शान्तिका प्रचार करनेके लिए खोली थी।

२१५. पत्र : एच० एस० एल० पोलकको

७ दिसम्बर, १९२८

प्यारे भाई,

आपका पत्र मिला और मगनलाल स्मारकके लिए आपका चन्दा भी। समझमे नही आता कि अब आपको दूसरा कौन-सा काम सुझाऊँ, जिसे आप पूरे मनोयोगसे करे। अस्पृश्यता-निवारणका काम तो है ही, फिर महिला सगठन और सामान्य राष्ट्रीय शिक्षाका काम भी है। गो-रक्षाके सिलसिलेमे चमडा पकानेका काम, हिन्दी प्रचार, कृषि सुधार, इत्यादि काम भी है। राजनीतिक गतिविधियो, जिनको पूरी तरह राजनीतिक कहा जा सकता है, ऐसी गतिविधियोके अलावा, ये सभी खर्चीले विभाग है। मेरे तई ये सभी रचनात्मक काम मेरे ठोस राजनीतिक कामके अभिन्न अग है। दूसरे, अर्थात् ध्वसात्मक किस्मके काम भी अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक है, लेकिन उनमे मेरा सबसे कम समय जाता है।

लिओनके बारेमे आपकी बात पढकर आश्चर्य हुआ। वाल्डो और लिओन जब गर्भमे थे, उन दिनो मिलीका जीवन अत्यन्त सयमित और हर प्रकारकी उत्तेजनासे मुक्त था और दोनो बच्चोका लालन-पालन भी बडे ही स्वास्थ्यप्रद और स्वाभाविक वातावरणमे हुआ था। इसलिए वाल्डोकी अकाल मृत्यु और लिओनकी बीमारीकी बात मेरी तो समझमे नही आती। मेरा तो यही अनुमान है कि लन्दन शहरके अत्यन्त विषाक्त वातावरणने ही आपके बालकोके इतने स्वस्थ शरीरोको भी जर्जरित कर डाला है। मुझे इस बातकी प्रसन्नता है कि लिओन अपने रोगके सबसे गम्भीर दौरसे उबरनेमे समर्थ हुआ है। आशा है कि उसकी श्रवण-शक्ति फिर पूरी तौरपर लौट आयेगी। काश, मैं लिओनको वकीलोके कलम घिस्सू कामसे हटाकर खुली हवामे लाकर रख सकता!

ब्रिटिश गायनाके बारेमे आपकी सफलतासे बडी खुशी हुई।

वेल्स देशके चरखेका नमूना मेरे प्राप्ति स्वीकारके समयतक यहाँ नही पहुँच पाया था। बादमे वह बिलकुल ठीक हालतमे पहुँच गया। इसके लिए अनेक धन्यवाद। मेरे पास आश्रममे उस तरहका एक बडा-पूरा चरखा मौजूद है। किसी जर्मन मित्रने भेजा था।

बछडेवाली घटनासे मुझे बडी सीख मिली है और उतना ही मनोविनोद भी। उससे मेरा काम बहुत काफी बढ गया है, क्योकि मुझे अहिंसाके विषयपर दर्जनो पत्र बल्कि निबन्ध पढने पडते है। इनमेसे अधिकाशके स्वर अहिंसात्मक न होकर हिंसात्मक ही होते है। मुझे तो याद नही पडता कि मैंने जो मत अब व्यक्त किया है, इससे भिन्न कोई मत मेरा कभी भी रहा है, हालाँकि इसे आज जितने स्पष्ट रूपसे समझ पा रहा हूँ, पहले कभी नही समझ पाया था। आपको शायद याद न

हो कि एक वार वेस्ट मेरे पास एक बिल्ली लाये थे। उसके सिरमे कीडे पड चुके थे जिसके कारण उसे बडी यत्रणा सहनी पड रही थी। मैंने तव भी वेस्टके इस सुझावका समर्थन ही किया था कि उसको पानीमे डुवोकर उस वेचारीकी जीवन-लीला समाप्त कर दी जाये। इसपर तुरन्त ही अमल किया गया था। आश्रममे भी मैंने मगनलालको पागल कुत्तोको खतम कर देनेकी इजाजत दे दी थी।

हृदयसे आपका,

अग्रेजी (एस० एन० १५१०८)की फोटो-नकलसे।

२१६. पत्र : वी० जी० चैकॉफको[1]

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[2]
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। आपने इतनी अधिक शिष्टताके साथ जो आपत्तियाँ की है, उनके सम्बन्धमे मै शीघ्र ही लिखनेकी सोच रहा हूँ। मै उनका जो उत्तर तैयार करूँगा उससे यदि मै आपको पूर्णत सहमत न करा पाया तो भी आप कृपया मेरी इस वातपर विश्वास कर लीजिए कि जीवनके मेरे अपने तौर-तरीकेमे कार्य-साधकता — इस शब्दका मै जो अर्थ समझता हूँ — का कोई स्थान नही है। मैने युद्धके सिलसिलेमे जो और जितना भी किया है वह इसी विश्वाससे किया है कि उस समय वैसा करना मेरा फर्ज था।

हृदयसे आपका,

श्री वी० जी० चैकॉफ
अध्यक्ष
मास्को शाकाहारी सस्था
उलित्जा उगारेवा १२
मास्को ९, यू० एस० एस० आर०

अग्रेजी (एस० एन० १५१०९)की फोटो-नकलसे।

१. टॉल्स्टॉयके एक मित्र और अनुयायी। इनकी आपत्तियोंके वारेमें गाधीजीने ७-२-१९२९ के यंग इंडियामें "युद्धके प्रति मेरा दृष्टिकोण" शीर्षकसे एक लेख लिखा था।
२. स्थायी पता।

२१७. पत्र : गर्ट्रूड मार्विन विलियम्सको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[1]
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र आनेसे बहुत पहले ही आपकी पुस्तिका[2] मेरे पास पहुँच चुकी थी। साथ ही, कई मित्रोका अनुरोध भी था कि मैं उसे पढ डालूँ। मै उसे अपने साथ लेकर चलता हूँ, इस उम्मीदमे कि उसे पढनेके लिए शायद कुछ समय निकाल लूँगा परन्तु अबतक मैं समय नही निकाल सका। समय मिलते ही मैं पुस्तिकाको पढ जाऊँगा और उसके बारेमे अपनी राय मैं आपको लिख भेजूँगा।

हृदयसे आपका,

एम० गर्ट्रूड मार्विन विलियम्स
३५ ईस्ट ३० वी स्ट्रीट
न्यू यार्क सिटी

अंग्रेजी (एस० एन० १५१११)की फोटो-नकलसे।

२१८. पत्र : ए० मिरबेलको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[3]
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

इतनी सुन्दर अंग्रेजीमे लिखा आपका पत्र पढकर दिल बाग-बाग हो उठा। आपकी भाषा समझनेमे मुझे कोई कठिनाई नही हुई।

मीराबहन इस समय मेरे पास ही है, पर उसने फिलहाल ठान ली है कि खादीका सन्देश और अधिक गहराईसे समझनेके लिए और अबतक उसने जो तकनीकी जानकारी हासिल कर ली है उससे खादी-आन्दोलनकी सहायता करनेके लिए भी वह भारतके कई प्रान्तोमे गाँव-गाँव घूमेगी।

बच्चोके लिए आप छोटी-सी जो भी चीज भेज सकें, बडी कृतज्ञता और प्रसन्नताके साथ स्वीकार की जायेगी।

श्रीमती गाधी, देवदास और शेष सभी लोग अच्छी तरहसे है।

मुझे इस बातसे खुशी हुई कि आप ब्रह्मचर्यका पालन करनेका प्रयत्न कर रहे है।

१ और ३. स्थायी पता।
२. देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ४१७।

मैं आजकल सत्याग्रहाश्रम, वर्धामे रह रहा हूँ, जो मुख्य आश्रमकी एक शाखा ही है। मै जनवरीमे साबरमती लौटूँगा।

हृदयसे आपका,

ए० मिरबेल
१२६, रयू द दोआई,
लिटिल नोर्द (फ्रांस)

अंग्रेजी (एस० एन० १५११२)की फोटो-नकलसे।

२१९. पत्र : जॉन हेन्स होम्सको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[1]
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला और मैकमिलन कम्पनीके पत्रकी एक प्रति भी। मुझे कहना पडता है कि उनके पत्रकी ध्वनि मुझे अच्छी नही लगी। मै समझता हूँ कि कम्पनीके लोग इस कामको भी व्यावसायिक दृष्टिके अलावा अन्य किसी दृष्टिसे देख ही नही सकते, जब कि मेरा ख्याल है मै आपको बतला चुका हूँ कि मैंने अपनी कृतियोके सम्बन्धमे कभी कोई व्यावसायिक सौदा नही किया। और यह सौदा भी मैंने रुपये पैसेके लाभकी दृष्टिसे नही किया था।

श्री एन्ड्रयूज आपसे सीधा पत्र-व्यवहार कर ही रहे है। आप दोनो जैसा भी उचित समझे, मैकमिलन कम्पनीसे तय कर ले।

मकमिलन कम्पनीका यह खयाल गलत है कि आत्मकथा सम्बन्धी लेख उनको सक्षिप्त करके, काट-छाँट करके ही दिये जायेगे। अध्याय जहाँ पूरा होगा, उसी रूपमे उनके पास भेज दिया जायेगा। इसलिए कि मेरे पास इतना समय नही कि उनको सवारने बैठूं, और समय अगर निकाल भी लूँ तो पश्चिमके पाठकोके लिए उनको कैसे तैयार करूँ—मै यह जानता ही नही हूँ।

आपके पत्रकी एक प्रति मैं श्री एन्ड्रयूजके पास भेज रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

रेवरेंड जॉन हेन्स होम्स
१२ पार्क एवेन्यू
न्यू यार्क सिटी

अग्रेजी (एस० एन० १५१२२)की फोटो-नकलसे।

१. स्थायी पता।

२२०. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रचूजको

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती[1]
७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय चार्ली,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा ख्याल है कि मैकमिलन कम्पनीके पत्रकी एक प्रति तो मैंने तुम्हारे पास भेजी थी, पर रेवरेड होम्सके पत्रकी प्रति नही भेजी। कोई चूक न रह जाये, इसलिए मैं अब दोनो पत्रोकी प्रतियाँ भेजे दे रहा हूँ। तुम होम्ससे पत्र-व्यवहार कर लेना और जैसा भी ठीक जँचे तय कर लेना। जाती तौर पर मैं तो इस सौदेसे कोई लाभ चाहता नही, पर अगर तुम पीयर्सन स्मारकके लिए कुछ चाहते हो तो अवश्य ही वैसा तय कर लेना।

होम्सके नाम मेरे पत्रमें[2] तुमने देखा होगा कि मैकमिलन कम्पनी इस कामको जिस व्यावसायिक दृष्टिसे देखती है वह मुझे कतई पसन्द नही। लेकिन मेरा ख़याल है कि कम्पनी अन्य किसी दृष्टिसे देख भी नही सकती।

मैं काफी भला-चगा हूँ। तुम यदि ब्रिटिश गायना, फीजी और दक्षिण आफ्रिकाकी यात्रापर जा रहे हो तो मैं समझता है कि अगले वर्षके मध्यसे पहले नही लौट पाओगे। पर अगर तुम स्वस्थ रहने और पहलेसे अधिक बलिष्ठ और स्वस्थ होकर लौटनेका वायदा करो, तो फिर मुझे कोई परवाह नही।

सप्रेम,

मोहन

सहपत्र-३
श्री सी० एफ० एन्ड्रयूज
११२, गोवर स्ट्रीट
लन्दन डब्ल्यू सी०-१

अंग्रेजी (जी० एन० २६३१)की फोटो-नकलसे।

१. स्थायी पता।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

२२१. पत्र : मेसर्स लॉंगमैन्स ग्रीन ऐंड कम्पनीको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
८ दिसम्बर, १९२८

प्रिय महोदय,

आपके दिनाक ३ दिसम्बरके पत्रसे ज्ञात हुआ कि आपने मॉरिस कृत 'इम्पीरियलिज्म'का प्रकाशन नही किया और न ही आप उसकी बिक्री करते है। फिर भी यदि आप कृपापूर्वक यह बता सके कि क्या आप यह पुस्तिका अन्य किसी पुस्तक-विक्रेतासे मुझे उपलब्ध करा सकते है, या आप मुझे इसके प्रकाशकका नाम-पता और यह भी बतला सके कि क्या भारतमे अन्य किसी पुस्तक विक्रेतासे यह मिल सकती है तो मै आभारी हूँगा।

इस बीच, यदि आप मुझे निम्नलिखित पुस्तके वी० पी० पी० द्वारा यथाशीघ्र भेज दे तो आपका बडा आभार मानूँगा।

१. लैम्बर्ट कृत 'इम्पीरियलिज्म'

२ एडम कृत 'लॉ ऑफ सिविलाइजेशन ऐड डिके'

कपास और कपास-उद्योगसे सम्बन्धित पुस्तकोंकी एक सूची भी नि:शुल्क भेजनेकी कृपा करे।

आपका,

मेसर्स लॉंगमैन्स ग्रीन ऐड कम्पनी लिमिटेड
बम्बई

अग्रेजी (एस० एन० १५११३)की फोटो-नकलसे।

२२२. पत्र : छगनलाल जोशीको

शनिवार [८ दिसम्बर, १९२८][1]

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम धीरजसे यथाशक्ति जितना हो सके उतना करते जाओ।

हँसमुखरायके प्रकरणसे मुझे आश्चर्य नही होता। उत्साहमे आकर वह बहुत ज्यादा करनेकी इच्छा करता है किन्तु कर नही पाता। मेरी सलाह है कि उसे बाहरका काम न सौपा जाये। आश्रममे जो उद्योग चल रहे है उनमे निमग्न हो जाये तो शायद वह दूसरी चीजे भूल जायेगा। उसे जानेकी इच्छा हो तो नि.सकोच जब जाना हो चला जाये। आदमी अच्छा है, इसमे मुझे कोई सन्देह नही है।

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

शारदाबहन यदि शुद्ध भावसे सर्वार्पण कर सके तो उससे जो गलतियाँ हुई है, उन्हे मै ईश्वरकी कृपाका प्रसाद ही समझूँगा। उसमे शक्ति तो है। मै उसके पत्रकी राह देख रहा हूँ।

राधा यदि काम करनेके लिए तैयार हो और यदि [उसका] परिवार रहना चाहता हो तो उसके लिए वेतन निश्चित कर देना। मेरे सख्त पत्रके बाद वह वहाँ रहेगी कि नही, कहा नही जा सकता। राधाका पत्र आज आना चाहिए था।

बापूके आशीर्वाद

कुसुमबहनके बारेमे तो मै तुम्हे लिख चुका हूँ। यदि तुम्हे ऐसा लगे कि उसे वहाँ रोक रखनेसे उसका शरीर कमजोर ही होता जायेगा और यदि वह यहाँ आना चाहती हो तो उसे भेज देना।

बापू

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो: श्री छगनलाल जोशीने

२२३. पत्र: कुसुम देसाईको

वर्धा
शनिवार, ८ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तू स्वस्थ नही हो रही है, यह क्या बात है? मेरे पास आनेकी इच्छा हो और उससे तेरे स्वास्थ्यके सुधरनेकी आशा हो तो आ जाना। भाई छगनलालको इस विषयमे लिखा है।[1] किन्तु प्रभावतीके बारेमे सोचना। फिर भी इस समय शरीरको सँभालना तेरा पहला कर्त्तव्य है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६४)की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२२४. पत्र : नारणदास गांधीको

[८ दिसम्बर, १९२८ के बाद][1]

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी सलाह मुझे ठीक लगती भी है और नही भी लगती। यदि सन्तोक और राधा तथा रुखीका मन आश्रममे हो, वे सादा जीवन सह सकती हो और यदि उन्हे सयुक्त भोजनालय पसन्द आता हो तो तुम्हारी सलाह मुझे ठीक लगती है। यदि वे आश्रममे ओत-प्रोत होनेके लिए तैयार हो तो उन्हे उसके आदर्शोमे श्रद्धा रखकर प्रति व्यक्ति १२ रुपयेमे अपनी गुजर चलानेका प्रयत्न करना चाहिए। यह राशि कम पडे तो वे मुझसे कह सकती है। ऐसी बात तो है नही कि हम किसीको बीमार होने देंगे या मरने देंगे। मजुलाका खर्च ज्यादा आयेगा तो वह कुछ काशीके पाससे नही मिलेगा। मै उनसे जिस वस्तुकी आकाक्षा करता हूँ, वह है—आश्रममे श्रद्धा और गरीबीमे रहनेकी तैयारी। यह मै न उनमे देख सका हूँ, न दूसरोमे। किन्तु सन्तोक और राधा तथा रुखीमे जब मै यह वस्तु नही देखता तो मुझे यह बात गडती है। उनके लिए सारे आश्रमको नही बिगड़ने दिया जा सकता। दूसरोको यदि न पुसाये तो वे जा सकते है। सन्तोकको न पुसाये तो भी आश्रमको उसका भरण-पोषण करना होगा। यह मेरी मानसिक स्थिति है। किन्तु तुम सब भाई जो राय दोगे वही मेरे लिए अन्तिम होगी। भाइयोमे भी इसका विचार तुम्हीको करना है और उन्हे तथा मुझे दिशा दिखानी है। राधाको वेतन दिया जाये, यह तो मै लिख ही चुका हूँ। मैने राधाको पत्र लिखा है। उसका जवाब उसने अभीतक नही दिया।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो—श्री नारणदास गांधीने

१. राधाको वेतन देनेके उल्लेखसे जान पडता है कि यह "पत्र : छगनलाल जोशीको", ८-१२-१९२८ के बाद लिखा गया था।

२२५. टिप्पणियाँ

कसाई पिता

सार देना ही सम्भव होनेके कारण एक युवक द्वारा लिखे गये पत्रका सार नीचे दिया जा रहा है:

> **मै विवाहित हूँ; मै विदेश चला गया था। मेरा एक मित्र था, जिसपर मुझको और मेरे माता-पिताको पूरा विश्वास था। उस मित्रने मेरी पत्नीको बहका लिया है। अब मैंने विदेशसे वापस आकर अपनी पत्नीको उस मित्रके संसर्गसे गर्भवती पाया और पितासे कहा तो वे कहते है कि गर्भपात करा देना चाहिए; यदि ऐसा न हुआ तो कुटुम्बकी लाज चली जायेगी। मुझे गर्भपात करानेमें धर्म नहीं दिखता। स्त्रीको बड़ा पश्चात्ताप हो रहा है। उसने खाना-पीना बन्द कर रखा है, और बहुत रोती-पीटती है। मेरा क्या धर्म है, कृपया मुझे बतलायें?**

यह पत्र मै बहुत सकोचके साथ प्रकाशित कर रहा हूँ। ऐसी घटनाएँ समाजमे होती रहती है, यह सभी जानते है। उनके बारेमे प्रकट रूपसे मर्यादाके साथ चर्चा करना मुझे अनुचित नही जान पडता, यही नही वल्कि वह आवश्यक मालूम होता है।

गर्भपात नही कराना चाहिए, यह तो सूर्यप्रकाशकी तरह स्पष्ट है। जैसा दोष इस बेचारी पत्नीने किया है, वैसा दोष हजारो पति करते है। पर उनको कोई कुछ नही कहता। समाज इसे बर्दाश्त तो कर ही लेता है, इसकी निन्दा भी नही करता। पुरुष जिस विकारके वशमे है, उसीके वशमे स्त्री भी है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि पुरुषका दोष प्रकट नही होता और स्त्रीका सहज ही प्रकट हो जाता है।

स्त्री दयाकी पात्र है। उसके बालकका प्रेमके साथ पालन करना पतिका धर्म है। पिताकी इच्छाके आधीन न होना धर्म है। अब पति अपनी पत्नीके साथ सभोग करे या न करे, यह एक जटिल प्रश्न है। यदि पति पत्नीपरायण हो, उसने स्वय कभी दोष न किया हो तो पत्नीसगका त्याग करना उसके लिए उचित है। वह पत्नीका पालन-पोषण करे, उसके लिए ज्ञान प्राप्त करनेकी व्यवस्था करे, और पत्नीको शुद्ध रहनेमे सहायता करे। यदि पत्नीको सच्चा पश्चात्ताप हुआ हो और पति उसे ग्रहण करे तो मुझे उसमे कोई दोष नही दीखता। और ऐसी स्थितिकी कल्पना मै कर सकता हूँ, जबकि उसे, जिसका मन दोषसे पूरी तरहसे मुक्त हो गया है, ग्रहण करना धर्म हो जाता है।

बेजोड़ विवाहकी कहानी

एक नवयुवक लिखते है.

> **मेरी आयु १५ वर्षकी है। मेरी स्त्रीकी आयु १७ वर्षकी है। इससे मै बड़ा ही दुखी हूँ। मैंने इस बेजोड़पनका विरोध किया तब मेरे चाचा और**

पिता मुझे जनाना और हिजड़ा कहकर झिड़कने लगे। लड़कीके पिताने पैसेवाला घर देखकर मुझ छोटी उम्रवालेके साथ अपनी लड़की ब्याह दी, यह उनकी कितनी बड़ी भूल है? मेरे पिताने मुझे बचपनसे गढ़ेमें डाल दिया और यह बेजोड़ शादी कर दी। इसकी अपेक्षा तो मेरा विवाह ही न करते तो अच्छा रहता। जब मेरा विवाह हुआ, उस समय इतनी बुद्धि होती तो मैं विवाह करता ही नहीं। लेकिन लाचारी है। अब मुझे क्या करना चाहिए? जवाब 'नवजीवन' में दीजियेगा।

इस पत्रमे ठिकाना-पता है, लेकिन इस डरसे कि घरके लोग पत्र न पहुँचने देंगे, लेखकने 'नवजीवन' द्वारा जवाब माँगा है। यह स्थिति 'दयाजनक' है। यदि इस नवयुवकमे हिम्मत हो तो उसे यह विवाह अवश्य नामजूर कर देना चाहिए। सच पूछिए तो यह विवाह विवाह ही नही है। सप्तपदीमे दोनोने क्या-क्या प्रतिज्ञाएँ की, उनका भी इस युवकको और लड़कीको भान नही हो सकता। दोनो साथ-साथ तो रहे ही नही है। विवाह नामजूर करनेसे घरबार छोडना पडे तो छोड देना चाहिए। पिता और श्वसुरकी नजरोमे यह लेख आये तो उनसे मै प्रार्थना करूँगा कि वे इस निर्दोष बालक और बालाको गढेमे न गिराये, पापसे बच जाये। १५ वर्षका युवक पढने और उद्योग करने लायक है, घर-ससार चलाने योग्य बिल्कुल नही है। माँ-बापका फर्ज है कि वे अपना धर्म समझे, यदि न समझे तो लड़को और लड़कियोको नम्रतापूर्वक विरोध करके धर्मका पालन करना चाहिए।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ९-१२-१९२८

२२६. रक्त-रंजित मार्ग

लालाजी और उनके साथियोको अकारण मारा-पीटा गया। इससे भी सरकार और आयोगको शान्ति नही मिली लगती। ऐसा प्रतीत होता है कि स्थानीय सरकारने पजाबकी पुलिसको निर्दोष मानकर उसे प्रमाणपत्र दे दिया है। इससे लखनऊकी पुलिसको प्रोत्साहन मिला है, क्योकि यदि लाहौरकी पुलिसके लिए लालाजी और उनके साथियोपर आक्रमण करनेका कोई कारण न था तो लखनऊकी पुलिसके लिए पं० जवाहरलाल नेहरू और उनके साथियोपर आक्रमण करनेका तो उससे भी कम कारण था। और जहाँ लाहौरकी पुलिसने सिर्फ लाठियोका प्रयोग किया, हम देखते है कि वहाँ लखनऊकी पुलिसने निर्दोष और निहत्थे लोगोपर अपने डडोके अलावा सगीनोका भी प्रयोग किया। प० जवाहरलाल नेहरूके एक बयानसे तो जान पडता है कि उसने लोगोपर पत्थरोकी वर्षा करके भी अपनी बहादुरी दिखाई और फल-स्वरूप दो व्यक्ति मरणासन्न है।

इस प्रकार आयोगका मार्ग निर्दोष मनुष्योके रक्तसे सिंचित है। राजकीय आयोग-के सदस्योको चारो ओर की जानेवाली हडतालो और काले झडे लिए हुए लोगोके

जुलूसो द्वारा यह जता दिया गया है कि जनता उन्हे नही चाहती फिर चाहे सरकार द्वारा इकट्ठे किये गए कुछ अधिकारी और सामान्य जन भले ही आयोगका स्वागत करे, या कुछ लोग उसके सम्मुख साक्षी देनेको पहुँच जाये। भारत जैसे विशाल देशकी करोडोकी आबादीमे से आयोगका स्वागत करनेवाले कुछ लोग भी न निकले तो यह आश्चर्यकी बात होगी। किन्तु यह स्पष्ट है कि राजनीतिमे भाग लेनेवाले लोगोका अधिकाश भाग आयोगको नही चाहता। इसके बावजूद यदि आयोग एक नगरसे दूसरे नगरमे दौरा करता हुआ घूमता रहे तो इसका उद्देश्य अपनी शक्तिके प्रदर्शनके अतिरिक्त और कुछ नही जान पडता। आयोगको साक्षियोकी खोजमे नगर-नगर घूमनेकी कोई आवश्यकता नही है, उसे किसी फौजदारी मामलेकी तहकीकात तो करनी नही है और न मौकेपर कोई छानबीन ही करनी है, उसे तो केवल नामजद साक्षियोसे पूछताछ करनी है। वह इस कार्यको कम रुपये खर्च करके, कम कष्ट उठाकर तथा खीझे हुए लोगोको और अधिक न खिझाकर कर सकता है। किन्तु जान पडता है कि ऐसा करनेमे उसे लज्जा आती है। उसे तो उद्यान-भोज चाहिए, मानपत्र चाहिए और उसके पास मिलनेके लिए शिष्टमण्डल आने चाहिए और यह सब स्वाग एक स्थानपर बैठकर नही किया जा सकता।

किन्तु यदि आयोग अपनी मर्यादा समझता हो और सरकार शान्ति कायम रखना चाहती हो तो स्वय उसे आयोगके सदस्योको यह बात बता देनी चाहिए कि "शहरोमे आपके जानेसे लोगोमे रोष उत्पन्न होता है और लोगोका बहुत बडा भाग आपकी उपस्थितिको सहन नही कर सकता तथा शहरोमे आपके जानेसे शाति भग होनेका बहुत भय है, अत आप कृपा करके एक जगह बैठकर अपना काम करे।" यदि सरकार आयोगको ऐसा कह दे तो वह एक जगह बैठ जाये। किन्तु सरकार तो शान्ति चाहती नही, उसे तो अपना रोब जमाना है। इसलिए वह लोगोको दबा कर भी आयोगके सदस्योके हुजूमको हर शहरमे घुमाना चाहती है।

और यदि मेरा अनुमान सही हो तो पण्डित मोतीलालजीने सरकारको जो चेतावनी दी है वह चिकने घडेपर पानी ही सिद्ध होगी। पण्डितजीकी चेतावनी यह है "आपने लखनऊमे जो-कुछ किया है उसके कारण यदि वहाँ या देशके किसी अन्य भागमे फिलहाल कोई उपद्रव हुआ तो उसकी पूरी जिम्मेदारी उन अधिकारियो पर होगी जिन्होने तीन दिन पहले बेहूदगीका बर्ताव किया है।" इसमे कोई सन्देह नही है कि अधिकारियोकी ओरसे अत्याचार किये जाने और लोक-नेताओके पीटे जानेके बावजूद लोगोने जैसी शान्ति कायम रखी वैसी शान्ति केवल हिन्दुस्तानमे ही कायम रखी जा सकती है। ससारके किसी भी अन्य भागमे ऐसा अपमान किये जाने पर खून-खराबी हुए बिना न रहती। इसे भले ही कुछ लोग कायरता माने, किन्तु मेरा तो विश्वास है कि इसका कारण लोगोको दी गई अहिंसाकी शिक्षा है। सन् १९२०से जनताको जो शान्तिका पाठ पढाया जा रहा है उसे उसने कुछ अश तक ग्रहण किया है ऐसा मेरा विश्वास है। पिता-पुत्र पण्डितद्वयका अनुमान भी यही है और उन्होने अपने भाषणोमे अहिंसापर बहुत जोर दिया है।

यदि पण्डित मोतीलाल, जवाहरलाल और मेरा अनुमान ठीक है तो लाहौर और लखनऊमे किया गया अहिंसाका पालन एक शुभ लक्षण है। सामान्यत जितने दिनमे हमारे मामलेके तय होनेकी आशा की जाती है वह उससे बहुत जल्दी तय होगा। फिर वह चाहे अहिंसासे तय हो अथवा हिंसासे। आजकी त्रिशंकुवाली दुविधा-भरी स्थिति लम्बे अर्सेतक नही चलेगी। किन्तु इतना तो स्पष्ट दिखाई देता है कि नेताओके मार खानेसे ही स्वराज्य नही मिलेगा। अहिंसा या हिंसाके मार्गपर चलते हुए भारी बलिदान दिये बिना काम नही चलेगा। प्रभुसे मेरी प्रार्थना तो यह है कि लोगोने १९२०मे अहिंसाकी जो प्रतिज्ञा ली थी, वे उसका पालन करते हुए बलि-दान करे और ससारके इतिहासमे भारतको अहिंसाकी लडाईमे प्रधान स्थान मिले, क्योकि इस हिंसा-व्यथित विश्वके लिए शान्तिकी परम आवश्यकता है और शान्तिका मार्ग दिखानेवाला कोई देश यदि आज नजर आता है तो वह भारत ही है।

आयोगकी रक्त-रजित यात्राके सम्बन्धमे विचार करते हुए एक खेदजनक और लज्जाजनक बात है; जिसे यों तो हमे भूल जाना चाहिए किन्तु उसे भुलाना बहुत कठिन है। लोगोका जो अपमान होता है उसका प्रभाव आयोगके अग्रेज सदस्योपर कुछ नही होता, यह बात तो शायद समझमे आने योग्य मानी जा सकती है, किन्तु आयोगमे जो भारतीय सहायक सदस्य नियुक्त किये गये है वे इस अपमानको सहते हुए अपने पदसे कैसे चिपके है! यह बात आश्चर्य और दु ख उत्पन्न करती है। इन सदस्योके व्यवहारमे हमे अपनी दुर्बलता मूर्त रूपमे दिखाई दे सकती है। वे यह जानते है कि आयोगके बहिष्कारमे भारतके सभी दलोके अग्रणी लोग सम्मिलित है। वे ऐसे बहिष्कारकी भी परवाह नही करते, इस बातको लोग कैसे भूल सकेगे?

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ९-१२-१९२८

२२७. सुन्दर पिंजाई

कपास सम्बन्धी क्रियाएँ किसी समय इतनी प्रचलित थी कि उनके आधारपर संसारकी सभी भाषाओमे कितनी ही कहावते प्रचलित हो गई और कितने ही अलकारोका जन्म हुआ। कोई बहुत बारीकीसे किसीकी भूल निकालता हो तो कहते है "आप तो बहुत महीन कातते है।" कोई बेमतलबकी बात करता रहता हो और उसमें दूसरोकी निन्दा भी हो तो "यह क्या चरखा चला रखा है आपने" इस तरह कहते है। इससे मालूम होता है कि कातने-पीजनेकी कलामे कम-ज्यादा कताई या पिंजाईके होने आदिका भी लोगोको ज्ञान था। आज हम यह ज्ञान भूल गए है। इससे भाषामे कपासकी क्रियासे सम्बन्ध रखनेवाले शब्दोके अनेक सूक्ष्म प्रयोगोको भी भूल गये है। अब इस क्रियाका पुनरुद्धार हो रहा है। उसे यज्ञके समान माननेवाले उसे सुन्दर बनानेका प्रयत्न कर रहे है और रात-दिन उसके सुधारकी चिन्ता किया करते है। वे जानते है कि ज्यो-ज्यो इन क्रियाओमे सुधार होते जायेगें, त्यों-त्यो

दरिद्रनारायणकी थोडी आमदनीमे वृद्धि करनेकी शक्ति आती जाएगी। इस विचारसे एक सेवाभावसे कातनेवाले लिखते है।[1]

आजतक मै स्वय यही मानता आया हूँ कि कपासको धूप दिखाकर पीजनेमे सुविधा होती है। लेकिन उपर्युक्त पत्र-लेखक अनुभवी है। पीजनेकी क्रियाका अभ्यास उन्होने अच्छी तरह किया है और दूसरोको वे सिखलाते भी है। उनका तर्क मुझे सार्थक जान पडता है। इसलिए उनके जैसे अन्य अनुभवी लोगोका अनुभव जाननेके लिए मैने यह पत्र प्रकाशित किया है। मुझे आशा है कि इस काममे रस लेनेवाले और नियमित रूपसे पीजनेवाले अपने अनुभव मुझे लिख भेजेगे। और जो यज्ञकी भावनासे कातते है मै उन्हे, उपरोक्त लेखकने जो दिलचस्पी दिखाई है उसका अनुकरण करनेका सुझाव देता हूँ। यज्ञ करनेवाले यदि अपना काम वेगार समझकर न करते हो, यज्ञ-क्रियामे हमेशा प्रभु-दर्शनकी अभिलाषा रखते हो तो उन्हे चाहिए कि उस क्रियामे अधिकसे-अधिक दिलचस्पी ले, उसे सुन्दर बनाये और यदि किसी दिन कातने आदिका समय न मिले या वे उसे न कर पाये तो उसके लिए दु खित हो। भावुक वैष्णवोकी ठाकुरजीकी पूजाको मै जानता हूँ। ठाकुरजीका वे नित्य नई तरहसे शृगार करते है, उनके लिए अनेक प्रकारके भोग तैयार करते है और यदि मुसाफिरी या बीमारीके कारण वे सेवा नही कर पाते तो व्याकुल हो जाते है। वे खाना तो छोड ही देते है या जबतक सेवा न हो सकती हो तबतक मामूली-सा कुछ खाकर निर्वाह कर लेते है। आजकल तो ऐसी सेवामे आडम्बर, मिथ्याभिमान और स्वय ऐश्वर्य भोगनेकी इच्छाने घर कर लिया है। इससे यह सेवा निन्दनीय बन गई है और ऐसी सेवा करनेवालोमे आत्मशुद्धि होनेके बदले अधिकाशत चारित्रिक मलिनता ही देखनेमे आती है। शुद्धसे-शुद्ध भावनाओसे पैदा हुए ऐसे उपचारोका ससारमे दुरुपयोग ही होता रहता है। इसीसे नरसी मेहताने कहा है .

> शु थयु तिलकने तुलसी धार्या थकी?
> शु थयु माल ग्रही नाम लीधे?
> ए छे परपच सहु पेट भरवा तणा।[2]

अतएव कताईके महायज्ञका दुरुपयोग कभी न हो, यह बात यज्ञ-कर्त्ताओकी शुद्धि और ज्ञानपर अवलम्बित है।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ९-१२-१९२८

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने पींजनेके पहले रुईको धूप दिखानेकी प्रचलित क्रियाको गलत बताया था।

२. भालपर तिलक और गलेमें तुलसी धारण कर लेनेसे क्या हुआ और माला लेकर नाम जपनेसे ही क्या हुआ, ये तो सब पेट भरनेके प्रपंच है।

२२८. पत्र : महादेव देसाईको

वर्धा
९ दिसम्बर, १९२८

चि० महादेव,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे अनुभव बहुत उपयोगी होगे, इसमे कोई शंका नही है। मृत्युजयकी[1] मूर्खतामे मेरा कुछ हिस्सा है। उसने मुझसे पूछा था कि यदि मै गया तो मेरे साथ समाचारपत्रोके कोई सवाददाता भी साथ जायेगे, ऐसी स्थितिमे क्या वह उन्हे ऐसा लिख सकता है कि उसे एजेसी मिल सकती है या नही। मैने सोचा कि इसमे कोई हानि नही है। मैने ऐसे लम्बे व्यापारिक पत्रकी आशा नही रखी थी। किन्तु अब इस गहरी चोटकी शिकायत किससे करूँ?

त्रिवेदीने तुम्हे जो उद्धरण भेजा है उसका मूल उसने एक माह पूर्व मुझे भेजा था। अवसर आनेपर उसका उपयोग करनेके लिए उसे रख लिया है।

रा० ब०के भाषणका चरखा-सम्बन्धी अश मैने पढ लिया है; उसका उपयोग करूँगा।

वल्लभभाई जो कहते है उसे स्वय करते न हो तो आश्चर्यकी बात होगी। उन्हे तो बारडोलीके द्वारा स्वराज्य लेना है और यह तो तभी हो सकता है जब वे उसमे बिलकुल निमग्न हो जाये। तुम्हे घोडेपर बैठना सीखनेको कहे उसके पहले वल्लभभाई स्वय ही सीखे, ऐसा उनसे कहना। इसके लिए वे कुछ बूढे नही हो गये है।

मेरी गाडी ठीक चल रही है। अपना भोजनका प्रयोग मै बहुत सावधानीसे कर रहा हूँ; उसमे अब मैने बादामके दूध और फलोको भी दाखिल किया है। तुम करसनदासको भेजनेके लिए दिया हुआ तार[2] भेजना भूल गये, यह अक्षम्य तो है ही। उसके कारण मुझे काफी परेशानी हुई। करसनदासको बहुत कष्ट हुआ। सूरज-बहनको बहुत जरूरतके समय मदद नही मिली। किन्तु तुम्हारे तो अक्षम्य दोष भी मै माफ करता आया हूँ इसलिए इसे भी माफ करता हूँ। दुबारा ऐसी भूल न करना। अथवा ऐसा कोई काम जब मेरे जैसा कोई व्यक्ति तुम्हे सौपे तो उससे कह देना चाहिए कि मै यहाँ एक-दो दिनके लिए ही आया हूँ अतः ज्यादा अच्छा यह होगा कि यह मुझे न सौपा जाये। अब मुझे याद आता है कि उस समय बरामदेमे तुम्हारे सिवा और कोई नही था अत उक्त तार मैने तुम्हारे ही हाथमें दिया था। लेकिन अब इस बातको लेकर दुखी होनेकी जरूरत नही है। मैने उसकी इतनी लम्बी चर्चा इसलिए की है कि तुम भविष्यमे सावधानी बरतो। तुम शान्तिकुमारको भी मेरा सन्देश देना भूल गये थे किन्तु वह छोटी-सी बातके बारेमे था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ११४४०) की फोटो-नकलसे।

१. राजेन्द्रप्रसादके पुत्र।

२. देखिए "पत्र: महादेव देसाईको", ५-१२-१९२८।

२२९. पत्र : कुसुम देसाईको

वर्धा
रविवार, ९ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। एक तरहसे तुम्हारा अनुमान सही है। कह सकते हैं कि इस समय मुझे वहाँकी अपेक्षा अधिक काम करना पड रहा है। सुवह जल्दी नही उठता। रातको नौ बजेसे पहले सो जाता हूँ। किन्तु वहाँ कुछ फुरसत मिल जाती थी; कुछ चल फिर पाता था, यहाँ तो सिर झुकाये लिखता या लिखवाता ही रहता हूँ; तव वडी मुश्किलसे कुछ काम हो पाता है। किन्तु शक्तिसे ज्यादा काम नही करता। मैं उसकी चिन्तामे भी नही पड़ता। वश-भर काम करके निश्चिन्त हो जाता हूँ। नियमपूर्वक दो वार सैर करने जाता हूँ। इस विषयमे नियमका पालन यहाँ ज्यादा अच्छी तरह करता हूँ।

तुम्हें अपना स्वास्थ्य सुवारना चाहिए। दूध और फलके लाभसे कदापि वंचित मत रहना। फिलहाल इन दो चीजोपर ही निर्भर रहो। थोड़ी कुनैन भी लेती रहना। वुखार फिर नही आना चाहिए। इन दिनो कोई भी हानिकर चीज न खाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६५) की फोटो-नकलसे।

२३०. पत्र : प्रभावतीको

रवीवार [९ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० प्रभावती,

तुमारा खत मीला। मृत्युजयके खतमे था शुक्रवारको द्वारिका जानेका संभव है। परतु एक दिन ठहर जानेके वाद तो तुमारे स्वभावको जानता हुआ मैंने खत लीखा हि है।

तुमसे जितना हो सके इतना हि काम कीया करो। ज्यादा करनेके लोभमे वीमार मत पड़ो। अव तो आधा समय चला गया। जानेवारी मासमें तो आनेकी उमीद है। और कुसुमके पत्रसे जानो।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३२३ की फोटो-नकलसे।

१. कुसुम देसाईके पत्रके उल्लेखसे; देखिए पिछला शीर्षक।

२३१. पत्र : छगनलाल जोशीको

रविवार [९ दिसम्बर, १९२८][1]

भाईश्री छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। लक्ष्मीदास या महादेवके न आ सकनेसे तुम्हे घबराना नही चाहिए। आखिरकार बोझ तो मन्त्रीको ही उठाना है।

चरखा-सघके साथ हमारे सम्बन्धके[2] विषयमे लक्ष्मीदासकी राय समझ सकता हूँ। उसके और तुम्हारे दोनोके विचारोका समर्थन भी किया जा सकता है। किन्तु अन्तमे निर्णयात्मक राय तो तुम्हारी ही मानी जायेगी। क्योकि जो निर्णय लिया जायेगा उसपर अमल तो तुम्हे कराना होगा। जिसके हाथमे सस्थाका प्रवन्ध हो उसके मनकी व्यवस्था ही प्रारम्भ की जानी चाहिए। किन्तु मुख्य बात तो तुम्हारे और नारणदासके वीच मेल बैठनेकी है। यहाँ बैठे-बैठे तो मुझे यही लगता है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

यह तो मुझे भी लगा कि शारदावहनका पत्र स्पष्ट नही है। तुम शायद उनसे वात करके ज्यादा समझ सकोगे।

तुम दूसरोका अनुकरण करनेकी भूल नही करना। खानेके लिए दूध आदि जो-कुछ भी जरूरी हो लेते रहना। मेरी तो ईश्वर निभा देता है, क्योकि मेरे प्रयोग स्वयस्फुरित है। तुम ऐसा करोगे तो वह नकल होगी। शरीरको ताकतवर वनानेके लिए जैसी खुराक जरूरी हो वैसी लेते रहना और काममे जुटे रहना। मेरे प्रयोगोके कारण आजतक मेरा काम रुका नही है, बल्कि मै तो मानता हूँ कि उनसे मेरा काम आगे ही बढा है क्योकि उनके कारण मैंने चित्तकी प्रसन्नता प्राप्त की है।

बापू

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

२. आश्रम और आश्रममें स्थित चरखा संघके सम्बन्ध।

२३२. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

आश्रम, वर्धा
९ दिसम्बर, १९२८

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। तुम्हारा भेजा हुआ चैक लालाजीके कोषमे जमा कर दिया है।

मुझे पारसी बहन या उस आयरिश महिलाको आश्रम भेजनेकी जरूरत दिखाई नही देती। यदि उन्हे मालूम हो कि बिस्कुट किस तरह बनाये जाते है तो वह तरीका लिखकर भेज दे, बस इतना ही काफी होगा। बिस्कुटमे घी, तेल कुछ न डाले तो भी वे हलके बनने चाहिए।

जहरीले साँपोकी पहचानके बारेमे एक पुस्तिकाकी समीक्षा मैंने ६ या ७ (दिसम्बर)के आसपास 'टाइम्स' मे देखी थी। लेखकका नाम मै भूल गया हूँ। यह समीक्षा 'करट टापिक्स' मे थी। यदि यह पुस्तिका मिल सके तो भेजना।

शकरलालने लिखा है कि सुमन्तके विषयमे समाचारपत्रोमे कुछ लिखनेकी जरूरत नही है। उसे निकाल तो दिया है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

किताबका नाम मिल गया है
'पोयजनस टेरस्टियल स्नेक्स ऑफ ब्रिटिश इडिया ऐड हाउ टु रेकगनाइज दैम' (ब्रिटिश भारतके विषैले साँप और उनकी पहचान), लेखक कर्नल वॉल, प्रकाशक बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७९० अ)की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

२३३. पत्र : नारणदास गांधीको

[१० दिसम्बर, १९२८के पूर्व][1]

चि० नारणदास,

इसके साथ एक समाचारपत्रका वह अक जिसमे हैदराबाद स्टेटकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है तथा बावू रूपनारायणका पत्र भेज रहा हूँ। समाचारपत्रकी उस रिपोर्टसे मैंने लेने लायक हिस्सा लेकर और उसपर टिप्पणी[2] लिखकर 'यग इडिया'को भेजी है। उसमे मैंने रूप बावू द्वारा स्वीकृत सहकारी योजनाकी रूपरेखा भी दी है। उसे पढकर विचार करनेके बाद तुम्हे उसमे यदि कोई सशोधन और परिवर्धन जरूरी जान पडते हो तो उन्हे लिख भेजना।

महीन सूत कातनेके सम्बन्धमे तुम ऐसा क्यो लिखते हो कि हम २० अकसे ज्यादाका सूत नही कात सकते। यदि वहाँ महीन सूत कातने योग्य कपास न मिलती हो तो यहाँसे अमेरिकी बीजकी जितनी कपास चाहिए मिल सकती है। मै आजकल ३० नम्बरका सूत कातता हूँ। मुझे इसमे कोई कठिनाई नही होती। उसकी धुनाई करनेमे भी कोई थकावट नही लगती। पौन तोला कपास धुननेमे और उसकी पूनियाँ बनानेमे मुझे मुश्किलसे पन्द्रह मिनट लगते है। उसमे से मै ३० अकका सूत निकालता हूँ। इस तरह मुझे छ आना-भर कपास काफी होती है। अभी मैंने उसकी मजबूती नही निकाली है। निकालनेके लिए छोटेलालसे कह दिया है। हो सकता है, मजबूती अभी अच्छी न आई हो। किन्तु मुझे निश्चय है कि थोडे अभ्यासके बाद वह अवश्य आ जायेगी। मेरी यह कल्पना कि हमे महीन सूत कातना चाहिए, बहुत पुरानी है। मै ऐसा मानता हूँ कि हमे स्वय तो जो भी मोटी खादी मिल जाये, पहनना चाहिए किन्तु स्वय बारीक सूत कातना चाहिए और उसका उपयोग उसे करने देना चाहिए जिसे उसकी ज्यादा जरूरत हो। इसपर विचार करना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री नारणदास गांधीने

१. पत्रमें कहा गया है कि गांधीजी उस समय ३० नम्बरका सूत कात रहे थे और उस समय इस सूतकी मजबूती नही निकाली गई थी। इससे ज्ञात होता है कि यह छगनलाल जोशीके नाम लिखित ११-१२-१९२८के पत्रके पूर्व लिखा गया था।

२. देखिए "हैदराबाद राज्यमें खादी", २०-१२-१९२८।

२३४. एक सन्देश

वर्धा
१० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका तार और पत्र दोनो एक ही साथ मिले। सन्देश यह है.

हमारा धैर्य अपार है। लोक-विख्यात है। भावी पीढ़ियोको यह कहनेका अवसर मत दीजिए कि हमारा यह धैर्य कायरोका धैर्य था, यह धैर्य नही हमारी कापुरुषता थी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १४६०९)की माइक्रोफिल्मसे।

२३५. पत्र: विट्ठलदास जेराजाणीको

वर्धा
१० दिसम्बर, १९२८

भाईश्री विट्ठलदास,

तुम्हारा पत्र मिला। खादी प्रचार विभाग अलग होना चाहिए, इस सुझावका एक पत्र बरेलीसे आया था और तुमने वह मुझे भेजा था, याद है न? इस सम्बन्धमे 'यग इडिया' मे मैने लिखा था। उसके उत्तरमे सौ-दो-सौ रुपये प्राप्त हुए है। तबसे प्रचारके विषयमे मै विचार तो करता ही रहा हूँ। किन्तु यह काम करे कौन, यह विचार करते समय तुम्हारी याद आई। तुम बम्बईमे कुछ काम तो कर ही रहे हो। तुम्हे लगभग सारे भारतमे खादीकी स्थितिके बारेमे अनुभव प्राप्त हो चुके है। इसलिए शायद तुम्हे प्रचार-कार्यका अनुमान होगा और तुम उसे कर भी सकोगे। इसीसे मैने तुमसे प्रश्न पूछा था कि क्या तुमसे इस बारेमे दूसरोसे अधिक समझनेकी आशा रखी जा सकती है?

अब भी बात समझमे न आई हो तो लिखना।

कश्मीर-सम्बन्धी वह लेख अबतक पूरा नही कर सका हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९७६६)की फोटो-नकलसे।

२३६. पत्र : कुसुम देसाईको

वर्धा
मौनवार, १० दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कुनैन रोज ले रही हो सो ठीक ही कर रही हो। और कटिस्नान? उसकी बहुत जरूरत है। कुनैनके दोषोका उससे जरूर निवारण होगा।

कातिसे[1] सेवा क्यो न लो। जो रोज सेवा करनेको तैयार है वह सेवा करा भी सकता है। आजके लिए बस इतना ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६६)की फोटो-नकलसे।

२३७. पत्र : आश्रमकी बहनोंको

वर्धा
१० दिसम्बर, १९२८

बहनो,

तुम्हारी तरफसे पत्र मिल गया।

मेरे बारेमे समाचार तो उस पत्रमे देखोगी, जो मैंने सारे मन्दिरके लिए लिखा है।

रसोईघरमे शोर बन्द करनेके लिए केवल तुम्हारा निश्चय ही चाहिए। एक बार निश्चय कर डालो, तो शोर बन्द हो ही जायेगा।

रसोईघरका काम अभीतक अनुकूल न आया हो, तो एक बातकी याद दिलाऊँ। जहाँ यह बात हो कि एक सालतक दूसरा कोई विचार ही नही करना है, वहाँ स्पष्ट है कि उसे पसन्द कर लेनेमे ही लाभ है।

मगर अभी जो दु:खद घटना हो गई है, वह तुम सब बहनोके विचार करने योग्य है। यह घटना कोई छिपी हुई नही है, छिपी रहनी भी नही चाहिए। इसीलिए यहाँ उसकी चर्चा करता हूँ। इस दोषमे एक ही बहन नही, परन्तु कमसे-कम तीन थी। इन तीन बहनोकी तरफ उंगली उठानेकी भी जरूरत नही, क्योकि ऐसे दोष हम सभी, स्त्री हो या पुरुष, करते है, और अपने जीवनमे किये भी होगे। मै तो चाहता हूँ कि तुम इससे दो बाते सीखो। वे ये है : यदि सम्मिलित भोजनालयके कारण ही हम जान सके हो कि यह पाप हममे है, तो उस भोजनालयको तो

१. हरिलाल गांधीके पुत्र।

चालू ही रखेगे। घरमे पडे-पड़े हम अपनी पाप करनेकी शक्तिको नही जानते। वह तो मौकेपर खिलती है। यहाँ सग और प्रसग दोनो आ गये, इसलिए मनमे बसी हुई कमजोरी फूट निकली। इसलिए यह समझना चाहिए कि ऐसा भोजनालय हमारे लिए उपकारक है। दूसरी बात यह है. चूँकि सच-सच जाहिर कर देनेकी हिम्मत न थी, इसलिए इस कमजोरी के कारण चोरी और झूठ वगैरा पाप हुए। हमे जो-कुछ करना है, वह हिम्मतके साथ क्यो न करे? हम जैसे है वैसे दिखनेमे डरना क्या? स्वादका रस लेना हो, तो उसे छिपाना क्यो?

स्वादका रस लेनेमे पाप नही है। लेनेकी इच्छा होनेपर भी न होनेका भाव दिखानेमे पाप है, फिर चोरीसे लेनेमे पाप है। सब भाई-बहन उनकी जो इच्छा हो वह चीज खा सकते है। सत्याग्रह आश्रमसे उद्योग-मन्दिर बननेमे यह भी एक कारण तो था ही। जिसे स्वादका रस लेना हो वह ले सकता है। मर्यादा इतनी ही है कि रसोईघरमे जितने स्वाद होते हो उतने ही भोगे जाये। घरमे लुक-छिपकर या खुले तौरसे स्वादके लिए कुछ नही पकाया जा सकता। परन्तु मित्रके यहाँ बाहर जाकर खानेकी इच्छा हो जाये, तो उसमे छिपानेकी कोई बात नही और जो-कुछ खाना हो सो खाया जा सकता है। घरमे कोई स्वादकी चीज जमा करके रखनी हो, जैसे मेवे वगैरा, तो वह रखी जा सकती है। यह छूट न लेना अच्छा है, मगर अब ऐसी छूट न लेनेका बन्धन नही रहा। सब बहनोसे मेरी माँग इतनी ही है जैसी हो वैसी दिखना। जो करना हो सो खुले तौर पर करना, किसीसे मत दबना, और शरमाकर हाँ करनेके बाद उससे उलटा आचरण मत करना।

रसोईघरमे जानेवाली बहनको अपने नियमोका पालन करना ही चाहिए। अभीतक ऐसा नही मालूम होता कि बडी गगाबहनको सब बहनोने निर्भय कर दिया हो। रसोईघरका तो हरएक काम यन्त्रकी तरह नियमित रूपसे होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

इसे दुबारा नही पढा।

गुजराती (जी० एन० ३६८४)की फोटो-नकलसे।

२३८. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
१० दिसम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

तुम सब यह चाहोगे कि अपने साप्ताहिक पत्रमे मैं अपने आहार-विषयक प्रयोगसे सम्बन्धित जानकारी दिया करूँ। गत बुधवार या गुरुवारसे मुझे काफी कमजोरी महसूस होने लगी। वजन घट जानेपर मैं अपना प्रयोग जारी नही रखूँगा, यह तो मैंने कह ही दिया था। विनोबा भी कुछ दु:खी हुए, क्योकि मेरी कमजोरी उनकी नजरमे भी आई। वजन भी घट गया। शुक्रवारसे नारगी और फल लेना शुरू कर दिया और बादामका दूध भी लेने लगा। कल वजन लिया तो एक सेर बढा हुआ पाया। कमजोरी तो जिस दिन बादामका दूध और फल लेना शुरू किया उसी दिनसे कम होने लगी, अब तो बिलकुल नही है। इसलिए दूध लेनेकी जरूरत अब भी नही देखता। तेल तो जारी ही है। तेलसे यहाँ किसीको कोई नुकसान होता नही दिखता। ऐसा कहा जा सकता है कि मेरा वजन घटने और शक्तिके ह्रास-का कारण मेरी खुराकमे प्रोटीनका एकदम कम हो जाना ही था। अब तो दूध-घी ही बाकी रह गया है। मेरी आपत्ति बकरीके दूधके प्रति ही है। यह छूट जाये तो मुझे मेरी शान्ति मिल जाये। सूखे अथवा ताजे फलोपर मेरी आपत्ति नही है। इनका त्याग तो केवल खर्चका ख्याल करके ही किया था। लेकिन मैं शरीरको नुकसान पहुँचा कर इन दो मे से किसीके त्यागका आग्रह नही रखूँगा। तुम सब देख सकोगे कि आज तकका परिणाम तो अच्छा ही है। फिर भी, मैं इस प्रयोगके सम्बन्धमे कोई भविष्यवाणी नही करना चाहता। १५ दिनके परिणाम परसे कुछ नही कहा जा सकता। तीन मासतक बराबर एक-सा चले, तभी उसके विषयमे कुछ कहा जा सकता है। इसलिए उतावलीमे कोई दूध छोडनेका प्रयोग न करे, बल्कि जिसे भी दूध और अलसीके तेलका प्रयोग करना हो, कर सकता है। ताजा तेल दोष-रहित है, ऐसा यहाँके बहुत-से लोगोका अनुभव है और इन लोगोमे प्यारेलाल और छोटेलाल तो है ही। इन्हे कुछ नुकसान तो नही ही हुआ। अब इस प्रयोगमे सुब्बैया भी शामिल हो गया है और वसुमतीबहन भी। इन दोनोको यह प्रयोग करते अभी बहुत दिन नही हुए है। लेकिन लगता है कि अगर किसीको अलसीके तेलका प्रयोग करना हो तो वह तेल ताजा होना चाहिए, उसे गरम न करना चाहिए। वहाँके कोल्हूमे पेरवा लेना चाहिए। यहाँसे भेजा जा सकता है, लेकिन रेल-भाड़ा बहुत बैठता है। मालगाडीसे भेजनेमे बहुत समय लगेगा। इसलिए सौ, सवा सौ रुपयेमे वहाँ कोल्हू बैठाया जा सकता है लेकिन अभी तो यही उपाय है कि शहरके किसी कोल्हूवालेके साथ बन्दोबस्त कर लो। मगर इस विषयमे मेरा कोई आग्रह नही है।

हमे बहुत-सी कठिनाइयाँ पडती रहती है और पडती ही रहेगी। इसीलिए यहाँ घी-त्यागका अनुभवजन्य परिणाम प्रस्तुत कर देना चाहता हूँ और तेल कैसे प्राप्त हो सकता है, इसके सम्बन्धमे सुझाव देना चाहता हूँ। तेलके दो और भी परिणाम देखनेमे आते है, जो इस प्रकार है — वह रेचक और क्षुधाकारक है, उससे पाचन-शक्ति मन्द पडनेके बजाय बढती ही है। प्यारेलालका अनुभव ऐसा ही है। यह रेचक है, यह यहाँके लोगोका अनुभव है। मै खुद इस परिणामके विषयमे निश्चयपूर्वक कुछ नही कह सकता।

अब दूसरी बातोके सम्बन्धमे।

वहाँ रसोईघरमे होनेवाला शोर-गुल बन्द होना ही चाहिए। वहाँ आनेपर मै यही देखनेकी आशा रखता हूँ कि यह बाह्य सुधार सम्पन्न हो गया है। भोजन करते समय बिना कामके बात न करनेका ख्याल रखना किसीके लिए मुश्किल नही होना चाहिए। बच्चोको शान्त रखनेमे भी कठिनाई नही होनी चाहिए।

मेरी दूसरी सलाह यह है कि हमे शाककी मात्राकी कोई सीमा तो बाँध ही देनी चाहिए। चाहे जो शाक हो, उसे दस तोलासे ज्यादा नही होना चाहिए। वैद्यक शास्त्रकी दृष्टिसे इससे ज्यादा सब्जियोकी जरूरत नही है।

सुननेमे आया है कि प्रार्थनामे शामिल होनेवालोकी सख्या फिर घटने लगी है। अब मुझे यह कहनेकी जरूरत नही होनी चाहिए कि लोग प्रार्थनामे आये, इसके लिए उनमे कोई सरसता उत्पन्न करनेकी जरूरत नही होनी चाहिए। रस तो भीतरसे ही आना चाहिए। शरीरको जिस प्रकार खुराककी जरूरत है और उसे उसकी भूख है, उसी प्रकार आत्माको प्रार्थनाकी जरूरत है और उसे उसकी भूख है। प्रार्थना तो ईश्वरका ध्यान है। खानेके समय उपस्थित होनेके लिए तो किसीको किसीके प्रोत्साहनकी जरूरत नही रहती, जबतक प्रार्थनाके विषयमे भी ऐसा ही नही हो जाता तबतक ईश्वरके प्रति हमारी श्रद्धा कमजोर समझी जायेगी या फिर ऐसा समझा जायेगा कि आश्रमके नियमोकी स्वीकृति भरकर भी उसका पालन न करके हम उसके द्रोही बनते है और सत्यव्रतका भग करते है। जो इतना समझेगा वह किसी सबल कारणके बिना प्रार्थनामे — चाहे वह सुबहकी हो या शामकी — गैरहाजिर नही रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

२३९. पत्र : छगनलाल जोशीको

१० दिसम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

सोमवारके पत्र तो सवेरे-सवेरे लिख डालता हूँ। डाक उसके बाद आती है। आजकी डाक मिल चुकी है।

ज्यो-ज्यो अन्तरात्माकी आवाज सुनते जाओगे त्यो-त्यो तुम्हारे निर्णय शुद्ध होगे, तुम शुद्ध बनोगे, निर्भय बनोगे, शान्ति मिलेगी और शरीर भी स्वस्थ होगा।

विद्यावती बहनको लिखा है कि बेरुआ[1] . . . .[2] जो सत्यका ही पुजारी है वह मुझे निराश कर ही नही सकता।

प्रभुदासके पागलपनसे भरे प्रयोग भी मुझे खटकते नही हैं। उसकी ऊनी खादीका निबटारा भी मैं ही करा दूँगा। उसे हमेशा अपनी और नारणदासकी राय लिखते रहना।

छोटेलाल अब स्वस्थ तो हो गया है। वह किसी प्रकार मान जाये तो उसे भेज ही दूँ। किन्तु वह गरम-मिजाज है और स्थान-भ्रष्ट होता ही रहता है। फिर भी उसको सँभालता रहता हूँ क्योकि वह सत्यका और ब्रह्मचर्यका पुजारी है। स्वभावसे हिंसक होनेपर भी अहिंसाका पुजारी है। उसकी अनेक खामियाँ रोज देखता हूँ तो भी मुझे तो उसे अपने पास रखना ही है। इसलिए वह मुझसे लगा रहता है और मैं उसे दूर नही करता।

रोटियाँ तो ठीक बनने लगी है न?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

१. उत्तरप्रदेशका एक गाँव।
२. साधन-सूत्रके अनुसार।

२४०. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

मौनवार, १० दिसम्बर, १९२८

चि० गगाबहन,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। शक्तिसे ज्यादा काम करके अपनी तबियत मत बिगाड लेना। कोई काम करे या न करे, सम्मान दे या अपमान करे, तुम मनमे तनिक भी दुखी मत होना। इसके बाद ही यह माना जायेगा कि रसोईघरका काम सँभालनेकी तुम्हारी तपश्चर्याका कुछ फल निकला है। जैसे-जैसे तुम्हारे मनमे शान्ति बढेगी वैसे-वैसे काम अधिक ठीक चलेगा और बाकीके सब लोग भी मदद करने लगेंगे। जो जितना करे उतना ही ठीक मान लेना। जहाँ असत्य या आडम्बर दिखाई दे, वहाँ असहयोग करना।

इस समय रसोईमे कितने लोग खाते है? दूधकी तगी होती है? सब नियमपूर्वक हाजिर होते है? शान्ति कुछ बढी है? तुम्हारा वजन बढा है? इस सप्ताह मेरा वजन तो एक रतल बढ गया है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — गं० स्व० गंगाबहेनने

२४१. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

१० दिसम्बर, १९२८

चि० ब्रजकिसन,

तुम्हारा खत मीला है। मै जो प्रयोग[1] कर रहा हु उसकी मेरी शातिके लिये आवश्यकता थी। मै सावधान हु।

मै यहासे तारीख २० को सबलपुर जाता हु। कलकत्ते ता. २३ को पहोचुगा। जनवारीमे आश्रम जानेकी उमीद है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

फडके बारेमे क्या करू?

जी० एन० २३६१ की फोटो-नकलसे।

१. दूध छोडने और बादाम, तेल तथा फल लेनेके प्रयोग। देखिए "पत्र : छगनलाल जोशीको", १०-१२-१९२८।

२४२. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
११ दिसम्बर, १९२८

भाईश्री छगनलाल,

'मन्दिर समाचार' अब भी पढा नही जाता। यदि मशीनमे कुछ खराबी है तो उसे ठीक कर लो। यदि छापनेवालेका दोष हो तो भी पता लगाना।

अपने सूतकी जाँच करानेपर देखा कि उसका अंक ३०, समानता ९३ और मजबूती ६८ है। आजकल मै रोज ३० अकका सूत ही कातता हूँ, एक घटेमे १६० तारसे ज्यादा नही कात पाता।

क्या गाये पहलेसे कुछ ज्यादा दूध देने लगी है? सब लोग नियमपूर्वक दैनन्दिनी लिखते है न?

ऊपरका पत्र रातको लिखा था।

मगलवार

तुम्हारा पत्र मिल गया है।

चि० केशुसे पूछनेपर उसने कहा है कि जैसा तुम मानते हो, उसने वैसा कुछ नही लिखा। उसने तो मेरी दशाका वर्णन करते हुए यह सलाह दी थी कि सन्तोक आदि आश्रम छोड दे, तो अच्छा हो। इस विषयमे केशु अपनी मर्यादाका पालन करता है, ऐसा मै मानता हूँ। जो-कुछ भी हो तुम तो अपना फर्ज दृढतापूर्वक अदा करो। अपने विचार तो मैंने तुम्हे साफ-साफ बता ही दिये हैं। नारणदासने जिस सुविधाका सुझाव दिया है, उसके दे दिये जानेपर उन सबको अपनी इच्छासे चलने दो।

भाई शकरलालके कथनका बहुत अधिक अर्थ मत निकालना। उन्हे इस प्रकार बोलनेकी आदत है। लेकिन उसमे थोडा-सा सत्य तो है ही। इस सत्यको स्वीकार करके हम अपने दोषोको दूर करे।

हरएक जानी-मानी सस्थाके सदस्योके मनमे कुछ-न-कुछ अहंकार तो आ ही जाता है। उससे हम भी मुक्त नही है। किन्तु बादमे चरखा-सघका कार्यालय आश्रमसे बाहर चला जाये तो मुझे दु ख नही होगा। हमे तो बोझ उठाना है, फर्ज अदा करना है; अधिकार नही भोगना। एक बोझ हलका हो जाये और हममे शक्ति हो तो हम दूसरा बोझ उठा ले। चरखा-सघका कार्यालय आश्रमसे बाहर चला जाये और हम उसे अपने कार्यकर्त्ता दे सके तो वह भी करें। किन्तु बात तो यह है : इस समय निर्णय तो तुम्हे और नारणदासको मिलकर करना है। तुम दोनो दूध-चीनीकी तरह घुलमिल सको तो विभाग ठीक भी चले और उसे गौरव भी मिले। तुम दोनोमे दूरी हो तो विभाग कभी नही चल सकता। उस अवस्थामे वह मन्दिरसे बाहर जाता हो तो जाये। मै बिलकुल तटस्थ हूँ।

कताई सम्बन्धी वहीका जोड शुक्रवारको किया जा सकता है। 'मकराणी'[1] कौन है यह हममे से कोई नही समझा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

पत्रको दुबारा नही देखा।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो: श्री छगनलाल जोशीने

२४३. पत्र: कुसुम और प्रभावतीको

११ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तुम्हारा पत्र मिला है और प्रभावतीका भी। इस पत्रको दोनोके लिए मानना। डाकके लिए समय नही है और मेरा काम भी काफी पड़ा हुआ है। सन्तरा लेना बन्द कर दिया है, सो ठीक नही किया। एक सप्ताह भी ले लेना अच्छा होता। मुझे लगता है कि तुम्हे उसकी जरूरत है। और तुम्हे वह माफिक भी आता है, इसमे कोई शका नही है। पपीता सन्तरेका स्थान नही ले सकता। नीबू और शहद कुछ हदतक ले सकते है, किन्तु पूरी तरह नही। यह मै यहाँ अपने अनुभवसे देख रहा हूँ।

चि० प्रभावती,

मै तुम्हारी बात भी समझा। विद्यावतीका खत आज आया। मैने तो कल ही लम्बा पत्र भेजा।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६७) की फोटो-नकलसे।

१. छगनलाल जोशीकी पत्नीका गांधीजी द्वारा दिया हुआ उपनाम। 'मकराण' सौराष्ट्रकी एक योद्धा-जाति है। देखिए "पत्र: छगनलाल जोशीको", २०-१२-१९२८।

२. ये पंक्तियाँ हिन्दीमें हैं।

२४४. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

वर्धा
मगलवार [११ दिसम्बर, १९२८][1]

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र राजगोपालाचारीके बारेमे मीला है। सूचना मुझको प्रिय है। राजाजीका शरीर इस कामको पहोच सकेगा या नहि यह कहना मुश्केल है। मै लिखता तो हु।

अब स्वास्थ्य कैसा है ?

आपका
मोहनदास

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला
८ रॉयल एक्स्चेज प्लेस
कलकत्ता

सी० डब्ल्यू० ६१६३ से।
सौजन्य घनश्यामदास बिड़ला

२४५. तार : डॉ० विधानचन्द्र रायको

वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

डॉ० विधान राय
३६ वेलिग्टन स्ट्रीट

लगभग पच्चीस लोग होंगे। खेमो मे आसानीसे ठहर सकते है, पर कृपया जीवनलालकी मेजबानी मुझे स्वीकार कर लेने दे।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० २४५६) से।

१. सम्भवतः यह घनश्यामदास बिड़लाके ८ सितम्बरको लिखे पत्रके उत्तरमें लिखा गया था। उन्होंने गाधीजीको लिखा था कि वे च० राजगोपालाचारीसे भारतीय मद्यनिषेध समितिके अवैतनिक महामन्त्रीका पद सँभालनेका अनुरोध करें।

२४६. एक पत्र[1]

वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्रो,

आप सबके द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापनकी प्रति अब मैने पढ ली है। मैने अपनी दृष्टिसे सत्य और अहिंसाके उपलक्षणोका खुलासा कर दिया है।-ज्ञापनमे आपने काग्रेस-के असहयोगका उल्लेख किया है, जो अहिंसापर आधारित है। और आपने आठवे सूत्रमे अहिंसा और सत्यको धर्मके आधारभूत तत्त्वोके रूपमे रखा है। फिर भी हमारी चर्चाके दौरान मुझे महसूस हुआ कि आप सत्य और अहिंसाको एक नीतिके रूपमे देखते है या आप चाहे तो यो कहिए कि आप सत्य और अहिंसाको अस्थायी तौरपर जबतक आप राष्ट्रीय शालाओसे सम्बद्ध है, केवल तबतकके लिए ही एक विश्वासके रूपमे अनिवार्य मानते है। मैने आपको यह बतलानेकी कोशिश की है कि सत्य और अहिंसा राष्ट्रीय शालाओके आधारभूत तत्त्व है और जबतक शिक्षकोको इन आधारभूत तत्त्वोपर आधा-ऊधा ही विश्वास रहेगा, दृढ आस्था नही होगी, तबतक राष्ट्रीय शालाएँ खडी नही की जा सकती। यदि की जायेगी तो वे सकट कालमे निश्चय ही असफल सिद्ध होगी। इसलिए मै आपके विश्वासो और उनको पेश करनेके निर्भीक ढगके लिए आपकी पूरी इज्जत तो करता हूँ, पर साथ ही चाहता हूँ कि आप भी यह समझे कि आपकी सस्थाके लिए विशेष तौरपर धनकी व्यवस्था करना मेरे लिए कठिन है। और मै तो कहूँगा कि आपको भी यह एक प्रतिष्ठाका प्रश्न बना लेना चाहिए कि आप किसी ऐसे व्यक्तिसे धनकी माँग नही करेगे और न दान स्वीकार करेगे जो सत्य और अहिंसाको बिलकुल अनिवार्य और स्थायी विश्वासके रूपमे लेता हो, जिसके लिए ये दोनो, आपकी भाँति, अस्थायी विश्वास-मात्र न हो कर जीवन-मरणकी चीजे हो।

यही परिस्थिति है। इसमे मै चाहूँगा कि आप सारी स्थितिपर फिरसे विचार करे और अपने बीच इस बातपर चर्चा करे कि आपको मुझसे क्या करनेका अनुरोध करना चाहिए, और उसके बाद सत्य और अहिंसाको एकमात्र विश्वासके रूपमे स्वीकार न करनेवाले, श्रीयुत तिजारे और ऐसे ही अन्य लोगोको वर्धा आकर, मेरे साथ इसपर चर्चा करके, अन्तिम निष्कर्षपर पहुँचना चाहिए। मै आपकी शालाकी भरसक

१. तिलक विद्यालयके प्रिंसिपल एस० आर० तिजारेने अपने १५ नवम्बर, १९२८ के पत्रमें गाधीजीसे अपनी संस्थामें २० नवम्बरसे २५ नवम्बर, १९२८ तक चलनेवाली व्याख्यानमालाका वार्षिक उद्घाटन करनेका अनुरोध किया था।

सहायता करना चाहता हूँ। लेकिन पहले मुझे इसका अनुमान नही था कि इसमे नैतिकताकी दृष्टिसे थोडी कठिनाई भी आयेगी।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३७८१) की फोटो-नकलसे।

२४७. पत्र : एन० सी० चन्दरको

वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मुझे तो आपसे यही आशा है कि आप मुझसे 'भारतीय राष्ट्रीय समाज सुधार सम्मेलन' मे[1] शामिल होनेका अनुरोध नही करेगे। हालाँकि कई बातोमे मुझे लोग समाज सुधारक मानते है, पर असलमे मै हूँ एक काफी पिछडा हुआ और बेकारका आदमी ही।

वैसे सर शिवस्वामी अय्यरके परिपक्व विचारोको लोग काफी अहमियत देते है, पर वे इतने जोश-खरोशके साथ गर्भ-निरोधके जिन कृत्रिम उपायोकी पैरवी करते है, वे मुझे फूटी आँख भी नही सुहाते। आपको शायद मालूम न हो कि मै उनका एकदम पक्का विरोधी हूँ, क्योकि मेरी मान्यता है कि ये उपाय हमारे समाजकी नैतिक नीवको ही खोखला कर देंगे। हाँ, लेकिन मै इस विषयपर सार्वजनिक रूपसे कोई बहस खडी करके समाज सुधार सम्मेलनमे अपने विचारोका डका नही पीटना चाहता। इसीलिए मेरा अनुरोध है कि समाज सुधार सम्मेलनके सिलसिलेमे आप मुझे अलग ही रखे और मुझे बुलानेकी बात न सोचे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत एन० सी० चन्दर[2]
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३७८२) की माइक्रोफिल्मसे।

१. देखिए "पत्र सच्चिदानन्द बोसको", ९-११-१९२८।
२. सम्मेलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष।

२४८. पत्र : नरगिस कैप्टेनको

वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

तुम्हारा पत्र मिला और 'चैक' भी। मैं जानता हूँ कि तुम मेरी ओरसे पत्र पानेकी अपेक्षा नही रखती, हालाँकि तुम मुझे जब-तब पत्र लिखती ही रहोगी। यह एक-तरफा हिसाब मुझे सचमुच बडा पसन्द है।

पर तुम्हारी सेहत अब पहलेसे अच्छी है या नही? पहलेसे ज्यादा शक्ति अपने अन्दर महसूस करती हो या नही? सच मानो, मै उतना ज्यादा बीमार नही था, जितना तुम समझ रही थी। सचाई तो यह है कि मेरी बीमारी असलमे एक छोटी-मोटी गडबडी-भर थी।

जो भी लिखनेका मन करे, जरूर लिखना। क्या कलकत्ता नही आ रही हो? या अभी बदनमे इतनी ताकत महसूस नही करती? लेकिन यदि न आनेका ही फैसला करो तो वह लम्बा पत्र जरूर लिखना जिसका तुमने वादा किया है। मै जरूर ही उसे पढनेके लिए समय निकालनेकी कोशिश करूँगा और अगर उसमे कोई ऐसी बात न हुई जिसके बारेमे कुछ कहना मुझे जरूरी लगा तो मै उसका उत्तर नही दूँगा।

कुमारी नरगिस कैप्टेन
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १३७८३) की फोटो-नकलसे।

२४९. पत्र : ई० सी० डेविकको

वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपसे मैसूरमे भेट न कर पानेका मनमे सचमुच बडा खेद रहा, परन्तु वह सम्भव भी नही था। कोशिश तो मैंने की, लेकिन सफल नही हो पाया।

डॉ० मॉटसे[1] मिलकर सच ही मुझे बडी खुशी होगी। भेंटका समय तो ७ से १५ जनवरी, १९२९ तकके बीच ही शायद ज्यादा ठीक रहेगा। इस समय तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मैं इन तारीखोमे शायद साबरमतीमे ही मौजूद रहूँगा

१. डॉ० जॉन आर० मॉट, 'विश्व ईसाई विद्यार्थी संघ' के अध्यक्ष।

और वैसी हालतमे डॉ० मॉटसे आश्रममे भेट करके बहुत प्रसन्नता होगी। परन्तु ऐसी भी सम्भावना है कि मुझे काग्रेस अधिवेशनके बाद वर्धा जाना पडे। तब तो मेरा सारा कार्यक्रम ही बदल जायेगा।

कार्यक्रमकी तिथियाँ इस समयतक तो इस प्रकार निश्चित की गई है — २० तारीखतक वर्धा, २३ तारीखसे सालके आखिर तक कलकत्तामे। कलकत्तामे मेरा पता यह रहेगा — मारफत : श्रीयुत जीवनलाल भाई, ४४ इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

हृदयसे आपका,

रेवरेंड ई० सी० डेविक
मद्रास

अंग्रेजी (एस० एन० १३७८५) की फोटो-नकलसे।

२५०. पत्र : रॉलैंड जे० वाइल्डको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। मै आपको पूरे विस्तारके साथ उत्तर लिखनेकी सोच रहा था। पर मुझे वे लेख नही मिले जो आपने भेजे थे। वे यहाँ वर्धामे मेरे पास नही है और अभी-अभी मुझे पता चला है कि आपकी भेजी हुई कतरने आस्ट्रियायी मित्रोको दी गई थी और वे लोग भारतसे जा चुके है। यदि आप एक बार फिर मेरे पास वे कतरने भेजनेकी कृपा कर सके तो मै निश्चय ही आपको बतला दूँगा कि मेरी अपनी रायमे आपने मेरे विचारोको कहाँ-कहाँ गलत ढगसे पेश किया है; इसमे शक नही कि आपका वैसा मशा नही था।

यदि आप वे कतरने साबरमती न भेजकर वर्धाके मेरे मौजूदा पतेपर भेज दे तो मेरे पास वे कही जल्दी पहुँच जायेगी। मै २० तारीखतक वर्धामे ही हूँ; बादमे कलकत्ता चला जाऊँगा। वहाँ मेरा पता यह रहेगा :

मारफत — श्रीयुत जीवनलालभाई, ४४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

हृदयसे आपका,

श्री रॉलैंड जे० वाइल्ड
'सिविल ऐंड मिलिटरी गजट', लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १३७८६) की माइक्रोफिल्मसे।

२५१. पत्र : एन० आर० मलकानीको

वर्धा
१२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मलकानी,

आपके पत्रका उत्तर देनेमे मैंने वेजा देरी कर दी है। पर मै जानता था कि ऐसी जल्दीकी भी कोई बात नही। मेरी सभी योजनाओमे जमनालालजी सदा मेरे साथ रहते हैं। मैंने आपका पत्र उनको दिखलाया था और उनको वतलाया था कि मुझे आपसे क्या-क्या आशाएँ है। खुशी तो उनको वहुत हुई लेकिन उन्होने मुझसे पूछा कि क्या मैंने आपको वतला दिया है कि आश्रममे रहनेवालोसे क्या-क्या अपेक्षाएँ की जाती है। मैंने उनसे कह दिया था कि मै जितना जानता था उतना मैंने वतला दिया है। आप तो आश्रमके जीवनको समझते ही है। आपको मालूम ही है कि ब्रह्मचर्य-व्रत लेना अनिवार्य है और आश्रम-भरकी एक ही रसोई है। आश्रमको अव उद्योग-मन्दिर कहने लगे है। जमनालालजीको आशंका है कि आश्रमका जीवन जिस साँचेमे ढल गया है और ढलता जा रहा है वह आपकी पत्नीको[1] शायद माफिक न आ पाये।

इसलिए मै चाहता हूँ कि आप अपनी पत्नीसे सलाह कर ले और उनको विलकुल साफ-साफ समझा दे। आश्रम नियमावलीकी एक-एक पक्ति पढ जाइए। उद्योग-मन्दिरमे उसका पालन अनिवार्य है। अस्पृश्यता-निवारणके कामके लिए आपके यहाँ आनेका मतलव है कि आप अपना भाग्य आश्रमके साथ जोड दे और हमेशाके लिए अपना जीवन इसी उद्देश्यके लिए समर्पित कर दे, क्योकि हमारा यह काम इसके लिए नियुक्त एक मन्त्रीके जरिए सगठित किया जायेगा, जो अपना सारा समय और ध्यान केवल इसी काममे लगायेगा। जमनालालजीका कहना है कि यदि आप सोचते हो कि यह काम इतना रुचिकर नही जिसमे पूरा समय खपाया जाये और यदि आपकी पत्नी इसी काममे पूरे समय लगे रहनेसे वहुत खुश न रहे तो आपके यहाँ आनेसे कोई लाभ नही होगा। आप उनसे सलाह करके मुझे लिखे कि आप दोनोने सम्मिलित रूपसे क्या तय किया है।

मै यहाँ २० तारीखतक हूँ। मै २३ तारीखको कलकत्ता पहुँच रहा हूँ, जहाँ मेरा पता यह रहेगा — मारफत जीवनलाल भाई, ४४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

हृदयसे आपका,
बापू

श्रीयुत एन० आर० मलकानी
हैदरावाद (सिन्ध)

अग्रेजी (एस० एन० ८९०) की फोटो-नकलसे।

१. दिनाक १४ नवम्बर, १९२८ के अपने पत्रमें उन्होने लिखा था : "मैंने . . . आश्रममें . . . अपने भावी कामके वारेमें अपनी पत्नीसे सलाह कर ली है" (एस० एन० १३७२३)।

२५२. पत्र : महादेव देसाईको

बुधवार, १२ दिसम्बर, १९२८

चि० महादेव,

मैं तुम्हारी कठिनाई समझता हूँ। अखबार एक सप्ताहतक बन्द नही रह सकते। मैंने आजसे तैयारी शुरू कर दी है। इसलिए काम पूरा करना मुश्किल नही होगा। [सामग्रीमे] तीन कालम तुम्हारे गिन रहा हूँ। तुम्हें वहाँ लगातार विजय मिलती रहे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ११४३७) की फोटो-नकलसे।

२५३. पत्र : कुसुम देसाईको

बुधवार [१२ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० कुसुम,

तुम्हारा और प्रभावतीका पत्र मिल गया है। जो भी उपचार करना हो सो करो, किन्तु ठीक हो जाओ, मुझे उसीसे सन्तोष होगा। आज ज्यादा लिखनेका समय नही बचा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७६८) की फोटो-नकलसे

१. देखिए अगला शीर्षक।

२५४. पत्र: प्रभावतीको

दुबारा नहि पढ गया हुँ

१२ दिसम्बर, १९२८

चि० प्रभावती,

तुमारा खत मीला। गभरानेका कोई कारण नहि है। स्वसूरको लीखो:

"मेरे लीये आपकी इच्छा आज्ञा हि होनी चाहीये। मेरे पिताजी तो यहि चाहते है जैसा आप लोगोका हुकम मीले ऐसी हि मै करु। मेरा धर्मसकट तो यह है कि आपके पुत्रके खत ठीक अमेरिकासे चले आते है। उसमे यहि आज्ञा है कि मै आश्रममे हि रहु और पढु। वे तो यह भी चाहते है कि मै इग्रेजी भी अच्छी तरहसे पढ लु। मुझको तो आश्रममे अच्छा लगता है। बापुजी मुझको पुत्री तुल्य रखते है। बाकी भी कृपा रहती है। राजवसी देवीजीके[1] जानेके बाद मुझको स्त्री विभागमे रखनेका प्रवध है। स्त्री विभागमे मै बिलकुल सुरक्षित हु। इसलीये मेरी इच्छा तो है की आपके पुत्रकी आज्ञानुसार मै यही रहु। फिर आपकी जैसी आज्ञा हो इतना कह दु मेरे लीये आप चिंता न करे। मै बडी सावधानीसे यहा रहती हु और आश्रममे काफी औरत रहती है सबके साथ मेरा सबध अच्छा है।"

इसमे भाषाकी सुधारणा करना चाहीये करो। पिताजीको भी खबर दे दो क्या हो रहा है। मृत्युजयको सब हाल कह दो। पतिके खतकी नकल भेजो।

जो कुछ भी होवे तुमारे निश्चिन्त होकर रहना। 'सुख दु खे समे कृत्वा'[2] श्लोक याद करो। हिम्मत रखो, राम स्मरण करो।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३४२ की फोटो-नकलसे।

१. राजेन्द्रप्रसादकी धर्मपत्नी और मृत्युजयकी माता।
२. गीता, अध्याय २ श्लोक ३८।

२५५. अन्धकूप[1]

पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपने एक निजी पत्रमे लखनऊकी घटनाओका वर्णन करते हुए लिखते है :

कल सुबहकी एक घटना आपको शायद दिलचस्प लगेगी। मैंने अपने बयानमें उसका जिक्र नहीं किया है। हम लोगोंको घुड़सवार और पैदल पुलिसने स्टेशनके पासतक खदेड़ा ही था कि एक नौजवान मेरे पास आया और कहने लगा कि अगर मैं पिस्तौलका इस्तेमाल करना चाहूँ तो वह उसी दम दो पिस्तौल लाकर मुझे दे सकता है। मैंने उसे विद्यार्थी समझा। हम पुलिसके डण्डों और लाठियोंका मजा चख ही चुके थे और भीड़में काफी गुस्सा और उबाल था ही। मेरा खयाल है, उसने सोचा होगा कि वैसा सुझाव रखनेके लिए यही सबसे अच्छा मौका है। मैंने उससे कहा कि बेवकूफ मत बनो। थोड़ी ही देर बाद, यों ही संयोगसे मुझे पता चला कि वह गुप्तचर विभागका आदमी था।

पण्डित जवाहरलाल नेहरूको इससे कोई खतरा नही हो सकता था, क्योकि उनके पास छिपानेकी तो कोई बात है नही। देशकी स्वतन्त्रता प्राप्ति करनेकी उनकी अपनी योजनामे पिस्तौलोके लिए अगर कोई जगह होती, तो उनके लिए बाहरके किसी आदमीको पिस्तौल जुटानेका प्रस्ताव रखनेकी जरूरत ही नही पडनेवाली थी। वे तो स्वय ही खुले आम पिस्तौल लेकर चलते और जब ठीक मौका समझते उसका बड़े कारगर ढगसे इस्तेमाल भी करते। इसलिए गुप्तचरोके जाल-फरेबसे उनको कोई खतरा नही था। और जो बात पण्डित जवाहरलाल नेहरू पर लागू होती है वह एक हदतक सभी काग्रेसियोपर भी लागू होती है। काग्रेसवालोने अब बन्द कमरोमे गुप्त सभाएँ करना छोड दिया है। अब उनको गुप्तचरोका भय नही सताता।

१. गांधीजीने १६-१२-१९२८के **नवजीवन**में इसी विषयपर अपना एक लेख इस तरह शुरू किया था: “जहां भी हमारी नजर जाती है, हमें दूर-दूरतक सरकार द्वारा बिछाये तरह-तरहके जाल दिखाई पड़ते हैं, किसी-किसी वातक जालमें हम फँस भी जाते है। कुछ जाल साफ तौरपर सामने दिखाई पडते हैं, कुछ और है जो नजरोंसे छिपे रहते है और कुछ ऐसे भी है जो हमें ललचाते है। शराबघर खुले जाल हैं; गुप्तचर विभाग छिपा हुआ जाल है; स्कूल, विधानसभाएं, कचहरियाँ वगैरा ललचानेवाले जाल है।. . . बस मैं तो इतना ही जानता हूँ कि इन जालोंमें फँसनेसे हमें एक ईश्वर ही बचा सकता है। और ईश्वरसे रक्षाकी प्रार्थनाकी सुनवाई तभी होगी जब हमारे अन्दर अपार आस्था और अटल संकल्प हो।” अन्तमें, उन्होने लिखा था: “यदि हम अपने अन्दर अपने-आपको समर्पित कर देनेकी भावना पैदा कर लें तो हम इसी क्षण अपने देशको मुक्त करा सकते हैं और हमारी मुक्तिके साथ संसारके अनेक देशोंकी मुक्ति भी जुड़ी हुई है।”

परन्तु गुप्तचर विभागको अपना नाम ही सार्थक नही लगेगा यदि वह और कई काम करनेके साथ ही कुछ ऐसे लोग भी जनताके बीच न छोडे जिनका काम ही जन-कार्यकर्त्ताओको लालच देकर अपने फदोमे फाँसना हो। इससे अधिक पतन-कारी और घटिया पेशा दूसरा हो ही नही सकता। फिर भी संसार-भरकी सरकारोने इस पेशेको एक कलाका दर्जा दे रखा है और अपने यहाँके कुछ सुयोग्यतम लोगोको इसमे लगा रखा है। ऐसी सरकारोमे ब्रिटेनकी सरकारका स्थान शायद सबसे प्रथम आता है। गुप्तचर विभागमे झूठ बोलना तो एक प्रतिष्ठित कलाके रूपमे सिखाया जाता है। पोन्सनबीकी[1] पुस्तक 'फॉल्सहुड इन वॉर टाइम' (युद्ध कालमे मिथ्यावादिता) — मे ऐसे तथ्योका एक विस्तृत लेखा जुटाया गया है जिनको पढकर आत्माको बडा कष्ट पहुँचता है। उसमे बतलाया गया है सभी युद्धरत देशोने एक-दूसरेको नष्ट करनेके लिए दान-दयाकी आडमे कैसे-कैसे प्रपच रचे थे। वह राष्ट्रो द्वारा किये गये अपराधोका एक शर्मनाक लेखा है। और उसमे ब्रिटेनने किसीसे कम नही, बल्कि शायद सबसे अधिक ही अपराध किये थे। ब्रिटेन यदि इतना लालची और इतना स्वार्थी न होता तो वह युद्धबन्दी करानेकी स्थितिमे था।

भारतमे आप जहाँ भी नजर दौडाइए आपको अँधकूप दिखाई पडते है। मुझे तो भारतमे सम्राट्की ओरसे, उनके नामपर चलाई जानेवाली हरएक सस्थामे — वह चाहे बडीसे-बडी जन-सेवी सस्था ही क्यो न हो — खोट दिखाई पडती है। हम उनमे बडी ललकके साथ यदि भाग लेते भी है तो यह उनके दोषरहित होनेका कोई प्रमाण नही। यह यदि कोई प्रमाण है भी तो हमारी अपनी असहायता, तग-नजरी या कहिए स्वार्थीपनका ही प्रमाण है। हमारे अन्दर इतना साहस नही कि हम धोखा-धडी और महज ताकतकी बुनियादपर खडे एक साम्राज्यको बनाये रखनेमे हाथ बँटानेके अपराधसे अपने-आपको अलग रखनेके लिए पर्याप्त बलि दे सके। हम एक ऐसे साम्राज्यको बनाये रखनेमे योग देनेके अपराधी है जिसका यदि एकमात्र नही तो कमसे-कम मुख्य उद्देश्य तो ससारकी तथाकथित निर्बल जातियोका दिन-दिन अधिक शोषण करनेकी नीतिको जारी रखना है।

इतनी चालाकीसे बिछाये गये इन सारे जालोमे गुप्तचर विभागवाला जाल ही एक तरहसे सबसे कम खतरनाक है। इसलिए कि सबसे ज्यादा खतरनाक जाल तो वास्तवमे वही होते है जो ऊपरसे अत्यन्त ही आकर्षक लगते है। हम इनमेसे किसी-न-किसी लुभावने लेकिन घातक जालमे अक्सर फँस ही जाते है और उसके बाद ही हमारी समझमे आता है कि क्या हो गया है। ऐसे ही किसी कारणवश रोमवासी कहा करते थे "यूनानियोसे सावधान! खासकर तब जब वे आपके पास भेट लेकर आयें।" अपने शत्रुसे सबसे अधिक तब डरना चाहिए जब वह दान-दया और सेवाका भाव ओढकर आपके सामने आये। काश हमारे नवयुवक इस सीधी-सी सचाईको समझ सके और अपने-आपको उन अन्धकूपोमे गिरनेसे बचा सके। हमारे नवयुवक ब्रिटिश साम्राज्यको कोसते हुए इन अन्धकूपोमे रोज-रोज फिसलते रहते है, इन छिपे

१. कॉमन्स सभाके सदस्य।

हुए जालोंमे फँसते रहते हैं। इस आशामे कि वे देशको आर्थिक विनाश ही नही, नैतिक पतनके अतल गर्तमे भी ढकेलनेवाली इस असहनीय परतन्त्रतासे मुक्ति दिलानेके लिए प्रयत्न कर रहे हैं।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १३-१२-१९२८

२५६. न्यायकी बहक

मै इसी अकमे बानगीके तौरपर तमिल कवि, स्वर्गीय भारतीके तमिल गीतोके अनुवादकी पहली किस्त दे रहा हूँ। हाल ही मे मद्रास सरकारने बर्मा सरकारकी हिदायतोके तहत, बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि बर्मा सरकारके आदेशसे, उनके गीतोको जब्त किया था। लगता है कि बर्मा सरकारने अपनी ओरसे इन गीतोको न्यायालयके किसी आदेशके अनुसार नही बल्कि एक प्रशासनिक घोषणा द्वारा जब्त किया था। इस लोकप्रिय तमिल कविकी कविताएँ पिछले तीस वर्षोंसे जनताको अत्यन्त ही रुचिकर लगती आई हैं और मद्रास उच्च न्यायालयके सामने पेश किये गये साक्ष्यसे प्रकट है कि मद्रासका शिक्षा-विभाग इनको पाठशालाओके पाठ्यक्रममे सम्मिलित करनेके बारेमे विचार कर रहा था। अब लगता है कि इस घोषणाके अन्तर्गत इन रचनाओ-को भारतमे कही भी जब्त किया जा सकेगा। मै स्वीकार करता हूँ कि इससे पहले मुझे इस बातकी बिलकुल भी जानकारी नही थी कि प्रान्तीय सरकारोको भी इतनी व्यापक प्रशासकीय शक्ति मिली हुई है। लेकिन आजका जमाना ऐसा है कि हमे बहुत-सी नई-नई बातें सीखनी पडती हैं। इसमे तो सन्देह नही कि यह विषय शिक्षा मन्त्रीके क्षेत्राधिकारका ही है। परन्तु दिन-दिन यह बात भी अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है कि मन्त्रियोके ये विभिन्न विभाग बिलकुल ढोंग है, विधानसभाएँ तक ढोंग ही हैं और ये विभिन्न मन्त्रिगण सर्वशक्तिशाली 'आई० सी० एस०' अफसरोका हुक्म बजा लानेवाले क्लर्कोंसे अधिक कुछ नही है। इसीलिए बेचारा शिक्षामन्त्री इन लोकप्रिय रचनाओको जब्तीसे बचानेके लिए कुछ भी नही कर सका। जब्तीका आदेश होनेके समय बेचारेको इसका शायद कोई ज्ञान ही नही होगा और यदि होगा भी तो उसको बतलाया तक नही गया होगा कि किस आदेशपर उससे हस्ताक्षर कराये जा रहे है। कुछ समय बाद ही जनताका ध्यान जब्तीकी ओर गया। 'हिन्दी प्रचार कार्यालय'के पण्डित हरिहर शर्माने बेचारी विधवाकी ओरसे भारतीके इन गीतोका प्रकाशन किया है। वे जब्तीके इस आदेशको देखकर चुप नही बैठ सके। उन्होंने इस मामलेको लेकर जनतामे प्रचार शुरू कर दिया, जिसके कारण इस विषय पर विधानसभामे वादविवाद हुआ। विधानसभाने जब्तीकी निन्दा की। पण्डित हरिहर शर्माने उच्च न्यायालयमे एक याचिका भी दायर कर दी कि इस गैरकानूनी जब्तीके आदेशको निलम्बित किया जाये। बादमे कुछ ऐसा आश्वासन दिये जानेपर कि जब्ती-का आदेश वापस ले लिया जायेगा, जब्त की गई पुस्तकें वापस कर दी जायेंगी और

मद्रास सरकार गरीब विधवाकी हुई क्षतिकी पूर्ति भी करेगी, उस याचिकाको अब वापस ले लिया गया है, लेकिन अन्यायका पूरा निराकरण तो नही हुआ है। हम सब लोग उस दिनकी राह देख रहे है जब पण्डित हरिहर शर्माकी आशाएँ पूरी की जायेगी और जब्तशुदा पुस्तकोको लौटा कर अन्यायका पूरी तौर पर निराकरण कर दिया जायेगा। मद्रास सरकार वैसे कितनी ही क्षतिपूर्ति करे; अन्याय हुआ है — ऐसी भावना तो बनी ही रहेगी, साथ ही जनताके दिमागमे असुरक्षाकी मौजूदा भावना भी बनी ही रहेगी, जो मद्रास सरकारने बर्मा सरकारका हुक्म बजाकर सबके दिलमे पैदा कर दी है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १३-१२-१९२८

२५७. पत्र: सरसीलाल सरकारको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। निश्चय ही मैं आपके सुझावका[1] ध्यान रखूंगा और जब भी हो सकेगा अपेक्षतया अधिक गहराईसे आत्मविश्लेषण करनेकी कोशिश करूँगा। मुझे इस प्रकारके एक स्पष्ट और सुनिश्चित प्रश्नके बारेमे लिखना है। आप यदि सावधानीके साथ 'यंग इंडिया' पढते है तो आप स्वयं ही देखेंगे।

उल्लिखित पत्रिका[2] उपलब्ध करानेमे यदि आपको विशेष असुविधा न हो, तो मैं उसे पढना चाहूँगा, और यदि उसमे मुझे कोई चीज खण्डन करने लायक लगी तो मैं उसका खण्डन भी करूँगा।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सरसीलाल सरकार
१७७, अपर सर्कुलर रोड
पो० आ० श्याम बाजार
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३७९०)की फोटो-नकलसे।

१. इन्होंने १ दिसम्बर, १९२८ के अपने पत्रमें लिखा था कि इनकी अपनी रायमें गांधीजीके जीवनमें मनोवैज्ञानिक तत्त्वो या प्रवृत्तियोंने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है, पर गांधीजीने अपने आत्मकथात्मक और आत्मविवेचनात्मक लेखोंमें उनको समुचित महत्त्व नहीं दिया है।

२. लन्दनसे प्रकाशित एक अन्तर्राष्ट्रीय मनोविश्लेषणात्मक पत्रिका। रांचीके 'यूरोपीयन मेंटल हॉस्पिटल' के अधीक्षक, बर्कले हिल्ने उसमें गांधीजीके दिमागमें मौजूद चरखा सम्बन्धी अचेतन विचारोके बारेमें एक निबन्ध प्रकाशित कराया था।

२५८. पत्र : सुहासिनी नम्बियारको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपने मुझे एक बहुत बड़ा काम सौंपा है। मैं जबतक काफी विस्तारके साथ न लिखूं मेरा उत्तर अधूरा ही रहेगा, पर विस्तारके साथ लिखनेका समय मेरे पास है नही। इसलिए क्षमा करे। हाँ, लेकिन आप यदि 'यंग इडिया' पढती रहे तो आपको अपने अधिकाश प्रश्नोके उत्तर निश्चय ही मिल जायेंगे, और फिर भी जो प्रश्न आपके मनमे अटके रह जायेंगे उनके उत्तर आप, 'यग इडिया' के लेख पढ चुकनेके बाद, स्वय ही दे सकेंगी। आप श्रीयुत एस० गणेशनको १८ पायक्रोफ्ट्स रोड, ट्रिप्लिकेन, मद्रासके पतेपर लिख कर 'यग इडिया'की फाइले मँगा सकती है। चालू वर्षको छोड़ कर शेष सभी फाइलें पुस्तकाकारमे मिल जायेंगी।

हृदयसे आपका,

श्रीमती सुहासिनी नम्बियार
४४१, फर्स्ट रोड, खार, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १३७९१)की माइक्रोफिल्मसे।

२५९. पत्र : डॉ० एच० डब्ल्यू० बी० मोरेनोको

वर्धा
१३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। आप ऐसा क्यो सोचते है कि आंग्ल-भारतीयोका उल्लेख न करनेवाले सभी लोग उनके और उनके कार्यकलापके प्रति उदासीन ही होगे? मै 'यंग इडिया' के पृष्ठोमे ऐसे अनेक विषयोका कोई उल्लेख नही करता जो सचमुच महत्त्वके होते है। इसका अर्थ आप यह तो नही ही लगायेंगे कि मेरी उनमे कोई दिलचस्पी नही। कभी-कभी उल्लेख करनेका मतलब मैत्रीपूर्ण नही बल्कि शत्रुतापूर्ण दिलचस्पी होता है। म आपको लगे हाथ ऐसी दर्जनो चीजे गिना सकता हूँ जिनमे गहरी दिलचस्पी रखते हुए भी मैने 'यग इंडिया' मे या अपने भाषणोमे कभी उनका कोई उल्लेख नही किया।

मेरे विचार अब भी बिलकुल वही है, जो मैंने आपको कलकत्ताकी अपनी मुलाकातके समय बतलाये थे।

हाँ, अगर आपके दिमागमे कोई खास सवाल हो और आप उसके बारेमे मेरी राय जानना चाहते हो तो निस्सकोच लिखनेकी कृपा करे।

हृदयसे आपका,

अग्रेजी (एस० एन० १३७९२)की फोटो-नकलसे।

२६०. पत्र : रेवा दत्तको

सत्याग्रहाश्रम, वर्धा
१३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

दिलचस्प जानकारीसे भरे आपके विस्तृत पत्रके लिए धन्यवाद।

मैसूर सम्मेलनमें[1] मै अनेक मित्रोसे मिलनेकी आशा सजोये बैठा था और मै उसमे शामिल नही हो पाया। इससे मन बडा निराश हुआ। पर क्या करूँ, उसके लिए समय निकाल ही नही पाया।

बहुत सम्भव है कि २ जनवरीको मै कलकत्तामे ही रहूँ। कलकत्तामे आपसे भेट करना मेरे लिए हर्षका विषय होगा।[2] उसके बाद फिर मेरा कार्यक्रम अनिश्चित-सा है, हालाँकि मौजूदा व्यवस्थाके अनुसार मै जनवरी-भर शायद साबरमतीमे ही रहूँगा।

हृदयसे आपका,

श्रीमती रेवा दत्त
मारफत श्रीमती हेन्समेन
लोकॉक्स गार्डन्स
मद्रास

अग्रेजी (एस० एन० १३७९३)की फोटो-नकलसे।

१. विश्व ईसाई विद्यार्थी सघका।

२. ७ दिसम्बर १९२८ के अपने पत्रमें इन्होंने लिखा था कि वे २ से लेकर २० जनवरी, १९२९ तक कलकत्तामें मौजूद रहेंगी।

२६१. पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
१३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय सतीश बाबू,

आपका पत्र मिला। 'पूलिंग'[1] (एकत्रीकरण)से सम्बन्धित आपके सुझाव मैं घनश्यामदासजीको भेज रहा हूँ।

मुझे प्रसन्नता हुई कि महावीरप्रसादजीसे आप सम्पर्क स्थापित कर चुके हैं। यदि पहले आपका उनके साथ परिचय न हो तो मैं चाहूँगा कि आप उनके साथ काफी निकटता पैदा कर ले। वह बड़े ही बढ़िया आदमी हैं और यदि हमारे सब नही तो अधिकाश आदर्शोंमे विश्वास रखते ही हैं।

कृष्णदास अब यही है, और वह आपके तथा हेमप्रभादेवी और आम तौर पर सोदपुरके बारेमे जो अनेक बाते बतलाता है, मैं उनका रसास्वादन करता रहता हूँ। बस चिन्ता यही है कि आप और हेमप्रभादेवी कही कार्याधिक्यके कारण खाट न पकड़ ले। 'गीता'की भावनासे प्रेरित होकर काम करनेवाले लोग कभी भी शक्तिसे अधिक काम करके अपने आपको थकाते नही है, क्योकि वे सर्वथा निरपेक्ष रह कर काम करते हैं और पूर्णतः निरपेक्ष रहनेका मतलब है चिन्तासे पूरी तरह छुटकारा। हम जब अपने-आपको ईश्वरके हाथका एक साधन मानकर काम करते हैं और स्वयको पूरी तरह उसीके हाथो समर्पित कर देते हैं, तब फिर फल जो भी निकले चिन्ता किस बातकी, विक्षुब्ध होनेका तब कोई कारण नही रह जाता, भले ही क्षितिज पर कुछ समयके लिए बादलोकी कालिमा गहनसे-गहनतर हो उठे। ईसाने यही सीख

१. दिनांक १० दिसम्बर, १९२८के अपने पत्रमें उन्होंने लिखा था: "यदि किसी प्रान्तके खद्दरकी कीमत घटानी हो तो उसका तरीका यह है कि स्थानीय खादीके साथ अन्य प्रान्तोंकी अपेक्षाकृत कम मूल्यकी खादी मिला दी जाये, दोनोंको एकत्र कर दिया जाये। पर इस तरह कई प्रान्तोंकी खादी एकत्र या 'पूल' करनेवालेको इस बातकी गारंटी देनी होगी कि जिस प्रान्तमें वह खादी एकत्र करेगा, 'पूल' में शामिल करेगा, उस प्रान्तमें तैयार होनेवाली सारी खादीकी बिक्रीकी जिम्मेदारी उसीपर होगी। . . . 'पूल' करनेवाला प्रान्त इस स्थितिमें अपने स्थानीय बाजारमें कमसे-कम उतार-चढ़ाव लाये बिना यथासम्भव अधिकसे-अधिक खादीकी बिक्री करना चाहता है। ऐसी स्थितिमें 'पूलिंग' का तरीका यह है कि खादीकी स्थानीय कीमतोंको मानक मान कर स्थिर रखा जाये और अन्य प्रान्तोंसे अपेक्षाकृत महगी और अपेक्षाकृत सस्ती दोनों ही प्रकारकी खादी थोड़ी-थोड़ी मात्रामें खरीद कर उनको स्थानीय खादीके साथ ही स्थानीय मानक कीमतपर बेचा जाये। . . . 'पूलिंग' हानिकारक तो तब होगी जब खादीका उत्पादन करनेवाले प्रान्तमें उसके समूचे उत्पादनकी बिक्रीकी कोई जिम्मेदारी लिये बिना ही अन्य प्रान्तोंकी खादीको एकत्र कर दिया जाये। उदाहरणके तौरपर श्री जेराजाणी सारे भारतवर्षकी बढ़ियासे-बढ़िया खादी खरीद कर उनकी कीमत सामूहिक रूपसे तय करके एक निश्चित कीमतपर बम्बईमें उसकी बिक्री कर सकते हैं। बम्बईको इससे कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि वहाँ स्थानीय तौरपर खादीका उत्पादन नहीं होता।"

एक वाक्यमे समो दी है: "चिन्ता किसी बातकी मत करो।" कृष्णदासने बतलाया है कि हेमप्रभादेवी अपने शरीरको थका-थका कर जर्जर करती जा रही है। उनको ऐसा नही करना चाहिए और शरीरको चुस्त-दुरुस्त रखनेके लिए जो छोटी-मोटी शारीरिक सुख-सुविधाएँ जरूरी होती है उनसे अपने-आपको वचित नही रखना चाहिए।

प्रदर्शनीके बारेमे आपने जो लिखा वह मैंने देख लिया है।[1] मुझे उसपर कोई आपत्ति नही। इतना ही पर्याप्त है कि हम विरोध न करे और जहाँ भी हमारी मददकी जरूरत हो हम मददके लिए तैयार रहे और यह मदद हमको पूरी शुभ कामनाके साथ, बिना किसी झुंझलाहटके करनी चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर

अग्रेजी (एस० एन० १३७९४)की फोटो-नकलसे।

२६२. पत्र: काली कृष्णनारायणको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१३ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मेरी राय तो यह है कि यदि ये प्रदर्शन पूर्णतः अनुशासनबद्ध तथा अहिंसापूर्ण बने रहे तो जनताको प्रशिक्षित करनेमे इनका भारी महत्त्व रहता है। इसीलिए इन प्रदर्शनोको तबतक छोडना नही चाहिए जबतक एक यह बात यथासम्भव सुनिश्चित रहे कि कैसी भी उत्तेजना क्यो न हो प्रदर्शनकारी हिंसाका सहारा बिलकुल नही लेगे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत काली कृष्णनारायण
लखनऊ

अग्रेजी (एस० एन० १४८२७)की फोटो-नकलसे।

१. पत्रमें उन्होंने यह भी कहा था: "प्रदर्शनी-अधिकारियोंने मुझे कुछ भी नहीं लिखा।... समितिके प्रतिनिधि देश-भरमें घूमे और उन्होंने बंगाल, बिहार, आन्ध्र, इत्यादिसे संघके अतिरिक्त अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार किया गया खद्दर खरीदा। उन्होंने इसी तरहसे कताई-प्रदर्शनोंकी भी व्यवस्था की। अखिल भारतीय चरखा संघका सम्मिलित होना तो उस सबके अतिरिक्त है और इसलिए व्यवस्था वही है जो पहलेसे चली आ रही है।"

२६३. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

वर्धा
१३ दिसम्बर, १९२८

चि० मथुरादास,

तुम्हारा मार्ग निष्कंटक नही है। साथका पत्र पढना। मैंने रामसहायको तुम्हारे साथ बात करनेके लिए भी लिखा है। तुम अटूट प्रेम रखो, धीरज रखो और कभी निराश न होओ तो अन्तमें विजय तुम्हारी ही है। तुम अपने कामसे जल्दी ही सन्तोष मत कर लेना। दोनोंके प्रति स्नेह रखना; यही समभाव माना जाता है। भूखेको रोटी देना और जिसे अजीर्ण हो उससे उपवास कराना; इन दोनो भावोकी उत्पत्ति प्रेमसे होती है। इसलिए इसका नाम समभाव है। और यह 'कीरी और कुंजर'के[1] प्रति एक-सा बर्ताव रखने जैसी बात है। तुम्हारी नई पद्धति एकदम सफल हो गई है, ऐसा न मान बैठना। जो पुरानी पद्धतिका ही आग्रह करते हैं उन्हे समझा-बुझा कर अपने साथ लेकर आगे बढोगे तो कमसे-कम संघर्ष होगा।

पद्धति नई हो या पुरानी उसपर अमल तो पूरा-पूरा होना चाहिए। जो कठिनाइयाँ हों उनके बारेमें मुझे लिखते रहना। तनिक भी घबराना नही। यदि मेरे अनुमान अपूर्ण तथ्योंपर आधारित या भूल-भरे लगें तो मुझे चेताना। मैं जिन सिद्धान्तोका निरूपण करता हूँ, उनमें भले ही तुम्हे श्रद्धा हो किन्तु कुछ विशेष तथ्योके आधारपर किये गये मेरे अनुमानोपर तो श्रद्धा नही हो सकती।

जो केवल तर्क ग्राह्य है उसमे श्रद्धाको स्थान नही है। इसलिए तथ्योके विषयमें जहाँ भी मेरी भूल दिखाई दे और उसके कारण वहाँ मुझसे त्रुटि होती हो, तो सुधार अवश्य सूचित करना। यदि ऐसा करने लगोगे तो मैं तुम्हें अधिक खुलकर लिख सकूँगा और ज्यादा अच्छी तरह पथ-प्रदर्शन कर सकूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४२१३)की फोटो-नकलसे।

१. साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय।

२६४. पत्र : छगनलाल जोशीको

१३ दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

आज 'भाई' के बदले 'चिरजीव' से शुरू किया है, अब यह चलता रह सकता है।

तुम्हे ११ तारीखकी डाक नही मिली इसमें मेरा दोष नही है। मैंने तो लिखा ही था। तुम्हे १२ तारीखको दो पत्र मिले होगे। आखिरी घडीमे डाक भेजनेमे कभी-कभी ऐसा हो जाता है।

रमाबहन खासी बडी बीमारी साथ लेकर आई है, मगर घबराना नही। इलाजका पूरा प्रबन्ध कर देनेसे सब ठीक हो जायेगा। उनकी दूसरी शिकायते भी धीरे-धीरे दूर हो जायेगी। कैलाशकी बीमारीके लिए डाह्यीबहन और नानुभाई जिम्मेदार हैं। आखिरकार बालकोका पेट भी चाहे जैसा भार तो सहन नही कर सकता। धर्मकुमारके बारेमे भी यही है। स्वस्थ होते ही सब तरहकी छूट लेने लगता है। बेलाबहनकी तो प्रकृतिमे ही बीमारी लिखी है। वह भी अपनी जीभको वशमे नही रख सकती। और साबरमतीका पानी ऐसा नही कि हम सब प्रकारकी छूट ले ले। एक तरहसे तो यह अच्छी बात है।

जिन्हे केवल खादी कार्यके लिए शिक्षा दे रहे हैं, उन आश्रमवासियोका रु० १२ के हिसाबसे खर्चका हिसाब खादी विभागसे लेनेमे मुझे कोई दोष नही दिखाई देता।

बाहरसे या अन्दरसे चाहे जैसी भी मुसीबत आये, तुम होशियार रहना। धीरज न छोडना। अपनी शक्तिसे बाहर काम न करना। जो भी जरूरी हो चुपचाप करते जाना, इससे कोई बोझ लगेगा ही नही।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

२६५. पत्र : रमाबहन जोशीको

गुरुवार [१३ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० रमाबहन,

तुम खासी बीमारी लेकर मन्दिरमें वापस आई हो। यह पत्र मिलनेतक बच्चे तो अच्छे हो ही गये होंगे। किन्तु यदि तुम उनका ठीक-ठीक लालन-पालन न कर सको तो यह तुम्हारे लिए लज्जाकी बात होगी और मन्दिरके लिए भी। तुम्हे चाहिए कि तुम बच्चोको वे जो माँगे वह नही बल्कि उनके लिए जो हितकर हो वही दो। देनेसे इनकार करनेमे सख्ती करनेकी जरूरत नही है। उन्हे समझाया जा सकता है। यह बात तो मैंने तुम्हे कई बार बताई है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

२६६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

गुरुवार [१३ दिसम्बर, १९२८][2]

भाई घनश्यामदासजी,

लालाजीके बारेमें खत मीला है। खादीका काम चल रहा है जानकर मुझको आनंद होता है। इस बारेमे सतीशबाबूका खत आया है। आपको पढ़नेके लीये भेजता हुं। वापिस भेजनेकी आवश्यकता नहिं है।

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ६१६४ से।
सौजन्य : घनश्यामदास बिडला

१. रमाबहन और बच्चोंकी बीमारीके उल्लेखसे; देखिए पिछला शीर्षक भी।
२. देखिए "पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको", १३-१२-१९२८।

२६७. पत्र: तुलसी मेंहरको

आश्रम, वर्धा
दिसम्बर १३, १९२८

चि० तुलसी मिहर,

तुमारा पत्र मिला है। तुमको न मैं भूला हू न कोई भूले है। लिखनेका कोई अवसर नही था इसलिए नही लिखा है। लालाजीके लिए जो लिखते हो वह ठीक ही है। तुमको आनद रहता है और कार्यकी सफलताके लिए आशा वढ़ती ही जाती है इस लीये मैं तुम्हारे लीये निश्चिन्त रहता हुं। वास्तवमें सफलता होती है या नही वह तो भगवान ही जानता है। हमारा धर्म तो विश्वास रखनेका ही है। आजकल मैं वर्धा आश्रममें हूं। साथमे वा इत्यादि हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री तुलसी मिहर श्रेष्ठ
चर्खा प्रचारक
कोवा हाल, पाटन
नेपाल

जी० एन० ६५३६ की फोटो-नकलसे।

२६८. पत्र: हेमप्रभा दासगुप्तको

[१३ दिसम्बर, १९२८के आसपास][1]

प्रिय भगिनि,

आपका पत्र मीला है।

मैं तो किसी तरह आपका स्वास्थ्य अच्छा देखना चाहता हुं। मर्यादासे वाहर जाकर परिश्रम मत कीजीये।

सोदपुरको मैं सावरमती वरावर समजनेकी कोशीष करुंगा। समजता नहिं हु क्योकी जो प्रयोग सावरमती और वर्धामे होता है सोदपुरमे करना शक्य है या नहिं इस वारेमे मुझको सदेह है। सावरमतीके प्रयोग सोदपुरमे करके मैं सोदपुरका नाश नहिं चाहता हु। सोदपुरकी हस्ती खादीके लीये है सावरमतीकी सत्यादिके प्रयोगोके लीये। इससे सावरमती उच्च है ऐसा भी न माना जाय। दोनोंके कार्यक्षेत्र मैंने

१. सन् १९२८ में सोदपुर आश्रमकी गतिविधियोंका क्षेत्र बढ़ाया जा रहा था। स्वयं श्रीमती हेमप्रभा दासगुप्त भी इस काममें लगना चाहती थीं; देखिए "पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको", १३-१२-१९२८ भी।

तो बताये। मैं चाहता तो अवश्य हुं की सोदपुरमे भी हम वही प्रयोग करे जो साबरमतीमें हो रहे है परतु यह सब बात ईश्वराधीन है। सोदपुरमे जो कुछ भी हो आपको तो मै आश्रमवासी ही समझता हुँ।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० १६४६ की फोटो-नकलसे।

२६९. पत्र : डॉ० वि० च० रायको

वर्धा
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० विधान,

कश्मीर-स्थित अखिल भारतीय चरखा संघके प्रतिनिधिका तार नत्थी है। मैं व्यक्तिगत अनुभवसे जानता हूँ कि कश्मीरमें तैयार-शुदा बहुत-सा माल हाथकते और हाथबुने मालके नामपर ठेल दिया जाता है, लेकिन असलमें उसका सूत विदेशी ही होता है। कश्मीरमें मिलका कता स्वदेशी सूत मिलनेका सवाल ही नहीं उठता। वह या तो विदेशी हो सकता है या फिर हाथका कता हुआ सूत। विदेशी सूत बड़ी तेजीसे हाथ-कते सूतकी जगह लेता जा रहा था। अखिल भारतीय चरखा संघका प्रतिनिधि वहाँ इसी गड़बडीको रोकने गया था। अब देखना यह है कि गडबडी किस हृदतक रोकी जा सकती है। जो भी हो, उसको वहाँ तैनात करनेसे कई जालसाजियोंका पर्दाफाश हुआ है।

क्या मैं उम्मीद करूँ कि अखिल भारतीय चरखा संघ द्वारा अप्रमाणित कोई भी वस्तु प्रदर्शनीमें नहीं रखी जायेगी।

हृदयसे आपका,

सहपत्र – १

डॉ० विधानचन्द्र राय
३६, वेलिंग्टन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३३०१) की माइक्रोफिल्मसे।

२७०. पत्र : अक्कूर अनन्ताचारीको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मेरी तो बडी इच्छा थी कि आपने जिन शिकायतोका जिक्र किया है, उनके बारेमे लिखूं लेकिन इस तरहकी शिकायते इतनी ज्यादा है कि मुझे लगता है इस शिकायतको दूर करानेकी आशासे इसके बारेमे लिखना बिलकुल ही बेकार होगा। ऐसी शिकायते तबतक दूर नही कराई जा सकेगी जबतक कि हम अपने आसपासके वातावरणसे असहायता और कमजोरीको दूर नही कर लेते।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत अक्कूर अनन्ताचारी
गौतम आश्रम
चेन्गाडु ग्राम, वालाजापेट

अंग्रेजी (एस० एन० १३७९७)की माइक्रोफिल्मसे।

२७१. पत्र : रूपनारायण श्रीवास्तवको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। गायके बछडेवाली घटनाकी समस्या तो अलग ही थी। जिसके बारेमे मुझसे व्यक्तिगत तौरपर लिखनेके लिए कहा गया था। परन्तु चूहोकी समस्या तो इतनी बडी है कि मै खुद उसे नही सुलझा सकता। इसलिए 'यग इडिया'के पृष्ठोमे उसके बारेमे न लिखनेके लिए आप मुझे क्षमा करे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत रूपनारायण श्रीवास्तव
मारफत — सेठ जमनादास, एम० एल० ए०
जबलपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १३७९९)की माइक्रोफिल्मसे।

२७२. पत्र : हरिकृष्णदासको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं आपको कोई सलाह तभी दे सकता हूँ जब अंग्रेजोंकी ओरसे दिये गये उस निश्चित वचनका[1] पूरा पाठ मेरे सामने हो, जो आप कहते हैं कि आपके नगरकी स्थापनाके समय उनकी ओरसे दिया गया था। हाँ, लेकिन सत्याग्रहका मार्ग अपनाना यदि कभी उचित जान पड़े तो भी उसे तभी अपनाना चाहिए जब आप अन्य सभी वैधानिक उपायोंको आजमा कर देख चुके हों और यदि आपका पक्ष बहुत ही सबल हो तो आपको भले मुसलमानोंसे भी बात करके उनसे हस्तक्षेप करनेके लिए अनुरोध करना चाहिए। ऐसे मुसलमानोंमें एक डॉ० अन्सारी भी हैं।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत हरिकृष्णदास
सम्पादक 'बिजली'
फाजिल्का

अंग्रेजी (एस० एन० १३८००)की फोटो-नकलसे।

२७३. पत्र : डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हाको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

पत्रके लिए धन्यवाद। आपके लेख अभी भी मेरी फाइलमें हैं।

यह तो मुझे भी लगा था कि मन्त्रीने गया जिला बोर्डको निष्प्रभावी बना कर एक असाधारण कदम उठाया है। मुझे किसी भी दृष्टिसे उसका किंचित भी औचित्य समझमें नहीं आया। मैं आशा करता हूँ कि शक्तिके ऐसे घोर दुरुपयोगका कोई कारगर इलाज आप बिहारके लोग अवश्य निकालेंगे।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सच्चिदानन्द सिन्हा
पटना

अंग्रेजी (एस० एन० १३८०२)की माइक्रोफिल्मसे।

१. शहरमें गोवध न होने देनेके बारेमें।

२७४. पत्र : जे० डी० अत्रेको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया। इतना स्पष्ट है कि आपने मेरे लेख गौरसे नही पढे। 'क' कभी भी 'ख' की जान नही ले सकता, इसलिए कि 'क' मे इतनी बुद्धि तो हमको माननी ही चाहिए कि वह समझ सके कि आत्महत्या करनेकी कोशिश करनेवाला 'ख' कुछ समयके लिए विक्षिप्त हो गया है। 'क' को अपने विवेकका उपयोग करना चाहिए, दूसरेकी बुद्धिपर निर्भर नही रहना चाहिए और किसी भी ऐसे व्यक्तिकी बुद्धिपर तो बिलकुल ही नही जो विक्षिप्त हो।

हृदयसे आपका,

श्री जे० डी० अत्रे
३८, जाओबाकी बाडी
बम्बई–२

अंग्रेजी (एस० एन० १३८०३)की माइक्रोफिल्मसे।

२७५. पत्र : वी० एन० खानोलकरको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मै अब खादी-भण्डारसे लिखा-पढी कर रहा हूँ। आपकी इस बातसे मै बिलकुल सहमत हूँ कि पूनियाँ यदि दी जाये तो वे अच्छे किस्मकी और कामके लायक होनी ही चाहिए।

आपने पत्रमें लिखा है कि आप धुनाई नही कर पाते, लेकिन पत्रके अन्तमें आपने एक पौंड रुई माँगी है। आप धुनी हुई रुई चाहते है, या धुननेके लिए रुई चाहते है?

हृदयसे आपका,

श्रीयुत वी० एन० खानोलकर
गणेश भवन, खार
जिला थाना

अंग्रेजी (एस० एन० १३८०४)की माइक्रोफिल्मसे।

२७६. पत्र : अमरनाथको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। यह जान कर दुःख पहुँचा कि आपकी धर्मपत्नी नही रही। आशा करता हूँ कि अपना पत्र लिखनेके समय आपकी जो मनोदशा थी अब आप इससे अधिक प्रसन्नचित और कम विह्वल होगे। यदि आपकी जगह मै होता तो आपकी भाँति इस बातकी चिन्ता न करता कि आपकी धर्मपत्नीकी आत्माका भाग्य क्या है। पर आपको भरोसा रखना चाहिए कि उसकी आत्मा इस समय जहाँ भी है सकुशल ही है।

और आपका दूसरा प्रश्न। यदि आपकी धर्मपत्नीके प्रेममे आसक्ति नही थी, तो अच्छा ही है। तब वियोगकी पीड़ा नही होगी और होनी भी नही चाहिए। कारण यह कि यदि हम ईश्वरमे लीन हो जानेके अभिलाषी रहते है तो हम सभी ईश्वरमे मिल जाते है। वैसे तो लगता है कि हम एक-दूसरेसे विलग है, परन्तु यदि देखा जाये कि हम सब एक ही स्रोतसे आये है और उसीमे हमें लय होना है तो क्या पति-पत्नी और क्या माता-पिता या सन्तान, सभी लोग, बल्कि समस्त प्राणि-मात्रमे एक ही आत्मा व्याप्त है, उनमे कोई अन्तर नही।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत अमरनाथ
बटाला

अंग्रेजी (एस० एन० १३८०५)की माइक्रोफिल्मसे।

२७७. एक पत्र

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। कोई कारण नही कि आप अपने रोगको लेकर इतने दु:खी हो। नपुसकता एक रोग ही है। परन्तु आप यदि ताजी हवामे रहे, हल्का-सा व्यायाम करे, उत्तेजक आहारसे बचे, अर्थात् बिना मसालोंके हरी सब्जियो, दूध, गेहूँ और कुछ ताजे फलोका सेवन करते हुए काफी दिनोतक कटि-स्नान करते रहे, तो आपके शरीरमे स्फूर्ति लौट सकती है। परन्तु आपको इसके बारेमे चिन्तित नही रहना चाहिए।

अपने जीवनको समाप्त करना निश्चय ही पाप-कर्म होगा।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३८०८)की माइक्रोफिल्मसे।

२७८. पत्र : सी० एन० देवराजनको

स्थायी पता
साबरमती आश्रम
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

खेद है कि मै आपके पत्रका इससे पहले उत्तर नही दे पाया। और इतना ही दु:ख मुझे यह जान कर हुआ कि जाफनापर विपत्ति टूट पड़ी है। एक सरकारी अकाल पीडित सहायता कोष मौजूद है। मेरा खयाल है कि उसके कोई बँधे-बँधाये नियम नही है। सर्वेंट्स ऑफ इडिया सोसाइटी, पूनाके श्रीयुत देवघर भी एक छोटी-सी राशि स्थायी कोषके रूपमे रखते हैं। वह स्वैच्छिक कोष है। आप उनको लिख कर और अधिक जानकारी हासिल कर सकते है। मैं चाहता हूँ कि आप श्रीयुत चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको भी (गाधी आश्रम, तिरुचेन्गोडुके पतेपर) पत्र लिखे। उन्होने दक्षिण भारतमे बाढ़के दिनोमें काफी काम किया था।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सी० एन० देवराजन
मनिपे, जाफना (लका)

अंग्रेजी (एस० एन० १५११९)की फोटो-नकलसे।

२७९. पत्र : जेरोम डेविसको

स्थायी पता
सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
१४ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

मै आपके स्नेहभरे पत्रकी कद्र करता हूँ। मै रुपये-पैसेकी कमीके कारण अपनी अमेरिका यात्रा नही टाल रहा हूँ। समस्या रुपये-पैसेसे अधिक गहरी है। मै यदि जानेके लिए राजी हो जाऊँ तो भारतीय मित्र मेरा सारा खर्च उठानेको तैयार है। मुझे दुविधा इस प्रश्नको लेकर हो रही है कि क्या अमेरिका यात्रा करना मेरे अपने कर्त्तव्यकी दृष्टिसे आवश्यक है, कहनेका मतलब यह कि क्या मेरे पास ऐसा कोई सन्देश है जिसे मुझे व्यक्तिगत रूपमे वहाँ प्रचारित करना चाहिए? क्या मेरा कार्य इतने तक ही मर्यादित नही कि भारतमे मुझे जिस तरहका जीवन बनानेका सौभाग्य मिला है उसीके जरिए, अपने लेखोकी सहायतासे या उनकी व्याख्या द्वारा, अपने सन्देशको अमेरिकी जनतातक सहज गतिसे पहुँचा दूँ। यात्राके लिए मै आन्तरिक प्रेरणा महसूस नही करता।

हाँ, लेकिन यदि मै सारी परिस्थितिको बिलकुल स्पष्ट समझ रहा हूँ तो अगली अप्रैलके अन्ततक मेरा यूरोप जाना निश्चित है। फिर उसके साथ ही मुझे अमेरिका यात्रा भी जोड लेनी चाहिए या नही, और यदि मैने प्रेरणा महसूस भी की तो उसके लिए समय मिलेगा भी या नही, ये सब अलग प्रश्न है।

मै आपको यह भी बतला दूँ कि डॉ० वार्ड जैसे मित्रोकी राय यह है कि अमेरिका यात्रा न करनेका मेरा निर्णय अभीतक बिलकुल सही रहा है। उनका खयाल है कि मै वहाँ एक अच्छी खासी धूम मचा कर नौ दिनके तूफानी दौरेके बाद लौट आऊँगा, बस। शायद कुछ दिनोतक उसकी चर्चा भी होती रहे, लेकिन मै लोगोको जो सन्देश देना चाहता हूँ और जिसे मै अमलमे उतारनेकी कोशिश कर रहा हूँ, उसे तो अमेरिकी जनता बिलकुल भी नही समझ पायेगी।

हृदयसे आपका,

श्री जेरोम डेविस महोदय
येल विश्वविद्यालय
१११०, एडवर्ड हाल
न्यू हेवन, कनेक्टिकट, अमेरिका

अंग्रेजी (एस० एन० १५१२०)की फोटो-नकलसे।

२८०. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

१४ दिसम्बर, १९२८

तुमने वहाँका जो वर्णन भेजा है वह तो मुझे भी ललचाता है। किन्तु ऐसा दिन कहाँसे पाऊँ?

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी

२८१. पत्र : नारणदास गांधीको

१४ दिसम्बर, १९२८

चि० नारणदास,

मगनलालके जीवन-कालमे एक मारवाड़ी नवयुवककी[1] बात चली थी। उसने बी० एस० सी० की परीक्षा पास की है और आजकल अमलनेरकी एक मिलमे नौकरी कर रहा है। अब उसकी सगाई करने लायक आयु हो गई है। उम्र शायद बाईस वर्ष होगी। वह फक्कड आदमी होगा तथा बहुत घनवान होगा इसलिए हम उसमे न पडे ऐसा मैंने उस समय कहा था; इसलिए बात बन्द हो गई थी। अब मैं उससे मिल चुका हूँ। मेरी दृष्टिमें वह रुखीके लायक वर है। धन ज्यादा नही है; पर सुखी है। उसका पिता विलायतमे रहता है। पैसेका नुकसान हुआ था उसे पूरा करनेकी दृष्टिसे। यह नवयुवक खादी-प्रेमी है और खादीधारी है। अब माँ-बेटीसे यह जान लो कि वे यहाँ सगाई करनेकी इच्छुक हैं या नही। वह वैष्णव है और ऐसा नही है कि रुखीकी स्वतन्त्रतामे दखल दे। मेरी तो राय है। खुशालभाईसे[2] भी पूछना हो तो पूछकर मुझे समयसे सूचना देना —— इस विचारसे कि मैं कलकत्ता जाऊँ तो विशेष बात कर सकूँ। युवक या और कोई व्यक्ति नही जानता कि मेरी निगाहमे कौन-सी लड़की है और वह कहाँकी है।

तुम्हारा सब काम ठीक चल रहा है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७७२४)से।
सौजन्य : नारणदास गाधी

१. वनारसीलाल बजाज।
२. नारणदास गांधीके पिता।

२८२. पत्र : निदेशक, पूसा इन्स्टीट्यूटको

वर्धा
१५ दिसम्बर, १९२८

निदेशक
पूसा इन्स्टीट्यूट

प्रिय महोदय,

बतलानेकी कृपा करे कि क्या पूसा फार्ममे आप मधुमक्खी पालन भी करते है, और यदि हाँ, तो क्या वहाँ मधुमक्खी पालनका प्रशिक्षण भी दिया जाता है और क्या भारतमे मधुमक्खी पालनके सम्बन्धमे कुछ पुस्तके भी है।

आपका विश्वस्त,

अंग्रेजी (एस० एन० १३८१०) की माइक्रोफिल्मसे।

२८३. पत्र : लाला जगन्नाथको

वर्धा
१५ दिसम्बर, १९२८

प्रिय जगन्नाथ,

मेरा पूरा विश्वास है कि बलवन्तराय मेहता स्वय आपको पत्र लिखते रहे हैं। उन्होने पहले ही नियमित रूपसे काम चालू कर दिया है और शुरुआत काफी अच्छी रही है।

यह पत्र मैं आपसे यह पूछनेके लिए लिख रहा हूँ कि क्या पजाबमे वैज्ञानिक ढँगसे मधुमक्खी पालन किया जा रहा है, और यदि हाँ, तो क्या किसी मधुमक्खी पालन विशेषज्ञके साथ सम्पर्क स्थापित करना सम्भव है? मैंने हाल ही मे सुना है कि पंजाबमे मधुमक्खी पालनका धन्धा काफी फैला हुआ है।

हृदयसे आपका,

लाला जगन्नाथ
२, कोर्ट स्ट्रीट
लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १३८११) की फोटो-नकलसे।

२८४. पत्र : कुसुम देसाईको

१५ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम

तेरा पत्र मिला। तू बिलकुल अच्छी हो गई, यह जानकर मैं निश्चिन्त हुआ। फिर बीमार न पड़ना।

मेरी गाड़ी तो ठीक चल रही है। कामका बोझ तो है, परन्तु वह मुझे खटकता नही।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

सोमवारसे यहाँ लोगोकी भीड़ होनेवाली है। आजकल भोजनालयमें कितने लोग खाते हैं?

गुजराती (जी० एन० १७६९) की फोटो-नकलसे।

२८५. पत्र : छगनलाल जोशीको

१५ दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। सेंडर्स्टनके भेजे हुए १५ पौंड आधे खादीके खातेमें और आधे अन्त्यजोंके खातेमें जमा करना।

बिहारवाली बहनको आने देनेकी इच्छा तो होती है किन्तु फिलहाल ऐसा नही किया जा सकता। अलबत्ता हमे ऐसी बहनोको आश्रममें ले सकनेकी तैयारी तो करनी ही है। हम आशा करे कि हम जल्दीसे-जल्दी इसके योग्य बनेंगे।

हाँ, मुझे ऐसा लगता तो था। मैंने किसीको[1] मकराणीकी उपाधि दी थी, उसका उल्लेख है। किन्तु विनोदमे किये गये अपने ऐसे प्रयोगोको मैं बादमें शीघ्र ही भूल जाता हूँ। रमाबहनसे कहना कि मैं माफी माँगता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – श्री छगनलाल जोशीने

१. देखिए "पत्र : छगनलाल जोशीको", २०-१२-१९२८।

२८६. पत्र : प्रभावतीको

[१५ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० प्रभावती,

तुमारा पत्र मीला है। सूर्यमुखीदेवीके बारेमें छगनलालभाईसे मश्वरा कर लो। द्वारिकासे भी पत्र लीखो।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० २३३९ की फोटो-नकलसे।

२८७. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

१५ दिसम्बर, १९२८

भाई मूलचंदजी,

आपका पत्र मीला है। अति कार्यके लीये आगे पत्र नहिं लीख सका हु। आप खादी और शिक्षा दोनों कार्य करते रहें। यद्यपि इसको मैं खादीकी अव्यभिचारिणी भक्ति नहिं कहुंगा। ऐसे तो मेरी भक्ति भी अव्यभिचारिणी नहिं मानी जाय।

अव्यभिचारिणी भक्ति कोई कृत्रीम वस्तु नहिं है।

आप जैसे शिक्षा देते हुए भी खादी सेवा कर लेंगे। भाई जेठालाल दूसरा सोच हि नहिं सकते है। दोनोके लीये स्थान है।

आपका,
मोहनदास

श्री मूलचंदजी
खादी आश्रम, रीगस
राजपूताना

जी० एन० ७५१ की फोटो-नकलसे।

१. बिहारकी सूर्यमुखी देवीकी चर्चासे यह पत्र पिछले पत्रके साथ ही लिखा प्रतीत होता है।

२८८. खादी-सुधार सम्बन्धी सुझाव

मोम्बासासे एक खादी-प्रेमी भाईने श्री विट्ठलदास जेराजाणीको निम्न पत्र लिखा है जो उन्होंने मेरे पास भेज दिया है।[1]

इसका मतलब यह हुआ कि मिलके कपड़ोकी किस्मोको जाननेवाले खादीमे दिलचस्पी ले और अलग-अलग बटका सूत तैयार करायें। यह काम हो सकता है और कुछ अशोमे होता भी है, लेकिन बहुत ही थोड़ा। मिलोकी जानकारी रखनेवालोमे से बहुत थोड़े लोगोने अबतक खादी-प्रचारमे दिलचस्पी ली है और खादीका प्रचार करनेवालोने खादीकी दृष्टिसे मिलके कपडोका और उनकी बनावटका अध्ययन नही किया है। अज्ञानवश बहुतोने यह मान लिया है कि मिलके उद्योगमे तो कुछ भी सीखने योग्य नही है, और कुछ लोगोकी तो यह मान्यता रही है कि खादी चाहे जैसी हो, कोई बात नही। इसके बावजूद सन १९१८ मे खादी-प्रचारकी दृष्टिसे सत्याग्रह आश्रममे जब पहली बार खादीका पहला धोतीका थान तैयार किया गया तो उसकी कीमत १७ आने गज रखी गई थी, क्योकि उसपर उतना ही खर्च पडा था। पर उस खादीके साथ आजकी खादीकी तुलना करनेपर उसकी किस्म और भाव दोनोमे जमीन-आसमानका फर्क दिखाई देता है। इससे इतना तो कहा ही जा सकता है कि अनेक खादी-प्रचारकोने खादीके सुधारकी बातको भी ध्यानमे रखा है। इस बातका नियमित अध्ययन स्वय मगनलालने शुरू किया था और उसका परिणाम भी अच्छा निकला था। उक्त अध्ययन अब भी चालू है, लेकिन उसमे सुधार करनेकी आवश्यकता है, यह मुझे मान लेना चाहिए। जैसा कि इस पत्र-लेखकने लिखा है, मिलका काम जाननेवाले यदि थोडा-बहुत समय खादी-सुधारके अध्ययनमे दे तो बहुत अधिक सुधार हो सकता है, इसमे कोई शका नही। खादीके अधिकाधिक प्रचारके लिए खादीकी सामर्थ्यके अनुसार उसके रग-रूपमे विविधता लानी ही होगी। हालाँकि अन्तमे एक ऐसा स्थान होगा, जहाँ जाकर दोनो – खादी और मिलके कपडोकी मर्यादा निश्चित हो जायेगी — और जहाँ एक-दूसरेका अनुकरण नही हो सकेगा। इतना ही नही बल्कि अनुकरणकी आवश्यकता ही न रहेगी। जैसे कि खादीकी कुछ कलाओ तक मिले आजतक भी नही पहुँच सकी है और न कभी पहुँच ही सकती हैं, इसी तरह मिले करोड़ो रुपयोका महीन, सस्ता और ऊपरसे सुन्दर दीखनेवाला कपडा बना सकती है पर उतनी मात्रामे उस तरहकी खादी नही बनाई जा सकती है, और न बनानेकी आवश्यकता ही रहेगी। माँग हो या न हो, मिलोका कपडा तो सिर्फ लोगोको पहनाने और ज्यादा नफा कमानेकी दृष्टिसे बनाया जाता है। किन्तु खादी तो आवश्यकताकी पूर्ति हो सके, इतनी मात्रामे ही बनाई जा सकती है। सिर्फ पहनानेकी गरजसे ढेरो

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नहीं दिया गया है। पत्र-लेखकने सुझाव दिया था कि अच्छे किस्मकी खादी तैयार करनेके लिए हमें सूती कपड़ा तैयार करनेवाले विशेषज्ञोंकी सहायता लेनी चाहिए।

खादी नही बनाई जा सकती; यह शक्ति उसमे कभी आ ही नही सकती। खादीके बारेमें यह लाभदायी मर्यादा हमेशाके लिए रहेगी क्योंकि मनुष्य कोई जड़ यंत्र नही है जिसका दुरुपयोग एक निश्चित मर्यादाके बाद भी होता ही रहे। चरखा संघकी ओरसे चलनेवाले केन्द्रोंके कार्यकर्त्ताओंका मुख्य कर्त्तव्य है कि खादीमे जहाँ-जहाँ सुधारकी गुंजाइश हो, वहाँ पहुँच कर उसमे सुधार करना। जो कुछ हदतक जाग्रत है वे और भी अधिक जाग्रत हो जाये। आशा है मिलके कपडोकी कारीगरीके शास्त्रको जाननेवाले खादीमे दिलचस्पी लेगे और खादीके लिए अपना समय भी देगे।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १६-१२-१९२८

२८९. पत्र : डॉ० बी० एस० मुंजेको[1]

वर्धा
१६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय डॉ० मुंजे,

आपका पत्र मिल गया। यदि मालवीयजी आपकी नजरोमें इतने बूढ़े है तो क्या मै भी उस दौडमे उनके साथ कंधेसे-कंधा रगडता नही चल रहा हूँ? और शब्दोका जो अर्थ आप लेते है उसके अनुसार तो मै शायद उनसे भी ज्यादा रहम-दिल, ज्यादा नरम, ज्यादा दब्बू और अधिक सौम्य हूँ। वैचारिक जगतमें विचरण करनेवाला कोई महात्मा नेतृत्व कर ही कैसे सकता है? लेकिन 'एक नितान्त भौतिकसे कठिन संघर्षकी उखाड-पछाड़'मे आप एक महात्माको लाना ही क्यो चाहते है? और फिर आप जैसे व्यक्ति क्या करेगे जो दिन-दिन युवा होते जा रहे है? आप एक बेचारे महात्माको उसकी महानतासे निपटने-सुलझनेके लिए एकान्तमे क्यो नही रहने देते? खैर मजाक छोडिए, मै सचमुच चाहता हूँ कि मै अपने-आपको जिस धर्मका अनुयायी बतलाता हूँ उसकी जितनी भी सेवा मुझसे बन पडे, अवश्य करूँ। इसके बारेमे हम किसी ज्यादा फुर्सतके समय बात करेगे।

मैने आपका भाषण[2] देख लिया है और अन्य कई चीजोकी तरह इसके अन्तमे भी एक चोट है। यदि अफगानिस्तानको ही उपमानके तौरपर ले तो फिर आप यह क्यो चाहते है कि मुसलमान हिन्दुस्तानमे हिन्दू बन जाये। अफगान लोग तो ऐसी कोई अपेक्षा नही रखते कि हिन्दू मुसलमान बन जाये, हाँ, यह आशा वे रख सकते है कि हिन्दू लोग वहाँ अफगानोकी तरह रहे, मतलब यह कि अफगानिस्तानके

१. बी० एस० मुंजेके दिनांक १४ दिसम्बर, १९२८ के पत्रके उत्तरमें, जिसमें उन्होंने गांधीजीसे हिन्दुओंका नेतृत्व करनेका अनुरोध किया था।

२. नेहरू रिपोर्टके समर्थनमें आयोजित सर्वदलीय सम्मेलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष-पदसे दिया गया भाषण।

निवासियोंकी तरह बनें। इसलिए इसके जोडका शब्द भारतमें हिन्दुस्तानी ही है। हिंदुस्तानकी सेवाके लिए मुसलमानो, यहूदियो, ईसाइयो — सभीको, हिन्दुओको भी — हिन्दुस्तानी बनना चाहिए। साथ ही, प्रत्येक समुदायको अपने ही धर्मका विशुद्ध रूपमे पालन करते हुए, अपने साथी समुदायोके धर्ममें कोई हस्तक्षेप नही करना चाहिए। निश्चय ही यह सिद्धान्त आपके और हममे से प्रत्येक व्यक्तिके लिए बिलकुल पर्याप्त है।

हृदयसे आपका,

डॉ० बी० एस० मुंजे
नागपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १३८१४) की फोटो-नकलसे।

२९०. पत्र: ऑल इंडिया प्रेस कान्फ्रेंसके अवैतनिक सचिवको

वर्धा
१६ दिसम्बर, १९२८

अवैतनिक सचिव
ऑल इंडिया प्रेस कान्फ्रेंस
३४, बहूबाजार स्ट्रीट
कलकत्ता

प्रिय मित्र,

आपका परिपत्र मिला। आपके तारका अर्थ अब मेरी समझमें आया। हालाँकि आप मुझे पत्रकार मान कर मेरा सम्मान करते है, लेकिन मैं अपने-आपको इस सम्मानका अधिकारी नही समझता। जो भी हो मैं समझता हूँ कि आपके पूछे तीनो प्रश्नोके सिलसिलेमे आपका मार्ग-दर्शन करनेमें मैं सर्वथा अनुपयुक्त हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३८१५) की माइक्रोफिल्मसे।

२९१. पत्र : देवदास गांधीको

वर्धा
रविवार [१६ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० देवदास,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। खुराकके विषयमें जो प्रयोग मैंने आश्रममे किये थे उनसे राजाजी तो प्रसन्न ही हुए। क्योकि उसमे रोटी, दूध, घी और शाक शामिल थे। फलोंका उन्हे मोह नही है। यहाँका प्रयोग शायद उन्हें अच्छा न लगे। यहाँ खानेमे तेल लेते है। इसलिए मैंने भी लेना शुरू किया है। मै स्वास्थ्य बिगाड़ कर तो कुछ नही करना चाहता। यदि तेल माफिक नही आया तो छोड़ दूँगा।

कुसुमबहन गुजरातीके लिए आ तो सकती थी। वह इस कामको ठीक सँभाल सकती है; किन्तु मुझे लगता है कि उसे आश्रममें ही रहना चाहिए। गुजरातीका थोड़ा काम तो प्यारेलाल करता ही है। उसे अपने अक्षर सुधारने चाहिए। केशु यहाँ है इसलिए जरूरत पड़नेपर उससे काम ले सकता हूँ। वैसे केशुको मैं यहाँ उसके अध्ययन और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे लाया हूँ।

नवीन और रसिकको मेरठ भेज कर अच्छा किया। वे अपने अनुभव लिखकर भेजें।

यहाँ प्यारेलाल, छोटेलाल, सुब्बैया, बा और केशु मेरे साथ है। आश्रमके न सही, बाहरके दूसरे लोग तो आ ही जायेंगे। घनश्यामदास बिड़ला कल ही आया है। हरिभाऊ आज आया है। इस तरह मण्डली अच्छी जमेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २०४२) की फोटो-नकलसे।

१. नवीन और रसिकके उल्लेखसे। २५-८-१९२८के बाद नवीन और रसिक दिल्लीमें थे। देखिए "पत्र : छगनलाल जोशीको", २५-८-१९२८। गांधीजी नवम्बर और दिसम्बरमें वर्धा आश्रममें थे।

२९२. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

रविवार [१६ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिला। साँपोकी किताब मिल गई है। एक और जरूरी हुई तो मँगा लूँगा। माँजीके साथ क्या दुर्घटना हुई और कैसे? उनसे कहना, अभी तो उन्हे बहुत वर्ष जीना है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

गोकीबहनसे कहना कि उसका पत्र मुझे मिल गया है।

श्री शान्तिकुमार
शान्ति भवन
पेडर रोड
बम्बई

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७१०) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

२९३. पत्र : प्रभावतीको

१६ दिसम्बर, १९२८

चि० प्रभावती,

तुमारा खत मीला है। मैं सोच रहा हु। कुछ गभरानेकी बात नहिं है। ज्यादा लीखनेका समय नहिं है।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३४४ की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको", ९-१२-१९२८।

२९४. तार: मोतीलाल नेहरूको[1]

१७ दिसम्बर, १९२८

मोतीलाल नेहरू
इलाहाबाद

राजगोपालाचारीका सुझाव समझमे नही आया परन्तु वह सेवा संघका प्रतिनिधित्व कर सकते है। जोशी[2] आश्रमका और बैंकर[3] सूतकार सघके प्रतिनिधि रहेंगे।

गांधी

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से।

२९५. पत्र: वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

१७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय भाई,

सबसे हालका आपका पत्र पढ़कर आँखे खुशीसे छलछला आई। सचमुच आप मेरी ही नही बल्कि आपको, आपकी योग्यता [और] आपके देश तथा मानवताके प्रति प्रेमको जाननेवाले अधिकाश लोगोकी ऊँचीसे-ऊँची आशाओसे भी अधिक खरे सिद्ध हुए है।

नई नियुक्तिके बारेमे तो कुछ न कहना ही ज्यादा अच्छा है। सर मुहम्मदके साथ मेरा काफी विस्तारसे पत्र-व्यवहार हुआ था। लेकिन सब-कुछ पूरा हो चुकनेके बाद वह उसे प्रकाशमे लाये। वह चाहते थे कि मै उसकी ताईद कर दूँ। मैंने उनसे कह दिया था कि चूँकि मै इन सज्जनको[4] जानता ही नही, इसलिए मै उसकी ताईद नही कर सकता। मैने सुझाया था कि आपके द्वारा नामजद व्यक्तिको ही नियुक्त कर दिया जाये। पर बात बनी नही। इसीलिए मैंने कोई भी राय देना स्थगित करके मौन साध लिया। अभी भी मौन ही हूँ।

१. मोतीलाल नेहरूके दिनांक १५ दिसम्बर, १९२८के तारके उत्तरमें; तार इस प्रकार था: "राजगोपालाचारीके सुझावपर, मैं गांधी सेवा संघ, अखिल भारतीय सूतकार संघ और सत्याग्रह आश्रमके प्रतिनिधियोंको सर्वदलीय सम्मेलनके लिए कलकत्तामें आमन्त्रित करता हूँ, क्योंकि ये आमन्त्रित संस्थाओंकी सूचीमें नहीं हैं। प्रतिनिधियोंके नाम कृपया तार द्वारा सूचित करें।" (एस० एन० १३८१३)।

२. छगनलाल जोशी।

३. शंकरलाल बैंकर।

४. देखिए "पत्र: मुहम्मद हबीबुल्लाको", ९-११-१९२८।

ईश्वर आपको दीर्घायु बनाये। आप अब एक बडी उथल-पुथलमे पडने जा रहे है। पर आप खुद भी तो यही चाहते थे। लीजिए, वह आपको ब्याज समेत मिल जायेगी।

सप्रेम,

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० ८८१६) की फोटो-नकलसे।

२९६. पत्र: महादेव देसाईको

वर्धागंज
मौनवार, १७ दिसम्बर, १९२८

चि० महादेव,

आज मौनवार है, इसलिए यह पत्र तो याद दिलानेके लिए ही है। अब तो हम तीन व्यक्ति 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' मे जुट गये है, इसलिए कोई अडचन नही होनी चाहिए। यहाँ अन्य तो बहुत कुछ पडा है।

रानी आज शामको आ रही है। कु० रायडन भी आ रही है। सुब्बैयाको उस तारके बारेमे याद नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ११४३८) की फोटो-नकलसे।

२९७. पत्र: कुसुम देसाईको

वर्धा
मौनवार, १७ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गये है। तुम्हे माफ तो कर दिया था। जिसे मैं मूर्ख मानता हूँ, माफ करते हुए भी उसे उसकी मूर्खता तो बतानी ही चाहिए। भाषा आनेसे ऐसा हुआ कहकर अपना बचाव कर लेनेका नाम मूर्खता नही है; लोग उसे धूर्तता अथवा चालाकी कहते है।

फिरसे बुखार होनेकी खबर आज मिली है। हिम्मतसे ज्यादा काम करनेमे अहंकार तो होता ही है; पर ऐसा करना स्पष्टतः मूर्खता भी है। जिसका शरीर लोह खण्ड जैसा हो वह भले शक्तिसे ज्यादा काम करे। उसके लिए तो कोई काम ही नही है जो शक्तिके बाहर हो या जो केवल शून्य बनकर ईश्वरमे श्रद्धा रखे वे ही ऐसे काम कर सकते है। जब तुम्हारे मनमे ऐसी श्रद्धा आ जाये और तुम शून्य

बनकर रह सको तब जितना मर्जीमें आये उतना काम करना। इस समय तो अपनी सीमाका ध्यान रखो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७७१) की फोटो-नकलसे।

२९८. पत्र : आश्रमकी बहनोंको

वर्धा
मौनवार, १७ दिसम्बर, १९२८

बहनो,

तुम्हारी तरफसे इस बार पत्र नही आया। परन्तु जो पत्र मिले है, उनसे मालूम होता है कि अब जरूर रसोईघरमे कुछ-कुछ शान्ति पाली जाती है। जबतक पूरी शान्ति न पाली जाये, तबतक तुम सन्तोष न मानना। यह काम मुख्यतः तुम्हारा ही है। रसोईघरको हर तरहसे शोभाके लायक बनानेकी जिम्मेदारी तुम अपनेपर ही रखना। जब वहाँ सब शान्तिसे खायें, वहाँका सब काम कर्त्तव्य समझ कर करे, और जो मिल जाये उसमें सन्तोष माने, तभी माना जायेगा कि हमारा रसोईघर आदर्श पाठशालाका एक आदर्श विभाग बन गया है। सारा मन्दिर एक पाठशाला है, यह तो तुम जानती ही हो। रसोईघर पाकशाला है। वहाँ अनाज शास्त्रीय ढंगसे रखा जाना चाहिए, पकाया जाना चाहिए और खाया जाना चाहिए। मतलब यह कि हर-एक क्रियामे स्वच्छता होनी चाहिए, संयम होना चाहिए। वहाँ हम भोगके लिए न जायें और न खाये। परन्तु शरीर ईश्वरके रहनेका मन्दिर है। उसे हम झाड-बुहार कर साफ रखें और अन्न देकर उसकी नित्य रक्षा करें। इस कल्पनाको तुम हजम कर लो, तो हम खानेमे जो लडाई-झगड़ा देखते है, वह सब बन्द हो जायेगा। सारे मन्दिरके लिए जो पत्र लिखा है, उसकी चारो बातोपर विचार करना और यदि अच्छी लगे तो उनपर अमल करना।

कैलास, शीला इत्यादि बालकोको हरगिज बीमार न पड़ना चाहिए। एक भी बच्चा बीमार हो जाये, तब ऐसा समझनेके बजाय कि उसकी चिन्ता उसकी माँ ही रखे या उसके लिए वही जिम्मेदार है, तुम सब उसकी जिम्मेदारी उठाओ। माता खुद न सँभाल सके या उसे सँभालना आता न हो, तो जिसे आता हो वह उस बच्चेको सँभाल ले, यह हमारे यहाँ स्वाभाविक नियम हो जाना चाहिए। किसी माँको यह न लगना चाहिए कि वह अकेली पड गई है।

आज तो इतना ही।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गये है।

गुजराती (जी० एन० ३६८५) की फोटो-नकलसे।

२९९. पत्र : ताराबहनको

१७ दिसम्बर, १९२८

चि० तारा,

तुम्हारा पत्र बहुत दिनोके बाद मिला। अन्तिम पत्र तो तुम्हारा ही था। तुम्हारा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जाना चाहिए। आजकल मै वर्धामे हूँ। बा भी साथमे है। और लोगोके साथ प्यारेलाल, सुब्बैया और छोटेलालजी भी यही है। वसुमती बहन मुझसे पहले आ गई थी। चार दिनके अन्दर यहाँसे कलकत्ता चला जाऊँगा। जीवनलालभाईके पतेपर पत्र लिख सकती हो।

बापूके आशीर्वाद

चि० ताराबहन
द्वारा मेसर्स मोहारीलाल कालीदास ऐंड कं०
१४, मुगल स्ट्रीट
रगून

गुजराती (जी० एन० ८७८३)की फोटो-नकलसे।

३००. पत्र : छगनलाल जोशीको

१७ दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। बच्चोकी बीमारीसे घबराना क्यो, ऐसी बीमारियाँ तो आती-जाती रहती है। एकाध बार किसीको खो भी देते है। प्रभुने दिया और प्रभु ले ले तो इसमे नई बात क्या है? फिर सारे ससारको तो इसी मार्गसे जाना है तब कोई जल्दी जाये तो शोक किस बातका और देरसे जाये तो हर्ष क्या? बछडेके जीव और ऊमीके[1] जीवमे कोई अतर नही है। दोनो एक ही खानके हीरे है। एक समुद्रके बिन्दु और एक ही झाडके पत्ते है। काली खाँसीसे घबराना नही चाहिए। वह एक मियादके बाद चली जाती है। इस बीच बच्चोको बार-बार परेशान न करे तो यह अवधि निर्विघ्न कट जाती है। गरम पानी दो, गरम दूध दो, सब-कुछ गरम दो। पेट साफ रहना चाहिए। छातीपर तेलसे हलकी मालिश करो। सबेरे धूप निकले तो धूपमे लिटाओ।

१. छगनलालकी बेटी।

छोटेलाल जब वहाँ पहुँच जाये तभी उसे पहुँचा हुआ मानना। पहुँचेगा तो जरूर।

गंगाबहनको गरम पानीमे सोड़ा डालकर उसमे पैर डुबो देना चाहिए और उसके बाद वैसलीनसे खूब मालिश करके सो जाना चाहिए। दिनके समय किसी तरहका जूता तो पहनना ही चाहिए। हम मरी हुई गायका चमड़ा पवित्र मानते है इसलिए उसका नरम जूता पहने। चप्पल न पहने तो कोई हर्ज नही है; पहन ले तो भी कोई हर्ज नही है। रसोई-घरकी चप्पले रसोई-घरमे ही रहे, इतना काफी है। रबड़के स्लीपर भी मिलते है। पटसनके स्लीपर भीग जाते है और मैले हो जाते है और धोये नही जा सकते। चमड़ेके तो धुल जाते है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

इस बार भी यह नही माना जा सकता कि 'आश्रम समाचार' ठीक छपा है। मै यहाँसे गुरुवार बीस तारीखकी शामको रवाना होऊँगा, २१-२२को सम्बलपुर रहूँगा। २३ को कलकत्तामे जीवनलालके पास। सम्बलपुर एक ही डाक भेजना या न भी भेजना।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

३०१. पत्र : छगनलाल जोशीको

मौनवार [१७ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० छगनलाल,

तुम्हारे पत्र मिल गये है। कल तो लिख ही नही सकता था।

तुमने खूब दृढ़ता और धीरज दिखाया है। हमे ऐसा करना ही शोभा देता है। तुम कुम्भकारके हाथों गढ़े जा रहे हो; वह तुम्हे ठीक रूप ही देगा। ब्रह्मचर्यके विषयमे हिम्मत न हारना। काम तो कठिन है। मनुष्य केवल अपने प्रयत्नसे ही इसमे सफल हो सकता है ऐसा सोचे तो यक्षकी कहानीमे[2] हमने देखा है कि वायुदेवके लिए अपने प्रयत्नसे एक तिनका उड़ाना भी कठिन हो गया था। किन्तु जब हमारे प्रयत्नके साथ ईश्वरकी कृपा भी जुड़ जाये तो कठिनसे-कठिन काम सरलसे-सरल हो जाता है। प्रयत्न दोनो करना। पर परिणाम ईश्वरपर छोड़ देना। तभी सफलता मिलेगी।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१. साधन-सूत्रके अनुसार।
२. केनोपनीषद्में।

३०२. पत्र : प्रभावतीको

[१७ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० प्रभावती,

तुमारे सुंदर खत सुदर हरफोंमें लीखे हुए आते हि रहते हैं और मुझे बड़ा आनंद होता है।

तुमारे दुःख नहि मानना चाहिये। अब तो मुझको वापिस आनेके लीये बहोत दिन नहि रहे हैं। द्वारिकाका दौरा होगा और वापिस आ जाओगी। उतनेमें भी थोड़े दिन तो गुजर ही जायेंगे।

विद्यावतीको मुझको कागज लीखनेका कहो। मैं उनको लीखना चाहता हुं लेकिन समय न रहनेके कारन रह जाता है।

कुसुम फिर बीमार हो गई है इससे कुछ चिंता होती है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुमारी गैरहाजरीमें कुसुमकी विशेष सेवा किसके हस्तगत होगी?

बापू

जी० एन० ३३२१ की फोटो-नकलसे।

३०३. पत्र : प्रभावतीको

[१८ दिसम्बर, १९२८से पूर्व][2]

चि० प्रभावती,

तुमारा पत्र मीला है। तुमारे वहां होनेसे कुसुमके लीये मैं निश्चिंत हुं। कल राजेन्द्रबाबु आये। आज द्वारिका नहि जानेका तार भेजा होगा। और समय नहि है।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३१५ की फोटो-नकलसे।

१. कुसुमके दुबारा बीमार पड़नेकी चर्चासे यह पत्र उसके नाम १७-१२-१९२८ वाले पत्रके साथ ही लिखा हुआ प्रतीत होता है। प्रभावतीकी प्रस्तावित द्वारका-यात्रासे वर्ष और महीना निर्धारित किया गया है।

२. तिथिका निश्चय राजेन्द्रप्रसादकी चर्चासे किया गया है जिन्होंने १८ और १९ दिसम्बरको होनेवाली अखिल भारतीय चरखा संघकी बैठकमें भाग लिया था।

३०४. पत्र : छगनलाल जोशीको

मंगलवार
[१८ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० छगनलाल,

आज तुम्हें बहुत कुछ लिखना चाहता था किन्तु समय नहीं है।

सन्तोककी बात समझमें नहीं आती। अगर वह रहना चाहती है और सन्तोष-पूर्वक रहती है तो बहुत अच्छा है। इस विषयमें तुम और नारणदास मिलकर निर्णय करना। अच्छा तो यह होगा कि इसका निर्णय तुम नारणदासको ही सौंप दो। देवदासके सम्बन्धमें लिखूंगा। मीराबहनके पत्र पढ़ गया हूँ। बलवीरके बारेमें गुरुकुलको लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

३०५. पत्र : कुसुम देसाईको

वर्धा,
मंगलवार, १८ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तेरे ऊपर तो क्रोध ही आता है। तुझे सब खाने-पीनेकी अनुमति किसने दी? काफी छोड़नेकी क्या जरूरत है? मेरे रहते हुए छोड़े तो मैं छुड़वा दूंगा। मेरी अनुप-स्थितिमें ऐसे प्रयोग किसलिए? क्या फिर तुझसे प्रार्थना करूँ कि दूध और फलोंपर ही रह और शरीरको निरोगी बना। उसके सिवा कुछ और खाना हो तो उसकी अनुमति माँगना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७७२) की फोटो-नकलसे।

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

३०६. पत्र : नारणदास गांधीको

१९ दिसम्बर, १९२८

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हे राजकोट जाना पडे तो चले जाना। बगलके फोड़के लिए मैंने मिट्टीका प्रयोग किया था वह सफल हुआ था, पर मैं कह नही सकता कि खुशालभाईके लिए इस उम्रमे वह ठीक रहेगा या नही।

सन्तोकके विषयमे मैंने तो साफ-साफ लिख दिया है। यदि मेरा विचार गलत हो और उसे आश्रम, वहाँके लोग और वहाँ रहना अच्छा लगता हो तो वह जरूर रहे; इससे मैं तो प्रसन्न ही होऊँगा। वह बाहर रहे यह मुझे कैसे अच्छा लग सकता है? किन्तु यदि मुझे रोज उसे मनाना पडे तो ऐसी स्थिति उसके लिए, मेरे लिए और आश्रमके लिए असह्य हो जायेगी। मैं उसे सबसे पीछे नही देखना चाहता। मैं तो चाहता हूँ कि वह सबसे आगे रहे। परन्तु त्याग किये बिना, भोग व स्वार्थ छोड़े बिना आश्रममे उसे पहला नम्बर कैसे मिल सकता है।

यदि रुखी इस मारवाडीके साथ सम्बन्धके[1] लिए तैयार हो तो मैं आगे बात करूँ। फोटो तो मँगा ही लूँगा। उससे मिलना चाहती है अर्थात् बात करना चाहती है? देखना। वह मिलना चाहती है तो इसमे मुझे तो कोई बुराई नही दिखाई देती। यदि वह यह सम्बन्ध न भी स्वीकार करे तो मुझे दुख नही होगा। मैं मानता हूँ कि इस विषयमे रुखीकी इच्छाको पूरा मान देना ही मेरा धर्म है। अधिक ब्यौरेकी जरूरत हो तो लिखना। और बातोके विषयमे लिखनेके लिए आज समय नही रहा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७७२५) से।
सौजन्य : नारणदास गाधी

१. देखिए "पत्र : नारणदास गाधीको", १४-१२-१९२८।

३०७ पत्र: कुसुम देसाईको

वर्धा
बुधवार, १९ दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

अब मैं तुझे क्या कहूँ? डाक्टरने सब-कुछ खानेकी जो सलाह दी है, वह मानने योग्य नही। दूध खूब पिये और फल खूब खाये तो रोग रहे ही नही। दूधमे थोडी काफी अभी लेनेमे कोई हर्ज नही। मेहनत थोडी ही करनी चाहिए, नीद पूरी लेनी चाहिए, दस्त रोज आना ही चाहिए। इतना हो जाये तो शरीर निरोगी हुए बिना रह ही नही सकता, यह मेरा दृढ विश्वास है। कुनैन लेनेसे न डरना। डाक्टर कुनैनके दोष दूर करनेके लिए कुछ भेजे तो लेनेमे हर्ज नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७७३) की फोटो-नकलसे।

३०८. पत्र: छगनलाल जोशीको

बुधवार [१९ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र और हिसाब मिल गया है। जमनालालजीको दिखा दूँगा। शारदा-बहन, काशीबहन और शकरीबहनके किस्सेसे तो मुझे दुख ही होता है। शारदा-बहनकी हिम्मतका विचार करता हूँ तो हँसी और रोना दोनो आते हैं। लगता है कि अपनी हिम्मतका उसने दुरुपयोग ही किया है। कह सकते हैं, मेरी मनुष्योको पहचाननेकी कला तो धूलके बराबर सिद्ध हुई है। गनीमत है कि मैं अपनी कुछ अपूर्णताओको ठीक-ठीक पहचानता हूँ और शेषका ईश्वर भान करा देता है। वही उबारेगा भी।

ये बादल मुझे व्याकुल कर देते हैं। इससे भी बड़े बादल आयेंगे। तुम सावधान रहना। हारना नही। जो स्थान मगनलालने लिया था, उसीको लेनेका प्रयत्न करना। चारो ओर निराशा फैल जाये, तब भी आशा न छोडना।

बापूके आशीर्वाद

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

[पुनश्च :]

मेरे प्रयोगकी चिन्ता न करना। मेरा जीवन तो ईश्वरके हवाले है। इसके साथ मीराबहनका पत्र भेज रहा हूँ। अबसे जो पैसा आये[1] उसे उसके नाम जमा कर देना। उसका जो खर्च हो वह आश्रमके खाते डाल देना। यह खर्च उस पैसेसे नही काटना।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

३०९. पत्र : जेठालालको

१९ दिसम्बर, १९२८

भाईश्री जेठालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने आश्रममे चि० नारणदास गांधीको लिखा है। वे उत्तर देंगे। सन्तोष न हो तो मुझे फिर लिखिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १३४७) की फोटो-नकलसे।

३१०. चर्चा : एक पूँजीपतिके साथ[2]

[२० दिसम्बर, १९२८ से पूर्व]

ईश्वर न करे कि भारत भी कभी पश्चिमी देशोके ढगका औद्योगिक देश बने। एक अकेले इतने छोटे-से द्वीप (इग्लैंड) का आर्थिक साम्राज्यवाद ही आज ससारको गुलाम बनाये हुए है। तब ३० करोडकी आबादीवाला हमारा समूचा राष्ट्र भी अगर इसी प्रकारके आर्थिक शोषणमे जुट गया तो वह सारे ससारपर एक टिड्डी दलकी भाँति छाकर उसे तबाह कर देगा। यदि भारतके पूँजीपति अपना सारा कौशल धन-सम्पत्ति खडी करनेमे न लगाकर उसे परमार्थकी भावनासे जनताकी सेवामे ही लगा कर, जन-कल्याणके सरक्षक बनकर उस विपत्तिको टालनेकी कोशिश नही करेंगे तो इसका अन्त यही होगा कि या तो वे जनताको नष्ट कर डालेंगे या जनता उनको नष्ट कर देगी।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

१. उन दिनों मीराबहनके पिता हर माह ५० पौंड खर्चके लिए भेजा करते थे।
२. प्यारेलालके लेख 'वर्धाकी चिट्ठी' से।

३११. चर्चा: काली मन्दिरके बारेमें[1]

[२० दिसम्बर, १९२८ से पूर्व]

इसके बाद वह [गांधीजी] एक खादी कार्यकर्तासे मुखातिब हुए। वह भी उनके साथ था। उन्होंने कहा कि इच्छा न होते हुए भी उसे कलकत्ता[2] जानेको राजी हो जाना चाहिए, क्योंकि वहाँ उसकी जरूरत महसूस की जा रही थी। उनकी दलील थी — हम अगर कलकत्ताको बदल सकें तो हम समूचे भारतको भी बदल सकते है। और मैं खुद भी वहाँ चला जाऊँ और कलकत्ताको ही अपने कामका केन्द्र बना लूँ, पर बस एक बात है — और उन्होंने एक ऐसा दुःखपूर्ण रहस्य प्रकट किया जिसे वे इतने वर्षोंसे अपने मनमें ही दबाये आ रहे थे। रहस्य है — काली मन्दिर।

बस यही मेरी मुश्किल है। मैं उस दृश्यको देखना भी सहन नही कर सकता। वहाँ धर्मके नामपर जो निर्ममतापूर्ण अमानवीय कृत्य किया जाता है उसके विरुद्ध मेरी आत्मा विद्रोह कर उठती है। यदि मेरे अन्दर शक्ति होती तो मैं मन्दिरके द्वारपर अड़ कर खड़ा हो जाता और उसके प्रबन्धकोसे कहता· एक भी निर्दोष पशुकी बलि चढ़ानेसे पहले तुमको मेरी गर्दनपर छुरी चलानी पडेगी। परन्तु मै जानता हूँ कि आज वैसा करना मेरे लिए एक अवास्तविक, एक अर्थहीन क्रिया ही होगा क्योकि मैं जीवित रहनेकी अपनी इच्छाको अभीतक पूरी तरह जीत नही पाया हूँ। और जबतक मैं उसे जीत नही लेता, तबतक अपने अपूर्ण अस्तित्वकी सूलीका भार मुझे अपने कंधोपर ढोना ही पड़ेगा।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

३१२. चर्चा: अध्यापकोंके साथ[3]

[२० दिसम्बर, १९२८ से पूर्व]

किसी राष्ट्रीय शालाके अध्यापकोंका एक प्रतिनिधि-मण्डल गांधीजीसे मुलाकात करने आया है। . . . बातचीतके दौरान एक अध्यापक अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहता है कि वह अहिंसाको केवल वैयक्तिक आचरणके एक सिद्धान्तके रूपमें ही स्वीकार करता है। और राजनीतिके क्षेत्रमें वह अहिंसाको केवल एक अस्थायी

१. 'वर्धाकी चिट्ठी' से।
२. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके अधिवेशनके लिए।
३. 'वर्धाकी चिट्ठी' से।

साधनके रूपमें स्वीकार करता है। . . . परन्तु उसकी मुद्रासे पता चल रहा है कि उसके मस्तिष्कमें क्या चल रहा है। अध्यापक इस बातको भाँप जाता है और अपने मतकी सफाई देने लगता है — यह सही है कि वह राजनीतिके क्षेत्रमें अहिंसाको एक नीति ही मानता है, लेकिन जितने समयतक किसी नीतिपर निष्ठा-पूर्वक निरन्तर आचरण किया जाता है उतने समयतक तो नीति और सिद्धान्तमें कोई अन्तर ही नहीं रहता। इसलिए फिलहाल तो उसके और गांधीजीके मतोंमें कोई अन्तर ही नहीं है। और भविष्यकी बात यह है कि उसने अगर कभी अपनी नीतिमें परिवर्तन करनेकी आवश्यकता महसूस की तो उसके लिए वह निश्चय ही पहलेसे शाला अधिकारियोंकी अनुमति प्राप्त कर लेगा। परन्तु गांधीजीको इस सफाईसे सन्तोष नहीं हुआ।

अहिंसा आपके लिए एक बौद्धिक निष्कर्ष-भर है, पर मेरे लिए तो वह धर्म है, सर्वोपरि धर्म। आप वैयक्तिक और सामाजिक आचरणमें भेद मानते हैं, ऐसा सिद्ध करनेकी कोशिश करते है। लेकिन मेरी तो समझमे आता नही कि दोनोमे भेद कैसे सम्भव है। विभाजनकी रेखा खीची कहाँ जाये? और यह कौन निश्चित करेगा कि कहाँतक हमारा आचरण वैयक्तिक रहता है और कहाँसे वह सामाजिक होने लगता है? यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। आप कहते हैं कि अहिंसाको त्यागनेकी आपकी शर्त यही रहेगी कि आप शालाके अधिकारियोसे पहले उसकी अनुमति प्राप्त कर लेगे। लेकिन मै आपको बतला दूँ कि आपने जिन परिस्थितियोकी कल्पना की है उन परिस्थितियोमे तो इस प्रकारकी अनुमति माँगनेकी कोई गुजाइश ही नही रहनी चाहिए। इसलिए कि तब तो देशके हितकी वेदीपर अपनी शालाकी बलि चढाना आपका कर्त्तव्य हो जायेगा, जैसे कि सत्य और अहिंसाकी वेदीपर अपने देशको भी बलि कर देना मेरा परम कर्त्तव्य है। और आप यदि वैसा करे तो मै आपका आदर करूँगा। नही, मै आपको दोष नही देना चाहता। आपको अपने विश्वासके अनुरूप ही कर्म करना चाहिए। मै तो इस प्रश्नको एक दूसरे दृष्टिकोणसे देखनेकी कोशिश कर रहा हूँ। आज देशमे अनेक राष्ट्रीय शालाएँ चल रही है। वे सत्य और अहिंसाको आधारमूत सिद्धान्त मानती हैं। मै उनपर लगातार नजर रखता हूँ। इसलिए कि वह दिन बडी तेजीसे निकट आ रहा है। अभी उस दिन मैंने 'यग इडिया' मे लिखा भी था कि अधिकाश लोग जितना सोचते हैं उससे कही तेज रफ्तारसे निकट आ रहा है — जब देशको अग्नि-परीक्षा देनी पडेगी और उस घडी देशको एक ही कोई साधन अन्तिम रूपसे अपना लेना पडेगा। और मुझे भरोसा है कि उस घडी ये शालाएँ अपनी उपयोगिता भली-भाँति सिद्ध कर देगी। हो सकता है हम मुट्ठीभर कार्यकर्त्ता ही हो, लेकिन हमे कसौटीपर अपनी आस्था, अपने विश्वासको खरा सिद्ध करनेके लिए अपने प्राणोकी पूर्णाहुति देनी होगी। अबतक तो मै समझता था कि आपके हाथोमे मेरा उद्देश्य बिलकुल सुरक्षित है, निरापद है। परन्तु मै देख रहा हूँ कि मेरी

वास्तविक स्थिति क्या है। पर यह आपके दुखी होनेकी वात नही, इस प्रश्नपर तो केवल मुझे विचार करना है।

ये शब्द कहते-कहते उनके स्वरमें गहरी उदासीका पुट झलकने लगता है। . . .

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

३१३. भाषण: खादी कार्यकर्त्ताओंके समक्ष[1]

[२० दिसम्बर, १९२८ से पूर्व][2]

फिलहाल हमे उत्पादनका विकेन्द्रीकरण करना, उसे अनेक केन्द्रोमे फैलाना और बिक्रीका केन्द्रीकरण करना चाहिए। औसत मूल्य घटानेके लिए हमे विभिन्न केन्द्रोमे तैयार होनेवाली खादीकी कीमतोके एकत्रीकरण ('पूलिंग')का परीक्षण करके देखना चाहिए। मिलोमे तैयार होनेवाली खादीसे सम्बन्धित आँकडे देखिए . . .[3] वे क्या बतलाते हैं? यही कि जनताकी रुचिमे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। जनता अब त्याग करनेको तैयार है, वह खुद मोटा कपडा माँगती है पर अब मिल-मालिक उसके साथ धोखेबाजी कर रहे हैं। वे जनताकी देशभक्तिपूर्ण भावनाओका अनुचित लाभ उठानेसे भी बाज नही आते। नकली खादीको गाधी वस्त्रके नामसे देकर जनताको ठगा जा रहा है। यहाँतक कि मेरा चित्र भी उसपर छाप दिया जाता है। क्या इससे भी बड़ी कोई धोखेबाजी या विश्वासघात हो सकता है? लेकिन इससे हमे यह सबक हासिल करना चाहिए कि हमे अपना उत्पादन बढ़ाना है। और इसके लिए हमे खादीकी कीमतोका एकत्रीकरण करके खादीकी औसत कीमत घटानी चाहिए। उनको इतना तो सोचना चाहिए कि जब जनता समझ जायेगी कि उसके साथ हर कदमपर धोखेबाजी की गई है तो उसका क्रोध कितना विकराल रूप धारण कर सकता है। मुझे कोई आश्चर्य नही होगा यदि उस परिस्थितिमे जनता अपने क्रोधके आवेशमे सारे ही मिल उद्योगोके विरुद्ध खड़ी हो जाये।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

१. 'वर्धाकी चिट्ठी' से।

२. गांधीजी २० दिसम्बर १९२८ को वर्धासे रवाना हुए थे।

३. साधन-सूत्रके अनुसार।

३१४. शाश्वत द्वन्द्व

एक मित्र लिखते हैं :

> आपने 'यंग इंडिया' के ११ अक्तूबरके अंकमें प्रकाशित अपने एक लेख—'अहिंसाकी गुत्थी'—में अत्यन्त ही स्पष्ट और जोरदार ढंगसे लिखा है कि कायरता और अहिंसा दोनों साथ-साथ नहीं रह सकतीं, एक-दूसरीसे बिलकुल मेल नहीं खातीं। आपके कथनमें लेशमात्र भी अस्पष्टता नहीं है। पर मेरा आपसे अनुरोध है कि आप हमें बतलाएँ कि मनुष्य अपने चारित्रिक गठनसे कायरताको किस तरह बिलकुल निकाल फेंक सकता है। मैं देखता हूँ कि मानव-चरित्र उसकी बनी-बनाई आदतोंका कुल योग ही होता है। हम अपनी पुरानी आदतोंको खत्म करके साहस, बुद्धिमत्ता और कर्मकी नई आदतें कैसे डाल सकते हैं? मुझे इसका पूर्ण विश्वास है कि आदतोको खत्म किया जा सकता है और ज्यादा अच्छी, उच्च स्तरकी ऐसी नई आदतें डाली जा सकती हैं जो मनुष्यको एक सर्वथा भिन्न चरित्र प्रदान कर दें। मुझे लगता है कि आप मानते हैं कि प्रार्थना, शील और अध्ययन-मननके बलपर मनुष्य अपने एक सर्वथा नये रूपको जन्म दे सकता है। क्या आप इनके बारेमें हमें बतलानेकी कृपा करेंगे? 'यंग इंडिया' के किसी अंकमें आप इनके बारेमें अपनी जानकारी और अपना परामर्श अवश्य दीजिए। प्रार्थनाका वह कौन-सा तरीका है और वह कैसे मनुष्यको इसमें समर्थ बनाता है कि वह अपने-आपको एक नये साँचेमें ढाल सके? कृपया इसका खुलासा करके हमारी सहायता कीजिए।

यह प्रश्न उस शाश्वत द्वन्द्वसे सम्बन्ध रखता है जिसका 'महाभारत' मे इतिहासके नामपर अत्यन्त ही विशद ढगसे निरूपण किया गया है और जो नित्य ही करोडो व्यक्तियोके हृदयोमे निरन्तर चलता रहता है। मनुष्यका निर्दिष्ट लक्ष्य है—पुरानी आदतोपर विजय पाना और भलाईको सर्वथा उचित स्थानपर बैठानेके लिए अन्दरकी बुराईपर विजय पाना। यदि धर्म हमे यह नही सिखाता कि यह विजय कैसे प्राप्त की जाये, तो वह हमे कुछ सिखाता ही नही। मनुष्य-जीवनका यही सबसे सच्चा उद्यम है, परन्तु इस उद्यममे सफलता पानेका कोई बना-बनाया राज-मार्ग नही है। हम भारतीय जिन बुराइयोसे पीडित है, उनमें शायद कायरता ही सबसे बडी बुराई है, और शायद यही सबसे बडी हिंसा है। आम तौरपर रक्तपात आदिको ही हिंसा समझा जाता है, पर यह उससे भी कही बडी हिंसा है। इसलिए कि यह ईश्वरपर आस्थाके अभाव और उसकी विभूतिके अज्ञानसे ही पैदा होती है। लेकिन खेद है कि मै कायरता और अन्य बुराइयोको दूर करनेके तरीकेके बारेमे पत्र-लेखक द्वारा अपेक्षित 'जानकारी और सलाह' देनेकी योग्यता अपनेमे नही पाता। परन्तु इतना मै अपने

अनुभवसे कह सकता हूँ कि हृदयसे निकली हुई प्रार्थना निस्सन्देह मनुष्यके पास एक ऐसा अत्यधिक शक्तिशाली साधन है जिसके जरिये वह कायरता और अन्य सभी पुरानीसे-पुरानी कुटेवोपर काबू पा सकता है, पर अपने अन्तरमें ईश्वरकी उपस्थितिके बारेमे एक जीवन्त आस्था रखे बगैर ऐसी प्रार्थना असम्भव है।

ईसाई धर्म और इस्लाम इसी द्वन्द्वको ईश्वर और शैतानके बीच निरन्तर चलनेवाले संघर्षकी संज्ञा देते है, जो मनुष्यके बाहर नही उसके अन्तरमे ही चलता है। पारसी धर्म इसीको अहुर्मज्द और अहरमनका संघर्ष; और हिन्दू धर्म इसे भलाई और बुराइयोकी शक्तियोके बीचके निरन्तर द्वन्द्वके रूपमे देखता है। यह चुनाव तो हमे स्वयं ही करना पड़ता है कि हम भलाईकी शक्तियोके साथ चलेंगे या बुराईकी शक्तियोके साथ। ईश्वरसे की जानेवाली प्रार्थनाका बस एक ही लक्ष्य होता है, मनुष्य और ईश्वरके बीच पवित्र मैत्री स्थापित करके मनुष्य अपने-आपको शैतान या पापकी जकड़से मुक्त कर ले। पर हार्दिक प्रार्थना मात्र जप करना ही नही है। वह तो अन्तरकी एक अकुलाहट होती है जो मनुष्यके प्रत्येक शब्द, उसके प्रत्येक कर्म, बल्कि उसके प्रत्येक विचारमे भी व्यक्त होती है। जब भी कोई बुरा विचार मनुष्यको विचलित कर दे, उसे समझ लेना चाहिए कि उसकी प्रार्थना हृदयसे नही निकली थी, मुँहसे बुरा शब्द निकलने या कोई बुरा कर्म हो जानेपर भी ऐसा ही समझना चाहिए। मन, वचन और कर्म इन तीनो प्रकारकी बुराइयोके विरुद्ध सच्ची प्रार्थना ही एक बिलकुल अभेद्य कवच है। ऐसी सच्ची प्रार्थनाके लिए किया जानेवाला पहला प्रयास ही सदा सफल नही होता। हमे अपने आपसे निरन्तर संघर्ष करना पडता है, हमे अपनी शंकाओके बावजूद अपनी आस्था बनाये रखनी पडती है। इसमें महीने भी वर्षों जितने लम्बे मालूम पड़ते है। इसलिए प्रार्थनाकी प्रभावशीलता तभी देखी जा सकती है जब हमारे अन्दर अपरिमित धैर्य हो। पहले तो हमे अपने चारो ओर अन्धकार-ही-अन्धकार, निराशा और इससे भी अधिक भयावह परिस्थितियाँ दिखाई देंगी, परन्तु हमारे अन्दर इतना साहस होना चाहिए कि हम इन सबके विरुद्ध संघर्ष करते रहे और कायरताको पास भी न फटकने दे। प्रार्थनापर विश्वास रखनेवाला व्यक्ति पीछे हटना नही जानता।

मै आपको कोई कपोल-कल्पित बात नही सुना रहा हूँ। मैंने आपके सामने कोई काल्पनिक चित्र भी पेश नही किया है। मैंने तो उन लोगोका अनुभूत सत्य ही आपको बतलाया है जिन्होने प्रार्थनाके बलपर अपनी प्रगतिकी हर बाधा दूर कर ली थी। साथ ही, मैंने अपना अनुभूत सत्य भी आपको बतला दिया है कि मेरी अवस्थाके साथ-साथ मेरा यह अहसास भी दिन-दिन बढता जा रहा है कि मै जो कुछ भी हूँ मुझे वैसा बनानेका श्रेय आस्था और प्रार्थनाको ही सबसे अधिक है। मेरे लिए तो ये दोनो एक ही चीज है—दोनोंमे कोई अन्तर नही। और मैंने आपको अपना जो अनुभव बतलाया है, वह चन्द घण्टोका नही, कुछ दिनों या हफ्तोका भी नही, लगभग चालीस वर्षोंकी अविच्छिन्न अवधिका अनुभव है। मुझे निराशा, घोर अन्धकार, धैर्यहीनता और अहंकारके तरह-तरहके आक्रमणोका सामना करना पड़ा है;

पर मै यह कह सकता हूँ, ऐसी धृष्टता कर सकता हूँ कि मेरी आस्था इतनी समर्थ सिद्ध हुई है कि अन्तमे वह अबतक की सभी कठिनाइयोपर विजय प्राप्त करती ही रही है। हालाँकि मै यह भी जानता हूँ कि मेरी आस्था अभी भी उतनी समर्थ नही बन पाई है जितनी कि मै चाहता हूँ। मेरी आस्था अभी उससे कही कम समर्थ है। यदि हमारे अन्दर आस्था हो, यदि हमारे हृदय प्रार्थनामय हो, तो हमे ईश्वरको लुभानेकी, उसके साथ किसी प्रकारके समझौते करनेकी जरूरत नही। हमे तो अपने आपको शून्य बना लेना चाहिए। बडोदादाने[1] अपने देहावसानसे कुछ ही दिन पहले मुझे एक बडा ही सुन्दर सस्कृत श्लोक लिख भेजा था। उसका सार यही था कि निष्ठावान मनुष्य अपने-आपको शून्य बना लेता है। हम जबतक अपने-आपको बिलकुल ही नगण्य या अहकारहीन नही बना लेते, तबतक अपने अन्दरकी बुराइयो पर विजय नही पा सकते। ईश्वर पूर्ण आत्म-समर्पणसे कम किसी भी कीमतपर हमे वह वास्तविक मुक्ति देनेको तैयार नही होता, जो सचमुच वाछनीय है। और मनुष्य जब अपने अहम्को इस प्रकार बिलकुल खत्म कर देता है, तो उसी क्षण वह पाता है कि वह समस्त प्राणियोकी, समस्त चेतन जगतकी सेवामे रत है। इसमें उसे आनन्द प्राप्त होता है और उसका मनोरजन भी होता है। वह एक नया मानव बन जाता है, जो ईश्वरके रचे इस जगतकी सेवा करनेमे कभी कोई थकान अनुभव नही करता।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

३१५. दीनबन्धुकी श्रद्धांजलि

दीनबन्धु एन्ड्रयूजने लालाजीके देहावसानपर मैंनचेस्टरसे यह लिखा है :

लाला लाजपतरायके निधनके समाचारसे मुझे बड़ा गहरा मानसिक आघात पहुँचा, क्योंकि मैं इसके लिए बिलकुल तैयार नहीं था। मै शनिवारको बहुत रात गये बर्रामघम पहुँचा, तब ही मेरे भाईने मुझे यह समाचार सुनाया। उसके बादसे मैंने इसका उल्लेख 'मैनचेस्टर गार्जियन'में किया है और उसमें स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है कि इससे भारत और इंग्लैड दोनों ही को और वास्तवमें समूचे मानव-समाजको बहुत बड़ी क्षति पहुँची है, क्योंकि लालाजी सभी देशोंकी शोषित पीड़ित जनताके मित्र थे, वह जातियोंकी सीमाओसे ऊपर उठ चुके थे। अब मैं यह जाननेको विह्वल हूँ कि 'साइमन कमिशन' के बहिष्कारके दौरान लाहौर रेलवे स्टेशनपर उनको लगी चोटें उनकी मृत्युके लिए कहाँतक जिम्मेदार हैं। यहाँके समाचारपत्रोंने यह समाचार देनेमें काफी सावधानी बरती है जिससे यह बात स्पष्ट नहीं होती, हालाँकि इसका कुछ संकेत जरूर मिलता है।

१. द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर।

मैं इतना और बतला दूँ कि उन्होंने ठीक-ठीक समाचार जाननेके लिए मुझे तार दिया था। कहनेकी जरूरत नहीं कि मैंने उसका समुचित उत्तर[1] भेज दिया था।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

३१६. टिप्पणियाँ

लालाजीकी स्मृति

डॉ० सत्यपालके तारसे[2] सम्बन्धित इन स्तम्भोमे प्रकाशित मेरी टिप्पणीके बारेमें अम्बालाके लाला दुनीचन्द लिखते[3] हैं :

> आपको यह पत्र लिखनेकी प्रेरणा मुझे २९ नवम्बर, १९२८ के 'यंग इंडिया' में लाला लाजपतरायके निधनके सम्बन्धमें डॉ० सत्यपालके तारके प्रकाशन और उसके बारेमें आपकी टिप्पणियोंसे मिली है। आशा है कि आप इस पत्रको प्रकाशित कर सकेंगे। मैं उन लोगोंमें से हूँ जो लगभग जीवनभर लालाजीपर निष्ठा रखते आये थे और अभी पिछले चुनावोंके दौरान ही उनके और मेरे बीच कुछ गम्भीर किस्मके मतभेद थे, यहाँतक कि कुछ तीव्र मतभेद भी पैदा हो गये थे। . . . लेकिन उनके शरीरपर पड़ी पुलिसकी चोटों और उसके कुछ दिन बाद ही उनकी मृत्युने उनके व्यक्तित्व और उनके कार्यके प्रति मेरा दृष्टिकोण बिलकुल ही बदल कर रख दिया है। . . . अब मुझे लगता है कि उनके जीवन-भरके कार्योंका परिणाम कुल मिलाकर इतना महत्त्वपूर्ण है कि मेरे मनमें उनके प्रति किसी भी दुर्भावनाके लिए कोई स्थान नहीं रह गया है, उनका जीवन इतना पवित्र है कि वास्तविक आदर-सम्मानके अतिरिक्त अन्य किसी भावके साथ उसका स्मरण ही नहीं किया जा सकता। मैं महसूस करता हूँ कि अब उनकी मृत्युके बाद मेरे और उनके बीच एक बिलकुल दूसरी ही तरहके सम्बन्ध पैदा हो गये हैं। यदि लालाजीके साथ हमारे मतभेदोंको इस दृष्टिसे देखा जाये तो उनसे मतभेद रखनेवाले हम लोगों और उनके कारण हमसे मतभेद रखनेवाले अन्य लोगोंके बीच कोई दीवार नहीं रह जाती और हम लोग अपने देशकी आजादी हासिल करनेके संघर्षमें एक बार फिर साथियों-की तरह कंधे जुड़ाकर चल सकते हैं।

निस्सन्देह, यही दृष्टिकोण होना भी चाहिए था। आशा है कि लालाजीसे कोई भी मतभेद रखनेवाले सभी लोग यही दृष्टिकोण अपनायेंगे और समान उद्देश्यके लिए कंधेसे-कंधा मिलाकर काम करेंगे।

१. देखिए "पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको", २९-११-१९२८।
२. देखिए "सच है तो अच्छा", २९-११-१९२८।
३. अंशतः उद्धृत।

अमेरिकामें भारतका प्रतिनिधित्व

'यंग इंडिया' के पाठक अमेरिकामे देवी सरोजिनी नायडूके सराहनीय कार्यके बारेमे नगरके डॉ० आर० ए० ह्यूमके सुपुत्र, श्री आर० ई० ह्यूमका निम्नलिखित पत्र[1] अवश्य ही पसन्द करेंगे:

> मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपको यह सन्देश पाकर प्रसन्नता होगी कि हमारी मित्र, श्रीमती सरोजिनी नायडूने बड़ी सफलताके साथ अपनी अमेरिका-यात्राकी शुरुआत की है।
>
> उनका पहला सार्वजनिक भाषण न्यू यॉर्क शहरमें हुआ था। मैंने भाषण सुना था। तबसे मैं सभी लोगोंसे लगातार यही कहता आ रहा हूँ कि जहाँ-तक अंग्रेजी भाषाके प्रवाह और वाक्य-विन्यासके सौन्दर्यकी बात है मैंने इससे पहले कभी किसी भी पुरुष या महिलाको सार्वजनिक मंचसे इतना सुन्दर भाषण करते नहीं सुना था। . . .
>
> परन्तु अंग्रेजीके वाक्य-विन्यास या शब्द-योजनाके सौन्दर्यसे कहीं अधिक सौन्दर्य, अर्थ-गाम्भीर्य और सत्य था उनके उद्गारोंमें। मेरा हृदय खुशीसे फूल उठा कि एक ऐसी सर्व-मोहिनी और समर्थ महिलाके रूपमें अमेरिकाको भारत-माताका परिचय मिल रहा है, जो अमेरिकी जनताके भावात्मक पक्षको भली प्रकार समझती है और इसलिए भारतीय जनताका भावात्मक पक्ष ही उनके सामने प्रस्तुत कर रही है। . . . और आपको यह विवरण भेजते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता इस बातकी हो रही है कि भारतीय जनता और महिलाओंकी प्रतिनिधिके रूपमें यात्रा करनेके लिए श्रीमती नायडूको भेजनेकी आपकी योजना बड़े सुन्दर ढंगसे फलीभूत हुई है।

अजमल जामिया कोष

एक मुसलमान मित्रने निम्नलिखित प्रश्न पूछे है और मुझसे अनुरोध किया है कि मै 'यंग इंडिया' मे इनके उत्तर दूँ:

> मैं बड़ी ही दिलचस्पीसे 'यंग इंडिया' पढ़ता हूँ, खासकर इस्लामसे ताल्लुक रखनेवाली खबरें। लेकिन अजमल जामियाके बारेमें थोड़ी अनचाही खबर पढ़कर मैं बड़े चक्करमें पड़ गया हूँ। क्या आप नीचे लिखे सवालोंके जवाब देनेकी मेहरबानी करेंगे?
>
> १. जामिया किस उसूलपर चलाया जा रहा है?
>
> २. वह सिर्फ मुसलमानोंके लिए है या हर जाति और धर्मके लोग उसमें दाखिला ले रहे हैं?

१. यहाँ कुछ ही अंश दिये जा रहे हैं।

३. अगर औरोंको भी दाखिला मिलता है तो वे अपने रहने, खाने, वगैरहका इन्तजाम कैसे करते हैं?

४. इन्तजामिया बोर्डमें कितने और कौन-कौन मेम्बरान हैं? क्या उसमें कोई गैर-मुसलमान भी है?

५. उसके लिए जमा किया गया चन्दा संस्थाको दे दिया जाता है या अभी आपके ही पास है?

६. अगर आपके ही पास है तो आप कब और कैसे उसका इस्तेमाल करनेकी सोच रहे हैं?

जवाब ये हैं.

जामियाको उदारसे-उदार दृष्टिकोण और सिद्धान्तोके आधारपर चलाया जा रहा है। पत्र-लेखकको उसकी नियमावलिकी एक प्रति मँगवाकर पढनी चाहिए जो दिल्लीमे उसके अधिकारियोको लिखनेसे मिल जायेगी।

वैसे तो व्यवहारतः यह संस्था केवल मुसलमानोके लिए है और स्वाभाविक भी यही है, पर प्रत्येक जाति और धर्मवालोको इसमें खुले तौरपर दाखिला दिया जाता है।

मै समझता हूँ कि गैर-मुसलमान विद्यार्थियोको अपने खानेका प्रबन्ध स्वय करना पडता है।

सेठ जमनालालजी भी एक 'ट्रस्टी' है। 'ट्रस्ट' के अन्य सभी सदस्य मुसलमान है।

कोषकी सारी राशि कोषाध्यक्ष सेठ जमनालाल बजाजके पास रहती है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

३१७. हिन्दी अध्यापक चाहिए[1]

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाने ऐसे सुशिक्षित नवयुवकोंसे प्रार्थनापत्र माँगे है जिनकी मातृभाषा हिन्दी हो और जो दक्षिण भारतमें कमसे-कम दो वर्षतक हिन्दी अध्यापकोंके रूपमें काम करनेको तैयार हों। . . . इस सम्बन्धमें मन्त्री, हिन्दी प्रचार सभा, हाई रोड, ट्रिप्लिकेन, मद्राससे लिखा-पढ़ी की जा सकती है।

डब्ल्यू० पी० इग्नेटियस

मै आशा करता हूँ कि इस अपीलपर उत्तर भारतके नवयुवक एक पर्याप्त संख्यामे आयेंगे।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

१. यहाँ कुछ अंश ही दिये जा रहे हैं।

३१८. उद्धरण: विभिन्न पत्रोंसे[1]

हैजा-ग्रस्त उड़ीसामें काम करनेके लिए भेजे जानेवाले एक राष्ट्रवादी कार्यकर्त्ताको उन्होंने लिखा:

हैजासे डरना मत।..[2] ठीक सावधानी बरतते रहना।...[3] अगर पूरी सावधानीके बाद भी कोई बीमार पड जाये, तो लाचारी है। दुनियामे ऐसी कोई जगह नही जो इसके खतरेसे बिलकुल खाली हो। ..[4] लेकिन करना वही तुम्हारा अन्त करण जिसकी गवाही दे।

संकल्प-विकल्पोंसे जूझते एक अन्य व्यक्तिको उन्होंने लिखा:

हमे अपने अन्दर मौजूद विकारोके दशाननको रामकी सहायतासे पराजित करना है। यदि रामपर हमारी आस्था हो और हम अपने आपको पूरी तरह उनकी कृपापर छोड दे तो सफलता निश्चित है। सबसे बडी बात यह है कि आत्मविश्वास मत खोना। स्वादके लोभसे बचना।

एक अन्य व्यक्तिको उन्होने लिखा:

त्याग-कर्मके रूपमे चरखा कातने और मनोरजनके लिए चरखा कातनेके बीच जमीन-आसमानका अन्तर है। मै तो आपको यही सलाह दूँगा कि चरखा कातते समय धार्मिक भावके साथ मौन रखिए। इससे आपको आध्यात्मिक शान्ति मिलेगी और यदि आप कताईके लिए दिनका कोई एक समय नियत कर लेगे तो आपकी दिनचर्या उसीके अनुसार व्यवस्थित हो जायेगी और आपको जीवन सुव्यवस्थित करनेमे सहायता मिलेगी।

एक दूसरे सज्जनको उन्होंने लिखा:

आपकी माता यदि अनिच्छा दिखाये तो उनपर खादी थोपिए मत। हाँ, यदि खादीपर आपकी आस्था सच्ची और सशक्त है तो उसका प्रभाव पड कर रहेगा।

एक अन्य पत्र-लेखकको उन्होने लिखा:

साम्प्रदायिक उपद्रवोके लिए, मेरे पास जो रामबाण है, उसे सभी जानते हैं। कोई भी एक पक्ष यदि अपने अन्दरसे वैमनस्यको पूरी तरह निकाल फेंके और दूसरे पक्ष द्वारा किये जानेवाले हर अन्यायको धैर्यपूर्वक सहन करता जाये तो निश्चित है कि अन्तमे दोनोके बीच हार्दिक एकता स्थापित होकर रहेगी। अन्याय समाप्त हो जायेगा और दोनो पक्ष बहादुर बन जायेंगे। आज तो दोनो ही हद दर्जेके बुजदिल बने हुए हैं।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२

१. प्यारेलालके लेख 'वर्धाकी चिट्ठी' के उपशीर्षक 'छिटपुट अंश' के अन्तर्गत।

२, ३, व ४. साधन-सूत्रके अनुसार।

३१९. हैदराबाद राज्यमे खादी

अभी उस दिन हैदराबाद राज्यमे हुए एक सहकारिता सम्मेलनमे वित्तमन्त्री सर हैदर नवाज जग बहादुरने भाषण किया था। उन्होंने उसमे चरखेका भी उल्लेख किया था। एक मित्रने इससे सम्बन्धित अशका यह अनुवाद मेरे पास भेजा है:

> पर मैं आपका ध्यान जिस एक सबसे महत्त्वपूर्ण चीजकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ वे हैं हमारे गृह-उद्योग। उनका संरक्षण करना और उनकी सहायता करना हमारी सहकारी समितियोंका परम कर्त्तव्य है। यदि लोगोंमें घरेलू किस्मके औजार और कच्चे मालके वितरणके लिए सहकारी समितियाँ खड़ी की जा सकें तो वह देशके लिए अत्यन्त ही लाभकारी होगा? इसके उदाहरणके तौर पर मैं बुनाई और कताईको पेश करता हूँ। यदि हम अपने शहरों और गाँवोंमें इनको फिरसे चालू करा दें तो वह एक भारी सफलता होगी। अभी कुछ ही दिन पहले तक हमारे घरोंमें कताई और बुनाई आम तौरपर होती थी। गरीब घरानोंमें ही नहीं, धनी और खाते-पीते घरोंमें भी किशोरियाँ और बड़ी-बूढ़ी महिलाएँ भी अपने फुर्सतके समयमें कताई किया करती थीं और इस प्रकार काते गये सूतसे दरियाँ, चादरे, पलंग-पोश और मेजपोश जैसी घरेलू इस्तेमालकी तरह-तरहकी चीजें तैयार करती रहती थीं। इज्जतदार विधवाएँ जीविकाका अन्य कोई साधन न होनेपर कताई और सिलाई करके ही अपना तथा अपने बाल-बच्चोंका भरण-पोषण करती थीं। आप इस धन्धेका प्रचार करके न सिर्फ जनताकी आमदनीके जरिये बढ़ायेंगे, बल्कि उनके फालतू समयके उपयोगका एक साधन भी उनको जुटा देंगे और इस प्रकार उनको फालतू समयके तरह-तरहके भटकावोंसे भी बचा लेंगे। आशा है कि हमारे विभागके मुस्तैद किस्मके अधिकारी इसी वर्ष इस दिशामें काम आरम्भ कर देंगे। हममें से कितने लोग इस भले कामको अपनाते हैं — यह पता लगानेके लिए मैं अगले सालकी रिपोर्टको बड़ी सावधानीसे देखूँगा। . . .[1]

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि समाजसे बिलकुल अलग पड़ा हुआ मनुष्य निरा पशु ही होता है। वह अपने साथियोंकी पारस्परिक सहायता और सहयोगसे ही उस पूर्णावस्थाको प्राप्त कर सकता है जिसे 'देवदूतोंसे थोड़ी निचली' अवस्था कहा जाता है। जबतक हम समाजसे बिलकुल अलग बने रहते हैं, और 'मैं' अपने-आपमें 'मैं' और 'आप' अपने आपमें 'आप' बने रहते हैं, अपने-आपमें रमे रहते हैं, तबतक हम मनुष्यके नामसे विभूषित

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

पशु ही रहते हैं। जब 'मैं' और 'आप' मिलकर 'हम' बन जाते हैं, तब ही हमारे अन्दर दिव्य शक्ति पैदा होती है और इस शक्तिके विकासके प्रक्रमको ही 'सहकारिता' कहा जाता है।

मन्त्री महोदयके इस भाषणके लिए मैं उनको बधाई देता हूँ और मुझे भरोसा कि चरखेके प्रसारमें हैदराबाद राज्य मैसूर राज्यके साथ होड़ लगायेगा। कताईके काममे सहकारिता आसान है और अपरिहार्य भी, यदि हमे खादीको स्थायित्व प्रदान करना है। हाथ-कताईका काम करनेवाली सहकारी समिति एक कपास-भण्डारसे शुरू करेगी। भण्डारमे धुननेके लिए जो कपास इकट्ठा किया जायेगा वह बोरोमे भर कर रखा जायेगा, मशीनसे दबाया हुआ कपास नही होगा। शुरू-शुरूमे यदि कतैये खुद ही धुननेका काम न करे तो भण्डारकी ओरसे धुनिये भी रखे जायेंगे। उस भण्डारमे जरूरतके सभी औजार, जैसे हाथ-ओटनियाँ, धुनकियाँ, चरखे, इनके फालतू पुर्जे और मरम्मतके लिए औजार वगैरह रहेंगे। भण्डार कपासके वितरण प्राप्त करने और बिक्रीका काम भी करेगा। वह यथास्थित पूनियोके रूपमें या बिना पूनियाँ बनाये कपासका वितरण करेगा। वह सदस्यो द्वारा काता हुआ सूत नकद दामोमे खरीद कर उससे बुनी हुई या अन्य स्थानोसे खरीदी हुई खादी सदस्योको बेचेगा। वह कताई करनेवाले सदस्योको रियायती कीमतपर और जनताको आम कीमतपर खादी बेचेगा। यदि ऐसी समितियाँ राज्यके संरक्षणमे खडी की जाये और राज्यकी ओरसे उनको पूर्ण या आंशिक सहायता दी जाये तो इस काममे जनताकी ओरसे मनचाहा सहयोग मिलनेकी सम्भावनाएँ है। पर इस सबके लिए जरूरी है कि अधिकारियोमे खादीका चलन हो, ऐसा एक वातावरण तैयार हो जाये; मतलब यह कि अधिकारी लोगोका हृदय परिवर्तन हो और वे अपने-आपको जनताके शासक और मालिक समझनेकी वजाय उससे सचमुच प्रेम करे और उसके विश्वासपात्र बन जाये। वे यह न समझे कि जनता तो आधे पेट खाकर मेहनत करनेके लिए ही पैदा होती है। यदि वित्तमन्त्री अपने यहाँके अधिकारियोमे वैसे उत्साहका सचार कर दे जैसा उनके भाषणसे झलकता है तो राज्यकी जनताका भविष्य सचमुच उज्ज्वल हो जायेगा। और फिर हैदराबाद राज्य तो स्वय कपासका एक विशाल क्षेत्र है, जब कि मैसूर नही है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २०-१२-१९२८

३२०. तार: साबरमती आश्रमके प्रबन्धकको

२० दिसम्बर, १९२८

प्रबन्धक
साबरमती आश्रम

माताके बारेमें शिव भाईका सुझाव काफी अच्छा है। जाति-भोजकी इजाजत नहीं देता पर बिरादरीके लोगोंको शिक्षा या अन्य किसी भले कामके लिए एक कोई राशि दी जा सकती है।

बापू

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से

३२१. पत्र: छगनलाल जोशीको

वर्धा
२० दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

आज भी जिससे मुझे सन्तोष हो ऐसा पत्र तुम्हें नहीं लिख सकूँगा। जानेकी तैयारियाँ हो रही हैं उसमें से थोड़ा अवकाश मिला है इसलिए यह पत्र लिखवा रहा हूँ।

पहले तो एक गलतफहमी दूर करनी होगी। 'मकराणी' शब्दका प्रयोग करनेके लिए मैंने रमाबहनसे माफी बिलकुल नहीं माँगी थी। ऐसे विनोद तो मैं हमेशा ही करता आया हूँ और जो मेरे विनोदके पात्र हुए हैं उन्हें हमेशा मेरा विनोद करना पसन्द ही आया है। मैंने तो माफी इसलिए माँगी थी कि इस सुन्दर विनोदकी बात मैं भूल गया और जब तुमने मकराणीके आनेकी बात लिखी तो मुझे पूछना पड़ा कि मकराणी कौन है? क्या यह दोष अक्षम्य नहीं माना जायेगा?

बाप अपने बच्चोंका दुलारमें रखा नाम बादमें भूल जाये, तो इसके बारेमें क्या कहा जायेगा? बेचारे बच्चे तो माफ कर देंगे किन्तु बाप अपनी भूलके लिए अपने आपको किस तरह माफ करे। मेरे बचावमें तो मात्र इतना कहा जा सकता है कि मेरा कुटुम्ब बहुत बड़ा है और बढ़ता ही जाता है। इसलिए ऐसी भूल बादमें

भी हो सकती है। यह सब रमाबहनको समझाना, क्योकि मकराणी नाम तो अब कभी उसका पीछा छोडनेवाला नही।

यहाँका काम रुक गया है। अब जमनालालजीकी सोटी[1] आ गई है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

३२२. भाषण : वर्धा आश्रममे[2]

२० दिसम्बर, १९२८

आप लोगोने सिद्धहस्त कतैये, बुनकर और धुनिये बननेके लिए हर तरहसे कमर कस ली है। लेकिन इतना ही काफी नही है चरखेका चक्र घूमनेपर हर बार और बुनाई करते समय भरनी फेंकते हुए और धुनकीपर चोट करते हुए आपके मनमे एक अनुकूल स्फुरण होना चाहिए। आपके सामने एक भगीरथ कार्य करनेको पडा है। आपको कुछ सौ, या कुछ हजार नही बल्कि इन करोडो गरीबोके पास पहुँच कर उनसे सम्पर्क स्थापित करना है जो भारतके सात लाख गाँवोमे बिखरे हुए है। यह काम पूरा किये बिना आप चैनकी साँस नही ले सकते और आप यदि सचमुच देशकी सेवा करना चाहते है तो ईश्वरका यह काम पूरा करनेके लिए आपको अपने तन और मनको बिलकुल शुद्ध बना कर उनको ईश्वरके उपयुक्त साधन बनाना पडेगा। यदि आप रोज सुबह आँख खुलते ही ईश्वरका स्मरण करे और दिनके दौरान अपने सघर्षोमे उसकी सहायताके लिए प्रार्थना करे, और रातको सोनेसे पहले दिन-भरकी त्रुटियो और चूकोका लेखा-जोखा कर ले और उनको ईश्वरके समक्ष स्वीकार करके सच्चे हृदयसे प्रायश्चित्त करे तो इस प्रकार आप अपने चारो ओर जैसे रक्षाकी एक सुदृढ दीवार-जैसी खडी कर लेगे और फिर आपके लिए प्रलोभनोका आकर्षण धीरे-धीरे घटता चला जायेगा। अपनी चूकके लिए प्रायश्चित्त करनेका सबसे सही तरीका यही है उसे दुबारा कभी न होने दिया जाये।

अन्तमे मै यही कहूँगा कि आप लोगोके बीच इतने दिन रहनेका जो सौभाग्य मिला है — इसे मै सदा ही हर्ष और सन्तोषके साथ याद रखूँगा। हाँ, पर खेदकी भावनाका पुट भी उसमे रहेगा। खेद इस बातका कि आपके बीच इतने दिनोतक

१. अकुश; गाधीजीको ज्यादा काम करनेसे रोकनेके लिए।

२. प्यारेलालके साप्ताहिक लेख 'वर्धाकी चिट्ठी'से; जिसमें यह खुलासा दिया गया है: "वर्धा आश्रममें रहनेके सुख एव सौभाग्यकी अवधि २० दिसम्बर, १९२८ को समाप्त हो गई और गाधीजीका मन भी थोड़ा भर आया जब उन्होने कलकत्तामें काग्रेसकी राजनीतिके खूब तपते हुए कढ़ाहेमें कूदनेके लिए आश्रमके शान्तिपूर्ण वातावरणसे छुट्टी ली। विदाईका क्षण बड़ा मर्मस्पर्शी था। गाधीजीने सायकालीन प्रार्थनाके बाद आश्रमवासियोंको सम्बोधित करके जो चन्द सक्षिप्तसे वाक्य कहे उनमें विदाईका सारा कारुण्य भर दिया।"

रहनेके बावजूद मैं आश्रमके बच्चोंके साथ घुल-मिल नहीं सका, उनमेंसे हर एकका नामतक नहीं जान सका, उनसे दोस्ती पैदा नहीं कर सका और न उनका विश्वास ही प्राप्त कर सका। जो सचमुच मुझे बड़ा पसन्द है। लेकिन करूँ भी तो क्या? कामने मुझे फुर्सत ही नहीं दी।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १०-१-१९२९

३२३. भेंट : नागपुर स्टेशनपर[1]

२० दिसम्बर, १९२८

प्रश्न : स्वतन्त्रताके लिए छेड़े जानेवाले राजनीतिक युद्धके बारेमें आपका क्या दृष्टिकोण होगा?

उत्तर : मैं उसमें भाग लेनेसे ठीक उसी तरह इनकार कर दूँगा जैसे ब्रिटिश सरकार द्वारा आगे कभी किये जानेवाले युद्धका समर्थन करनेसे इनकार कर दूँगा।

परन्तु आपने दक्षिण आफ्रिकामें तो बोअर लोगोंके विरुद्ध चलाये जानेवाले युद्धमें एक विदेशी सरकारका समर्थन किया था हालाँकि वह सरकार उन दिनों भारतीयोंका शोषण भी कर रही थी, और फिर आपने १९१४ के युद्धमें जर्मनीके विरुद्ध ब्रिटिशका समर्थन किया था। तबसे अबतक परिस्थितिमें ऐसा कौन-सा अन्तर आ गया है कि आप स्वातन्त्र्य युद्धमें अपने देशका समर्थन करनेसे भी इनकार करते हैं?

मेरी दृष्टिमें तो बोअर-युद्ध या १९१४ के युद्धके समयकी और वर्तमान परिस्थितिमें भारी अन्तर आ गया है। उन दोनों अवसरोंपर ब्रिटिश साम्राज्यपर मेरा विश्वास जमा हुआ था। मेरा विश्वास था कि थोड़ी-बहुत भूल-चूकके बावजूद कुल मिलाकर ब्रिटिश साम्राज्यकी गतिविधियाँ संसारके लिए कल्याणकारी ही हैं। और आजकी तरह उस समय भी मैं युद्धके विरुद्ध तो था, पर उस समय युद्धमें भाग लेनेसे इनकार करने लायक प्रतिष्ठा या शक्ति मेरे पास नहीं थी। इसलिए मैंने एक साधारण नागरिकके नाते अपना जो कर्त्तव्य समझा उसके आगे अपने व्यक्तिगत विवेकको महत्त्व नहीं दिया। अब मेरी स्थिति बिलकुल ही भिन्न है। परिस्थितियोंने मुझे अहिंसाका उपदेशक बना दिया है। मेरा दावा है कि मैं अपने जीवनमें अपनी योग्यताके अनुसार अपनी शिक्षापर अमल करता हूँ और मैं महसूस करता हूँ कि व्यक्तिके रूपमें युद्धका प्रतिरोध करनेका सामर्थ्य मुझमें है।

१. प्यारेलालकी 'साप्ताहिक चिट्ठी'से। उसमें कहा गया था : "एक असाधारण रूपसे व्यस्त दिवसके अन्तमें बहुत ही विलम्बसे कुछ मित्र आ गये और उन्होंने उन दिनोंके कुछ बहुत ही फौरी सवालोंको लेकर गांधीजीके साथ काफी दिलचस्प बातचीत शुरू कर दी थी।"

तब आप राष्ट्रीय सेनाके विचारका समर्थन नहीं करेंगे?

स्वराज्य मिल जानेपर मै राष्ट्रीय सेना बनानेका समर्थन करूँगा। कारण यह कि मैने महसूस कर लिया है कि जनताको जबरन अहिंसक नही बनाया जा सकता। आजकल मै जनताको यह सिखानेकी कोशिश कर रहा हूँ कि अहिंसक उपायोसे किसी राष्ट्रीय सकटका सामना कैसे किया जाये। पर सकट-कालमे किसी प्रयोजन विशेषको लेकर अहिसापूर्ण आचरण करना एक बात है, और अहिंसाको सदा-सदाके लिए एक जीवन दर्शनके रूपमे अपनानेकी शिक्षा देना एक बिलकुल ही भिन्न बात है। यह नही कि मै जीवन-दर्शनके रूपमे अहिंसाका जनता द्वारा अपनाया जाना असम्भव समझता हूँ, लेकिन इतने बडे उद्देश्यको सम्पन्न करनेकी शक्ति मै अपने-आपमे नही पाता। इसीलिए मै राष्ट्रीय सेना बनानेका शायद विरोध न करूँ। हाँ, मै उसमे स्वय शामिल नही हो सकता। अपने अन्तरमे मै बडी स्पष्टतासे महसूस करता हूँ कि सेना अनावश्यक है, लेकिन दूसरोको इससे सहमत कराने लायक शक्ति मेरी वाणीमे नही है।

यदि आपका यही दृष्टिकोण है तो फिर आप निश्चय ही चाहेगे कि हमारे देशके नवयुवक कुछ विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित विश्वविद्यालय सैन्य-प्रशिक्षण योजनाका लाभ उठायें?

मौजूदा सरकारके अधीन सैन्य-प्रशिक्षण प्राप्त करना अपने आपको वर्तमान व्यवस्थाका एक अग बना देना होगा, ऐसा अग जो किसी समय आपको अपने देशकी जनताके विरुद्ध भी इस्तेमाल किया जा सकता है। गोरखे तो हमारे अपने ही है, वे हर दृष्टिसे भारतीय ही है, पर वे आदेश मिलनेपर अपने ही भाइयोपर गोलियाँ दागने लगेगे।

लेकिन हमारे नवयुवक तो सुशिक्षित ही होंगे, वे तो कभी भी ऐसा देशद्रोहपूर्ण काम करनेको तैयार नहीं होंगे?

आप चाहे तो ऐसा विश्वास बनाये रहे, पर मै आपको बतला दूँ कि यह है आपका अन्धविश्वास ही। चारो ओरके वातावरणके पतनकारी प्रभावका बल आप नही समझ रहे है। आप आज देशमे ऐसे कितने लोगोके नाम गिना सकते है जो एक बार सरकारके प्रभावमे आ जानेके बाद भी उसके जादूसे अपनी स्वतन्त्रताको अछूता रख पाये हो? ब्रिटिश शासक मानवीय स्वभावको बखूबी पहचानते है। वे भली-भाँति जानते है कि एक किसी व्यवस्थाके अधीन हो जानेपर अधिकाश मनुष्य अपने-आपको उस व्यवस्थाके अनुरूप ढाल ही लेते है, विशेष कर जब उस व्यवस्थामे व्यक्तिगत स्वार्थ-सिद्धिकी गुजाइश भी दिखती हो। सरकारी सेवामे अनेकानेक सुशिक्षित भारतीय मौजूद है, जो अपने मालिकोकी इच्छानुसार काम करते है चाहे वह काम राष्ट्रीय हितके विरुद्ध ही पडता हो, जैसा कि अक्सर होता है। और फिर आप इस तथ्यकी ओर भी पूरा ध्यान नही दे रहे है कि इन सैन्य प्रशिक्षणोमे शामिल होनेवाले नवयुवकोको राजभक्तिकी शपथ भी लेनी पडेगी।

[अग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १०-१-१९२९

३२४. पत्र : छगनलाल जोशीको

२१ दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

तुम्हे रविवारको पत्र नही मिला, इसका यह अर्थ हुआ कि कान्ति[1] वहाँ नही है। वह अपने नाम ही पत्र चाहता था इसलिए मैंने उसे एक निजी पत्र लिखा और तुम्हारा पत्र उसीके साथ रख दिया। फिलहाल ऐसा कोई दिन नही गया जब मैंने तुम्हे पत्र न लिखा हो। न लिखनेकी बात तो तभी बन सकती है जब तुम पूरी तरह निश्चिन्त हो जाओ, वहाँका वायुमण्डल बिलकुल निर्मल हो जाये। चाहता तो हूँ कि ऐसा समय आये जब मुझे आश्रममे किसीको पत्र न लिखना पडे। ऐसा दिन भी आयेगा। यो इन दिनों लिखना मेरे लिए भार-रूप नही है।

उडीसाके बारेमे मुझे वल्लभभाई पटेलको लिखना पड़ेगा।

इन्दु पारेखको कालीकट जाना चाहिए या फिर बारडोलीमे रहना चाहिए। उसे अध्ययन बिलकुल बन्द कर देना चाहिए।

उमी[2] अबतक स्वस्थ हो गई होगी। उसे निमोनिया हो तो भी घबरानेकी जरूरत नही है। इलाज सब बीमारियोका एक ही है, आराम और गर्म पानी। यदि वह भूख महसूस करे तो उसे दूध या फलोका रस दो। तफसीलवार उत्तर अब बादमे लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

१. हरिलाल गांधीके पुत्र।
२. छगनलाल जोशीकी कन्या।

३२५. भाषण : सम्बलपुरमें[1]

[२२ दिसम्बर, १९२८][2]

मै आपसे तथा अन्य सम्बन्वित सज्जनोसे केवल यही प्रार्थना करना चाहता हूँ कि जीवनके जो थोडे-बहुत दिन मेरे पास बच गये है मै उन्हे अपने जीवनके उस काममे लगाना चाहता हूँ जिसे मै सबसे अधिक उपयोगी मानता हूँ। मेरा मतलब खादी-से है। मै नही चाहता कि मै केवल आडम्बर और दिखावेमे समयको बरबाद होने दूँ। मेरे जीवनकी सर्वाधिक उपयोगी हलचल कौन-सी है, आप इस विषयमे अपनी राय बनानेके लिए स्वतन्त्र है, किन्तु मेरी राय बनानेके लिए तो आप मुझे मुक्त ही रखे।

देशकी बढ़ती हुई गरीबीका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा :

एक ओर सरकार देशको नित्य प्रति नये टैक्स लगा कर चूसती जा रही है और दूसरी ओर व्यापारी प्रति वर्ष ६० करोड रुपयेका विदेशी कपडेका बोझ उसके सिरपर लाद कर उसे कुचले डाल रहे है। फिर इसमे आश्चर्यकी क्या बात है कि ऊपर महसूलका एक पाट और नीचे व्यापारियो द्वारा शोषण रूपी चक्कीके इन दो पाटोके बीचमे जनता पिस कर चूर न हो जाये; ऐसा न होना ही आश्चर्य की बात होगी।

इसके बाद उन्होंने स्वर्गीय देशबन्धु, स्वर्गीय लाला लाजपतराय और स्वर्गीय गोपबन्धु दासका नाम लेकर कहा कि ये तीन महान नेता उत्कलकी गहरी कृतज्ञताके पात्र हैं। इन तीनोंने अपने जीवनकालमें स्पष्ट शब्दोंमें खादीके प्रति अपना विश्वास प्रकट किया था और यह माना था कि वे गाँवोंका पुनर्गठन और दरिद्रताका नाश करनेमें समर्थ हैं। खादीके प्रति उनका यह विश्वास वे जैसे-जैसे उम्रमें बढ़ते गये, बढ़ता ही चला गया। उत्कल उनके प्रति अपना कर्त्तव्य इसी तरह निभा सकता है कि वह खादी कार्यको पूरे मनसे हाथमें ले ले और प्राकृतिक अथवा मानवीय किसी भी प्रकारके कोपमें उसे अक्षुण्ण रखे। सम्बलपुरमें खादी कामकी जबरदस्त गुंजाइश है क्योंकि वहाँके लोग बुननेमें कुशल हैं। इसलिए मैं तो यही चाहूँगा कि आप सब लोग मिलकर सम्बलपुरको एक विकासशील खादी केन्द्र बना डालें।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १०-१-१९२९

१. प्यारेलालकी 'साप्ताहिक चिट्ठी' से। सभा महानदीके तटपर हुई थी।
२. २२-१२-१९२८ को छगनलाल जोशीके नाम लिखे गये पत्रमें सभाके उल्लेखसे।

३२६. पत्र : छगनलाल जोशीको

सम्बलपुर
२२ दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

सभा[1] इत्यादिका काम निपटा कर और भोजन कर लेनेके बाद मैं चरखा ले कर बैठ गया हूँ। थोडी शान्ति मिल गई है इसलिए आये हुए पत्रोका जवाब दे रहा हूँ। इनमें मैंने कुछ पत्र तफसीलवार जवाब देनेके विचारसे रख लिये हैं। इसलिए तुम अपनी हरएक बातके उत्तरकी आशा रख सकते हो।

अभीतक तो मैं तीसरे दर्जेकी मुसाफिरीकी बातको निभाता रह सका हूँ और अभीतक तो हम सब आरामसे ही सफर करते रहे हैं। नागपुरसे गाडीका एक डिब्बा ही हमे दे दिया गया था और उसपर 'रिजर्वड' भी लिख दिया गया था। उसके कारण रास्तेमे कोई अड़चन नही हुई।

यहाँ सभामे हमने जी-भर कर खादी बेची। गुजराती भाई यहाँ काफी संख्यामे है। उनके पाससे ८०० से भी अधिक मिला। मैं आशा करता हूँ कि मेरे यहाँ जानेके बाद वे १००० की रकम पूरी कर देगें। यहाँके अस्पृश्योने अपने हाथका कता हुआ सूत दिया है और खुदकी बुनी हुई खादी भी दी है।

चरखा सघकी बैठकमे एजेंसीके बारेमे चर्चा हुई थी। मुझे उसमे नही बैठना पडता; किन्तु तुमने जो सुझाव भेजा था वह सिद्धान्त रूपमे मुझे ठीक लगा था और इसलिए मैंने उसे बैठकके सामने रखवा दिया था। सभी सदस्योने उसे पसन्द किया है और अब यह निश्चय हो गया है कि यदि हम अपने पास एजेंसी रखना चाहेगें; तो वह एक आदमीके नाम न होकर सस्थाके नाम ही रहेगी। जबतक चरखा सघको संस्थाका काम पसन्द रहेगा तबतक उसके पास एजेंसी बनी रहेगी। मैंने कह दिया है कि यदि उन्हे अन्य कोई प्रबन्ध सुविधाजनक लगे तो निश्चय ही वे वैसा कर ले। उसके कारण मुझे या हममे से किसीको दु.ख नही होगा। समिति तटस्थ भावसे वही करे जो खादीके हितमे सर्वश्रेष्ठ हो। अन्तिम निर्णय लेनेके लिए एक उपसमितिका निर्माण हो गया है। वह अन्तिम निर्णय लेगी और हमे सूचित करेगी। इस समितिमे नारणदासको शामिल किया गया है। थोडे ही दिनोमे सारी बाते साफ हो जायेगी।

देवदास इत्यादिपर जो खर्च आता है उसीके पेटे कुछ निश्चित रकम मन्दिर-को मिलेगी। तुम देवदासके बिल चुकाते रहना। खर्च की गई रकमके विषयमे यदि तुम्हे कुछ कहना हो तो तुम मुझे सूचित कर सकते हो अथवा देवदाससे भी बात कर सकते हो।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

मीराबहन और छोटालालको[1] वर्धामे ही रोक दिया है। मीराबहनने बिहारमें जो काम शुरू किया है उसे पूरा करते ही वह आश्रममे पहुँच जायेगी। छगनलाल बम्बई जायेगा और मधुमक्खी पालनके विषयमे थोडी-बहुत जानने योग्य जानकारी प्राप्त करनेके बाद वहाँ पहुँचेगा। अभी तो यही निश्चय हुआ है कि वह अन्ततोगत्वा वही पहुँचेगा। फिर भी तुम और गगाबहन उसे आकर्षित करते रहोगे तो अच्छा ही होगा। ये दोनो ही सावलीके कामको देखनेके लिए निकल गये होगे। छोटालाल-का वर्धामे ५ पौड वजन बढा। वसुमतीका वजन भी बढा है और बढता जा रहा है। कमसे-कम ८ पौड तो बढा ही होगा। दोनोके वजन बढनेका कारण तेल और मानसिक शान्ति है।

उमीको अबतक आराम पहुँच गया होगा। कूकर खाँसीमे शुश्रूषा ही सबसे बडी दवा है और सूर्य-स्नानके और भी अद्‌भुत दृष्टान्त प्राप्त हो रहे है। सूर्यके माध्यमसे आरोग्य प्राप्त करनेका यह क्षेत्र अभीतक बहुत ही थोडा जाँचा गया है। मै तो यही मानता हूँ कि असख्य रोग मुख्य रूपसे सूर्यकी किरणोके जुदे-जुदे उपचारोके मारफत दूर हो सकते है। रेवाशकरभाईका बच्चा धीरू इसीसे अच्छा हुआ। उसकी तो एक हड्डी भीतर-भीतर खराब हो गई थी। रोज सेर-सेर पीव निकलता था। सूर्य-किरणोसे वह अब बिल्कुल अच्छा हो गया है। इसका यह अर्थ हुआ कि कमजोरी, कूकर खाँसी, दम भरना आदि बीमारियाँ भी सूर्यस्नानसे अवश्य चली जानी चाहिए।

किशोरलालजी वर्धा पहुँच गये है, लेकिन कह सकता हूँ कि वह पहुँचे और मै निकला। इसलिए हम आपसमे कोई बातचीत नही कर सके। उनकी तबीयत सामान्य ही कही जायेगी। मेरी गाडी तो ठीक चल रही है। केशुका हलका बुखार बिलकुल टूट गया है और उसका ४½ पौड वजन भी बढा है।

शेष अगले पत्रमे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

दुबारा नही पढा।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो — श्री छगनलाल जोशीने

1. छोटालाल जैन।

३२७. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

सम्बलपुर
२२ दिसम्बर, १९२८

चि० शान्तिकुमार,

चि० छोटालालको डबलरोटी बनाना सीखना है। उसको तुमने जो पुस्तके इत्यादि भेजी थी उन्हे पढकर तथा एक सामान्य बेकरीमे आ-जाकर उसने रोटी बनाना तो सीख लिया है; किन्तु ऐसा नही कहा-जा सकता कि उसे उसका सम्पूर्ण ज्ञान हो गया है। अगर उसे किसी अच्छी बेकरीमे जा कर सारी क्रियाएँ और आटे-मे क्या चीज कितनी मिलाई जाती है वह देखनेको मिल जाये तो वह बेशक बहुत अच्छा होगा। इसके सिवा यदि वे वहने उसे बिस्कुट बनाना सिखा दे तो भी अच्छा हो। छोटालाल वहाँ यह सब देखने और विट्ठलदाससे मधुमक्खी पालन सीखनेकी दृष्टिसे वहाँ पहुँचेगा। तुम जो मदद दे सकते हो सो देना। कोई बेकरी देख लेनेकी सुविधा दिलाई जा सके तो वैसा करना। यदि टाटाकी अपनी कोई बेकरी हो तो सम्भव है ताजमहल होटलके प्रबन्धक उसमे सीखनेकी सुविधा दिला सकेगे। मै इस तरहके काम तुम्हे बीच-बीचमे सौपता रहूँ तो परेशान मत होना। माँजीकी तबीयत अब बिलकुल ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७९१) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

३२८. पत्र : मोहनलाल मिश्रको

सत्याग्रहाश्रम[1]
साबरमती
२२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपने जिस उद्देश्यका जिक्र किया है, ठीक वही उद्देश्य रखनेवाली एक सस्था है। वह स्वर्गीय सर गगाराम द्वारा स्थापित की गई थी। मेरा सुझाव है कि आप कृपया उक्त सस्था (लाहौर) को लिखे। उसकी सूचीमे कुछ उप-युक्त नाम है।

१. स्थायी पता।

मैं सोचता हूँ कि वधू और उसके सलाहकारोंको एक कदम और आगे बढ़ना चाहिए और अपने-आपको उपजातियों तक महदूद नहीं रखना चाहिए। यदि सारे भारतवर्षके ब्राह्मणोंमें से कोई ठीक व्यक्ति मिल जाये तो यही काफी होगा।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत मोहनलाल मिश्र
१४५, नई मण्डी
मुजफ्फरनगर, संयुक्त प्रान्त

अंग्रेजी (एस० एन० १३०२२) की फोटो-नकलसे।

३२९. पत्र : बबन गोखलेको

सत्याग्रहाश्रम[1]
साबरमती
२२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय गोखले,

पत्रके साथ श्री मोसलेकी चिट्ठी और उसका दिया हुआ मेरा जवाब संलग्न है। अगर तुम्हारा ऐसा खयाल हो कि तुम काफी रकम इकट्ठा कर सकोगे और न्यासियोंका एक ऐसा आयोग भी बनाया जा सकेगा जिसमें तुम्हारी बात सुनी जाती रहेगी तो मैं भी १०-१५ हजार रुपये दे सकूँगा। पूरी ४० हजार रुपयेकी जरूरी रकम भी प्राप्त करना असम्भव नहीं होगा।[2]

मैं यह अवश्य सोचता हूँ कि यदि इन लोगोंके ध्यानसे छात्रावास बनाना जरूरी ही हो तो छात्रावास बम्बईमें ही बनाया जाना चाहिए। वे लोग उपनगरोंमें नहीं रहते और न उपनगरोंमें जा सकते हैं। यह दुःखकी बात है, किन्तु है यह बात सच। उपनगर गरीबोंके लिए नहीं, सम्पन्न लोगोंके लिए है।

अगर तुम्हारे पास समय हो तो मैं चाहता हूँ कि न्यासके गठनमें तुम विशेष दिलचस्पी लो और श्री वेलजी जैसे सज्जनोंसे जा कर मिलो। मैं न्यासियोंके लिए ये नाम सुझाता हूँ सर्वश्री वेलजी, रेवाशंकरभाई, किशोरलाल मशरूवाला, जमनालालजी, अवन्तिकाबाई, मोसले, नेकलजे, सर पुरुषोत्तमदास और अगर देवधर आना पसन्द करें तो उसका नाम।

हृदयसे आपका,

संलग्न : २

अंग्रेजी (एस० एन० १३८१७) की माइक्रोफिल्मसे।

१. स्थायी पता।
२. दलितवर्गके छात्रावासके निमित्त। देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ३३९-४०।

३३०. पत्र : के० टी० पॉलको

सत्याग्रहाश्रम[1]
साबरमती
२२ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मै कलसे लगभग एक सप्ताहके लिए कलकत्ता रहूँगा। और वहाँ श्री जीवनलाल, ८ प्रिटोरिया स्ट्रीट, के साथ ठहरूँगा।

मुझे परिषदकी कार्रवाईका सक्षिप्त विवरण और आपके भाषणका पाठ मिल गया है। भाषण मै अभीतक पढ नही पाया हूँ। जैसे ही मुझे समय मिलेगा नि सन्देह मै उसे पढूँगा; और यदि उस विषयमे मुझे कुछ कहना होगा तो खुशीके साथ कहूँगा।

श्री डेविकने[2] आपसे पहले मुझे डा० मॉटके बारेमें लिखा था। मैं भी उनसे मिलना चाहूँगा। जनवरी और फरवरीके बीचका मेरा आना-जाना आदि कार्यक्रम कलकत्तेमे तय होगा।

हृदयसे आपका,

श्री के० टी० पाल[3]
५, रसल स्ट्रीट, कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३८१८) की फोटो-नकलसे।

३३१. टिप्पणी

कातनेके शौकीनोके लिए

जिस लेखमें[4] यह सूचित किया गया था कि पीजी जानेवाली रुईको धूप दिखाना जरूरी नही है, उसके सदर्भमे श्री लक्ष्मीदास लिखते है:[5]

१. स्थायी पता।

२. डेविकको लिखे गये पत्रके लिए देखिए "पत्र: ई० सी० डेविकको", १२-१२-१९२८।

३. विश्व ईसाई विद्यार्थी सम्मेलनकी प्रबन्धक समितिके अध्यक्ष।

४. देखिए "अच्छी पिंजाई", ९-१२-१९२८।

५. पत्र नही दिया गया है। पत्र-लेखकने यह लिखा था कि गांधीजीने उक्त लेखपर अपनी टिप्पणीमें रुई और कपासका अन्तर नहीं किया। कपासको धूप दिखानेके बाद भी ओटा जा सकता है जब कि ओटे हुए कपासको धूप दिखानेकी जरूरत नहीं है। उन्होंने यह भी बताया था कि पूनियाँ बनाते समय ऐसी ही रुई काममें लाई जानी चाहिए जो रेशेकी लम्बाईके बराबर मोटी हो, उसी हालतमें कातते समय रेशे पूरे-पूरे निकल सकते हैं।

यह एक महत्त्वपूर्ण सूचना है और इसका श्रेय जाता है अज्ञानमे की गई मेरी एक भूलको। मै कपास और रुईका भेद जान गया। यह बात जाननेके पहले मैंने रुई और कपास दोनोका एक ही अर्थमे उपयोग किया है, इसलिए उल्लिखित लेखमे रुईकी जगह कपास चला गया। इस तरह हम देखते है कि निर्दोष गलतियोके फल अच्छे ही होते है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २३-१२-१९२८

३३२. तार : गुजरात विद्यापीठके प्राचार्यको

२४ दिसम्बर, १९२८

प्राचार्य
विद्यापीठ
अहमदाबाद

वल्लभभाई से सलाह ली। ११ वी तारीख बरकरार रहे।[1]

बापू

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से।

३३३. तार : छगनलाल जोशीको

२४ दिसम्बर, १९२८

छगनलाल
उद्योग मन्दिर
साबरमती

तुमने बहादुरीसे काम किया। आशा है अब रमा[2] समझ गई होगी कि उमीकी[3] आत्मा मरी नही है और आश्रमके सब बच्चे उसके है।

बापू

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से।

१. गुजरात विद्यापीठके ७वें दीक्षान्त समारोहके लिए।
२. छगनलाल जोशीकी पत्नी।
३. उमीकी मृत्यु निमोनियासे हो गई थी।

३३४. तार : पुरुषोत्तमदास टंडनको

२४ दिसम्बर, १९२८

पुरुषोत्तमदास टंडन
पंजाब नेशनल बैंक
लाहौर

तुम्हारे दुख की खबर सुनी। भगवान तुम्हे शान्ति दे। बने तो अवश्य आ जाना।

गांधी

अंग्रेजी एस० एन० २४५६ से।

३३५. पत्र : मीराबहनको

[कलकत्ता]
२४ दिसम्बर, १९२८

चि० मीरा,

तुम्हारी पुरजी मिली। यह बडे दिनकी शाम है। अगर बडे दिनके साथ तुम्हारी कोई विशिष्ट स्मृति और विशिष्ट अभिप्राय जुडा हुआ हो तो कामना करता हूँ कि उनके कारण आजका दिन अपेक्षाकृत अधिक पवित्र बने और तुम जीवनकी वास्तविकताओंको अधिक परिपूर्ण रूपसे समझ सको। मुझे मालूम था कि तुम वर्धामें सुख और शान्तिसे हो, और इससे मुझे आनन्द हुआ।

जैसे ही मैं स्टेशन पहुँचा मोतीलालजीने बना बनाया कार्यक्रम मेरे सामने रख दिया, इसलिए कातनेका समय रातको ही मिला।

प्यार,

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ८२१७ तथा सी० डब्ल्यू० ५३२७ से।
सौजन्य : मीराबहन

३३६. पत्र : आश्रमकी बहनोंको

कलकत्ता
मौनवार, २४ दिसम्बर, १९२८

बहनो,

आज मेरे पास एक छोटा-सा पत्र लिख सकने योग्य समय ही है।

मैंने एक पत्र दुर्गाबहनको लिखा है। उसे पढ लेना, क्योकि वह तुम सबपर लागू होता है। तुम सब बहनोको उमीकी मृत्युसे सबक लेना चाहिए। आश्रमके सारे बच्चे तुम सबके बच्चे है। यदि उनमेसे किसी की भी मृत्यु हो जाती है तो तुम्हे समझना चाहिए कि उसे ईश्वरने ले लिया है, यदि कोई बच्चा जन्म लेता है तो समझ लेना चाहिए कि भगवानने उसे हमारे बीच भेजा है। आश्रमकी सख्या नवजात शिशुओके कारण न बढे तो नवागन्तुक परिवारोके कारण थोडी बढती ही रहती है। यदि हम उन सबके प्रति समान प्रेम रखना सीख जाये तो हमे उमीके जानेके कारण कष्ट नही होगा, क्योकि हमे ऐसी घटनाओके गहरे अर्थ समझनेकी कोशिश तो करनी ही चाहिए।

हम लोग जल्दी ही मिलेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३६६८)की फोटो-नकलसे।

३३७. पत्र : प्रभावतीको

मौनवार [२४ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० प्रभावती,

तुमारे खत मीले है। पिताजी यही है। उनका स्वास्थ्य अच्छा है। मै अब तक मील नहि सका हु। कुसुमके साथ तुमारा परिचय ठीक हो रहा है जान कर मुझको आनद होता है।

उनसे कोई चीझ छुपानेकी आवश्यकता नहि है। वह दृढ होनेके कारण ठीक सलाह दे सकती है। सब तुमे भले कहते रहे, किसीकी बीमारी होने पर मुझको लीखते रहो।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३१९ की फोटो-नकलसे।

१. "कुसुमके साथ तुम्हारा परिचय ठीक हो रहा है" के उल्लेखसे लगता है कि यह पत्र १९२८में लिखा गया होगा। इसके अतिरिक्त गांधीजी अखिल भारतीय कांग्रेसके अधिवेशनमें भाग लेने कलकत्ता गये हुए थे। वहाँ उन्होंने प्रभावतीके पितासे भेंट होनेकी सम्भावना भी व्यक्त की है।

३३८. पत्र : वी० जी० जनार्दनरावको

कलकत्ता
२६ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। वह मैंने घनश्यामदास बिड़लाको दे दिया है। वे आपको सीधे लिखेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत वी० जी० जनार्दनराव
गुरु राज विलास
श्रीरामपेट, मैसूर

अंग्रेजी एस० एन० २६९०८ से।

३३९. भाषण : नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर[1], कलकत्ता-कांग्रेसमें – १

२६ दिसम्बर, १९२८

प्रस्ताव प्रस्तुत करनेके पहले महात्मा गांधीने हिन्दुस्तानीमें प्रारम्भिक भाषण दिया और कहा कि परिस्थितिकी गम्भीरताको देखते हुए यह आवश्यक है कि मैं अपने विचार देशके सामने रखूं। मैं वैसे तो हिन्दुस्तानीमें बोलना पसन्द करता, किन्तु परिस्थितिवश मेरा अंग्रेजीमें प्रस्ताव पेश करना उचित है। इसके बाद पण्डित जवाहरलाल नेहरूने प्रस्तावका पाठ पढ़कर सुनाया।

सर्वदलीय समितिने संविधानके सम्बन्धमें जो सिफारिश की है कांग्रेसने उसपर विचार कर लिया है।[2] वह इसका स्वागत करती है क्योंकि प्रस्तावित संविधान काफी आगे बढ़ कर भारतकी राजनीतिक और साम्प्रदायिक समस्याओंकी दिशामें एक हल पेश करता है। कांग्रेस इस बातपर समितिको बधाई

१. विषय निर्धारिणी समितिमें।

२. सर्वदलीय परिषदके प्रस्तावके परिणामस्वरूप मोतीलाल नेहरूकी अध्यक्षतामें एक समिति नियुक्त हुई थी जिसे १-७-१९२८ के पहले संविधानके सिद्धान्तोंपर मसविदा बनाकर पेश कर देना था। उक्त समितिकी सिफारिश नेहरू रिपोर्टके नामसे २८, २९, ३० अगस्त १९२८ को लखनऊमें हुई सर्वदलीय परिषदके सामने रख दी गई थी। देखिए खण्ड ३७।

देती है कि सिफारिशोपर लगभग समितिके सभी सदस्योकी सम्मति प्राप्त हो गई है और उसने जो सविधान प्रस्तुत किया है वह मद्रास काग्रेसमें पास किये गये पूर्ण स्वराज्यके प्रस्तावपर आधारित है। समितिका यह प्रस्ताव राजनीतिक प्रगतिकी दिशामे एक बडा कदम है, विशेषत इसलिए कि उसे देशके सभी महत्त्वपूर्ण दलोकी अधिकसे-अधिक सम्मति प्राप्त है। किन्तु यदि ३१ दिसम्बर, १९३० को या उससे पहले इन सिफारिशोको स्वीकार नही किया जाता तो काग्रेस इस सविधानसे बधी नही रहेगी, और उस तिथितक ब्रिटिश पार्लियामेटके उसे स्वीकार न करनेपर वह फिरसे अहिंसात्मक असहयोगका आन्दोलन छेड़ देगी तथा देशको सलाह देगी कि वह किसी प्रकारके कर अदा न करे और न सरकारको कोई सहायता दे।

इस प्रस्तावके द्वारा अध्यक्षको अधिकार दिया जाता है कि सर्वदलीय समितिकी सिफारिशोके विवरणकी एक प्रतिके साथ वह इस प्रस्तावका पाठ परममाननीय वाइसरायके पास भेजे ताकि वे जो कार्रवाई उचित समझे सो करे।

यह प्रस्ताव लोगोके बीच स्वराज्यके उद्देश्यका प्रचार करनेमे बाधक नही माना जायेगा, अलबत्ता प्रचारमे ऐसी कोई बात नही कही जानी चाहिए जो उक्त सिफारिशोके लागू किये जानेसे बेमेल बैठती हो।[1]

(२) इस बीच काग्रेसकी निम्नलिखित गतिविधियाँ रहेगी (क) वह विधान परिषदो और उनके बाहर मादक द्रव्यो और पेयोके परिपूर्ण निषेधके लिए जो-कुछ कर सकती है करती ही रहेगी, जहाँ सम्भव और जरूरी जान पडेगा वहाँ शराब और मादक द्रव्योकी दुकानोपर धरना देनेका प्रबन्ध किया जायेगा। (ख) वातावरणके अनुकूल विधान परिषदो और उनके बाहर ऐसे तरीके तुरन्त ही अपनाये जायेगे जिनके द्वारा हाथकती और बुनी खादीको अपनानेकी प्रेरणाके मारफत विदेशी कपडेका बहिष्कार सम्भव हो सकेगा। (ग) बारडोलीकी तरह जहाँ-कही अहिंसात्मक कार्रवाईके द्वारा विशिष्ट शिकायतोको दूर करनेकी सम्भावना होगी और जहाँ लोग इसके लिए तैयार होगे वहाँ शिकायतोके पाये जानेपर उन्हे दूर करनेकी कोशिश की जायेगी। (घ) विधान परिषदोके जो सदस्य काग्रेसकी टिकटपर चुने गये है वे अपना अधिकाश समय काग्रेस समिति द्वारा समय-समयपर निश्चित किये गये रचनात्मक कार्योमे लगायेगे। (च) कडेसे-कडा अनुशासन लागू करके और सदस्योको दर्ज करके काग्रेस सगठनको परिपूर्ण बनाया जायेगा। (छ) देशको सामाजिक कुरीतियोसे

१. जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोसने इसपर संशोधन पेश किये थे। संशोधनोंका उद्देश्य यह था कि एक तो समयका कोई बन्धन नहीं होना चाहिए, दूसरे सर्वदलीय परिषद, दिल्ली द्वारा बनाये गये संविधानमें भारतके लिए 'डोमिनियन स्टेटस' की जो कल्पना की गई है, उसकी स्वीकृतिकी ओर कोई इशारा भी नहीं किया जाना चाहिए। परिणामस्वरूप यह प्रस्ताव वापस ले लिया गया था। कांग्रेस द्वारा स्वीकृत प्रस्तावके लिए देखिए "भाषण नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें-२", २८-१२-१९२८।

मुक्त करनेके लिए कदम उठाये जायेंगे। (ज) स्त्रियोकी निर्योग्यताओको दूर करनेके उपाय किये जायेंगे और उन्हे राष्ट्र-निर्माणमे उचित हिस्सा बँटानेके लिए निमन्त्रित और प्रोत्साहित किया जायेगा। (झ) कांग्रेसके हिन्दू सदस्योका कर्त्तव्य होगा कि वे अस्पृश्यताको दूर करनेकी दिशामे जो-कुछ कर सकते हैं करेंगे और तथाकथित अस्पृश्योको हर तरहसे मदद पहुँचायेंगे ताकि वे अपनी निर्योग्यताओको समाप्त कर सके। (ट) चरखा और खादीके मारफत जो काम किया जा रहा है उसके अतिरिक्त गाँवोके पुनर्गठनके लिए स्वयसेवक भरती किये जायेंगे। (ठ) अन्य वे काम भी किये जायेंगे जो राष्ट्र-निर्माणके सभी क्षेत्रोमे उन्नतिके लिए आवश्यक जान पड़े और जो विभिन्न क्षेत्रोमे लगे हुए लोगोका राष्ट्र निर्माणके लिए सहयोग प्राप्त करनेके लिए आवश्यक हो। ऊपर जो कार्यक्रम सूचित किया गया है उससे सम्बन्धित गतिविधियोके सचालनके लिए १०० रुपये और उससे अधिक प्रति मास आयवाले कांग्रेस सदस्य अपनी मासिक आयमे से ५ प्रतिशत रकम कांग्रेसको देंगे। कार्यकारिणी समिति विचार करके विशिष्ट मामलोमे अनिवार्यतः छूट दे सकती है।[1]

इसके बाद गांधीजीने कहा :

भाइयो, मेरी समझमे मुझे अपने प्रारम्भिक अभिभाषणमे कुछ बहुत नही कहना है। सभी लोग जानते हैं कि इन युग-निर्माणकारी सिफारिशोके सम्बन्धमे कांग्रेसियोको क्या करना चाहिए और क्या नही करना चाहिए, इस बातको लेकर हमारे बीचमें तीव्र मतभेद हैं। सर्वदलीय सविधान समितिकी इस रिपोर्टको मै युग-निर्माणकारी रिपोर्ट कह रहा हूँ। हमारे सामने दिल्लीका प्रस्ताव[2] है और पहले किसी भी व्यक्तिको यह लगेगा कि हम इस प्रश्नके सन्दर्भमे दिल्लीके प्रस्तावका अनुमोदन अथवा पुनर्समर्थन ही क्यो न कर दे। यदि राष्ट्रीय हितोको ध्यानमे रखते हुए यह बात सम्भव हो सकती तो फिर हमे नये-नये प्रस्ताव सामने रखनेकी आवश्यकता ही नही पडती और निस्सन्देह मुझे भी आपको भाषण सुनाना जरूरी न रह जाता। किन्तु मै यह बात छिपाना नही चाहता और इसे आपपर प्रकट करना चाहता हूँ कि स्वय अध्यक्षको यह महसूस हुआ कि हमारा दिल्ली प्रस्ताव फिरसे विचार करने और सुधारनेके योग्य है। हममे से कुछ लोगोने इसपर मिल कर विचार किया और इस निष्कर्षपर पहुँचे कि दिल्ली प्रस्ताव एक ऐसा प्रस्ताव है जो स्वय अपना खण्डन करता है। इस परिस्थितिमे हम एक मध्यम मार्ग अपनाना चाह रहे हैं ताकि नेहरू रिपोर्टको स्वीकार करनेकी इच्छा और प्रामाणिकताके साथ हम दूसरा प्रस्ताव तैयार कर सके। इस इच्छाके परिणामस्वरूप हमने यह प्रस्ताव बनाया। प्रस्ताव जिस

१. रचनात्मक कार्यों सम्बन्धी यह धारा कुछ संशोधनोंके साथ बादमें पास कर दी गई देखिए पृष्ठ; ३३३-३३४।

२. अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा दिल्ली अधिवेशन (३ नवम्बर १९२८) में पास। इसमें पूर्ण स्वराज्यकी माँगको दोहराया गया था और साम्प्रदायिक मतभेदोंके सम्बन्धमें नेहरू समितिकी सिफ़ारिशें स्वीकृत की गई थीं।

रूपमे हमारे सामने है उसमे कोशिश की गई है कि रिपोर्टसे सम्बन्धित जो विभिन्न विचार आज काग्रेसमे चल रहे है उनमे यदि पूरा-पूरा तालमेल नही तो कमसे-कम एक समझौता करनेकी कोशिश की जाये। आज हमारे बीचमे दो विभिन्न प्रकारके विचार रखनेवाले लोग है, यह दुर्भाग्य अथवा दु खकी बात नही है।

नेहरू रिपोर्ट जब प्रकाशित की गई थी तो सारे देशने उसका स्वागत किया था। मै कहना चाहता हूँ कि काग्रेसियोको उक्त रिपोर्ट उसी भावसे स्वीकार करनी चाहिए। मै आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि जब रिपोर्ट प्रकाशित हुई तब राष्ट्रने ही उसका स्वागत नही किया बल्कि हमारे आलोचकोने भी मुक्तकण्ठसे उसकी प्रशसा की, समर्थन किया और हमारे विरोधियो और ऐसे विदेशी लोगोने भी उसका स्वागत किया जो तटस्थ रूपसे हमारी गतिविधियोको देखते आ रहे थे। अगर आप चाहे तो आप कह सकते है कि हमे रिपोर्ट स्वीकार नही करनी है। किन्तु फिर भी मै कहना चाहता हूँ कि यदि हमने जल्दीमे ऐसा निर्णय ले लिया तो वह एक खराब बात होगी। यदि आवेशकी पहली लहरके शान्त हो चुकने और ठण्डे मन से रिपोर्टपर सावधानीसे विचार करनेपर हम इस निर्णयपर पहुँचे कि रिपोर्टको स्वीकार करना देशके कल्याणकी दृष्टिसे सर्वाधिक उपयुक्त नही है तो दु खसे ही क्यो न हो हमे कर्त्तव्य विवश होकर उसे अस्वीकार कर देना चाहिए। मै यह कहना चाहता हूँ कि या तो हम इसका पूरे मनसे समर्थन करे या हम इसका बिलकुल ही समर्थन न करे। प्रस्ताविक सविधान अपने-आपमे कोई साध्य नही है बल्कि साध्यकी दिशामें एक कदम है। यह एक ऐसा आलेख है जिसका उद्देश्य यथासम्भव अधिकसे अधिक महत्वपूर्ण दलोको इकट्ठा करना है ताकि वे सब मिल कर हमारी राजनीतिक प्रगतिसे सम्बन्धित किसी सर्वसम्मत ध्येयकी प्राप्तिमे एकाग्रचित्त होकर जुट सके।

आपको ध्यान रखना चाहिए कि जब समितिने यह काम हाथमे लिया, उस समय आसमान बादलोसे घिरा हुआ था। मै खुद भी जानता हूँ कि परिस्थितियाँ बडी कठिन थी और एक ऐसा भी वक्त आया था जब सदस्योके सामने निराशाके सिवा कुछ और था ही नही। किन्तु डॉ० अन्सारी और आजके अध्यक्ष निराशाके सामने आसानीसे घुटने टेक देनेवाले व्यक्ति नही है। उन्होने निराशाकी लहरोका मुकाबला किया; और इतनी सफलताके साथ किया कि उसे आप और दुनिया जान चुकी है।

आप काग्रेसके लोगोने ही इस समितिका निर्माण किया था। आपने जिस क्षण पूर्ण राष्ट्रीय स्वराज्यको अपने उद्देश्यके रूपमे स्वीकार किया, उसी क्षण आपने कार्य-कारिणी समितिसे यह भी कहा कि एक सर्वदलीय परिषदका निर्माण किया जाये जो स्वराज्यकी एक योजना तैयार करे। मै इसे स्वराज्यकी योजना कहता हूँ, आप चाहे तो इसे सविधान कह सकते है। आपने कहा कि सविधान ज्यादातर दलोको स्वीकार होना चाहिए। इस दृष्टिसे आपने समितिका निर्माण किया और उसमे बडेसे-बडे उन लोगोको आपने रखा जो अपनी देशसेवाके लिए देश-भरमे विख्यात है। आपने यह भी कहा कि यह काग्रेसके लोगोका कर्तव्य होगा कि वे इन सब लोगोको एक जगह लाये और जिस हदतक काग्रेसके उद्देश्यके अनुकूल रहकर

सविधान बनाया जा सकता हो, वे लोग सविधान बनाये। मेरा ख्याल है कि जब आपने सर्वदलीय सम्मेलनकी बात सोची और जब आपने कार्यकारिणीसे ऐसे एक सम्मेलनका आयोजन करनेको कहा था तब भी आपके मनमे यही बात रही होगी।

यदि बात ऐसी ही हो, तो मै कहूँगा कि जबतक आपके पास रिपोर्टको अस्वीकृत कर देनेके जबरदस्त कारण न हो, वह आपके द्वारा स्वीकृत की ही जानी चाहिए। ऐसा नही हो सकता कि आप रिपोर्टके कई खण्ड बना डाले और फिर उनमे से किसी टुकड़ेको स्वीकार कर ले और किसी टुकडेको अस्वीकार कर दे। यह रिपोर्ट एक अखण्ड जीवित शरीर है। जिस तरह एक जीवित शरीरके टुकड़े करके आप यह नही कह सकते कि मुझे शरीरका इतना हिस्सा स्वीकार्य है और शेष भाग मै स्वीकार नही करता आप उसी प्रकार कृपापूर्वक इस रिपोर्टके भी टुकड़े न करे और ऐसा न कहे कि हमे इसका यह भाग स्वीकार्य है और शेष भाग स्वीकार्य नही है। जैसा कि डा० अन्सारीने कहा, आप यदि रिपोर्टके मुख्य विचारका ही खण्डन करने लगेगे तो वह उस रिपोर्टके मर्ममे छुरा घोपने जैसी बात होगी। रिपोर्टका मुख्य विचार डोमीनियन स्टेटस है। मै कहना चाहता हूँ कि अगर हमने स्वतन्त्रता और डोमीनियन स्टेटसको एक-दूसरेके विरोधमे खड़ा किया या इस भावसे उनकी तुलना की मानो डोमीनियन स्टेटस कोई कमतर बात है और इडिपेडेस या स्वतन्त्रता उससे बढ़ी हुई कोई बात है तो वह हमारी भयकर भूल होगी। मै यहाँ तो इस बहसमे नही पड़ूँगा। मै आपसे इतना ही कहूँगा कि मै एक व्यावहारिक आदमी हूँ, मै राष्ट्रकी सेवा करना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि मै जनताको शिक्षित कर लूँ और उसपर प्रभाव डालूँ, ताकि वह सक्रिय रूपसे देशके गौरवकी रक्षाके लिए खड़ी होकर हमारा हाथ बँटा सके। मेरा कहना है कि यदि आपको ये सारे उद्देश्य प्रिय हो तो फिर आप जनतामे जाकर इन दो चीजोकी तुलना करनेके पहले ५० बार विचार करे। जल्दबाजीमे आकर यह मत मान बैठिए कि हममे से ज्यादा लोग देशके हितका जितना ध्यान रखते है, इस रिपोर्टको तैयार करनेवाले स्वनामधन्य लोगोने उससे कुछ कम खयाल किया होगा। जल्दबाजीमे आकर आप यह निर्णय भी न ले ले कि उन लोगोकी कामना देशकी परिपूर्ण स्वतन्त्रतासे कोई कमतर चीज पानेकी है। उस शब्दका निहित अर्थ, हम समय-समयपर जिस शक्तिका आह्वान कर सकते है, उसपर निर्भर करेगा (हर्षध्वनि)। अमेरिका जिस तरह स्वतन्त्र हुआ उस तरह नेपाल स्वतन्त्र नही हुआ। हमारे सामने देशी राज्योकी स्वतन्त्रता है —वे कई बार यह कहते और अपनेको सन्तोष देते हुए पाये जाते है कि हम स्वतन्त्र है। कई बार उन्हे अर्ध-स्वतन्त्र राज्य कहा जाता है। जहाँतक उनकी प्रजाका सवाल है, वे उनके प्रति निरंकुश शासको-जैसा व्यवहार करते हैं। यह स्वतन्त्रताका एक प्रकार हुआ। इसलिए हम इस शब्दको बहुत महत्त्व न दे और दूसरे दो शब्दो (डोमीनियन स्टेटस)की अवगणना भी न करे। एक ऐसे तपे हुए कार्यकर्त्ताकी हैसियतसे जो जनताके मनकी थोडी-बहुत बात जानता है, मै आपको राष्ट्रके मनमे दुविधा पैदा करनेके विरुद्ध सावधान करना चाहता हूँ। यदि आप दुविधा पैदा करेगे तो

फल केवल यह होगा कि जनता जालमे फँस जायेगी और जालमे फँसी पड़ी रहेगी। मेहरबानी करके ऐसा करनेकी कोशिश न करिए।

मेरा कहना है कि कोई भी आदमी बड़ी-से-बड़ी जिस चीजकी कामना कर सकता है वह है स्वतन्त्रता। वह कामना इस प्रस्तावके द्वारा पूरी हो जाती है। मद्रासके प्रस्तावमे कांग्रेसका उद्देश्य दिया गया है। उसमे कहा गया है कि हमारा उद्देश्य स्वतन्त्रता होगा किन्तु उसमे स्वतन्त्रताकी घोषणा नही की गई है। उक्त प्रस्ताव-को तैयार करनेवालोके मनमें जिस प्रकारकी स्वतन्त्रताका चित्र था हम इस समय उसे पानेके लिए कोई प्रयत्न नही कर रहे है। वैसे हम एक प्रकारसे स्वतन्त्रता पानेका प्रयत्न कर रहे है। कांग्रेसका उद्देश्य स्वतन्त्रता है, अगर कोई इस बातसे इनकार करना चाहता हो तो वह सामने आये। विकासकी प्रक्रिया ही यह है। किन्तु हममे से कुछ लोगोका विचार है कि कांग्रेसके उस प्रस्तावमे स्वराज्य अथवा स्वतन्त्रता शब्द डाल दिया जाये ताकि हम उसे देशके सामने रख सके। बड़ी खुशीसे आप ऐसा कर सकते है। आप उक्त शब्दका उसमे समावेश कर सकते है, किन्तु इस प्रस्तावको पास करते समय मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि कामको अन्जाम देनेकी प्रक्रियामे ही स्वराज्यकी गति बढ़ती है, कम नही होती। मद्रासमे आपने जो उद्देश्य निश्चित किया था, उसे निश्चित करके सो जाना सम्भव था। किन्तु यह जो प्रस्ताव है वह आपको आपके उद्देश्यके प्रति बेखबर नही रहने देगा; क्योंकि इसके अनुसार दो वर्षमे आपको स्वराज्यकी रूपरेखा बना लेनी पड़ेगी और तब लगभग उसका यह अर्थ होगा कि आपने स्वतन्त्रताकी घोषणा कर दी। अगर दो वर्षतक हममे से कुछ लोग जीवित रहे, मै अपनेको भी गिन कर कहता हूँ कि अगर मै भी दो वर्षतक जीवित रहा, तो सम्भव है कि मुझे और आपको स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिए बहुत-कुछ करके दिखाना पडे और यह भी सम्भव है कि हमे उसे प्राप्त करनेके अपने मे से कुछकी लाशे देखनी पडे। परिपूर्णसे-परिपूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी इच्छामे मै किसीसे पीछे नही हूँ। यदि मेरी अथवा देशकी स्वतन्त्रतामे बाधा डालनेके लिए एक भी आदमी बच जाता है तो मुझे चैन नही पड़ सकता और मुझे लगेगा कि मै व्यर्थ ही जीवन बिता रहा हूँ। मेरी छातीमे स्वतन्त्रताकी आग उसी प्रकार धधक रही है, जिस तरह अधिकसे-अधिक उग्र किसी आदमीके वक्षमे, किन्तु उसे प्राप्त करनेके तरीके भिन्न हो सकते है। बहुत सम्भव है कि जब मै अपने जीवनके दिन समाप्त करने जा रहा होऊँ तब भी मुझे यह सुन पड़े कि 'अभी हमे स्वराज्यके लिए ५० वर्ष और रुकना पड़ेगा।' सम्भव है उस परिस्थितिमें आप तर्जनी उठा कर मुझसे कहे कि तुम अब बिलकुल कमजोर हो गये हो! तब आप मेरी कोई बात नही सुनेंगे और मुझे कांग्रेसके रंगमंचसे नीचे उतार देंगे और मै भी राष्ट्रकी सेवा करनेमे अपने-आपको अयोग्य समझने लगूंगा क्योकि मै राष्ट्रकी सेवामे अपनी दुर्बलता नही अपनी शक्ति लगाना चाहता हूँ, चाहे वह जितनी थोड़ी ही क्यो न हो। अपनी कमजोरीका हिसाब तो मै शिष्टताके साथ दूंगा, जहाँतक शक्तिका सवाल है, वह सारीकी-सारी आपको समर्पित है। एक क्षणके लिए भी ऐसा मत समझिए

कि राष्ट्रके पास आज जो-कुछ है अथवा कल राष्ट्रको जो-कुछ प्राप्त कर लेना चाहिए, मैं उससे कोई कम बात स्वीकार कर लेनेके लिए कह रहा हूँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि यदि आपकी इच्छा सचमुच मद्रास कांग्रेसके प्रस्तावको क्रियारूपमे परिणत करनेकी है तो इस प्रस्तावमे उसकी पूरी-पूरी गुंजाइश है; अलबत्ता, इसके लिए सबसे अधिक आवश्यक यह है कि एक बार परिषदका गठन करके आप उसके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टके प्रति उतनी ही प्रामाणिकता बरते, जितनी प्रामाणिकता आप अपने उद्देश्यके प्रति बरत सकते हैं।

मैं आपसे कहूँगा कि आप उक्त रिपोर्टको अपने उद्देश्य की दृष्टिसे समझनेका प्रयत्न करे और महसूस करे कि इस रिपोर्टको तैयार करनेवाले लोगोके हृदयमे भी स्वराज्यका उद्देश्य ही सर्वोपरि है और यह भी याद रखे कि जिस समितिने यह रिपोर्ट तैयार की है, कांग्रेसका अध्यक्ष ही उसका अध्यक्ष है। आजकी परिस्थितिमे मैं इस प्रस्तावका विश्लेषण करना पसन्द नही करूँगा; मैं यह जरूर चाहूँगा कि आप इस प्रस्तावपर विचार करते हुए व्यक्तिगत आधारोको सामने न रखे। मैं यह नही चाहता कि आप मेरे संरक्षक बने, आप मुझे अपने साथ चलनेवाला एक सहयोगी ही समझे; और मैं यह भी चाहता हूँ कि आप उद्देश्यकी दिशामे मुझसे तेजतर कदम रख सके। आप कह सकते हैं कि डाक्टरोंने आपको आराम करनेकी सलाह दी है और अच्छा हो कि आप आराम करें; हम तो दौडना चाहते हैं अगर आप हमारे साथ रहे तो हमे रेंगना पड़ेगा। किन्तु मेरा कहना है कि रेंगनेकी बातको तो हम अमृतसरकी उस अभागी गलीमे गहरा गाड़ चुके हैं। अब हम कभी नही रेंगेंगे। आप किसीका मन रखनेके लिए भी इस प्रस्तावको स्वीकार न करे। आपके अध्यक्षको अपने संरक्षणकी जरूरत नही है। संरक्षणका कड़वा घूंट मैं भले ही पी लूं वह नही पी सकेंगे। इसलिए ऐसी-वैसी तमाम बातोका ध्यान छोड़ दीजिए और स्वयं निर्णय लीजिए।

यह रिपोर्ट केवल मंजिलकी दिशामे एक कदम ही है। इसके पीछे जो उद्देश्य है, उसके लिए हमे बहुत काम करना पड़ेगा। कांग्रेसमे भी बहुत-सा बुनियादी काम करना है। अपने रिपोर्ट-रूपी जहाजको महासागरमे छोड़नेके पहले मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा तथा अन्य सभी संस्थाओको अपने-अपने कर्त्तव्य करने पड़ेंगे। हमे सिर्फ यही नही कहना है कि अच्छी बात है हम इस रिपोर्टको स्वीकार किए लेते हैं; सो भी इस डरसे कि कोई निराश न हो जाये अथवा इस आशासे कि कूटनीतिज्ञ लोग कूटनीतिसे काम लेकर धोखा-धडी करके हमारे लिए कोई ठीक चीज ले आयेंगे। धोखा-धड़ी करके चीज ले आनेसे काम नही चलेगा। स्वतन्त्रता चोरी-छिपे कभी नही मिली। वह तो खून बहा कर मिलती है और इस रिपोर्टमे भी जिस चीजको प्राप्त करनेकी बात कही गई है उसके लिए हमे अपना खून बहाना पड़ेगा।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप इस रिपोर्टको पूरे मनसे स्वीकार करे और उद्देश्यकी दिशामे दृढताके साथ काम करनेकी बातका संकल्प करे। मैं आपसे अपने उद्देश्यके प्रति ढीला हो जानेके लिए नही कहता; मैं तो चाहता हूँ कि आप उसे दृढतासे पकड़े रहे। आप चाहे तो मेरे कथनकी गलत व्याख्या कर सकते हैं या

दूसरी तरहकी कोई व्याख्या कर सकते हैं। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि आप इस प्रस्तावपर राष्ट्रीय भावनासे विचार करेंगे। मैं तो कहना चाहता हूँ कि आप इस पर प्रार्थनाकी भावनासे विचार करें।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २७-१२-१९२८

३४०. पंजाबमें एकता

'यंग इंडिया' में लिखी गई मेरी टिप्पणीके[1] सन्दर्भमें अपने तारके बाद डा० सत्यपालने मुझे नीचे दिया गया पत्र[2] भेजा है। मैं उसका स्वागत करता हूँ।

> मैं आपको २८ नवम्बरके पत्रके[3] लिए हृदयसे धन्यवाद देता हूँ (यह पत्र मेरे द्वारा भेजे गये तार और पत्रके जवाबमें लिखा गया था)। मैं आपको 'यंग इंडिया' में उनसे सम्बन्धित बहुमूल्य टिप्पणियाँ लिखनेके लिए भी धन्यवाद देता हूँ।
>
> मैं आपको भरोसा दिलाना चाहता हूँ कि उस तारका एक-एक शब्द मेरे हृदयसे निकला था। वह किसी क्षणिक प्रेरणा अथवा किसी व्यक्तिगत या बाहरी दबावसे प्रेरित नहीं था...। लाला लाजपतरायके देहावसानसे राष्ट्रीय कार्यकर्ताओंके कंधोंपर जबरदस्त जिम्मेदारी आ पड़ी है और वे पारस्परिक वैमनस्यको बरदाश्त नहीं कर सकते...।
>
> यद्यपि मैं एक बात साफ करना चाहता हूँ। आपने इस पत्रमें हमारी ओरसे 'पश्चात्ताप' का जो उल्लेख किया है मैं उसे ठीक नहीं समझता। मैंने तारको कई बार पढ़ा और अभीतक मुझे कोई ऐसा शब्द नहीं मिला जिससे लाला लाजपतरायके जीवनकालमें आवश्यकता दिखाई देनेपर उनका विरोध करनेके लिए कोई पश्चात्ताप प्रकट होता हो।...
>
> मैं लाला लाजपतरायकी स्मृतिको हृदयसे श्रद्धांजलि देता हूँ किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह जो-कुछ कहते थे या जिन बातोंका समर्थन करते थे उन सबको मैं ठीक मानता हूँ।...

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

१. देखिए "सच है तो अच्छा", २९-११-१९२८।
२. अंशत: उद्धृत।
३. देखिए "पत्र: डॉ० सत्यपालको", २८-११-१९२८।

३४१. हत्याका अभिशाप

लाहौरके सहायक पुलिस अधीक्षक श्री साडर्सकी हत्या[1], इस बातको अलग रखकर भी कि उसके मूलमें कोई राजनैतिक हेतु था कि नही, मेरी रायमें एक बुजदिलीका कृत्य हुआ। जब कि देशके वायुमण्डलमें हिंसा भरी हुई है, इसमें कोई शक नही कि लोग इस कृत्यको मन ही मन पसन्द करेंगे। और यदि इस खूनका कुछ सम्बन्ध स्व० लालाजी और उनके बिलकुल निर्दोष साथियोपर हुए हमलेसे पाया गया तब तो यह बात और भी ठीक समझी जायेगी। उस हमलेके कारण लोगोमें भारी उत्तेजना तो पहले ही से थी, पर लालाजीकी मृत्युसे वह दूनी हो गई। पुलिसके उस आक्रमणसे उनके दिलपर गहरा धक्का पहुँचा था और निःसन्देह उसके कारण उनकी मृत्यु इतनी जल्दी हो गई। कुछ लोग तो यहाँतक कहेंगे कि लालाजीकी मृत्यु उनकी छातीपर लगी चोटके ही कारण हुई है, और उनका ऐसा मानना बहुत हदतक ठीक भी हो सकता है। फिर पंजाब सरकारने पुलिसकी उस करतूतकी जो हिमायत की उससे लोग और भी उत्तेजित हो उठे थे। ऐसी दशामे यदि यह साबित हो कि यह खून पंजाब सरकारकी अत्याचारपूर्ण नीतिका बदला लेनेके लिए किया गया है, तो मुझे आश्चर्य न होगा।

पर मै चाहता हूँ कि यदि जोशीली तरुणाईको यह समझाया जा सकता कि ऐसा बदला बिलकुल ही निरर्थक बात है, तो अच्छा होता। सहायक अधीक्षक (असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट) ने जो कुछ किया था वह तो हुक्मकी तामील-भर थी। उस हमलेके लिए अथवा उसके बाद ऐसी और जो कार्रवाइयाँ हो रही है उसके लिए कोई एक आदमी पूरी तरहसे जिम्मेवार नही माना जा सकता। यह दोष तो शासन-पद्धतिका है और इसके लिए व्यक्तियोंको सुधारनेकी नही, बल्कि पद्धतिको सुधारनेकी जरूरत है और जब देशके नवयुवक इस विषयमें पक्का और सच्चा निश्चय कर लेगे तब वे देखेंगे कि इस पद्धतिको मिटा देना जितनी उनके हाथकी बात है उतनी और किसीके हाथकी नही।

अंग्रेजी पुस्तकोने हमें चोरों, डाकुओ, बदमाशों और रेलगाड़ियाँ उलटनेवालोके कृत्योको वीरता समझकर उनकी स्तुति करना सिखा दिया है। अखबारोंके स्तम्भ ऐसी जोशीली वास्तविक घटनाओ अथवा उनके अभावमे ऐसे कार्योंकी कल्पित कथाओसे भरे रहते हैं और कुछ लोग तो किसी भी साहसपूर्ण कार्यको, फिर वह किसी भी हेतुसे क्यों न किया गया हो अथवा उसका नतीजा कुछ भी क्यो न निकलता हो, बड़ी बहादुरीका कार्य समझकर उनकी स्तुति करनेकी विद्यामे बड़े निपुण भी हो गये हैं।

१. यह मामला लाहौर षड्यन्त्र केसके नामसे प्रसिद्ध है। इसमें भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेवको १७-१२-१९२८ को फाँसी दी गई थी।

इसे अशुभ लक्षणके अतिरिक्त और कुछ नही कहा जा सकता। कोई निरपराध धनी पुरुष तीर्थ-यात्राके लिए निकला हो और दान देनेके लिए अपने साथ पर्याप्त धन लेकर चला हो, और यदि उसे कोई जाकर लूट ले और फिर उसका खून कर डाले तो इसको बहादुरी नही कह सकते। इसी तरह छिपकर उस निरपराध पुलिस अफसरका खून करनेमे भी कोई बहादुरी नही है; क्योकि वह अफसर तो अपना फर्ज अदा कर रहा था, भले ही उसका यह काम खून करनेवालेकी जातिके लिए कितना ही बुरा साबित क्यो न हो। हमे यह बात नही भूलनी चाहिए कि पहले भी ऐसे कितने ही खून किये गये है, फिर भी हमारे वर्तमान शासकगण अपनी शासन-पद्धतिको जारी रखनेमे सफल हो ही रहे है। और ब्रिटिश साम्राज्यके निर्माणका इतिहास भी क्या ऐसी शूरवीरता, साहस और इससे अच्छे कामोपर किये गये बलिदानोसे खाली है? यदि हम श्री साडर्सके इस खूनको कोई बहादुरीका काम माने तो अंग्रेज लोग, मेरा खयाल है, इसके जवाबमे एक नही सैकडो ऐसे बहादुरीके कार्य करके दिखा सकते है। पर मेरी रायमे वह समय आ गया है जब हम अपनी-अपनी जातियो या राष्ट्रोके भेदोको छोडकर ऐसे कार्योपर, फिर चाहे वे कितने ही साहसके हो पर जो संकीर्ण मनोवृत्तिसे किये गये हो, अथवा जिनका फल और भी संकीर्ण निकला हो, दुःखित हृदयसे घृणा और नापसंदगी प्रकट करे। हाँ, मै जानता हूँ कि ऐसा करनेके मानी होगे बहादुरी, देशभक्ति, धार्मिकता तथा ऐसे ही दूसरे शब्दोको नये मूल्य देना। मेरा खयाल है कि राष्ट्रपति क्लीवलेड[1] और कारनोटके[2] खूनके लिए कोई आदमी उन खूनियोको भला नही कहता और न उन राष्ट्रोकी बडाई करता है जिनके हितके लिए उन पागल व्यक्तियोने ये बुरे काम किये। इस्लाममे खलीफाओके इतने तमाम खून और यदि ताजी मिसाल ले तो स्वामी श्रद्धानन्दजीका जो खून हुआ है, उसके कारण इस्लामकी कोई बडाई नही करता। और न गोरक्षक कहलानेवाले हिन्दुओके जिन पागल कृत्योका वर्णन हम नित्य अखबारोमे पढते रहते है, उनकी बदौलत हिन्दू धर्मकी उच्चता बढी है। सच तो यह है कि खून तथा इससे मिलते-जुलते दूसरे दुष्कृत्योके कलंकसे मनुष्य-जाति, धर्म और सच्ची सभ्यता किसीकी वृद्धि नही होती।

भारतवर्षके नवयुवकोको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि लालाजीकी मृत्युका बदला भारतको आजादी दिलाकर ही चुकाया जा सकता है। किसी भी राष्ट्रको स्वतन्त्रता एक आदमीके सच्ची वीरताके कार्योसे भी कभी नही मिल सकती, फिर नाम-मात्रकी वीरताकी तो बात ही क्या? स्वतन्त्रता-देवीके मन्दिरके लिए हजारो लाखो नर-नारियो और युवा-वृद्धोके धैर्य और बुद्धिसे युक्त रचनात्मक उद्योगोकी आवश्यकता है। ऐसे कार्य जिनकी कि हम आज निन्दा कर रहे है, शान्त रचनात्मक कार्योकी प्रगतिको निश्चित रूपसे पीछे हटाते है। और कुछ नही तो वह उन

१. १८३७–१९०८ : संयुक्त राज्य अमेरिकाके राष्ट्रपति।
२. १८३७–१८९४ : फ्रांसीसी गणतन्त्रके चौथे राष्ट्रपति।

असंख्य निर्माणकार्यमें लगे रहनेवालोके चित्तमे उद्वेग और विक्षोभ तो अवश्य ही उत्पन्न कर देते है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

३४२. अखिल भारतीय चरखासंघ

सेठ जमनालाल वजाज, श्री राजगोपालाचार्य और वावू राजेन्द्रप्रसादने अ० भा० चरखा संघके संगठनका जो मसविदा तैयार किया था वह संघकी कार्यकारिणी समिति-के सदस्योंके पास भेज दिया गया था और अखवारोमे भी प्रकाशित कर दिया गया था। हाल ही गत १८ और १९ दिसम्बरको वर्धामे हुई समितिकी वैठकमे उसपर विचार किया गया और कुछ परिवर्तनोके बाद वह स्वीकार किया गया।

स्थायी मण्डलके नीचे लिखे ट्रस्टी नियुक्त किये गये है:

(१) महात्मा गांधी, (२) सेठ जमनालाल बजाज, (३) श्रीयुत च० राज-गोपालाचारी (४) श्रीयुत गंगाधरराव देशपाण्डे, (५) श्रीयुत कौडावैकटपप्या, (६) श्रीयुत वल्लभभाई पटेल, (७) श्रीयुत जवाहरलाल नेहरू, (८) श्रीयुत मणिलाल कोठारी, (९) श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त, (१०) वावू राजेन्द्रप्रसाद, (११) श्रीयुत शंकरलाल जी० वैंकर।

१२ वी जगह खाली रखी गई है। अवकाश ग्रहण करनेवाले शेष तीन ट्रस्टियोंका चुनाव, जो कि हर साल होता रहेगा, नियत समयपर हो जायेगा।

संविधानकी प्रतियाँ अहमदाबादमे चरखासंघके केन्द्रीय कार्यालयसे मिल सकती है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

३४३. सिन्धका अभिशाप

सिन्धका आमिल समाज शायद उस प्रान्तका सबसे आगे बढा हुआ समाज है। लेकिन उसकी सारी प्रगतिके वावजूद उसमे कुछ गम्भीर बुराइयाँ है, जिनपर उसका एकमात्र अधिकार मालूम होता है। उनमे 'देती-लेती' प्रथा कुछ कम गम्भीर नही है। मैंने एकाधिक वार इन स्तम्भोमे इस वातका उल्लेख किया है। सिन्धकी मेरी पहली ही यात्रामें मेरा ध्यान इस ओर खीचा गया था और मुझसे कहा गया था कि मैं इस विषयमें आमिलोंसे वात करूँ। इस कुरीतिको दूर करनेकी दिशामें कुछ छिटपुट प्रयत्न तो अवश्य किये गये है किन्तु इस वुराईको नेस्तनावूद करनेका कोई संगठित प्रयत्न किया गया हो, ऐसा नही जान पड़ता। आमिल लोगोका समाज एक छोटा-सा संयुक्त और संगठित समाज है। उनमें से एक भी आदमी इस

बुराईकी गम्भीरताके बारेमे सन्देह नही रखता। मैं ऐसे एक भी आमिलको नही जानता, जो इस पापयुक्त प्रथाका समर्थन करता हो। लेकिन वह आजतक इसलिए चली आई है कि आमिल समाजके सुशिक्षित युवकोने उसे प्रश्रय दिया हैं। उनके जीवनका रहन-सहन इतना ऊँचा है कि वे उसे ईमानदारीसे कमाये हुए पैसेके बल पर कायम नही रख सकते। इसलिए उन्होने अच्छे-बुरेका सारा विवेक छोड दिया है; वे अपने तुच्छ स्वार्थोंके लिए विवाहकी संस्थाका दुरुपयोग करके अपनेको नीचे गिरानेमे जरा भी नही हिचकिचाते। इस एक ही दुर्वृत्तिने उनकी राष्ट्रसेवाकी शक्तिको मार दिया है। अगर यह वृत्ति उनमे रूढ न होती तो वे अपनी बुद्धि और शिक्षाके जरिये देशको बहुत बडा लाभ पहुँचा सकते थे।

इस कुप्रथाको समाप्त करनेके लिए एक आपात समितिका गठन तो किया ही जा चुका है और आचार्य आ० टे० गिडवानीने उसकी अध्यक्षता स्वीकार कर ली है। यह सर्वथा उचित है। वृन्दावनसे सिन्ध जानेके उनके सकल्पसे सहज ही यह आशा बँधती थी कि वे वहाँ ऐसे तमाम आन्दोलनोंमे उत्साहके साथ जुट जायेंगे जो राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे वाछनीय है। आशा की जाती है कि यह आपात समिति जल्दी ही एक स्थायी संगठनका रूप ले लेगी और उनके कुशल नेतृत्वमे सुधार दृढताके साथ प्रगति करेगा; देर तो काफी हो ही चुकी है।

समितिके मन्त्री श्री मीरचन्दानी मुझसे कुछ सुझाव चाहते हैं। तत्काल तो मुझे यही सूझता है कि संगठन देती-लेतीके विरोधमे ऐसे जनमतका निर्माण करे जो अनिवारणीय बन जाये। शिक्षित आमिल युवक विवाहके योग्य लडकियोंके गरीब माता-पिताको इसीलिए दवा सकते हैं कि सिन्धमें इस क्रूर प्रथाके खिलाफ कोई जनमत नही खडा हो पाया है। स्कूलों, कालेजो और लड़कियोके माता-पिताके बीच इस दिशामे काम होना चाहिए। माता-पिता अपनी पुत्रियोको ऐसी शिक्षा दे कि वे विवाहकी कीमत माँगनेवाले युवकोके साथ विवाह करनेसे साफ इनकार कर दे, और युवकोकी अपमानजनक शर्तें स्वीकार करनेमे भागीदार बननेके बजाय कुँवारी ही रहना पसन्द करें। विवाहकी सम्मानपूर्ण शर्ते केवल दो ही हो सकती हैं: परस्पर प्रेम और परस्पर स्वीकृति।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

३४४. बम्बईके लिए दूध

एक मित्रने 'बम्बईका कलंक' शीर्षक लेख (२९ नवम्बरके) 'यंग इंडिया' में पढनेके बाद महादेवभाईको यह पत्र लिखा है:[१]

मुझे भय है कि इस पत्रके लेखकने उक्त लेखको ठीक-ठीक नही समझा है। यह किसीने नहीं कहा कि बम्बईमें पशु-वधका प्रश्न अथवा शहरको साफ दूध देनेका प्रश्न पशुशालाओको बम्बई शहरसे हटा कर बम्बईके उपनगरोमें ले जानेसे हल हो जायेगा। जरूरत इस बातकी है और कहा भी यही गया है कि बम्बईके लोगोको इस समस्याका सामना वीरतासे करना चाहिए और उनके लिए ऐसा करना ही उचित है। निश्चय ही जो गुजराती बम्बईमे नही रहते, वे उन दानियोमें नही है जिनसे बम्बईकी सहायताकी और उसकी एक विशाल और उतनी ही आवश्यक समस्याको हल करनेकी आशा की जा सकती है। बम्बई नगरपालिकाको इस मामलेमे पहल और कार्रवाई करनी चाहिए और जरूरत हो तो जिन गुजरातियोकी प्रवृति ऐसे उपकारके कामोमे हो, उनकी सहानुभूति और उनका सहयोग प्राप्त करना चाहिए। यदि कोई बम्बईसे बाहरका व्यक्ति इस मामलेमे भाग लेना चाहे तो मुझे भय है कि उसको भी बम्बई निगमसे विशेष सुविधाएँ लेनेकी जरूरत होगी। किन्तु इस देशमें व्यक्तिगत बड़े-बड़े उद्योगोको प्रारम्भ करनेका सामर्थ्य नही है। यहाँ बड़े उद्योगमे आनेवाले भारी जोखिमोको उठानेवाले लोग नही है और बम्बई जैसे बड़े शहरको दूध पहुँचानेका काम निस्सन्देह एक बडा काम है। यह बात भी मालूम होनी चाहिए कि ऐसा व्यक्तिगत प्रयत्न बम्बईमे पहले किया जा चुका है और असफल हो चुका है। मेरा ख्याल है कि इस असफलताके निश्चित कारण है। उस साहसिक प्रयत्नके पीछे पर्याप्त लगन और योग्यता नही थी। किन्तु मेरा कहना यह है कि बम्बई नगरपालिका अपने नागरिकोको सस्ता और शुद्ध दूध देनेके लिए और बम्बईको पशुशालाओसे मुक्त करनेके लिए जितना खर्च करे और जितना जोखिम ले, उतना कम है। शहरके लोगोंके स्वास्थ्यके लिए बम्बईकी ये पशुशालाएँ एक निरन्तर खतरेकी चीज है और बम्बईमे मलेरिया और दूसरी फैली हुई बीमारियोको जड़से मिटानेके उपायोंमे सदा बाधक होगी। मै बिना किसी झिझकके स्वीकार करता हूँ कि एक बड़ी दुग्ध योजना चलानेके लिए बम्बईको अपने क्षेत्रसे बाहर जाना होगा। किन्तु संसारके हरेक शहरने अपनी कई जरूरतोको पूरा करनेके लिए ऐसा किया है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २७-१२-१९२८

१. यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

३४५. तार: मजदूर-संघ, अहमदाबादको

२७ दिसम्बर, १९२८

लेबर
अहमदाबाद

पत्र मिला। ११ जनवरीसे पहले निश्चय ही अहमदाबाद पहुँच रहा हूँ।[1]

बापू

अंग्रेजी (एस० एन० २४५६)से।

३४६. पत्र: एच० डब्ल्यू० बी० मोरेनोको

८, प्रिटोरिया स्ट्रीट
कलकत्ता
२७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका कृपा पत्र मिला। कलकत्तामें एक स्थानकी दूरी दूसरे स्थानसे इतनी अधिक है कि मैं चाहे कितनी भी इच्छा क्यों न करूँ, मेरा आपके घर आना सम्भव नहीं होगा। यदि आप ऊपर दिये गये पतेपर आनेका समय निकाल सकें तो २८ तारीखको ८ बजे रातको आनेकी कृपा करें।

हृदयसे आपका,

एच० डब्ल्यू० बी० मोरेनो
अध्यक्ष
ऐंग्लो-इंडियन लीग
२, वैलेजली स्क्वेयर
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३०२४)की फोटो-नकलसे।

१. गुजरात जिनिंग मिलके मालिकों और मजदूरोंके झगड़ेमें चुने गये पंचोंमें से गांधीजी एक थे।

३४७. पत्र : कनिकाके राजाको

८ प्रिटोरिया स्ट्रीट
कलकत्ता
२७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मै चाहता तो बहुत हूँ कि आपको कोई समय दे सकता, किन्तु समयकी मेरे पास बडी तंगी है। कह नही सकता कि काग्रेसकी बैठकसे पहले आपको समय दे पाऊँगा या नही। इसलिए प्रार्थना करूँगा कि आप जो-कुछ कहना चाहते हो सो संक्षेपमें लिख कर भेज दें।

हृदयसे आपका,

कनिकाके राजा

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२२)की माइक्रोफिल्मसे।

३४८. पत्र : हॉवर्ड हेनलीहर्स्टको

स्थायी पता
सत्याग्रहाश्रम, साबरमती
२७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपको यहाँ आनेकी सलाह देनेकी जिम्मेदारी मैं नही लूँगा। यद्यपि भारतवर्षमे आपके आन्दोलनके नामका[1] कोई आन्दोलन नही है तथापि भाईचारेकी भावना यहाँ है और वह चुपचाप अपना काम भी करती रहती है। मेरा ख्याल है कि जो वातावरण आपके लिए स्वाभाविक है, आपकी योग्यता उसीमे अधिक उपयुक्त ढंगसे और आसानीके साथ काममे आ सकती है।

हृदयसे आपका,

हॉवर्ड हेनलीहर्स्ट महोदय
चैस्टरली स्ट्रीट, इंग्लैंड

अंग्रेजी (एस० एन० १५१०१)की फोटो-नकलसे।

१. ब्रदरहुड ऑफ द वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ यूथ।

३४९. एक पत्र

स्थायी पता
सत्याग्रहाश्रम
साबरमती
२७ दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र क्रिसमस सप्ताहमे मिला है; इसलिए मै आपको अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।

मै आपके प्रश्नोका स्वागत करता हूँ। जबतक हम किसी व्यवस्थाको परोक्ष रूपसे सहारा देते रहेगे और अपना समर्थन उससे प्राप्त करते रहेगे, तबतक हमे उसका प्रत्यक्ष रूपसे भी समर्थन करना होगा। यह स्थिति तबतक रहेगी जबतक कि हमे ऐसा न लगने लगे कि व्यवस्था बुरी है और अब उसे खत्म करनेका एक योग्य अवसर आ गया है। योग्य अवसरका निश्चय प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी प्रतीतिकी शक्ति और तदनुरूप आत्मविश्वासके आधारपर ही कर सकता है। जब मैने बोअर युद्ध और पिछले युद्धमे भाग लिया, तब न तो मैने उसे योग्य अवसर समझा था और न तब मुझमें आत्मविश्वास ही था। ईश्वर अर्थात् सत्यके अन्वेषीको न योग्य अवसरकी प्रतीक्षा रहती है, न आत्मविश्वासकी चिन्ता। जब समय आता है तो ईश्वर उसे रास्ता दिखाता है। मनुष्य जो-कुछ कर सकता है और जिसकी उससे अपेक्षा की जाती है, वह तो यही है कि वह अपनेको पवित्र रखे और सत्यमे ही स्थिर रहकर शून्य हो जानेतक विनम्र बन पाये। ठीक समय आनेपर उसे प्रकाश निश्चय ही मिलेगा। इस प्रकारका अन्वेषी जब अपनेको उक्त प्रकारसे किसी व्यवस्थामे बद्ध पाता है और एकाएक अपनेको उससे पूर्णतया मुक्त करनेमें समर्थ नही होता, तो स्वयं उसमे भाग लेना वह उत्तरोत्तर कम करता चला जाता है।

मेरा ख्याल है कि इसमे दूसरे प्रश्नका यदि पूर्ण नही तो आंशिक उत्तर आ गया है। उसमे केवल इतना और जोडा जा सकता है कि मूक प्रार्थना प्राय: सोच-विचार कर बोले गये शब्दोंसे अधिक प्रभावशाली होती है। इसलिए वाल स्ट्रीटकी तरहकी प्रतिकूल परिस्थितियोमें खूब कडाईसे अडिग रहते हुए एकमात्र भरोसा मूक प्रार्थनापर ही रखना चाहिए।

यूरोपकी यात्राके बारेमे मै पक्का कुछ नही कह सकता। परन्तु यदि मै अगले वर्ष यूरोप गया और यदि अन्त:करणने अमेरिका जानेका आह्वान दिया और समय हुआ तो मै अवश्य जाऊँगा। वैसे तो मै यहाँ भी अन्त:करणसे प्रकाश और पथ-प्रदर्शन पानेका अपना वही अनुभूत प्रयोग काममे ला रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५१२७)की फोटो-नकलसे ।

३५०. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको[1]

कलकत्ता
२७ दिसम्बर, १९२८

क्रिसमस सप्ताहमे मेरी बडी इच्छा थी कि तुम्हे एक प्रेमपत्र भेजूँ; पर इस सारी हलचलके बीच उसके लिए समय ही नही मिला। टकर[2] बराबर मेरे साथ है। क्रिसमसके दिन वे सवेरेकी प्रार्थनामे भाग लेने और कुछ उपयुक्त भजन प्रस्तुत करना चाहते थे, पर यह हो नही सका; ऐन मौकेपर उनके मित्रोने उनका साथ नही दिया।

इस पत्रको लिखवानेका उद्देश्य केवल लालाजीकी पुस्तकको लेकर है। बहुत ही सावधानीसे सोच-विचारके बाद मै इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि अभी 'अनहैपी इंडिया'का एक सक्षिप्त संस्करण प्रकाशित करना कोई आवश्यक नही है। ब्रिटेनमे इस पुस्तककी एक हजार प्रतियाँ वितरित करनेकी लालाजीकी इच्छाका सम्मान हमे किसीको भी इसकी प्रतियाँ मुफ्त भेट करके नही, बल्कि वहाँ उनका स्टाक रखके करना चाहिए, ताकि जो चाहे वे उन्हे खरीद सके। यहाँ जो तीसरा सस्करण निकला है, उसकी छपाई वगैरा अच्छी है और जिल्द आकर्षक है। इसके दाम और भी कम किये जा सकते है। पर यह भारतीय संस्करण है; वहाँ इसीका वितरण किया जाना चाहिए।

कुमारी मेयोके मिथ्या आरोपोके उत्तरोको, फिर वे कितने ही जोरदार और सच क्यो न हो, मै कोई अधिक महत्त्व नही देता। किसी भारतीय द्वारा दिये गये उत्तरको तो पश्चिममे निश्चय ही कोई खास महत्त्व नही दिया जायेगा। फिर पश्चिमके लिए बहुत ही सक्षिप्त और आकर्षक एक ऐसी पुस्तक तैयार की जानी चाहिए जिसमे लालाजीकी जीवनी और उनकी सभी रचनाओके चुने हुए अंश हो। इस तरहकी पुस्तक इस तथ्यको स्पष्ट करेगी कि भारतके अत्यन्त अग्रगामी राष्ट्रवादी व्यक्ति भी पश्चिम या इग्लैंडसे घृणा नही करते रहे है; वे किसी अन्य रूपमें भी सकीर्ण नही रहे हैं; इतना ही नही वे राष्ट्रवादके वेशमे अन्तर्राष्ट्रवादी ही रहे है। लालाजी, तिलक, दास ऐसे ही व्यक्ति थे। बहुत-से अन्य नाम भी है पर उनके उल्लेखकी आवश्यकता नही है। यदि इस तथ्यको सामने रखा जा सके कि इस दुष्ट सरकारने जिन व्यक्तियोको उत्पीड़ित किया है और एक तरहसे मौतके घाटतक पहुँचा दिया है, उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए था, तो इससे मानवताके ध्येयकी सेवा हो सकती है।

१. सी० एफ० एन्ड्रयूजने २८-११-१९२८ के अपने पत्रमें लाला लाजपतरायकी पुस्तक **अनहैपी इंडिया**के अंग्रेजी संस्करणके सम्बन्धमें पूछा था, और कु० मेयोकी पुस्तक **मदर इंडिया**से पश्चिममें उत्पन्न हुई मिथ्या धारणापर चिन्ता प्रकट की थी।

२. बॉयड विलियम टकर।

शायद इतना सब कहकर भी मैं जो-कुछ कहना चाहता हूँ वह पूरी तरह स्पष्ट नही हुआ। पर मुझे इसमे सन्देह नही है कि तुम उसे समझ गये हो।

बा, महादेव, सुब्बैया, प्यारेलाल, कृष्णदास, छगनलाल, जमनादास, केशु, जमनालाल और राजगोपालाचारी तथा कई अन्य लोग, जिनसे आपका घनिष्ठ परिचय है, मेरे साथ हैं।

श्री सी० एफ० एन्ड्रचूज
११२, गोवर स्ट्रीट
लन्दन डब्ल्यू० सी० १

अंग्रेजी (एस० एन० १५१२८)की फोटो-नकलसे।

३५१. पत्र : प्रभावतीको

शुक्रवार [२८ दिसम्बर, १९२८ या उसके पूर्व][1]

चि० प्रभावती,

तुमारे खत ठीक आते रहते है। मुबईसे तो बहोत मित्र लोग आते जाते रहते है। उनके साथ तुमको भेज देगे। मृत्युजयको मै लीखुगा।

मेरा तेल खानेका प्रयोग मै सावधानीसे कर रहा हु। कुछ भी नुकशान पहोचेगा तो छोड दुगा।

आज बा कुछ बिमार हो गई है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ३३१७ की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "पत्र: छगनलाल जोशीको", १०-१२-१९२८ तथा "पत्र: कुसुम देसाईको", ३०-१२-१९२८। इनमें से पहले पत्रमें गांधीजी द्वारा तेलके प्रयोग तथा दूसरेमें प्रभावतीके आश्रमसे अनुपस्थित रहनेका उल्लेख है।

३५२. भाषण: नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर,[1] कलकत्ता कांग्रेसमें – २

२८ दिसम्बर, १९२८

पण्डित मोतीलालने जब महात्मा गांधीसे नया प्रस्ताव पेश करनेको कहा तो एक सदस्यने मूल प्रस्ताव[2] और संशोधनोंको वापस लेनेसे पहले इसपर आपत्ति की।

आपत्ति उठाये जानेपर अध्यक्षने व्यवस्था दी कि महात्माजी सभासे अपने प्रस्तावके बदलेमें दूसरा प्रस्ताव रखनेकी अनुमति ले सकते हैं। अन्य सभी संशोधन इस नये प्रस्तावके संशोधन माने जायेंगे।

तब महात्मा गांधीने अपने मूल प्रस्तावको वापस लेनेकी माँग करते हुए एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया, जिसमें यह बताया गया था कि इस बीच परोक्षमें क्या-कुछ हुआ है। उन्होंने कहा:

इससे पहले कि मै इस प्रस्तावको, जो आप लोगोमे वितरित किया जा चुका है, पेश करूँ, मै सभासे उस प्रस्तावको वापस लेनेकी अनुमति चाहता हूँ, जिसे पेश करनेका मुझे उस दिन सौभाग्य प्राप्त हुआ था और जिसपर इतने सारे संशोधन भी पेश हो चुके है। मै यह जानता हूँ कि अपने प्रस्तावको वापस लेनेकी अनुमति माँगते हुए मुझे सभासे क्षमा माँगनी चाहिए। आप लोगोको काफी असुविधा और कष्ट हुआ है और संशोधनोपर विचार करनेमे बहुत-सा समय लगा है। मै तो कहनेवाला था कि बहुत-सा समय नष्ट हुआ है। पर इसे समयका नाश कहना उचित नही होगा, क्योकि इन सुझावोपर विचार करनेसे आप बहुत-से राष्ट्रीय कार्य-कर्त्ताओकी मनोदशाको इतनी अच्छी तरह समझ सके है जितनी कि पहले कभी नही समझ सके थे। जिस प्रस्तावपर मैने इतना जोर दिया था और जिसे मै बहुत ही महत्वपूर्ण समझता हूँ, उसे वापस लेनेके लिए आपकी अनुमति माँगना पूर्णतया उचित ही है। परन्तु हमारा यह विकासमान राष्ट्रीय जीवन एक निरन्तर सघर्ष है। यह संघर्ष न केवल उस वातावरणके विरुद्ध है जो हमें कुचलना चाहता है, बल्कि हमारे अपने ही दलोंके बीच भी है। हमारी अपनी पाँतोके बीच चलनेवाला संघर्ष प्राय: अपनेसे बाहरके वातावरणके विरुद्ध चलनेवाले संघर्षसे अधिक लम्बा, अधिक कठोर और अधिक कटु तक होता है। आप विश्वास करे कि इस वापस लिये जानेवाले प्रस्तावके हम समर्थकोने और पण्डित जवाहरलाल द्वारा पेश मुख्य संशोधनके समर्थकोने मिलकर विचार-विमर्श किया है, टकरावको टालनेकी कोशिश की है।

१. विषय समितिकी बैठकमें; इसे २९-१२-१९२८ के फारवर्डमें प्रकाशित विवरणसे मिला लिया गया है।

२. देखिए "भाषण : नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें-१", २६-१२-१९२८।

श्री सत्यमूर्तिको इस बातपर आश्चर्य है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू आज यहाँ क्यो नही है। उनका यह आश्चर्य ठीक ही है। मै आपको असल बात बता देना चाहता हूँ। जैसा कि उन्होने शुरूमे ही कहा था वे, जो-कुछ हमारे बीच हो रहा है, उससे बिलकुल सहमत नही है। वे इस जुएको उतार फेंकनेको बेचैन है। अपने जीवनमे चौबीसो घटे वे अपने देशवासियोके कष्टोकी ही चिन्ता करते रहते है। जनताको पीस डालनेवाली इस दरिद्रताको मिटानेके लिए वे उतावले हो रहे है। जिस तरह इस देशपर शासन करनेवाले और लॉर्ड सेलिसबरीके शब्दोमे इस देशका शोषण करनेवाले और खून चूसनेवाले बाहरी पूँजीपतियोके विरुद्ध है, उसी तरह वे जन-साधारणका शोषण करनेवाले इस देशके पूँजीपतियोके भी विरुद्ध है। मै आपको यह बात साफ-साफ बता देना चाहता हूँ कि आपकी अनुमति मिलनेपर उस प्रस्तावको वापस लेकर मै जो नया प्रस्ताव रखना चाहता हूँ, वे उससे भी सहमत नही है। उनका ख्याल है कि जो-कुछ वे चाहते है, यह प्रस्ताव उससे बहुत कम है। परन्तु उदाराशय होनेके कारण वे अनावश्यक कटुता पैदा करना नही चाहते। वैसे यदि आवश्यक हो तो वे कटुता और उससे भी अधिक किसी परिस्थितिका सामना करनेको तैयार है। इस स्थितिमे से निकलनेका उन्हे एक ही मार्ग दिखाई देता है कि वे मौन रहे और सभामे उपस्थित न हो। इसीलिए आप देखते है कि यद्यपि वे काग्रेसके मन्त्री, एक निष्ठावान और कर्मठ मन्त्री है, फिर भी उन्होने उस सारी कार्यवाहीका, जिससे वे सहमत नही है, एक असहाय दर्शक बननेकी अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा समझा कि वे आज सवेरेकी इस बैठकमे उपस्थित ही न हो। मुझे इसका दु ख है, क्योकि जहाँ मै अपने देशकी दरिद्रता और गुलामीपर, जो हमे पीसे डाल रही है, उनके इस सारे दु खमे, इस गहरी व्यथामे, उनके साथ हूँ, वहाँ इस प्रस्तावपर उनके असन्तोषमे उनके साथ नही हूँ। मै उनके इस विश्वाससे सहमत नही हूँ कि जो-कुछ हम इस समय कर रहे है, वह देशकी आजकी जरूरतोके लिए काफी नही है। पर वे असन्तोष अनुभव किये बिना कैसे रह सकते है? अपने मार्गपर बढते हुए यदि उन्होने अपने लिए कोई बिलकुल अनोखी और मौलिक राह नही निकाली तो वे जवाहरलाल ही क्या हुए। उन्हे किसीकी चिन्ता नही है, अपने पिता, अपनी पत्नी, अपनी बच्ची तककी चिन्ता नही है। उन्हे अपने देश और उसके प्रति अपने कर्त्तव्यकी चिन्ताको छोड़कर और किसी चीजकी चिन्ता नही है।

अब आप यह समझ सकेंगे कि वे क्यो अनुपस्थित है, शायद आप यह भी समझ सकेंगे कि जो प्रस्ताव मैने पेश किया था उसे वापस लेनेका दु.खदायी कर्त्तव्य मुझे क्यो करना पड़ रहा है। मै उसे इसलिए वापस नही ले रहा हूँ कि मुझे उस प्रस्तावको पेश करनेका खेद है, या मुझे वह प्रस्ताव प्रिय नही है, या जो प्रस्ताव मै अब पेश करने जा रहा हूँ वह उससे किसी भी रूपमे अच्छा है। मेरी तो यह धारणा है कि इस प्रस्तावसे जो अब मेरे हाथमे है, वह कही अच्छा था। परन्तु, जैसा कि मै कह चुका हूँ, हमारा जीवन उत्पीड़नकारी वातावरणके विरुद्ध एक निरन्तर सघर्ष है और हमारी अपनी पाँतोंके बीच एक निरन्तर सघर्ष चल रहा है। यदि हम

एकता चाहते है तो हमे विभिन्न मतोमे सामंजस्य और तालमेल बैठाना होगा और कई ऐसे समझौते करने होगे जो दोनो पक्षोके लिए सम्मानजनक हो। हम हर मौके पर किसी पवित्र सिद्धान्तके महत्त्वकी बात ले बैठते है और मानते है कि उसका एक कण भी छोडा नही जा सकता। बहुत-सी चीजे जिन्हे हम सिद्धान्तका नाम दे देते है दरअसल सिर्फ तफसीले होती है और सिद्धान्त नही कही जा सकती। इसलिए यह प्रस्ताव इस सभाके सभी पक्षो, या उस प्रस्ताव और उसके मुख्य सशोधनोके समर्थक पक्षोकी कोशिशोंका फल है। यह उनके आपसी समझौतेका, उनकी पारस्परिक सहमति और परस्पर तालमेलका प्रस्ताव है। इसीलिए उस प्रस्तावको वापस लेनेकी अनुमति माँगते हुए मुझे ऐसा महसूस नही होता कि मै कोई अनुचित काम कर रहा हूँ, यद्यपि मै उसे इस प्रस्तावसे, जो मै अभी आपके सामने पेश करनेवाला हूँ, कही अच्छा मानता हूँ। क्योकि मै यह जानता हूँ कि इस प्रस्तावसे जो मुझे पहलेके प्रस्तावसे बहुत घटिया लगता है, हमारा राष्ट्रीय हित ज्यादा अच्छी तरह सिद्ध होगा, क्योकि यह सभी पक्षोको एक सूत्रमे रखेगा। जिस तरह मै या पण्डित मोतीलाल इस सभामे मतभेद पैदा करना नही चाहते, उसी तरह वे लोग भी ऐसा नही चाहते। यदि हम दोनो यह सोचकर कि जीत हमारी होगी, मतभेद पैदा करना चाहते, तो उस जीतसे जो कटुताको बढाती और जो हमारी राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्रीय शक्तियोको और कमजोर करती, क्या लाभ होता?

मेरे उस मूल प्रस्तावके पीछे तीन-चार व्यक्ति नही, बल्कि दो पक्ष थे और पण्डित जवाहरलालका मुख्य संशोधन तक एक समझौता था। वह भी जो-कुछ उन्हे प्रिय था, उससे बहुत कम था। पर उन्होने कहा, "यदि मै देशके सभी विभिन्न तत्त्वोको एक सूत्रमे रख सकूँ तो मै अपना विरोध छोड़ दूँगा और इस प्रस्तावको पेश करूँगा।" इस तरह आप यह देख सकते हैं कि इस प्रस्तावकी तरह वह प्रस्ताव भी एक समझौता था। इसलिए इतनेपर भी यदि आप यह सोचते है कि आप उत्तरदायित्व लेनेको तैयार है और देशका हित मुझे उस प्रस्तावको वापस लेनेकी अनुमति न देनेसे ज्यादा अच्छी तरह सिद्ध होगा, तो निश्चय ही आप उत्तरदायित्व ले सकते है। पर आप उसका क्या अर्थ है, यह याद रखे। अब मै यह मामला आपके हाथोमे छोड़ता हूँ।[1] (तालियाँ)

हमारे बीच आज कुछ लोग ऐसे है जो कही भी रुकनेको तैयार नही है, जिन्हे अपनी उतावलीमें सीधे सर्वनाशकी तरफ दौडनेमे भी झिझक नही है। ऐसे में हम क्या करे? मेरे जैसा आदमी जिसका अन्त निकट है, ऐसेमे क्या करे? देशके उन वीरोसे, जिन्हे उसकी आजादी अगर ज्यादा नही तो उतनी ही प्यारी जरूर है जितनी मुझे है, मै क्या कहूँ? इस बारेमे मै उनसे क्या कहूँ? क्या मै उनसे यह कहूँ कि मैं अब तुम्हारे साथ नही चलूँगा, क्योकि मेरी समझमे मेरा सिद्धान्त ज्यादा अच्छा है, मेरा तरीका ज्यादा अच्छा है, इसलिए तुम अपना भविष्य अपने

१. यहाँ एक सदस्यने यह आपत्ति उठाई कि उस प्रस्तावको वापस लेते हुए महात्मा गांधीको भाषणकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

आप निश्चय करो, मेरी सेवाओकी आशा रखे बिना निश्चय करो? आप यकीन करे कि यह रुख अपनाते हुए मुझे काफी दु.ख हुआ है। मै उनकी उपेक्षा कर सकता था, जैसा कि यदि वे चाहते तो मेरी उपेक्षा कर सकते थे। पर वे कहते है हम यह नही करेगे, क्योकि यदि सम्भव हो तो हम आपकी सेवाएँ भी चाहते है, पर बिलकुल आपकी शर्तोपर नही। हम चाहते है कि आप भी ऐसा ही करे। हम चाहते है कि आप भी हमसे थोडा समझौता करे। मै शायद अपनेको हास्यास्पद बनाये बिना और नीचे गिराये बिना इस बातका विरोध नही कर सकता था। यद्यपि मै ऐसा महसूस करता हूँ कि वह प्रस्ताव ज्यादा अच्छा था, फिर भी अब अपनी पूरी शक्तिसे इसे पेश कर रहा हूँ, और इसपर उतना ही जोर दे रहा हूँ जितना कि मैंने मूल प्रस्तावपर दिया था। इस तरह यह प्रस्ताव, परिस्थितियोको देखते हुए, इस समयके लिए सचमुच उस प्रस्तावसे अच्छा हो जाता है जो कि मैंने पहले पेश किया था। इसलिए मै आपसे उस प्रस्तावको वापस लेने और इस प्रस्ताव-को आपके सम्मुख विचारार्थ रखनेकी अनुमति चाहता हूँ।

जो-कुछ मैंने आपसे कहा है, आपके सामने परोक्षमे घटी जो बाते रखी है, किस चीजने मुझे अपना प्रस्ताव वापस लेनेके लिए प्रेरित किया यह जो आपको मैंने बताया है, यदि इस सबके बाद भी आप यह नही चाहते कि मेरा मूल प्रस्ताव वापस लिया जाये, और यदि आप उस गम्भीर उत्तरदायित्वको अपने कधोपर लेनेको तैयार है, तो आप ऐसा कह सकते है कि वह प्रस्ताव वापस नही लिया जायेगा। तब आपकी इस रायका मतलब उस प्रस्तावके पक्षमे राय देना होगा। पर वह गम्भीर उत्तरदायित्व लेनेसे मै आपको बरजना चाहता हूँ।[1]

अध्यक्षने सभासे कहा कि महात्माजीको अपना पहला प्रस्ताव वापस लेने और वर्तमान स्वीकृत प्रस्ताव पेश करनेकी अनुमति दी जाये या नहीं, वह इस सम्बन्धमें अपनी इच्छा प्रकट करें। पूरी सभाने हाथ उठाकर इसकी अनुमति दे दी। वहाँ केवल चार विरोधी थे।

महात्माजीने तब एक लम्बे भाषणके साथ अपना यह प्रस्ताव पेश किया:

> इस सभाने उस सविधानपर विचार किया है जिसकी सिफारिश सर्व-दलीय समितिकी रिपोर्टमे की गई है, और यह उसे भारतकी राजनीतिक और साम्प्रदायिक समस्याओके समाधानकी दिशामे एक बड़ा योगदान मानते हुए उसका स्वागत करती है तथा समितिको इस बातपर बधाई देती है कि उसकी सिफारिशे वस्तुत. सर्वसम्मत है। मद्रास काग्रेसमे स्वीकृत पूर्ण स्वाधीनता सम्बन्धी प्रस्तावपर दृढ रहते हुए यह सभा इस समिति द्वारा तैयार किये गये सविधानको मजूर करती है और उसे राजनीतिक प्रगतिकी दिशामे एक बड़ा कदम मानती है, विशेष रूपसे इसलिए कि वह देशके महत्त्वपूर्ण दलोमे उपलब्ध अधिकतम सहमतिका प्रतिनिधित्व करता है।

१. पण्डित मदनमोहन मालवीयने तब गांधीजीके पहले प्रस्तावके वापस लिये जानेका विरोध किया।

यदि राजनीतिक परिस्थितिकी अनिवार्यता ही बाधक न हुई, और यदि ब्रिटिश पार्लियामेंटने इसे पूर्ण रूपमे ३१ दिसम्बर १९२९ तक या उससे पहले स्वीकार कर लिया, तो यह सभा इस सविधानको अंगीकार कर लेगी। परन्तु यदि यह उस तारीखतक स्वीकार नही किया गया या उससे पहले अस्वीकार कर दिया गया तो कांग्रेस देशको कर न देनेकी सलाह देकर तथा अन्य निश्चित किये गये उपाय अपनाकर एक अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन संगठित करेगी।

जो-कुछ ऊपर कहा गया है उसके अनुरूप, यह प्रस्ताव कांग्रेसके नाम पर चलनेवाले पूर्ण स्वाधीनताके प्रचारमे किसी भी तरह बाधक नही होगा।

मूल प्रस्तावके स्थानपर नया प्रस्ताव पेश करते हुए महात्मा गांधीने कहा:

मित्रो, मेरा इरादा आपके सामने कोई लम्बा भाषण देनेका नही है, पर मै यह अवश्य स्वीकार करूँगा कि मै अपने विचारोको एक सूत्रमे पिरो नही पाया हूँ, मेरा दिमाग अस्तव्यस्त है, और मुझे आपके सामने बोलते समय ही अपने विचारोको तरतीब देनी है। वास्तवमे यह एक तथ्य है कि मेरा दिमाग अस्तव्यस्त है। एक चिकित्सक आपको बता सकता है कि यदि किसी आदमीको सारी रात जागना पड़े तो उसका हाल क्या होगा। मेरे साथ ऐसा ही हुआ, पासके एक छोटेसे तम्बूमे जहाँ सम्मेलनकी कमेटीकी बैठक हो रही थी, मुझे बैठककी गम्भीर कार्यवाहियोको खूब ध्यानसे समझना पडा। मै उस बैठकमे बुलाया नही गया था, बल्कि हमारे अध्यक्ष मुझे वहाँ घसीट कर ले गये थे। मेरा खयाल था कि मुझे उस कमेटीकी बैठकमे शामिल नही होना पड़ेगा। पर अनिवार्य आदेश मिला, मुझे एक गाडीमे बैठना पड़ा, और वह मुझे वहाँ ले गई। सुबहके ढाई बज चुके थे तब मुझे वहाँसे छुट्टी मिली। उसके बाद सोना मेरे लिए सम्भव न था।

इस तरह अब आप यह समझ सकते है कि जो मै यह कहता हूँ कि मेरा दिमाग अस्तव्यस्त है, उससे मेरा मतलब क्या है।

यह प्रस्ताव, जिसे पेश करनेका मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, आप सुन चुके है। मै चाहूँगा कि सबसे पहले आप उस चीजपर ध्यान दें जो मूल प्रस्तावमे थी और इसमे छोड दी गई है। ऐसा करना कोई इसलिए जरूरी नही है कि मै आपके आगे इस प्रस्तावकी प्रशंसा करना चाहता हूँ। मै यह जानता हूँ कि यह प्रस्ताव इस सभाके दो दलों, दो बडे दलो द्वारा स्वीकार कर लिया गया है, इसलिए इसे किसी प्रशसाकी आवश्यकता नही है। यदि मै इस प्रस्तावको आपके आगे केवल रख ही दूँ तो भी मुझे विश्वास है कि आप इसका पूरी तरह समर्थन करेंगे। थोडे-से लोग ऐसे हो सकते है जो इसके खिलाफ वोट दे, पर मेरा उद्देश्य इस प्रस्तावको केवल पास करवाना नही है। इस बातका महत्त्व सबसे कम है। मेरा उद्देश्य आपका ध्यान इस बातकी ओर खीचना है कि आपसे क्या अपेक्षा की जाती है, आप मूल प्रस्तावकी जगह इस प्रस्तावको क्यो पास कर रहे है; और जो दल पहले प्रस्तावको खत्म करानेमे कारण रहा है, उससे क्या अपेक्षा की जाती है। आप

देखेंगे कि इसमे एक बहुत बडी बात छोड दी गई है, जिसके लिए मुझे खेद है। वह है वाइसरायके पास प्रस्ताव भेजनेकी बात। उस धाराको तैयार करते समय भी मै यह जानता था कि जब यह आपके आगे पढी जायेगी तो आपमे से कुछ को इससे धक्का लगेगा और वे अपने मनमे कहेगे: "अरे असहयोगी, तू भी ऐसा कर रहा है।" यह बात अपने मनमे मैंने भी कही थी। पर वह धारा एक असहयोगीने, असहयोगके प्रणेताने ही, रखी थी। और यदि अब भी मै आपको यह समझा सकूं कि वह धारा कितनी महत्त्वपूर्ण है, और यदि आप मुझसे उसे फिर रखनेके लिए कहे तो मै खुशीसे उसे फिर रखूं। मेरे पास समय नही है। आप नही जानते कि हममे से कुछके पास समयकी कितनी कमी है। मूल प्रस्तावमे वह धारा क्यो रखी गई थी, इसपर विचार-विमर्श करनेके लिए भी मेरे पास समय नही था। उस धाराको तैयार करते समय मैंने यह सोचा था कि यदि मुझे पता चला कि आप लोग उससे सहमत नही हैं तो मै उसे खुशीसे छोड दूंगा। पर मै अपनी स्थिति सभाके आगे स्पष्ट कर देना चाहता हूँ, इसलिए नही कि असहयोगीके रूपमे मेरी प्रतिष्ठाको कोई खतरा है — वह प्रतिष्ठा अपनी फिक्र आप कर सकती है क्योकि उसके पीछे अभी कामकी शक्ति पडी है, बल्कि इसलिए कि मै चाहता हूँ कि सभा असहयोगके गूढार्थको और इस प्रस्तावके भी गूढार्थको समझ ले।

किसीने कहा है कि यह प्रस्ताव एक चुनौती है; बेशक यह एक चुनौती है भी। यदि ब्रिटिश सरकार चाहे तो इसका अर्थ एक उद्धत चुनौती लगा सकती है। हमे इससे डरनेकी जरूरत नही है। पर यदि इस विषयमे गवर्नरोके हृदयमे जरा भी परिवर्तन हुआ है तो वे इससे उस राष्ट्रकी उत्कठाओको भी समझ सकते है जो ऊपर उठनेकी कोशिश कर रहा है, जो गुलामीके जुएको उतार फेकनेकी कोशिश कर रहा है। यह उनके लिए ज्यादा अच्छा होगा, यह ससारके लिए भी ज्यादा अच्छा होगा, क्योकि वे एक बडे राष्ट्रका प्रतिनिधित्व करते हैं। परन्तु यदि वे इस प्रस्तावकी सही व्याख्या न करे तो हम इसमे क्या कर सकते हैं। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यदि यह एक चुनौती है तो यह एक धमकी भी है। मुझे हाउस ऑफ कामन्समे जानेमे भी कोई डर नही है। मुझे वाइसरायके पास जानेमे भी कोई डर नही है। पर मै वहाँ कब जा सकता हूँ? केवल तभी जब यह असहयोगके सिद्धान्त पर दृढ रहते हुए सम्मानपूर्वक सम्भव हो। मेरा असहयोग बदीके साथ है, नेकीके साथ नही। मेरा असहयोग व्यक्तियोसे नही है, मेरा असहयोग तो कार्योसे है, और कार्य जब मुझे अच्छे लगते है तो मै उनसे सहयोग करता हूँ। यदि वाइसराय आज मुझे बराबरीके आधारपर ऐसे मामलोपर विचार-विमर्शके लिए बुलाये जो देशके लिए महत्त्वपूर्ण हैं, तो मै नगे पैर वहाँ जाऊँगा और फिर भी अपने असहयोगकी रक्षा करूँगा। यदि वह समय आया — और वह समय आकर रहेगा — तो आप उस समयको पास ला सकते है। यदि आप उस कार्यक्रमको पूरा कर ले और इस प्रस्तावको उस भावनासे ले जिससे कि यह लिया जाना चाहिए, तो आप अपने उस अभीष्ट दिनको पास ला सकते हैं। आपको हाउस ऑफ कामन्समे बुलाया जा सकता

है। तब आप असहयोगीके रूपमे वहाँ जायेंगे, सहयोगीके रूपमे नही। तब आप ऐसे राष्ट्रीय प्रतिनिधियोके रूपमे जायेगे जिनसे हमारी माँगके सम्बन्धमे किसी युक्तियुक्त समझौतेपर पहुँचनेकी अपेक्षा की जाती है। वह हमारे लिए कोई अपमानकी बात नही होगी। वह कोई इस तरहकी बात नही होगी कि हाउस ऑफ कामन्स कुछ दान कर रहा है और हम भिखारीकी तरह उसे ले रहे हैं। वह तो, जैसा कि वह कहलाती है और उसकी व्याख्या की जाती है 'समझौतेके लिए एकत्रित बडे पक्षो' की बात होगी। यह उसी तरहका जाना होगा जिस तरह मै दक्षिण आफ्रिका गया था।

मै आपके आगे दक्षिण आफ्रिकाकी मिसाले देता रहता हूँ। इसका कारण यह है कि मै उस इतिहासका विद्यार्थी नही रहा हूँ जो बेजान पन्नोमे लिखा हुआ है, बल्कि उस इतिहासका विद्यार्थी हूँ जो इस समय लिखा जा रहा है। किसी अन्य देशकी अपेक्षा दक्षिण आफ्रिकाके बारेमे मै अधिक इसलिए जानता हूँ क्योकि मै वहाँ रहा हूँ। मै आपको बताऊँ कि जनरल बोथा और जनरल स्मट्स, जो इतने साहस और वीरताके साथ लडे थे, की राजा एडवर्डको प्रशसा ही करनी पडी और उन्होने अपने एक सन्देशमे कहा, "मै इन शूरवीरोके साथ अब और लडना नही चाहता।" इसके बाद ही वे वीर जनरल इग्लैड गये थे। पर किस हैसियतसे? वे उस राष्ट्रके प्रतिनिधियो और राजदूतोकी हैसियतसे, अपने सम्मानकी रक्षाके लिए, अपनी स्वाधीनताकी प्राप्तिके लिए गये थे, और उसे उन शर्तोपर प्राप्त करनेके लिए गए थे जो लोकसभा (हाउस ऑफ कामन्स) द्वारा घोपित नही की गई थी, बल्कि स्वय उन्होने इसी तरहके एक सम्मेलनमे तय की थी। क्या हममे उन जनरलोकी-सी वीरता है?[1]

क्या हमारे बीचमे जनरल बोथा जैसा कोई है जो २०,००० एकड़की अपनी बहुमूल्य भू-सम्पत्ति और हजारो भेडोको छोड देनेके लिए तैयार हो? आपको शायद मालूम नही कि जनरल बोथा भेड़ोके विशेषज्ञोमे से थे। वे उनके गुण-दोप वैसे ही जानते थे जैसे कि कोई अपने ही रक्तके बारेमे जान सकता है। क्या हमारे पास जनरल बोथा जैसा कोई है? क्या हमारे पास जनरल स्मट्स-जैसा कोई है, जो देशकी माँगपर जिस तरह कधेपर राइफल रखनेको तैयार रहता हो उसी तरह अपनी बाहें चढा कर खेतमे भी काम करनेको तैयार रहता हो। मुझे लगता है कि हमारे पास ऐसे व्यक्ति हैं। अगर न होते तो मै यह प्रस्ताव आपके सामने नही रखता। तब तो मै वापस साबरमती चला जाता।

डा० पट्टाभि सीतारमैयाने मुझसे पूछा : "वह क्या चीज है जो आपको फिर अपनी माँदसे बाहर खीच लाई है? पण्डित मोतीलाल नेहरूके साथ अपने पिछले प्रेमके कारण ही क्या आप स्वराज्य पार्टीके साथ फिर प्रेमका नाटक रचना चाहते हैं? मोतीलालके लिए जो थोड़ा-बहुत प्रेम अभी भी आपमे है क्या वही आपको खीच लाया है?" उन्होने बिलकुल यही शब्द प्रयुक्त नही किये थे। यह डा० पट्टाभिने

१. इससे आगेका अंश २९-१२-१९२८के फॉरवर्डसे लिया गया है।

जो-कुछ कहा उसका सार है। इसलिए आपको यह बात थोडी सावधानीके साथ ग्रहण करनी है। मैंने उनसे कहा कि मैं इसकी सफाई दूँगा, ये मेरे प्यारे सहयोगी है और इनके लिए मेरे मनमे थोडा-बहुत नही, बहुत अधिक प्रेम है। उन्होंने कहा. "मेरे सिरपर काँटोका यह ताज रखनेमे आपका हाथ रहा है। इसलिए अब आपको आकर यह देखना होगा कि उस काँटोके ताजसे मेरे सिरपर कितनी खरोचे आई है। उनमे से कुछ खरोचोमें आपको हिस्सा भी बँटाना होगा।" देशके इतिहासकी इस नाजुक घडीमे भाग लेनेके लिए आग्रह करनेके बाद, यदि मै उनके इस आह्वानका उत्तर न देता तो मै मित्रताको तोडने और राष्ट्रके प्रति अपने कर्त्तव्यसे च्युत होनेका दोषी होता। इसलिए मैंने कहा: "जो भी दिन आप निश्चित कर देंगे उसी दिन मै आऊँगा और जिस दिन आप कहेंगे उसी दिन वापस जाऊँगा।" (तालियाँ) अब आप यह समझ सकते है कि मै यहाँ क्यो आया हूँ और यह भी समझ सकते है कि यद्यपि यह प्रस्ताव आपसी समझौतेके आधारपर तैयार किया गया है और मूल प्रस्तावसे कमजोर है, फिर भी मै इसे कितना महत्त्व देता हूँ।

अब मैं वाइसराय सम्बन्धी इस धारापर आता हूँ। यह धारा उस प्रस्तावकी उसी तरह आवश्यक परिणति थी, जैसे कि वह इस प्रस्तावकी आवश्यक परिणति है। यह प्रस्ताव सच कहें तो मुकुटहीन हो गया है, पर हम आजकल, मनोविज्ञानमे जिसे हीन-भावना कहते है, उसके शिकार हैं। हर पाँच मिनिटपर हमे राजा चार्ल्सका सिर अपनी आँखोके आगे झूलता नजर आता है। आपको सुप्रसिद्ध श्री डिककी बातका पता है जो राजा चार्ल्सके सिरकी कल्पना किये बिना कोई बात सोच ही नही सकते थे। इसी तरहकी हीन-भावना हमारे दिमागो और मनोमे अंकित है। वह सिर बराबर हमारे आगे झूलता रहता है और हमे चिन्तासे मारे डाल रहा है। वह हमे हर चीजमे नजर आता है और आशंका होती है कि हम कही अपने आपको कमजोर न बना डाले। इसलिए अब हम अपने आपको मजबूत बना रहे है। जैसा कि कुछ पत्रोंने कहा, वह अन्तिम चेतावनी है। पर वास्तवमे वह शिष्टताका तकाजा भी था। ब्रिटिश राष्ट्रके सम्मानके संरक्षकोसे मेरी यह अपेक्षा है कि वे इस प्रस्तावके गूढार्थको समझे, मैं चाहता हूँ कि वे राष्ट्रकी आकांक्षाओको समझे, और इसीलिए मैं उनके पास इस प्रस्तावको भेजनेका नाजुक काम कर रहा हूँ। वे इसका जो भी चाहे करे। यह सब जो किया जा रहा है, मैं उसका अर्थ समझता हूँ।

लेकिन मैं उन्हे यह कहनेका मौका देना नही चाहता कि 'हमे इस प्रस्तावके बारेमे कुछ पता ही नही था।'

आप इस विषयमे यह समझनेकी कोई भूल न करे कि यह सर्वदलीय संविधान ब्रिटिश राष्ट्रके सम्मुख विचारार्थ रखी जानेवाली कोई माँग है। पर आप इस खयालमें भी न रहे कि यह कोई ऐसा दस्तावेज है जिसपर उन्हे कभी विचार नही करना है। यह साइमन कमीशनके सामने पेश की जानेवाली कोई चीज न होकर एक ऐसा दस्तावेज है जिसपर ब्रिटिश सरकार, साम्राज्य सरकार वाइसराय और उन लोगोको जो आज भारतके भाग्य-विधाता समझे जाते है, विचार करना होगा। यह इसीलिए बनाया

गया है। मैं तो कहता हूँ कि जिस रूपमे हम इसे ले रहे हैं उस रूपमे यह स्वाधीनताका अधिकारपत्र भी है। मित्रो, मेरा खयाल है कि मैंने आपको औपनिवेशिक दर्जे और स्वाधीनतामे भेद करनेसे रोका था। मैं इसे स्वाधीनता कहता हूँ। कल रात मुझे यह कहना पडा कि 'भगवानके लिए इस दस्तावेजसे मत हटिए' और न आप इस दस्तावेजसे हटनेकी बात सोच सकते है। यह एक पवित्र दस्तावेज है। इससे अधिक या इससे कम कुछ भी नही। और यदि यह एक पवित्र दस्तावेज है तो आप इससे हट नही सकते। यदि आपको इसमे से एक विराम-चिन्ह भी निकालनेकी जरूरत पडे तो आपको उसपर विचार करनेके लिए सम्मेलन और कांग्रेसका एक विशेष अधिवेशन बुलाना होगा। पर इस दस्तावेजको यह पवित्र रूप देनेका अर्थ यह नही है कि इसे एक तिजोरीमे बन्द करके रखना है। यह एक ऐसा दस्तावेज है जिसका प्रचार होना चाहिए और जिसे सबसे पहले राज-प्रतिनिधियोके पास भेजना चाहिए। उन्हे यह कहनेका मौका मत दीजिए कि आपने इसे हमारे पास विचारार्थ नही भेजा। यदि यह अन्तिम चेतावनी थी तो भी आपको इसे हमारे पास भेजना चाहिए था।[1]

बारडोलीके मामलेमे मैंने ऐसा ही किया था। मैंने वाइसरायको एक पत्र लिखा, पर उसके बाद चौबीस घटेके अन्दर ही मुझे उसे वापस लेने और नया रूप देनेका दु:खदायी कर्त्तव्य पूरा करना पडा, क्योकि बादकी घटनाओके[2] कारण मैंने वैसा करना आवश्यक समझा। यदि मैं हीन-भावनाके रोगसे ग्रस्त होता तो मैं प्रेस-प्रतिनिधियोके आगे एक वक्तव्य दे देता और वाइसरायसे उत्तरकी अपेक्षा करता। पर मैंने सही तरीका अपनाया। इसी तरह इस प्रस्तावके बारेमे भी मैं सही तरीका अपनाना चाहता हूँ। क्योकी तब यदि आप कोई कार्रवाई करेंगे तो आपका पक्ष कमजोर नही, बल्कि मजबूत होगा।

मैं यह बात फिर दोहराना चाहता हूँ कि नेहरू रिपोर्टका यदि कोई परिणाम निकलना है तो उसपर ब्रिटिश संसद और वाइसरायको विचार करना होगा। नेहरू रिपोर्टके रचयिता यह जानते थे। आप इसे जानते है और मैं भी इसे जानता हूँ। इस बातको स्वीकार न करना दुर्बलताका चिन्ह होगा, एक अशोभन बात होगी। यदि वाइसराय अपने राजा और राष्ट्रके एक योग्य प्रतिनिधि हैं, तो वे इस प्रस्तावपर विचार करेंगे ही, यद्यपि इसमे वह धारा शामिल नही है जो मैं इसमे जोडना चाहता था। परन्तु यदि वे मेरे शब्दोको, जिनसे मैं उन्हे अवगत कर रहा हूँ, पढनेका कष्ट करें तो मैं इस मंचसे यह घोषणा करता हूँ कि उनके लिए इस प्रस्तावपर गम्भीरतासे विचार करना और यह समझ लेना ठीक रहेगा कि हममे कमसे-कम कुछ लोग ऐसे जरूर हैं जो इसके प्रत्येक शब्दका पालन करना चाहते है। (साधुवाद) अगर आप साधुवाद देते है तो मैं कहता हूँ कि आप इसमे वाइसरायको भेजनेकी वह धारा फिर जोड दे। ("नही, नही" की आवाजें) अगर आप 'नही' कहते है तो मेरा

१. इससे आगेका अंश २९-१२-१९२८ की **अमृतबाजार पत्रिकासे** लिया गया है।
२. ४ फरवरी, १९२२ का चौरीचौरा-काण्ड, देखिए खण्ड २२।

कहना है कि आप हीन-भावनाके शिकार है। स्वयं मुझे दक्षिण आफ्रिकामे, जहाँ मुझे 'कुली' कहकर पुकारा जाता था, इसका कुछ अनुभव हो चुका है।[1]

अब मै कुछ शब्द उन उतावले नौजवानोसे कहना चाहता हूँ जो १९२९ पर जोर देते रहे है और उनसे भी जो दिसम्बर १९३० के पक्षमे है। जब मैने १९३० लिखा तो मैन उसके परिणाम सोच लिये थे। बहुत सारे मित्र मेरे पास आते है और मुझसे पूछते है, "अगर हम इस प्रस्ताव और इस कार्यक्रमके पक्षमे वोट दे दें तो क्या आप फिर वही करेगे जो आपने १९२० में[2] किया था? क्या आप राष्ट्रीय मामलोका नेतृत्व वस्तुत. अपने हाथमे ले लेगे?" मैने कहा कि मुझमे आज इतनी शक्ति नही है कि अकेला लड सकूँ; पर यदि मुझसे समझौता कर ले और जुएको अपने कन्धोपर रख सके तो मै कमान सँभाल लूँगा। जुआ इस बार १९२० से बहुत अधिक सख्त और बहुत अधिक भारी होगा। यह जुआ बडा मजबूत है और उपयोगके दौरान घिस कर कमजोर नही पडा है। यह तो ऐसा जुआ है जो उपयोगसे और ज्यादा मजबूत होता जाता है। यदि आप उस अनुशासनको, जो मै लागू करूँ माननेको तैयार हो, तो मै निश्चय ही काम करूँगा, उतना करूँगा जितना मेरे इस दुर्बल शरीरसे बन सकता है। आज मै अपने देशके लिए एक पवित्र कर्त्तव्य पूरा करने आया हूँ और उसके बाद कलकत्तेसे मै वापस साबरमती चला जाऊँगा। मेरा आपसे कहना यह है कि जबतक आप मेरी इन कठोर शर्तोको, अनिच्छासे नही बल्कि स्वेच्छासे, स्वीकार नही कर लेते, तबतक आप मुझसे इस प्रस्तावको आपके सामने रख देनेसे अधिक और किसी चीजकी अपेक्षा न करे। जबतक आप अपने प्रत्येक शब्दपर अमल करनेको तैयार न हो, तबतक मुझे इसमे घसीटनेसे, मुझसे कमान सँभालनेके लिए कहनेसे कोई लाभ नही है।

मै ऐसा सोचता था कि यदि सरकारसे हमे लडाई लडनी ही पडे तो उसके लिए अपनी शक्तियोको सगठित करनेका दो सालका समय कम पडेगा। एक सालका समय तो कुछ भी नही है। एक साल तो हमे अपने सैनिकोमे अनुशासन कायम करनेके लिए चाहिए। काग्रेसकी आजकी सदस्य-सूची बिलकुल झूठी है। जो बात सच है हमे उसे स्वीकार करना चाहिए। यह सूची बेकार है। यदि मै जाँच करने-वाले लोगोको साथ लेकर काग्रेस-रजिस्टरोकी जाँचके लिए निकलूँ तो मुझे दुखदायी निराशा ही हाथ लगेगी। हमे काग्रेसका जीवन्त रजिस्टर चाहिए। हमे ऐसी स्थितिमे होना चाहिए कि हम प्रतिदिन यह बता सके कि इतने नये सदस्य भर्ती किये गये, इतना और सूत काता गया, इतनी और चवन्नियाँ दी गईं, इत्यादि। पर मै यह चाहूँगा कि यदि प्रतिदिन नही तो प्रति सप्ताह तो हमारे केन्द्रीय कार्यालयको आँकडे मिलने ही चाहिए, जिनसे नये चदे और सदस्योकी बढती हुई संख्याका पता चलता रहे।

१. इससे आगेका अंश २९-१२-१९२८ के फॉरवर्डसे लिया गया है।

२. देखिए खण्ड १८, पृष्ठ २६९-७६ और २९१-९५।

इसमे एक साल लग जायेगा, और अपने भीतर आत्मविश्वास और साहस पैदा करने तथा साम्प्रदायिक एकताको मजबूत करनेके लिए एक साल और चाहिए। साम्प्रदायिक एकता अभी नजर नही आती। उसके लिए बहुत-कुछ करना होगा। कल सारी रात साम्प्रदायिक एकताकी कोशिशमे ही खर्च हुई। वातावरणको साफ होनेके लिए कुछ समय लगेगा। इसलिए मेरा यह ख्याल था कि दो सालका समय बहुत ही थोड़ा है। पर फिर मैंने अपने मनमे यह कहा कि यदि इन सब प्रतिष्ठित नौजवानोकी यही इच्छा है कि मै सालके आखिरतक कुछ न कर दिखानेकी बदनामीका भागी बनूं, तो इससे क्या फर्क पड़ता है। मै इसका भागी बनूंगा। मै यह चेतावनी दे चुका हूँ कि यदि उन्होने, किसी अन्य नही बल्कि इसी प्रस्तावकी शर्तोंके अनुसार अच्छी तरह अपनी जिम्मेदारी नही निभाई तो उन्हे बदनामी ही मिलेगी और मै एक साथी तथा इस दस्तावेजका एक पक्षधर होनेकी हैसियतसे खुशीसे उसमे अपना भागीदार होऊँगा। लेकिन मै इस सार्वजनिक मंचसे उन्हे एक चेतावनी देता हूँ। अपने लक्ष्यकी ओर हमारी प्रगतिको तेज करनेके लिए उन्हे प्रस्तावकी शर्तोंके अनुसार रोज-रोज दिन-रात कार्यक्रमके रचनात्मक भागको पूरा करनेमे जुटना पड़ेगा।

अब मै मद्रास कांग्रेसकी स्वीकृतिके प्रश्नपर आता हूँ। यदि तम्बूमे हममे इसपर विचार-विमर्श न हुआ होता तो मुझे इसपर टीका-टिप्पणी करनेकी जरूरत नही थी। मै प्रश्नोको केवल स्पष्ट करना चाहता हूँ। कांग्रेसकी रायपर हम लाखो मंचोसे स्वाधीनताकी माँगको दोहरा सकते है, पर हमे सर्वदलीय समितिकी रिपोर्टको स्वाधीनतासे भिन्न नही समझना चाहिए। उसे स्वीकार करके आप अपने स्वाधीनता-संघर्षको कमजोर नही कर रहे है। उस दस्तावेजको आप स्वाधीनताकी ओर अपनी प्रगतिके रास्तेकी एक मंजिल, एक बड़ी मंजिलकी तरह इस्तेमाल कर रहे है। और यदि आप, आपके संविधानको स्वीकृति देनेवाले इस प्रस्तावके प्रति सच्चे है, तो आपका यह कर्त्तव्य होगा कि आप अपने मचोसे स्वाधीनतापर भाषण देते हुए यह कहे कि "हम चाहते है कि आप लोग इस नेहरू रिपोर्टको हमारे लक्ष्यके अर्थोंमे ले और स्वाधीनताके सघर्षमे नेहरू रिपोर्टको मजबूत करे।" नेहरू रिपोर्टको आप एक बढ़ी हुई गिल्टी समझकर उसपर रोये-धोये नही, बल्कि उसे संघर्षका एक अभिन्न अग समझें। मै आपको यह बताए देता हूँ कि यह प्रस्ताव आपको ऐसा रुख अपनानेके लिए वचनबद्ध करता है। यदि आप ऐसा नही करेगे तो नेहरू रिपोर्ट सचमुच आपके लिए गलेकी फाँसी बन जायेगी, और राजा चार्ल्सका सिर आपको हमेशा अपने सामने नजर आता रहेगा और आप हमेशा उसे अपने पीछे छिपानेकी कोशिश करते रहेंगे। और जब कोई आपसे नेहरू रिपोर्टके बारेमे पूछेगा तो या तो आप उसका कोई जिक्र ही नही करेगे, या ऐसा जाहिर करेगे मानो उसकी बात आपने सुनी ही नही है, या आप उसके बारेमे सब-कुछ भूल गये है। नेहरू रिपोर्टके प्रति यदि आपका यही रुख है, तो आप उसे पास न करे। क्योकि पास करनेका अर्थ यह है कि वह आपको पसन्द है, उनके श्रमकी आप सराहना करते है, आप यह महसूस करते है कि उन्होने राष्ट्रीय दायित्वको, उस दायित्वको जो स्वाधीनता,

खालिस स्वाधीनता चाहनेवालोकी ओरसे उन्हे सौपा गया था, पूरा किया है। उन्होने जहाँ उनके प्रतिनिधिकी हैसियतसे काम किया है, वहाँ उन लोगोके प्रतिनिधिकी हैसियतसे भी काम किया है जो स्वाधीनतासे अभीतक डरते है, जो स्वाधीनताकी चकाचौधको सहन नही कर सकते। उन्होंने दोनो पक्षोके लिए काम किया और दोनो पक्षोमे तालमेल बैठाया है। पर इस रिपोर्टमे ऐसी कोई चीज नही है जिसपर स्वाधीनताके पक्षपातीको लज्जित होना पडे, बल्कि हर चीज ऐसी है जिसपर वह गर्व कर सकता है। इस रिपोर्टका आप जो चाहे अर्थ लगा सकते है, और मेरा ख्याल है कि जो मनुष्य स्वाधीनताकी चमक-दमक और चकाचौधको नही सह सकता, उसकी अपेक्षा आप इस रिपोर्टका बहुत अधिक अर्थ लगा सकते है।

आप कहते होगे कि यह व्यक्ति इसकी बडी वकालत कर रहा है। पर वह कला मुझमे कभी नही रही। एक-एक शब्द जो मै कह रहा हूँ मेरे दिलकी गहराइयोसे आ रहा है। भले ही मेरा दिमाग कुछ चकरा रहा है, पर दिल ठीक काम कर रहा है। मेरा आपसे कहना यह है कि जब आप इस प्रस्तावको स्वीकार करे तो इस बातको अच्छी तरह समझ ले कि आप क्या कर रहे है। यह मत सोचिए कि यह एक रद्दी कागज है, या मोतीलाल नेहरूके लिए एक समाश्वासन-पुरस्कार है, कि ३४ सफेद घोडोवाले रथके अपने उस शानदार जुलूसके बाद वे कही नाराज न हो जाये। उस विजय यात्राके बाद उन्हे किसी समाश्वासन-पुरस्कारकी आवश्यकता नही है। और मुझे तो किसी समाश्वासन-पुरस्कारकी और भी कम आवश्यकता है।

मै चाहता हूँ कि आपके जीवन-रक्तकी बूँदे मेरे रक्तकी बूँदोसे मिल जाये, हिन्दूरक्तकी बूँदे मुस्लिमरक्त और सिखरक्त, पारसीरक्त और ईसाईरक्तकी बूँदोके साथ मिल जाये, और वह कलकत्तेमे एक ऐसे शानदार स्मारकका निर्माण करे, जिससे यदि आप चाहे तो, यह दिखा सके कि इस राष्ट्रने अपनी स्वतन्त्रताको स्वर्णसे नही, अपने रक्तसे खरीदनेके लिए क्या-कुछ किया है। मै चाहता हूँ कि आप इस प्रस्तावमे इसी चीजको देखे। यह प्रस्ताव आपको, और किसी चीजके लिए नही, इसी कर्त्तव्यके लिए पुकारता है। इसके बाद मेरे लिए कहनेको कुछ अधिक नही रह जाता।

पर मै राजनीतिक परिस्थितिकी अनिवार्यतावाली बात आपको समझा देना चाहता हूँ। बेशक यह चीज हलकमे अटकती है। यह व्याख्या भी 'हीन-भावना' रूपी बुढियाकी ही देन है। पर कभी-कभी हमे बुढियोको भी तरुणियाँ मानना पड़ता है। मान लीजिए, वाइसराय या भारत सचिव आपेसे बाहर हो जाते है और कहने लगते है, "ये गुस्ताख लोग यह क्या कर रहे है, ये हमारे राष्ट्रपर अपमानोकी बौछार कर रहे है और सगीनकी नोके दिखा-दिखाकर औपनिवेशिक दर्जेकी माँग कर रहे है?" हमारे पास सगीने नही है। पर हमारी कलमोकी नोके ही कभी-कभी उन्हे सगीनो जैसी लगती है। लेकिन हम इसमे क्या कर सकते है? यदि हमारे हृदयकी आकाक्षा, यदि हमारे हृदयकी वेदना या आगको गलत समझा जाता है, तो हम इसम क्या कर सकते है। पर यदि वे ऐसा ही करे, हममे से कुछको जेलमे

डाल दे, या इससे भी खराब कोई बात करे। मान लीजिए इस प्रस्तावके बाद और जो-कुछ हम यहाँ कर रहे है उस सबके बाद, हम साइमन कमीशनके विरुद्ध, उसके सरकारी तौरपर कलकत्ते आनेपर, कोई प्रदर्शन करते है। पिछली बार, मै समझता हूँ, वह सरकारी तौरपर नही आया था और इसलिए आप लोगोने आत्मसयमसे काम लिया था और यह दिखा दिया था कि आपमे शिष्टाचार वरतनेकी क्षमता है। पर जब वह सरकारी तौरपर यहाँ प्रवेश करे और आप उसका काले झडोसे स्वागत करे, मान लीजिए तब कोई पुलिस सुपरिंटेडेट, अपनी समझसे अपने कर्त्तव्यका पालन करते हुए, अपनी बन्दूक चला देता है, तब हमे क्या करना है? क्या हमे तब भी यही कहना है कि हमे औपनिवेशिक दर्जा स्वीकार है। यदि हम उसे राजनीतिक परिस्थितिकी अनिवार्यता न मानना चाहे और यदि हम अपने आपमे काफी मजबूतीका अहसास न करे, तो हम उस अन्यायको पी सकते है। कमजोर, हम निश्चय ही है, और उस अवस्थामे भी हम कह सकते है "हाँ, हमे औपनिवेशिक दर्जा स्वीकार है।" लेकिन सम्भव है हम काफी साहस सचित कर ले और हमारे भीतर इतने साहसका आविर्भाव हो जाये कि हम यह कह सके "औपनिवेशिक दर्जा अब नही, समझौतेकी बात अब नही। अब तो पूर्ण स्वाधीनता चाहिए।" इसी राजनीतिक अनिवार्यताके लिए हमने व्यवस्था रखी है।

यदि कमीशन इन सकेतोको ठीक-ठीक समझ ले तो वह देखेगा कि देश नेहरू रिपोर्टके साथ है। बेशक, कमीशनसे ऐसी आशा नही की जा सकती कि वह सकेतो को ठीक-ठीक समझेगा। मै इतना मूर्ख नही हूँ जो इसपर यकीन कर लूँ। पर साथ ही मै एक अदम्य आशावादी भी हूँ। यदि हममें अचानक शक्तिका एक सोता फूट पडता है, और यदि हिन्दू, मुसलमान और सिख इस पगलेकी बात सुनकर और जो आग इस हृदयमे जल रही है उसे महसूस करके यह कहने लगते है कि "हमे अपना आपसी अविश्वास दूर कर देना चाहिए, हमे साम्प्रदायिकता बिलकुल नही चाहिए, हम अपने मुस्लिम और सिख मित्रोपर विश्वास करेगे" और यदि उस विश्वासके फलस्वरूप हममे से कुछको अपनी जान गँवानी पडती है या मतदानके अपने अन्य अधिकारोसे वचित होना पडता है या मतदानकी तो कोई परवाह नही, वह अपने लक्ष्यकी ओर हमारी प्रगतिका एक कदम होगा। यदि आपमे अचानक इस तरहका साहस और आत्मविश्वास आ जाता है, तो मै आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि सर जॉन साइमन यही कहेगे, "वह मेरी रिपोर्ट है, भारतकी परिस्थितिको जितना मै समझता हूँ ब्रिटिश राष्ट्रका कोई और प्रतिनिधि नही समझता।" आज हमारे बीच वह वातावरण नही है, वह पारस्परिक विश्वास हममे नही है, वह आत्मविश्वास हममे नही है। इसलिए आप अपने चारो ओर हीन-भावनाके प्रतीकोकी बाड़ लगा रहे है। लेकिन उसकी कुंजी इस प्रस्तावमे है, जो मैंने आपके सम्मुख रखा है। (तालियाँ)

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २९-१२-१९२८

फॉरवर्ड, २९-१२-१९२८

३५३. नाम महत्त्वपूर्ण नहीं है

२९ दिसम्बर, १९२८

यह लिखते समयतक (२९वी दिसम्बरको प्रात काल) कांग्रेसका जो प्रभाव मनपर पडा है उसके विषयमें कुछ कहना जल्दबाजी होगी। घटनाएँ इतनी तीव्रताके साथ घटित हो रही हैं कि सवेरेकी मनपर पड़ी छाप शामतक पुँछ जाती है। इसलिए तबतक 'डोमीनियन स्टेटस'—'औपनिवेशिक स्वराज्य और 'इंडिपेंडेन्स' अर्थात् स्वतन्त्रताकी जो चर्चा उठ खडी हुई है, हम उसे ही समझ ले। जैसे-जैसे इस चर्चाको छेड़नेवालोकी दलीले सुनता हूँ, वैसे-वैसे उससे हो रहा नुकसान ही मुझे ज्यादा-ज्यादा स्पष्ट दीख पडता है। एक सीमातक यह चर्चा सम्भवतः हितकारी और आवश्यक कही जा सके। नि सन्देह इतना समझ लेना तो जरूरी था कि देशका आदर्श 'इडिपेडेन्स' से कम हो ही नही सकता और हम जो भी कदम बढायें वह इसी आदर्शकी तरफ होना चाहिए। अत. निष्कर्ष यही निकलता है कि यदि किसी भावी परिवर्तनसे देशकी स्वतन्त्रतामे बाधा पड़ती हो तो उसका त्याग आवश्यक है।

लेकिन इस 'स्वतन्त्रता' का अर्थ क्या है? मैं इसका अर्थ स्वराज्य करता हूँ। 'इडिपेडेन्स' शब्दका उपयोग हम यूरोपीयोको ध्यानमे रखकर करते है। लेकिन जिनकी आँखे देशसे बाहर कही लगी होती हैं फिर वह पश्चिम हो या पूर्व, उत्तर हो या दक्षिण, वे जो-कुछ कहते है वह और कुछ भी क्यो न हो, भारतकी स्वतन्त्रता नही है। भारतकी स्वतन्त्रताके लिए तो हमे भारतकी ही तरफ देखना चाहिए, उसकी सन्तान, उसकी आवश्यकता, उसकी सामर्थ्य आदि सब बातोका विचार करना चाहिए। अतः यह स्पष्ट है कि भारतके स्वातन्त्र्यका अर्थ, उसकी बदलती हुई जरूरतो और बढती हुई शक्तियोके परिमाणमे बदलता रहना चाहिए। यानी भारतमे स्वतन्त्रताका अर्थ वही नही किया जाना चाहिए जो पश्चिममे किया जाता है, इटलीका स्वातन्त्र्य इग्लैडके स्वातन्त्र्यसे जुदा होगा और स्वीडनका इन दोनोसे भी भिन्न होगा।

हमे एक चीजकी जरूरत है और अवश्य ही वह यह है कि हर तरहका ब्रिटिश अकुश देश परसे उठ जाये लेकिन साथ ही यह भी आवश्यक है कि उस अंकुशके उठ जानेपर किसी दूसरे देशका अकुश कायम न हो जाये। नेहरू रिपोर्ट इस प्रकारकी स्वतन्त्रताका मार्ग बताती है और ऐसा उपाय भी बतलाती है जिसे भारत आज आत्मसात् कर सकता है। अगर उसका अर्थ इससे थोडा भी कम हो तब तो वह एक निरर्थक कागज है। इस रिपोर्टको स्वीकार कर लेनेसे देशकी स्वतन्त्रताके आदर्शमें बाधा नही पडती। और मेरे विचारमे राष्ट्रीय स्वातन्त्र्यका कट्टरसे-कट्टर हिमायती भी इस रिपोर्टके सम्पूर्ण पालनके लिए काम कर सकता है, ऐसा करना उसका धर्म है। रिपोर्ट कोई ध्येय नही है। वह तो ध्येय प्राप्त करनेका एक मन्त्र बतलाती है जिसे ध्यानमें रखकर हमें काम करना है। इस रिपोर्टको सफल बनानेके लिए हरएक दलका जमकर और लगातार काम करते रहना जरूरी है।

'डोमीनियन स्टेटस' के बदनाम नामको उसके सन्दर्भसे विच्छिन्न करनेके कारण बड़ी गड़बड़ पैदा हो गई है। यह कोई ऐसी सजीवनी नही जो हममे प्राण फूँकनेके लिए सात समुन्दर पारसे लाई जा सके। रिपोर्टको तैयार करनेवाले प्रसिद्ध सज्जनोने इस नामका प्रयोग करके और इसे एक विशिष्ट राज्यतन्त्रकी उपमा दे कर यह बतलाया है कि भारतकी राजनैतिक उन्नतिके लिए क्या आवश्यक है। इस रिपोर्टमे जिस राज्यतन्त्रका उल्लेख है, वह 'डोमीनियन स्टेटस' के नामसे प्रसिद्ध हो या और किसी नामसे, उससे सम्भव है आज हमारा काम सध जाये लेकिन यह भी सम्भव है कि कल वह सहज ही उसके लिए अपर्याप्त सिद्ध हो जाये। किन्तु उसमे अपनी त्रुटियोको सुधार लेनेकी शक्ति है। क्योकि स्वय राष्ट्रको यह योजना कार्यान्वित करनी है; वह ब्रिटेनकी ओरसे उसके सामने फेकी जानेवाली या उसपर लादी जानेवाली चीज नही है। अगर यह योजना सफल हो जाये तो उसमे वह सब सम्भावित है जो हमे अपनी भावी उन्नतिके लिए आवश्यक है। इसी कारण मै इस रिपोर्टको हमारी स्वतन्त्रताका 'चार्टर' — सनद या पट्टा कहता हूँ।

अगर हम नेहरू रिपोर्टको भूल भी जाये तो भी हर हालतमे हमें किसी 'चार्टर' की जरूरत तो होगी ही। और सम्भव है कि इस 'चार्टर' को भारतकी स्वतन्त्रताका पट्टा समझा जानेपर भी उसमें नेहरू रिपोर्टके 'डोमीनियन स्टेटस' से स्वतन्त्रताका बहुत कम तत्त्व हो।

इसलिए अगर स्वदेशी शब्द 'स्वराज्य' से हमारे ध्येयका पूरा वर्णन नही किया जा सकता तो दूसरा ऐसा एक भी शब्द नही है जो उसका वर्णन कर सके। साधारण मनुष्यको तो इतना ही ध्यान रखना है कि देशके प्रतिनिधियोने जो योजना तैयार की है वह बिना किसी परिवर्तनके जैसीकी-तैसी प्राप्त हो जानी चाहिए। फिर वह पूरे विश्वासके साथ कह सकता है कि महत्त्व नामका नही है।

यह बात कि नेहरू रिपोर्टका ब्रिटिश पार्लियामेट द्वारा स्वीकृत किया जाना जरूरी है, उसका कोई दोष सूचित नही करता। ब्रिटेनके साथ हमारा सम्बन्ध होनेके कारण किसी भी परिस्थितिमे उसकी मजूरी तो हमारे लिए आवश्यक ही होगी। फिर उसका मजूर किया हुआ राज्यतन्त्र वर्तमान गुलामीके बजाय उसे स्वेच्छापूर्वक समाप्त करके एकदम बराबरीकी भागीदारीका हो या ब्रिटेनके साथ हर तरहका सम्बन्ध तोड़ डालनेके रूपमे हो। मेरा तो यह निश्चित मत है कि भागीदारका सम्बन्ध, हृदय परिवर्तनके कारण स्थापित मित्रताका सम्बन्ध हर हालतमे सम्बन्ध-विच्छेदसे अधिक अच्छी बात है। इसका अधिक विवेचन किसी दूसरे समय करूँगा। आज तो हमे यह सूत्र याद रख लेना चाहिए कि स्वराज्य — अगर आप चाहे तो उसे स्वतन्त्रता कह ले — की ओर ले जानेवाली कोई भी योजना हमारे ही द्वारा बनी हुई होनी चाहिए। और ब्रिटिश पार्लियामेटको उसे बिना किसी परिवर्तनके मंजूर करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, ३-१-१९२९

३५४. पत्र : छगनलाल जोशीको

शनिवार, २९ दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

आज थोडा अवकाश है, इसलिए यह पत्र लिख रहा हूँ। कामकी भीड और जागरणके बावजूद तबीयत ठीक रही है।

गगाबहनसे कहना कि पूरी तरह आराम करे और काम हाथमे लेनेकी जल्दी न करे। शकरभाईसे[1] कहना कि उन्हे पाखानेमे घटे-भर हरगिज नही बैठना चाहिए। जोर तो जरा भी न लगाये। खुराकमे फेरफार करके अथवा फिर बाहर जाकर तबीयत सुधार लेनी चाहिए। पिताके लिए जैसी रोटी चाहिए वैसी कमला[2] बना दे तो ठीक है; अलगसे रसोई करना शोभा नही देता। हमे कठिनाइयोको पार करते हुए सयुक्त रसोई-घर चलाना सीखना है। इस प्रयोगको एक वर्षतक निभानेकी हमने प्रतिज्ञा की है। इसलिए मै मानता हूँ कि उसमे फेरफार नही करना है।

आशा है कि मै दो या तीन तारीखको यहाँसे चला जाऊँगा। ख्याल है कि वहाँ ११ तारीखसे पहले पहुँच पाऊँगा। मीराबहन कल यहाँ आयेगी और यहीसे बिहार जायेगी।

बाकी मिलनेपर या फिर लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

१. एक आश्रमवासी।
२. शकरभाईकी पुत्री।

३५५. भाषण : रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी प्रस्तावपर[1]

२९ दिसम्बर, १९२८

अध्यक्ष [पण्डित मोतीलाल नेहरू] ने तब महात्माजीसे अपना दूसरा प्रस्ताव पेश करनेकी प्रार्थना की।[2]

महात्माजीने कहा कि मैं इस प्रस्तावकी व्याख्यामें सभाका बहुत समय लेना नहीं चाहता। वह पर्याप्त स्पष्ट है। पिछले आध घंटेमें मैंने जो-कुछ सुना है उसके बाद मैं केवल यही कहना चाहूँगा कि यह प्रस्ताव केवल सच्चे कांग्रेसजनों द्वारा ही अमलमें लाया जा सकता है। असहयोगका पुनर्जीवन और संगठन केवल उन्हींके द्वारा सम्भव है। यदि वे नेहरू रिपोर्टको सफल देखना चाहते हैं तो वे कमसे-कम इतना तो कर ही सकते हैं कि आगामी महीनोंमें इस प्रस्तावको अधिकसे-अधिक एकाग्रता और अधिकसे-अधिक ईमानदारीके साथ अमलमें लायें।[3]

महात्मा गांधीने कहा कि मेरा ख्याल था कि हम संशोधनोंकी एक-दो बातें ले सकते हैं। परन्तु जब मैंने प्रस्तावित संशोधनोंपर अपनी नजर दौड़ाई तो उन्हें लगा कि ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे मूल प्रस्तावमें लेना आवश्यक हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवकोंका दल देशमें पहलेसे ही है। मेरा सुझाव है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवकोंको प्रभावशाली ढंगसे काममें लाया जाये। जहाँतक किसानों और मजदूरोंवाले सुझावका सम्बन्ध है, मैं किसानों और मजदूरोंको संगठित करनेमें लग रहा हूँ और मेरे ख्यालसे इस सभामें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो किसानोंके संगठनकी मुझसे अधिक जानकारी रखनेका दावा कर सके। इस मामलेको जितना मैं जानता हूँ उसे देखते हुए मैं इस धाराको भी शामिल करनेको तैयार नहीं हूँ, क्योंकि इसका जो सबसे कारगर भाग है वह प्रस्तावमें पहलेसे ही है। एक यह बात मैं साफ कर देना चाहता हूँ और वह पाँच प्रतिशतके बारेमें है। मैंने ऐसा कभी नहीं माना है कि चन्दा सदा पाँच प्रतिशत ही बना रहेगा। मैं यह मानता रहा हूँ कि इस कार्यक्रमपर एक सालतक स्थिर रहा जायेगा और इससे इस बातकी अच्छी तरह परीक्षा हो जायेगी कि राष्ट्र क्या-कुछ कर सकता है। यदि राष्ट्र इसे ईमानदारीसे अमलमें ला सके तो श्रीमती बेसेंटको अहिंसात्मक असहयोग, लगानबन्दी और सत्याग्रहके बारेमें जो भय

१. कलकत्ता कांग्रेसकी विषय समितिकी बैठकमें।

२. यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है, देखिए "भाषण: नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें-१", २६-१२-१९२८। संशोधित प्रस्तावके लिए देखिए पृष्ठ ३३३-३४।

३. इसके बाद डाक्टर तावेने यह संशोधन रखा कि "हाथके कते और हाथके बुने खद्दर" शब्दोंकी जगह "स्वदेशी" शब्द कर दिया जाये। परन्तु यह संशोधन पास नहीं हुआ।

है वह बिलकुल दूर हो जायेगा। सम्भावना तो यह है कि इस तरहके किसी उग्र कदम या सीधी कार्यवाहीका मौका ही नहीं आयेगा। उन्हें यह पता चल जायेगा कि देशमें ऐसा वातावरण नहीं है, और लगानबन्दी या सत्याग्रहके अन्य रूपोंसे कोई उपद्रव नहीं होगा। बारडोलीमें उन्हें सत्याग्रह या लगानबन्दीसे कोई भय नहीं था और उनका यह ख्याल था कि बारडोलीके लोगोंने जो-कुछ किया वह ठीक था, क्योंकि लोगोंको जो शिकायत थी उसे वे दिलसे महसूस करते थे और वे एकजुट होकर काम कर सकते थे। लेकिन यहाँ ऐसी शिकायत नहीं जिसे वे दिलसे महसूस करते हों, स्वराज्यके लिए वैसी उत्कण्ठा या लालसा नहीं है। यदि होती तो जिस तरहकी घोर अनियमितताओंकी ओर ध्यान दिलाया गया है, वे न होतीं। मुझे इस बातकी बड़ी खुशी है कि इन अनियमितताओंके बारेमें कुछ कहा गया। आशा है कि इस मामलेकी ठीक तरह जाँच की जायेगी और जो शिकायत है उसपर कारगर कार्यवाही की जायेगी। प्रतिशतकी बात कांग्रेसजनोंकी लगनकी एक कसौटीके तौर पर रखी गई है। यदि उसमें इस कार्यक्रमके लिए और नेहरू योजनाको ब्रिटिश पार्लियामेंटसे स्वीकार करवानेके लिए सच्ची लगन है, या उसके स्वीकार न किये जानेपर यदि वे अपनी स्वाधीनताके लिए काम करना चाहते हैं और स्वाधीनता सिर्फ शोर मचानेसे नहीं मिल सकती, तो उन्हें इस पाँच प्रतिशतपर कोई झिझक नहीं होगी। सौ रुपयेसे कमपर कोई रकम जानबूझ कर नहीं रखी गई है; मैं जानता हूँ कुछ परिवारोंके सामने बड़ी कठिनाइयाँ हैं, और इसीलिए कहीं-कहीं इस पाँच प्रतिशत तकको हटानेकी व्यवस्था रखी गई है और सम्बन्धित मामलोंको कार्य-समिति द्वारा निपटानेके लिए छोड़ दिया गया है। यदि कांग्रेसजन इस कार्यक्रमको ईमानदारीसे अमलमें लानेको तैयार हो जाते हैं, तो यह उसकी कसौटी होगी। परन्तु यदि उपयुक्त वातावरण पैदा नहीं होता, तो कुछ इक्के-दुक्के वायदोंके सिवा और कहींसे यह चन्दा नहीं आयेगा। मैं जानता हूँ कि कांग्रेस-जनोंके, या ईमानदार कांग्रेस-जनोंके दल छोड़कर चले जानेका खतरा है; क्योंकि उन्हें यह आशंका होगी कि रुपया बरबाद किया जायेगा और उसका ठीकसे उपयोग नहीं होगा। इन सब खतरोंपर मैंने विचार किया है, परन्तु जबतक कांग्रेसको प्रभावशाली बनानेके लिए इसमें इस व्यवस्थाको नहीं रखा जाता, तबतक कोई खास प्रगति नही हो सकेगी। इन सब खतरोंके बावजूद मैं पूरे साहससे काम लूँगा और कहूँगा 'नहीं', जैसा कि सब लोगोंको पता है मैं एक अदम्य आशावादी हूँ। मैं जोर देकर कहता हूँ कि आप इस प्रस्तावको अपनी मंजूरी दें। यदि आप चाहें तो उक्त धाराको हटा सकते हैं।

सभी संशोधनोंपर मतदान हुआ और वे रद कर दिये गये, और महात्मा गांधीका प्रस्ताव समूचे रूपमें रखा गया और पास हो गया।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ३०-१२-१९२८

३५६. पत्र: वसुमती पण्डितको

कलकत्ता
रविवार, ३० दिसम्बर, १९२८

चि० वसुमती,

रोज लिखनेको मन करता है, किन्तु लिख कैसे पाता? तुमने मुझे [अपना] वजन नहीं लिखा। अवश्य बम्बई जाकर सारी बातोंकी जानकारी कर लेना। इस बार उद्योग-मन्दिर जानेपर बिलकुल प्रसन्न-चित्त रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० वसुमती बहन
सत्याग्रहाश्रम, वर्धा

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०१) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य: वसुमती पण्डित

३५७. पत्र: महादेव तुकाराम बालवलकरको

स्थायी पता
आश्रम
साबरमती
३० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। लालाजीके स्मारकके लिए भेजे गये मनीआर्डरकी प्राप्तिकी सूचना आपको मिल गई होगी।

बन्दरोंके बारेमें आपके द्वारा सुझाये गये समाधान दिलचस्प तो हैं, किन्तु आप देखेंगे कि वे अहिंसात्मक नहीं हैं। मैं जिस चीजको रोकना चाहता हूँ वह बन्दरोंको तिल-तिल करके दी जानेवाली यन्त्रणा है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत महादेव तुकाराम बालवलकर
वेनगुर्ला, खादी कार्यालय

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२४) की माइक्रोफिल्मसे।

३५८. पत्र : सैयद अब्दुल लतीफको

स्थायी पता
आश्रम
साबरमती
३० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। पत्रिका मुझे मिल गई है। इसके दिलचस्प विषयोंपर मैंने एक नजर डाली है। पर मुझे खेदके साथ कहना पड़ रहा है कि जिस तरहका लेख आपको चाहिए और मैं देना चाहता हूँ, उसके लिए मेरे पास एक मिनटकी भी फुरसत नहीं है। जो हो, समयके इस अभावके लिए मुझे खेद नहीं है और उसका सीधा-सादा कारण यह है कि चाहे कितना भी क्यों न लिखा जाये, एकता लिखनेसे स्थापित नहीं होनी है, बल्कि वह हमारे हृदयोंके मूक परिवर्तनसे स्थापित होगी, और वह परिवर्तन केवल तभी आयेगा जब हममें एकताकी सच्ची इच्छा होगी।

हृदयसे आपका,

प्रो० सैयद अब्दुल लतीफ
उस्मानिया यूनिवर्सिटी कालेज
हैदराबाद (दक्षिण)

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२५) की माइक्रोफिल्मसे।

३५९. पत्र : ताराशंकरको

स्थायी पता
आश्रम
साबरमती
३० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मेरा निजी विचार यह है कि आपको दृढ़ रहना चाहिए और उससे सारा सम्पर्क तोड देना चाहिए, चाहे इसमें उस महिलाके मरनेका भी थोड़ा-बहुत खतरा क्यों न हो। सचाईके रास्तेपर चलते हुए हमें अक्सर अपने सबसे प्रियजनोंकी मृत्युका खतरा उठाना पड़ता है। मेरा दिमाग इस बारेमें बिलकुल साफ है कि सारा सम्पर्क खत्म हो जाना चाहिए।

हिन्दीका पत्र मैं वापस भेज रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत ताराशंकर
५०, बटलर होस्टल
बादशाह बाग
लखनऊ

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२६) की माइक्रोफिल्मसे।

३६०. पत्र : शचीन्द्रनाथ माइतीको

स्थायी पता
आश्रम
साबरमती
३० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका पत्र[1] मिला। मैं यह सुझाव दूंगा कि आप 'यंग इंडिया'के पृष्ठोंमें प्रकाशित आश्रमके संविधानका अध्ययन करें और यह भी कहूँगा कि कमसे-कम एक साल उसकी प्रतिज्ञाओंके अनुसार रह लें। उसके बाद मुझे लिखें कि आपने क्या प्रगति की है। तब यह जाँचने और सोचनेके लिए उपयुक्त अवसर रहेगा कि आपको आश्रममें दाखिल होना चाहिए या नहीं।

हृदयसे आपका,

श्री शचीन्द्रनाथ माइती
मिदनापुर
बंगाल

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२७) की फोटो-नकलसे।

१. पत्र-लेखक एक २३ वर्षीय नवयुवक था। वह इंग्लैंडसे लौट रहा था और आश्रममें दाखिल होना चाहता था।

३६१. पत्र : कनिकाके राजाको

कलकत्ता
३० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके[1] लिए धन्यवाद। उसका विषय मैंने नोट कर लिया है। पत्रको बिलकुल निजी समझा जायेगा।

हृदयसे आपका,

कनिकाके राजा
१९-ए, बालीगंज, सर्कुलर रोड
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२८) की माइक्रोफिल्मसे।

३६२. पत्र : लेडी आर० एल० रामनाथनको

स्थायी पता
आश्रम
साबरमती
३० दिसम्बर, १९२८

प्रिय मित्र,

आपका हृदयस्पर्शी पत्र मिला। आपके कालेजमें मैं जब गया था[2], तबकी सारी स्मृतियाँ फिरसे जाग उठी। मुझे यह जानकर बड़ा आनन्द हुआ कि आप लोग दरिद्रनारायणको भूले नहीं हैं। आपने जो अच्छी व खासी रकम इकट्ठी की है वह साबरमती भेज देनी चाहिए, जहाँ मैं लगभग ६ जनवरीतक पहुँच जाऊँगा।

हृदयसे आपका,

लेडी रामनाथन
रामनाथन कालेज
चुन्नाकम (लंका)

अंग्रेजी (एस० एन० १३८२३) की फोटो-नकलसे।

१. गांधीजीके २७ दिसम्बरके पत्रके उत्तरमें लिखा गया।

२. गांधीजी २९-११-१९२७ को कालेजमें गये थे। इस घटनाकी वर्षगाँठपर कालेजने गांधीजी को भेजनेके लिए १२०० रुपये इकट्ठे किये थे।

३६३. पत्र : कुसुम देसाईको

३० दिसम्बर, १९२८

चि० कुसुम,

तेरे पत्र नियमित मिलते रहते है। इसके पहुँचनेतक तो प्रभावती आ गई होगी।

तू सबकी सेवा कर रही है, इससे मुझे शान्ति मिलती है। सरोजिनीदेवी से कहना कि मुझे कोई बात नही लिखनी थी इसलिए नही लिखा। अब तो चार-पाँच दिनमे मिलेगे ही। धारणा तो छः तारीखको वहाँ पहुँचनेकी है। अब डाक जा रही है इसलिए अधिक नही लिखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७७४)की फोटो-नकलसे।

३६४. पत्र : छगनलाल जोशीको

३० दिसम्बर, १९२८

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। देखता हूँ कि मैं तीन तारीखसे पहले यहाँसे नही निकल पाऊँगा।

मेरे वहाँ पहुँचनेपर तुम आफिसके कामसे थोडी फुरसत जरूर ले लेना।

यहाँकी समस्या इस समय बहुत उलझी हुई है। अन्त क्या होगा, यह बिलकुल नही कहा जा सकता।

प्रश्न यह है कि मन्दिर बाहरके खादी-कार्यको कबतक देख और निभा सकता है। लक्ष्मीदासका मत विचारणीय तो है ही। प्रभुदासका जो खर्च है वह तो उसके वहाँ रहनेके कारण सहन करना पड़ रहा है। शान्तिलालके[1] बारेमे मै विचार कर रहा हूँ। छगनलालके साथ बात की है।

मुझे तो यही लगता है कि किसीके माता-पिता आये और मन्दिरकी रसोईमे खाना न खा सके तो उनके लिए हम अलग प्रबन्ध नही कर सकते। हम मन्दिरको किस दिशामे ले जाना चाहते है इसीके ऊपर हमारे निर्णयका आधार रहेगा। यदि उसे आश्रम बनानेका इरादा हो तो निजी सम्बन्धोको क्षीण करना चाहिए। जो

१. शान्तिलाल जोशी प्रभुदासके सहायक कार्यकर्ता।

इस आदर्शसे दूर जाकर सामान्य व्यवहारमे पडना हो तो अलग रसोईका प्रचलन बढेगा ही। यदि मेरे लिए हलवा बनाना जरूरी हो तो उसे मन्दिरके रसोई-घरमे ही पकाना होगा। यदि मेरे सम्बन्धी आये तो मन्दिरकी रसोई ही मेरी रसोई है। अपने मामा-चाचाको यही समझाना चाहिए कि हममे से प्रत्येकके वशकी मर्यादा मन्दिरमें आनेपर बढ गई है। मुझे तो यही लगता है कि हमने जो दो अपवाद[1] माने है उनसे आगे नही बढना चाहिए। इस सयुक्त रसोईमे जो न समा सकें वे चले जाये, इसे ही सहन करना ठीक है।

बलवीरके बारेमे मुझे भी देवशर्माजीका[2] पत्र मिल गया है। मौका मिलते ही उसे रवाना कर देना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – श्री छगनलाल जोशीने

३६५. पत्र: आश्रमकी बहनोंको

कलकत्ता
मौनवार, ३१ दिसम्बर, १९२८

बहनो,

मै आशा तो करता हूँ कि यह मेरा आखिरी खत है। अभीतक तो स्थिति यही है कि मै वहाँ इतवारको सवेरे पहुँच जाऊँगा।

आज तो इतना ही लिखनेका समय है कि आकर मुझे तुमसे हिसाब लेना है। नया लिखनेकी जरूरत भी कहाँ है? यदि तुम स्थिरचित्त हो गई होओ, रसोई-घरमे शान्ति स्थापित कर सकी होओ और प्रार्थनामें नियमित बन गई होओ, तो मै समझूँगा कि बहुत कर लिया।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३६८७)की फोटो-नकलसे।

१. नारणदास गांधी और वालजी देसाई।
२. गुरुकुल कांगड़ीके एक शिक्षक।

३६६. पत्र : छगनलाल जोशीको

मौनवार [३१ दिसम्बर, १९२८][1]

चि० छगनलाल,

आज अधिक कुछ लिखनेको नहीं है। मुझे आशा है कि मैं यहाँसे गुरुवारको निकलकर रविवारको जो ट्रेन सुबह छ: बजे पहुँचती है, उससे अहमदाबाद पहुँच जाऊँगा। मुझे एक घंटेके अन्दर ही कांग्रेसकी बैठकमें पहुँच जाना होगा। मैं जब वहाँ आऊँ, तो जिन-जिन बातोंके विषयमें लिखता आया हूँ, उनपर सब ध्यान देते पाये जायें तो कितना अच्छा हो।

वल्लभभाई और महादेव तो आज ही बारडोली जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – श्री छगनलाल जोशीने

३६७. भाषण : नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें – ३[2]

३१ दिसम्बर, १९२८

कांग्रेसकी सोमवारकी बैठकमें महात्मा गांधीने वह प्रस्ताव पेश किया जो आपसी समझौतेके आधारपर तैयार किया गया था।[3]

प्रस्ताव पेश करते हुए महात्मा गांधीने हिन्दीमें एक संक्षिप्त भाषण दिया। लाउड-स्पीकरोंके खराब हो जानेसे उनका भाषण नहीं सुना जा सका और पण्डित जवाहरलाल नेहरूने उनके भाषणका एक-एक वाक्य दोहराया।

महात्माजीने अपने भाषणमें कहा कि वे काफी सोच-विचार और पूरी परिस्थितिकी सावधानीसे जाँच करनेके बाद ही इस प्रस्तावको सभाके सामने रख रहे हैं। सभामें नौजवान दल पूर्ण स्वाधीनताके लिए बेताब था।[4]

१. ३ तारीखको कलकत्तासे रवाना होकर अहमदाबाद जानेके उल्लेखसे। उससे पहलेका मौनवार ३१ दिसम्बरको पड़ता था।

२. यह २-१-१९२९ के आजमें दिये गये विवरणसे मिला लिया गया है। भाषण कांग्रेसके खुले अधिवेशनमें दिया गया था।

३. यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है। देखिए "भाषण : नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें–२", २८-१२-१९२८।

४. इससे आगेका अंश आजसे लिया गया है।

यदि आप लोग भारतको स्वतन्त्र करना चाहते हैं तो औपनिवेशिक दर्जे और स्वाधीनताकी बहस बन्द कीजिए और बस इतना याद रखिए कि स्वराज्य वही है जिसकी रूपरेखा हमने यहाँ [इस रिपोर्टमे] रखी है। नेहरू समितिकी उस सिफारिशका समर्थन करनेके लिए मै साबरमती आश्रमसे इतनी दूर यहाँ आया हूँ, और यह इसलिए कि यह नेहरू रिपोर्ट मद्रास काग्रेसके आदेशका प्रत्यक्ष फल है। आज तो हम इसे ही एक प्रकारका स्वराज्य मान सकते है। कल उसका रूप क्या होगा, मै नही जानता। हमे सत्यके लिए सदा आग्रह करना चाहिए। यदि लोग सत्य, आत्म-सम्मान, प्रतिज्ञाओ और परम्पराका त्याग कर देते है तो वे स्वतन्त्रता प्राप्त नही कर सकते, क्योकि वे उसके अयोग्य है।

आप उस समझौतेका सम्मान कीजिए जो मैंने विषय समितिमे तैयार किया है। यदि आप समझते है कि मै काग्रेसके आदर्शको नीचा कर रहा हूँ तो आप मेरा खण्डन कीजिए और मेरी बात मत सुनिए। मै नही चाहता कि आप इस प्रस्तावको सिर्फ इसलिए स्वीकार कर ले कि यह मैंने रखा है। आप इसे तभी स्वीकार करे जब आप निर्धारित कार्यक्रमको पूरा करनेको तैयार हो। यदि आप इसे अस्वीकार करते है तो आपको कोई और अध्यक्ष चुनना होगा, क्योकि आपके अध्यक्ष इस प्रस्ताव-के प्रधान प्रेरक है। बहुमत प्राप्त करनेके लिए गन्दी जोड-तोड करनेमे मेरा विश्वास नही है। इससे स्वराज्यमे और देर लगेगी। यदि आप स्वराज्य चाहते है तो इस प्रस्तावके पक्षमे राय देकर इस तरहके सब विचार अपने मनसे हटा दीजिए।[1]

महात्मा गांधीने बहसका उत्तर देते हुए कहा कि उन्होंने ये बातें खास तौरपर बंगालके युवकोंको लक्ष्य करके कही हैं। यदि वे एक क्षणको भी यह सोचते है कि एक बेचारा गुजराती बंगालके युवकोंको समझ नहीं सकता, तो यह बंगालके युवकोकी एक भारी भूल होगी।[2]

मै आपसे यह प्रार्थना करूँगा कि एक साथी कार्यकर्त्ताकी हैसियतसे जब मै आपसे कुछ शब्द कहनेकी कोशिश कर रहा हूँ तो आप मुझे बीचमे न टोके। परन्तु यदि आप मुझे बीचमे टोकना ही चाहते है, तो मै बैठ जाऊँगा और भाषण नही दूँगा लेकिन यदि आप मुझे सुनना चाहते है तो मेरी बात बिलकुल खामोशीसे सुनिए। मै यह चीज बिलकुल साफ कर देना चाहता हूँ कि यदि आप बुद्धिमान है तो स्वाधीनता और औपनिवेशिक दर्जेके झगडेके इस भूतको अपने दिमागसे निकाल दीजिए। औपनिवेशिक दर्जे और स्वाधीनतामे कोई विरोध नही है। मै कोई ऐसा औपनिवेशिक दर्जा नही चाहता जिससे मेरे पूर्ण विकासमे, मेरी स्वाधीनतामे बाधा पडे। मेरा कहना है कि ये शब्द भ्रामक है। इसलिए मै यह कहना चाहता हूँ कि हम ऐसी स्वाधीनता चाहते है जिससे हम अपना पूरा विकास कर सके हम स्वय अपने भाग्यके निर्माता है, और मेरा कहना यह है कि नेहरू रिपोर्टके रचयिता आपके द्वारा नियुक्त आपके अपने देशवासी है। इस दस्तावेजकी तैयारीमे सरकारका कोई हाथ

१. इससे आगेका अंश १-१-१९२९ की *अमृतबाजार पत्रिका*से लिया गया है।
२. "नहीं, नहीं" की दो-तीन आवाजें सुनाई पडीं।

नही रहा है। इस दस्तावेजका उद्गम मद्रास कांग्रेस है। मद्रास कांग्रेस द्वारा ही यह समिति नियुक्त की गई थी; और मैं आपसे फिलहाल इस रिपोर्टका समर्थन करनेके लिए कहता हूँ। कल तीसरे पहर मैंने सुना कि उन लोगोकी ओरसे जिनके बारेमे मेरा यह ख्याल था कि वे मेरे प्रस्तावके समर्थक हैं, पूरी गम्भीरताके साथ एक संशोधन रखा जानेवाला है, तभीसे मुझे यह सवाल परेशान कर रहा है।

मैंने जो प्रस्ताव इस सभाके सम्मुख रखा है, वह एक समझौतेका परिणाम है। जो प्रस्ताव मैंने शुरूमे तैयार किया था, वह आपने देखा नही है। जो प्रस्ताव छापा गया था और विषय समितिमे रखा गया था, वह भी एक प्रकारसे अनौपचारिक समझौते या एक तरहकी सहमतिका परिणाम था — अब आप उसके लिए कोई भी शब्द प्रयुक्त कर सकते हैं। वह प्रस्ताव अकेले मैंने तैयार नही किया था, उसमे कई दिमाग लगे थे। कोशिश यह रही थी कि जहाँतक सम्भव हो, ज्यादासे-ज्यादा पक्षोको सन्तोष दिया जा सके। उस प्रस्तावपर विभिन्न लोगोने, ऐसे लोगोने जिन्हे अलग-अलग पक्षोका प्रतिनिधि माना जाता था, विचार-विमर्श किया था। मेरा मतलब यह नही है कि आप उस प्रस्तावका समर्थन करनेके लिए बाध्य हैं, पर मैं यह जरूर कहना चाहता हूँ कि जो लोग उस प्रस्तावके पीछे समझे जाते हैं वे नैतिक दृष्टिसे उसका समर्थन करनेके लिए बाध्य हैं।

यदि कोई इसके आधारपर यह सोचे कि मैं आपकी भावुकताको उभार रहा हूँ तो यह उसकी गलती होगी। व्यक्तिकी आत्मसम्मानकी भावनाको जगानेकी कोशिश की जा सकती है और मुझे इस बातमे गर्व महसूस होता है कि मैंने उसी भावनाको जगानेकी कोशिश की है। जो लोग इस समझौतेके पीछे थे यदि उन्हे बादमे यह लगा हो कि उन्होने भारी भूल की है और उन्हे अपनी स्थिति दुनियाके आगे अवश्य स्पष्ट करनी चाहिए और यह कहना चाहिए कि जो-कुछ उन्होने पहले किया था उसके लिए उन्हे पश्चात्ताप है, तो मेरा कहना यह है कि पश्चात्ताप अपेक्षाकृत एक अधिक कडी धातुकी बनी चीज होती है। वह संशोधनोका बना नही होता। उसके लिए दूसरे कडे कदम उठाने होगे। जो लोग इस समझौतेके पीछे थे यदि वे यह समझते है कि उन्होने कोई ऐसी भारी भूल नही की है, बल्कि भूल सिर्फ दाँव-पेचकी हुई है या ऐसी भूल हुई है जिससे कोई पक्ष नाराज हो सकता है, तो मेरा कहना यह है कि उस भूलको पी जाना और इस समझौतेपर कायम रहना उनका एक अनिवार्य कर्त्तव्य है। यदि आपमे आत्मसम्मानकी वह भावना नही है और कोई वचन देते समय आपमे यह निश्चय नही है कि वह हर कीमतपर पूरा किया जाना चाहिए, तो मैं कहूँगा कि आप इस राष्ट्रको स्वतन्त्र नही कर सकेंगे।

आप अपने ओठोसे स्वाधीनताका नाम उसी तरह जप सकते हैं जैसे कि मुसलमान अल्लाहका नाम या एक धार्मिक हिन्दू कृष्ण या रामका नाम जपता है। परन्तु यदि उसके पीछे आत्मसम्मानकी भावना नही है तो वह सब जप बिलकुल थोथा रहेगा। यदि आप अपने खुदके ही शब्दोपर कायम रहनेको तैयार नही हैं, तो स्वाधीनता कहाँ रहेगी? स्वाधीनता आखिरकार कोई अधिक कडी ठोस बात है। वह

शब्दोकी तोड-मरोडसे निर्मित नही होती। यदि वाइसराय हमारा अपमान करते है या यूरोपीय वाणिज्य मण्डलके प्रधान हमारा अपमान करते है और यदि आप इस राष्ट्रके सम्मानकी रक्षा करना चाहते है, और कहते है कि हम अपने सम्मानकी रक्षा करनेके लिए स्वाधीनता चाहते है, तो मेरा कहना यह है कि इस तरह आप स्वाधीनताको दलदलमे घसीट रहे है। एक मिनटके लिए भी यह मत सोचिए कि मै आपका वोट ऐठनेकी कोशिश कर रहा हूँ। यकीन मानिए ऐसी कोई वात मेरे मनमे नही है।

मै नवयुवकोके हाथो पराजित होना सहन कर लूँगा, पर मुझे उनके खुदके सम्मानकी चिन्ता है। यदि आप नवयुवक, जो इस सशोधनके[1] पक्षमे है, जो-कुछ मै आपसे कह रहा हूँ उसके महत्त्वको समझते हो, तो आप इस समय यह कह सकते है कि आपने भारी भूल की है, पर फिर भी हम उस समझौतेपर कायम रहना चाहते है क्योकि हमारे नेताओमे समझौता हो गया है। यदि आप यह सोचते है कि यह कोई सम्मानका सवाल नही है, यदि आप यह सोचते है कि मेरे प्रस्तावको स्वीकार करनेसे देशकी स्वाधीनतासे हाथ धोना पडेगा, तो मै आपसे कहूँगा कि आप मेरे प्रस्तावको भारी वहुमतसे ठुकरा दे। लेकिन यदि आप मेरे प्रस्तावको भारी या थोडे-वहुत वहुमतसे स्वीकार कर लेते है, तो इस प्रस्तावके पक्षमे राय देनेवालोको यह समझ लेना चाहिए कि इसके लिए काम करना उनके लिए एक सम्मानका सवाल हो जायेगा, क्योकि वे फिर इसके लिए वचनवद्ध हो जाते है।

पर आप इतने परेशान क्यो है, आप इस हीन-भावनासे व्यथित होकर कष्ट क्यो भोग रहे है कि एक सालके अन्दर हम ब्रिटिश पार्लियामेंटको विश्वास नही दिला सकेगे कि हम अपनी सेनाओको सुव्यवस्थित नही कर सकेगे और अपनेमे आवश्यक शक्ति पैदा नही कर सकेगे? स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, ठीक उसी तरह जैसे कि फेफडोसे साँस लेना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह वात आपके लिए आपके साँस लेनेकी तरह ही स्वाभाविक होनी चाहिए। आप इतने भयभीत क्यो है?

मुझे पूर्ण विश्वास है, यदि आप लोग मेरी सहायता करे और इस कार्यक्रम पर ईमानदारी और वुद्धिमानीसे अमल करे तो मै यह वायदा करता हूँ कि स्वराज्य एक सालके अन्दर आ जायेगा। मै चाहता हूँ कि आप योग्य मृत्युका वरण करे। मै चाहता हूँ कि आप अपनेमे पूर्ण साहस विकसित करे और अपने प्राण सुचिन्तित साहसके साथ त्यागे। यदि आपमे उतना साहस है, यदि आप गोलियोके सामने सीना खोलकर खडे हो सकते है, तो मै यह वादा करता हूँ कि जो-कुछ भी आप चाहते है वह सव प्राप्त कर सकेगे। आप किसी छायासे न डरे। दीर्घकाल तक चलनेवाले सन्तापसे न डरे। मै यह मानता हूँ कि यह प्रक्रिया दीर्घकाल तक चलनेवाली है। परन्तु देशकी आजकी परिस्थितिमे, जब हम अपने भाई-बहनोपर, अपने माता-पिता और दलके नेताओपर भरोसा नही कर सकते, जब हम किसीपर

१. सुभाषचन्द्र बोस द्वारा रखा गया, जिसमें औपनिवेशिक दर्जेके स्वराज्यको अस्वीकार किया गया था और पूर्ण स्वाधीनता भारतीय जनताका लक्ष्य घोषित किया गया था।

भी भरोसा नही कर सकते, जब हममें अपने सम्मानकी भावना नही है, जब हम अपने शब्दोको २४ घंटोमे ही बदल देते हैं, स्वाधीनताकी बात मत कीजिए। परन्तु यदि आपमें वह शान्त साहस, ध्येयकी सच्ची निष्ठा और दृढ सकल्प पैदा हो जाये जो अपनी माँगके उत्तरमे 'ना' स्वीकार करनेको तैयार ही न हो तो मैं यह वादा करता हूँ कि आपकी बडीसे-बडी इच्छा भी पूरी होकर रहेगी।

इन दिनो इस बातकी बडी चर्चा रही है कि हम काग्रेसका चुनाव अभियान ईमानदारीसे नही चला पा रहे है। मैंने जब यह सुना कि प्रतिनिधि-पत्रो (डेलिगेट-टिकटो)का लेन-देन हुआ है और वे हुडियोकी तरह बिके हैं, और जैसे-जैसे दिन बीतते गये उनके भाव बढते गये है—एक रुपयेका टिकट पन्द्रह रुपये तकमें बिका है—तो मेरे शरीरमे आग लग गई। यह काग्रेसके लिए लज्जाकी बात है। मैं आपको बताता हूँ कि इन तरीकोसे आपको स्वाधीनता मिलनेवाली नही है। बल्कि इसके विपरीत आप अपनी बेडियाँ खुद तैयार कर रहे है; आप इनसे नही बच सकेंगे क्योकि वे आपकी अपनी इच्छासे तैयार की गई बेडियाँ होगी।

ईश्वर इस निर्णयमे आपका पथ-प्रदर्शन करे।

मैं नही चाहता कि आप इस प्रश्नका निर्णय इस आधारपर करे कि मैं इस प्रस्तावको पेश करनेवाला हूँ या पण्डित मोतीलाल नेहरू इस प्रस्तावके पीछे है। इसका निर्णय आपको शान्तिसे खूब सोच-विचारकर करना है, पर उसमे आत्म-सम्मान रहना चाहिए। (जोरसे तालियाँ)[1]

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १-१-१९२९
आज, २-१-१९२९

३६८. भाषण: रचनात्मक कार्यक्रमपर, कलकत्ता कांग्रेसमें

१ जनवरी, १९२९

महात्माजीने पहले हिन्दीमें प्रस्ताव समझाया। फिर अंग्रेजीमें बोलते हुए उन्होंने कहा:

मैं इस प्रस्तावपर आपका अधिक समय नही लेना चाहता। यह उस पहले प्रस्तावका[2] ही अभिन्न अग है जिसे कल आपने पास करनेकी कृपा की थी। विषय समितिने केवल सुविधाकी दृष्टिसे इस एक प्रस्तावको दो भागोमे विभाजित करनेपर जोर दिया, एक नेहरू समितिकी रिपोर्टसे सम्बन्धित और दूसरा उस रिपोर्टपर आधारित कार्यक्रमसे सम्बन्धित। इसीलिए पहले प्रस्तावका यह दूसरा भाग मैं आज

१. तब संशोधनोंपर मतदान हुआ और वे सब अस्वीकृत हो गये। इसके बाद गांधीजीके प्रस्तावपर अलगसे मतदान हुआ और वह पास हो गया।

२. देखिए "भाषण: नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें–१", २६-१२-१९२८।

आपके सामने रख रहा हूँ। पर आखिरकार यह अच्छा ही हुआ 'जिसका अन्त भला सो भला।' अव मैं आपको यह शुभ समाचार दे सकता हूँ कि इस व्यवस्थाके कारण विना किसी तरहके सकोचके पूर्ण समझौता हो गया है। उस प्रस्तावको मैं आपके आगे पढना नही चाहता क्योकि वह आपके सामने आ चुका है, और मैं अपनी *आवाज, अपनी शक्ति और अपने समयको कमसे-कम खर्च करनेकी* कोशिश कर रहा हूँ। इसलिए आपमे और मुझमे यह समझौता हो जाना चाहिए कि मैं इस प्रस्तावको न पढूं।

इस प्रस्तावके लिए दो सशोधन है और इन सशोधनोमे से श्री सत्यमूर्तिने दूसरे-को चुना है। लेकिन क्योकि मैं उनके सुझावोसे अव सहमत हूँ, इसलिए उन्होने मुझे यह अधिकार दे दिया है कि मैं उनके वैकल्पिक सशोधनको वापस ले लूं। जो सुझाव मैंने स्वीकार कर लिये है वे मैं आपके सामने रख रहा हूँ। आप देखेंगे कि अपने वैकल्पिक प्रस्तावमे वे किसानो और मजदूरोके सगठनकी वात कहते है। जहाँतक किसानोका सम्वन्ध है, आपको मेरे प्रस्तावमे ऐसा उल्लेख मिलेगा जिसमे स्वयसेवकोसे ग्राम पुनर्निर्माण कार्यके लिए अपना नाम लिखानेके लिए कहा गया है। यह ग्राम पुनर्निर्माण कार्य किसानो और मजदूरोका आर्थिक आधारपर सगठन ही है और कुछ नही है। हम किसानोके हृदयोमे प्रवेश करना चाहते है। हम अपनेको जन-साधारणके साथ विलकुल एक कर देना चाहते है। उनके दु खोको हम अपना दु ख वनाना चाहते है। हम चाहते है कि वे हर चीजको जैसा महसूस करते है हम भी वैसा ही महसूस करे, ताकि जिनकी मेहनतपर, वस्तुत हम शहरके लोग जीवित है, उनकी दशा सुधारी जा सके। इसलिए मजदूरोका और हमारा ध्येय एक होना चाहिए। इससे एक मिनटके लिए भी यह नही समझना चाहिए कि शहरके मजदूरो और कामगारोकी हमे उपेक्षा करनी है। मैं ऐसा सोच ही नही सकता, क्योकि मैं खुद मजदूरोको सगठित कर रहा हूँ, और पिछले ३०-३५ वर्षोसे मैं अपनेको मजदूरोके साथ एक करता आ रहा हूँ। इसलिए सशोधनके उस अगको स्वीकार करनेमे मुझे कोई झिझक नही है। दूसरा सुझाव जो मैंने स्वीकार कर लिया है वह टैक्सके सम्वन्ध-मे है। अपने प्रस्तावमे मैंने सौ रुपयेसे अधिककी आमदनीपर पाँच प्रतिशतका सुझाव रखा था। व्यक्तिगत रूपसे मैं उस धाराको पसन्द करूँगा। पर मेरे बहुत-से मित्रो और वहुत-से कांग्रेस-जनोने यह सुझाया है कि इससे लोगोको कठिनाई होगी। लोग वस्तुत इतना दे नही सकते, दे ही नही सकते। यदि वे नही दे सकते तो खुद उस शर्तमे ही उसका एक इलाज है। सुझाव यह था कि वे अभीतक अपनेको उस कठोर अनुशासनमे ढालनेके आदी नही है जिससे स्त्री-पुरुष अपने-आप पैसा देना एक आवश्यक दायित्व समझने लगते है। इस तर्ककी शक्तिको मैंने अनुभव किया है और इसीलिए यह सुझाव स्वीकार कर लिया है जिससे वह धारा अव फिरसे तैयार की जायेगी। मैं आपको अभी यह नही वता रहा हूँ कि वह फिरसे किस तरह तैयार की जानी है, क्योकि उस धाराका मजमून मेरे सामने नही है और आप खुद भी यह नही चाहेगे कि मैं अभी उसके वारेमे आपको परेशान करूँ। पर जो-कुछ मैं

अभी आपसे कह रहा हूँ आप उसके आधारपर उसके आशयको ग्रहण कर सकेंगे। उस धाराकी शब्द-रचना उसी विधिके अनुसार होगी जैसी कि देशबन्धु दासने एक अन्य चीजके लिए सुझाई थी। वह उसके अनुसार कार्यान्वित की जा सकेगी अर्थात् कहा जायेगा कि कांग्रेस प्रत्येक कांग्रेसजनसे यह अपेक्षा रखती है कि वह कांग्रेसके ध्येयको आगे बढ़ानेके लिए, विशेषकर उस कार्यक्रमको आरम्भ करनेके लिए जो पूर्वोक्त प्रस्तावमें निर्धारित किया गया है, प्रति मास अपने सामर्थ्यके अनुसार कांग्रेस-कोषमें चन्दा देगा। छपे पत्रकी आखिरी धारामें जो शब्द-रचना है उसकी जगह ऐसी शब्द-रचना होगी। मैं आपका और समय लेना नहीं चाहता, पर मैं आपको एक चेतावनी दिये बिना नहीं रह सकता। मैं चाहता हूँ कि आप इस प्रस्तावको गम्भीरतासे लें और मैं चाहता हूँ कि आप इस प्रस्तावका पूरी गम्भीरतासे पालन करें। मैं यह नहीं चाहता कि आप अभीसे इस प्रस्तावकी स्वीकृतिमें अपने हाथ उठा लें और उसके बाद पूरे बारह महीने इसे भुलाये रखें और अखिल भारतीय कांग्रेस समिति या कार्यसमिति अथवा अध्यक्षसे यह अपेक्षा रखें कि आपके बदले वे कोई चमत्कार कर दिखायेंगे। अध्यक्ष या अखिल भारतीय कांग्रेस समितिके पास कोई जादूका डंडा नहीं है। जादूका डंडा तो आपका अपना दृढ़ संकल्प ही है। एक यही जादूका डंडा आपको स्वराज्य दिलायेगा और देशको शांति और सुख प्रदान करेगा। इसलिए मेरी यह प्रार्थना है कि जबतक कि यहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति इस कार्यक्रमकी उन सभी बातोंको जो उसपर लागू होती हैं, व्यक्तिगत रूपसे गम्भीरतापूर्वक पालन करनेको तैयार न हो, और जबतक आप कांग्रेसके सन्देशको इन बारह महीनोंमें निरन्तर घर-घर पहुँचानेका संकल्प न कर लें, इस प्रस्तावको इन दो स्वीकृत सुझावों सहित आप तबतक पास न करें। मैं चाहता हूँ कि इस अवधिके बाद मुझे पूर्णतया भिन्न वातावरण दिखे। आज तो हममें से हर-एकके चेहरेपर निराशा और अविश्वास दिखाई पड़ता है।

इन शब्दोंके साथ मैं यह प्रस्ताव आपके आगे रखता हूँ और आपको बहुत ही धैर्यके साथ मेरी बात सुननेके लिए धन्यवाद देता हूँ।[1] (देर तक जोरसे तालियाँ)

प्रस्ताव इस प्रकार था :

इस बीच कांग्रेसकी गतिविधियाँ इस प्रकार रहेंगी :

(१) विधान-सभाओंमें और उसके बाहर मादक द्रव्यों और पेयोंके पूर्ण निषेधके लिए हर तरहकी कोशिश की जायेगी, जहाँ आवश्यक और सम्भव होगा वहाँ शराब और मादक द्रव्योंकी दूकानोंपर धरना दिया जायेगा।

(२) विधान-सभाओंमें और उसके बाहर विदेशी वस्त्रके बहिष्कारके लिए तुरन्त स्थानीय परिस्थितियोंके अनुरूप तरीके अपनाये जायेंगे और हाथके

१. श्रीनिवास आयंगारने प्रस्तावका अनुमोदन किया। पण्डित जवाहरलाल नेहरूने वह प्रस्ताव पढ़कर सुनाया जो गांधीजी द्वारा श्री सत्यमूर्तिसे सलाह-मशविरा करके ठीक किया गया था और फिरसे हिन्दीमें समझाया। इसके बाद प्रस्तावपर मतदान हुआ और वह पास हो गया। विरोधमें केवल दो मत थे।

कते और हाथके बुने खद्दरके उत्पादन और उपयोगको समर्थन और प्रोत्साहन दिया जायेगा।

(३) जहाँ-जहाँ किन्ही खास शिकायतोका पता चलेगा और जहाँके लोग इसके लिए तैयार होगे, उन्हे जैसा कि हालमे बारडोलीमे किया गया था, अहिंसात्मक कार्रवाईसे दूर करनेकी कोशिश की जायेगी।

(४) कांग्रेस टिकटपर चुने गये विधान-सभाओके सदस्य अपना अधिकतर समय कांग्रेस समिति द्वारा समय-समयपर निर्धारित रचनात्मक कार्यमे लगायेगे।

(५) नये सदस्य भर्ती करके और अधिक कडा अनुशासन लागू करके कांग्रेस सगठनको निर्दोष बनाया जायेगा।

(६) स्त्रियोकी अक्षमताओको दूर करनेके उपाय किये जायेगे और उन्हे राष्ट्रीय निर्माणमे अपनी उचित भूमिका अदा करनेके लिए आमन्त्रित और प्रोत्साहित किया जायेगा।

(७) देशको सामाजिक कुप्रथाओसे मुक्त करनेके उपाय किये जायेगे।

(८) सभी हिन्दू कांग्रेस-जनोका यह कर्त्तव्य होगा कि वे अस्पृश्यताको मिटानेके लिए अधिकसे-अधिक कोशिश करेगे और तथाकथित अस्पृश्योको अपनी अक्षमताओको दूर करने और अपनी दशाको सुधारनेके प्रयासमें यथासम्भव पूरी-पूरी सहायता देगे।

(९) स्वयसेवक भर्ती किये जायेगे जो शहरी मजदूरोके बीच काम करेगे और चरखे व खद्दरके अतिरिक्त ग्राम-पुनर्निर्माणके अन्य कार्योको सँभालेगे।

(१०) राष्ट्र-निर्माणके कार्यको उसके सभी क्षेत्रोमे, आगे बढानेके लिए उपयुक्त अन्य ऐसे कार्य भी किये जायेगे जो राष्ट्रीय प्रयासमे विभिन्न धन्धोमे लगे सभी लोगोका सहयोग प्राप्त करनेके लिए उपयुक्त होगे।

पूर्वोक्त कार्यक्रममे उल्लिखित कार्योके लिए धन जुटानेकी दृष्टिसे कांग्रेस हर कांग्रेस-जनसे अपने सामर्थ्यके अनुसार, अपनी आयका कुछ भाग कांग्रेस-कोषमे देनेकी अपेक्षा रखती है।

[अंग्रेजीसे]
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके ४३वे अधिवेशनकी रिपोर्ट, १९२८

३६९. भाषण: सर्वदलीय सम्मेलन, कलकत्तामें[1]

१ जनवरी, १९२९

महात्माजीने यह प्रस्ताव पेश किया:

इस सम्मेलनका यह मत है कि सर्वदलीय समितिकी रिपोर्टकी एकसे छः तककी धाराओमे शामिल सिफारिशोपर इस सम्मेलन द्वारा पास किये गये प्रस्ताव राष्ट्रके इस सकल्पको अच्छी तरह प्रकट कर देते है कि उसे जो सविधान मान्य है उसका स्वरूप और उसके मुख्य सिद्धान्त क्या होने चाहिए। इस सम्मेलनका यह भी मत है कि सिवाय उन मुद्दोके जिनपर कुछ उपस्थित दलोने अपनी असहमति अकित की है, साम्प्रदायिक समस्याके समाधानके मूल आधारपर जिसकी पूर्वोक्त समितिने सिफारिश की है, आम मतैक्य है।

यह सम्मेलन अनिश्चित कालके लिए स्थगित हो रहा है और भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसकी कार्य-समितिको यह अधिकार दे रहा है कि वह समितिकी सिफारिशोकी और भी विस्तृत जाँचके लिए जब आवश्यक हो फिर सम्मेलन बुला सकती है।

इसे पेश करते हुए महात्माजीने सम्मेलनमें अपनी उपस्थितिके लिए क्षमा माँगी; लेकिन साथ ही यह बताया कि मै यहाँ अध्यक्षके एक कानूनी सलाहकारकी हैसियतसे आया हूँ। अध्यक्ष मुझसे और पण्डित मोतीलालसे मिले थे और उन्होंने मुझसे सम्मेलनमें उपस्थित होने और अपनी सलाह द्वारा सहायता करनेकी प्रार्थना की थी। कार्यकी सुगमताके लिए मै इस प्रस्तावको पेश कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि इसपर अधिक विवाद नहीं होगा और कोई संशोधन नहीं रखा जायेगा। अपना भाषण जारी रखते हुए महात्माजीने कहा:

यद्यपि हमने नेहरू रिपोर्ट लगभग समाप्त कर ली है और उसे बिना अधिक हेर-फेरके स्वीकार कर लिया है, फिर भी अभी करनेको बहुत-कुछ रहता है। देशमे परिस्थिति ऐसी है कि हमे नेहरू रिपोर्ट और इस सम्मेलन, दोनोको बरकरार रखना होगा।

मुस्लिम प्रश्नके बारेमें सम्मेलन सभी पक्षोंको सन्तुष्ट नहीं कर सका है। सिखों-को भी सन्तुष्ट करना है। महात्माजीने आगे कहा:

व्यक्तिगत रूपसे मै यह सोचता हूँ कि सिखोके साथ पूर्ण न्याय नही किया गया है। इसलिए यह आवश्यक है कि आप सब मिलकर इसपर सोचे, अपने सुझाव

१. डा० अन्सारीने इसकी अध्यक्षता की। उपस्थित लोगोंमें डा० मुंजे, डा० बेसेंट, सर्वश्री सत्यमूर्ति, भगवानदास, विजयराघवाचारियर, विपिन पाल, बी० दास, सत्येन मित्र, देवरत्न शर्मा, एस० ए० ब्रेल्वी, नीलकान्त दास, मणिलाल कोठारी, हीरेन्द्रनाथ दत्त, ललित दास और श्यामसुन्दर चक्रवर्ती भी थे।

दे और इस अव्यवस्थाको दूर करे। उत्कलका प्रश्न भी अभी सुलझाया जाना है। वह परेशानीका कारण बना हुआ है। यह प्रश्न मानो एक दुःस्वप्न है। यह मेरे सभी भाषणोमे आ जाता है। उत्कलके प्रतिनिधियोने उस दिन जो प्रदर्शनी दिखाई वह ऐसी थी जैसे किसी पशुके अग काटे जा रहे हो।

नेहरू रिपोर्टमे इधर-उधर कुछ मामूली हेर-फेर हो सकता है, पर वह पूरी-की-पूरी नही बदली जा सकती। केवल तफसीलमे हम कुछ परिवर्तन कर सकते है। यदि मुसलमानोको सन्तुष्ट करनेके लिए कोई बात जरूरी हो तो उस हालतमे भी हमे इसमे कुछ हेरफेर करना होगा। लेकिन यदि मुसलमान कोई एकदम चौका देनेवाली बात रखे, तो नेहरू समिति ऐसा कुछ नही कर सकेगी। वह किसी अन्य सगठनका काम होगा।

महात्माजीने भाषण समाप्त करते हुए यह आशा प्रकट की कि यह प्रस्ताव बिना किसी संशोधनके[1] पास हो जायेगा।

महात्माजीने यह घोषणा की कि परस्पर विचार-विमर्श करके हम एक समझौते पर पहुँच गये है और हमने प्रस्तावके[2] पिछले भागमें कुछ परिवर्तन करना स्वीकार कर लिया है।

यह सम्मेलन अनिश्चित कालके लिए स्थगित हो रहा है। और आवश्यकता पडनेपर अपने कार्यको पूरा करनेके लिए फिर आयोजित किया जायेगा।

[अंग्रेजीसे]

फॉरवर्ड, २-१-१९२९

३७०. भेंट : पत्र-प्रतिनिधियोंसे[3]

कलकत्ता

२ जनवरी, १९२९

महात्माजी तभी सुबहकी अपनी सैरसे लौटे थे और भेंट देनेके समय भी बहुतसे अनुयायी उनके आसपास थे। उन्होंने अपने उन श्रोताओकी उपस्थितिके बारेमें मुस्कराते हुए कहा :

अपने मित्रोसे मेरा कुछ भी छिपा हुआ नही है।

[प्रश्न] कांग्रेसका ठीक लक्ष्य क्या है — औपनिवेशिक दर्जा या स्वाधीनता?

श्री गांधी एक क्षण सोचते रहे, और फिर उन्होंने अपने चश्मेमें से मुझे पैनी दृष्टिसे ताकते हुए जवाब दिया :

१. डा० एनी बेसेंटने तब एक सशोधन पेश किया।

२. प्रस्तावका पहला अनुच्छेद यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है।

३. यह भेंट ३-१-१९२९ के डेली टेलीग्राफमें भी उसके विशेष संवाददाताकी ओरसे प्रकाशित हुई थी।

मै समझ सकता हूँ कि एक ब्रिटिश नागरिकके लिए हमारा दृष्टिकोण समझना कठिन है। फिर भी मुझे खुशी है कि वह इसकी कोशिश कर रहा है। मेरी स्थिति बहुत ही स्पष्ट है। मेरे लिए औपनिवेशिक दर्जेका अर्थ स्वाधीनता ही है; ब्रिटेनकी नेकनीयतीमे शक होनेके कारण, और मुझे डर है कि कुछ हदतक अपने दलीय उद्देश्योके कारण भी लोग इन दोनोमे भेद कर रहे है। पर यह लड़ाई ज्यादातर शब्दोकी है। जहाँतक मेरे अपने और काग्रेसके लक्ष्यका सवाल है, दरअसल गलतफहमीकी कोई गुजाइश नही है। हम 'होमरूल'— अपने ही द्वारा बनाया गया स्वतन्त्रताका सविधान — चाहते है, जो बाहरसे थोपा गया सविधान नही है। नेहरू सविधान हमारा अपना बनाया हुआ है। यदि वह स्वीकार कर लिया जाता तो इसका अर्थ है कि हम स्वेच्छासे ब्रिटेनके भागीदार और अपने भाग्यके आप निर्माता बन जाते है।

[प्र०] ऐसी स्थितिमें आपने उन लोगोंके आगे जिनके लिए स्वाधीनता औपनिवेशिक दर्जे जैसी ही चीज नहीं है, और उसका अर्थ साफ-साफ ब्रिटेनसे सम्बन्ध-विच्छेद है, आत्मसमर्पण क्यों किया? ब्रिटिश लोग इसे आत्मसमर्पणके सिवा और कुछ नहीं मान सकते।

श्री गांधीने उत्तर देनेसे पहले प्रश्नपर ध्यानसे विचार किया।

एक तरहसे मैने उन लोगोके आगे जिन्हे आप उग्रपथी मानते है, आत्मसमर्पण किया है। पर यह आत्मसमर्पण उन मुद्दोपर है जिनका मेरे ख्यालसे वास्तविक स्थितिपर असर नही पडता। जिस सिद्धान्तपर मै सदा जमा रहा हूँ और जमा रहूँगा, मैने उसपर आत्मसमर्पण नही किया है। मेरा लक्ष्य हर हालतमे सम्बन्ध-विच्छेद नही है। जब इच्छा हो तब सम्बन्ध-विच्छेदका अधिकार मेरा लक्ष्य है।

[प्र०] फिर भी आपने 'होमरूल' की अपनी माँगके साथ नेहरू रिपोर्टके आधार पर एक ऐसी समयकी सीमा जोड़ दी है जो आप स्वयं असम्भव मानते होंगे। वस्तुतः आपने ब्रिटिश पार्लियामेंटके सिरपर पिस्तौल तान दी है। आप यह घोषणा कर रहे हैं कि यदि नेहरू रिपोर्ट इस साल ३१ दिसम्बरतक स्वीकार नहीं की गई तो कोई भयानक चीज होकर रहेगी।

श्री गांधीने अपना सिर हिलाया और शान्तिसे कहा:

आप गलत कह रहे है। हम ऐसी स्थितिमे नही है कि ब्रिटिश पार्लियामेटके सिरपर पिस्तौल तान सके; और मै आपकी यह बात माननेको तैयार नही हूँ कि समयकी जो सीमा हमने रखी है वह असम्भव है। यदि ब्रिटेनको आज एक और युद्धका खतरा पैदा हो जाये तो वह उस परिस्थितिका सामना करने और उससे निपटनेको तुरन्त तैयार हो जायेगा। परन्तु भारतीय परिस्थितिको वह इतना गम्भीर नही समझता कि उससे तुरन्त निपटना आवश्यक माने। यही ब्रिटेनकी एक जबर्दस्त गलती है। भारतीय परिस्थितिको वह पर्याप्त महत्त्व नही देता। इसे वह साम्राज्यके कारोबारका एक छोटा मामला समझता है, एक ऐसा छोटा मामला जिसे बार-बार टाला जा

सकता है, जिसपर जब कोई और चिन्ता नही रहेगी ऐसे किसी दिन ध्यान दिया जायेगा। यही वह चीज है जिसपर हमे रोष है, और यही वह चीज है जो इस भयानक शकको और बढा रही है, जिससे हमारे राजनीतिक जीवनका पूरा वातावरण विषाक्त हो रहा है। ब्रिटिश लोगोके नेताओको इस सालके अन्दर-अन्दर हमसे मिलनेके लिए कोई निश्चित, गम्भीर और निश्छल कदम उठाना चाहिए और तब अन्तिम चेतावनियो और समयकी सीमाओकी आवश्यकता नही रहेगी।

[प्र०] यदि ब्रिटिश संसदने नेहरू संविधानको ३१ दिसम्बरतक स्वीकार नहीं किया, तो क्या होगा?

श्री गांधी मुस्कराये [और बोले:]

मै एक अदम्य आशावादी हूँ। ३१ दिसम्बर, १९२९ की अर्ध रात्रितक मै बराबर आशा रखूंगा — और प्रार्थना करूँगा कि जिस निश्चित कदमकी हम माँग कर रहे है, ब्रिटेन उसे उठायेगा।

[प्र०] और यदि आपकी आशाएँ पूरी नहीं हुईं तो?

महात्माजी ने उत्तर देनेसे पहले एक क्षण सोचा:

उस स्थितिमे १९३०के नववर्षके दिन जब मै उठूंगा तो मै पूर्ण स्वाधीनतावादियोके पक्षमे होऊँगा।

परन्तु मुझे आशा और विश्वास है कि हालते कुछ ऐसी बन सकेगी कि मुझपर एक और भारतीय दु खान्त नाटकका पर्दा उठानेकी जिम्मेदारी नही आयेगी। अपनी बातको सार-रूपमे रखते हुए उन्होने कहा:

ब्रिटेनकी नेकनीयतीमे शकके कारण भारतका राजनीतिक वातावरण विषाक्त हो रहा है। उस शकको दूर किया जाये तो ब्रिटेनके नेताओ और हमारे अपने नेताओमे सहमतिके लिए रास्ता साफ हो जायेगा, और हमारी सभी कठिनाइयाँ सुलझ जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

इंग्लिशमैन, ३-१-१९२९

३७१. भाषण: चित्तरंजन सेवासदन, कलकत्तामें

२ जनवरी, १९२९

महात्मा गांधीने इमारतके नये हिस्सेका औपचारिक रूपसे उद्घाटन करते हुए कहा कि दो साल पहले जब बंगालके लोगोंने मुझे नये हिस्सेके शिलान्यासके लिए बुलाया था तो मैंने इस निमन्त्रणको सहर्ष स्वीकार किया था। इस बार उस सेवासदनके लिए बनकर तैयार उस हिस्सेके उद्घाटनके लिए भी बुलाया गया है। मैं उस सच्चे प्रेम और सम्मानको जो इस तरह मेरे प्रति प्रकट किया गया है हृदयसे अनुभव कर रहा हूँ, और इसे सचमुच अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मैं इस समारोहमें भाग ले रहा हूँ। मैं जब इस भवनमें आता हूँ तो बंगालके महान् नेता देशबन्धु दासकी पवित्र स्मृति, जिन्होंने अपना जीवन अपने देशके लिए समर्पित कर दिया था, मनमें पुनः जाग उठती है। मैं जब भी बंगाल आता हूँ, देशबन्धुकी अनुपस्थिति मुझे खटकती है और मन-ही-मन सोचता हूँ — 'देशबन्धुका बंगाल क्या था और आजका बंगाल क्या है!' उन्होंने अपने जीवनमें जो उत्साह देखा था वह अपूर्व था और बंगाल उस महान् बलिदानको जो उनके नेताने बंगालकी भलाईके लिए किया था सदा याद रखेगा। मैं डा० विधानचन्द्र राय, सर नीलरतन सरकार और ट्रस्टके अन्य सदस्योंको जिन्होंने इस प्रतिष्ठानकी समृद्धिके लिए इतने दिन कठोर परिश्रम किया, धन्यवाद देता हूँ। यह प्रतिष्ठान बंगालके कर्मयोगी देशबन्धु चित्तरंजन दासका एक जीता-जागता स्मारक होगा।

ट्रस्टके सदस्योंने इस प्रतिष्ठानकी सार-सँभाल तथा भविष्यमें और भी विकासके लिए धनकी अपील की है। मैं भी उनके साथ होकर बंगालके लोगोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे सेवासदन-कोषमें अपनी शक्तिके अनुसार चन्दा दें। अन्तमें महात्माजी ने आशा व्यक्त की कि बंगालकी मध्यम और उच्च वर्गकी महिलाएँ इस प्रतिष्ठानको देशबन्धु दासके एक उपयुक्त स्मारकके रूपमें जीवित रखनेमें कोई कोशिश उठा नहीं रखेंगी।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ३-१-१९२९

३७२. सरोजिनी देवीका पत्र

श्रीमती सरोजिनी देवीने अपनी अमेरिका-यात्राके अनुभवका यह एक चित्रोपम और काव्यमय विवरण भेजा है। आशा है लोग इसे बड़ी रुचिके साथ पढ़ेंगे :[1]

. . . मैं यह पत्र आज रात सिनसिनाटीके आकर्षक प्राचीन नगरसे लिख रही हूँ, जो दक्षिणका प्रवेशद्वार कहलाता है। यहाँ बहुत पहले एक बहुत ही कुलीन महिला रहती थी जिसने अपनी प्रतिभा नीग्रो लोगोंको उनकी दयनीय दासतासे मुक्त करनेमें लगा दी थी। अभी-अभी मैं एक बड़ी सभासे लौटी हूँ जिसे मैंने 'चरखा चलानेवाले योगी' का सन्देश समझाया है। यह सभा ऐसे लोगोंकी थी जिनके माँ-बाप और दादी-दादा हेरिएट बीचर स्टोवेको उन दिनोंसे जानते थे जब वह 'अंकल टॉम्स केबिन' की मार्मिक कथा लिख रही थी। . . .

यह नई दुनिया, मेरे द्वारा चरखा चलानेवाले योगीको अपना प्रेमाभिनन्दन और उस देशको प्रशंसाके दो शब्द भेजती है जिसके लोग अपनेको अपेक्षाकृत कई गुनी दासतासे मुक्त करनेके लिए उद्यत हैं।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ३-१-१९२९

३७३. भग्न[2]

एक मित्रने 'लाइफ' का एक अंक भेजा है जिसमें 'भग्न' शीर्षकसे एक सुन्दर रचना प्रकाशित की गई है। उसे पढ़कर तुलसीदास, सूरदास और अन्य अनेक सतोंके कितने ही भजन याद आ गये हैं और मुझे यहाँ उसका सारांश उद्धृत करनेका लोभ हो आया है :

ईश्वर अपनी महिमाके प्रसारके लिए अधिकतर ऐसे व्यक्तियों और तत्त्वोंको ही चुनता है जो भली-भाँति भग्न हो चुके हैं। वह भग्न और सन्तप्त हृदयोंका समर्पण ही स्वीकार करता है। जब पेनियलमें जेकबकी[3] अपनी स्वाभाविक शक्ति पूर्णतया समाप्त हो गई तभी वह उस स्थितितक पहुँच सका जहाँ परमात्माने उसे

१. अंशत: उद्धृत।

२. यह "टिप्पणियाँ" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

३. बाइबिल, जेनीसिस, ३२ : २८।

दिव्य शक्तिसे विभूषित किया। मूसाकी छड़से[1] होरबकी शिलाके खण्डित होनेके बाद ही प्यासे लोगोंको शीतल जल मिला।

जब गिडियनके अधीनस्थ तीन सौ चुने हुए सैनिकोंने अपने-अपने कलश तोड़ दिये[2] यह एक प्रकारसे उनका अपने आपको तोड़ना ही था, तभी उनके हाथमें छिपा हुआ प्रकाश प्रकट हुआ और उनके शत्रु भयभीत हो उठे। गरीब विधवा[3] द्वारा अपने तेलके छोटेसे पात्रकी मुहर खोलकर तेल दे देनेपर ही ईश्वरने उसकी मात्रामें इतनी वृद्धि की कि वह अपने ऋणसे मुक्त हो गई और उसे आजीविकाका साधन मिल गया।

गेहूँका एक सुन्दर दाना धरतीमें अपने प्राणोंका उत्सर्ग करके जब छिन्न-भिन्न हो जाता है; तभी उसका अन्तःकरण अंकुरित होकर सैकड़ों वैसे दानोंको जन्म देता है। यह क्रम सदा इसी तरह चलता है; समस्त इतिहास, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, सम्पूर्ण प्रकृति और आध्यात्मिक जीवन साक्षी है कि ईश्वर अपने कामके लिए भग्न वस्तुओंको ही चुनता है।

जो धनसे टूट गये हैं, मनसे टूट गये हैं, जिनकी आशाएँ, सुन्दर आदर्श और लौकिक मान भग्न हो चुके हैं, जिनका स्नेह धूलिसात हो गया है, कहीं-कहीं तो जो शरीरसे भी टूट चुके हैं, लोग जिन्हें तुच्छ समझते हैं, जो पूर्णतया निर्बल और असहाय दीखते हैं, ईश्वर उन्हींको अपनाकर उनके द्वारा अपनी महिमाका प्रसार कर रहा है। इशायाका कथन है 'पंगु ही पर्वत चढ़ता है।' निर्बल ही शैतानको पछाड़ पाता है। ईश्वर हमारी असफलताओंपर निगाह रखता है और उन्हींको साधन बनाकर असफलताओंका मूलोच्छेदन करता है। और हमारी विजयमें उसीकी ज्योति जगमगाती है।

इस अनुच्छेदसे स्पष्ट हो जाता है कि सभी धर्म अपने श्रेष्ठ रूपमें एक-से ही हैं।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, ३-१-१९२९

१. बाइबिल, एक्सोडस, १७ : ६।
२. बाइबिल, जजस, ८ : २०।
३. बाइबिल, २ किंग्ज, ४ : २।

३७४. लालाजी का स्मारक[1]

लालाजी के स्मारकमें दिलचस्पी रखनेवाले कई मित्रोसे सलाह-मशविरा करनेके बाद हमने एकत्रित राशिको निम्नलिखित कामोमे खर्च करनेका निश्चय किया है:

१. चार लाख पच्चीस हजार रुपये लोक सेवक समाजके सचालनके लिए।

२. पच्चीस हजार रुपये लाजपतराय हॉलको जो अभी आधा बना है, पूरा करनेके लिए।

३. पचास हजार रुपये दलित वर्गोके उत्थानके लिए हो रहे समाजके कार्यको सुदृढ करनेके लिए।

हमारा विचार पहले प्राप्त होनेवाली रकमोको प्रथम उद्देश्यके लिए और बाकीको क्रमश दूसरे और तीसरे कामोमे खर्च करनेका है। परन्तु दान देनेवाले किसी भी व्यक्तिको यह अधिकार होगा कि वह अपने दानको किसी विशेष कार्यके लिए निर्धारित कर सकता है और वह उसकी इच्छानुसार ही काममे लाया जायेगा।

समाजकी स्थापना १९२० मे हुई थी। समाजका उद्देश्य देश-सेवाके लिए राष्ट्रीय प्रचारक भर्ती करना और उन्हे प्रशिक्षित करना है, जिनका कर्त्तव्य देशके शैक्षणिक, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक उत्थानके लिए काम करना है। इस समय समाजके सोलह आजीवन सदस्य है जिन्होने अपना पूरा समय और ध्यान इस ध्येयकी पूर्तिमे लगा देनेका व्रत लिया है। दो सहायक सदस्य है। छ. सहयोगी हैं। सात सदस्य पूर्णतया दलित वर्गोके कार्यमे ही लगे है।

लाजपतराय भवनकी कल्पना लाला लाजपतरायने की थी। और उसे शुरू करनेमे उनका उद्देश्य उन पुस्तकोके लिए, जो उन्होने एकत्रित की थी, पुस्तकालय और राजनैतिक तथा अन्य भाषणोके लिए एक समुचित स्थानकी व्यवस्था करना था। उन दिनो राजनैतिक भाषणोके लिए लाहौरमे वाजिब किरायेपर कोई हॉल लेना यदि असम्भव नही तो कठिन तो अवश्य हो गया था।

दलित वर्गोमे होनेवाला कार्य कई क्षेत्रोमे बँटा है और वह उनके जीवनके हर पहलूसे सम्बन्ध रखता है।

समाजका मार्गदर्शन कौन करे और इस सिलसिलेमे लालाजी का स्थान, यथासम्भव कौन ग्रहण करे, यह एक गम्भीर प्रश्न था। श्रीयुत पुरुषोत्तमदास टण्डन लालाजी के पूर्णतया विश्वासपात्र थे। वे समाजके सबसे शुरूके सहयोगियोमे से है और लालाजी के जीवन-कालमे उनका उसके कार्योसे घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। वे अब समाजके प्रधानकी हैसियतसे उसका कार्यभार सँभालनेको राजी हो गये हैं। इसलिए हम यह

१. यह लेख "टिप्पणियाँ" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था। ६-१-१९२९ को डा० मु० अ० अन्सारीको लिखे पत्रके साथ वक्तव्यके रूपमें भेजा गया था। देखिए अगला शीर्षक।

समझते है कि जन-साधारणमे समाजके भावी कार्यके बारेमे कोई चिन्ता या भय नही रहना चाहिए। साथ ही हमे यह भी आशा है कि चन्देकी हमारी अपीलपर ध्यान देते हुए, लोग अब और भी तेजीसे और उदारताके साथ दान देगे।

मु० अ० अन्सारी
मदनमोहन मालवीय
घनश्यामदास बिड़ला

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १०-१-१९२९

३७५. पत्र : मु० अ० अन्सारीको

आश्रम
साबरमती
६ जनवरी, १९२९

प्रिय डाक्टर अन्सारी,

मैं आपको उस वक्तव्यकी[1] एक नकल भेज रहा हूँ जो मैं लालाजी-स्मारक कोषके ट्रस्टियोकी ओरसे देना चाहता हूँ। कृपया तार द्वारा अपनी अनुमतिकी सूचना दे। यदि आपने इसका विरोध नही किया तो मैं इसी वक्तव्यको प्रकाशित करा दूँगा।

आशा है कलकत्तेमे कामके भयानक बोझका[2] आपपर कोई बुरा असर नही पड़ा है।

हृदयसे आपका,

संलग्न पत्र – १

अंग्रेजी (एस० एन० १५२५६–ए)की फोटो-नकलसे।

३७६. पत्र : एच० एस० एल० पोलकको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
६ जनवरी, १९२९

इसके द्वारा मैं श्री जीवनलाल मोतीचन्दका आपसे परिचय कराना चाहता हूँ। ये मेरे सभी रचनात्मक कार्योके एक बहुत ही पक्के समर्थक और मित्र रहे है। कलकत्तेमे और अन्यत्र इनका एल्यूमीनियमका अच्छा कारोबार है। ये एक बार पहले

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. आशय कलकत्ता कांग्रेसके अधिवेशनसे है।

इंग्लैंड-यात्रा कर चुके हैं। इस बार इनका उद्देश्य कारोबारके साथ-साथ मनोरंजन भी है, जिसकी इन्हें बहुत ही जरूरत है। मुझे विश्वास है कि आप इनकी आवश्यकतानुसार और यथासम्भव सहायता करेंगे।

सप्रेम,

हेनरी एस० एल० पोलक
४२, ४७ और ४८ डेन्स इन हाउस
२६५, स्ट्रैंड
लन्दन डब्ल्यू० सी० २

अंग्रेजी (एस० एन० १४९८३) की फोटो-नकलसे।

३७७. पत्र : जी० एम०को[1]

आश्रम
साबरमती
६ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपके इस शोकके लिए मुझे दुःख है। आपको अपना बच्चा शारीरिक रूपमें तो अब मिलना है नहीं। इसलिए शरीरको महत्त्व देनेका कोई प्रश्न ही नहीं उठता। शारीरिक रूपमें मिलनेकी लालसा निश्चय ही सच्चा प्रेम नहीं है। प्रेमको सच्चा बनानेके लिए उसे अन्तरात्मातक ले जाना होगा; आत्माकी उस वेदीपर पहुँच जानेपर वियोग कभी होता ही नहीं। वह मिलन पार्थिव सम्बन्धोंको पार कर जाता है।

हृदयसे आपका,

जी० एम०
मारफत कांग्रेस खादी भण्डार
भद्रक
उड़ीसा

अंग्रेजी (एस० एन० १५२५७) की फोटो-नकलसे।

१. पत्र-प्राप्तकर्ताके पूरे नाम का पता नहीं चला।

३७८. पत्र : वि० ल० फड़केको

रविवार, ६ जनवरी, १९२९

भाई मामा,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिल गया है। मैं यहाँ कल रातको पहुँचा। जग्गू और बहू-को लाना। उसे स्त्री-निवासमें रखूँगा। क्या अब भी घरके लिए मदद चाहिए? यदि चाहिए तो कितनी?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३८२२) की फोटो-नकलसे।

३७९. सन्देश : भारतीय ईसाइयोंके नाम[1]

[७ जनवरी, १९२९ के पूर्व]

यदि भारतीय ईसाई, ईसाई होनेके कारण भारतीयता छोडना नही चाहते तो उन्हें चरखेके सन्देशपर ध्यान देकर अपनेको सभी राष्ट्रीय आन्दोलनो और करोड़ो भूखे लोगोके साथ एक कर लेना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ७-१-१९२९

३८०. पत्र : मीराबहनको

७ जनवरी, १९२९

चि० मीरा,

अधिक लिखनेके लिए समय नही है, इसलिए केवल यही कहना है कि दिल्ली तक और वहाँसे आश्रम तककी यात्रा बहुत ही आरामदेह रही।

आशा है, तुम्हारा समय शान्तिनिकेतनमें आनन्दसे बीता होगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३८४ से; तथा सी० डब्ल्यू० ६३२९ से भी।
सौजन्य : मीराबहन

१. यह सन्देश कलकत्ताके गार्जियन द्वारा भेजा गया था।

३८१. पत्र : वसुमती पण्डितको

मगलवार, [८ जनवरी १९२९][1]

चि० वसुमती,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। वहाँ कुछ और रहनेमे कोई हानि नही दिखाई देती। यह सही है कि मुझे २० तारीखके आसपास रवाना होना पडेगा। वा और केशु दो दिनके लिए दिल्ली रह गये है। दिल्लीके रास्ते आनेसे प्रत्येक व्यक्तिके आठ रुपये और आठ घंटे वच गये।

काशीका पता है:

सत्यवाडी, साखी गोपाल, वरास्ता कटक

यहाँ काम तो अच्छा चल रहा है।

वापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

मेरी खुराक अव भी वही है।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०२) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य: वसुमती पण्डित

३८२. पत्र : अब्बास तैयबजीको

मगलवार, ८ जनवरी, १९२९

प्रिय भुर्र . . र,[2]

मुझे ठीक समयपर सचेत कर दिया गया है। पर याद रखिए कि गुजरात मेल सावरमती नही जाती। वह दिन दीक्षान्त समारोहका है; इसलिए मेरा इरादा अहमदावाद, जहाँ आपका स्वागत किया जायेगा, किसीकी गाड़ी भेजनेका है। मैं रेहानाको शाही गाडीकी सैर नही करा सकता।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० ९५६५) की फोटो-नकलसे।

१ डाककी मुहरसे।
२. गांधीजी और तैयबजी एक-दूसरेका अभिवादन इसी तरह करते थे।

३८३. पत्र : ताराबहनको

आश्रम, साबरमती
८ जनवरी, १९२९

चि० तारा,

तुम्हे देरसे [बड़ा पत्र] लिखनेके बजाय [अभी] बोलकर लिखवाये दे रहा हूँ। इससे सन्तोष करना। यह ठीक नही है कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। स्वास्थ्य अच्छा रखना भी एक कला है। यह कला सबको सीख लेनी चाहिए। तुम आश्रममे क्यो नही आ सकती? यदि थोडे मास यहाँ शान्तिसे रह जाओ तो कदाचित यह कला तुम सीख लोगी। रगून आनेका विचार तो कर ही रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ८७८४) की फोटो-नकलसे।

३८४. पत्र : गंगाधरराव बी० देशपाण्डेको

९ जनवरी १९२९

भाई गगाधरराव,

यह तार आज आया क्या है?

पुडलीकके सत्याग्रहकी[1] कथा भेजोगे ऐसा मानता हुँ। सत्याग्रहका अन्त क्या हुआ?

तुमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

काका तो खूब काममे रहते है।

बापू

जी० एन० ५२२५ की फोटो-नकलसे।

१. लगानकी ऊँची दरोंके विरुद्ध महाराष्ट्रकी मीरज रियासतमें सत्याग्रह आरम्भ किया गया था। जब सत्याग्रहने हिंसात्मक मोड़ लिया तो नारायण तमाजी कटगंडे उर्फ पुण्डलीकको उसकी बागडोर अपने हाथमें लेनी पड़ी थी।

३८५. कांग्रेस अधिवेशन

गत वर्षका कांग्रेस अधिवशन एक नही बल्कि अनेक दृष्टियोसे अपूर्व था। वह प्रतिनिधियो, मेहमानो और दर्शकोकी उपस्थितिकी दृष्टिसे अपूर्व था, उसमे जो प्रस्ताव पास हुए उनकी दृष्टिसे वह अपूर्व था, और वह अपूर्व था उन समझौतोके कारण जो नेताओने किये और तोडे। कांग्रेसमे यथार्थता भी थी और भयकर अयथार्थता भी। लेकिन उसकी अयथार्थताके पीछे उसमे राष्ट्रके लिए बडीसे-बडी सम्भावनाएँ भी दिखाई पडती थी। जिन लोगोमे इस अयथार्थताका नाम भी नही था उनका उमडता हुआ उत्साह इस बातका अचूक प्रमाण था कि ठीक ढगसे काम लेने और शक्तिको लाभदायक बना लेनेपर राष्ट्र क्या-कुछ कर सकता है।

पण्डित मोतीलाल नेहरूका भाषण बहुत ही व्यावहारिक था। जिस साहसके साथ उन्होने रिपोर्टका[1] प्रतिपादन किया और केवल उत्तेजनासे भरे हुए कोलाहलके बावजूद उन्होने उत्तेजनासे रहित और सच्चा कार्यक्रम सामने रखा, उस दृष्टिसे उनका भाषण और भी महत्त्वपूर्ण था। सारा भाषण विधायक राजनीतिज्ञताका एक नमूना है। आजकल हम स्वतन्त्रताके सम्बन्धमे बहुत-सी अवास्तविक बहसे सुनते रहते है, पण्डितजीके भाषणमे इसके बजाय स्वतन्त्रताका सच्चा सार सौपनेका वचन था।

इस तरह जहाँ पण्डित मोतीलाल नेहरूका भाषण मुख्यत. विधायक है वहाँ श्रीयुत सेनगुप्तका भाषण उपयोगी रूपमे ध्वंसात्मक और विवादपूर्ण है। वे नेहरू रिपोर्टका प्रतिपादन करते हैं और पूर्ण स्वातन्त्र्यके ध्येयका एक सच्चा साधन समझकर उसे स्वीकार करते है। उनका भाषण मानों सभापतिके भाषणके मार्गको युक्तिपूर्वक सरल बना देता है। उन्होने ब्रिटेनके न्यासी होनेके सिद्धान्त और ब्रिटिश राज्यकी 'सुविधाओ'का सफलतापूर्वक पर्दाफाश किया है। वे दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि ब्रिटेनने भौतिक शक्तिका दबाव पडे बिना आजतक कभी न्याय नही किया; और वे किसी भी तरह स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी बातपर जोर देते हुए अपना भाषण समाप्त करते हैं। इसके लिए वे राजनैतिक क्रान्तिके साथ-साथ सामाजिक क्रान्तिको भी आवश्यक बताते हैं। दोनो भाषणोसे यह प्रकट होता है कि अनुरूप सामाजिक प्रगतिके अभावमे राजनैतिक प्रगति नही हो सकती। यदि राजनैतिक प्रगति होती है — वास्तविक होनेके लिए उसमे प्रगति तो होनी ही चाहिए — तो उसे आन्तरिक प्रयत्नोंके परिणामके रूपमे होना चाहिए, न कि भारतकी प्रार्थनापर ब्रिटिश ट्रस्टियोकी कृपाके रूपमें।

सामाजिक पुनर्विधान और प्रयत्नके 'ठडे' कार्यक्रमको सामने रखनेका यही कारण है। इस 'ठंडेपन' के पीछे आन्तरिक और राष्ट्रीय राजनैतिक प्रयत्नोके लिए आवश्यक शक्तिसंग्रह करनेकी गरमी है।

१. नेहरू रिपोर्ट।

कांग्रेस पुनर्गठन करे

अतः पहली और अत्यन्त महत्त्वकी बात तो यह है कि कांग्रेसके रूपका पुनर्गठन हो। जल्दीमें मसविदा बनानेके कारण मेरे दूसरे प्रस्तावमें' कांग्रेसके पुनः संगठनकी बात पाँचवें नम्बरपर चली गई है। उसका उचित स्थान तो पहला ही था। क्योंकि कांग्रेसको ऊपरसे नीचेतक सुधारे और बदले बिना कुछ और हो नहीं सकेगा। अगर खुद कांग्रेस, जो नमक है, अपना स्वाद खो दे तो उसमें नमकका स्वाद काहेके बल पर पैदा किया जा सकेगा। कांग्रेस ही शक्तिका वह भण्डार है जहाँसे सारे कामके लिए आवश्यक तमाम शक्ति प्राप्त की जाती है। यदि शक्तिका भण्डार (पावर हाउस) ही निकम्मा हो, अव्यवस्थित हो तो तमाम राष्ट्रीय कार्यका भी वैसा ही हो जाना आवश्यक है।

गत कांग्रेसमें जो प्रतिनिधि आये थे, वे ज्यादातर स्वयंनियुक्त थे। कांग्रेस-संगठनके अनुसार चुनावका जो तरीका नियत है, मालूम हुआ है कि इस बार उसका उल्लंघन किया गया था। इस महान् वार्षिक महोत्सवकी अयथार्थताओंमें यह एक भयंकर अयथार्थता थी। यदि लड़ाईको फिर वह स्वतन्त्रताके नामपर की जानी है या उसे औपनिवेशिक स्वराज्यके नामसे सुदृढ़ और सच्ची लड़ाई बनाना है तो कार्य-कारिणी समितिका सबसे पहला और आवश्यक काम कांग्रेसका पुनर्गठन करके उसपर अपना ध्यान केन्द्रित करना है। कोई भी बात छिपाई नहीं जानी चाहिए। गुपचुपकी नीतिसे हमें तनिक भी लाभ नहीं होगा। दुरावके रोगका सफलतापूर्वक निवारण करनेके लिए पहले कांग्रेसकी दुनियामें उसको भली-भाँति जाहिर कर दिया जाना चाहिए। कोई भी संगठन जो जिन्दा रहना चाहता है, तो उसे प्रगति करनी चाहिए। लेकिन कांग्रेस तो आन्तरिक क्षयसे पीड़ित है। तपेदिकका ऐसा बीमार अक्सर सुर्ख, तन्दुरुस्त और मोटा-ताजा दीखता है। कांग्रेस भी क्षयरोगसे पीड़ित किसी रोगीकी सुर्खी और मोटाईका प्रदर्शन करती हुई साल-दर-साल हकीमके चर्मचक्षुओंसे अपने निकट नाशके अचूक लक्षणोंको ओझल रखे चली जा रही है। आज उसका जैसा संगठन है, उसके बलपर वह कोई भी सच्चा, संगठित और अकाट्य विरोध प्रस्तुत करनेमें असमर्थ है। अगर कलकत्तेका प्रदर्शन सच्चा था तो फिर वहाँ एकत्र विशाल जन-समुदाय अनिच्छुक हाथोंसे सत्ताको खींच क्यों नहीं सका। लेकिन उत्सवमें शामिल होनेवाले वे लोग तो अपनी शक्तिको प्रकट करने नहीं गये थे, वे तो किसी सर्कसके मण्डपमें दर्शककी हैसियतसे गये थे। और मजा तो इस बातका है कि कांग्रेसका मण्डप फिलिसके सर्कसके पास ही बनाया गया था और सो भी फिलिस सर्कसके परिवर्धित संस्करणके बीचोबीच।

पंजाबको चेतावनी

अगर हमें आगामी कांग्रेस अधिवेशनमें यथार्थता प्रकट करनी है तो इसमें ढेर परिवर्तन होना चाहिए। मेरे मतमें, यूरोपीय ढंगकी पोशाक पहने हुए कलकत्ताका स्वयं-

१. देखिए "भाषण: रचनात्मक कार्यक्रमपर, कलकत्ता कांग्रेसमें", १-१-१९२९।

सेवक एक दु.खदायी दृश्य उपस्थित करता था और वहाँ जो खर्च किया गया था वह राष्ट्रकी गरीबीको देखते हुए बिलकुल अनुचित था। वे (स्वयसेवक) चीथडे पहननेवाले रूखे किन्तु व्यवहार कुशल किसानोके प्रतिनिधि नही थे। पजावको यह सब बदलना है।

काग्रेस अधिवेशनका उपयोग रुपया कमानेमे नही किया जाना चाहिए। अगर कुछ बचत हो तो वह गरीब देशके उन सच्चे प्रतिनिधियो द्वारा प्राप्त छोटी-मोटी रकमोमे से होनी चाहिए, जो वार्षिक उत्सवपर आलसी दर्शकोके रूपमे नही बल्कि उत्सुक सिपाहियोके रूपमे वर्ष-भरके कामके सिंहावलोकनमे भाग लेने और समय आ पडनेपर अपने उत्साहका पूरा परिचय देनेको तैयार रहते हो।

अगर मेरी चलती तो मै काग्रेसके प्रदर्शन और दिखावटवाले भागको उसके विचार-विनिमयवाले भागसे अलग कर देता। मै दर्शकोको कार्यवाहीके स्थानपर न आने देता अथवा अगर उन्हे आने देना आवश्यक हो तो मै एक ऐसा खुला सभा-स्थान तैयार करवाता जो भिन्न भागोमे बँटा हो, मजबूत हो और सुन्दरतापूर्वक बाढसे घिरा हुआ हो। तब सभाएँ घिरी हुई अलग जगहमे प्रात कालके आरम्भिक घटोमे और फिर सायकालके समय की जा सकेगी। इससे स्वागत-समितिकी कठिनाइयाँ, उसकी मेहनत एकदम कम हो जायेगी और खर्चमे भी बडी भारी बचत होगी। कलापूर्ण सजावट तो खुले मैदानमे बनाये गये घेरेमे भी हो ही सकती है। आरोग्यकी दृष्टिसे ये घेरे उस बन्द और दम घोटनेवाले पण्डालसे हर हालतमे अधिक पसन्द किये जा सकते हैं; पण्डाल चाहे जितना हवादार क्यो न हो, इतना खुला हो ही नही सकता।

हमारा राष्ट्र अपमानकी घाटीमे से गुजर रहा है। जबतक हम स्वतन्त्रता प्राप्त नही कर लेते तबतक हमारे पास अपने वर्ष-भरके कामके सिंहावलोकनके मौकेपर मनोरजनकी, फिर वह कोलाहलपूर्ण हो या सौम्य, कोई गुजाइश नही हो सकती। वह तो गम्भीर काम, आत्मनिरीक्षण और हृदयमथन करनेका सप्ताह है, वह राष्ट्रीय राजनीतिको विकसित करनेका सप्ताह है। उस समय हम एक ऐसा कार्यक्रम बनाते है जिसके बलपर हमे उस शक्तिसे लडना है जो शायद दुनियाकी सर्वाधिक बलवान और दुष्टतम शक्ति है। मै विनयपूर्वक यह कह देना चाहता हूँ कि ध्यान बँटानेवाले कार्यक्रम, धूमधाम और प्रचण्ड मनोरजन-सामग्रीका अमर्यादित निरर्थक प्रदर्शन बच्चोके मनोरजनके योग्य भले ही हो, एक ऐसी विचारक सभाके साथ तो उसका कोई मेल ही नही बैठता, जो अपने-आपको जीवन और मरणके गम्भीर सग्रामके लिए तैयार करनेमें लगी हुई हो। ऐसे कोलाहल आदिके बीच शान्तिपूर्वक विचार करना अथवा राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा-सम्बन्धी कार्यक्रम तैयार करना असम्भव है। अत. हमारी वार्षिक प्रदर्शनीकी विशेषता यह होनी चाहिए कि वह लोगोको कुछ सिखानेवाली हो, उसकी व्यवस्था अखिल भारतीय चरखा संघ-जैसे किसी ऐसे योग्य मण्डलको सौपी जानी चाहिए। सच पूछा जाये तो यही एक सघ है, जो इस कामको तबतक के लिए हाथमे ले सकता है जबतक काग्रेस खद्दरको अपनी विदेशी वस्त्र-बहिष्कार नीतिका और भारतके लाखो-करोडो किसानोकी आर्थिक दशा-सुधारका केन्द्र बनाये रखती है।

तैयारी अभीसे हो

अगर पजाब इस दिशामे समुद्यत होना चाहता है तो उसे कलकत्ताके अनुभवसे लाभ उठाना चाहिए। वह कलकत्ताके ज्वलन्त उत्साहको तो बिलकुल भी न छोडे, किन्तु आशाओपर तुषारपात करनेवाली तमाम अयथार्थताको झाड़ पोछे। अगर पजाब अभीसे कामकाजी ढगसे चीजोको हाथमे लेना शुरू कर दे, काग्रेसके कार्यक्रमके प्रत्येक भागको सम्पन्न करनेमे लग जाये तो वह नेहरू-रिपोर्टमे दिये हुए सगठनको मूर्त कर देनेके उत्सवको मनानेकी आशा कर सकता है। पूरे प्रयत्नके बाद भी वर्षके अन्ततक यह परिणाम निकल सकनेकी अवस्थामे उसे अपने-आपको कर न देने और ऐसे ही दूसरे, राज्य-कार्यमे बाधा डालनेवाली सीधी कार्यवाहीका, जो कि उस समय काग्रेस द्वारा निश्चित की जाये, श्रीगणेश करनेके लिए तैयार रखना पडेगा। अगर पजाब यह सब चाहता है, तो वह सबसे पहले काग्रेसके सगठनको पूर्णतया व्यवस्थित करके करे। ऊपरसे किसीकी सहायताके अभावमे भी वह हजारोकी सख्यामे सदस्योको भर्ती करे और सदस्यताका नितान्त प्रामाणिक एव साफ पत्रक और अपने जमा-खर्चका वैसा ही साफ हिसाब काग्रेसके सामने रखे। तमाम आन्तरिक कलह और छोटी-मोटी लड़ाईको मिटानेमे वह शीघ्रतासे काम ले। इन पक्तियोमे जिस तैयारीकी बात कही गई है उसके लिए एक वर्षका समय कोई बहुत ज्यादा नही है। क्या पजाब अपनेको अवसरके उपयुक्त सिद्ध करके दिखायेगा? यदि वह ऐसा न कर सके तो फिर यही उचित होगा कि वह नम्रतापूर्वक कार्यकारिणी समितिको सलाह दे कि उसके नेताओने जल्दीमे जो जिम्मेदारी प्रान्तके सिर ले ली है, प्रान्त उसे उठा नही सकता।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १०-१-१९२९

३८६. बंगालमें हिन्दी

कलकत्तेके काग्रेस-सप्ताहमे हिन्दी प्रचार सभाका अधिवेशन दो घटेसे अधिक समयतक नही चला। अधिवेशनमे केवल दो भाषण हुए। एक तो था श्रीयुत सुभाष-चन्द्र बोसका। उन्होने स्वयसेवको और काग्रेसकी स्वागत-समितिके काममे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी इस सभाके स्वागताध्यक्षकी हैसियतसे आनेका समय निकाल लिया था। दूसरा भाषण अध्यक्षके नाते मैने दिया था। श्रीयुत बोसका भाषण छपा हुआ था। उन्होने देवनागरी लिपिको बिना किसी कठिनाईके पढा। उनका उच्चारण भी प्राय. निर्दोष था। भाषण भी छोटा और कामकाजी था। उन्होने इस अपवादका कि बगाल हिन्दीकी ओरसे उदासीन है, सफलतापूर्वक खण्डन किया। इसके प्रमाणमे उन्होने भूदेव मुखर्जीका नाम लिया, जिन्होने बिहारमे हिन्दी और देवनागरी लिपिके प्रचारके लिए प्रयत्न किया था। उन्होने बतलाया कि नवीनचन्द्र रायने इसी तरहका प्रयत्न पंजाबमे किया है, स्वामी श्री चिन्तामणि घोषने सयुक्त प्रान्तमे वर्षो तक रह-

कर कई उपयोगी हिन्दी पुस्तके प्रकाशित की, न्यायमूर्ति श्री शारदाचरण मित्रने ही इस विचारको पहले-पहल जन्म दिया था कि एक अखिल भारतीय लिपि होनी चाहिए और वह भी देवनागरी ही, श्री अमृतलाल चक्रवर्ती हिन्दीमे एक समाचारपत्र निकाल रहे है, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरने कबीरकी कविताओका सुप्रसिद्ध भाषान्तर प्रकाशित किया है, शान्तिनिकेतनके श्री क्षितिमोहन सेनने हिन्दीके सन्तोकी कृतियोके सिलसिलेमें शोध-कार्य किया है और अब भी कर रहे है, श्री नगेन्द्रनाथ वसु अपना बृहद् हिन्दी विश्वकोश[1] निकाल रहे है; और श्री रामानन्द चटर्जी 'विशाल भारत' नामक एक हिन्दी मासिक-पत्र प्रकाशित कर रहे है। श्री बोसने मजदूरोके साथ सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए हिन्दीकी आवश्यकता को स्वीकार किया। उन्होने अपने भाषणको यह कहते हुए समाप्त किया कि हिन्दी सीखनेवा लोकी सूचीमे मेरा नाम पहला होगा।

मैंने अपने भाषणमे केवल यही सुझाया कि मद्रासकी भाँति कलकत्तामे भी हिन्दी सिखानेके लिए मुफ्त कक्षाएँ चलाई जाये और इस तरह कामका श्रीगणेश किया जाये। मैंने वही चन्देके लिए भी अपील की।

एक प्रस्ताव इस आशयका पास किया गया कि बादमे स्थायी रूप देनेके विचारसे फिलहाल कमसे-कम एक वर्षके लिए एक समिति बनाई जाये जो बगालमे हिन्दी-प्रचारका काम करे। श्रीयुत घनश्यामदास बिडलाने समितिका कोषाध्यक्ष बनना स्वीकार कर लिया है। उनके अतिरिक्त इसके सदस्योमे सर्वश्री सुभाषचन्द्र बोस, प्रभुदयाल, सतीशचन्द्र दासगुप्त, बनारसीदास चतुर्वेदी — सम्पादक 'विशाल भारत', रगलाल जाजोडिया, बैजनाथ केडिया, महावीरप्रसाद पोद्दार और 'हिन्दी-साहित्यसम्मेलन' के प्रचार-मन्त्री बाबा राघवदास है। नीचे लिखे सज्जनोने प्रतिदिन थोडे समयके लिए अवैतनिक रूपसे हिन्दीकी शिक्षा देना स्वीकार किया है:

श्रीयुत सत्यदेव	श्रीयुत देवदत्त
„ रामशकर	„ मदनलाल
„ वी० के० घोष	„ रमेशचन्द्र
„ भजावाराम	„ विकसितजी
„ राजाराम पाण्डे	„ कृष्णगोपाल तिवारी

चन्देके लिए की गई अपीलकी लोगोपर ठीक प्रतिक्रिया हुई, ३००० रुपये से भी अधिककी रकम वही एकत्र हो गई।

जिन्होने शिक्षक बनना स्वीकार किया था, उनको मैंने उनकी जिम्मेदारीका भान कराते हुए थोड़ी चेतावनी भी दी थी। उन्हे केवल हिन्दी ही नही पढानी है बल्कि भारतीय सस्कृति और भारतीय पवित्रताका गूढ रहस्य भी लोगोको बताना है। हिन्दी केवल एक भाषाके रूपमे नही, बल्कि राष्ट्रभाषाके रूपमे सिखाई जानी चाहिए। हिन्दी हिन्दुओके लिए धर्म और सदाचारकी भाषा है। लाखो लोगोसे सस्कृत सीखनेकी आशा नही की जा सकती, लेकिन तुलसी, सूर, कबीर आदि अनेक सन्तोकी

१. देखिए "टिप्पणियाँ", १०-१-१९२९ का उप-शीर्षक "हिन्दी विश्वकोश"।

वाणीके जरिये वे वेदोका सन्देश प्राप्त कर सकते है। इन सन्तोने धर्मके स्रोतको निर्मल रखा है। इसके अलावा, उन्हे हिन्दुस्तानीके रूपमे भी हिन्दी सिखानी है। यह हिन्दुस्तानी उर्दूकी सौत नही बल्कि हिन्दी और उर्दू दोनोका सामंजस्य होगी। अतः इन शिक्षकोको सच्चरित्रता और संकल्पकी दृढताका भण्डार बनना चाहिए। उनका कार्य महान् है और इसीलिए आचरणका उच्चादर्शपूर्ण होना जरूरी है।

काग्रेस द्वारा स्वीकृत एक प्रस्ताव और काग्रेसके सविधानकी एक व्यवस्थाके बावजूद काग्रेसका काम अब भी बहुधा अग्रेजीमें ही होता है। इसका मुख्य कारण दक्षिण और बगालके प्रतिनिधियोकी सुविधाका ख्याल है। अगर दोनो प्रान्तोके वे लोग, जो राष्ट्रीय काम करनेकी इच्छा रखते है, अपने-अपने प्रान्तोमे सुलभ सुविधाओका पूरा-पूरा उपयोग करे तो आगामी काग्रेस अधिवेशनका मार्ग सरल हो जायेगा — उसका सारा काम हिन्दी-हिन्दुस्तानीमे हो सकेगा — यह एक ऐसी परिणति होगी जो कलकत्ता काग्रेसके सम्बन्धित अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रस्तावकी दृष्टिसे हार्दिक स्वागतके योग्य है। देशकी विशाल जनताको, जबतक उसके प्रतिनिधि अपना काम राष्ट्रभाषामे नही कर सकते, तबतक स्वतन्त्रता नही मिल सकती। जब जनतामे स्वराज्यकी सच्ची चाह उत्पन्न होगी तब राष्ट्रीय सस्थामे अग्रेजी भाषणोकी जरूरत ही नही रह जायेगी। अग्रेजीका अपना स्थान तो तब भी होगा और वह महत्त्वपूर्ण होगा। वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और विचार-विनिमयकी भाषा तो रहेगी ही, उसे रहना भी चाहिए। लेकिन उसे राष्ट्रभाषाका स्थान हथियानेकी छूट नही दी जानी चाहिए।

[अग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १०-१-१९२९

३८७. टिप्पणियाँ

कलकत्तेका खादीभण्डार

कलकत्तेमें २५१, हैरीसन रोडपर नववर्षके दिन पण्डित मालवीयजीकी उपस्थितिमे मैंने एक खादीभण्डारका उद्घाटन किया था। भण्डार खोलनेका विचार उस बातचीतसे पैदा हुआ था जो वर्धामे श्रीयुत घनश्यामदास बिडला और मेरे बीच हुई थी। वे और उनके भाई[1] अपनी मौन किन्तु उदार दानशीलताके लिए प्रसिद्ध है। श्रीयुत घनश्यामदासने जिन अनेक कामोमे मदद पहुँचाई है उनमे खादी भी एक है। मै हमेशासे इस बातकी जरूरतको महसूस करता रहा हूँ कि एक भण्डार हो, जो जरूरतके मौकेपर उत्पादन-केन्द्रोके कामका बोझ हल्का कर सके। ये उत्पादन-केन्द्र ही अखिल भारतीय चरखा-सघ द्वारा तैयार खादीकी बिक्रीके लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। मैंने श्री बिडलाको सुझाया कि वह खादीकी न केवल रुपयो द्वारा सहायता करे बल्कि अपनी व्यापार-कुशल बुद्धिका उपयोग भी खादीके लिए करे। मैंने उनसे

१. जुगलकिशोर बिड़ला।

कहा कि अगर देशके बडे-बडे व्यापारी खादीमे व्यक्तिगत रूपसे रस नही लेते, तो केवल सघमें काम करनेवाले लोगोके प्रयत्नसे, जो अधिकाशत क्लर्क-मुनीम आदि होते है, निकट भविष्यमे उसका विश्वव्यापी प्रचार नही हो सकेगा। श्री बिडलाने इस दलीलको पसन्द किया। कलकत्तेका खादीभण्डार इसीका फल है। भण्डारको गोरखपुरके श्री महावीरप्रसाद पोद्दार जैसे एक खादी-प्रेमीकी सेवाएँ भी प्राप्त हो गई हैं। मालवीयजीने इस कामके लिए अपना आशीर्वाद दिया है। उद्घाटन-समारोहके बाद शीघ्र ही खादी बेचनेका प्रबन्ध किया गया। लगभग पाँच हजार रुपयोकी खादी वही-की-वही बिक गई।

मेरी समझमे इस भण्डारकी योजना खादी-प्रतिष्ठान और अभय-आश्रमके साथ, जिनके अपने बड़े-बडे भण्डार है, किसी भी तरहकी स्पर्धाके लिए नही की गई है। बल्कि इसकी योजना तो उनकी कमीकी पूर्तिके लिए और उन्हे मदद पहुँचानेके लिए की गई है। मेरे मतमें वे जिस-जिस तरहके कपडे तैयार करते है, उनकी कीमतमे 'पूलिग' या अन्य घट-बढके ढगपर कोई फर्क नही होना चाहिए। इस तरहकी घट-बढ बाहरके प्रान्तोसे आई हुई खादीके सम्बन्धमे ही होगी। आशा है कि जनता इस भण्डारको उदारतापूर्वक प्रश्रय देगी जिससे वह अपने नियोजित कामको सन्तोषजनक रीतिसे कर सके। यह कहनेकी जरूरत तो नही ही होनी चाहिए कि इस कामसे मुनाफा उठानेकी मन्शा तो बिलकुल ही नही है।

हिन्दी विश्वकोश

हिन्दी प्रचार सभा वाली टिप्पणीमें मै श्रीयुत बसुके हिन्दी विश्वकोशका उल्लेख पहले ही कर चुका हूँ।[1] मुझे दो वर्ष पहलेसे इस महान् रचनाका पता था। मुझे यह भी मालूम था कि इसके रचयिता बीमार है और बिस्तरपर पडे हुए है। श्रीयुत बसुके परिश्रमने मुझे इतना आश्चर्यमे डाला था कि मुझे ग्रन्थकारको प्रत्यक्ष देखने और उनके ग्रन्थके सम्बन्धमे सारी बाते जाननेकी इच्छा हो गई थी। अतः मैंने निश्चय किया था कि काग्रेस अधिवेशनके लिए कलकत्ता जानेपर मै यह तीर्थ-यात्रा अवश्य कर आऊँगा। सोदपुर खादी प्रतिष्ठान जाते हुए, रास्तेमे मुझे अपना यह निश्चय पूरा करनेका सुयोग मिल गया। मेरी यात्रा खूब फलप्रद रही। मै एकाएक ग्रन्थकार महाशयके पास पहुँच गया, मैंने पहलेसे उन्हे कोई सूचना नही दी थी। मैंने उन्हे शय्यापर एक कमरेमे बैठे पाया। कमरा बिलकुल सादा था और सजावट उसमे नाम-मात्रकी ही थी। कमरेमे कुर्सियाँ नही थी। उनके पलँगके पास ही पुस्तकोसे भरी हुई एक आलमारी थी और पीछेकी ओर एक छोटी-सी मेज थी। उन्होने मुझे पलँगपर बैठनेको कहा, लेकिन मै उसके पासकी एक तिपाईपर बैठ गया।

थोडी देर बैठनेसे ही यह समझमे आ गया कि वे दमा रोगसे पीडित है। श्री बसुने कहा: "मै अतिथियोसे बातचीत करते हुए अपने रोगको क्षण-भरके लिए भूल जाता हूँ, और मुझे थोडा आराम हो जाता है। जब आप चले जायेंगे तो मेरा कष्ट बढ जायेगा।"

१. देखिए पिछला शीर्षक।

उन्होने अपने साहसपूर्ण कार्यका जो वृत्तान्त मुझे दिया वह सक्षेपमें इस तरह है—"जब मैंने बगला विश्वकोशको हाथमे लिया था, मेरी उम्र १९ वर्षकी थी। जब मै ४५ वर्षका हुआ, तब मैंने उसका अन्तिम खण्ड समाप्त किया था। वह एक जबर्दस्त सफलता थी। उसके हिन्दी सस्करणकी माँग हो रही थी। स्वर्गीय न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्रने मुझे उसे स्वय ही प्रकाशित करनेकी सलाह दी। मैंने ४७ वर्षकी उम्रसे उसपर मेहनत करनी शुरू की थी और अब मै ६३ वर्षका हूँ। अभी इस कामको समाप्त होनेमें तीन साल और लगेगे। अगर मुझे और अधिक ग्राहक नही मिलते, न दूसरी कोई सहायता मिलती है, तो मुझे २५,००० रुपयोकी क्षति उठानी पड़ेगी। लेकिन मुझे इसकी चिन्ता नही। मुझे विश्वास है कि जिस दिन मेरे सब साधन चुक जायेंगे, उस दिन ईश्वर सहायता भेजेगा। मेरा यह परिश्रम ही मेरी साधना है। मै इसीके जरिये प्रभुकी पूजा करता हूँ। मै अपने कामके लिए जी रहा हूँ।"

श्री बसुमे निराशा तो नामको भी नही थी, उलटे अपने काममे उनकी अडिग श्रद्धा थी। इस तीर्थ-यात्राके लिए मैंने मनमे बड़ा आभार माना। यह तो मानो मेरा कर्त्तव्य ही था। जब मै उनसे बाते कर रहा था, मुझे बरबस डाक्टर मरेकी उस साधनाका ख्याल हो आया, जो उन्होने अपने ग्रन्थपर की थी। मै निश्चयपूर्वक नही कह सकता कि इन दोनोमे कौन बडा है, न मुझे दोनोके सम्बन्धमे पर्याप्त जानकारी ही है। लेकिन कर्म-शूरोकी तुलना ही क्यो की जाये? हमारे लिए तो इतना जान लेना ही काफी है कि राष्ट्रोका निर्माण ऐसे ही महान कर्मठपुरुषोके द्वारा होता है।

जिस मुद्रणालयके पीछेके हिस्सेमे ग्रन्थकर्त्ता रहते है, उसका पता है—९, विश्वकोश लेन, बागबाजार, कलकत्ता।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १०-१-१९२९

३८८. भाषण : युवक सप्ताह समारोहमें[1]

१० जनवरी, १९२९

जैसा आपके अध्यक्षने कहा है इस समय मै ऐसी हलचलोमे लगा हुआ हूँ कि उनमे से एक क्षण भी निकालना कठिन है। परन्तु बालकोके प्रति प्रेमके कारण और आपके आग्रहपूर्ण निमन्त्रणके कारण आए बिना छुटकारा नही था। मुझे दु:खके साथ यह शर्त करनी पडी कि मै सभी प्रयोगोको नही देख पाऊँगा और बालकोके आनन्दमे भी हिस्सा नही ले पाऊँगा।

१. अहमदाबादमें पाँचवे युवक सप्ताहका चौथा दिन बाल दिवसके रूपमें मनाया गया था। डॉ० हरिप्रसादने युवक संघके कामका विवरण देते हुए गुजरात कालेजके विद्यार्थियोंपर हुए अत्याचार और उनके द्वारा की गई हड़तालका उल्लेख भी किया था। देखिए "सविनय अवज्ञाका कर्त्तव्य", २४-१-१९२९।

आज युवक सघ जो कार्य पूरे भारतमे कर रहा है, उसे मै देख रहा हूँ। मुझे इतना तो स्वीकार करना ही पडेगा कि मै ऐसा नही कह सकता कि जितना कार्य हो रहा है वह सबका-सब मुझे प्रिय है। किन्तु फिर भी जैसा प्रमुखने कहा है, बूढो और जवानोके बीच सम्बन्ध रहना आवश्यक है। मेरे जैसा बूढ़ा तुम्हारे साथ रहकर कोई काम न कर सके तो यह क्षन्तव्य है; साथ ही मुझे यह भी कह देना चाहिए कि बूढोको नगण्य मानना भी ठीक नही है। याद रखे कि एक दिन आपको भी बूढा होना है। फिर हम आयु और शरीरसे वृद्ध हो गये हो तो भी हमारा मन आपके मनके समान ताजा है। आत्माका हमेशा तरुण शरीरमे बना रहना असम्भव है। जिसकी आत्मा शुद्ध है, उसकी हलचल और चेष्टाएँ अनोखी होगी, और मेरी तो यही इच्छा है कि हिन्दुस्तानमे सभीकी आत्मा ऐसी हो।

सरकार आपकी शिक्षा आबकारी विभागसे होनेवाली आमदनीसे चलाती है। इस विभागको २५-३० करोड़की जो रकम प्राप्त होती है, सो गरीब मनुष्योका शोषण करके ही होती है। इस प्रकार गरीब आदमियोका खून चूसकर जो पैसा इकट्ठा होता है, उसीमे से आपको शिक्षा दी जाती है।

हिन्दुस्तानमे जैसी स्थिति दूसरोकी है, वही नवयुवकोकी भी है। उनके मनमे भी स्वराज्यके लिए उत्साह है। कई लोगोको यह नाम पसन्द नही आया और उन्होने अग्रेजी नाम खोजा है। और इन दो नामोको लेकर द्वन्द्वयुद्ध चल रहा है। मै आपको इस द्वन्द्वयुद्धमे से बचा लेना चाहता हूँ। क्योकि शायद मेरे मनमे आपकी अपेक्षा स्वराज्यके लिए ज्यादा लगन, ज्यादा उत्साह है। और ऐसा क्यो न हो, आपके पास अभी लम्बी जिन्दगी पडी है। और मै तो यह जीवन भोगकर मौतके किनारे खडा हूँ। इसलिए मै जो यह दावा करता हूँ कि आपकी अपेक्षा मेरे मनमे स्वराज्यकी अभिलाषा बडी है— यह दावा झूठा नही माना जायेगा।

मै आपको कुछ सलाह देना चाहता हूँ, मुझे उसका काफी अनुभव है। मै यही सलाह देना चाहता हूँ कि किसी नामसे धोखा खाना ठीक नही। मै आपके सामने अगर एक कागजका गुलाब रखूं और दूसरा दो-तीन पंखुडीवाला मुरझाया हुआ असली गुलाबका फूल हो तो आप मुरझाया हुआ होनेपर भी असली गुलाबको पसन्द करेगे। यदि आप इस प्रकार हिन्दुस्तानकी नाडीकी सच्ची परीक्षा करना चाहते हो तो नामसे भ्रमित न हो जाये। स्वतन्त्रताकी सुगन्ध काम करनेमे है।

इस समय आपकी स्थिति विषम है। सघर्ष तो हमेशा आनन्ददायक होना चाहिए। मैने आपके कालेजकी पूरी परिस्थितियोका अध्ययन नही किया है, परन्तु जो-कुछ मुझे मालूम हुआ है उससे मै समझ गया हूँ कि न्याय आपके पक्षमे है। मै स्वय भी वर्तमान राज-पद्धतिका कट्टर शत्रु हूँ और सदा उसका नाश चाहता हूँ। मेरी यही इच्छा है कि अच्छे व्यक्ति आपका समर्थन करे। किन्तु जो व्यक्ति अच्छे है, वे भी इस तन्त्रके नीचे काम करते हुए अच्छे नही बने रह सकते। क्योकि यह तन्त्र जडसे ही अन्यायी है।

मै दूसरे पक्षसे मिला नही हूँ। पर जो-कुछ आपके पाससे मुझे मालूम हुआ है उससे तो मुझे लगता है कि आपकी हडताल न्यायपूर्ण है। इस छोटी-सी हडतालसे

आपके प्राचार्यके साम्राज्यकी नीव ही हिलती दिखाई दे रही है, क्या यह हँसीकी बात नही है? यदि मै भी प्राचार्य होता, तो मुझे भी इन्ही प्राचार्य महोदयकी तरह साम्राज्यके झडेका पतन ही दिखाई देता। मै तो चाहता हूँ कि आप प्राचार्यके भयको सच्चा सिद्ध करे।

जब १८५७का विद्रोह समाप्त हुआ तब लॉर्ड कैनिंगने कहा था कि हिन्दुस्तानके आसमानमे एक अँगूठे जितना बादलका टुकडा भी दिखाई दे तो हमे धोखेमे नही रहना चाहिए। उनकी चेतावनी सच्ची थी। मै तो यही आशा करता हूँ कि यह अँगूठेके बराबरका बादल एक बहुत बडे बादलकी निशानी है। यदि आपने यह कदम न उठाया होता, तो आपको कोई भी व्यक्ति दोष न देता, परन्तु अगर अब आप पीछे हटेंगे तो याद रखे कि लोग आपकी निन्दा करेंगे। वीर पुरुष एक बार मैदानमे आ जानेपर फिर केसरिया नही उतारता और मृत्युके साथ गले मिलनेके लिए तैयार रहता है।

आपको तो मरना भी नही है; बहुत हुआ तो आपके १-२ या ५-७ वर्ष खराब होगें। यदि यह हो भी जाये तो इससे आपका क्या नुकसान होगा? मै तो यह मानता हूँ कि उससे आपको अन्तमे लाभ ही होगा। आपको हमेशाके लिए महा-विद्यालयसे अलग कर दिया जाये तो भी आप हार न मान ले। आप यदि इतना त्याग भी न करे, तो फिर कुछ नही हो सकेगा। सख्यासे कुछ नही होता। आप एक हजारके बदले सख्यामे दस हजार भी हो जाये तो क्या होगा? साबरमतीके उस किनारेपर दस हजार ककड भी पडे हो तो उनकी क्या कीमत है? हजारमे से दस ही हीरे निकल आये तो काफी है। यदि आप सबके-सब कंकड हो तो किसीके काम नही आ सकते। आपकी इस लडाईमे आपको जय मिलेगी, इसकी मुझे आशा है और यही मेरा आशीर्वाद है।

मै बोलना बन्द करनेसे पहले आपको यह विशेष चेतावनी देना चाहता हूँ कि आप विनयका कभी त्याग न करना। आप अध्यापकोका न अपमान करना और न कडवे वचन बोलना। [अविनयपूर्ण] आपकी बाते जोशीली हो तो भी उनका कुछ अच्छा असर नही होगा। उनसे तो जहर ही पैदा होगा। और यदि आप कठिन काम करेंगे और विनयशील रहेंगे तो आपकी शोभा बढेगी और आनेवाला इतिहास आपके गुण गायेगा। वचनोके साथ-साथ हृदयमे भी विनयको ही स्थान दिया जाये। आपका युद्ध शान्तिमय है; मर्यादाका उल्लंघन करनेके आपके सामने कितने भी कारण क्यो न आये, आप उसका उल्लघन न करना।

मै तो यही चाहता हूँ कि श्री शीराजका[1] भय सच्चा साबित हो। भारतका झंडा आपके हाथमे है और उसकी बागडोर भी आपके ही हाथमे है। मेरे जैसे बूढेको उसकी बागडोर थामनेका कोई अधिकार नही है। आप आजतक अपनी हडतालपर दृढ रहे, इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

१. फिंडले शीराज, गुजरात कालेजके प्राचार्य।

आप गरीब प्रजाके ध्यानसे खादी प्रचारको भी महत्त्व दे। काग्रेसके कार्यक्रममें उसका प्रमुख स्थान है। उस प्रस्तावका मूल कारण मैं नही हूँ। उसकी जड तो काग्रेस अध्यक्षके भाषणमे पडी है। मै उसे प्रस्तुत करनेके लिए निमित्त-मात्र अवश्य बना था।

[गुजरातीसे]
प्रजाबन्धु, १३-१-१९२९

३८९. सन्देश : स्नातकोंके तृतीय सम्मेलनके नाम

१२ जनवरी, १९२९

विद्यापीठके पुराने और नये स्नातकोको यह सोचना और फैसला करना चाहिए कि इस नाजुक घडीमे स्वराज्यके यज्ञमे उन्हे क्या योग देना है।

मोहनदास करमचन्द गांधी

[अंग्रेजीसे]
साबरमती, खण्ड ७, अक ३

३९०. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

आश्रम
साबरमती
१२ जनवरी, १९२९

प्रिय जयरामदास,

मैंने सुब्बैयाको कल आपको पत्रके उत्तरमे मेरा जवाब भेजनेका आदेश दे दिया था। आपका कार्यक्रम ज्यो-का-त्यो कायम है। देखता हूँ कि आप मुझे रविवारकी रातको, यानी जब मै मौन रखता हूँ, यात्रा करनेको बाध्य कर रहे है। निःसन्देह, मै पसन्द तो यही करता कि सारी यात्रा २४ घटोके लिए, यानी जबतक मै मौन रखता हूँ, स्थगित कर दी जाती। पर जब यह हो नही सकता, तो फिर कोई बात नही।

सिन्धके उस स्थानके बारेमे जहाँ हमारे हैदराबाद वापस जाते समय लोग मुझे देखनेके लिए आधी रातको प्लेटफार्मपर जमा थे और मै अपनी मूर्खतावश उनसे मिला नही था, आपका क्या ख्याल है? यदि उस जगह जाना है, यानी यदि लोग चाहते हो तो मै वादा पूरा करनेको तैयार हूँ। और यदि आप पहले भेजे गए कार्यक्रमसे एक दिन भी न निकाल सके और इस तरह एक दिन और लग जाये, तो भी मै तैयार हूँ।

मणिलालकी मुझे कोई खैर-खबर नही है। आप उसका पता लगाये और कोशिश करें कि वह सिन्ध पहुँच जाये। मेरा वहाँ जाना क्या आप उसके सिन्ध पहुँचनेपर निर्भर रखेंगे, या मैं इस कार्यक्रमको बिलकुल अटल समझूँ?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत जयरामदास दौलतराम
बॉम्बे व्यू, ग्वालिया टैंक रोड
बम्बई

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२५१) से।
सौजन्य : जयरामदास दौलतराम

३९१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

आश्रम साबरमती
१२ जनवरी, १९२९

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा तार मिला।[1] बादा और झांसीके कुछ कार्यकर्त्ताओंकी प्रार्थनापर, वाकई मैंने संयुक्त प्रान्तके कुछ हिस्सोंका दौरा करनेका इरादा किया था। परन्तु आत्मविश्वास न होनेसे उन्होंने वह प्रार्थना वापस ले ली और इसलिए वह दौरा रद्द कर दिया गया। एक और दौरेकी बात अभी चल रही है। वह मेरठ और दिल्लीके पासका है। वे लोग चाहते है कि मैं वहाँ मार्चमें जाऊँ। लेकिन मार्चके लिए मेरे सामने बहुतसे प्रस्ताव है और मुझे उनमें से चुनना है। दिल्ली और मेरठके अलावा आन्ध्र, कर्नाटक, और बर्मा है, और पंजाब भी है। लालाजीकी सोसाइटीके लोग मुझे वहाँ अपने वार्षिकोत्सवके लिए बुलाना चाहते है। मैं यूरोपकी प्रस्तावित यात्राके बारेमें तुम्हारे पिताजीके फैसलेका इन्तजार कर रहा हूँ। यदि वे उस यात्राको रद्द कर देते है, तो इन सभी माँगोंको पूरा करना सम्भव हो जायेगा। यदि वे यूरोपकी यात्राको कायम रखना चाहेंगे तो मैं अपने दौरेको अप्रैलके पहले सप्ताहसे आगे नही बढा सकूँगा। अभी मैं इस विषयपर इससे अधिक नही सोच सकता। पर मैं चाहूँगा कि चुननेमें तुम मेरी सहायता करो। तुम पिताजीसे उनकी इच्छाके बारेमें सलाह-मशविरा करना। तब तुम मुझे ज्यादा अच्छी तरह कुछ सुझा सकोगे।

जबतक यह पत्र तुम्हें मिलेगा, तुम्हारे पिताजी शायद मुझे तार द्वारा अपनी राय भेज चुके होंगे। यदि उन्होंने ऐसा न किया हो तो करवा देना।

१. दिनांक ११-१-१९२९ का। उसमें लिखा था : "पत्रोंका कहना है कि आप उत्तरी संयुक्त प्रान्तका दौरा कर रहे हैं। आशा है आप इस दौरेको दक्षिणतक भी बढ़ायेंगे।"

कमलाका अब क्या हाल है? और तुम खुद कैसे चल रहे हो? तुम मन्त्री हो गए हो। इसलिए मै चाहता हूँ कि तुम कार्यक्रममे हृदय और आत्मासे पूरी तरह जुट जाओ, कार्यसमितिसे आदेशका पालन कराओ और इस समय जो लज्जाजनक अव्यवस्था है उसमे व्यवस्था लानेकी कोशिश करो।

हृदयसे तुम्हारा,

अग्रेजी (एस० एन० १५२७६)की फोटो-नकल तथा गाधी-नेहरू पेपर्स, १९२९ से सौजन्य : नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

३९२. पत्र : मन्त्री, मधुमक्खी पालक संघको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१२ जनवरी, १९२९

मन्त्री
मधुमक्खी पालक संघ
सनावर (पजाब)

प्रिय महोदय,

सत्याग्रह आश्रमके हम लोग मधुमक्खी-पालनमे दिलचस्पी ले रहे है। इस मधु-मक्खी-पालक सघका पता हमे पजाब कृषि विभागके एक प्रकाशन 'ए गाइड टू बी-कीपिंग' से चला। यदि आप कृपा करके हमे यह बता सके कि क्या उक्त पुस्तकमे उल्लिखित शिमलेका 'बी-कीपर्स एसोसिएशन' अबतक चल रहा है, और क्या आश्रमका कोई आदमी मधुमक्खी पालनकी व्यावहारिक शिक्षा लेनेके लिए वहाँ जा सकता है, तो हम आभारी होगे।

प्रत्याशापूर्वक धन्यवाद,

हृदयसे आपका,

अग्रेजी (एस० एन० १४९८४)की फोटो-नकलसे।

३९३. टिप्पणियाँ

राष्ट्रीय झण्डा

राष्ट्रके एक पुजारी अपने उद्‌गार यो प्रकट करते है[1]:

ये पुजारी जो-कुछ लिखते है, मैंने भी उसका अनुभव दु.खके साथ किया है। काग्रेस अधिवेशनमे पण्डित मोतीलालजीके हाथो जो राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया था उसमे भी त्रुटि थी। उसमे चरखा ही नही था। अभीतक काग्रेसने राष्ट्रीय झण्डेके माप, रंग इत्यादिका[2] प्रस्ताव द्वारा निर्णय नही किया है। लेकिन १९२० मे तो प्राय: एक आवाजसे सबने मेरी सूचनाको स्वीकार कर लिया था। जो खादीको मानते है, और जो हिन्दू-मुस्लिम आदिके ऐक्यको माननेवाले है, अगर वे ध्यानपूर्वक और आग्रहसे मेरी मूल सूचनापर कायम रहेगे तो काग्रेस द्वारा झण्डेके स्वरूप-निर्णयका प्रस्ताव करनेका अवसर सहज ही उपस्थित हो जायेगा। इस झण्डेमे चरखेका. केन्द्रमें न होना और उसका विदेशी या देशी मिलके कपडेका होना अवश्य असह्य और शर्मनाक है।

अंग्रेजीका मोह

यही पुजारी फिर लिखते है:[3]

यह बात बिलकुल सच है। विद्यार्थी और शिक्षक अपनी अल्पशक्तिका एक तिहाई हिस्सा ही अग्रेजीको देते हो, ऐसा नही है; बहुत-से तो अपनी अधिकाश अथवा सारी शक्ति उसीपर खर्च करते है और फिर भी उनका लोभ शान्त नही होता। अग्रेजीकी इस प्रतिष्ठाको समाप्त करनेका प्रचार दो ही उपायोसे सम्भव है। अग्रेजीको उसकी अपनी जगहपर रहने देकर उसके पुजारी उसमे प्राप्त साहित्य और विशेष ज्ञान राष्ट्रकी भाषामे सुन्दरतापूर्वक उड़ेले; और अग्रेजी न जाननेवाले अग्रेजी न जानते हुए भी अपना प्रभाव जनतापर डालकर जनताके सम्मुख यह सिद्ध कर दे कि अंग्रेजी भाषाके ज्ञानकी जरूरत न तो चारित्र्यकी वृद्धिके लिए है, न बुद्धिकी वृद्धिके लिए, न वीरताकी वृद्धिके लिए और न अन्वेषक शक्तिकी पुष्टिके लिए ही है।

१. यहाँ नहीं दिया गया। पत्र-लेखकने शिकायत की थी कि राष्ट्रीय झण्डे सब जगह एक-से नहीं हैं। कहीं रंगोंमें व्यतिक्रम होता है तो कही और कोई त्रुटि। वे मिलके कपड़े और विदेशी कपड़ों तकके बने पाये जाते हैं।

२. कांग्रेसने इस सम्बन्धमें एक प्रस्ताव अगस्त १९३१ में पास किया।

३. यहाँ नहीं दिया गया है। पत्र-लेखकने कहा था कि अंग्रेजीका मोह कम नहीं हुआ है और राष्ट्रीय शालाओंके विद्यार्थी तथा शिक्षक उसपर बहुत अधिक समय नष्ट करते हैं।

पुजारीके विचारमे एक दोष है सो सूचित किये देता हूँ। वह 'यंग इंडिया' के द्वारा अंग्रेजीकी प्रतिष्ठा मिटानेका प्रचार करवाना चाहते है, यह कैसे हो सकता है? 'यंग इंडिया' द्वारा प्रचार करनेके लिए तो 'यंग इंडिया' को ही बन्द करना चाहिए। 'यंग इंडिया' का निकलना ही एक उपाधि है। मैंने माना है और कई मित्रोने भी इस बातको मंजूर किया है कि 'यंग इंडिया' की सफलताके कारण थोड़े-बहुत अंशोमे ही क्यो न हो, अंग्रेजीका मोह बढा है। कई एक नौजवानोने तो काकतालीय न्यायका अनुसरण करते हुए यह अनुमान भी निकाला है कि मैंने 'यंग इंडिया' के सम्पादकका काम हाथमे लेकर अंग्रेजीके ज्ञानकी जरूरतको साबित कर दिया है। यद्यपि मेरे सम्पादन-कार्यकी स्वीकृतिसे सिद्ध तो केवल यही हो सकता है कि चूंकि मै अंग्रेजी जानता हूँ और मै व्यावहारिक मनुष्य हूँ, मैंने प्रसंगवशात् उस ज्ञानका उपयोग कर लिया है। कोई चाहे तो मेरे सम्पादकत्वसे यह अनुमान भी निकाल सकता है कि अंग्रेजी सीखना त्याज्य नही है। जबतक मै 'यंग इंडिया' चला रहा हूँ तबतक यह बात समझाना तो कठिन ही होगा कि राष्ट्रभाषाको हानि पहुँचाने वाला अंग्रेजीका मोह त्याज्य है। फिर मेरा यह मत भी है कि 'यंग इंडिया' द्वारा कुछ-न-कुछ सेवा हो रही है। इसलिए 'यंग इंडिया' को छोड़ देना मुश्किल है। इसलिए मै यह मानता हूँ कि अंग्रेजीकी झूठी प्रतिष्ठाको मिटानेका प्रयत्न तो केवल 'नवजीवन' ही कर सकता है; और यह भी केवल प्रतिष्ठा समाप्त करनेकी आवश्यकतापर लेख लिख कर नही; बल्कि 'नवजीवन' को अधिकाधिक सँवारकर, उसकी उपयोगिता बढाकर और अनुभव द्वारा यह सिद्ध करके कि राष्ट्रसेवाके लिए जो कुछ 'नवजीवन' के द्वारा काफी प्रमाणमे दिया जाता है उससे अधिक अंग्रेजीमे नही मिल सकता। मै जानता हूँ कि अभी इस दृष्टिसे 'नवजीवन' मे कमी है। इस कमीको दूर करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

रेलगाड़ियोंमें गन्दगी

एक मुसाफिर लिखते है:[1]

जो गन्दी बाते लिखते है वे 'नवजीवन' तो क्या पढते होगे। इसलिए यहाँ उनके लिए लिखनेकी तो कोई बात नही बचती। किन्तु मै समझता हूँ कि अनेक संस्कारवान व्यक्ति 'नवजीवन' पढते हैं। उनकी दृष्टिसे यह सूचना बहुत व्यावहारिक है कि केवल संडासोमे ही गन्दी बाते लिखी जाती हो सो नही है, मैंने अपने कच्छके दौरेमे भुजके प्रख्यात मार्गोकी दीवारोपर भी ऐसा देखा है। दूसरे शहरोमे भी ऐसा देखा जाना सम्भव है। जहाँ गन्दी बाते लिखी हो वहाँ नगरपालिकाओको चाहिए कि वे उन्हे मिटवा दे और वहाँ मनाहीके इश्तहार भी लगवा दे।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, १३-१-१९२९

१. नहीं दिया गया। पत्र-लेखकने गांधीजीसे निवेदन किया था कि वे रेलगाड़ियोंके डिब्बों और संडासोंमें जो गन्दी बातें लिखी रहती है, शिक्षित यात्रियोंसे उन्हें मिटानेके लिए नवजीवनमें लिखें।

३९४. जैन अहिंसा

बछड़ा प्रकरणको[1] 'नवजीवन' मे न उठानेसे कोई यह न समझ ले कि मैं उसे भूल गया हूँ। दो तरहके सज्जनोने मेरे कार्यकी टीका की है। एक तो वे जो मुझपर गुस्सेसे भरे हुए है और दूसरे वे जो विचारशील है। मेरे इस कामसे, जो मुझे तो निर्दोष ही मालूम होता है, दूसरी श्रेणीके और उसमे भी जैन-भाइयोके चित्तको आघात पहुँचा है, यह मै जानता हूँ। मै जैन-साहित्यकी छानबीनमे लगा हूँ। मेरी धारणा तो यही है कि मेरे कार्यके लिए जैन-ग्रन्थोमे पर्याप्त आधार मिलना ही चाहिए। एक जैन-धर्म विशारदने अपना अभिप्राय और लेख भेजा है। उसमे मुझे ऐसा आधार मिला और इसलिए मैंने अपने परिचित जैन मित्रोके साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। फलस्वरूप मुझे नीचे दिया जा रहा लेख मिला है। तटस्थ भावसे विचार करनेवालोके लाभार्थ उसे यहाँ प्रकाशित करता हूँ।[2]

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १३-१-१९२९

३९५. खादीसे नफरत

दक्षिणसे एक ब्राह्मण लिखते है :

> मै ब्राह्मण हूँ। नौकरीके लिए यहाँ आया हूँ। मैने पाँचवें दर्जेतक पढ़ाई की है। लेकिन जीविका-निर्वाहके लिए रसोइयेका काम करता हूँ और साथ ही खादीकी टोपी भी पहनता हूँ। अतः लोग मेरा मजाक उड़ाते है। इसका उत्तर 'नवजीवन' द्वारा दीजिएगा।

देशके हर कोनेमे ऐसे खादी पहननेवाले कितने होगे, हमे इसका पता भी नही चलता। खादीकी टोपी या दूसरे वस्त्र पहननेवालेका मजाक उडाया जाये, उसकी हँसी की जाये, और वह भी हमारे देशभाइयो द्वारा, यह खेदकारक और आश्चर्यजनक है। लेकिन जिन्होने खादी पहननेका व्रत लिया है, उन्हे इस तरहके अपमान सह लेने चाहिए। मुझे याद है कि जब मै विलायत गया था तब मजाकके डरसे मैने देशी ढंगसे बाल कटानेके बदले विलायती ढगसे कटवाये थे और इसी कारण शिखाको भी छुट्टी दे डाली थी। लेकिन जिसे कर्त्तव्य-विशेषका स्पष्ट भान हो गया है, वह हँसी-मजाक वगैराका डर छोड़कर अपने कर्त्तव्यपर डटा रहेगा। भूखो मरनेवाले

१. आश्रममें एक बीमार बछड़ेको मारकर कष्ट-मुक्त कर दिया गया था। देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ३२३-२६।
२. यहाँ नही दिया गया है।

भारतके सात लाख गाँवोमे किसानोके लिए अगर खादी अन्नपूर्णा हो तो हँसी-मजाक, तिरस्कार और मार खानेकी जोखिम उठाकर भी समझदार मनुष्य उसे नही छोडेगा। 'मै रसोइया हूँ, इस कारण हलके दर्जेका या नीच हो गया हूँ' यह ब्राह्मण भाई इस तरहका विचार कभी अपने मनमे न उठने दे। न तो रसोइयेका धन्धा नीच है, न पाखाना साफ करनेका ही। राजा नलने पाक-विद्या कलाके रूपमे सीखी थी। जितनी माताएँ है वे सब पाखाना साफ करती है। जिस धन्धेके अभावमे ससार न चल सके उस धन्धेमे हलकापन हो ही नही सकता। मुझे आशा है, इस तरहका निश्चय करके रसोई बनानेवाले ब्राह्मणभाई अपनी खादीकी टोपी पहनते रहेगे।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १३-१-१९२९

३९६. एक सुन्दर सुझाव

श्रीयुत मथुरादास पुरुषोत्तम खादीको सस्ती करनेके नीचे लिखे उपाय सूचित करते है[1]

मुझे तो यह सूचना सुन्दर प्रतीत होती है। अगर देशमे देशके लिए सच्ची भक्ति हो, रचनात्मक काममे लोगोका थोडा भी विश्वास हो तो सिलाईके लिए एक लाख आदमियोका मिलना मुश्किल नही होना चाहिए। नमूनेके मुताबिक सी लेनेका हुनर सहज है और आनन्द देनेवाला है। सीनेकी मशीने तो कई घरोमे पडी हैं। फुर्सतके एक-दो घटे इस कामके लिए देश-सेवार्थ दिये जाये तो खादीका तैयार माल अवश्य ही सस्ता पडने लगे और खादीके महँगी पडनेका सवाल एकदम मिट जाये। लोग पहिननेके लिए ही खादी खरीदते है। इस सूचना परसे कई बाते सूझ सकती है। आज तो पाठकोके सामने यह सुन्दर सूचना रख-भर देता हूँ और जो सीना जानते हो तथा यज्ञार्थ सीनेको तैयार हो उनके नाम और पते जानना चाहता हूँ। दर्जी इस काममे बहुत हाथ बँटा सकते है। बढवानके दर्जी स्व० मोतीलाल अपनी जीविकाके लिए केवल एक घटा मेहनत करके शेष सारा समय परमार्थमे बिताते थे और जो कोई दर्जीका काम सीखना चाहता था उसे बडे उत्साहसे सिखलाते थे। इस पुण्य दृष्टान्तको सभी दर्जी और दूसरे सामने रख सकते हैं।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १३-१-१९२९

१. पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। उसमें कहा गया था कि यदि खादी खरीदकर उसके वस्त्र सिलवाकर बेचे जायें और सिलाईका खर्च दामोंमें न जोड़ा जाये तो खादी मिलके कपड़ोंसे होड़ कर सकती है।

३९७. विद्यार्थी क्या करें?[1]

सारे देशकी भाँति विद्यार्थियोमे भी एक प्रकारकी जागृति और अशान्ति फैल गई है। यह शुभ चिह्न है लेकिन यह सहज ही अशुभ भी बन जा सकता है। भापको अगर कैद कर ले तो उससे वाष्पयन्त्र बनाया जा सकता है और उसकी प्रचण्ड शक्ति कल्पनासे भी अधिक बोझ घसीटकर ले जाती है। यदि उस शक्तिका सचय न किया जाये तो या तो वह व्यर्थ चली जाती है या नाशकारी बन जाती है। इसी तरह विद्यार्थियो आदिमें आज जो भाप पैदा हो रही है उसका अगर संग्रह न किया जाये तो वह व्यर्थ चली जायेगी अथवा हमारा नाश ही कर डालेगी और अगर उसका बुद्धिपूर्वक उपयोग किया गया तो उससे प्रचण्ड शक्ति पैदा होगी।

आजकल गुजरात कालेजके विद्यार्थियोकी जो हडताल जारी है वह ऐसी ही उत्पन्न भापका परिणाम है। मैने जो हकीकत सुनी है उससे मै यह मानता हूँ कि विद्यार्थियोकी हडताल मर्यादानुकूल है और उनकी शिकायत न्याय्य है। उन्होने अक्तूबरमे साइमन कमीशनके बहिष्कारमे भाग लिया था और कालेजसे गैरहाजिर रहे थे। उनके ऐसा करनेपर प्राचार्यने यह निश्चय किया कि उनमें से जो परीक्षामे बैठना चाहेगे उन्हे इसके लिए फीसके तीन रुपये भरने होगे। जो परीक्षा न देना चाहे उन्हे कोई भी सजा नही दी जायेगी। मै सुन रहा हूँ कि यह निर्णय कर चुकनेके बाद भी अब प्राचार्यने दूसरी ही नीति स्वीकार की है, और वे सबको तीन रुपये जमा करके परीक्षा देनेके लिए मजबूर कर रहे है। विद्यार्थियोने इस हुक्मके विरोधमे हडताल की है और अगर वस्तुस्थिति ऊपर-जैसी ही हो तो कहना पडता है कि विद्यार्थियोके साथ अन्याय हुआ है।

लेकिन युवक-सघके अध्यक्ष कहते है कि प्राचार्य महोदय क्रोधित हो उठे है और वह हडतालको साम्राज्यके लिए खतरेकी चीज समझते है। हड़ताल निर्दोष है; जवानीके जोशका चिह्न है। उसे जवानीकी चेष्टा-मात्र समझ कर प्राचार्य महोदय खतरेको हटा सकते है। लेकिन अगर वह उसे खतरा समझकर उसे महापाप माने और विद्यार्थियोको कठोर या अन्य कोई सजा देनेका हठ करे तो आज जो चीज खतरा नही है, सम्भव है वह कल बड़ा भारी खतरा बन बैठे।

१८५७ के गदरके सम्बन्धमे अपने विचार प्रकट करते हुए लार्ड केनिंगने कहा था कि भारतवर्षके आकाशमे अँगूठे जितना प्रतीत होनेवाला बादल एक क्षणमे विराट् स्वरूप धारण कर सकता है, और वह ऐसा स्वरूप कब धारण करेगा, कोई कह नही सकता। इसलिए चतुर मनुष्योको चाहिए कि वे छोटे दीखनेवाले निर्दोष बादलकी अवगणना न करे बल्कि उसे चिह्न-रूप माने और उसका योग्य उपचार करे।

१. हडतालके सम्बन्धमें "भाषण: युवक सप्ताह समारोहमें", १०-१-१९२९ तथा "सविनय अवज्ञाका कर्तव्य", २४-१-१९२९ भी देखिए।

यह हड़ताल अँगूठेके आकारकी एक वदली है। लेकिन उसमे विजली गिरानेकी शक्ति पैदा हो सकती है। मैं तो कहता हूँ कि ऐसी शक्ति पैदा हो। मुझे वर्तमान ब्रिटिश राज्य प्रणालीके प्रति न तो मान है, न प्रेम ही। मैं उसे शैतानकी कृतिका नाम दे चुका हूँ। मै निरन्तर इस प्रणालीके नाशकी इच्छा किया करता हूँ। वह नाश भारतवर्षके नवयुवक और नवयुवतियों द्वारा हो, यह सव तरहसे इष्ट है। इस नाशक शक्तिको प्राप्त करना विद्यार्थियोके हाथकी वात है। अगर वे अपने भीतर उत्पन्न वाष्पका सग्रह करे तो आज वे उस शक्तिको पैदा कर सकते है।

पहली वात तो यह है कि विद्यार्थी अपनी शुरू की हुई हडतालको सफल करे। अगर उन्होने शुरुआत ही न की होती तो उन्हे कोई कुछ भी न कहता; शुरुआत करनेके वाद अगर वे हिम्मत हार कर वैठ जाये तो अवश्य ही निन्दाके पात्र वनेगे और अपने आपको तथा देशको हानि पहुँचायेगे। हड़तालका अधिकसे-अधिक कटु परिणाम तो इतना हो सकता है कि प्रिन्सिपल साहव विद्यार्थियोका हमेशाके लिए या लम्वे समयके लिए वहिष्कार करे अथवा उन्हे फिरसे भर्ती करनेके लिए कोई दण्ड निश्चित कर दे। इन दोनो चीजोको विद्यार्थियोको हर्षपूर्वक स्वीकार करना चाहिए। रणक्षेत्रमे कूदनेके वाद वीर पुरुष कभी पीछे पैर हटाता ही नही है। इसी तरह ये विद्यार्थी भी अव पीछे नही हट सकते।

हाँ, विद्यार्थियोको विनयका त्याग कभी नही करना चाहिए। वे प्राचार्यके या अध्यापकोंके सम्वन्धमे एक भी कडवे शब्दका उच्चार न करे। कठोर शब्द वोलने-वालेका नुकसान करते है, जिनके लिए कहे जाते है उनका नही। विद्यार्थियोको अपने वचनका पालन करके और कठोर काम करके वतलाना है। जरूर उसका असर होगा। उसमें से इस राज्य-प्रणालीका नाश करनेकी शक्ति पैदा होगी; ऐसा हुए विना रह नही सकता। हमारे युवक और युवतियाँ चीनी विद्यार्थियोंके उदाहरणको याद रखें। उनमे के एक दो नही वल्कि पचास हजार विद्यार्थी गाँवोमे फैल गये और थोड़े-से समयमे उन्होने छोटे-वडे सवको आवश्यक अक्षर-ज्ञान देकर तथा दूसरी वातोका ज्ञान देकर तैयार कर लिया। अगर विद्यार्थी स्वराज्य-यज्ञमे वड़ी तादादमें अपना हाथ वँटाना चाहते हो तो उन्हे चीनी विद्यार्थियोंके समान कुछ करके वतलाना चाहिए।

जैसा मै समझ सका हूँ, उसके अनुसार तो विद्यार्थी शान्तिमय युद्धमे आहुति देनेकी इच्छा रखते है। लेकिन मेरे समझनेमें भूल हो गई हो तो भी उपर्युक्त वात तो आत्मवल और पशुवल दोनो प्रकारके युद्धपर लागू होती है। अगर हम गोला-वारूदसे लडना चाहें तो भी संयमका पालन करना पडेगा; भापका संग्रह करना पड़ेगा। एक खास हदतक तो दोनोका रास्ता एक ही है। इस्लाममे खलीफाओने, ईसाई धर्ममे क्रूसेडरोने और राजनीतिमे क्रॉमवेल तथा उसके योद्धाओने भोग-विलासका अपूर्व त्याग किया था। आधुनिक उदाहरण लें तो लेनिन, सन यात-सेन आदिने सादगी, दु.खादिकी सहन-शक्ति, भोग-त्याग, एकनिष्ठा और सतत जागृतिका योगियोंको भी शरमानेवाला नमूना दुनियाके सामने पेश किया है। उनके अनुयायियोने भी वफादारी और नियमपालनका वैसा ही उज्ज्वल उदाहरण पेश किया है।

हमारे निस्तारका भी यही उपाय है। हमारा त्याग आज भी कोई बड़ा त्याग नही है, वह नगण्य है। अनुशासनकी हमारी शक्ति थोडी है, हमारी सादगी अपेक्षाकृत कम है, हमारी निष्ठा नहीके बराबर ही कही जा सकती है, और दृढता तथा एकाग्रताका दर्शन तो प्रारम्भकालमे ही होता है। इसलिए देशके नौजवान याद रखे कि उन्हे तो अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उन्होने जो-कुछ किया है उसे मै भूला नही हूँ। उन्हे मुझसे स्तुति पानेकी जरूरत होनी नही चाहिए। मित्रकी स्तुति करनेवाला व्यक्ति तो भाट बन जाता है। मित्रका काम तो कमजोरियाँ बताकर उनके परि-मार्जनका प्रयत्न करना है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, १३-१-१९२९

३९८. पत्र : वसुमती पण्डितको

रविवार [१३ जनवरी, १९२९][1]

चि० वसुमती,

कार्यक्रम पक्का नही हुआ था इसलिए क्या लिखता। अब पक्का हो गया है। ३१ को यहाँसे चलकर सिन्ध जाऊँगा। वहाँसे १५ तक लौट आऊँगा। उसके बाद कुछ निश्चित नही है। मेरी सलाह तो यही है कि फिलहाल वही रहो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०३) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : वसुमती पण्डित

३९९. पत्र : जगन्नाथको

आश्रम
साबरमती
१३ जनवरी, १९२९

प्रिय जगन्नाथ,

आपका पत्र मिला। मेरा ख्याल है कि मणिलाल सिन्ध जायेगा। इस समय वह कहाँ है, मै नही जानता। मै इस ३१ तारीखको यहाँसे कराचीके लिए चल दूँगा। सोसाइटीकी[2] ओरसे किसीको पहले भेजना अच्छा रहेगा।

१. डाककी मुहरसे।
२. लोक सेवक समाज (सर्वेंट्स ऑफ द पीपुल सोसाइटी), लाहौर।

जहाँतक अप्रैलमें उद्घाटन-समारोह आदिके लिए मेरे पंजाब जानेका[1] सवाल है, कृपया उसके लिए मुझसे बादमें पूछना। कोई फैसला करनेसे पहले मुझे पण्डित मोतीलालजीके सन्देशका इंतजार है।

हृदयसे आपका,

लाला जगन्नाथ
मारफत पीपुल
कोर्ट स्ट्रीट, कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १५२६८) की माइक्रोफिल्मसे।

४००. पत्र : कु० खुर्शीद नौरोजीको

आश्रम
साबरमती
१३ जनवरी, १९२९

आपका पत्र[2] मिला। मुझे इसकी प्राप्तिकी सूचना पहले ही देनी चाहिए थी, पर मुझपर कामका बहुत बोझ था। वे इंडो-चीनी मित्र जब भी आयेंगे उनका स्वागत किया जायेगा।

मैं उन मित्रोंके लिए एक छोटा-सा सन्देश[3] भेज रहा हूँ।

जमनाबहनको यहाँ आ जाना चाहिए क्योंकि मैं यहाँसे रेल द्वारा सिन्ध जाऊँगा। मैं यहाँसे इस ३१ तारीखको रवाना हो रहा हूँ। जमनाबहन इस ३१ से पहले जब भी इच्छा हो आ सकती हैं। वे अपने साथ महीन खादीकी चुनी हुई किस्में तो ला रही हैं न? अगर बर्माका मेरा दौरा तय हुआ तो उसमें आपका मेरे साथ चलना सचमुच बहुत अच्छा रहेगा।

कलकत्तेके बचे हुए मालका क्या हुआ?

कु० खुर्शीद नौरोजी
एफ० ८, नेपियन सी रोड
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १५२६४) की फोटो-नकलसे।

१. समाजने गांधीजीसे प्रार्थना की थी कि वे अप्रैलमें होनेवाले समाजके वार्षिक समारोहका सभापतित्व और लाजपतराय हालका उद्घाटन करें।

२. कु० खुर्शीद नौरोजीने इंडो-चीनी प्रतिनिधियोंकी ओरसे गांधीजीसे इंडो-चाइनाके लोगोंको एक सन्देश देनेकी प्रार्थना की थी (एस० एन० १५२६३)।

३. देखिए अगला शीर्षक।

४०१. पत्र : बुई क्वांग-च्यूको

आश्रम, साबरमती
१३ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

कु० खुर्शीदा नौरोजीने मुझे लिखा है कि आप मुझसे एक सन्देश चाहते हैं। मेरा सन्देश यह है :

सच्ची स्वतन्त्रता सत्य और अहिंसासे प्राप्त होती है, और किसी तरहसे नही।

हृदयसे आपका,

श्री बुई क्वाग-च्यू
पी० २५३, शाहनगर स्ट्रीट
डाकखाना कालीघाट
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १५२६५) की फोटो-नकलसे।

४०२. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

आश्रम
साबरमती
१३ जनवरी, १९२९

आपका पत्र मिला। प्रकाशम या किसी अन्य व्यक्तिके साथ कोई क्या करे। मैंने निश्चय ही चार्ज नही लिया है। मेरी समझमे नही आता कि पूरा चार्ज मैं ले कैसे सकता हूँ। मुझे आज कार्य-समितिका एक पत्र मिला है जिसकी नकल मैं साथ भेज रहा हूँ। मै कोई एक योजना बनाऊँगा। प्रतिकूल परिस्थितियोके बावजूद, हमें, जो-कुछ कर सकते हैं, करना चाहिए। मेरी रायमे तानाशाहीका सवाल ही पैदा नही होता। जब आपको एक योजना तैयार करनेके लिए बाकायदा खबर मिलेगी, तो मै समझता हूँ कि आप कोई चीज तैयार कर देंगे और भेज देंगे। यदि वे आपको पूरा चार्ज दे तो आप पूर्णाधिकारकी माँग करें और यह माँग करें कि कांग्रेस कमेटियोमे उचित व्यवस्था लाई जाये।

कलकत्तेके भारी कार्यभारके दिनोमे स्वास्थ्य देवताकी मुझपर अत्यन्त कृपा रही। मैं कोई खास बुरा नही रहा। घटी खुराक, देरसे सोने और नीदकी कमीके बावजूद मेरा केवल एक पौंड वजन कम हुआ। यहाँ आकर एक सप्ताहमे ही मैंने वह सारी

कमी पूरी कर ली है। जी हाँ, ऐसा लगता है कि बादाम, रोटी और सब्जियाँ यह काम अच्छी तरह कर देती है। बादामोका परिमाण पिछले दो दिनोसे ६ औंस, और बिना सिकी रोटीका १४ तोले है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

संलग्न :

श्रीयुत च० राजगोपालाचारी
गाधी आश्रम
तिरुचेन्गोडु

अग्रेजी (एस० एन० १५२७३) की फोटो-नकलसे।

४०३. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

१३ जनवरी, १९२९

प्रिय सतीश बाबू,

क्या तुम तिरगा राष्ट्रीय झडा, जिसके अन्दर चरखा हो, तैयार कर सकते हो? सवाल यह है कि एक ही कपड़ेपर तीन रग सुन्दरतासे कैसे लाये जाये। यदि तुम उसे तैयार कर सको तो मुझे उसका मूल्य भी बताओ।

नया खादी भण्डार[1] कैसा चल रहा है, इसकी सूचना मुझे देते रहना।

सोचता हूँ कि यदि मैं तुमको अधिक समय दे सकता तो अच्छा रहता। हेमप्रभादेवीको अपनी शक्तिसे अधिक काम नही करना चाहिए। वहाँ भोजनपर प्रति-व्यक्ति क्या खर्च आता है और उसका हिसाब कैसे जमाया गया है?

सप्रेम,

बापू

श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर
कलकत्ता

अग्रेजी (जी० एन० १६०१) की फोटो-नकलसे।

१. कलकत्तेमें १-१-१९२९ को गाधीजी द्वारा उद्घाटित; देखिए "टिप्पणियाँ", १०-१-१९२९ का उपशीर्षक "कलकत्तेका खादी-भण्डार"।

४०४. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

रविवार [१३ जनवरी, १९२९][1]

भाई रामेश्वरदास,

तुमारा पत्र मीला है। धीरज रखो। राम स्मरण करो। सब दोष वह नीकाल देगा।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १९८की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : नेशनल आर्काइव्ज ऑफ इंडिया

४०५. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१४ जनवरी, १९२९

भाईश्री घनश्यामदासजी,

आपका तार मीला था। पत्र भी मीला है। लालाजी स्मारकके लीये मैं इस मासके अंतमे सिंध जा रहा हुं। कलकत्तेमें आपने कुछ इकट्ठा कीया?

दुग्धालयके बारेमें एक मद्रासीका नाम मैंने दीया था उसको पत्र लीखा? यदि वह अनुकूल न लगे तो दूसरे नाम मै दे सकता हु।

खादीभंडारके बारेमें जो उसका उद्देशय है उसको मत भूलीयेगा। केवल वणिक वृत्तिसे न चलना चाहिए। भंडारको परमार्थिक दृष्टिसे चलाना है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आजकल मेरा खोराक १५ तोला बादामका दूध, १४ तोला रोटी (भीगी), सबजी, टमाटा कच्चा, अलसीका तेल ४ तोला। दो तोला आटेकी रबड़ी प्रातः कालमे। यहां फल छोड़ दीये है। एक हफ्तेमे १॥ रतल वजन बढा है।

शक्ति ठीक है।

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ६१५२ से।
सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. डाककी मुहरसे।

४०६. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

सोमवार [१४ जनवरी, १९२९][1]

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। मुझे लिखना तुम्हारा स्टीमर किस तारीखको रंगून रवाना होगा। मुझ तो उसमे जाना अच्छा लगेगा। शायद कलकत्तेके रास्तेसे जाना ज्यादा सस्ता पडेगा, किन्तु यह तो तुम ठीक बता सकोगे।

मधुमक्खी सम्बन्धी साहित्यके लिए तार तो नही करना है। कुछ जल्दी नही है। तुमने जो मधु भेजा वह सुन्दर है। रंगचिकित्सा पर पुस्तक मिले तो भेज देना। मा जी अब ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७११) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

४०७. पत्र : मीराबहनको

दुबारा नही पढा

मौनवार, १४ जनवरी, १९२९

चि० मीरा,

तुम्हारे सारे प्रेमपत्र मिल गये हैं। मुझे सचमुच खुशी हुई कि तुम्हे कविवर और उनकी महान कृति पसन्द आई। तुम्हारे पत्रोसे मुझे शान्ति मिली। मैने उन्हें महादेवके पास भेज दिया है, क्योकि मै जानता हूँ कि वे उसे अच्छे लगेगे। मै चाहूँगा कि तुम फिर वहाँ जाओ और अगर ठीक लगे तो घर लौटनेसे पहले।

तुम मुझसे लम्बे पत्रोकी आशा नही रखती, इससे तो मुझे सन्तोष है। लेकिन मेरी सुविधाके खयालसे तुम्हे अपने पत्रोको छोटा करनेकी आवश्यकता नही है। मुझे तुम्हारे पत्र अच्छे लगते है। उनसे मुझे उपयोगी समाचार मिलते है और वे तुम्हारी तबीयतके उतार-चढावके नकशे भी होते है।

कृष्णदासके बारेमे तुम अपनी मनचाही राय बनाओ। मै उस रायकी ताईद नही कर सकता। इतनी सख्त राय बनानेके कारण तो मुझे बतलाओ ही। हो सकता है कि मै ठीक राय बनानेमे मदद कर सकूँ या फिर तुम्हारी रायकी ही ताईद कर दूँ। कारण बुरेसे-बुरे हो, तो भी मुझे उनकी जानकारी तो रहनी चाहिए। मुझे

१. डाककी मुहरसे।

लगता है कि मैं ठीक राय बनानेंमे तुम्हारी मदद कर सकूँगा। और किसीकी भी राय तुम्हारी रायसे नही मिलती।

यहाँके हालचाल ठीक हैं। भोजनालयमे पहलेसे अच्छी व्यवस्था है। रोटीमें अब लगभग कोई खामी नही रहती। छोटेलाल रोटी बनानेके बारेमे अधिकसे-अधिक सही जानकारी लेकर लौटा है। सुरेन्द्र भी कुछ दिनोमे वापस आ जायेगा।

मै यहाँसे इसी महीनेकी ३१ तारीखको सिन्धके लिए रवाना हो रहा हूँ। १५ फरवरीको लौटूँगा। तुम्हें सिन्ध कार्यक्रमकी तिथियाँ समयपर मिल जायेगी।

मैंने खोया हुआ वजन फिर पूरा कर लिया है और आधा पौड बढा भी लिया है। कल पुस्तकालयके कार्यक्रमके बाद वजन लिया था – ९५।। पौड निकला। फलोका स्थान टमाटरने लिया है। नीबू भी नही लेता।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३८४ से, तथा सी० डब्ल्यू० ५३३० से भी।
सौजन्य : मीराबहन

४०८. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१४ जनवरी, १९२९

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। बहुत काम होनेके कारण एक डाकसे पत्र नही भेज सका।

यदि धैर्यबालाका[1] नाम मुझे देना हो तो मै उसका नाम सीता रखूँ। पवित्र नाम है। उच्चारण वहाँके सम्बन्धियोके लिए आसान होगा और यह उन गुणोका वाचक है जिनकी हम इच्छा करते हैं। दूसरोका भी विचार किया है, किन्तु मुझे और कोई नाम इतना अच्छा नही लगा।

अब शास्त्रीके विषयमे क्यो लिखना है? नया एजेंट[2] कैसा चल रहा है यह लिखते रहना। उसे मै जानता नही हूँ इसलिए उसके बारेमे एक पक्ति भी नही लिखी। दूसरे जो विवरण प्राप्त हुए है वे अच्छे नही है। उनसे हम कोई राय नही बना सकते। यह भी सम्भव है कि वह वहाँ अपने अच्छे गुणोका ही प्रदर्शन करेगा। तुममे से कोई पहलेसे ही उसके विरुद्ध गलत धारणा न बना लेना।

मेरी तबीयत ठीक चल रही है। आजकल बकरीका दूध और फल लेना छोड दिया है। फल लेना तो यहाँ आकर ही छोड़ा है। उनके बदले टमाटर और दूधके बदले बादामका दूध लेता हूँ।

१. मणिलाल और सुशीला गांधीकी पुत्री।
२. सर कूर्म वेंकट रेड्डी जो श्री शास्त्रीके स्थानपर २८ जनवरी, १९२९को दक्षिण आफ्रिकामें एजेंट नियुक्त हुए थे।

तुम रामदासको पत्र लिखते होगे। वह और नीमू बारडोलीमे ठीक चल रहे हैं। देवदास, नवीन और रसिक इस समय दिल्लीमें हैं। तीनोका स्वास्थ्य ठीक है। महादेव बारडोलीमे है।

किशोरलाल चार दिन रहकर चला गया है। उसका स्वास्थ्य ठीक ही माना जा सकता है। ऐसा ही बा के बारेमे कह सकते हैं। अब उसपर बुढापा दिखने लगा है। यह तो लिख ही चुका हूँ कि वह मेरे साथ कलकत्ता गई थी। दिल्ली होकर मैं वापस लौट आया। बा दो दिन दिल्ली रहकर बादमे आई। केशू भी साथ था। ब्रजकिशन यहाँ आ गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७४९) की फोटो-नकलसे।

४०९. तार: मीराबहनको

१६ जनवरी, १९२९

मीराबहन
मारफत खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर

विस्तारसे कल[1] लिखा था। इकत्तीस से पहले नही जा रहा हूँ। सप्रेम।

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३८६ से; तथा सी० डब्ल्यू० ५३३१ से भी।
सौजन्य: मीराबहन

४१०. पत्र: नारणदास गांधीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
बुधवार [१६ जनवरी, १९२९ या उससे पूर्व][2]

चि० नारणदास,

लगता है कि तुम्हे दु:ख हुआ है। चि० सन्तोकके[3] बारेमे मेरा इरादा तुम्हारी इच्छाके अनुसार करनेका था तो, किन्तु वह योजना मुझे अच्छी नही लग रही थी।

१. यह 'परसों' की जगह भूलसे लिखा गया लगता है; देखिए "पत्र: मीराबहनको", १४-१-१९२९।

२. सन्तोककी समस्याके उल्लेखसे। देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", १९-१२-१९२८। गांधीजीने नारणदाससे १८ जनवरीको मिलनेके लिए कहा था। उससे पूर्वका बुधवार १६ जनवरीको पड़ता है।

३. मगनलाल गांधीकी पत्नी।

उन माँ-बेटीका रहन-सहन इतना महँगा है कि आश्रममें उसे लेकर हमेशा बेचैनी बनी रहती। उसे सयुक्त रसोई पसन्द नही है और आश्रममे रहनेवाले लोग भी पसन्द नही हैं।

खादी शिक्षण विभागके बारेमें तो मै यह कह चुका हूँ कि उन दोनो विचारोका समर्थन नही हो सकता। एजेसी आश्रमकी होनी चाहिए, एक व्यक्तिकी नही। इस विचारमे मुझे कोई दोष नही दिखाई देता। १८ तारीखतक तो कुछ पक्का हो ही जायेगा। तुम इन सब बातोमे भाग लो और दिलचस्पी लो, मै यही चाहता हूँ। छगनलालपर विश्वास करो। वह निर्मल मनुष्य है और प्रयत्नशील है। तुम उसकी त्रुटियोपर मत जाओ, उसकी भावना देखो।

सन्नाभाईके बारेमे तो मैने यही लिखा था कि उनका अन्तिम निर्णय ही सही मानना चाहिए। क्योकि मन्त्रीके प्रतिकूल जान पडनवाला कोई व्यक्ति [आश्रममे] नही रहना चाहिए।

तुम्हें मुझे जो-कुछ लिखना हो लिख देना। १८को आ सको तो आ भी जाना। दोनों ही आ सको तो दोनो ही आ जाना। नही तो फिर मुझे जो ठीक लगेगा वही निर्णय कर लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री नारणदास गांधीने

४११. अमेरिकी देशभक्ति

श्रीयुत सी० बी० रंगमचेट्टी लिखते हैं:

> **पादरी . . .की अमेरिकी मिशन पाठशालाओंके मुख्य अधिकारी हैं। उन्होंने श्रीयुत . . . को, जो . . . की मिशन पाठशालामें भारतीय शिक्षक हैं और जो यन्त्र-शास्त्रसे परिचित है, जाकर अपनी मोटरके लिए कुछ पुर्जे वगैरह खरीद लानेको कहा। श्रीयुत . . . ने जर्मनीमें बने पुर्जे वगैरह खरीद लिये, जो अमेरिकामें बने पुर्जोसे कहीं सस्ते और बेहतर किस्मके होते हैं। पादरी . . . ने उनको छूनेसे भी इनकार कर दिया और कहा कि यथासम्भव वे अपना पैसा अमेरिकाके सिवा किसी दूसरे देशमें नहीं जाने दे सकते। तब श्रीयुत . . .ने यह सामान . . .में एक ब्राह्मण सज्जनके हाथ बेच दिया और अमेरिकी सामान खरीदा। इस घटनाके पहले श्रीयुत . . .से मैं बार-बार खादी पहननेका अनुरोध किया करता था, लेकिन वे सदा टालमटोल किया करते थे। अब खुद उन्होंने अपनी गलती स्वीकार की है और आगेसे खादी पहननेका संकल्प किया है। आशा है कि हमारे शिक्षित और धनवान देशबन्धु**

इन पादरी महाशयके उदाहरणसे सबक लेंगे और दूसरोंके सामने खुद मिसाल पेश करेंगे।

ऊपर मैंने नाम और स्थान जान-बूझकर नही दिये है, क्योकि मेरे प्रयोजनके लिए वे जरूरी नही है। मेरा आशय बिलकुल स्पष्ट है। यहाँ यह नही देखना है कि ऊपर जिन पादरी सज्जनका जिक्र आया है वे देशभक्तिकी मर्यादाको लाँघ गये है या नही। श्रीयुत रंगमचेट्टी उक्त घटनासे जो सबक लेना चाहते है, वह बिलकुल उचित है। हमारे देशमे हमारे लिए विदेशी वस्त्रोंके मुकाबले हाथके कते-बुने खादीके कपडोको ही पसन्द करना एक गौरवपूर्ण कर्त्तव्य होना चाहिए। और इसमे हमे इससे होनेवाली असुविधाकी परवाह नही करनी चाहिए। जो विचार हमे अपने नजदीकके पडोसियोका बिलकुल ख्याल न करके सस्तेसे-सस्ते बाजारसे अपनी चीजे खरीदना सिखाता है, वह बिलकुल बेकार है। आस्ट्रेलिया और अमेरिकासे मुफ्तमे भेटस्वरूप मिलनेवाले गेहूँ हमारे लिए विष-रूप सिद्ध होंगे अगर उस भेंटका यह मतलब हो कि भारत अपने लहलहाते, हरे-भरे अनाजके खेतोके बदले जंगली घास पैदा करनेवाला देश बन जाये और भारतवासी निठल्ले बन जायें। इसी तरह अगर भारत मैनचेस्टरका दिये हुए कपडेका दान स्वीकार कर ले तो वह भी भारतके लिए बहुत ही महँगा सौदा होगा। इसलिए मै फिर दोहराता हूँ कि जबतक खादीसे देशके बेरोजगार लोगोको काम मिलता है, खादी हमारे देशके लिए किसी भी कीमतपर सस्ती है, और अभी तो ऐसा कोई दूसरा धन्धा दिखाई भी नही देता जिसे अपनाकर लोग तत्काल फायदा उठा सके।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १७-१-१९२९

४१२. तब और अब

कांग्रेस द्वारा स्वीकृत रचनात्मक प्रस्तावके[1] कुछ आलोचकोका ख्याल है कि किसी जोरदार प्रगतिवादी नीतिके लिए लालायित कांग्रेसको मैंने अपना एक बिल्कुल ही नया प्रस्ताव पेश करके भ्रमित कर दिया है। इसपर मेरा कहना यह है कि अव्वल तो उस प्रस्तावको मै अपनी कोई मौलिक देन नही कह सकता, क्योकि वह तो अध्यक्षीय भाषणका पूरी तरह अनुसरण करता है। दूसरे, वह १९२०-२१के[2] उस कार्यक्रमके भी अनुरूप है जिसकी आजकल सभी प्रशंसा करने लगे है। हाँ, कुछ और जरूरी बाते उसमे जोड दी गई है। आजकी भाँति १९२१ मे भी हमारे कार्यक्रममे शराबबन्दीके साथ धरना भी शामिल किया गया था, उसमे खादी भी थी, विदेशी वस्त्रोका बहिष्कार भी था, जिसमे विदेशी कपडेकी होलियाँ भी जलाई जाती थी।

१. देखिए "भाषण: रचनात्मक कार्यक्रमपर, कलकत्ता कांग्रेसमें", १-१-१९२९।
२. देखिए खण्ड १९, पृष्ठ ५८२-५८४।

इसके साथ ही, अछूतोद्धारका आन्दोलन तथा हिन्दू-मुस्लिम एकताका प्रयत्न भी था। पर आजके इस कार्यक्रममे स्त्रियोकी स्थिति सुधारने और ऐसी ही दूसरी सामाजिक बुराइयोको दूर करनेकी बाते जोड़ दी गई है। उसमे गाँवोका पुनर्गठन और शहरी मजदूरोके सगठनकी बात भी है। और ये बाते ऐसी है जिन्हे स्वराज्य प्राप्तिके किसी भी रचनात्मक कार्यक्रममे अवश्य ही स्थान मिलना चाहिए।

अब बताइए कि यदि काग्रेसवाले इस सम्बन्धमे सच्ची लगन रखते हो तो क्या इस कार्यक्रममें उत्तेजना और जोशके लिए काफी सामग्री नही है; शराबकी दूकानोपर धरना देना, विदेशी वस्त्रोकी दूकानोपर धरना देना, विदेशी वस्त्र इकट्ठे करना और उनकी होली जलाना, आदि काम किसी भी कार्यकर्त्ताको जोश दिलानेके लिए काफी है और ये ऐसी बाते है, जिनमे श्रेष्ठ कार्यकर्त्ताओकी तमाम कार्यदक्षता और सूझबूझको जागृत करने और उनका भरपूर उपयोग करनेकी पूरी गुजाइश है।

अब १९२०-२१ के कार्यक्रमकी जो बात हमारे इस बारके प्रस्तावमे नही है, वह है धारा-सभाओ, अदालतो, शिक्षा-सस्थाओ और उपाधियो आदिका बहिष्कार। मुझे इससे ज्यादा खुशी और किसी बातसे न होगी जितनी यह सुनकर होगी कि देश इस सरकारको मजबूत बनानेवाली इन सस्थाओका साथ छोड रहा है; या कमसे-कम काग्रेसवाले तो छोड़ ही रहे है। मै जानता हूँ कि हमे स्वराज्य तभी जाकर मिलेगा; और शायद इसके अतिरिक्त यह भी होगा कि तब काग्रेसमें आजकी अपेक्षा बहुत कम गन्दगी रह जायेगी। लेकिन अभी वह समय आया नही है। आज तो काग्रेसवाले भी व्यवस्थापिका सभाओकी, अदालतो और शिक्षा-संस्थाओकी उतनी ही मदद करते है जितनी कि अन्य लोग। और शायद इस साल जब काग्रेस देशके लिए नेहरू रिपोर्टके अनुसार एक संविधान प्राप्त करनेका प्रयत्न करेगी, उसे धारासभाओके द्वारा ही काम करना होगा। कुछ भी हो, अगर हम यह मानकर भी चले कि सचमुच अगले बारह महीनोमें देशको वह दर्जा नही ही मिलेगा जिसकी सिफारिश नेहरू रिपोर्टमे की गई है, तो अधीर-से-अधीर स्वाधीनतावादीके लिए भी एक सालका अरसा कोई बहुत बड़ा अरसा नही है; इसके बाद वह चार-सूत्री बहिष्कारका कार्यक्रम चालू कर सकता है। अगर हमे ब्रिटेनसे अपना नाता पूरी तरहसे तोड़ डालनेकी सच्ची धुन है, तो वर्षके समाप्त होते ही हम उन संस्थाओको प्रश्रय देना कतई छोड देगे, जो ब्रिटिश सत्ताकी निशानी है और जो हमे गुलाम बनाये रखनेकी साधन है।

और क्या यह ठीक है कि वर्तमान कार्यक्रमको जितना नरम बताया जाता है वह उतना ही नरम है? क्या शराबखानोपर धरना देना कोई बहुत नरमीकी बात है? इसका उत्तर डॉ० कानुगा और उनके जत्थेके उन स्वयसेवकोसे पूछिए जो उस समय शराबके कुछ व्यापारियो और उनके पिट्ठुओ द्वारा पीटे गये थे। इस बातका उत्तर असमके वे सैकड़ो कैदी देगे जो केवल इसी बिनापर कि उन्होने अफीमके अड्डोपर धरना देनेकी हिम्मत दिखलाई थी, निर्दयतापूर्वक असमके जेलखानोमे ठूँस दिये गये थे। इसी तरह क्या विदेशी-वस्त्रोकी होली भी कोई हल्की-फुल्की चीज

है? इसका उत्तर देने दीजिए श्रीमती सरोजिनी देवीको जिन्होने अपने अत्यन्त सुन्दर बेशकीमती विदेशी वस्त्र त्यागे और वे अन्य बहने भी इसका उत्तर देगी जिन्होने प्रेमसे सहेज-सहेज कर रखे हुए अपने कीमती विदेशी रेशमी वस्त्र और दूसरी नफीस चीजेतक त्याग दी थी। आज भी काग्रेसवालोको शराबकी दूकानोपर और अफीमके ठेकोपर धरना देने तथा विदेशी कपडे इकट्ठा करके उसकी होली जलानेसे रोकनेवाली कोई चीज नही है। इन दो शक्तिशाली कामोमें सामाजिक और आर्थिक महत्त्वके अलावा पहले दर्जेका राजनीतिक महत्त्व भी भरा पडा है। अगर हम विदेशी वस्त्रोके बहिष्कारमे सफल हो जाते हैं तो ब्रिटेनके रास्तेसे लोभका बड़ेसे-बड़ा कारण हट जायेगा। और अगर हम शराब तथा दूसरी नशीली चीजोसे होनेवाली उसकी मालगुजारीको बन्द करा देते हैं, तो हमारे शासक सुरसाकी तरह सदा बढते फौजी खर्चको घटानेपर बाध्य हो जायेगे। ये दो बाते इतनी सरलतासे पूरी की जा सकती हैं और विशाल जन-समुदायकी कार्य-शक्तिके उचित उपयोगके लिए इतनी उपयुक्त है कि अगर हम उन्हे सम्पन्न कर सके तो मेरा विश्वास है कि हम अपने राष्ट्रीय उद्देश्यकी पूर्तिकी एक बडी मजिल तय कर लेगे।

मैं दावेके साथ कहता हूँ कि यह कार्यक्रम इतना विशाल और व्यापक है कि वह सभी तरहकी रुचि रखनेवालोको सन्तोष दे सकेगा और सारे राष्ट्रको काम जुटा देगा। अगर हमारे पास पर्याप्त कार्यकर्त्ता हो तो हम सभी कामोको एक ही साथ शुरू कर सकते हैं, और अगर थोड़े हो तो हम एक समयमें एक ही काम हाथमे ले।

पर, मेरे विचारसे इस कार्यक्रमको रुचिकर बनानेके लिए एक यह महत्त्वपूर्ण शर्त जरूरी है कि अपने ध्येयको पानेके लिए, फिर वह स्वराज्य हो, औपनिवेशिक स्वराज्य हो या पूर्ण स्वतन्त्रता — हममे अहिंसाके प्रति जीवन्त आस्था होनी चाहिए। शीघ्र ही हिंसाकाण्डमे प्रवृत्त कर देनेवाला कार्यक्रम तैयार करना कोई कठिन कार्य नही है, लेकिन वह तो मेरी दृष्टि और मेरी क्षमताके परे है।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, १७-१-१९२९

४१३. टिप्पणियाँ

क्या स्वतन्त्रता चाहनेवालोंको दण्ड मिलेगा ?

समाचारपत्रोसे पता चलता है कि जो लोग ब्रिटेनसे अपने सभी सम्बन्ध तोड सकने योग्य स्वतन्त्रताका आन्दोलन चलाना चाहते है, सरकारने उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करनेका निर्णय किया है। इसके अतिरिक्त यह भी सूचना मिली है कि पूर्ण स्वतन्त्रताका आन्दोलन करनेवाली सभी सस्थाओको सरकार दवा देना चाहती है। मुझे तो ऐसे किसी कायदे-कानूनका ज्ञान नही है जो किसीको स्वतन्त्रताका आन्दोलन चलानेकी वजहसे दण्ड देनेका अधिकार देता हो। मै तो चाहता हूँ कि सरकार स्वतन्त्रता चाहनेवालोके विरुद्ध कार्रवाई करे। उससे राजनीतिक वातावरण साफ हो जायेगा और इसका भी पता चल जायेगा कि सरकार 'औपनिवेशिक स्वराज्य' का क्या अर्थ लगाती है। यदि 'औपनिवेशिक स्वराज्य' मे ब्रिटेनसे अपने सम्बन्ध तोड लेनेके अधिकारका समावेश न होता हो, तो सोनेसे मढा होनेपर भी वह एक प्रकारकी गुलामी ही है और इस कारण त्याज्य है।

भारत अब अपनी गुलामीसे ऊब उठा है और अपने जन्मसिद्ध अधिकारको पानेके लिए अधीर हो उठा है; इसलिए गुलामीको वह किसी भी रूपमे बरदाश्त नही कर सकता। अतः कोई ऐसी राष्ट्रीय संस्था जो देशके पूरे अधिकारोकी रक्षा करनेको तैयार न हो, देशके सम्मानकी रक्षा नही कर सकती। इसलिए सरकार अगर स्वतन्त्रता चाहनेवालोके विरुद्ध कोई कदम उठाती है तो पूर्ण स्वतन्त्रता तथा 'औपनिवेशिक स्वराज्य' को लेकर परस्पर जो झगडा हो रहा है, वह मिट जायेगा, क्योकि तब तो सभी स्वतन्त्रतावादी बन जायेंगे। 'औपनिवेशिक स्वराज्य' तभी सहन किया जा सकता है जब वह स्वतन्त्रताका पोषण करे। हम स्वेच्छासे ब्रिटेनसे अपने सम्बन्ध न तोड़े, यह जुदा बात है और जोर-जबर्दस्तीसे उस सम्बन्धको निभाना जुदा। ब्रिटेनसे अपने सम्बन्ध तोड लेनेका अधिकार तो हमे होना ही चाहिए। हम ब्रिटेनसे अपना सम्बन्ध रखेंगे या नही, इस प्रश्नका आधार तो भविष्यमे सरकारके बरतावपर निर्भर करता है। ब्रिटेनसे अपने सम्बन्ध तोड़नेके लिए पूर्ण स्वतन्त्रतावादियोको अपना आन्दोलन जोरसे चलानेका और अपनी शक्तिको बढाने-का अधिकार है और अगर इसपर सरकारकी तरफसे जाहिरा या खुफिया, सीधे या आड़े-टेढे ढंगसे किसी प्रकारका प्रतिबन्ध लगाया गया तो जनता उसे एक भी क्षण सहन नही करेगी। इस दलकी प्रगतिको रोकनेका सीधा और प्रामाणिक उपाय तो यही है कि ब्रिटेनके साथ हमारा जो सम्बन्ध है उसे शुद्ध और प्रजाका पोषक बनाया जाये। ऐसा तभी हो सकता है जब इस सल्तनतकी गुलामी कराने और लूटमार करनेकी नीति खत्म हो जाये, हिन्दुस्तान साम्राज्यमे पूरी तरहसे बराबरीका हिस्से-दार बने और वह स्वेच्छासे जब चाहे तब उस सम्बन्धको तोड भी सके।

गुजरात विद्यापीठ

प्रतिवर्ष गुजरात विद्यापीठका दीक्षान्त समारोह उसके जमा-खर्चका लेखा-जोखा करनेका समय होता है। इस अवसरपर नये और पुराने विद्यार्थी एक-दूसरेसे मिलते हैं और विद्यार्थी विभिन्न प्रकारके मनोरंजनोमें समय बिताते हैं। उपाधि-वितरणके समय कुलपतिके भाषणके बाद कोई अन्य नेता भी स्नातकोके समक्ष भाषण देता है। इस बार सरदार वल्लभभाईको यह भाषण देना था। परन्तु परिस्थिति उनके बारडोली छोड़कर आ सकनेकी बिल्कुल ही नही थी। इसलिए उन्होने आशीर्वाद भेजकर सन्तोष कर लिया। अपने आशीर्वाद-पत्रमे उन्होने विद्यार्थियोसे कहा कि वे परीक्षामे पास हो जानेको ही शिक्षाकी इतिश्री न मान ले; बल्कि सदा यह समझे कि उनकी सच्ची शिक्षाका समय तो अब आया है।

जब यह मालूम हुआ कि सरदार नही आ सकेगे तब काकासाहबने गुरुकुल कांगड़ीके आचार्य रामदेवजीसे भाषण देनेके लिए तारसे प्रार्थना की। वे सहमत हो गये और रास्तेमे कोटा उतरकर अपने साथ लाये हुए साहित्यकी सहायतासे आठ घंटेमे उन्होने एक बड़ा-सा भाषण भी लिख डाला। इसका अधिकाश भाग उन्होने जबानी सरल हिन्दीमें सुना दिया। विभिन्न लेखकोंका विस्तृत अध्ययन करनेके फल-स्वरूप वे उनके लेखोके उद्धरण भी सुनाते जाते थे। इस भाषणका तात्पर्य-मात्र ही यहाँ दिया जा सकता है। सरकारी शिक्षा जान-बूझकर हमारी सभ्यताका नाश करनेके लिए तथा हमारी गुलामी कायम रखनेके इरादेसे बनाई गई है, यही स्पष्ट करना भाषणका उद्देश्य था। उन्होने अंग्रेज लेखकोके लेखो द्वारा यह बात सिद्ध कर दी। इस भाषणको छपाकर भेजनेका काम उन्होने अपने जिम्मे लिया है। इसलिए जो उसे पूरा पढ़ना चाहते हैं उन्हे इसका अवसर मिलेगा। मैं उसमे से उद्धरण भी नही दे रहा हूँ। फिर इस बातके हमें रोज इतने प्रमाण मिलते है कि पुराने प्रमाण देकर इस बातको सिद्ध करनेकी जरूरत नही रहती। प्रत्येक विद्यार्थी सरकारी शालाओमें प्रतिक्षण अपनी गुलामीका अनुभव करता है। इस भाषणमे एक बात ऐसी है जो जानी हुई तो है पर हम उसे नही जानते। यह एक विचारने लायक बात है। पाठकोको यह जानकर कदाचित् आश्चर्य होगा कि अंग्रेजी शासनसे पहले हमारे गाँवोमें जितनी पाठशालाएँ थी, अब वहाँ उनका चौथा भाग भी नही बच रहा है। इसका कारण यह है कि पुरानी शालाओकी किसीने देखभाल नही की, उनकी प्रतिष्ठा जाती रही। गाँवोके नेता नौकरी करके चपरासी बन गये और चूँकि प्रतिष्ठा-प्राप्त सरकारी शालाएँ खर्चीली थी इसलिए हर गाँवमे उनका खोला जाना सम्भव नही हुआ। इस प्रकार पुरानी शालाएँ तो नष्ट हो गईं, नवीन क्षेत्र अति संकुचित रहा और इससे प्राथमिक शिक्षा दुर्लभ हो गई।

रामदेवजीका भाषण लगभग दो घंटे चला, और भी एक घंटा चल सकता था, पर हम अपने अधिवेशनमे इतना समय नही दे सकते। इसलिए मुझे दु:खके साथ भाषणको बड़ा दिलचस्प और जोशीला होनेपर भी संक्षिप्त करनेकी विनती करनी पडी।

रामदेवजीका परिचय देनेकी जरूरत नही होनी चाहिए; तो भी सम्भव है, सभी पाठक उन्हें न जानते हो। इसलिए उनका परिचय दे रहा हूँ। वे विद्वान है, देशप्रमी है। प्राचीन साहित्यकी सहायतासे उन्होने हिन्दीमे भारतवर्षका इतिहास लिखा है। वे स्वर्गीय श्रद्धानन्दजीके मुख्य साथी थे और जब श्रद्धानन्दजीने गुरुकुल छोड़ा तो उनका काम सँभाला। और अब वे गुरुकुल कागड़ीके प्राण है।

कुलपतिका भाषण संक्षिप्त और सटीक था। महाविद्यालयके विद्यार्थियोकी संख्या अभीतक कम है किन्तु विद्यापीठका काम महाविद्यालयके साथ ही समाप्त नही हो जाता। विद्यापीठ ग्राम-प्रवेशके लिए दृढ़तापूर्वक तैयारी कर रहा है। वह उद्योगोकी तरफ ज्यादासे-ज्यादा ध्यान दे रहा है। विद्यापीठ अनेक प्रकारसे साहित्य-सेवा तो कर ही रहा है। और कुलपतिने बताया है कि यदि छपाईके काममे कुछ विघ्न न आया तो आगामी अप्रैल मासके शुरूमे जिस शब्दकोशकी तैयारी सवत् १९८३ मे हो रही थी वह शब्दकोश लेखको और प्रकाशकोके पास पहुँच जायेगा। इस प्रकार वर्तनी की समस्या सुलझ जाये तो इसे गुजराती भाषाकी कोई मामूली सेवा नही कहेगे। जो विद्यापीठके हिसाब और सख्या आदिकी पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहते हो उन्हे एक आनेका टिकट भेजकर उक्त सूचना विद्यापीठसे मँगा लेनी चाहिए। उससे उन्हें विद्यापीठके निर्णय-नियम आदिकी पूरी जानकारी हो जायेगी।

समारोहके समय स्नातकोने आचार्य कृपलानीको खादी-दक्षिणा दी। यह बात ध्यान देने योग्य है। जब आचार्य कृपलानी विदा हुए थे तब विद्यार्थियोने संकल्प किया था कि अपने प्रिय आचार्यको वे खादी-कार्यके लिए १०,००० रुपये भेट करेगे। इतनी पूरी रकम तो वे इकट्ठी नही कर सके, किन्तु उन्होने लगभग ६,००० रुपये अहमदाबादके लोगोके पाससे इकट्ठे किये। यह उन्होने आचार्य कृपलानीको भेट किये। इसके उत्तरमे कृपलानीजीने छोटा किन्तु प्रेमपूर्ण भाषण दिया। उन्होने प्रतिज्ञा की कि वे विद्यार्थियोंको कभी नही भूलेगे। उन्होने नवसारीमे अन्त्यज आश्रममे स्नातको द्वारा किये जा रहे कामकी प्रशंसा की और कहा: "स्नातकोको वहाँ हलकेसे-हलका माना जानेवाला सेवा-कार्य करना पड़ेगा; फिर भी उन्हे चाहिए कि वे उसे करते हुए बुद्धिका विकास करना भी न भूले। इसीलिए कालेज छोड़नेपर भी पुस्तकोसे परिचय बनाये रखनेकी आवश्यकता रहती है।"

स्नातकोने अपना सम्मेलन भी किया था। उसकी अध्यक्षता श्री किशोरलाल मशरूवालाने की। उनका सक्षिप्त भाषण स्नातकोके कर्त्तव्यके सम्बन्धमे था। उन्होने यह भी कहा कि विद्यापीठका ध्येय सेवा करना है और यह सेवा शान्ति और सत्यके मार्गसे हो सकती है, इसलिए स्नातक-सघको तो सेवा-सघ होना चाहिए और उसमे स्नातकोंको जीवनकी पवित्रतापर पूरा ध्यान देना चाहिए। शान्ति और सत्यके मार्गसे स्वराज्य प्राप्त करनेवालोको ब्रह्मचर्यादि सयमका पालन कैसे करना चाहिए यह बताते हुए उन्होने कहा: "हमे सूबेदार या न्यायाधीश बननेका स्वप्न नही देखना चाहिए; बल्कि फाँसी, गोलीबारी, कोड़ोंकी मारके स्वप्न देखेंगे तो वह बड़ी भूल नही होगी और शायद अन्तमे यह लगेगा कि प्राप्तिके अनुपातमे कम दुःख सहन करना पड़ा। जो सेवाके लिए सब-कुछ अर्पित नही कर सके उनसे कहा कि प्राचीन पद्धतिके अनुसार

उन्हें अपनी आमदनीका दसवाँ हिस्सा देना चाहिए। और उतना नही तो चाहे वे बीसवाँ अंश ही दें। किन्तु आमदनीका एक निश्चित भाग जरूर देना चाहिए। इसी प्रकार अपने समयका एक निश्चित भाग भी सेवामें लगाना चाहिए। स्नातको द्वारा चलाई जा रही नवावाडजकी अन्त्यजशालाका समारोह भी इसी समय हुआ। और उसमें यह बताया गया कि इस शालाके द्वारा नवावाडजमें मद्यपान निषेधका और दूसरा समाज-सुधारका काम भी चलाया जा रहा है। इस प्रकार हम देख सकते है कि विद्यापीठ एक जीवन्त संस्था है। और उसको जीवन्त रखना शिक्षको और विद्यार्थियोंकी दृढ़ता, पवित्रता और त्यागशक्तिपर निर्भर है। विद्यापीठकी शोभा संख्यावलसे नही होगी, पर पवित्रताके बलपर ही होगी। उसका कार्य भी इसी बलसे सिद्ध होगा।[1]

लालाजी स्मारक और सिन्ध

जब मै कलकत्तेमें था तब श्री जयरामदास और दूसरे सिन्धी मित्रोने लालाजी स्मारकके चन्देके लिए सिन्ध जानेका मुझसे आग्रह किया था। मै इस लोभका संवरण नही कर सका। यद्यपि खादीके लिए ही दौरा करनेका व्रत मैंने ले रखा है फिर भी मै इस चन्देके लिए कई स्थानोमे नही जा सका हूँ। इतना होते हुए भी मैं सिन्धके इस उदार निमन्त्रणको नामंजूर करना नहीं चाहता। लालाजी स्मारकका चन्दा धीरे-धीरे इकट्ठा हो रहा है; उसमें वह गति नही है जो होनी चाहिए थी। अगर पाँच लाख रुपये उचित समयके भीतर ही जमा न हो गये तो यह एक शर्मकी बात होगी। अब जब कि दाताओंको चन्देका उद्देश्य मालूम हो गया है और किन-किन मदोंमें वह खर्च किया जायेगा, इस बातका पता चल गया है तब उन्हे देर करनेका कोई कारण नही है। अतः मै आशा करता हूँ कि सिन्ध इस चन्देमें काफी उदारतासे हाथ बँटायेगा, और दूसरे प्रान्तोके लिए उदाहरण-रूप बनेगा।

मगर सिन्ध खादीको भी न भूले। मैं जानता हूँ, मेरी सिन्ध-यात्रा कई दिनोंसे मुल्तवी होती आ रही है। खादी-प्रेमी मुझे उस समयसे वहाँ आनेके लिए निमन्त्रण देते रहे हैं जब मै यरवदा जेलसे छूटकर आया था। उनके निमन्त्रणका उद्देश्य था सिन्धमे खादीका प्रचार करना और उसके लिए चन्दा इकट्ठा करना। अब वे दरिद्रनारायणकी भेटके लिए तैयार हो जायें। मैं आशा करता हूँ कि रेशमी साड़ियोसे आभूषित सिन्धी महिलाएँ अपनी गरीब बहिनोंका भी ख्याल रखेंगी और 'देती-लेती' कुप्रथाके सम्बन्धमे अबतक उन्होंने क्या-क्या किया है इसका हिसाब मुझे बतायेंगी। बहुत-सी बहनोने इस दुष्ट प्रथाको खुद समूल नष्ट कर डालनेके लिए प्रयत्न करनेका वचन दिया था। मुझे आशा है, वे अपनी प्रतिज्ञाका अच्छी तरह पालन कर दिखायेंगी।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, १७-१-१९२९

१. शीर्षकका यहाँ तकका अंश अंग्रेजीसे न लेकर नवजीवन, २०-१-१९२९ से अनुवादित है।

४१४. तार : मीराबहनको

१७ जनवरी, १९२९

मीराबहन
मारफत खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर

चिन्ता मत करो। गर्म पानी की बोतल से पेट को सेको। आधा औंस चावलसे बना चार औंस गरम-गरम माँड रोज ले सकती हो। सूर्यस्नान अच्छा रहेगा। अपनी हालत की रोज खबर देना। सप्रेम।

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३८७ से; तथा सी० डब्ल्यू० ५३३२ से भी।
सौजन्य : मीराबहन

४१५. पत्र : जफर-उल-मुल्कको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

कलकत्तेमें आप जो पत्र छोड़ गये थे वह अबतक बराबर मेरे साथ रहा है। मुझे सचमुच अफसोस है कि जब आप आये तब मेरा मौन था। मैंने जब आपसे फिर आनेको कहा था तो मौनकी बात नहीं सोची थी। हम लोग बात नहीं कर सके इसका जितना अफसोस आपको रहा मुझे उससे कम नहीं रहा। आप जो-कुछ कहना चाहते हैं वह कृपया मुझे लिख दें, और यदि आपको समय मिले तो जब मैं आश्रममें रहूँ आ जायें और कुछ दिन यहीं बितायें। अभी तो मैं सिन्ध जानेकी तैयारी कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

श्री जफर-उल-मुल्क
लखनऊ

अंग्रेजी (एस० एन० १४९८६) की माइक्रोफिल्मसे।

४१६. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मिला।[१] सयुक्त प्रान्तके दौरेके बारेमे मै तुम्हे पहले ही[२] लिख चुका हूँ। यह पत्र मै कृपलानीके बारेमे लिख रहा हूँ। जमनालालजीने मुझे बताया है कि तुम चाहते हो कि कृपलानी तुम्हारे अधीन संगठनका कार्य सँभाल ले, यानी वह कार्य जो शीतलासहाय कर रहे थे; और उसे जितना बढ़ा सकते है बढ़ायें। तुम्हारे जिस पत्रका मै उत्तर दे रहा हूँ उससे मुझे वैसा कोई आभास नही मिलता। मै समझता हूँ कि कृपलानी स्वय तुम्हे लिख चुके है। चूँकि, जमनालालजीके पत्रके आधारपर, तुम्हारा पत्र मिलनेसे पहले ही मैने और शकरलालने भी उनसे बात शुरू कर दी थी इसलिए अब मुझे लिखो कि इस विषयमे तुम ठीक क्या करना चाहते हो।

यदि मै निकट भविष्यमे संयुक्त प्रान्तका दौरा न करूँ और यदि तुम एक दो दिनके लिए ही साबरमती आ सको, तो हम बहुत-सी बातोंपर विचार-विमर्श कर सकते है।

कमलाके बारेमे डाक्टरकी रिपोर्टोंपर, वे चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल, मेरा बिलकुल विश्वास नही है। मै चाहता हूँ कि तुम और पिताजी और कमला यह निश्चय कर ले कि उसकी प्राकृतिक चिकित्सा करानी है, यानी कूनेका स्नान और सूर्यस्नान। सूर्यस्नानोका अब डाक्टरी चिकित्सा तकमे चलन हो गया है और यह दावा किया जाता है कि सूर्य-स्नानोका असाधारण परिणाम होता है।

यदि आवश्यक हो तो कृपलानीके बारेमे तार दे देना।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५२७६) की फोटो-नकल तथा गांधी-नेहरू पेपर्स १९२९।
सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. दिनांक १२-१-१९२९ का (एस० एन० १५२७७)।
२. देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", १२-१-१९२८।

४१७. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय मोतीलालजी,

आपके दोनो पत्र[1] मिले। मुझे कलकत्ते ले जानेके लिए क्षमायाचनाकी कोई आवश्यकता नही है। बेशक, मैंने यह कभी नही सोचा था कि मुझे उन बहसोमे इतना सक्रिय भाग लेना पडेगा जैसा कि परिस्थितियोमे मुझे लेना पड़ा। पर यह अच्छा ही रहा। मुझे इससे काफी खुशी हुई और काग्रेस सगठनकी वर्तमान गतिविधिके बारेमे एक अन्तर्दृष्टि मिली, जो निश्चय ही मुझे पहले प्राप्त नही थी। और फिर आखिर हमें भीतर और बाहर, दोनो जगह सघर्ष तो करना ही है।

दरभगावाला वह बड़ा मुकदमा एक बहुत ही भारी जिम्मेदारी है और वह आपका बहुत समय लेगा। अन्यथा यह समय रचनात्मक कार्यक्रमको मिल सकता था। फिर भी, मुझे खुशी है कि यह मुकदमा आपको मिल गया है। यदि यह आपको सभी आर्थिक बोझोसे मुक्त कर दे तो फिर आप सार्वजनिक कार्यके लिए बहुत ज्यादा समय दे सकेंगे, और वह भी बिना किसी मानसिक चिन्ताके।

अब मैं दूसरे पत्रपर आता हूँ। यदि मुझे यूरोपका कार्यक्रम पूरा करना है, तो मैं उस यात्राको मई तक नही टाल सकूँगा। उन तमाम मित्रोको, जिन्होने मुझे निमन्त्रित किया है, अपने रवाना होनेकी घड़ीतक अनिश्चयकी स्थितिमे रखनेकी मेरी हिम्मत नही है। यदि मैं जाता ही हूँ तो मुझे जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस सम्भवतः पोलैंड, फ्रांस, इंग्लैंड तो जाना ही पड़ेगा, मैं इसमे इटली, टर्की और मिस्र भी जोड़ना चाहूँगा; यो मुझे इन अन्तिम तीन स्थलोसे कोई निमन्त्रण नही मिला है।

अमेरिकासे भी आग्रहपूर्ण निमन्त्रण आये है कि यदि मैं यूरोप जाऊँ तो अमेरिकाको भी (अपनी यात्रामे) शामिल कर लूँ। ये सब बाते मुझे अभी तय करनी है या फिर बिलकुल छोड़ देनी है। आपके पत्रसे मुझे ऐसा लगता है कि यूरोपकी यात्रा करनेकी बात मुझे इस साल सोचनी ही नही चाहिए। अगले सालकी बात अगले साल देखी जायेगी। इसलिए, यदि आपका उत्तर अन्यथा न हुआ तो मैं उस यात्राको रद्द करनेकी घोषणा करना चाहता हूँ और अगले सालके लिए कोई वादा करना नही चाहता।

मुझसे विदेशी वस्त्रके बहिष्कारकी एक योजना[2] तैयार करनेके लिए कहा गया है। यदि उसे इसी पत्रके साथ तैयार करके नही भेजा जा सका, तो आशा है कि वह दो-एक दिनमे तैयार हो जायेगी।

१. दिनांक १२-१-१९२९ (एस० एन० १५२७९) और १४-१-१९२९ (एस० एन० १५२८०) के।
२. देखिए "खादीके जरिए विदेशी वस्त्र-बहिष्कारकी योजना", २४-१-१९२९।

लालाजी स्मारक कोषके बारेमे व्यक्तिगत रूपसे मेरा यह ख्याल है कि स्थानीय अपीलपर आपको हस्ताक्षर करनेकी जरूरत नही है। स्थानीय लोगोको ही, यदि वे चाहते है तो, खूब उत्साहके साथ चन्दा इकट्ठा करना चाहिए। पुरुषोत्तमदास टंडन अब सोसाइटीके[1] कामोका भार सँभाल रहे है, इससे विश्वास जागृत होना चाहिए।

यदि मै यूरोप नही गया तो सयुक्त प्रान्तको खुशीसे अपनी यात्राके कार्यक्रममे रखूंगा, और तब मै चाहूँगा कि कमसे-कम कुछ स्थानोपर आप भी मेरे साथ रहे।

जवाहरने सिगरेट पीना छोडकर जवाहर-जैसा ही काम किया है। हेलीका[2] सामना करनेके लिए यह एक अच्छी तैयारी है। मै नही समझता जैसा कि आप सोचते है, हेली जवाहरपर इतनी आसानीसे हाथ डालेगे।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५२८१) की फोटो-नकलसे।

४१८. पत्र : निरंजन सिंहको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपका विचार मुझे अच्छा लगा। आप मेरी अन्य रचनाओका अनुवाद कर सकते है। आशा है कि आप जो अनुवाद करेगे वे सब पूरे-पूरे होगे, पुस्तकोके कुछ अशोके ही अनुवाद नही होगे। मुझे यह इसलिए लिखना पड रहा है कि कुछ अनुवादकोने मेरी रचनाओके साथ ऐसी स्वेच्छाचारिता बरती है और वह भी इस ढगसे कि प्राय. उनका अर्थ ही कुछ-का-कुछ हो गया है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत निरजन सिंह
रसायन शास्त्रके आचार्य
खालसा कालेज
अमृतसर

अंग्रेजी (एस० एन० १५२८९)की माइक्रोफिल्मसे।

१. लोक सेवक समाज।
२. सर मेल्कॉम हेली, भारत सरकारके गृह-सदस्य और संयुक्त प्रान्तके गवर्नर।

४१९. पत्र : मु० अ० अन्सारीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय श्री अन्सारी,

आपका पत्र मिला। आशा है कि आपको अब इंफ्लुएंजासे मुक्ति मिल गई होगी। हममे से कुछ लोग जिस तरह, बिना किसी विपत्तिमे पड़े, कलकत्तेमे कामके उस भयानक बोझको झेल सके, वह मेरे लिए एक चमत्कार था। मै अक्सर मन ही मन कहता हूँ 'ईश्वर महान है!'

दिल्लीके मुस्लिम सम्मेलनके[1] बारेमे आप जो कुछ बता रहे हैं उसे पढकर दुःख होता है। हमे इसे भुला देना है। अगर हम सिर्फ अपना दिमाग ठंडा रखे, झुझलाहटके बावजूद अपना धैर्य कायम रखे और जिसे सच्चा मार्ग समझते हैं उससे विचलित न हो, तो मै जानता हूँ कि अन्तमे सब अच्छा ही होगा।

मै जब दिल्लीसे गुजरा था तो डाक्टर जाकिरसे[2] मुलाकात हुई थी। वे पूरे वक्त मेरे साथ रहे। मैं आपसे इस बातमे सहमत हूँ कि अजमल फंडके चन्देका अधिकाश जामियाको दे देना चाहिए जिससे कि डाक्टर जाकिरकी चिन्ता कमसे-कम कुछ हदतक तो दूर हो जाये। मै जमनालालजीको लिखूँगा या शायद वे ही वहाँ जाये। सिंधके लिए मै इस इकतीससे पहले रवाना नही होऊँगा; और मै जमनालालजीसे कह चुका हूँ कि वे मद्रास जानेसे पहले साबरमती हो जाये, चाहे वह एक ही दिनके लिए क्यो न हो। वे इस सप्ताह किसी भी दिन आ सकते हैं। यदि वे नही आये तो मै उन्हे लिखूंगा।

आशा है आप अभीतक हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नपर कार्य कर रहे हैं।

लालाजीकी सोसाइटीके बारेमे आपने जो-कुछ कहा वह मैंने घ्यानमे रख लिया है, और मै आपसे इस बातमे पूर्णतया सहमत हूँ कि यदि उसमे साम्प्रदायिक झुकाव रखनेवाले सदस्य है तो उसे उनसे मुक्त करना चाहिए। मै उसके मन्त्रीको और पुरुषोत्तमदास टंडनको भी लिखूंगा।

हृदयसे आपका,

अग्रेजी (एस० एन० १५२८७)की फोटो-नकलसे।

१. इससे आशय उस मुस्लिम सर्वदलीय सम्मेलनसे मालूम होता है जो आगाखाँके सभापतित्वमें ३१-१२-१९२८ और १-१-१९२९ को हुआ था।

२. डा० जाकिर हुसैन। (१८९७–१९६९), भारतके तीसरे राष्ट्रपति।

४२०. पत्र : लाला जगन्नाथको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय लाला जगन्नाथ,

डाक्टर अन्सारीको मैने स्मारकके विषयमे जो विज्ञप्ति भेजी थी[1] और जिसमे रकमको सोसाइटीके लिए विभाजित करनेका उल्लेख था, उसपर अपनी स्वीकृति जाहिर करते हुए वे अपने [सलग्न] पत्रमे मुझे यह लिखते है।[2] मै चाहूँगा कि आप इस विषयमे डाक्टर अन्सारीको बिलकुल निश्चिन्त कर दे। कृपया यह पत्र पुरुषोत्तमदास टडनको दिखा दे। यदि वे डाक्टर अन्सारीको लिखे तो शायद ज्यादा अच्छा रहेगा। अन्सारीका आशय जिससे है यदि आपके ख्यालमे कोई सदस्य ऐसा है, तो उसे भी लिखा जाना चाहिए।

सिन्धका कार्यक्रम, जिसके बारेमें मैने आपको उस दिन लिखा था, कायम है और मै यहाँसे इसी इकतीसको रवाना हो रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

सलग्न : डाक्टर अन्सारीके पत्रके अश।

अग्रेजी (एस० एन० १५२९०)की फोटो-नकलसे।

४२१. पत्र : श्रीमती गिडवानीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

आपका पत्र मिला। आप मुझे अग्रेजीमे क्यो लिखती है? निश्चय ही आप अच्छी हिन्दी जानती है। आप गुजराती भी जानती है। पर यदि आप गुजराती या हिन्दीमे नही लिख सकती थी, तो सिन्धीमे ही लिखती और किसीसे मै उसे समझ

१. देखिए "पत्र : मु० अ० अन्सारीको" ६-१-१९२९।

२. दिनांक १०-१-१९२९ का। उसमें लिखा था : "मैंने पजाबके कुछ बहुत ही विश्वस्त कार्यकर्त्ताओंसे यह सुना है कि लोक सेवक समाजके मुख्य सदस्योंमें से कुछका साफ-साफ साम्प्रदायिकताकी ओर झुकाव है। मैं आशा करता हूँ कि एक ऐसी संस्था, जो मुख्य रूपसे जनता और पूरे देशकी सेवाके लिए बनाई गई है, शीघ्र ही इस कलंकसे मुक्त कर दी जायेगी।"

लेता। आखिर सिन्धी फारसी लिपिमे लिखी जाती है। खैर, जब मैं कराची आऊँगा तो आपको इन वातोकी सफाई देनी होगी।

निःसन्देह, जब मैं कराचीमे रहूँगा तो आपके साथ ठहरना चाहूँगा। पर मैं सिंध एक स्वतन्त्र कार्यकर्त्ताकी हैसियतसे नही आऊँगा। मैं हर जगह वहाँकी स्वागत समितिके वन्धनमे रहूँगा। इसलिए आपको कराचीकी स्वागत समितिको ही राजी करना चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्रीमती गिडवानी
६, क्वीन्स रोड
कराची

अग्रेजी (एस० एन० १५२९१) की फोटो-नकलसे।

४२२. पत्र : विधानचन्द्र रायको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय डाक्टर विधान,

शामियानेके सिलसिलेमे मुखर्जीके दावेके[1] बारेमे सच बात क्या है? मैंने रंगा स्वामीसे पूछा था। उनका खयाल है कि उसका दावा पक्का है। अगर ऐसी बात है तो क्या स्वागत समितिका अनुबन्ध पूरा न कर सकनेके लिए हरजाना देना जरूरी नही है?

हृदयसे आपका,

संलग्न : १

डा० विधानचन्द्र राय
३६, वेलिंग्टन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजी (एस० एन० १५२९२) की माइक्रोफिल्मसे।

१. शामियाना बनानेवाले ए० एन० मुखर्जीने १४-१२-१९२८ के अपने पत्रमें ७-७-१९२६ के एक करारका उल्लेख किया था, जिसपर उसके और अखिल भारतीय कांग्रेस समितिके महामन्त्री ए० रंगास्वामी आयंगारके हस्ताक्षर थे (एस० एन० १३७९८)।

४२३. पत्र : मन्त्री, अखिल भारतीय चरखा संघको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

मन्त्री
अखिल भारतीय चरखा सघ
अहमदाबाद

प्रिय महोदय,

अखिल भारतीय चरखा संघके संविधानके सिलसिलेमे जो विषय मेरे पास सम्मतिके लिए भेजे गये है, उनके सम्बन्धमे मेरी सम्मति यह है कि परिषद (कौंसिल) के सदस्योंके चुनावके लिए ऐसा कोई भी व्यक्ति मतदाता होनेका अधिकारी नही है जो मतदाता-सूची तैयार होते समय पूरे दो सालसे 'क' श्रेणीका प्रामाणिक सदस्य न हो, और दूसरी बात यह कि ऐसा कोई भी व्यक्ति चुनावके लिए उम्मीदवार नामजद नही किया जा सकता जिसने उस नामजदगीके दिन तक 'क' श्रेणीकी सदस्यताका पूरा शुल्क न दिया हो।

आपका विश्वस्त,

अंग्रेजी (एस० एन० १५२९३) की माइक्रोफिल्मसे।

४२४. पत्र : नारायणदास र० मलकानीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१७ जनवरी, १९२९

प्रिय मलकानी,

तुम्हारा पत्र मिला। अपनी बेटीके बारेमें तुम्हारा तार भी मिल गया था। एक साड़ीका महत्त्व मुझे पूरी तरह समझमे नही आया। इसलिए मैंने तुम्हे कुछ नही भेजा। मैंने वह तार कृपलानी या चोइथरामको भी, जो भी मेरे पास थे, पढकर सुनाया था और वे भी उसे समझ नही सके और यह यकीन नही कर सके कि तुम केवल एक साडीसे काम चला सकते हो। अब देखता हूँ कि तुम नही चला पाये। ७०० रुपएका खर्चा तुमने अपने ऊपर क्यो लिया था? बात अब बीत चुकी है, फिर भी मै जानना चाहूँगा।

जहाँतक तुम्हारा अपना सवाल है, तुम खुद (इनमेंसे किसी एक बातका) चुनाव कर सकते हो। या तो जबतक मैं सिन्धमे रहूँ, तुम वही रहो या जैसे ही तुम्हे छुट्टी मिले तुरन्त यहाँ चले आओ। उस हालतमें तुम मेरे साथ लगभग एक सप्ताह रहोगे। यह पत्र तुम्हे २० तारीखसे पहले मिल जायेगा। मान लो तुम्हे २० को छुट्टी मिल जाती है और तुम तुरन्त चल पडते हो, तो तुम २१ को साबरमती पहुँच सकोगे और २१ से ३० तक मेरी मौजूदगीमे आश्रममे रहोगे। हम ३१ को नही गिनेगे। क्योकि मै उस दिन सुबह ही साबरमतीसे चल दूंगा।

निःसन्देह मै तुम्हें एक अलग कमरा दूँगा। मै इस बातको अच्छी तरह समझता हूँ कि तुम्हें अपने लिए एक अलग कमरेकी जरूरत महसूस होगी।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत नारायणदास र० मलकानी
केन्द्रीय बाढ सहायता समिति
हैदराबाद

अंग्रेजी (जी० एन० ८९१) की फोटो-नकलसे।

४२५. पत्र : मीराबहनको

सत्याग्रहाश्रम
साबरमती
१७[1] जनवरी, १९२९

चि० मीरा,

तुम्हारे तैयार किये हुए चार्ट लौटा रहा हूँ। वे बिलकुल ठीक हैं। मैंने उनमें दो जगह सुधार किये है; उन्हे देख लेना। स्वराज्यका जिक्र करनेमे मुझे कोई हर्ज नही दिखता। कुछ और आँकड़े देकर उनको ढंगसे पेश कर दिया जाये तो चार्टोको और ज्यादा असरदार बनाया जा सकता है। अनेक देशोके लोगोकी दैनिक आयके जो आँकड़े दिये गये है, आशा है वे बिलकुल सही ही होगे। अपने सभी चार्टोमे तुमको इस बातका पूरा ख्याल रखना चाहिए कि आँकडे एकदम सही हो और जितने शब्दोसे काम चल सके, चलाया जाये।

मै नही समझता कि बिहारमे इनका अंग्रेजीमे भी प्रकाशित कराया जाना जरूरी है। अंग्रेजी दक्षिणमे कुछ लोगोके लिए जरूरी मानी भी जा सकती है, पर उत्तर भारतमे तो एकदम नही। बहरहाल यह तो तुम वहीके लोगोसे सलाह लेकर तय करना।

१. अन्तिम पैरासे स्पष्ट होता है कि पत्र दूसरे दिन पूरा किया गया था।

हालाँकि मै तुमको पहले ही लिख चुका था कि मै ३१ तारीख तक यहाँसे रवाना नही होऊँगा और ब्योरेवार कार्यक्रम तुमको बादमे भेज दिया जायेगा, फिर भी तुम्हारे तारके जवाबमे मैंने एक तार[1] तुमको भेजा था।

तुमको अपना जुकाम तेज चालसे घूमना शुरू करके ठीक कर लेना चाहिए। दूधके लिए रुकनेकी कोई जरूरत नही। पानी गरम करके उसे नीबूके साथ या उसके बिना भी पीनेसे शरीरमे थोडी देरके लिए गरमी आ जायेगी। फिर जितनी गर्मीकी जरूरत है घूमनेसे मिल जायेगी। भले पन्द्रह मिनट ही क्यो न घूम पाओ, घूमने अवश्य जाओ।

यह पत्र मैंने कल रात बोलकर लिखवाया था। अब तुम्हारी बीमारीके बारेमे तुम्हारा तार भी मिल गया है। चिन्ता मत करना। तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी। कल ही तार[2] द्वारा मैंने तुमको हिदायते भेजी है। मेरे स्वास्थ्यके बारेमे तुमको हर हफ्ते दो कार्ड और अगर बीमार पड गया तो एक कार्ड मिलता रहेगा।

ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३८८ से; सी० डब्ल्यू० ५३३३ से भी।
सौजन्य : मीराबहन

४२६. पत्र : हैरॉल्ड एफ० बिगको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१८ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मुझे मिल तो गया था, पर मै उसे आज ही खोल पाया हूँ। देखता हूँ कि आप मेरा सन्देश[3] १५ तारीख तक पाना चाहते थे, और आज १८ तारीखको मै इसका जवाब बोलकर लिख रहा हूँ। इसीलिए मै इसके द्वारा आपको सन्देश न भेज पानेके लिए खेद प्रकट कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

हैरॉल्ड एफ० बिग
सगठन-मन्त्री
द ब्रिटिश फेडरेशन ऑफ यूथ
लन्दन, डब्ल्यू० सी० १

अंग्रेजी (एस० एन० १४९८८) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "तार : मीराबहनको", १६-१-१९२९।
२. देखिए "तार : मीराबहनको", १७-१-१९२९।
३. भारतीय युवकों और भारतीय समस्याओंकी चर्चाके लिए प्रकाशित यूथके एक विशेषांकके लिए (एस० एन० १५०८५)।

४२७. पत्र : रिचर्ड बी० ग्रेगको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१८ जनवरी, १९२९

आपके पत्र नियमित रूपसे मुझे मिलते रहे हैं। परन्तु मैं सोच रहा था कि आप न्यूयार्क पहुँच जायें तभी आपको लिखना शुरू करूँ। इसीलिए मैंने आपको अब तक कोई पत्र नही लिखा। यह पत्र आपको यह सूचित करनेके लिए लिख रहा हूँ कि अब वैज्ञानिक ढंगसे लिखी गई आपकी पुस्तिका — जो भी नाम उसे दिया जाये — को छपवानेकी तैयारी की जा रही है। मैंने अबतक उसका नाम निश्चित नही किया है। और मुझे यह स्वीकारते हुए तो शर्म-सी महसूस हो रही है कि मैं उसे अबतक पूरा नही पढ़ पाया हूँ। परन्तु उसके प्रकाशनकी बात तय हो चुकी है; और चूँकि इतना तय हो चुका है इसलिए मैं उसे जल्दीसे-जल्दी पूरा पढ़ जानेकी कोशिश कर रहा हूँ।

मैं अब फिर दूधके बिना रहनेका प्रयोग कर रहा हूँ। मैं आजकल भोजनके रूपमे पिसे हुए बादाम, टमाटर, एक कोई दूसरी सब्जी और रोटी ही ले रहा हूँ। इसलिए आप मुझे आहारके बारेमे सारी नईसे-नई जानकारी अवश्य दे।

मीराबहन बिहारमे है और वहाँ गाँवोमे अपनी रुई आप धुननेका काम जमा रही है।

इस समय 'मन्दिर' मे[1] अनेक यूरोपीय मेहमान है। डेनमार्कसे आई दो बहने कुछ दिनोसे यही है; और आज ही तीन और मित्र — दो पुरुष तथा एक महिला — आये है और सम्मिलित रसोई लगातार प्रगति कर रही है।

हृदयसे आपका,

श्री रिचर्ड बी० ग्रेग
४०, ओल्ड आर्चर्ड रोड
चेस्टनट हिल
मैसाचुसेट्स, सं० रा० अमेरिका

अंग्रेजी (एस० एन० १५१४३) की फोटो-नकलसे।

१. उद्योग मन्दिर, अर्थात् साबरमती आश्रम।

४२८. पत्र : फ्रान्सिस्का और फ्रेडरिक स्टेंडेनथको[1]

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१८ जनवरी, १९२९

आपके पत्र मुझे मिल गये है। दूसरे लोगोको लिखे आपके पत्रोसे भी मुझे मालूम हो गया है कि आश्रमका विछोह आपको कितना सता रहा है। पर मै चाहता हूँ कि आप अपने ऊपर नियन्त्रण रखें और अपने ध्येयकी ओर सुस्थिर गतिसे बढते रहे।

कलकत्ताकी इतनी दौड-धूपके बाद भी मै बिलकुल चगा हूँ और अब दुग्धरहित आहारका प्रयोग चालू है। मै पिसे हुए बादाम, टमाटर, एक कोई सब्जी और रोटीके अतिरिक्त कुछ नही लेता। अबतक इससे मैंने कोई कठिनाई महसूस नही की है।

मीराबहन बिहारमे चरखेका काम कर रही है। और सब लोग भी ठीक चल रहे है। आजकल आश्रममे कई यूरोपीय मेहमान है। मुझे अधिक नही लिखना चाहिए। मुझे थोडी शका ऐसी होती है कि काग्रेस अधिवेशनमे उठी कुछ नयी समस्याओके कारण शायद मै इस वर्ष यूरोपकी यात्रापर न निकल सकूं। अगले सप्ताह अधिक निश्चित रूपसे कह सकूंगा।

हृदयसे आपका,

सावित्री[2]
फ्रेडरिक स्टेंडेनथ

अग्रेजी (एस० एन० १५१४४) की फोटो-नकलसे।

१. यूरोप लौटते हुए स्टैंडेनथ दम्पती द्वारा लिखे गये अनेक पत्रोंके उत्तरमें।
२. गाधीजी द्वारा दिया गया नाम।

४२९. पत्र : शौकत अलीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१८ जनवरी, १९२९

प्यारे भाई,

आपका पुर्जा मिला। वादेके मुताबिक खतकी राह देख रहा था। लेकिन इससे भी ज्यादा बेसब्रीसे इस बातकी राह देख रहा हूँ कि आप आनेका वादा कब पूरा करते हैं।

दावत तो मुझे मिली है, पर शायद मैं जा नहीं सकूँगा।

महादेव बारडोलीमें वल्लभभाईको जाँचके काममें[1] मदद दे रहा है।

हृदयसे आपका,

मौलाना शौकत अली
केन्द्रीय खिलाफत समिति
सुलतान मेन्शन
डोंगरी
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १५२८५)की फोटो-नकलसे।

४३०. तार : मीराबहनको

१९ जनवरी, १९२९

मीराबाई
मारफत खादी भण्डार
मुजफ्फरपुर

तुम्हारा तार। मेरा सुझाव है सबसे पासकी किसी गरम जगहमें चली जाओ। पर राजेन्द्रबाबूसे सलाह लेकर ही। सप्रेम।

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३८९ से; तथा सी० डब्ल्यू० ५३३४ से भी।
सौजन्य : मीराबहन

१. बारडोली ताल्लुकेमें भू-राजस्वके निर्धारणके बारेमें; देखिए खण्ड ३७, पृष्ठ ८६-८८।

४३१. पत्र : शंकरनको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१९ जनवरी, १९२९

प्रिय शकरन,

आपका पत्र मिल गया। मै इसे मथुरादासके पास भेज रहा हूँ। मै चाहता हूँ कि आप उससे बात कर ले। आप कामसे फुर्सत पाते ही रवाना हो सकते है। किसी भी हालतमे आप अचानक काम छोडकर न जायें। आपको जो भी जरूरत होगी, मथुरादास उसका प्रबन्ध कर देगा। आपको यह चीज मुझसे इतने दिनो तक छिपानी नही चाहिए थी। उम्मीद है कि आप जितनी जल्दी बन सके लौट आयेगे। जो बिलकुल ही जरूरी न हो, ऐसा कोई खर्च मत कीजिए।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत शंकरन
एवरग्रीन, माथेरान

अंग्रेजी (एस० एन० १४९८५) की माइक्रोफिल्मसे।

४३२. पत्र : त्रावणकोरके दीवानको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
१९ जनवरी, १९२९

प्रिय भाई,

तथाकथित अस्पृश्यो द्वारा शुचिन्द्रम् मन्दिरके चारो ओरकी सडकोके इस्तेमालके बारेमें त्रावणकोरके लोग मुझे लगातार पत्र लिख रहे है। त्रावणकोरकी अपनी यात्राके[1] दौरान मुझे तो कुछ ऐसी आशा बँध गई थी कि कुछ ही दिनोमे ये सडके उनके लिए खोल दी जायेगी। तबसे काफी समय बीत चुका है और कुछ भी किया गया हो ऐसा नही दिखाई पडता। क्या मै पूछ सकता हूँ कि इन तथाकथित अस्पृश्योके लिए य सडके खुल जानेकी निकट भविष्यमे कोई सम्भावना है या नही?

हृदयसे आपका,

त्रावणकोरके दीवान
त्रिवेन्द्रम

अग्रेजी (एस० एन० १५२९६)की माइक्रोफिल्मसे।

१. अक्तूबर, १९२७ में; देखिए खण्ड ३५।

४३३. पत्र: वि० ल० फडकेको

आश्रम, साबरमती
शनिवार, १९ जनवरी, १९२९

भाई मामा,

तुम्हारा तथा भाई माणेकलाल गाधीका पत्र मिल गया है। मुझे भाई जयसुखलाल मेहताका नाम पसन्द है। लक्ष्मीदासका नाम भी रख सकते हैं। किन्तु जयसुखलाल आये तो वह अच्छा रहेगा। मुझे तो अन्य कोई नाम नही सूझ रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३८२३)की फोटो-नकलसे।

४३४. 'प्रान जाहि बरु बचनु न जाई'

तुलसीदासजीने प्रतिज्ञाके ये शब्द रामचन्द्रजी द्वारा कहलाये हैं। भारतवर्षकी सभ्यतामें ऐसे असंख्य उदाहरण हमे मिलेगे जहाँ प्रतिज्ञाकी कीमत प्राणोके बराबर कूती गई है। मुझे आशा है कि गुजरात कालेजके विद्यार्थी अपनी टेक निभा कर इस तरहका एक और उदाहरण लोगोके सामने रखेगे। प्रिन्सिपल साहब जिन शर्तों पर विद्यार्थियोंको पढने देना चाहते हैं, अगर उन्हे मान ले तो वे न उनका मान बढाती हैं और न विद्यार्थियोको ही बहादुरीका पाठ सिखाती है। प्रिन्सिपल साहबकी इस कोशिशसे ऐसा मालूम होता है, मानो वे अपनी भूलको स्वीकार करनेके बदले यह चाहते है कि भूल विद्यार्थियोकी मानी जाये और वे इसे स्वीकार करे। इन शर्तोंको स्वीकार न करनेके कारण विद्यार्थी धन्यवादके पात्र है। शर्तें मंजूर न करना ही उनका धर्म था। अगर विद्यार्थी आखिरी वक्त तक अपनी टेकपर डटे रहेगे तो *उनका यह कार्य उनकी सच्ची शिक्षाका द्योतक होगा और यह माना जायेगा कि* देशको आगे बढानेमे उन्होने बड़ा भारी काम किया है। यह तो निर्विवाद है कि विद्यार्थियोके ऐसे कार्योका परिणाम बहुत गहरा हो सकता है। विद्यार्थियोंकी विजय इसमे नही है कि वे कालेजमे जैसे-तैसे फिरसे दाखिल हो जाये; बल्कि इसमे है कि वे अपनी जान जानेतक प्रतिज्ञाका पालन करते रहे। इस तरह अगर वे प्रतिज्ञापालनका पहला पाठ सीख गये तो भविष्यमे वे देशकी अच्छी सेवा कर सकेंगे। इससे उनका आत्मविश्वास बढेगा और जिसे दृढ आत्मविश्वास हो जाता है उसके लिए इस दुनियाकी और सब बाते बिलकुल सहज हो जाती है।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २०-१-१९२९

४३५. पत्र : वसुमती पण्डितको

[२० जनवरी, १९२९][1]

चि० वसुमती,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। अच्छा हुआ जो वर्धा छोड दिया। इससे आज्ञाका कोई उल्लघन नही हुआ। जब इच्छा हो तब यहाँ आ जाना। स्वास्थ्य अच्छा रखना और मनसे निश्चिन्त रहना। ३१को सिन्ध जानेका कार्यक्रम जैसाका-तैसा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०४) की फोटो-नकलसे।
सौजन्य : वसुमती पण्डित

४३६. पत्र : मीराबहनको

२० जनवरी, १९२९

चि० मीरा,

तुम्हारे समाचार लेकर आज कोई तार नही मिला। ऐसे झटके तो लगते रहते है। मैंने तुमको कलके तारमे[2] सलाह दी थी कि किसी ज्यादा गरम जगह चली जाओ। मैंने राजेन्द्र बाबूको भी तार[3] दिया था कि अगर वे जरूरी समझे तो तुम फिलहाल आश्रम लौट आओ। मै जानता हूँ कि तुम्हारे बारेमे चिन्ताकी बिलकुल ही कोई बात नही। बीमारीको लेकर परेशान मत होना। मामूली-सी पेचिश है। दूध और फलोके रसपर रहना चाहिए, लेकिन अगर डाक्टर फलोका रस मना करे तो उसे फिलहाल बन्द रखना। शरीरको गरमी पहुँचाती रहो और जरूरत पड़े तो पेटपर पट्टी भी बाँधना।

आज इतवार होनेसे कोई तार नही आया। उम्मीद है कल तार जरूर ही मिलेगा।

सप्रेम।

बापू

[पुनश्च :]

मै चंगा हूँ। वजन नही बढा; इस हफ्ते एक पौड घटा है। लेकिन कोई खास बात नही।

अंग्रेजी जी० एन० ९३९० से; तथा सी० डब्ल्यू० ५३३५ से भी।
सौजन्य : मीराबहन

१. डाककी मुहरसे।
२. देखिए "तार : मीराबहनको", १९-१-१९२९।
३. उपलब्ध नहीं है।

४३७. पत्र : एन० मेरी पीटर्सनको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२० जनवरी, १९२९

प्रिय मारिया,

इतने लम्बे अरसेके बाद तुम्हारा पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मै सक्रिय राजनीतिमे कूद ही पडा हूँ ऐसा एकदम निश्चित नही कहा जा सकता। मै खुद नही जानता कि इस वर्ष मुझे कौन-सी भूमिका निभानी पड़ेगी। अगले महीने शायद कुछ निश्चित हो सके।

मेरे आहार सम्बन्धी प्रयोगको लेकर तुम्हारी चिन्ता व्यर्थ है। विश्वास रखो कि मेरा यह प्रयोग भी ईश्वरके ही मार्गदर्शनमे चल रहा है। मै तो यही समझता हूँ।

अवधिके बारेमे तुम्हारा अनुमान बिलकुल ठीक है। देखना है कि वर्षका अन्त हमे क्या दिखाता है।

दुःखकी बात है कि एस्थर अबतक पूर्ण स्वस्थ नही हो पाई। उसके 'एपेण्डिसाइटिस' के आपरेशनकी बात मुझे मालूम थी। मेनन जितना कुछ कर रहा है उससे कमकी उससे आशा भी नही थी। पर खुशी इस बातकी है कि हमारी आशाकी कसौटीपर वह पूरा उतरा है।

यूरोप यात्राके बारेमें तुम्हारा अनुमान सही है। दस दिनके बाद ही मै कह सकूँगा कि मै यूरोप जाऊँगा या नही। लेकिन तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। मुझे स्वतन्त्र भारतके प्रतिनिधिकी हैसियतसे ही यूरोप जाना चाहिए। पर इसमें भी होगा वही जो ईश्वरको मंजूर है।

डेनिश बहिने यही है। वे पिछले ४ या ५ दिनसे यही है और यहाँ आश्रममें एक सप्ताहतक रहनेवाली है।

हृदयसे तुम्हारा,

कुमारी मेरी पीटर्सन
नेशनल क्रिश्चियन गर्ल्ज स्कूल्स
पोर्टो नोवो (दक्षिण भारत)

अंग्रेजी (एस० एन० १५१४१) की फोटो-नकलसे।

४३८. पत्र : प्र० च० घोषको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२० जनवरी, १९२९

प्रिय प्रफुल्ल बाबू,

आपका पत्र मिला।[1] आपकी बीमारीकी बात पढकर बडा दुखी हुआ। मैं अभी निश्चित तौरपर नही कह सकता कि कांग्रेस कार्यक्रमके सिलसिलेमे इस वर्ष मुझे कौन-सा पार्ट अदा करना पडेगा। मुझसे अपेक्षा की जाती है कि मैं विदेशी वस्त्रोंके बहिष्कारके बारेमें कार्यकारिणीको सलाह दूँ। मैं इस सिलसिलेमे एक योजना[2] बना रहा हूँ। मैं पण्डित मोतीलालजीसे पत्रव्यवहार कर रहा हूँ। यदि मैंने कोई काम हाथमे लिया तो मैं चाहूँगा ही कि आप उसमें हाथ बँटाये। मैं जानता हूँ कि आप भली-भाँति समझते हैं कि मुझे आपसे कितनी आशाएँ हैं।

हृदयसे आपका,

डा० प्रफुल्ल घोष
अभय आश्रम
कोमिल्ला

अंग्रेजी (एस० एन० १५२८३) की फोटो-नकलसे।

४३९. पत्र : डा० सत्यपालको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२० जनवरी, १९२९

प्रिय डा० सत्यपाल,

आपका पत्र मिला। आप जितना कुछ करना चाहते है सो सब बतला दीजिए। मैं तो चाहता था कि पंजाबका दौरा कर लेता। लेकिन इस वर्षका मेरा कार्यक्रम अभी बडा अनिश्चित है। मैं पण्डित मोतीलालजीसे लिखा-पढी कर रहा हूँ। आशा है कि इस महीनेके अन्ततक मैं निश्चित कर लूँगा।

१. श्री घोषने १९२९ और १९३० के लिए निश्चित कार्यक्रमके बारेमें जानकारी माँगी थी (एस० एन० १५२८२)।

२. देखिए "खादीके जरिए विदेशी वस्त्र-बहिष्कारकी योजना", २४-१-१९२९।

आपका सबसे पहला काम कांग्रेस संगठनको व्यवस्थित करना है।

हृदयसे आपका,

डा० सत्यपाल
४२, निस्वत रोड
लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १५२९९) की माइक्रोफिल्मसे।

४४०. पत्र : मन्त्री, अखिल भारतीय चरखा संघको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२० जनवरी, १९२९

मन्त्री
अखिल भारतीय चरखा संघ
अहमदाबाद

प्रिय महोदय,

दिनांक १८ जनवरीके आपके पत्र-संख्या १५१९ के सन्दर्भमें। आप चुनावमें खड़े होनेवाले उम्मीदवारोंके लिए चन्दा अदा करनेकी अन्तिम तिथि ३० सितम्बर निर्धारित कर सकते हैं। मेरा ख्याल है कि जिनकी सदस्यताकी अवधि कुल महीने-भरकी हो, उनको भी चुनावमें खड़े होनेका अधिकार देना चाहिए। इसका सीधा-सा कारण यही है कि सभी चाहेंगे कि मतदाता लोग नामजद सदस्योंमें से सर्वोत्तमको ही चुनें।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५३००) की माइक्रोफिल्मसे।

४४१. पत्र : मन्त्री, अखिल भारतीय चरखा संघको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२० जनवरी, १९२९

मन्त्री
अखिल भारतीय चरखा संघ
अहमदाबाद

प्रिय महोदय,

दिनांक १८ जनवरीके आपके पत्र-संख्या १५१७ के सन्दर्भमें। इसके साथ सतीश बाबूका पत्र संलग्न था। सतीश बाबूका सुझाव पसन्द आया। अलबत्ता, कांग्रेस

सप्ताहके दौरान प्रदर्शनीका आयोजन करनेमे व्यावहारिक किस्मकी कुछ कठिनाइयाँ है। जबतक काग्रेस खुद ही ऐसी प्रदर्शनीके लिए न कहे, तबतक हम उसके विरोधके बावजूद ऐसी कोई प्रदर्शनी नही लगा सकते। हम यह अवश्य कर सकते है कि हर साल अलगसे एक अखिल भारतीय प्रदर्शनीका आयोजन करने लगे। और यदि इस कामके लिए पर्याप्त सख्यामे कार्यकर्त्ता मिल जाये, तो यह सचमुच शानदार चीज बन सकती है। वह काफी बडे जन-समुदायको आर्कषित कर सकती है और इसके जरिए खादीका सारा अतिरिक्त स्टाक बिना किसी कठिनाईके बचा जा सकता है। ऐसा प्रयास बड़ी प्रतिष्ठाकी बात बन सकती है और वह शिक्षाप्रद हो सकता है। सतीश बाबू इस सुझावपर विचार कर ले। हाँ, इस सालके काग्रेस अधिवेशनके बारेमे मै इतना बतला दूँ कि प्रदर्शनीके आयोजनके सम्बन्धमे पंजाब काग्रेस कमेटीके साथ मेरी लिखा-पढी चल रही है।

हृदयसे आपका,

अग्रेजी (एस० एन० १५३०१) की माइक्रोफिल्मसे।

४४२. पत्र: मीराबहनको

२१ जनवरी, १९२९

चि० मीरा,

तुम्हारा खुश कर देनेवाला तार आज मिला। आशा है अब बराबर सुधार होता रहेगा। आवश्यक हो जाये तो वापस आनेमे सकोच मत करना। साथ ही मै नही चाहता कि तुम प्रयत्न छोड दो। हाँ, इसीमे समझदारी दिखाई पडे तो दूसरी बात है।

महादेव लौट आया है। उसे चन्द ही दिनोमे वापस जाना पडेगा। छोटी-छोटी कृपाओके लिए आदमी [प्रभुका] आभार मानता है।

कलके वजन घटनेके समाचारकी कोई अहमियत नही। आहार बदलनेसे घटा-बढी होती ही रहती है, लेकिन स्फूर्तिमे कोई कमी नही आई। इस प्रयोगमे वजनका कोई महत्त्व नही।

वहाँ स्थान-परिवर्तनकी इच्छा होनेपर तुम शान्तिनिकेतन जा सकती हो या वही सिवानके पास अम्बालालकी चीनीकी मिले है। राजेन्द्रबाबू उन लोगोको जानते है। वहाँ तुम्हारा अच्छा स्वागत होगा। अनसूयाबहनने शनिवारको वहाँकी बात की थी।

शनिवारके दिन हमारे यहाँ पाँच यूरोपीय मेहमान थे। अब दो डेनिश महिलाएँ है। दो और मंगलवारको आ रही है। सुरेन्द्र धोलका गया हुआ है।

मैंने तुमको बतलाया या नहीं कि अभी उस दिन हमारे यहाँ चोर आये और मेरे स्नानगृहसे बर्तन आदि ले गये थे।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३९१ से; तथा सी० डब्ल्यू० ५३३६ से भी।

सौजन्य : मीराबहन

४४३. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

आश्रम, साबरमती

[२२ जनवरी, १९२९][1]

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। मधुमक्खी पालनके लिए विलायतसे सामान मँगानेकी कोई जरूरत नहीं है।

रंग-चिकित्साकी जो पुस्तकें तुमने भेजी हैं वे मिल गई हैं। इतनी ही किताबोंसे काम चल जायेगा। यदि मैं फरवरीकी १५के बाद रंगून जानेके लिए तैयार हो जाऊँ तो क्या तुम्हारा कोई स्टीमर जायेगा? बम्बईसे ६ दिनमें पहुँच सकूँ तो वह मुझे ठीक पड़ेगा और मुझे अच्छा भी लगेगा। जबतक तुम्हारा स्टीमर मिले दूसरा नहीं लेना चाहता। देखता हूँ कि तुम्हारे स्टीमरकी कोई निश्चित तारीख नहीं होती।

माताजीको अब आराम होगा। उनसे कहना मुझे अक्सर उनकी याद आती रहती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७९२)की फोटो-नकलसे।

सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

1. डाककी मुहरसे।

४४४. पत्र : वी० सूर्यनारायणमूर्तिको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२२ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मुझे मिल गया है।[1] आप चाहे तो बयान देनेसे इनकार कर सकते हैं; पर बयानमें असत्य कोई बात नहीं कहनी चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत वी० सूर्यनारायणमूर्ति
अध्यापक
श्रीमती ए० वी० कालेज
विशाखापटनम्

अंग्रेजी (एस० एन० १४८८०) की फोटो-नकलसे।

४४५. पत्र : च० राजगोपालाचारीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२२ जनवरी, १९२९

आपका पत्र मिल गया। इस बारके 'यंग इंडिया' से आपको मालूम हो जाएगा कि मैंने विदेशी वस्त्रोंके बहिष्कारके बारेमें क्या किया है।[2] आपको उसी

१. वी० सूर्यनारायणमूर्तिने एक मुकदमेके सिलसिलेमें गांधीजीकी सलाह माँगी थी कि उनको अदालतमें बयान देना चाहिए या नहीं। पत्रमें लिखा था: "मेडिकल कालेजके एक विद्यार्थीने अपनी पत्नीको जहर देकर मार डाला था। वह अब हिरासतमें है . . . । . . . अभियुक्तकी एक चाची पढ़वानेके लिए एक पत्र मेरे पास लाई थी; उसमें विद्यार्थीको पत्नीकी हत्याके लिए प्रेरित किया गया था। पूरी इबारत सुननेके बाद उस महिलाने पत्र नष्ट कर दिया था। पुलिसको उस पत्रकी गन्ध मिल गई और उसने मामलेके बारेमें मुझसे पूछताछ की। मैंने पत्रमें जो-कुछ भी पढ़ा था, उनको बतला दिया। कई बड़े-बड़े आदमी अभियुक्तको बचाना चाहते हैं और इसीलिए मुझसे आग्रह कर रहे हैं कि मैं अब अदालतके सामने सचाई न खोलूँ। कृपया मुझे सलाह दीजिए कि अपनी परीक्षाकी इस घड़ीमें मैं क्या करूँ" (एस० एन० १४८७९)।

२. देखिए "खादीके जरिए विदेशी वस्त्र-बहिष्कारकी योजना", २४-१-१९२९।

तरहका कोई काम करना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप इस काममें अपने आपको झोंक दें।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत च० राजगोपालाचारियर
गांधी आश्रम
तिरुचेन्गोडु
दक्षिण भारत

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९२) की फोटो-नकलसे।

४४६. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२२ जनवरी, १९२९

प्रिय सतीश बाबू,

आपका पत्र मिला। आपके पत्रकी अन्तिम पंक्तिसे मन शंकित हो उठा है। मैं चाहता हूँ कि आप, हेमप्रभादेवी और तारिणी प्रकृतिकी चेतावनीपर ध्यान दें। वहाँ अपने आपको इस तरह थका डालना, अपनी शक्तिके उपयोगमें सच्ची मितव्ययिता बरतना नहीं है। सोदपुरसे कहीं बाहर जाकर अपने आपको पूरी तरह विश्राम दीजिए। यदि आपको अच्छा लगे और जलवायु अनुकूल पड़े तो यहाँ आ जाइए, या फिर चन्द्रनगर चले जाइए। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि अभय आश्रमके साथ आपका आदान-प्रदान नहीं चल सकता। क्यों न केवल तारिणीको ही वहाँ भेज दें? जाहिर है कि ऐसा सहज रूपमें किया जाना चाहिए जिसमें यह न लगे कि यह पहलेसे सोची हुई कोई चीज है।

नमूनेके झंडे और रामविनोदके[1] मामलेके बारेमें आपकी राय मिलनेकी भी मैं राह देखूंगा। खानेके प्रबन्धके बारेमें आपके भेजे आँकड़ोंका मैं अध्ययन करूँगा।

हृदयसे आपका,
बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १६०२) की फोटो-नकलसे।

१. बिहारके एक सक्रिय राजनीतिक और खादी कार्यकर्ता। उनपर कांग्रेस कोषका गबन करनेके आरोप लगाये जा रहे थे।

४४७. पत्र : प्रभाशंकर पट्टणीको

सावरमती
२२ जनवरी, १९२९

सुज्ञ भाईश्री,

आपके स्वास्थ्यके वारेमें तो आने-जानेवालोंसे पूछ लेता हूँ। यह पत्र तो अपनी जरूरतसे लिख रहा हूँ। भाई वलवन्तरायका और दूसरोंका भी यही कहना है कि भावनगरके किसान ब्रिटिश इंडिया और दूसरी रियासतोंके किसानोंकी अपेक्षा गरीव हैं। मैंने उनसे यह सावित करनेके लिए कहा है। उसमें वे आपकी मदद चाहते हैं। मुझे लगता है कि आप मदद दे सकेंगे। यह वात सच हो तो आपके भी जानने योग्य है।

जवाव लिखें तो स्वास्थ्यकी खवर भी दें। यहाँ कव आ रहे हैं?

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजराती (जी० एन० ५९७९) की फोटो-नकलसे।

४४८. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

आश्रम, सावरमती
२२ जनवरी, १९२९

भाईश्री खम्भाता,

आपका पत्र मिल गया है। आपकी भेजी हुई पुस्तक मिल गई थी। लगता है कि घूमते-फिरते रहनेके कारण उसकी पहुँच नहीं लिख पाया। पुस्तक इतालवी भाषामें होनेके कारण मैं उसे समझ नहीं सका; इसलिए अपना मन्तव्य कैसे वता सकता हूँ? उनके पास भेजनेके लिए चाहें तो अंग्रेजीमें पहुँचका पत्र लिख भेजूं?

आपकी तवीयत अव विल्कुल ठीक रहती है न?

दोनोंको वापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६५९०) की फोटो-नकलसे।

४४९. पत्र: अन्नय्याको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२३ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपने जिस मामलेका उल्लेख किया है, उसे प्रवासी सरक्षण अधिकारीके जरिए हल नही कराया जा सकता।[1] आप यदि वकीलोकी फीसका खर्च उठानेको तैयार हो, तो मै डर्बनमे किसीको लिख सकता हूँ। वह शायद कुछ कर सके। पर यदि आप स्वय डर्बनमे किसी वकीलको जानते हो या वहाँ आपका मित्र हो तो आप सीधे लिख दीजिए।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत अन्नय्या
फ्री इडिया नं० ३९८६९
ओवरसीज लाइन, किरकी

अंग्रेजी (एस० एन० १४८७७) की माइक्रोफिल्मसे।

४५०. पत्र: ए० ए० पॉलको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२३ जनवरी, १९२९

प्रिय राजन,[2]

आपका पत्र[3] मिल गया, पुस्तक[4] भी। पर अभी देख नही पाया हूँ।

१. नेटालमें श्री अन्नय्याकी कुछ जमीन थी। उन्होंने डर्बनकी 'मेसर्स पायेर ऐंड कम्पनी' को उसकी मुख्तियारी सौंप दी थी और उसे भारतीय प्रवासी संरक्षण अधिकारीकी मारफत हिदायत कर दी थी कि जमीनकी आयकी राशि उनके पास भारतमें भेज दी जाये। कम्पनीने कुछ भी नहीं किया। इसलिए श्री अन्नय्याने गांधीजीको सहायता करनेके लिए लिखा था (एस० एन० १४८७६)।

२. फैडेरेशन ऑफ इंटरनेशनल फेलोशिप्स, मद्रासके अवैतनिक महामन्त्री।

३. दिनांक १८-१-१९२९ का; जिसमें श्री पॉलने गांधीजीको लिखा था कि उनको सर्वधर्म शान्ति सम्मेलनकी कार्यकारिणी समितिका एक सदस्य चुन लिया गया है और उन्होंने पूछा था कि गांधीजीके मनपर डा० एटकिन्सनकी क्या छाप पड़ी। पत्रमें यह भी कहा गया था कि प्रोफेसर पी० ए० वाडियाको सम्मेलनका उपाध्यक्ष चुना गया है। देखिए अगला शीर्षक।

४. रेवरेंड डॉ० डी० जे० फ्लेमिंग द्वारा लिखित एटीट्यूड टुवर्ड्स अदर रिलीजन्स।

यूरोपकी प्रस्तावित यात्राके सम्बन्धमें आपके पत्रका उत्तर शीघ्र ही देना था। सच कहूँ तो मैं डा० एटकिन्ससे[1] ज्यादा प्रभावित नही हुआ। खैर, मेरे ख्यालसे आपको यूरोप जानेकी जरूरत नही और ऐसी यात्रासे लाभ कितना होगा यह भी बहस-तलब है। लेकिन इससे जो भ्रान्ति पैदा होनेवाली है उससे हानि तो निश्चित ही होगी। इसलिए मेरा असंदिग्ध मत है कि आपको यूरोप नही जाना चाहिए। डा० एटकिन्सनकी मेरे मनपर जो छाप पडी है उसका इस मतसे कोई सम्बन्ध नही है। छाप तो बिलकुल गलत भी पड़ सकती है।

हृदयसे आपका,

श्री ए० ए० पॉल
'मैत्री'
किल्पॉक, मद्रास

अंग्रेजी (एस० एन० १४८८४) की फोटो-नकलसे।

४५१. पत्र: पी० ए० वाडियाको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२३ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।[2] डा० एटकिन्सनने मुझसे समितिमें[3] शामिल होनेके लिए नही कहा था। शायद इसलिए कि मैंने उनके प्रति कोई अधिक उत्साह नही दिखाया। मैंने उनसे कह भी दिया था कि वास्तविक सद्भावना और भाईचारेकी भावनाको बढावा देनेके लिए सम्मेलनोंकी उपयोगितापर मुझे ज्यादा विश्वास नही है; इसके लिए तो सम्मेलनोंसे कही अधिक एक ठोस चीज दरकार है। और मैं आपको बतला दूँ कि कुल मिलाकर डा० एटकिन्सनकी मेरे मनपर कोई अच्छी छाप नही पडी।

हृदयसे आपका,

प्रो० पी० ए० वाडिया
होरमज्द विला
मलाबार हिल
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १४८८८) की फोटो-नकलसे।

१. सर्वधर्म शान्ति सम्मेलनसे सम्बन्धित।
२. दिनांक २१-१-१९२९ का (एस० एन० १४८८७)।
३. भारतीय सर्वधर्म शान्ति सम्मेलनकी केन्द्रीय समिति।

४५२. पत्र : इन्द्रलाल कपूरको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२३ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपका यह अनुमान बिलकुल ठीक है कि डा० अन्सारी, पण्डित मालवीयजी और श्रीयुत घनश्यामदास बिड़ला द्वारा जारी किये गये वक्तव्यों[1] को मेरा अनुमोदन प्राप्त था। मैं समझता हूँ कि लालाजी स्मारकके लिए जमा की गई राशिका इससे अच्छा अन्य उपयोग हो ही नहीं सकता कि वह उनकी संस्थाको सौंप दी जाये। राजनीतिक पीडित कोष और ऐसे अन्य कोष अपने आपमें ऐसे होने चाहिए कि लोग उनमें चन्दा दें।

हृदयसे आपका,

डा० इन्द्रलाल कपूर
वारबर्टन, पंजाब

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९०) की फोटो-नकलसे।

४५३. पत्र : डा० परशुरामको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२३ जनवरी, १९२९

प्रिय डा० परशुराम,

आपने विस्तारसे सारी बातें लिखीं, इससे मुझे खुशी हुई। आपकी लगाई हुई शर्तें मैंने समझ ली हैं। मैं उनका ध्यान रखूँगा। आपके इस महत्त्वपूर्ण पत्रका मैं सावधानीके साथ उपयोग करूँगा। मामला बहुत टेढ़ा है।

हृदयसे आपका,

डा० परशुराम
पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी
लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९४) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए पृष्ठ ९९-१०१ और पृष्ठ ३४२-४३।

४५४. पत्र : गंगाधरराव देशपांडेको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२३ जनवरी, १९२९

प्रिय गंगाधरराव,

दो पत्र अपने उत्तरकी प्रतिलिपियोके साथ भेज रहा हूँ। मै चाहता हूँ कि इस दौरेके बारेमे तुम राजाजीके कहनेपर अपनी राय न बनाओ बल्कि अपने ऊपर जिम्मेदारी लेकर स्वय निर्णय करो। मेरा ख्याल है कि मेरा दौरा डाकगाड़ीकी-सी तेज रफ्तारसे नही रखा गया तो मै बिना किसी कठिनाईके कार्यक्रम पूरा कर लूँगा। पर यह नही कह सकता कि मै इतना समय निकाल सकूँगा या नही। इसलिए तुम्हे निश्चित तौरपर लिखना चाहिए कि मुझे बुलाना चाहते हो या नही; और यदि चाहते हो तो कहाँ, कब और कितने समयके लिए। मै अन्य सभी बातोका तभी कोई निर्णय कर पाऊँगा। मै तुम्हे आगाह कर रहा हूँ कि कर्नाटकके दौरेके कार्य-क्रमको लगातार स्थगित मत करते जाओ।

पुण्डलीकके बारेमें[1] तुम्हारे पत्रका मुझे अब भी इन्तजार है। उनके कार्य-कलाप और उनकी जीत या हारके बारेमे मुझे कोई जानकारी न देना उचित नहीं है।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?

हृदयसे तुम्हारा,

संलग्न : ३

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९५) की फोटो-नकलसे।

४५५. खादी सेवा संघ भी क्यों न हो?

जब हमारे यहाँ स्नातक सघ, नागरिक सेवा सघ और ऐसे ही कई दूसरे संघ मौजूद है, तो फिर एक खादी सेवा संघ या खादी सेवक सघ भी क्यों न हो? इस सेवा संघकी सफलताके लिए इसका दुनिया-भरमे सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं तो सबसे अधिक बहुसख्यक तो होना जरूरी है। यह सच है कि इस सेवा संघके कर्म-चारियोकी आय उतनी तो कदापि नहीं होगी जितनी दूसरी तरहकी उन कामो द्वारा होती है, जिनमे सेवा तो नाममात्रकी ही होती है; लेकिन जो कम या अधिक मात्रामे — कमकी अपेक्षा शायद अधिक कहना ही ठीक होगा — शोषणपर ही निर्भर करते है। खादी सेवा तो एकदम लोकसेवी सस्था है और इसके सेवकोका भरण-पोषण केवल इस सिद्धान्तपर होता है कि मजदूरको उतना ही मिलना चाहिए जितनी

[1] देखिए "पत्र : गगाधरराव बी० पुण्डलीकको", ९-१-१९२९।

उसकी मजदूरी हो। लेकिन खादी-सेवामे आर्थिक लाभसे कही ऊँचा एक सन्तोष यह मिलता है कि खादी सेवक जानता है कि वह उन लोगोकी सेवा कर रहा है, जिन्हे सेवाकी ज्यादासे-ज्यादा जरूरत है, जो अत्यन्त असहाय है और देशमे जिसकी संख्या विशाल है।

जैसे-जैसे इस सत्यकी प्रतीति होती जाती है, वैसे-वैसे खादी-सेवक अपनी इस थातीको सुदृढ़ बनानेके तरीके और साधन खोजनमे जुट जाते है। इसीके फलस्वरूप खादी-सेवाके उम्मीदवारोकी, जो उद्योग-मन्दिर (सत्याग्रह आश्रम)मे तालीम पा रहे हैं, एक साधारण साप्ताहिक बैठकमें खादी सेवा संघ नामक संस्थाकी स्थापनाके प्रश्न-पर गम्भीरतापूर्वक चर्चा की गई और उसे स्थापित करनेका निर्णय किया गया। इस निर्णयको मद्दे-नजर रखते हुए मैं उन तमाम सज्जनोको, जिन्होने अखिल भारतीय चरखा-सघ द्वारा स्वीकृत किसी भी सस्थामें खादी-सम्बन्धी तालीम पाई हो, निमन्त्रण देता हूँ कि वे उद्योग-मन्दिरके मन्त्रीके पास नीचे लिखी बाते लिख भेजे: पूरा नाम, वर्तमान पता, उम्र, विवाहित या अविवाहित, बच्चे हो तो उनकी तादाद, खादी-सेवाकी तालीम कहाँ पाई, पहलेकी योग्यता, वर्तमान पेशा, वेतन या मजदूरी और इसी किस्म-की दूसरी सूचनाएँ, जो प्रस्तावित संघके लिए उपयोगी हों। इस सम्बन्धमे शीघ्र ही एक अस्थायी मण्डल कायम करने और अस्थायी नियमावली तैयार करनेका प्रयत्न किया जायेगा। उस मण्डलका ध्येय यह होना चाहिए:

१. सेवा-संघसे सम्बन्ध रखनेवाले स्त्री-पुरुषोमे पारस्परिक सम्पर्क और सहयोग बढाना।

२. खादी-कार्यके तमाम विभागोमे शोधका काम करनेके लिए उन्हें उत्साहित करना।

३. जरूरतमन्द सदस्योकी सहायता करना।

४. नये सदस्योको अपनी ओर आकृष्ट करना।

५. एक-दूसरेसे सलाह-मशविरा करन और अनुभवोका विनिमय करनेके लिए समय-समयपर सम्मेलन बुलाना।

६ सेवाकी दृष्टिसे खादीको अधिक लोकप्रिय बनानेके तरीके खोजना।

ये इधर-उधरसे इकट्ठे किये हुए सुझाव-मात्र है। इस दिशामें सबसे पहला काम खादी-सेवकोके नाम और पतोकी सूचीका प्रकाशन करना होगा। आजतक आश्रम मे जितने विद्यार्थी इस तरहकी तालीम पा चुके है उनकी कुल तादाद ४४५ हैं। इसमे शक नही कि देशकी दूसरी खादी-सस्थाओमे प्रशिक्षण प्राप्त लोग भी काफी होगे, अतः यह सूची कोई छोटी-मोटी सूची नही होगी। मुझे उम्मीद है कि केवल वही लोग सावधान होकर अपने नाम भेजेगे, जो या तो खादी-कार्य कर रहे है, करते थे या जिन्होने इसकी पर्याप्त शिक्षा पाई है और जो इस सेवामें स्वयसेवकके सेवाभावसे ही सम्मिलित हुए है। इस विचारको जन्म देनेवालो और इसका प्रचार करनेवालोकी तो यह इच्छा है कि वे इस संघको सच्चे सेवकोका एक उपयोगी, कार्यक्षम संगठन

बनायें। आशा है, इसके जवाबमे लिखनेवाले सज्जन सघकी सदस्यताकी शर्त और ध्येय आदिके बारेमे अपने-अपने सुझाव भी लिख भेजेगे।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २४-१-१९२९

४५६. सविनय अवज्ञाका कर्त्तव्य

गुजरात कॉलेजके लगभग सात सौ विद्यार्थियोको हडताल शुरू किये बीस दिनसे ज्यादा हो चुके है। इस हडतालका महत्व अब केवल स्थानीय नही बच रहा है। मजदूरोंकी हडताल काफी बुरी चीज होती है, लेकिन विद्यार्थियोंकी हडताल—फिर वह उचित कारणोसे शुरू हुई हो या अनुचित कारणोसे—उससे भी अधिक हानिकर होती है। इस हडतालसे आखिर जो नतीजे निकलेगे, उनकी दृष्टिसे यह हडताल और भी हानिकर है, और यह समाजमे दोनो पक्षोकी पद-प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे भी बहुत हानिकर है। मजदूर अनपढ होते है; विद्यार्थी शिक्षित होते है और हडतालोसे उनका मन्शा किसी तरहका आर्थिक लाभ उठाना नही होता। फिर मिल-मालिकोंकी भाँति, शिक्षा-सस्थाओके मुख्य अधिकारियोका कोई भी हित विद्यार्थियोके हितके विरुद्ध नही पडता। इसके अलावा, विद्यार्थी तो अनुशासनकी प्रतिमूर्ति समझे जाते है। इस कारण विद्यार्थियोकी हडतालके परिणाम बहुत व्यापक होते है और असाधारण परिस्थितियोमें ही उनकी हडतालके औचित्यका समर्थन किया जा सकता है।

लेकिन जहाँ सुव्यवस्थित स्कूल और कालेजोमें विद्यार्थियोकी हडतालके अवसर बहुत थोडे ही हो सकते है, वही ऐसे कुछ अवसरोकी कल्पनाकी भी जा सकती है जब विद्यार्थियोंके लिए हड़ताल कर देना उचित हो। मसलन, कोई प्रधानाचार्य जनताकी रायके खिलाफ कारंवाई करके किसी देशव्यापी उत्सव या त्योहारके दिन छुट्टी देनेसे इनकार कर दे और यह त्योहार ऐसा हो कि जिसके लिए पाठशाला या कालेजमे जानेवाले विद्यार्थी और उनके माता-पिता दोनो छुट्टी चाहते हो, तो ऐसी हालतमे उस दिनके लिए हडताल कर देना विद्यार्थियोके लिए उचित होगा। जैसे-जैसे विद्यार्थीगण अपनी राष्ट्रीय जिम्मेदारीको समझनेमे अधिक जागृत और विचारशील बनते जायेगे वैसे-वैसे भारतमे ऐसे अवसरोकी तादाद भी बढती जायेगी।

गुजरात कालेजके सम्बन्धमे, मैं जहाँतक निष्पक्ष होकर विचार कर सका हूँ, मुझे विवश होकर कहना पडता है कि हडतालके लिए विद्यार्थियोके पास काफी कारण थे। लोगोका यह कथन बिलकुल गलत है, जैसा कि कई बार कहा गया है, कि हडताल चन्द उत्पाती विद्यार्थियोने करा दी है। मुट्ठी-भर उत्पात मचानेवालोके लिए लगभग सात सौ विद्यार्थियोको दो सप्ताहसे भी अधिक समयके लिए एकत्र कर रखना असम्भव है। सच तो यह है कि कुछ जिम्मेदार नागरिक विद्यार्थियोकी रहनुमाई कर रहे है और उन्हे सलाह देते है। इन सलाहकारोमे श्रीयुत मावलंकर मुख्य है। वे एक अनुभवी वकील है और अपनी बुद्धिमत्ता तथा सयमके कारण प्रसिद्ध है। श्रीयुत

मावलंकर इस विषयमें प्रधानाचार्य महाशयसे मुलाकात करते रहे है और फिर भी उनका यह निश्चित मत है कि विद्यार्थियोका पक्ष बिलकुल सच्चा है।

इससे सम्बन्धित तथ्य संक्षेपमे इस प्रकार है। भारत-भरके विद्यार्थियोकी भाँति गुजरात कालेजके विद्यार्थी भी साइमन कमीशनके बहिष्कारके दिन कालेजसे गैरहाजिर रहे। इसमे शक नही कि उनकी यह अनुपस्थिति अनधिकारपूर्ण थी। वे कानूनन कसूरवार थे। गैरहाजिर रहनेसे पहले उन्हे कमसे-कम शिष्टाचारकी दृष्टिसे ही सही, आज्ञा प्राप्त कर लेनी चाहिए थी। लेकिन दुनिया-भरमे लड़के तो सब एकसे ही होते है न? विद्यार्थियोके उमड़ते हुए उत्साहको रोकनेका प्रयत्न करना मानो हवाके वेगको बाँधनेका निष्फल प्रयास करना है। जरा उदारतासे देखे तो विद्यार्थियोका यह कार्य तरुणाईका अविवेक-मात्र था। बडी लम्बी बातचीतके बाद प्रधानाचार्य महोदयने उनके इस कार्यको माफ कर दिया और शर्त यह रखी कि विद्यार्थी फीसके तीन रुपए भर कर तिमाही परीक्षामे ऐच्छिक रूपसे सम्मिलित हो सकते है; इसमे यह बात आपसमे तय मान ली गई थी कि विद्यार्थियोमे से अधिकतर परीक्षामे बैठेंगे और शेष जो नही बैठेंगे उन्हे किसी भी तरहकी सजा नही दी जायेगी। लेकिन कहा जाता है कि आखिर, किसी भी कारणसे क्यो न हो, प्रधानाचार्य महोदयने अपना वचन तोड दिया और यह सूचना निकाल दी कि प्रत्येक विद्यार्थीके लिए तीन रुपए भर कर तिमाही परीक्षामे बैठना अनिवार्य है। इस सूचनाने स्वभावत: विद्यार्थियोको उत्तेजित कर दिया। उन्होने महसूस किया कि अगर नमक ही खारापन छोड़ दे तो दूसरी चीजो पर उसका स्वाद कैसे चढ सकेगा! इसलिए उन्होने कालेजमे जाना बन्द कर दिया। शेष बाते तो स्पष्ट ही है। हडताल अबतक जारी है और मित्र तथा आलोचक दोनो ही मानते है कि तरुणोने बडे ही आत्म-सयम और शोभनीय आचरणका परिचय दिया है। मेरी तो यह राय है कि किसी भी कालेजके विद्यार्थियोका यह परम कर्त्तव्य है कि अगर प्रधानाचार्य अपने दिये हुए वचनको तोड़े तो वे उनके उस कार्यकी सविनय अवज्ञा करे; जैसा कि गुजरात कालेजके प्रधानाचार्यके सम्बन्धमे कहा जाता है। जब गुरु स्वय किसी तरहकी प्रतिज्ञा-भंगके दोषी हो तब अपनी सम्माननीय वृत्तिके कारण वह जिस अशेष आदरके अधिकारी है, विद्यार्थियोके लिए उनके प्रति वैसा आदर दिखलाना असम्भव हो जाता है।

अगर विद्यार्थी अपने निश्चयपर डटे रहे, तो हडतालका एक ही नतीजा होगा और वह यह कि उक्त अपमानजनक सूचना वापस ले ली जायेगी और विद्यार्थियोको हर तरहकी सजासे बरी रखनेका पक्का वचन दिया जायेगा। प्रान्तीय सरकारके लिए सबसे अच्छी और उचित बात तो वास्तवमे यही होगी कि वह गुजरात कालेजके लिए किसी दूसरे प्रधानाचार्यकी नियुक्ति कर दे।

यह देखा गया है कि सरकारी कालेजोमे पढनेवाले उन विद्यार्थियोके पीछे जो अपने कुछ निश्चित राजनीतिक मत रखते है और उन राजनीतिक आयोजनोमे भाग लेते है जिन्हे सरकार नापसन्द करती है, जासूस लगा दिये जाते है और वे खूब सताये जाते है। लेकिन अब ख्वामख्वाह इस तरहकी दस्तन्दाजी बन्द कर देनेका समय

आ गया है। जो देश भारतके समान किसी विदेशी राज्यके जुएके नीचे कराह रहा हो, राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनोमे उसके विद्यार्थियोको भाग लेनेसे रोकना असम्भव है। इस सम्बन्धमे तो केवल यही किया जा सकता है कि विद्यार्थियोके उत्साहको नियमित कर दिया जाये जिससे उनकी पढाईमे कोई रुकावट पैदा न हो, वे लडनेवाले दो दलोमे से किसी एकका पक्ष लेकर उसकी तरफसे लडाईमें शामिल न हो। लेकिन उन्हे यह अधिकार तो है कि वे राजनीतिक रूपसे अपनी कोई राय रखें और सक्रिय रूपसे उसका प्रचार करे। शिक्षा-सस्थाओका काम तो उनमे भर्ती विद्यार्थियोको शिक्षा देना और उस शिक्षा द्वारा उनके चरित्रका निर्माण करना ही है। पाठशालासे बाहर विद्यार्थी राजनीतिक या नैतिकतासे असम्बद्ध दूसरे जो भी काम करते है, उनमे ऐसी शिक्षा-सस्थाएँ कोई हस्तक्षेप नही कर सकती।

इसलिए अहमदाबादके विद्यार्थियोकी हडतालके कारण जो सवाल उठ खड़ा हुआ है वह महत्वकी दृष्टिसे पहले दर्जेका है और वे विद्यार्थी देशकी दूसरी शिक्षा-सस्थाओं तथा सर्वसामान्य जनताकी सहायता और सहानुभूतिके पात्र है। पाठशालामे जानेवाले छात्र-छात्राओका इस हडतालसे जितना सम्बन्ध है उतना ही उनके माता-पिताका भी है। इसलिए मै समझता हूँ कि अहमदाबादके विद्यार्थियोने शुरूसे अबतक का सारा काम अपने माता-पिता या अभिभावकोकी रजामन्दीसे ही किया है।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २४-१-१९२९

४५७. टिप्पणी

विदेशी वस्त्र और खादी

कांग्रेसकी कार्यकारिणी समितिने खादीके जरिये विदेशी वस्त्रोंके बहिष्कारके सम्बन्धमें एक प्रस्ताव पास किया है। इस प्रस्तावमें मुझसे कहा गया है कि मै एक ऐसी योजना तैयार करूँ, जिसके द्वारा विदेशी वस्त्रोंके बहिष्कारका कांग्रेसका कार्यक्रम अमलमे लाया जा सके। इस सम्बन्धमे जो योजना[1] मैने कांग्रेस मन्त्रीके पास भेजी थी वह इसी अंकमें अन्यत्र दी गई है। मैं पाठकोसे सिफारिश करता हूँ कि वे उसे ध्यानपूर्वक पढ़ जायें। मै तो यह भी चाहता हूँ कि पाठक उक्त योजनामे सुधारके सम्बन्धमे अपने सुझाव भी भेजे। मेरी सम्मतिमे अगर कांग्रेसवाले लगनके साथ अपनी शक्ति इस ओर लगा दें तो विदेशी वस्त्रोंका बहिष्कार सहज ही सफल हो सकता है। इस कार्यके लिए उनमे खादीके प्रति जीवन्त निष्ठा बिलकुल ही जरूरी बात है। अगर खादीपर कांग्रेसवालोका विश्वास जमानेके लिए अब भी प्रयत्न करनेकी जरूरत हो, तो यह योजना कभी अमलमें नही लाई जा सकती। जहाँतक मुझसे बन सका, मैने तो कांग्रेसके प्रतिनिधियोको वही सावधान कर दिया था कि अगर

१. देखिए अगला शीर्षक।

उन्हें प्रस्तावित कार्यक्रममें विश्वास न हो तो वे उसे कदापि पास न करे। मेरी इस चेतावनीके बावजूद उन्होने उस प्रस्तावको बिना किसी विरोध और मतभेदके पास कर दिया। उस प्रस्तावके पास करनेका अर्थ यही है कि उनका खादीमे विश्वास है। अगर उनमें विश्वास है, तो ऊपर बतलाई हुई योजना अमलमें लाई जा सकती है। हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि बहिष्कारका कार्यक्रम सफल बनाने का दूसरा कोई भी साधन नहीं है। इस बहिष्कारमे स्वदेशी मिलोके कपड़ेका क्या स्थान होगा, इस विषयमे किसीको चिन्ता करनेकी जरूरत नही। स्वदेशी मिलोके कपडेने तो अपनी सँभाल आप कर ली है, और आगे भी करता रहेगा। हमारा काम तो यही है कि हम जिनसे भी मिले उन्हे खादी पहनाये। अगर हम दोनो घोडोपर सवार रहेगे, तो बहिष्कारको सफल बनानेमे असफल रहेगे। इससे तो हम केवल स्वदेशी मिलके कपड़ेकी कीमत बढानेमे ही सहायक होगे और इससे धूर्त मिल-मालिकोंको भोली-भाली जनताको ठगनेका लोभ भी होगा।

अन्तमे, मैं सभी सम्बन्धित लोगोका ध्यान योजनाके अन्तमें दी हुई सूचनाकी ओर खीचना चाहता हूँ। जबतक काग्रेसका काम सुव्यवस्थित नही हो जाता है और उसका सगठन १९२१की तरह फिरसे एक जीवन्त संगठन नही बन जाता है तबतक काग्रेसके कार्यक्रमपर अमल करना और उसे आगे बढ़ाना सम्भव नही।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, २४-१-१९२९

४५८. खादीके जरिये विदेशी वस्त्र-बहिष्कारकी योजना

कांग्रेस संगठनोंको ऐसे स्वयंसेवकोंकी माँग करनी चाहिए, जो जहाँ-जहाँ काग्रेस-समितियाँ है ऐसे हरएक कस्बे और गाँवमे घर-घर पहुँच सकें। ये स्वयसेवक घर-गृहस्थीवालोंके पाससे विदेशी कपडा इकट्ठा करें और इन गृहस्थोसे खादीके आर्डर लेकर तदनुसार भण्डारोसे खादी लेकर उनतक पहुँचाये।

२. तमाम खादीके मालपर 'अखिल भारत चरखा-सघ'की मुहर होनी चाहिए और उसपर स्पष्ट अंकोंमे कीमत भी लिखी रहनी चाहिए।

३. स्वैच्छिक प्रचारकोंकी माँग करनी चाहिए। ये लोग जनतामे खादीको प्रिय बनाने और विदेशी-वस्त्रोका बहिष्कार करनेका प्रचार करे।

टिप्पणी – स्वयसेवको और प्रचारकोंको असली और नकली खादीकी पहचान होनी चाहिए।

४ जहाँ सम्भव हो, इकट्ठा किया हुआ विदेशी कपडा वहाँ सार्वजनिक तौर पर जलाया जाना चाहिए।

५. विदेशी वस्त्रोके व्यापारियोसे अलग-अलग मिलना चाहिए। और यह कोशिश करनी चाहिए कि वे इस काममे सहायक हो, तथा आगेसे विदेशी कपड़ा खरीदना बन्द कर दे और नई खरीदके जो आर्डर रद करने लायक हो उन्हें रद कर दे।

६. जहाँ सम्भव हो और जहाँ काग्रेसके धरना देनेवालोकी ओरसे हिंसाका कोई खतरा न हो, वहाँ विदेशी कपड़ोकी दूकानोंपर धरना देनेका काम भी हाथमें लिया जा सकता है, बशर्ते कि धरना देनेवाले विश्वस्त और पुराने या तपे-तपाये स्वयसेवक हो।

७. ऊपर कही हुई बातोके सिलसिलेमे जो काम किया जाये, सभी स्थानीय शाखाओको उसकी प्रतिदिनकी रिपोर्ट केन्द्रीय कार्यालयमें भेजनी चाहिए और केन्द्रीय कार्यालयको चाहिए कि वह प्रचारार्थ हर रोजकी प्रगतिका साराश हर हफ्ते समाचार-पत्रोके पास भेज दिया करे।

८ इस आन्दोलनके लिए देशकी सभी राजनीतिक सस्थाओ और अन्य सगठनोसे सहायता तथा सहयोग पानेकी कोशिश की जानी चाहिए।

९. बहिष्कार-आन्दोलनमे काम करनेके लिए देशभक्त महिलाओकी सहायता भी प्राप्त करनी चाहिए।

१०. अखिल भारतीय चरखा-सघके केन्द्रीय कार्यालयसे उन सब स्थानोकी एक सूची मँगा ली जानी चाहिए, जहाँ शुद्ध खादी मिलती है और चरखा-सघसे यह भी कहा जाना चाहिए कि जहाँ माँग हो वहाँ वह खादी-भण्डार खोले।

११. विदेशी वस्त्र-बहिष्कार-समितिके नामसे एक छोटी समिति बना ली जाये। समितिको शुरूमे कुछ रकम सौप दी जाये और उसे अधिक रुपया इकट्ठा करनेका अधिकार दे दिया जाये। इस समितिका यह कर्त्तव्य होगा कि जमा-खर्चका ठीक-ठीक जाँच-शुदा हिसाब हर तीसरे महीने वह ठीक तरहसे प्रकाशित कर दिया करे।

१२. ११ वे अनुच्छेदमे प्रस्तावित समिति छोटी-छोटी प्रचार पुस्तके, पत्रिकाएँ प्रकाशित करे और उन्हे बँटवाये। इन पत्रिकाओमे बहिष्कारकी आवश्यकता और उसकी सम्भावनाओका जिक्र किया जाये तथा विस्तारसे यह भी ढंगसे ब्यौरेवार बतलाया जाये कि लोग व्यक्तिगत रूपमे किस तरह इस बहिष्कारमे भाग ले सकते है।

१३. केन्द्रीय और प्रान्तीय धारासभाओमे इस आशयके प्रस्ताव रखे जाये कि इन धारासभाओकी सरकारें, खादीके तथाकथित मँहगेपनके बावजूद अपने यहाँ काममे आनेवाला तमाम कपड़ा खादीका ही खरीदें। विदेशी वस्त्रके आयातपर बहुत भारी कर लगानेकी माँगके प्रस्ताव भी पेश किये जाये।

टिप्पणी — उपरोक्त योजनाका आधार यह मान्यता है कि भारत-भरमे फैली हुई काग्रेस-समितियोका शीघ्र ही पुनर्गठन हो जायेगा, सदस्योकी माँगके उत्तरमे लोग अच्छी सख्यामे सदस्य बनने लगेगे, और खादीके जरिये विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके आन्दोलनको जनताके सामने रखनेमे तमाम काग्रेस समितियाँ पूर्ण सहयोग देगी। मेरी विनम्र राय है कि अगर ये शर्तें पूरी कर दी गई तो इस वर्ष-भरमे इस तरहका बहिष्कार सम्भव हो जायेगा और कमसे-कम विदेशी वस्त्रके आयातपर इस आन्दोलनका स्पष्ट प्रभाव तो दिखने ही लगेगा।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, २४-१-१९२९

४५९. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं यहाँ बुधवारतक हूँ, इसलिए मैं कृष्णमूर्तिसे मंगलवार या बुधवारको ही मिल सकता हूँ। गुरुवारकी सुबह मैं कराचीके लिए चल दूँगा।

क्या फरवरीके महीनेमें कलकत्ता या मद्राससे तुम्हारा कोई स्टीमर चलता है, यदि हाँ, तो वह मद्राससे रंगून या कलकत्तासे रंगून तककी यात्रामें कितना समय लेता है? मेरी इच्छा तो बहुत है पर १० दिनका समय निकालना मेरे लिए कठिन हो जायेगा। यह भी लिखना कि बम्बई और रंगूनके बीच तुम्हारा स्टीमर किन-किन बन्दरोंपर कितने-कितने समय रुकता है।

तुमने बी० आई० कम्पनीके स्टीमरोंके बारेमें पता लगाने-न-लगानेके बारेमें भी पूछा है? क्या यह बम्बई और रंगूनके बीचकी यात्राके लिए? अगर बम्बईसे रंगून स्टीमर चलते हैं, तो क्या उनकी सेवा नियमित है, वे कितना समय लेते हैं और बम्बईसे रंगून तकका किराया कितना है?

बापूके आशीर्वाद[1]

[पुनश्च :]

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारे पिताजीका आपरेशन अच्छी तरह सम्पन्न हो गया।[2]

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४७९३)से।
सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

१ और २. ये पंक्तियाँ गुजरातीमें हैं।

४६०. पत्र: जी० वी० गुरजालको[1]

आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आप श्रीयुत चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (गांधी आश्रम, तिरुचेन्गोडु)से पत्र-व्यवहार करें। आपका पत्र मैंने उनके पास ही भेज दिया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० १३८०)की फोटो-नकलसे।

४६१. पत्र: मन्त्री, अखिल भारतीय चरखा संघको

आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

मन्त्री
अखिल भारतीय चरखा संघ
अहमदाबाद

प्रिय महोदय,

आपकी पूछताछके सन्दर्भमें। अभी यह बतलाना मुश्किल है कि आन्ध्र जाने पर मैं उत्कलके दौरेके लिए भी कुछ दिन दे पाऊँगा या नहीं। वे लोग मुझे कहाँ-कहाँ ले जाना चाहेंगे और कितना समय मुझसे चाहेंगे?

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १३२९४) की माइक्रोफिल्मसे।

१. बादमें भिक्षु निर्मलानन्दके नामसे प्रसिद्ध।

४६२. पत्र: एस० के० शर्माको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला और 'स्वराज्यकी ओर' नामक आपकी पुस्तिका भी। यदि आप 'यंग इंडिया' के पाठक हैं तो आपने देखा होगा कि 'यंग इंडिया' किसी भी अर्थमें समीक्षात्मक पत्र नहीं है, और फिर मेरे पास इतना समय ही नहीं रहता कि मैं मित्रोंकी कृपासे मिली पुस्तकोंको पढ़ सकूँ।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत एस० के० शर्मा
वकील
तेप्पाकुलन
त्रिचिनापल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९७) की माइक्रोफिल्मसे।

४६३. पत्र: कर्नाड सदाशिव रावको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय सदाशिव राव,

नीलेश्वर केन्द्र बन्द करनेसे सम्बन्धित रिपोर्ट भेज रहा हूँ। श्रीयुत छोटेलाल स्वयं मानते हैं कि इसे बन्द कर देना चाहिए।

हृदयसे आपका,

संलग्न – पाँच पृष्ठोंका एक सहपत्र
श्रीयुत कर्नाड सदाशिव राव
कोडियलबेल
मंगलौर

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९८) की माइक्रोफिल्मसे।

४६४. पत्र : विष्णुचन्द्र अग्रवालको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया था। उसका उत्तर अब जाकर लिख पा रहा हूँ।

नाटकोंके बारेमें कोई शास्त्रीय मत देना जरा कठिन है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि अगर पूरा ध्यान रखा जाये तो नाटकोंको विद्यार्थियोंके उत्थानका साधन बनाया जा सकता है।

अहिंसाके बारेमें मैं इतना ही सूचित कर सकता हूँ कि आपने जो मुद्दा उठाया है, उसे लेकर 'यंग इंडिया'के पृष्ठोंमें पूरे विस्तारसे चर्चा की जा चुकी है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत विष्णुचन्द्र अग्रवाल
प्रधानाध्यापक, पब्लिक हाई स्कूल
पो० आ० शामली
जिला मुजफ्फरनगर (संयुक्त प्रान्त)

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९९) की माइक्रोफिल्मसे।

४६५. पत्र : एन० बी० थडानीको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय थडानी,

तुम्हारा पत्र मुझे मिल गया है।[1] जितने शीघ्र बन पड़ेगा, निश्चय ही मैं प्रस्तावना पढ़कर तुम्हें अपनी राय लिखूँगा।

१. २१-१-१९२९ का पत्र, जिसमें उन्होंने लिखा था: "कुछ वर्ष पहले दिल्लीमें, १९२४ में आपके २१ दिनके लम्बे उपवासके बाद मैंने आपको महाभारतके बारेमें अपना मत बतलाया था और आपने उसपर कहा था कि इस विषयमें आश्वस्त होनेके लिए आप अपना सर्वस्व निछावर कर सकते हैं कि महाभारत वास्तवमें कोई कथा-मात्र न होकर एक दार्शनिक ग्रन्थ है।... मैं अपनी पुस्तककी प्रस्तावनाकी एक प्रति भेज रहा हूँ। उससे मेरी पुस्तकका कुछ अन्दाज हो जायेगा। यदि आपको रुचिकर लगे तो मुझे पाण्डुलिपिकी एक प्रति आपको भेजनेमें बड़े आनन्दका अनुभव होगा" (एस० एन० १४८८५)।

तुम्हारा यह अनुमान बिलकुल सही है कि हैदराबादमे इतना समय निकालना मुश्किल होगा कि साथ आरामसे बैठकर गपशप कर सकूँ। हाँ, मै मिलने अवश्य आऊँगा और कुछ मिनट निकाल लूँगा।

ठीक बात है; मै बराबर यही सोचता था कि तुम क्या जाने कब आ रहे हो। परन्तु अब मुझे कारण मालूम पड गया है और मै तुम्हे माफ करता हूँ। अगर तुम्हारी प्रस्तावनामे मेरे मनकी कुछ नई बाते मिल गई तो तुमको माफी पानेका दुगुना हक हो जायेगा।

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीयुत एन० बी० थडानी
हीराबाद
हैदराबाद (सिन्ध)

अंग्रेजी (एस० एन० १४८८६)की फोटो-नकलसे।

४६६. पत्र : के० एस० कारन्तको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। पहले मामलेकी स्थिति तो शुद्धिकी नही, उद्धार की है, और यदि तथाकथित धर्म-परिवर्तन कर लेनेवाले लोगोमे ईसाइयतकी भावना ही नही तो उनको हिन्दू ही माना जाना चाहिए।

अब दूसरा प्रश्न। यदि बालिकाएँ युवतियाँ लगने लगी हो, और वे इतनी समझदार हो गई हो कि आगा-पीछा सोच-समझ सकती हो और अधिक समयतक अविवाहिता रहनेमे उनको अपने भटक जानेका खतरा हो, तो उनका विवाह रचा देना चाहिए।

बाल-विधवाओके बारेमे स्थिति यह है कि यदि उनके लिए ऐसा उपयुक्त वर मिल रहा हो जो परिपक्वता प्राप्त करनेतक सयमसे रह सके तो कोई हानि नही।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत के० एस० कारन्त
वसन्त कार्यालय
मगलौर

अंग्रेजी (एस० एन० १४८९६)की फोटो-नकलसे।

४६७. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्रिय मोतीलालजी,

आपका तार मिल गया। आपको पत्र लिखनेके बाद मैंने लगभग यही मनःस्थिति बना ली थी कि प्रस्तावित यूरोप-यात्राका विचार त्याग ही दिया जाये। और अब आपके अपने निर्णयपर फिरसे विचार कर लेनेपर भी मेरे मनमे यात्राके प्रति अनिच्छा बनी हुई है। मुझे लगता है कि अगले वर्ष[1] हमे कुछ काम कर दिखाना चाहिए, और अगर हम सचमुच ऐसा चाहते है तो मुझे चालू वर्षमे भारतसे अनुपस्थित नही रहना चाहिए। मुझे तो अगले वर्षके संघर्षके लिए जमीन तैयार करनेमे जो और जितनी मदद बन पडे, देनी चाहिए। रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी प्रस्ताव[2] पेश करनेके बाद तो कुछ ऐसा हो गया है कि यदि मेरे लायक कोई काम मुझे देशमे नजर आ जाता है तो बाहर जानेके ख्याल-भरसे ऐसा लगने लगता है जैसे मै अपने कर्त्तव्यसे भाग रहा हूँ। यदि मै अप्रैलके अन्तमे जाऊँ तो अक्तूबरके मध्यसे पहले कैसे लौट पाऊँगा? अपने पिछले पत्रमे[3] मैंने यूरोप-यात्राके विस्तृत कार्यक्रमकी जो रूपरेखा बतलाई थी, अगर उसे पूरा करूँ, खासकर अमेरिकाको भी शामिल करनेकी बात सोचूँ तो इतना समय लग ही जायेगा। इसीलिए मै इस वर्षकी यूरोप-यात्राके बारेमे जितना अधिक सोचता हूँ, मनमे उतनी ही अधिक अनिच्छा पैदा होती जाती है। और फिर अगले वर्ष तो शायद इसका प्रश्न भी नही उठाया जा सकेगा। इसलिए फिलहाल मैं बडी दुविधामे हूँ।

इस मामलेमे मै आपको और अधिक परेशान नही करना चाहता। और मैंने समझ लिया है कि मुझे अपना निर्णय स्वय ही करना चाहिए। पर आपको अगर कोई बात सूझे तो कृपया मुझे लिख अवश्य दे। मै फिलहाल वल्लभभाई, जमनालालजी, राजगोपालाचारी और अन्य लोगोसे इसके बारेमे सलाह-मशविरा कर रहा हूँ और आशा है कि अब चन्द ही दिनोमे अन्तिम रूपसे निर्णय कर लूँगा।

एक डेनिश बहन[4] है, जिनको काग्रेसके अन्दरूनी सगठनकी कोई जानकारी नही, वे हमारे प्रस्तावको देखकर बडे ही उत्साहमे आ गई और लिखती है: "परतन्त्र

१. ३१ दिसम्बर, १९२९ के बाद अहिंसापूर्ण असहयोगका आन्दोलन शुरू करनेकी काग्रेसकी योजना थी। देखिए "भाषण: नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर कलकत्ता काग्रेसमें-३", ३१-१२-१९२८।

२. देखिए "भाषण: रचनात्मक कार्यक्रमपर, कलकत्ता काग्रेसमें", १-१-१९२९।

३. १७-१-१९२९ का।

४. एन मेरी पीटर्सन। देखिए "पत्र: एन मेरी पीटर्सनको", २०-१-१९२९।

भारतके एक प्रतिनिधिकी हैसियतसे आपके यूरोप जानेका कोई लाभ नही। आप तो अगले वर्ष स्वतन्त्र भारतके एक प्रतिनिधिकी हैसियतसे ही वहाँ जाइए।" क्या ही अच्छा होता कि हमारा भी यही विश्वास होता और हम उसे फलीभूत करनेके लिए समुचित प्रयास करते।

क्या आप हिन्दू-मुस्लिम एकताके प्रश्नके बारेमें कुछ कर रहे हैं?

अपनी सिन्ध-यात्राके कार्यक्रमकी एक प्रति मैं जवाहरको भेज रहा हूँ। मैं सिन्धके लिए ३१ तारीखको रवाना हो रहा हूँ।[1]

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५३०४) की फोटो-नकलसे।

४६८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

आश्रम
साबरमती
२४ जनवरी, १९२९

प्यारे जवाहर,

यूरोप-यात्राके बारेमे पिताजीके नाम लिखा मेरा पत्र पढ लेना। मैं चाहता हूँ कि तुम उसके बारेमे अपनी राय भी मुझे लिखो। इससे मुझे फैसला करनेमे मदद मिलेगी।

कृपलानीके बारेमे तुम्हारा तार[2] मुझे मिल गया। जमनालालजी और शंकरलाल दोनो ही को, खासकर जमनालालजीको कृपलानी बहुत भा गया है। उनको भरोसा नही कि सीतलासहाय[3] ज्यादा कुछ कर पायेंगे। उनका ख्याल है यू० पी० मे तीन सालके दौरान वे कुछ खास करके नही दिखा सके। मैं सीतलासहायसे बात करूँगा कि उनको इस सम्बन्धमें क्या कहना है। परन्तु कोई भी अन्तिम निर्णय करनेसे पहले मैं चाहूँगा कि सीतलासहायके बारेमे तुम्हारी राय जान लूँ।

सिन्ध कार्यक्रमकी एक प्रति भेज रहा हूँ।

हृदयसे तुम्हारा,

१. देखिए अगला शीर्षक।

२. दिनांक २१-१-१९२९ का। उसमें कहा गया था: "आपका पत्र। कोई गलत धारणा बनी लगती है। मेरा ख्याल कि कृपलानी पूरी छानबीन करें, पुनर्गठनके लिए सुझाव दें। इस बीच स्थिति ज्यों-की-त्यों रखी जाये। लेकिन आपका हर सुझाव माननेको तैयार हूँ।

३. अखिल भारतीय कताई संघकी संयुक्त प्रान्तीय शाखाके मन्त्री।

सलग्न : १

[पुनश्च :]

इसे लिखनेके बाद तुम्हारा पत्र मिला। मैंने अब सीतलासहायसे बात कर ली है। सब-कुछ देखते हुए उनका त्यागपत्र दे देना ही ठीक है। आगे क्या करना है इस विषयमें आज रात उनसे बात करूँगा।

बापू

अंग्रेजी (एस० एन० १५३०५) की फोटो-नकलसे।

४६९. पत्र : डंकन ग्रीनलिजको

आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र[1] मिला। निश्चित तौरपर नही कह सकता कि जूनमे कहाँ रहूँगा। पर यदि आपको मेरी अनुपस्थितिमे आश्रम आनेपर कोई आपत्ति न हो तो आपका स्वागत होगा, और हम आपको अंग्रेजी पढानेके लिए कुछ कक्षाएँ देनेका प्रयास करेगे। आपको शायद मालूम न हो कि जूनमे यहाँकी जलवायु अधिक कष्टकारी तो नही होती, फिर भी यह स्थान मदनपल्ली जितना ठडा नही है। आप शायद यह भी न जानते हो कि आश्रमका जीवन बडा ही सादा है। नियमोकी एक प्रति मै सलग्न कर रहा हूँ। आश्रममे रहनेवाले सभी लोगोको यहाँ रहनेकी अवधिमें इनका पालन करना होता है; फिर वे बहुत थोडे समयतक ही यहाँ क्यो न टिके।

हृदयसे आपका,

डकन ग्रीनलिज
थियोसॉफिकल हाई स्कूल
मदनपल्ली
दक्षिण भारत

अंग्रेजी (एस० एन० १४९९३) की माइक्रोफिल्मसे।

१. दिनाक २२-१-१९२९ का। श्री डकनने गांधीजीसे पूछा था कि क्या उनको जूनके बाद साबरमतीमें अंग्रेजीके शिक्षककी हैसियतसे आनेकी अनुमति मिल सकेगी (एस० एन० १४९९२)।

४७०. पत्र : जाहिद अलीको

आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय जाहिद अली,

तुम्हारा खत मिल गया। मेहरबानी करके यह लिखो कि तुम्हारे पास कितने चरखे है, वे ठीक चालू हालतमे है या नही, क्या उनमे तकुए है। मुझे चरखोका आकार उनके तकुओके मोढ़िये और दूसरी तफसील भी बताओ। यह भी लिखो कि उनकी कितनी कीमत देनी पड़ेगी। तब मैं जो कर सकता हूँ, करूँगा।

हृदयसे आपका,

श्री जाहिद अली
छोटानी सॉ मिल्स
शिवरी बन्दर, बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १४९९५)की माइक्रोफिल्मसे।

४७१. पत्र : होरेस जी० एलेक्जेंडरको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल[1] गया था। इसे मैं बहुत काफी दिनोतक अपने पास यो ही डाले रहा।

निश्चय ही आपने पहला पत्र किसी गलत भावनासे नही लिखा था।

अब मुझे 'क्वेकर' साहित्यका एक पार्सल मिल गया है, मेरा ख्याल है कि आपकी ही मेहरबानीसे।

१. दिनाक १५-८-१९२८ के इस पत्रमें कहा गया था: "...आशा है कि मेरे पहले पत्रके विस्तारने आपके दिमागपर अनावश्यक भार नहीं डाला होगा।...आपके उत्तरसे मुझे थोड़ी आशंका हो चली है कि कहीं वह गलत भावनासे लिखा गया तो नहीं था। श्री एन्ड्रयूज मुझे बतलाते रहे हैं कि गणेशन द्वारा प्रकाशित आपके साहित्यकी बिक्रीके लिए इंग्लैडमें इस समय कोई केन्द्रीय विक्रय-शाखा नहीं है।...यदि आप अनुमति दें तो 'फ्रेंडस बुक सेंटर' (मैं समझता हूँ आप जानते ही होंगे कि 'फ्रेंडस' से आशय 'क्वेकर्स' से है) यह काम कर सकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'क्वेकर्स' आपसे बहुत-कुछ सीख सकते है।...हमारा नया 'फ्रेंडस हाउस' और विक्रय-केन्द्र 'इंडियन स्टूडेंट्स होस्टल' के पास ही है। दोनोंके बीचकी दूरी तय करनेमें केवल तीन मिनट लगते हैं...।"

'यंग इंडिया' सम्बन्धी साहित्यके बारेमें आपने जिस प्रस्तावका उल्लेख किया है, मेरे सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं आया।

हृदयसे आपका,

होरेस जी० एलेक्जेंडर
बरमिंघम, इंग्लैंड

अंग्रेजी (एस० एन० १५०४४) की फोटो-नकलसे।

४७२. पत्र : ए० डब्ल्यू० कोहेंटमैंसको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र[1] मिल गया। यदि मैं महसूस कर लूँ तो फिर मुझे अपनी गलती स्वीकारनेमें तनिक भी संकोच नहीं होता। आपके साथ हुई पूरी बातचीत तो मुझे याद नहीं है, परन्तु उसके जो विवरण आपने दिया है, उससे लगता है कि मैंने बहुत ही संक्षेपमें बात की थी। अपने सामने पड़ा सारा काम और फिर मुलाकातियों के साथ लगनेवाला समय देखते हुए मुझे ऐसा करना ही पड़ता है। मुलाकातियोंमें से कई ऐसे होते हैं जो सचमुच समझते हैं कि एक सरसरी मुलाकात करके ही वे भारतीय समस्याओंकी समझ हासिल कर सकते हैं। मुझे याद है कि मैंने आपसे कहा था कि इस ढंगसे आप भारतीय समस्याओंको तो क्या, किसी भी समस्याको नहीं समझ सकते। इसलिए आपसे मेरा अनुरोध है कि आप मुझसे गलती माननेकी अपेक्षा रखनेकी बजाय मुझपर इस बातके लिए तरस ही खायें कि मैं अपने ऐसे मुलाकातियोंसे जो मिलनेका कोई समय पहलेसे तय किये बिना ही आकर बड़े-बड़े सवाल पूछने लगते हैं, ठीक तरहसे पेश आना नहीं जानता।

हृदयसे आपका,

ए० डब्ल्यू० कोहेंटमैंस
हेग, १४० ऐंटनी
डाइकस्ट्रास
हॉलैंड

अंग्रेजी (एस० एन० १५०७५) की फोटो-नकलसे।

१. पत्रमें शिकायत थी कि गांधीजी मुलाकातके दौरान बहुत अच्छी तरह पेश नहीं आये। अन्तिम वाक्य यह था : "मैं जिस महात्माकी कल्पना किये था, उससे मेरी मुलाकात नहीं हुई।"

४७३. पत्र : श्रीमती आई० जे० पिटको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

पशुओंके प्रति दयाके सम्बन्धमें छपे हुए इश्तिहार[1] और पत्रके लिए धन्यवाद लीजिए। उस सम्बन्धमे आप जिस हदतक जानेकी बात करती है, उस हदतक मै नही जाना चाहूँगा।

बाजारू कुत्तोके बारेमे मै आपकी बातसे बिलकुल सहमत हूँ। परन्तु मैं इसे उचित नही समझता कि कुत्तोको पाला जाये और फिर उनके जो पिल्ले घटिया नस्लके निकले उन्हे नष्ट कर दिया जाये। यह तो कोरा स्वार्थ ही हुआ। अहिंसाकी मेरी अपनी परिभाषामे स्वार्थके लिए कोई गुंजाइश नही। स्वार्थसे प्रेरित होकर उनको नष्ट कर देना किसी और आधारपर चाहे उचित ठहराया जा सके, अहिंसाके आधार पर नही ठहराया जा सकता।

आशा है, आप और श्री पिट दोनो ही अच्छे होगे।

हृदयसे आपका,

श्रीमती आई० जे० पिट
पेनुकोंडा
जिला अनन्तपुर

अंग्रेजी (एस० एन० १५०७८) की माइक्रोफिल्मसे।

४७४. पत्र : ए० ए० शेखको[2]

साबरमती आश्रम
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया। 'यंग इंडिया'की निःशुल्क प्रतियोकी इतनी अधिक माँग आती रहती है कि हमारे लिए उसे पूरी कर पाना काफी कठिन है। आप

१. इश्तहारमें पाले हुए कुत्तोंको अच्छी तरह रखने और भरपेट खाना देनेकी सिफारिशके साथ यह कहा गया था कि पालतू कुत्तोंके गैर-जरूरी और घटिया नस्लके बच्चोंको पैदा होते ही मार दिया जाना चाहिए।

२. 'इंडियन एसोसिएशन ऑफ सेन्ट्रल यूरोप'के अवैतनिक महामन्त्री।

यदि उसे पसन्द करते है तो अपनी संस्थाकी ओरसे निश्चय ही उसका चन्दा भिजवा सकते है। आप जानते ही है कि 'यंग इडिया' मुनाफा कमानेके लिए तो निकाला नही जाता। यदि उससे कभी कोई मुनाफा मिलता भी है तो उसे किसीके व्यक्तिगत लाभके लिए नही, बल्कि सस्थागत सार्वजनिक कार्यके लिए ही प्रयुक्त किया जाता है।

हृदयसे आपका,

श्री ए० ए० शेख
मॉमसैनस्ट्रास ४१
जर्मनी

अग्रेजी (एस० एन० १५१२४) की फोटो-नकलसे।

४७५. पत्र : केनैथ सांडर्सको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया। मेरे लिए किसी पुस्तकको पढनेका वचन देना जरा कठिन है। फिर भी यदि आप अपनी पुस्तक[1] भेज ही देगे तो आशा है कि मै उसे सरसरी तौरपर देखनेके लिए कुछ मिनट निकाल सकूंगा।

मै 'यग इडिया' की दो जिल्दे और अपनी आत्मकथाकी एक प्रति आपको रजिस्टर्ड बुक-पोस्टसे भेज रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

श्री केनैथ साडर्स
हाई एस्क्रिस
बर्कले
केलिफोर्निया

अग्रेजी (एस० एन० १५१२६)की फोटो-नकलसे।

१. भारतीय जीवनके तौर-तरीकेके बारेमें। उन्होंने गांधीजीसे उसकी प्रस्तावना लिखनेका अनुरोध किया था।

४७६. पत्र : एस्थर मेननको

साबरमती आश्रम
२५ जनवरी, १९२९

तुम्हारे पत्र मिले; वह पत्र भी जो तुमने डेनिश बहनोंके हाथ भिजवाया था, मिल गया है। वे यहाँ सप्ताह-भरके लिए आई थीं। अभी दो दिन पहले ही गई हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि आश्रमके जीवनमें उनको बड़ा आनन्द आया। यहाँ आजकल १७५ से ऊपर स्त्री-पुरुष और बच्चे एक ही स्थानपर बैठकर एक-साथ भोजन करते हैं।

मारियाने मुझे लिखा है कि तुम अभीतक कमजोर बनी हो; आपरेशनके बादकी कमजोरी पूरी तौरपर दूर नहीं हो पाई है, लेकिन इस वर्षके अन्ततक तुम और मेनन दोनों वापस आ रहे हो न? तुम दोनोंको और बच्चोंको अपनी आँखोंके सामने पाकर सचमुच बड़ी खुशी होगी।

इस वर्ष यूरोप-यात्राके बारेमें अभी कुछ भी निश्चित नहीं है। लेकिन मैं ही कुछ हिचक रहा हूँ—खासकर कांग्रेसके प्रस्तावके ख्यालसे। मारिया कहती है कि स्वतन्त्र भारतका सन्देश लेकर ही मेरा यूरोप जाना सबसे ठीक रहेगा। मेरी बुद्धि भी यही ठीक मानती है, लेकिन मैं मार्ग-दर्शनके लिए ईश्वरसे प्रार्थना कर रहा हूँ।

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीमती एस्थर मेनन
१४, एसिलवे
टार्कोक
डेनमार्क

अंग्रेजी (एस० एन० १५१३०)की फोटो-नकलसे।

४७७. पत्र : डब्ल्यू० लुतोस्तावस्कीको

आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।[1] श्री धनगोपाल मुखर्जीका नाम मैं पत्र-व्यवहारके जरिए तो जानता हूँ, पर मुझे उनसे भारतमे या कही और कभी प्रत्यक्ष रूपसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त नही हुआ। मै सक्रिय जीवनसे थोडा-बहुत अलग हटकर मनन-चिन्तनमे अपना समय बरबाद नही करता। आपका सोचना सही है कि मेरा सक्रिय जीवन ही मेरा मनन-चिन्तन है।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमे आपकी पूछताछके लिए धन्यवाद। स्वास्थ्यमे कोई बडी खराबी तो दिखाई नही पडती। मै न बहुत बलवान हूँ और न बहुत दुर्बल ही।

पूर्व-जन्म और अवतारोके विषयपर अपनी पुस्तक अवश्य भेजनेकी कृपा करे।

'करेट थॉट'का प्रकाशन कई महीने पहले बंद हो चुका है।

हृदयसे आपका,

प्रो० डब्ल्यू० लुतोस्तावस्की
जागीलोन्स्का, ७ एम० २
विल्नो, पोलैंड

अंग्रेजी (एस० एन० १५१३२)की फोटो-नकलसे।

१. पत्रमें प्रो० लुतोस्तावस्कीने अन्य बातोंके साथ यह भी लिखा था: "अभी मैं एक फ्रेंच मासिक पत्रिकामें धनगोपाल मुखर्जीका एक लेख पढ़ रहा हूँ; शीर्षक है — "गांधीसे एक मुलाकात" . . . उनका कहना है कि आपने बनारसके पास गंगामें उनके साथ एक बार स्नान किया है और आपने उनसे कहा था कि सद्कर्म व्यर्थ है। उनका दावा है कि आप चिन्तन-मननमें लगे रहते है, जब कि आपके लेख पढ़कर तो मुझे लगता है कि आप अत्यन्त ही सक्रिय जीवन बिताते है . . .।" (एस० एन० १५१३१)

४७८. पत्र : म्यूरियल लेस्टरको

साबरमती आश्रम
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय म्यूरियल,

तुम्हारे पत्र मिले। देखता हूँ कि तुम्हारा काम रोज-रोज उन्नति कर रहा है। ईश्वर करे, उसके प्रभावमे आनेवाले सभी लोगोके लिए वह परिपूर्ण कल्याण सिद्ध हो सके।

इस वर्ष मेरी यूरोप-यात्राके बारेमें अभी निश्चित तौरपर कुछ भी नही कहा जा सकता। तुमको यथासमय मालूम हो जायेगा।

हृदयसे तुम्हारा,

कु० म्यूरियल लेस्टर
बो, ई० ३, लन्दन

अंग्रेजी (एस० एन० १५१४७)की फोटो-नकलसे।

४७९. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

तुम्हारे पत्र नियमित रूपसे मिलते रहे हैं। मैं बडी दुविधामे हूँ। यूरोप-यात्रा करूँ या न करूँ — यही प्रश्न सता रहा है। किसी और की सलाहको न सोचूँ तो मेरा अपना विवेक कहता है : "मत जाओ!" मेरा हृदय क्या चाहता है — पता नही। कु० पीटर्सनने प्रस्तावित यात्राके बारेमें परस्पर-विरोधी समाचार सुनकर, मुझे लिखा है. "परतन्त्र भारतके सन्देश-वाहकके रूपमे आपके यूरोप जानेसे लाभ ही क्या? आप अपना सन्देश ज्यादा सही तौरपर तभी दे सकेंगे जब भारत स्वतन्त्र हो जायेगा।" कांग्रेसके प्रस्तावको देखकर उनको विश्वास हो गया है कि भारत आगामी वर्षमे स्वतन्त्र हो जायेगा। जो भी हो, तुम्हारे हाथोमे यह पत्र पहुँचनेतक मेरे भाग्यके बारेमे निर्णय हो चुकेगा। मैं तो तुम्हे बतला-भर रहा हूँ कि मेरे मनमे कैसे विरोधी भाव टक्करे ले रहे हैं। मुझे कु० पीटर्सनकी राय ही कुछ ठीक जँचती है।

मुझे इस बातकी खुशी है कि मैकमिलनके कामके[1] बारेमे तुम कमसे-कम अब उसी निष्कर्ष पर पहुँच रहे हो जिसपर मै पहले ही पहुँच चुका था। फिर भी, तुम अमेरिकामें ही हो। उनसे रू-ब-रू बात कर लो। तुम जो भी व्यवस्था कर दोगे, मैं उसे मान लूँगा। इतना जरूर करना कि कम्पनीके लोगोको, अन्य लोग चाहे तो उनको भी, यह समझा दिया जाये कि मैं उनसे कोई मुनाफा नही उठाना चाहता, अपने सार्वजनिक या लोक-कल्याणके कामके लिए भी नही। मेरे इन कामोके लिए तो ईश्वर अन्य स्रोतोसे पर्याप्तसे भी अधिक धनकी व्यवस्था कर देता है। मैं तो श्री होम्ससे सिद्धान्तकी झोकमे आकर इतना कहनाभर बचाना चाहता हूँ कि मैं वित्तीय आधारपर प्रकाशकोसे किसी किस्मका कोई सरोकार नही रखना चाहता।

सी० एफ० एन्ड्रयूज
११७२, पार्क एवेन्यू
न्यू यॉर्क शहर

अंग्रेजी (एस० एन० १५१४८) की फोटो-नकलसे।

४८०. पत्र : जे० डी० जैन्किन्सको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।[2] पण्डित मोतीलाल नेहरूने विधानसभामे जो उत्तर दिया था, उसका पूरा पाठ मेरी नजरसे नही गुजरा है। मेरा ख्याल है कि उसके बारेमें मुझसे पूछताछ करनेकी बजाय आप पण्डितजीसे ही पूछे। हाँ, उस प्रश्नके बारेमे मै तो निश्चय ही किसी भी ऐसे संविधानकी ताईद नही करूँगा जिसमे किसी भी समुदायके सर्वथा उचित या वैध अधिकारोके छीननेकी बात हो। 'सर्वथा उचित' या 'वैध' शब्दोपर मै जोर देना चाहता हूँ। इसलिए कि कई ऐसे भी विशेषाधिकार होते है जिनका शासक जाति उपभोग करती है और जो उसने सर्वथा उचित या वैध ढंगसे प्राप्त नही किये होते। इसलिए यदि मेरी चले तो बिलकुल निश्चित बात

१. अमेरिकामें आत्मकथाके प्रकाशनके बारेमें, देखिए "पत्र : जॉन हेन्स होम्सको", ७-१२-१९२८।

२. दिनांक २१-१-१९२९ का। उसमें शिकायत की गई थी कि: "...पण्डित मोतीलाल नेहरू विधानसभामें एक ऐसे विधेयकका समर्थन कर रहे हैं, जिसमें अनेक लोग कहते हैं कि ब्रिटिश सम्पत्तिको बिना शर्त जब्त करनेकी व्यवस्था है...।"

है कि मैं ऐसे प्रत्येक विशेषाधिकारकी पूरी-पूरी जाँच कराऊँ और जिसके भी बारेमे यह निष्कर्ष निकले कि वह सर्वथा उचित या वैध रीतिसे प्राप्त नही किया गया था, वह तुरन्त छीन लिया जाना चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्री जे० डी० जैन्किन्स
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १५१४९) की फोटो-नकलसे।

४८१. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय जयरामदास,

आपका पत्र और कार्यक्रम प्राप्त हुए। मैं कार्यक्रमपर चलनेकी कोशिश करूँगा। मणिलाल आज सुबह रवाना हो गया।

कीकीबहनने[1] लिखा है कि मैं कराचीमे उसीके यहाँ ठहरूँ। यह बहुत अच्छा रहेगा। मैं इसे पसन्द भी करूँगा; लेकिन मैं उसको लिख रहा हूँ कि मुझे स्वागत-समितिके इन्तजामके मुताबिक ही चलना पड़ेगा। दौरेकी दृष्टिसे आपको जो भी आवश्यक लगे, कीजिए। कृपलानीका आग्रह है कि मैं कीकीबहनके यहाँ ही ठहरूँ। वे आपको भी लिखेंगे। यदि मेरे ठहरनेके स्थानसे कुछ बनता-बिगड़ता न हो, तो मैं उसीके यहाँ ठहरना पसन्द करूँगा। गंगाबहनने भी मुझे लिखा था और मैंने उसे स्वागत-समितिसे सम्पर्क करनेके लिए लिख दिया है।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजी (एस० एन० १५३११) की फोटो-नकलसे।

१. आचार्य कृपलानीकी बहन।

४८२. पत्र : जुगलकिशोरको

आश्रम
साबरमती
२५ जनवरी, १९२९

प्रिय जुगलकिशोर,

तुम्हारा पत्र मिल गया। मुझे लगता है कि 'यंग इंडिया' मे तुम्हारे कामके बारेमे अभीतक कुछ भी न लिखकर मैंने एक अपराध किया है। अब मैं तुम्हारा पत्र 'यंग इंडिया' सम्बन्धी कागजोके साथ रख दे रहा हूँ, आशा है कि मैं अगले अंकमें इस विषयमे लिखूंगा।[1]

तुम्हारा पत्र बारीकीसे पढनेपर यदि मुझे कोई बात सूझी तो मै तुम्हे एक पत्र और लिखूंगा।

कृपलानी इस समय यही है।

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीयुत जुगलकिशोर
प्रधानाचार्य
प्रेम महाविद्यालय
वृन्दावन

अंग्रेजी (एस० एन० १५३१३) की माइक्रोफिल्मसे।

४८३. पत्र : कोण्डा वेंकटप्पैयाको

आश्रम
साबरमती
२६ जनवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया।[2] थोडा आश्चर्य हुआ। मै सोच रहा था कि आप मुझे अप्रैल शुरू होनेसे पहले तो नही ही बुलाना चाहेंगे। इसलिए मेरा सारा कार्यक्रम अप्रैलमे आन्ध्र पहुँचनेकी दृष्टिसे बन रहा है। ३० और ३१ मार्चको मुझे काठियावाडमे रहना ही होगा। वर्तमान कार्यक्रमके अनुसार मुझे फरवरीके लगभग अन्ततक

१. देखिए "टिप्पणियाँ", ३१-१-१९२९ का उप-शीर्षक "ग्राम-सेवकोंके लिए प्रशिक्षण वर्ग"।

२. उस पत्रमें प्रेषकने लिखा था: ". . .जैसे भी हो, कृपया आन्ध्रका दौरा स्थगित मत कीजिए। आपका मार्चका महीना तो हमारा हो ही चुका है और हम अप्रैलका आधा महीना भी चाहते है. . ." (एस० एन० १५३०७)।

वर्मा जाना है और वहाँसे लौटकर काठियावाड होते हुए अप्रैलके आरम्भमे आन्ध्र पहुँचना है। आन्ध्रके दौरेको मैं एक महीना देनेकी सोच रहा हूँ। क्या इतना आपके लिए पर्याप्त नही होगा? क्या यही वात तय नही हुई थी?

हृदयसे आपका,

श्रीयुत कोण्डा वेकटप्पैया
गुटूर

अंग्रेजी (एस० एन० १५३०८) की फोटो-नकलसे।

४८४. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सत्याग्रह आश्रम
सावरमती
२६ जनवरी, १९२९

प्यारे जवाहर,

सीतलासहायसे मेरी बातचीत काफी जमी। हम दोनो इस नतीजेपर पहुँचे है कि उनके लिए हर दृष्टिसे यही बात सबसे अच्छी रहेगी कि वे त्यागपत्र दे दे और फिलहाल कुछ समयतक अपनी धर्मपत्नीके साथ आश्रममें ही रहे। इस अरसेमे वे खादीकी हर तकनीकमे सिद्धहस्तता प्राप्त कर लेगे और आवश्यकतानुसार आश्रमकी अन्य सभी गतिविधियोमे भी हिस्सा लेते रहेगे। मै चाहता हूँ कि तैयारी और प्रशिक्षणके[1] इस कालमे वे कामके मेरे तरीकेको भी भली-भाँति समझ ले।

मै तुम्हारी बातसे सहमत हूँ कि वे बडे कामके कार्यकर्ता है और इसलिए उनको यथा सम्भव अधिक-से-अधिक कार्यक्षम होना चाहिए। सिन्धसे मेरे रवाना होनेके तुरन्त वाद वे अपने घरका ठीक-ठीक इन्तजाम करने और कार्य-भार सौपनेसे सम्बन्धित कागजात तथा उस दिन तकका लेखा-विवरण तैयार करनेके लिए इलाहावाद आयेंगे। यह इसलिए कि कृपलानी जब भी वहाँ जानेके लिए तैयार हों, जाकर कार्य-भार सँभाल सके।

मेरी तो यही इच्छा है कि भारतकी कड़ी धूपको लेकर आपत्ति उठानेवाले चिकित्सकोकी बातपर तुम कान ही न दो। तुमने डा० मुथुका नाम सुना ही होगा। रेवाशकरभाईका पुत्र धीरू अस्थि-क्षयसे पीडित था। सीलोनके 'सेनेटोरियम'मे और बम्वईके लगभग सभी चिकित्सकोसे चिकित्सा करानेके वाद, उन्होने डा० मुथुको वुलाया था और प्रतिदिन एक हजार रुपयेकी उनकी फीस भी भरी थी। डा० मुथुने खुली हवा, हलका भोजन और सूर्यकी किरणोकी चिकित्साके अतिरिक्त उनको कोई

१. कलकत्ता कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित अहिंसापूर्ण असहयोग आन्दोलनके लिए; देखिए "भाषण: नेहरू-रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावपर, कलकत्ता कांग्रेसमें-३", ३१-१२-१९२८।

इलाज नही बतलाया। रोग-ग्रस्त अस्थिसे कभी-कभी तो एक दिनमें आधा सेरतक मवाद निकल आता था। रोग-ग्रस्त अस्थिको रोज सबेरे कुछ घंटोतक सूर्यकी किरणोसे सेकना पडता था और रोगीको पूरे दिन खुली हवामे लेटे रहना पडता था। उसे 'सेनेटोरियम' मे भी नही भेजा गया था। अब वह बिलकुल नीरोग हो गया है। हो सकता है कि यूरोपमे सूर्यकी किरणे कुछ अधिक गुणकारी हो, पर भारतमे सुलभ सूर्य-किरणोको बिलकुल ही बेकार तो नही माना जा सकता। यहाँ चिकित्सक लोग प्रभातकालीन किरणोकी सिफारिश करते है। उनका कहना है कि सर्दियोमे सुबह ८ से १० बजे और गर्मियोमे ७ से ८ बजे तक सूर्यसे मिलनेवाली 'अल्ट्रा-वायलेट' किरणोका उपयोग ही सर्वोत्तम रहता है। लेकिन यह सब असलमे रोगीकी दशापर निर्भर है।

हृदयसे तुम्हारा,

अंग्रेजी (एस० एन० १५३१४) की फोटो-नकलसे तथा गांधी-नेहरू कागजात, १९२९ से भी।

सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४८५. पत्र : देवचन्द पारेखको

आश्रम, साबरमती
२६ जनवरी, १९२९

भाई देवचन्दभाई,

चि० चम्पा आरामसे पहुँच जायेगी। वह बात-बातमें घबरा जाती है। सरोजको खाँसी तो जरूर थी। इस समय अहमदाबाद-भरमे कई लोगोको है। अहमदाबाद आनेसे सरोजको अधिक खाँसी आने लगी है, परन्तु आपने देखा होगा वह खूब हँसती खेलती है। फिर भी इसमे कोई हर्ज नही कि आपने चम्पाको बुला लिया और वह चली भी गई। उसकी जब इच्छा हो तभी वापस आये। एकदम खीच-खाँचकर उद्योग-मन्दिरमें किसीको नही रखा जा सकता।

परन्तु यह पत्र जबरदस्ती दूसरे ही निमित्तसे लिख रहा हूँ। आप सरदार वल्लभभाईको पत्र लिखते रहे। पिछले अध्यक्षोके भाषणोकी नकले भी भेजना और यह भी लिखना कि आप किस-किस विषयपर उनसे बुलवाना चाहते है। सभी लोग उन्हे निमन्त्रण भी भेजे। ठक्कर बापाके वक्त आपसे शिष्टाचारकी यह भूल हो गई थी।

बापूके वन्देमातरम्

गुजराती (जी० एन० ५६९४) की फोटो-नकलसे।

४८६. टिप्पणियाँ

विद्यार्थी और हड़ताल

यह हडताल जैसे-जैसे लम्बी खिचती जा रही है, वैसे-वैसे विद्यार्थियोकी कसौटी होती जा रही है। उनका आजतक दृढ बने रहना उन्हे शोभा देता है और इससे देश आगे बढता है। अब मेरी इच्छा उनसे यह कहनेकी हो रही है कि वे कोई काम करना शुरू कर दे। वे अहमदाबादकी गलियोकी सफाई क्यो न करे? या इसी प्रकारकी अन्य दूसरी सेवाएँ क्यो न करे। उन्हे मनमे विश्वास रखना है कि आगे-पीछे वे अन्तमे इसी कालेजमें सम्मानपूर्वक जायेगे। प्रसग तो ऐसा आ रहा है कि प्रिन्सिपल महोदयको ही कालेज छोडना पड़ सकता है। इतनी शक्ति पानेके लिए विद्यार्थियोको सेवा-कार्यमें जुट जाना चाहिए। काग्रेसका प्रस्ताव है कि खादीके मारफत विदेशी कपडेका बहिष्कार किया जाये। क्या वे विदेशी कपडोका उपयोग बन्द करेंगे? क्या वे दूसरोके पास जा-जाकर विदेशी कपडा जमा नही करेगे? क्या वे स्वय खादी पहनेंगे और क्या वे खादीकी फेरी लगायेगे? ये सारे सवाल विद्यार्थियोके लिए विचारणीय है।

मौन कताई

एक यज्ञार्थ कातनेवाले लिखते हैं:[1]

> **ता० २२-१२-१९२८ के 'नवजीवन' में आपने लिखा है कि चरखा चलाते समय मौन धारण करना चाहिए। आप कातते समय मौन धारणके बदले भजन गाने या रामनाम रटनेकी सलाह क्यों नहीं देते? किसान रहट चलाते-चलाते जब भजनकी तान छेड़ता है तो वह कितनी सुन्दर लगती है?**

प्रस्तुत लेखकने मौनका जैसा अर्थ किया है वैसा कोई करेगा, यह बात मैंने नही सोची थी। मौनसे मेरा आशय तो यह था कि पास बैठनेवालोसे व्यर्थकी गपशप न की जाये। मौन धारण करनेवाला मन ही मन राम-भजन न करे, यह कहनेका तो मेरा आशय था ही नही। जो इस तरह मनमे राम-नाम न ले सके वह भले ही जबानसे लेता रहे। ऊपर रहटका उदाहरण दिया गया है, इसलिए थोडा स्पष्टीकरण कर देना जरूरी समझता हूँ। रहट चलानेवाला किसान जो भजन गाता है उसका प्रभाव सस्कारी श्रोतापर अच्छा पड़ता है, लेकिन यह नही मानना चाहिए कि किसानपर भी ऐसा ही असर होता है। जिस समय जीभ अभ्यासवश भजन गाती है उस समय मन दूसरे घोडोपर सवार होकर जाने कहाँकी सैर करता रहता है। इसलिए कातते समय केवल जबानसे ही भजन गाते रहनेसे हमारा फर्ज पूरा नही हो जाता। जब अटूट रूपसे जबानका सम्बन्ध दिलके साथ जुड जाता है तब

१. अंशतः उद्धृत।

भजनका गाना सार्थक माना जा सकता है। अगर यह बात याद न रखी जाये तो कविके कथनानुसार समझ लेना चाहिए कि 'सब साधन बन्धन बने'।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २७-१-१९२९

४८७. खादीकी बिक्री कैसे बढ़ेगी?

श्री विट्ठलदास जेराजाणी खादीकी बिक्री बढ़ानेके बारेमे 'खादी पत्रिका' मे एक महत्त्वपूर्ण बात लिखते हैं। उसकी कुछ बाते नीचे देता हूँ :[1]

यह एक रास्ता तो है ही। इसीमे से एक मार्ग सूझ पडता है और इच्छा होती है कि उसे पाठकोके सामने रखा जाये। हरएक गाँवके किसी भी चीजके व्यापारी, अगर वे अपनी छोटी-सी रकम भी खादीमे लगाना चाहे तो दस रुपयोकी या अधिककी खादी खरीदे और सो भी इस शर्तपर कि यदि वे उसे एक महीनेके भीतर न बेच सके तो अपने खर्चसे वापस खादी भण्डारको भेज दे। जो लोग व्यापारी नही है, अगर चाहे तो वे भी यह काम कर सकते हैं। इसमे दोनोमे से किसी एक पक्षको भी खतरेकी आशका नही रहती और खादीका प्रचार तो सहज ही हो सकता है। सारे ससारमे अच्छी या बुरी कई चीजोका प्रचार इसी तरह हुआ है। देखते-देखते सारे भारतमे चायका जो प्रचार हुआ है वह इसी तरह उसे घर-घर पहुँचाकर ही किया गया है। लेकिन यह तो एक बुरे व्यसनका प्रचार हुआ। इसके कारण जनताको नुकसान ही नुकसान सहना पड़ा है। खादी-प्रचारमे प्रचार करनेवाले, खरीदनेवाले और जिसके लिए प्रचार किया जाता है उसका — तीनोका लाभ है। इतना होनेपर भी इस तरहका प्रचार-काम करनेवाले पर्याप्त लोग नही मिलते। ऐसे समय अगर काफी आदमी दस-दस रुपएकी पूँजी लगा कर उसके ब्याजका मोह छोड दे तो भी हमे कुछ सन्तोष हो सकता है। लेकिन मुझे यहाँ स्पष्ट ही मजूर कर लेना चाहिए कि इस सूचनामे एक रहस्य छुपा हुआ है। अगर कोई आदमी सौ रुपये दे और कहे कि इनसे दस गाँवोमे दस-दस रुपयोकी खादीका प्रचार किया जाये तो ये सौ रुपए महँगे पडेगे और गरज भी नही सरेगी। मेरी सूचनाका गर्भितार्थ तो यह है कि ऐसे कार्यकर्त्ता देहातके रहनेवाले हो। और वे दस-दस रुपयेकी पूँजी लगाये। यही शर्त है। क्योकि ऐसे आदमी ही गाँवोमे खादीका प्रचार करेगे। साराश, मेरी सूचनाके मुताबिक सौ से अधिकके दानियोंको ढूँढनेकी जरूरत नही है, जरूरत तो गाँवोके खादी-प्रेमियोको ढूँढ निकालनेकी है जो अपने पास या अपनी साखपर किसी मित्रसे दस रुपए लेकर इस काममे लगाये और उतनी खादीका प्रचार करे। मै चाहता हूँ कि श्री विट्ठलदास और सब खादी-प्रेमी इस तरहका प्रयत्न करे, ऐसे कार्यकर्त्ता खोजे।

[गुजरातीसे]
नवजीवन, २७-१-१९२९

१. यहाँ नही दी गई है। पत्र-लेखकने इसमें खादी-भण्डार बम्बई द्वारा दी जा रही सुविधाओंका विवरण दिया था।

४८८. पत्र : पेरीन कैप्टेनको

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२७ जनवरी, १९२९

तुम्हारा पत्र मिला। जमनाबहनके बारेमें पढकर मुझे दु:ख हुआ। तुम वह पार्सल सीधे कराची भेज रही हो या मेरे पास भेजोगी? यदि पार्सल मेरे कराची पहुँचनेके समय ही वहाँ पहुँचे तो फिर और क्या चाहिए। मै वहाँ १ ली फरवरीको पहुँचूंगा, और अहमदाबादसे ३१ तारीखको इस दृष्टिसे चल दूंगा।

रानी सुरैयाको सन्देश भेजनेके बारेमे बात यह है कि बेचारी बा लिख भी क्या सकती है। उसे इस बहसके बारेमे जानकारीतक नही है, इसलिए वह जो भी सन्देश भेजेगी वह उसका अपना नही बल्कि किसी दूसरेका ही होगा। इसीलिए ऐसे सभी मामलोमे मुझे उसे बिल्कुल ही अलग रखना पडता है। और फिर मुझे इस बातका भी पक्का यकीन नही कि तुम जो कदम उठाना चाहती हो, सचमुच वही उचित होगा।

यदि मै किसी तरह बम्बई होकर गया तो जैसा तुमने चाहा है मै बडी खुशीसे समय दूंगा।

श्रीमती पेरीन कैप्टेन
बम्बई

अंग्रेजी (एस० एन० १५०००) की फोटो-नकलसे।

४८९. पत्र : नारणदास गांधीको

रविवार [२७ जनवरी, १९२९][1]

चि० नारणदास,

रोज लिखनेकी सोचता रहा, परन्तु आज ही लिख पाया हूँ। छगनलालके साथ काफी बात हो गई है। मै देखता हूँ कि फिलहाल तुम दोनोकी गाड़ी साथ-साथ नही चलेगी। इसलिए तुम्हारे पहले सुझावपर अमल करना चाहता हूँ; अर्थात् तुम चरखा-संघके निर्देशकके पदसे अपना त्यागपत्र नियमपूर्वक दे दो। मन्दिरमे चरखा-संघका जो काम चल रहा है, स्वयं छगनलाल उसे सँभाले और जबतक छगनलाल तुम्हे दूसरा कोई काम न सौंपे तबतक तुम कातने-पीजने आदिका काम ही करो। मैं चाहता हूँ कि तुम मन्दिरमे बने रहो। तुम्हारे मनमे जो शंका है उसे दूर करना आवश्यक है। या फिर यह आवश्यक है कि तुम जो छगनलालके विषयमे सोचते हो

१. नारणदास और छगनलाल जोशीकी अनबनके उल्लेखसे। देखिए "पत्र : नारणदास गांधीको", १६-१-१९२९। गांधीजी २ फरवरीको सिन्धके लिए रवाना हुए। उससे पूर्व रविवार २७ जनवरीका था।

मैं उसे ठीक मान लूँ। यह दु:खकी बात है कि छगनलालकी तुम्हारे साथ नही पटती। इसमे तुम्हारा भी, फिर चाहे अनजाने ही सही दोष तो है ही। उसको लिखे तुम्हारे पत्र अग्निको शान्त करनेवाले नही होते। किन्तु छगनलालकी तुम्हारे साथ नही बनती इस बातको एक ओर रखे तो मुझे उसमे गुण ही गुण दिखाई देते है और मै दिन-प्रतिदिन उनमे वृद्धि ही देखता हूँ। इसमे मुझसे कहाँ भूल हुई है यह मुझे लिखकर बताना अथवा जब आओ तब बताना। मै यहाँ ३१ तारीखतक रहूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो: श्री नारणदास गांधीने

४९०. पत्र: मीराबहनको

[२७ जनवरी, १९२९ के बाद][1]

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्र मिल गये। गुरुदेवका पत्र बडा सुन्दर है; दूसरा पत्र भी। तुम वहाँ बडे ठीक समयपर पहुँची और काम भी तुमने बड़े अच्छे ढंगसे किया।

तुमने अपना वजन बहुत ज्यादा घटा लिया है। लेकिन पूर्णत: स्वस्थ होनेपर, समझदारीसे पथ्य लेकर पहले जितना वजन बढा लेनेमें तुमको कोई कठिनाई नही पड़ेगी।

फलोंके बिना ही मेरा आधा पौंड वजन बढ गया है। देखना है, अब सिन्ध-यात्राके दौरान कितना-कुछ कर पाता हूँ।

तुम जो भी काम करो, आरामसे ही करना, तेजीसे नही, तुमको अपने हाथ-पैर और अपना उदर-भाग गरम रखना चाहिए। हमेशा थोडे गरम आसनपर ही बैठनेका ध्यान रखो और इसीलिए जहाँ भी जाओ अपने साथ एक मोटा आसन अवश्य ले जाओ।

नारणदासको खादी-भण्डारसे हटा लिया गया है। उसको केवल महिलाओंकी कक्षाएँ चलानेका काम ही दिया जायेगा। यह है तो एक संयोग ही, पर विपत्तिके रूपमे यह वास्तवमे एक वरदान है। कृष्णदास गाधी हरजीवनकी[2] मदद करने और स्वयं स्वास्थ्य-लाभके लिए कल कश्मीर रवाना हो गया।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजी जी० एन० ९३९३ से, तथा सी० डब्ल्यू० ५३३८ से भी।
सौजन्य: मीराबहन

१. अन्तिम पैरामें नारणदास गांधीके उल्लेखसे; देखिए पिछला शीर्षक।
२. हरजीवन कोटक, जिन्होंने कश्मीरमें अखिल भारतीय कताई संघकी एक शाखा स्थापित की थी।

४९१. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

२८ जनवरी, १९२९

प्रिय जयरामदास,

मलकानीकी सलाह है कि मैं दूसरे किसीके नही केवल तुम्हारे कार्यक्रमके मुताबिक चलूँ। स्पष्ट है कि वह मुझे अभी समझ नही पाये है। लेकिन मैंने उनको जब समझना शुरू किया, मैंने आपको उससे कही पहले ज्यादा अच्छी तरह समझ लिया था। इसलिए उनकी भूल क्षम्य है। उनसे कह दीजिए। अभीतक तो मै इतना ही जानता हूँ कि मेरे साथ बा, प्यारेलाल और सुब्बैया रहेगे। नारायणदासका[1] कार्यक्रम कराची जानेका है, उसमे काफी रद्दोबदलकी जरूरत है। गोविन्दानन्द[2] चाहते है कि मै कोटरी जाऊँ। मै उनसे कह रहा हूँ कि आपसे लिखकर पूछे। कीकीबहन चाहती है कि मै कराचीमे उसीके यहाँ ठहरूँ। आप जो कर सकेंगे करेंगे ही।

बापू

श्रीयुत जयरामदास दौलतराम
मार्केट रोड
हैदराबाद
सिन्ध

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२५२)से।
सौजन्य : जयरामदास दौलतराम

४९२. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

२९ जनवरी, १९२९

चि० मणिलाल और सुशीला,

तीन विभिन्न डाकोसे भेजे गये तुम्हारे पत्र एक साथ मिले। धैर्यवालाके लिए दूसरा नाम तो भेज चुका हूँ। आज बहुत जल्दीमे लिख रहा हूँ। रसिकको दिल्लीमे मोतीझिराका बुखार आ रहा है। कान्ति तीन दिनसे बुखारमे पडा है, ऐसा नरम-गरम यहाँ चलता ही रहता है।

'इंडियन ओपिनियन' बन्द करनेकी सलाह तो मै नही दे सकता। जो अखबार आजतक चलता आया है उसे बन्द नही होने देना चाहिए। तुम दोनोको वहाँ जीवन खपा देना पडे तो भी मुझे बुरा नही लगेगा। बडे काम इसी प्रकार होते

१. नारायणदास बेचर; कराची (सिन्ध) के एक मजदूर नेता।
२. कराचीके एक कांग्रेसी नेता।

है। इसीका नाम एकनिष्ठा है। हाँ, यदि कोई दूसरा प्रबन्ध करके तुम मुक्त हो सको तो मुझे कोई एतराज नही है; या सुशीला एक बार यहाँ आकर रह जाये। उसमें भी मुझे कोई बुराई नही लगती। तुम तीनो सुखसे रहो। मुझे तो इतनेसे ही सन्तोष हो जायेगा।

चार्लीका[1] [देहावसान] सुनकर दुख हुआ। दुनिया इसी तरह चलती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७५०)की फोटो-नकलसे।

४९३. भाषण: गुजरात कालेजके विद्यार्थियोंके समक्ष[2]

३० जनवरी, १९२९

आज आपको विभिन्न स्थानोसे तार द्वारा सन्देश मिल रहे है। मै उनमे एक और तार शामिल करूँगा। तार भारत-भूषण मालवीयजीकी काशी विद्यापीठमे अध्ययन करनेवाली बहनोकी तरफसे है। मै उसे यहाँ लाना तो भूल गया हूँ, किन्तु उसमे इस लडाईमे गुजरात कालेजकी बहनो द्वारा किये गये कार्यका अभिनन्दन है।

आज आपको चारो तरफसे साधुवादके तार मिल रहे है, किन्तु इसका पात्र होनेके लिए अभी आपको बहुत कुछ करना है। मुझे इस प्रकारकी सभामे भाषण देनेके लिए बुलानेमे एक प्रकारका जोखिम है। यदि मुझे विद्यार्थियोकी इच्छासे यहाँ बुलाया गया हो तो उन्होने एक जोखिम उठाया है ओर यदि डॉ० हरिप्रसादने स्वय ही बुलाया हो तो उन्होने और भी वडा जोखिम उठाया है।

मै आपको प्रोत्साहन तो नही दे सकता। मै तो यह मानता हूँ कि जो भारतके स्वराज्य यज्ञमे बलिदान देनेके लिए तैयार है, अब उन्हे प्रोत्साहन देकर उनसे काम लेनेका युग वीत चुका है। अब तो ऐसा समय आ गया है जब प्रत्येकको अपनी शक्तिपर ही खडा होना है। आज आप अपनी प्रतिज्ञाका पालन करते हुए इस सघर्षको सुन्दर रीतिसे चला रहे है। यदि आप पीछे हटेंगे तो आपका सारा प्रयत्न निरर्थक सिद्ध होगा और उससे पूरे भारतके नवयुवकोको हानि होगी।

हम विरोधीकी प्रवृत्तिके प्रति उपेक्षा-भाव रखते हुए भी उसकी अवगणना न करे। जो मनुष्य अपने विरोधी या शत्रुके बलकी अवगणना करता है वह अपनी ही अवगणना करता है।

आपका यह सघर्ष या आपने जो हडताल की है, वह आपके प्राचार्यके विरुद्ध नही है। वह तो उस पद्धतिके विरुद्ध है, जिसके अनुसार आजका राज्यतन्त्र या यह कालेज चल रहा है। यह बात भी नही है कि आपके प्राचार्यने जो-कुछ किया है

१. फीनिक्स प्रेसका एक आफ्रिकी कर्मचारी। उन्हीं दिनों उसका देहान्त हुआ था।

२. अहमदाबादमें।

सो कोई नई बात है। दूसरे कालेजोमे भी यही जैसे प्रतिबन्ध लगाये गये हैं। कई लोगोको उनका अनादर करनेका फल भुगतना पडा है, कई लोगोको दण्ड दिया गया है और कइयोको तो आगे बढकर खुशामद भी करनी पडी है। आप इस दु.खद स्थितिमे से बच गये हैं।

आप प्रजाके एक अंग है; इसीसे आपने अनुभव किया कि आपके साथ धोखा किया गया है और यदि इतना अनुभव करनेके बाद आप जायेगे तो इससे प्रजाके मानकी रक्षा नही होगी। सघर्षका परिणाम अवश्य ही सुन्दर होगा। यदि सम्मानपूर्ण समझौता हो सके तो उसके लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। यदि आप विनयसे काम लेगे, तो विजयके विषयमे कोई भी शका नही है। आपकी जीत आपकी हारमे ही निहित है। यदि एक वर्ष भी कालेजसे बाहर रहना पडे तो उसमे आपकी हार होनेवाली नही है। किन्तु अगर आप लाचार हो जाये, अपना वचन भूल जाये, जुर्माना भर दे, खुशामद करे और कालेज जाने लगे, तो वह आपकी हार होगी। इसलिए मै आपको सचेत करने आया हूँ।

एक वर्ष अथवा एक सत्रके यो ही निकल जानेपर आपको जो दुःख होगा, उसे मै समझ सकता हूँ। किन्तु जो विद्यार्थी यह सोचता है कि मेरा एक वर्ष या सत्र चला जायेगा, वह हडतालकी कीमत नही समझता। आपने आरम्भमें यह सब नही सोचा होगा; पर अबतक तो आप जान गये होगे कि इस छोटी-सी लडाईका बहुत बडा परिणाम हो सकता है। यदि आप इसी तरह कालेजके बाहर रहे और साथ-साथ विनयका पालन करते रहे तो आपकी और पूरे भारतकी शक्ति बढेगी और उससे पूरे भारतके विद्यार्थियोकी शक्ति और तेज बढेगा।

आप आज एक नये युगका प्रादुर्भाव कर रहे है, यदि ऐसा भी कहें तो इसमे कोई अतिशयोक्ति न होगी। पर नया युग प्रकट तभी होगा जब आप अन्ततक अपने निर्णयपर जमे रहेगे। आपकी समितिके कई सदस्य मुझसे मिले हैं। उनसे मैंने यही कहा कि आप सब निश्चिन्त रहे। आपको प्रोत्साहनके किसी सन्देशकी जरूरत भी नही है। आपको तो सघ-शक्तिका विकास करना है। यदि आप वापस कालेज जानेके बजाय कोई अन्य काम हाथमें ले ले तो वह ज्यादा अच्छा होगा।

विद्रोहियोकी हैसियतसे अपनाये गये आपके तरीके तभी शोभा देंगे जब आप हाथमें लिए कामको पूरा करेंगे और उसमे अपने जीवनका प्रत्येक क्षण लगा देंगे। अपने विद्रोही नामको सार्थक कीजिए। आपके नाम तार द्वारा ये तमाम धन्यवादके सन्देश आ रहे है। इससे क्या मालूम होता है? इन सन्देश भेजनेवालोका कहना यह है कि हिन्दुस्तानमे इस समय एक विशेष प्रकारकी शक्तिकी जरूरत है। धन्यवाद देनेवालोमें वह शक्ति नही है, किन्तु वह उन्हे आपसे प्राप्त हो सकती है। आप उनकी इस अभिलाषाको तभी पूरा कर सकते है और उन्हें यह शक्ति तभी दे सकते है जब आप अपने समुदायको एक-जुट बनाये रखेंगे।

पहले मैं इसके लिए कितनी ही बाते सूचित कर चुका हूँ। मै उनकी फिरसे याद दिलाता हूँ। यदि आप स्वराज्य और हिन्दके मानकी खातिर बलिदान करनेको

तैयार है तो कांग्रेसके कार्यक्रमको पूरा करनेमे अपना समस्त बल लगाना आपका धर्म है। कांग्रेसका कार्यक्रम एकदम आसान है और आसानीसे समझमे आ सकता है। कदाचित् आपकी उसमे कोई दिलचस्पी नही जान पडती और वह आपको बहुत पुरानी-सी बात लगती है। परन्तु ऐसी पुरानी बातोसे ही सीखनेको बहुत-कुछ मिल सकता है। वे बहुमूल्य होती है। यदि आपको यह कार्यक्रम पसन्द न हो तो आप कोई दूसरा ऐसा कार्यक्रम चुन सकते है जो आपको पसन्द हो।

यदि आप हमेशा नदीके रेतीले मैदानमे इकट्ठा होकर भाषण सुननेका मोह रखेगे तो यह एक भारी भूल होगी और अन्तमे आप उससे ऊब जायेंगे। यदि आप कालेजमे भाषण देनेकी कलाके लिए पदक प्राप्त करने या नामके पीछे बी० ए० की डिग्री लगानेकी इच्छा रखते हो तो यहाँ आचार्य कृपलानी वैसा कुछ भी आपको देनेवाले नही है।

मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि यदि आप इसकी शोभा बढाना चाहते हो तो रचनात्मक कार्यमें जुट जाये। ऐसा करके आप दूसरे विद्यार्थियोके सामने उदाहरण पेश कर सकेंगे। मेरे पास तो पहली बात खादीकी ही होगी। आप उसे पहनकर और बेचकर बहुत सेवा कर सकते हैं। जबतक समझौता नही हो जाता तबतक आप यही काम करे और घर-घर जाकर विदेशी कपडेकी भिक्षा माँगे। उसमे कुछ और भी विशेषता लानी हो, तो उसे यहाँ लाये और उसकी होली जलाये। इस तरह उसे जलानेसे ही बहुत शोभा प्राप्त हो सकती है। विदेशी कपडेके उपयोग-से हम भारतका कैसा सर्वनाश होने देते है इस सम्बन्धमे आप एक लेख[1] देख सकते हैं। आपके पास पहलेका कुछ न कुछ विदेशी कपडा तो होगा ही। आप जब खादी पहनना, बेचना और विदेशी कपडोको जलाना शुरू करेंगे तब सरकार भी मान जायेगी कि अब विद्यार्थीगण काममे जुट गये हैं।

टॉल्स्टॉयकी कथाओमें शैतानके बारेमे एक कथा है जो छतपर भाषण देनेके लिए चढता है और वहाँसे गिरकर मूर्च्छित हो जाता है। उसके कोई एक धुन है और जब वह उस धुनमें लीन होकर गिर जाता है तब लोग कहते है कि वह लुढक गया।

यदि आप अपनी धुनमे आकर लुढक भी जायेंगे तो लोग कहेगे कि आपने कुछ काम किया है। प्रजा अवश्य ही कहेगी कि इन विद्यार्थियोने कुछ काम किया है। आप कताई करें, अहमदाबादकी गलियाँ साफ करनेका सकल्प ले। कताईका या मद्यपान-निषेधका काम करे। आप यह सब काम कर सकते है।

पर आप यह बात ध्यानमे रखे कि करोडो रुपये भी मिलते हो तो भी प्रतिज्ञा-का उल्लघन करके किया जानेवाला समझौता निकम्मा है।

[गुजरातीसे]
प्रजाबन्धु, ३-२-१९२९

१. आशय शायद पुणताम्बेकर और वरदाचारीके खादी सम्बन्धी निबन्धसे है।

४९४. तार: नारायणदासको

[३० जनवरी, १९२९ या उसके पश्चात][1]

नारायणदास आनन्दजी
नानावाड़ा
कराची

तुम्हारा तार चिन्ताजनक। यात्रा स्थगित कर रहा हूँ। खुद तो सर्दीकी परवाह नही करता, पर जयरामदाससे सलाह करके सूचित करो कब रवाना होना है।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १५३१५) की फोटो-नकलसे।

४९५. तार: जयरामदास दौलतरामको

[३० जनवरी, १९२९ या उसके पश्चात][2]

जयरामदास दौलतराम
मार्केट रोड
हैदराबाद (सिन्ध)

नारायणदासके अन्तिम तारके कारण आपकी ओर से हिदायत पाने तक यात्रा स्थगित कर रहा हूँ। शुक्रवार या शनिवार को चलनेके लिए तैयार हूँ। चाहे तो तार द्वारा सूचित करे।

गांधी

अंग्रेजी (एस० एन० १५३१५) की फोटो-नकलसे।

१. नारायणदास द्वारा भेजे गये तारकी तिथि ३०-१-१९२९ है। उसमें कहा गया था: "क्वेटामें बहुत सर्द हवा चल रही है। अभी मैं आपकी सिन्ध यात्राके पक्षमें नहीं। कृपया सप्ताह-भर स्थगित रखें।"

२. नारायणदासके तारके उल्लेखसे; देखिए पिछला शीर्षक।

४९६. एक दक्षिण आफ्रिकी प्रशस्ति

दक्षिण आफ्रिकामे परममाननीय शास्त्रीजीके[1] सराहनीय कार्यके बारेमे वहाँके पत्रोमे अनेक प्रशस्ति-लेख निकलते रहे है। दक्षिण आफ्रिकी मित्रो द्वारा भेजी गई समाचारपत्रोकी कतरनोमें मैं ऐसी अनेक प्रशस्तियाँ देखता रहा हूँ। मैं अबतक तो उनको प्रकाशित करनेका अपना लोभ सवरण करता रहा। पर अब वे मातृभूमि लौटने ही वाले है, इसलिए मैं अधिक लोभ सवरण नही कर सकता। केपटाउनके प्रो० वेलने मुक्त-कण्ठसे उनकी जो प्रशसा की है, मैं उसे उद्धृत किये बिना नही रह सकता।[2] शास्त्रीजीने सरकारी प्रतिनिधिकी हैसियतसे जो काम किया वह अपने आपमे काफी बडा और महत्त्वपूर्ण है, परन्तु गैर-सरकारी व्यक्तिके रूपमे उन्होने जो किया वह कही अधिक महत्त्वपूर्ण है। वे जिस ध्येयको लेकर दक्षिण आफ्रिका गये थे उन्होने खरी ईमानदारी और उत्कट देश-प्रेमके कारण उस ध्येयकी सेवामें अपनी बेजोड़ प्रतिमाको पूरा-पूरा लगा देनेमे कोई कसर नही रखी। इसीका परिणाम है कि उस उपमहाद्वीपका वातावरण अब बदल चुका है और आगे काम करनेवालोका मार्ग सुगम बन गया है। मैं आशा करता हूँ कि इस उद्भट देशभक्त द्वारा की गई देशकी इस महान सेवाके सम्मानार्थ हम — उनके लिए नही, स्वय अपने उद्गार प्रकट करनेके लिए ही — देशमे उनके आगमनपर एक भावपूर्ण स्वागत-समारोह आयोजित करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ३१-१-१९२९

४९७. क्षमा-प्रार्थना

अगर परिस्थितियोने मेरा साथ दिया होता तो जिस यूरोप-यात्राकी चर्चा इतने दिनोसे हो रही है, उसके लिए जल्दी ही इसी सालके शुरूमे रवाना हो जानेका मेरा विचार था। लेकिन खूब सोचकर और मित्रोंसे सलाह लेनेके बाद मैं इस नतीजेपर पहुँचा हूँ कि परिस्थितिको देखते हुए, मुझे अपनी यूरोप-यात्रा स्थगित कर ही देनी चाहिए। अगले सालके बारेमे सोच सकनेका साहस अभी मुझे नही हो रहा है। एक प्रिय डेनिश मित्रने[3] मुझे लिखा है कि मेरा यूरोप जाना तभी उपयोगी हो सकेगा जब मैं आजाद भारतके प्रतिनिधिके नाते वहाँ जाऊँगा। मैं इस कथनकी सत्यताका अनुभव करता हूँ। लेकिन यह तो एक बात हुई।

१. वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री।
२. यहाँ नहीं दिया गया।
३. एन मेरी पीटर्सन; देखिए "पत्र: एन मेरी पीटर्सनको", २०-१-१९२९।

कलकत्तामें पण्डित मोतीलालजीसे मैंने इस वारेमे थोडी वातचीत की थी। उस समय तो उन्होंने कहा था कि मुझे नही जाना चाहिए, लेकिन अब एक तार द्वारा वह अपनी आपत्तिको वापस लेते हुए मुझे इस वातके लिए मजबूर कर रहे हैं कि मै यूरोपकी उस विस्तृत यात्राका कार्यक्रम पूरा कर लूँ, जिसका मै उनसे पहले ही सक्षेपमे जिक्र कर चुका हूँ। लेकिन अब उनकी ओरसे यह इजाजत मिल जानेके वाद मेरी हिम्मत मेरा साथ छोड़ रही है। भीतरसे भी कोई आवाज उठकर मुझे यूरोप जानेके लिए प्रेरित नही कर रही है। बल्कि काग्रेसके एक विभागपर रचनात्मक प्रस्तावको लादनेके बाद, उसपर देश-भरकी अनुकूल सम्मति पा जानेपर भी अगर मै विलायत चला जाऊँ तो मुझे ऐसा लगेगा कि मैंने मैदान छोडकर भागनेका अपराध किया है। यह हो सकता है कि जिन्होने प्रस्तावके पक्षमे मत दिये वे उसे कभी अमलमे लानेकी इच्छा न रखते हो। यह भी हो सकता है कि काग्रेसके कार्यक्रमके सम्बन्धमे इस साल मुझे कोई काम ही न मिले। लेकिन मै महसूस कर रहा हूँ कि इस तरह तर्क करना मेरे लिए ठीक नही है। मुझे कार्यकर्त्ताओमे अविश्वास नही करना चाहिए। अमर 'बारकीस' की भाँति मुझे भी हमेशा 'मुस्तैद' रहना चाहिए। मेरे अन्दरसे एक आवाज उठकर मुझे कहती है कि मै जो-कुछ भी मेरे हिस्से आ जाये उसे करनेके लिए तत्पर रहने-भरकी बात मे संतोष न मान लूँ; मुझे तो उस कार्यक्रमपर, जो मेरी दृष्टिमे एक महान् कार्यक्रम है, विचार करना चाहिए और उसे पूरा करनेके उपाय भी सुझाते रहना चाहिए। इन सबके अलावा मुझे आनेवाले सालकी लड़ाईके लिए तैयार हो जाना है, फिर वह लड़ाई किसी भी रूपमें सामने क्यो न आये।

यद्यपि एक सालकी अवधि निश्चित करना इच्छाके अनुकूल नही था, और यद्यपि मै उसे राष्ट्र और ब्रिटिश-लोगोके लिए बहुत थोड़े समयका नोटिस मानता था, फिर भी अपनी इस मान्यताको सिद्धान्त मानकर उसपर डटे रहने और उस कारण दो दल बना डालनेका मै विचार नही कर सकता था; वह मेरा अभीष्ट नही हो सकता था। और फिर यह भी ठीक है कि किसी जन्मसिद्ध अधिकारको पानेका कोई भी नोटिस बहुत थोड़े समयका नही हो सकता। इसलिए दो सालकी अवधिके बदले एक सालकी अवधिका परिवर्तन स्वीकार कर लेनेसे मेरी स्थिति बहुत गम्भीर बन गई। इसलिए अपनी हदतक तो मेरे लिए अन्य कोई गति नही बची। मैंने एक पत्रके संवाददातासे[1] विनोदके तौरपर जो बात कही थी वह दूसरी दृष्टिसे मेरे लिए बहुत गम्भीर भी थी। अगर इस वर्षकी समाप्तिके पहले, ब्रिटिश लोगो द्वारा या उनकी तरफसे उनकी संसदके द्वारा नेहरू-रिपोर्ट मजूर न की गई तो अगले दिसम्बरकी आधी रातके बाद मेरे नजदीक फिर उसकी कोई कीमत नही रहेगी और उस हालतमे मुझे अपने आपको अवश्य ही स्वतन्त्रतावादी घोषित कर देना होगा। लेकिन अगर मै इस बातको गम्भीरतापूर्वक कह रहा हूँ तो तैयारीके लिए प्राप्त इस वर्षमें मुझे भारतसे बाहर कही नही जाना चाहिए। जानेकी बातके खिलाफ मुझे

१. देखिए "भेंट: पत्र-प्रतिनिधियोंसे", २-१-१९२९।

अपनी तमाम ताकत खर्च करके, आगामी सघर्षके लिए देशको तैयार करनेका जो कार्यक्रम बनाया गया है उसे पूरा करनेकी चेष्टा करनी चाहिए।

जिस सत्याग्रह आश्रम, अब उद्योग मन्दिर, को मै सही या गलत, कैसे भी क्यो न हो, अपनी एक अच्छीसे-अच्छी कृति समझनेका दावा करता हूँ, अगर उसे अपने अस्तित्वके उद्देश्योको पूरा करना हो तो उसे भी अभी मेरी उपस्थिति और देखरेखकी जरूरत है। ऐसी हालतमे पश्चिमको मै क्या सन्देश दूँ? अभी तो वह भारतमे ही सब लोगोतक नही पहुँच सका है। उन लोगोको छोडकर जो मेरे लिए एक तरहका पक्षपात रखते है और चाहते है कि किसी न किसी तरह मै एक बार यूरोप और अमेरिकामे हो आऊँ, पश्चिमके दूसरे लोग अगर मुझसे कहे 'हकीमजी, पहले खुद अपना इलाज तो कर लीजिए' तो यह उनकी गलती नही कही जा सकती। मुझे यह बात साफ-साफ जाहिर कर देनी चाहिए कि महाशय रोमारोलासे प्रत्यक्ष मिलनेकी मेरी उत्कट इच्छाकी बातको एक ओर रखकर भी जब पहले-पहल मैने गम्भीरतापूर्वक यूरोप-यात्राके निमन्त्रणको स्वीकार करनेका लोभ किया था तब मेरे दिलमे यह विचार तो कभी नही था कि उसके द्वारा मै भारत-वर्षकी आजादीकी लडाईके लिए यूरोपके देशोका सहारा पा सकूँगा। मै अहिंसाका सन्देश तो जरूर पहुँचाना चाहता था। यह बात नही है कि अपने देशके लिए बाहरसे जितनी मदद मिल सके उतनी पानेकी मुझे कोई जरूरत न हो, लेकिन केवल उसकी भीख माँगनेके लिए विदेशोकी यात्रा करनेमे मेरा विश्वास नही है। जब हम उस मददके काबिल बन जायेगे तो वह मिलेगी, और अपने आप। इसलिए मैने इस विश्वाससे मनको समझा लिया है कि अगर मै पश्चिमी देशोमे जाता भी हूँ तो सच्ची अहिंसाका सन्देश उसे जबानी ही सुना सकूँगा। लेकिन जैसे-जैसे मै इस विषयमे अधिक गहरा विचार करता हूँ, वैसे-वैसे मै अपने आपको इस कामके लिए और भी अधिक अयोग्य पाता हूँ। मै देखता हूँ कि मुझे अभी उस सन्देशका, जो अखण्ड है और जो सत्य है, दूसरे शब्दोमे, ईश्वरको पानेका मार्ग है, विश्वव्यापी प्रचारका एक समुचित निमित्त बननेके लिए भी, बहुत-ज्यादा तैयारी की और बडी आत्मशुद्धि की जरूरत है। इसलिए अभी तो पश्चिमके मित्रगण मुझे, उनसे प्रत्यक्ष न मिल पानेकी अपनी लाचारीके लिए, क्षमा करेगे। इच्छा है, सामर्थ्य नही है। मै चाहता हूँ कि वे भी मेरे साथ इस बातकी प्रार्थना करे कि जितना अधिकसे-अधिक सम्भव हो सकता हो मुझे उतना प्रकाश मिले। इस बीच ये पृष्ठ हमारे आपसके सम्बन्धको सजीव बनाये रखनेके लिए साधन बने।[1]

किन्तु यूरोपकी अपनी इस यात्राको मुलतवी करते हुए मेरी नजर गुजरातकी ओर जाती है। यदि गुजरातके कार्यकर्त्ता चाहे तो बहुत-कुछ कर सकते है, गुजरात असहयोग आन्दोलनके जमानेमें अपना हिस्सा ठीक तरहसे अदा करता आ रहा है। मै १९२७ के अपने वचनपर आज भी कायम हूँ। यदि गुजरातका एक भी जिला

१. इसके बादका अनुच्छेद ३-२-१९२९ के **नवजीवन**में प्रकाशित "यूरोपनो प्रवास मुलतवी" गुजराती लेखसे अनुवादित है।

पूरी तरह तैयार हो जाये, बलिदान देना स्वीकार कर ले तो उसीके मारफत स्वराज्य पलक मारते ही प्राप्त किया जा सकता है। देखना है गुजरात इसमे किस तरह हाथ बँटाता है।

[अंग्रेजी और गुजरातीसे]
यंग इंडिया, ३१-१-१९२९
नवजीवन, ३-२-१९२९

४९८. इस तरह नहीं

मै एक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्रीका बडा ही उपयोगी पत्र[1] नीचे दे रहा हूँ। इसमे पिछली बारके कांग्रेस अधिवेशनमे हुई घटनाओका विशद वर्णन मिलता है। इसमे जिस खीचतानका वर्णन है उसमे किसी एक ही प्रान्तने नही, अनेक प्रान्तोने भाग लिया था। निश्चय ही, अब प्रत्येक कार्यकर्त्ताके सामने यह बात हाथ-कगनकी भाँति प्रत्यक्ष हो जानी चाहिए कि यदि हम अपनी शक्तिके स्रोतको ही इस तरह विषाक्त बना देगे तो स्वराज्य प्राप्त करनेकी सम्भावना अनिश्चित काल तकके लिए टल जायेगी। हमारी इस सस्थामे काम करनेवालोको धन पानेका लोभ तो हो नही सकता, क्योकि वह यहाँ है ही नही और यश पानेकी भी अधिक सम्भावना नही है। इसलिए यदि ऐसी सस्थामे भी लोग चुनावोके लिए ऐसी खीचतान करने और जाली मतदाता-सूचियाँ तैयार करनेकी दलदलमे पड जायेगे, तो फिर उस दिन हमारा क्या हाल होगा जब अगणित प्रलोभन उपस्थित कर देनेवाले राज्यका इतना विशाल-काय तन्त्र हमारे हाथमे आ जायेगा। मै जानता हूँ कि इस आपत्तिका लोग क्या उत्तर दे सकते है। पर यदि उस उत्तरसे हमारे देशभक्तोकी तसल्ली हो जाये, तो सचमुच मेरे हृदयको ठेस लगेगी।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, ३१-१-१९२९

४९९. दक्षिणमें हिन्दी

श्रीयुत जमनालालजी हिन्दी-प्रचारके लिए दक्षिण भारतका दौरा कर रहे है। इस दौरेका परिणाम यह निकलना चाहिए कि हिन्दी सीखनेके इच्छुक स्त्री-पुरुष दुगुनी सख्यामे आगे आये और हिन्दी-प्रचार कार्यालय चलानेके लिए दुगुने उत्साहसे चन्दा जमा हो। मद्राससे प्राप्त विवरणसे पता चलता है कि श्रीयुत जमनालालजीकी लगन और निष्ठा ठीक-ठीक फलवती हो रही है। दक्षिण भारतके नेता जबतक हिन्दी सीखनेसे इनकार करते रहेगे, तबतक दक्षिण शेष भारतसे अलग-थलग-सा ही बना रहेगा। यह बात अब सभीको स्पष्टतया समझ लेनी चाहिए कि हिन्दीको प्रादेशिक

१. पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्रीके इस पत्रमें कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशनके लिए प्रतिनिधियोंके पंजीकरणमें बरती गई अनियमितताओंका ब्योरेवार वर्णन था।

भाषाओंका स्थान कतई नही लेना है, उसे तो अन्तर्प्रान्तीय विचार-विनिमयका माध्यम बनना है और सभी अखिल भारतीय सगठनोकी अधिकृत भाषाका ही स्थान लेना है। कहनेकी जरूरत नही कि हिन्दीकी उर्दू शैली उससे जुडी हुई है, अलग नही।

[अंग्रेजीसे]
यंग इंडिया, ३१-१-१९२९

५००. टिप्पणियाँ

विद्यार्थियोंकी हड़ताल[1]

गुजरात महाविद्यालय, अहमदाबादके विद्यार्थियोकी हडताल अभीतक पूरे जोशके साथ जारी है। विद्यार्थी जिस दृढता, शान्ति और सगठनका परिचय दे रहे हैं वह हर तरह तारीफके काबिल है। अब वे अपनी ताकतका अनुभव करने लगे हैं। मेरा तो यह भी विचार है कि अगर वे कोई रचनात्मक काम करने लगे तो उन्हे अपनी ताकतका और भी ज्यादा पता चलेगा। मेरा विश्वास है कि हमारे स्कूल और कालेज हमें बहादुरी सिखानेके बदले खुशामदी, डरपोक, ढुलमुल मिजाज, और चरित्र-गठन करनेवाले गुणोसे हीन बनाते हैं। मर्दानगी किसीको दुतकारने, डींग हाँकने या बढप्पन जतानेमे नही होती। वह तो सच्चे कामको करनेका साहस बतलानेमे और उस साहसके फलस्वरूप सामाजिक, राजनैतिक या दूसरे मामलोमे जो-कुछ कठिनाइयाँ पेश हो उन्हे झेल लेनेमे होती है। मनुष्यकी मनुष्यता उसके कामोसे प्रकट होती है, शब्दोसे नही। अब जो परिस्थिति बनी है, जान पडता है, उसमें विद्यार्थी-वर्गको बहुत लम्बे समयतक प्रतीक्षा करनी पडेगी। अगर स्थिति ऐसी ही बनी रहे तो उन्हे हिम्मत नही हारनी चाहिए। तब तो सर्वसाधारण जनताका यह काम होगा कि वह इस मामलेमे दस्तन्दाजी करके उसे सुलझानेकी कोशिश करे। और उस हालतमे तो यह भारत-भरके विद्यार्थी-जगतका भी कर्त्तव्य बन जायेगा कि वह अपने अधिकारको जो पूरी तरहसे न्याय्य है, पानेके लिए लडे। जो लोग इस मसलेको पूरी तरह जान लेना चाहते है उन्हे इस हडतालसे सम्बन्धित सभी कागजोकी नकल श्री मावलकरसे मिल सकेगी। अहमदाबादके विद्यार्थियोकी लडाई सिर्फ उनके अपने हकोकी लडाई नही है, वे तो सर्व-साधारण विद्यार्थी-जगतके सम्मानके लिए सघर्ष कर रहे है और इसलिए, एक तरह यह लडाई राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षाके लिए भी लडी जा रही है। अहमदाबादके विद्यार्थियोकी तरह साहसके साथ लडनेवाले हर तरहसे जनताकी पूरी मददके पात्र हैं।

मुझे पक्का भरोसा है कि अगर विद्यार्थी किसी राष्ट्रीय रचनात्मक कार्यमे लग गये तो उन्हे जनताकी मदद भी अवश्य ही मिलेगी। राष्ट्रीय काम करनेसे वे कुछ भी खोयेंगे नही। अगर यह उन्हे पसन्द न हो तो जरूरी नही है कि वे कांग्रेसके कार्य-

१. देखिए "भाषण गुजरात कालेजके विद्यार्थियोके समक्ष", ३०-१-१९२९।

क्रमको ही अपनाये। मुख्य बात तो यह है कि वे मिलकर स्वतन्त्र और ठोस काम करके यह बता दे कि उनमे सगठित होकर स्वतन्त्र और ठोस काम करनेकी योग्यता है। हमारे खिलाफ अक्सर यह बात कही जाती है कि हम केवल बढ-बढकर बोलना जानते है और निरर्थक, क्षणिक प्रदर्शन कर सकते है। लेकिन जब सहयोगपूर्वक, साहस और अडिग दृढताके साथ काम करनेका अवसर उपस्थित होता है तो हमारे हाथ-पैर ढीले पड़ जाते है। विद्यार्थियोके लिए इससे अच्छा मौका और क्या होगा कि वे इस कलकको झूठा साबित कर दे। क्या वे अवसरके अनुरूप ऊँचा उठकर बतायेगे?

चाहे जो हो जाये उन्हे अपने विश्वाससे नही डिगना चाहिए। महाविद्यालय राष्ट्रकी सम्पत्ति है। अगर हम कायर न बन जाते, तो एक विदेशी सरकारको यह साहस न होता कि वह हमारी सम्पत्तिपर कब्जा कर बैठती अथवा विद्यार्थियोको देशकी स्वाधीनताकी लडाईमे भाग लेनेके कारण प्राय. अपराधी करार दे देती, राष्ट्रीय स्वाधीनताकी लडाईमे आगे बढ़कर भाग लेना तो विद्यार्थियोका एक जरूरी कर्त्तव्य और हक समझा जाना चाहिए।

एक भूल[1]

चम्पापुरहाट (उत्कल) के श्री गोविन्द बाबू मुझे लिखते है कि 'सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा' मे मैंने गलतीसे बम्बईकी दो पेशेवर कातनेवालियोका जिक्र किया है।[2] उन कातनेवालियोने श्रीमती गंगाबहन, अवन्तिकाबहन, रमीबहन वगैराको कातना नही सिखाया। इस कामके लिए तो मैंने गोविन्द बाबूको ही चुना था और मैं उन्हे नर-नारायणके मन्दिरमे भी कताई सिखाने भेजता था। मुझे अपनी गलती बता देनेके लिए मैं गोविन्द बाबूको धन्यवाद देता हूँ। ठीक तरह याद करनेपर मुझे स्मरण होता है कि बम्बईकी कई कातना सीखनेवालियोको कातना सिखानेके लिए मैंने गोविन्द बाबूसे ही कहा था। इसमे शक नही कि आत्मकथामे इस तरहके अनेक मधुर स्मरणोका उल्लेख छूट गया होगा। योग्य कार्यकर्त्ताओको प्रमाणपत्र देना आत्मकथाका कोई उद्देश्य नही है। वह तो सिर्फ इसलिए लिखी जा रही है कि उसके द्वारा सत्यके सिद्धान्त निरूपित करनेवाली घटनाओका वर्णन किया जाये। इसलिए जिनके नाम छूट गये हो उन्हे दु.ख तो कदापि नही मानना है; क्योकि जिन असख्य कार्यकर्त्ताओने मुझे सहायता पहुँचाई है, सेवाभावसे ही पहुँचाई है, और सेवाका पुरस्कार तो सेवा ही है। गोविन्द बाबूको तो अपनी सेवाओका खासा इनाम मिल गया है; क्योकि अब तो वे केवल कताई शिक्षक न रहकर उत्कलमे अपना एक आश्रम चला रहे है और वहाँ खादी काम करनेके साथ-साथ बीमारोको दवाकी मदद पहुँचा रहे है। इस आश्रमको प्राय. सारीकी-सारी आर्थिक सहायता गुजराती सज्जनोसे मिल रही है। यदि वे आश्रमको एक ऐसी अच्छी और उपयोगी सस्था बना सके, जो ग्राम-सगठनके कामके लिए केन्द्र रूप हो जाये तो वह उनकी सेवाओका और भी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार होगा।

१. इसे २७-१-१९२९ के नवजीवनमें प्रकाशित इसी शीर्षककी टिप्पणीसे भी मिला लिया गया है।
२. देखिए आत्मकथा, भाग ५, अध्याय ४०।

उन्होने एक अच्छा खासा कार्यक्रम तैयार कर लिया है; किसी भी कार्यकर्त्ताके लिए खादी, गाँवोमे औषधि बाँटना, राष्ट्रीय शिक्षा देना, अछूतोकी सेवा करना आदि काम काफी अच्छे ओर बडे है, लेकिन श्रद्धासे तो पहाड भी उठा लिये जाते है। अगर गोविन्द बाबू श्रद्धापूर्वक काम करते रहकर अपनेको मिलनेवाली मददके लायक साबित कर सके तो फिर और क्या चाहिए।

ग्राम-सेवकोंके लिए प्रशिक्षण वर्ग

प्रेम महाविद्यालय, वृन्दावनके आचार्य जुगलकिशोरने मुझे ग्राम-कार्यकर्त्ताओके प्रशिक्षणकी एक योजना भेजी है। योजना बडी है और दिलचस्प है। इसे प्रेम महाविद्यालय ही कार्यान्वित करेगा[1]। योजनाका प्रारम्भ पिछले दिसम्बरमे किया गया था। वे अबतकके कार्यका विवरण देते हुए लिखते है:[2]

प्रशिक्षणके लिए जो विद्यार्थी आये है, उनकी संख्या बहुत कम है। किन्तु पाठकोको इस कारण चिन्तित नही होना चाहिए। प्रवेशके लिए जो प्रतिबन्ध रखे गये है उन्हे देखते हुए लोगोका अधिक संख्यामे आना कठिन है और प्रारम्भमे यह एक तरह से अच्छी बात भी है। केवल उन्ही लोगोको प्रवेश दिया जाता है जो अन्य योग्यताएँ पूरी करनेके साथ-साथ इस आशयका प्रतिज्ञापत्र भी भरकर देते हो कि दो वर्षके पाठ्यक्रमको पूरा करनेके बाद वे अपने जीवनके कमसे-कम दस वर्ष गाँवोमे काम करते हुए बितायेगे। जरूरतमन्द प्रशिक्षणार्थियोको पन्द्रह रुपयेसे बीस रुपये प्रतिमास तक छात्रवृत्ति दी जाती है। पाठ्यक्रमको पूरा कर चुकनेके बाद अपनी जरूरते सिद्ध करनेपर उन्हे तीस रुपयेसे पचहत्तर रुपये प्रतिमास तक जीवनवेतनके रूपमे मिला करेगा। ऐसे सभी सज्जनोसे जो ग्राम-पुनर्गठनकी उन्नति चाहते है, मेरी सिफारिश है कि वे इस योजनापर ध्यान दे। संस्थाके मन्त्रीको पत्र लिखकर योजनाकी प्रति प्राप्त की जा सकती है। आचार्यजी समानधर्मा संस्थाओ और व्यक्तियोका नीचे लिखे रूपमे सहयोग आमन्त्रित करते है:

(क) छात्रवृत्तियोके रूपमे,

(ख) ग्रामोत्थानसे सम्बन्धित संस्थाओके अन्तर्गत व्यावहारिक प्रशिक्षणका प्रबन्ध करनेके रूपमे,

(ग) पाठ्यक्रम पूरा कर चुकनेवाले कार्यकर्त्ताओको अपने यहाँ नियुक्त करके,

(घ) इन वर्गोके विद्यार्थियोके उपयोगके लिए उपयोगी पुस्तके, चन्दा आदि देकर,

(च) सुझाव और सलाह देकर, तथा

(छ) ग्राम-समस्याओसे सम्बन्धित विषयोपर बीच-बीचमे भाषण आदि देकर।

मै आचार्य जुगलकिशोरको एक ऐसी योजनाका प्रारम्भ करनेके साहसपर बधाई देता हूँ, जो यदि ठीकसे चलाई जा सके, तो बहुत फलदायक सिद्ध हो सकती है।

[अंग्रेजीसे]

यंग इंडिया, ३१-१-१९२९

१. देखिए "पत्र: जुगलकिशोरको", २५-१-१९२९।

२. यहाँ नही दिया गया है।

५०१. सन्देश : अहमदाबादके 'मजूर सन्देश'[1] को

[३१ जनवरी, १९२९][2]

मजदूरोको अपने अधिकार प्राप्त करनेके लिए पूरी-पूरी कोशिश तो करनी चाहिए, लेकिन शिष्टता और शान्तिके साथ। यदि पच लोग कोई फैसला न दे या मालिक पचोसे फैसला कराने न जाये या वे पच-फैसलेपर अमल न करे, तो मजदूरोंको हडताल करनेका पूरा अधिकार है। परन्तु एक बार हडताल शुरू कर देनेके बाद उनको किसी भी हालतमे बेसब्रीसे काम नही लेना चाहिए। हडतालमे शामिल न होनेवाले अपने साथियोके साथ उनको जोर-जबर्दस्ती भी नही करनी चाहिए। गुजरात जिनिंग मिलमे जो हडताल चल रही है, उसमे मजदूरोको श्रीमती अनसूयाबहन, श्री शकरलाल बैंकर और मजदूर-सघके मन्त्रियोकी हिदायतोपर चलना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १-२-१९२९

५०२. पत्र : हरिभाऊ उपाध्यायको

साबरमती
३१ जनवरी, १९२९

भाई हरिभाऊ,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम प्रार्थनामे नही आ सकते, इसकी कोई फिक्र मत करो। न आ पानेका तुम्हे दुख है, यह मुझे अच्छा लगा है। प्रार्थनाका रहस्य हृदयमे समझ लेनेपर वह खाने-पीनेकी क्रियासे भी ज्यादा अनिवार्य हो जाती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६०६४) से।
सौजन्य : हरिभाऊ उपाध्याय

१. एक मजदूर पत्रिका।
२. इस सन्देशको अहमदाबादके फ्री प्रेस ऑफ इडिया ने इसी तिथिको प्रकाशित किया था।

५०३. पत्र: के० टी० पालको

आश्रम, साबरमती
१ फरवरी, १९२९

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिल गया।[1] आपको सफाई देनेकी कोई जरूरत नही। मैं बखूबी समझता हूँ कि अत्यन्त व्यस्त रहनेवाला व्यक्ति अपनी गतिविधियोके बारेमे बहुधा कितना विवश-सा हो जाया करता है।

मैं कल सिन्धके लिए रवाना हो रहा हूँ और १५ फरवरीको वापस आऊँगा। फिर कमसे-कम २३ या २४ तारीखतक तो आश्रममे रहूँगा ही।

हृदयसे आपका,

के० टी० पाल
मेटलैड हाउस
दिल्ली

अग्रेजी (एस० एन० १५००३) की फोटो-नकलसे।

५०४. पत्र: जवाहरलाल नेहरूको

आश्रम, साबरमती
१ फरवरी, १९२९

प्रिय जवाहर,

कलकत्तामें जो-कुछ हुआ था, उसके बारेमे मैंने 'यग इडिया' मे पजाबसे आया एक पत्र[2] प्रकाशित किया है। तुम उसे ध्यानसे पढना। पत्रमे जो कहा गया है, वह सब शायद तुमको मालूम ही होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम अपना सबसे पहला फर्ज काग्रेस कमेटियोको व्यवस्थित और नियमानुकूल बनाना ही मानो। रचनात्मक कार्य-क्रमके सिलसिलेका काम इसके बाद ही सगठित करना। हमारे अनुमानसे परे कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियोके कारण ग्रेट ब्रिटेनसे कोई सम्मानपूर्ण समझौता हो जाये, तो बात अलग है, वैसे देशमे स्वाधीनताकी माँग करनेवाले दलके अतिरिक्त कोई दूसरा दल खडा नही होगा। लेकिन अगर हम जमकर सघर्ष नही करेंगे, तो हमारी

१. दिनांक २९-१-१९२९ का। उसमें श्री पालने महीनेके अन्तसे पहले साबरमती पहुँचनेसे अपनी असमर्थता व्यक्त की थी। "पत्र: के० टी० पालको", २२-१२-१९२८ भी देखिए।

२. देखिए "इस तरह नही", ३१-१-१९२९।

आवाजमे कोई असर पैदा नही होगा। अब यदि यह सघर्ष हमे काग्रेसके जरिए ही करना है, तो काग्रेसको एक जानदार और पुरअसर सस्था बनाना ही पडेगा। और अगर सघर्षको अहिंसात्मक बनाये रखना है, तो वर्तमान रचनात्मक कार्यक्रम जैसा भी है उसपर हमे अमल करना ही होगा। इसीलिए मै चाहूँगा कि तुम अहमियतके लिहाजसे भी काग्रेस कार्यक्रमपर अमल करानेके काममे दत्तचित्त होकर जुट जाओ। वैसे यह बात तो अपनी जगह सही ही है कि एक बार मन्त्रि-पद ग्रहण कर लेनेके बाद तुम अपनी आदतके मुताबिक अपने कामको मनोयोगसे करोगे ही। मै यह महसूस करनेके लिए विवश हूँ कि हम खादीके जरिए विदेशी वस्त्रोके बहिष्कारके सिलसिलेमे अभी बहुत काफी काम कर सकते है, और अगर कार्यकर्त्ता पर्याप्त सख्यामे मिल जाये तो शराबके ठेकोपर धरना देनेकी दिशामे भी बहुत काफी काम किया जा सकता है। और अगर ये सभी काम पूरे करने है तो मै यह बहुत जरूरी समझता हूँ कि तुम सभी प्रान्तोका दौरा कर डालो और सबसे पहले तो समूची संस्थाको एक व्यवस्थित अनुशासित रूप दे डालो।

सिन्धमे एकाएक बहुत ठडी हवा चल पडनेसे लोगोने मुझे कल सिन्ध जानेसे रोक लिया था। मुझे इस तरह रोकना निरर्थक था, पर मै उसे माननेपर विवश था। अब मै कलके दिन रवाना हो रहा हूँ। इसलिए तुम हर कार्यक्रमकी तारीखमे दो दिन बढा देना।

सीतलासहाय लेखा इत्यादि तैयार करनेके लिए कल रवाना हो रहे है। उम्मीद है कि सिन्धसे मेरी वापसीतक वे लौट आयेगे।

अब चूँकि यूरोप-यात्राका विचार त्याग दिया गया है, इसलिए तुम मुझे उ० प्र०, आन्ध्र और बर्माके दौरेपर ले जा सकते हो। बर्माका दौरा चूँकि पहले होना चाहिए, इसलिए मै इन प्रान्तोमे अप्रैलके अन्तिम सप्ताहसे पहले नही जा सकूँगा।

आशा है, कमलाकी हालत अब बेहतर होगी।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
११, क्लाइव रोड, नई दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १५३१८) की फोटो-नकलसे तथा गाधी नेहरू कागजात, १९२९।

सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

५०५. पत्र : के० सन्तानम्‌को

आश्रम
साबरमती
१ फरवरी, १९२९

प्रिय सन्तानम्,

आपका पत्र मिला। यदि आप चाहते हैं कि कांग्रेस अधिवेशनके दौरान पंजाब ठीक पटरीपर चले, तो आपको कट्टरता और सख्ती बरतनी पड़ेगी। जबतक वहाँ कांग्रेसको बिलकुल स्वस्थ और स्वच्छ न बना दिया जाये, तबतक आप उसे किसी भी तरहकी सहायता देनेसे इन्कार कर दीजिए; आप इसके बारेमें सार्वजनिक रूपसे बयान भी जारी कर सकते हैं। स्थितिको देखते हुए, मैं आपका पत्र मोतीलालजीको[1] भेज रहा हूँ, इस अनुरोधके साथ कि वे जो कर सकते हैं, करें।

मैं आपकी जगह होता तो इस चर्चामें लालाजी स्मारकको कभी न घसीटता। स्मारकके कामको अपने बलपर चलने दीजिए। कांग्रेस अधिवेशन लाहौरमें हो या न हो, आप इस सवालको बीचमें घसीटे बिना स्मारकके लिए चन्दा जमा करनेका काम जारी रखिए। लालाजीके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करनेके इच्छुक व्यक्ति हर हालतमें आपको चन्दा देंगे। मुझे तो सबसे अधिक चिन्ता इस बातकी है कि पंजाबकी कांग्रेस वहाँके कांग्रेसजनोंकी वास्तविक प्रतिनिधि संस्था हो।

'यंग इंडिया'में[2] मैंने जो पत्र प्रकाशित किया है उसे आप देख लें। आप एकदम समझ लेंगे कि पत्र पंजाबका ही है। ऐसी चीजें देखकर दिलको कितनी गहरी चोट पहुँचती है। मैं इस मूल बुराईसे निबटनेकी ही सोच रहा हूँ।

मैं कल सिन्ध जा रहा हूँ और १५ तारीखको लौटूँगा। कार्यक्रम साथमें भेज रहा हूँ।

कृष्णका स्वास्थ्य कैसा है?

हृदयसे आपका,

पण्डित के० सन्तानम्
लाहौर

अंग्रेजी (एस० एन० १५३१९) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए अगला शीर्षक।
२. देखिए "इस तरह नहीं", ३१-१-१९२९।

५०६. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

आश्रम
साबरमती
१ फरवरी, १९२९

प्रिय मोतीलालजी,

आपका तार मिल गया। यूरोप-यात्राके बारेमे मैंने 'यग इडिया' मे जो लिखा था आपने पढ ही लिया होगा।[1] इसलिए यहाँ उन कारणोको बतलानेकी जरूरत नही जिनके आधारपर मैंने ऐसा निर्णय किया था। अन्तिम रूपसे निर्णय करते ही मुझे ऐसा लगा जैसे सिरसे एक बोझ उतर गया हो। और आपके तारने मेरे निर्णय पर मुहर लगा दी है।

सिन्ध-यात्राका कार्यक्रम मैंने जवाहरको भेज दिया था। उसने आपको दिखला भी दिया होगा। लेकिन बातको और पक्की करनेके ख्यालसे उसकी एक प्रति मैं आपके पास भी भेज रहा हूँ। उस प्रान्तमे मौसम खराब हो जानेसे मुझे कल रवाना होनेसे रोक दिया गया था। इसलिए तारीखोमे कुछ बदलाव कर दिया गया है। अब मैं कल सुबह रवाना हो रहा हूँ।

मैं इसके साथ सतानमका पत्र नत्थी कर रहा हूँ। सारी बाते पत्रसे ही बिलकुल साफ समझमे आ जाती है। मैं चाहता हूँ कि आप पजाबके कार्यकर्त्ताओको बुलाकर उनके मतभेदोका कुछ निबटारा करा दे। हम अगर सचमुच काम करना ही चाहते है तो अगला काग्रेस अधिवेशन बिलकुल सच्चा और खरा — एक ऐसा समारोह होना चाहिए, जो वास्तवमे निर्वाचित प्रतिनिधियोका सही प्रतिबिम्ब हो। हवालेके लिए मैं 'यंग इडिया'के उस अककी एक चिन्हित प्रति आपके पास भेज रहा हूँ जिसमे एक प्रान्तीय काग्रेस कमेटीके मन्त्रीका पत्र[2] प्रकाशित किया गया है। पत्रमे सच्ची घटनाएँ बयान की गई है। उसे देखकर आप बडी आसानीसे अनुमान लगा लेगे कि वह पजाबके बारेमे है। पजाबके कार्यकर्त्ताओकी भावनाओके ख्यालसे मैंने उसमे नाम मिटा दिये है। उस पत्रसे पता चलता है कि बगालके काग्रेस अधिवेशनमे पूरा-का-पूरा प्रतिनिधि मण्डल ही जाली था। आन्ध्रकी घटनाओकी तफसील जब पट्टाभि[3] सुना रहे थे, तब तो आप खुद मौजूद ही थे। यदि काग्रेसके सभी 'रजिस्टरो'की जाँच की जाये, तो बडी ही शोचनीय स्थिति सामने आयेगी। मैं चाहता

१. देखिए "क्षमा-प्रार्थना", ३१-१-१९२९।
२. देखिए "इस तरह नही", ३१-१-१९२९।
३. पट्टाभि सीतारमैया।

हूँ कि जवाहर सभी प्रान्तोंका दौरा करे और कांग्रेसको एक सचमुच ही जानदार संस्था बना दे।

हृदयसे आपका,

पण्डित मोतीलालजी
११, क्लाइव रोड
नई दिल्ली

अंग्रेजी (एस० एन० १५३२०) की फोटो-नकलसे।

५०७. पत्र : मीराबहनको

आश्रम
साबरमती
२ फरवरी १९२९

चि० मीरा,

असाधारण सर्दीके कारण सिन्धके लोगोंने मुझे दो दिन रोक दिया।[1] इसलिए कार्यक्रमकी तिथियाँ दो दिन बादकी समझी जानी चाहिए। रसिक दिल्लीमें बहुत बीमार पड़ा है। बा और कान्ति वहाँ गए हैं। वह पाँच दिनसे बेहोश है। ईश्वरकी इच्छा जो होगी सो होगा। मैं इस महीनेकी १५ तारीखको मन्दिर लौट आऊँगा। हम सब तीसरे दर्जेमें सफर कर रहे हैं। पाखाना बहुत गन्दा है, और तो सब ठीक है। प्रो० कृपलानी मेरे साथ हैं।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबहन
खादी भण्डार,
छटवान[2]
पोस्ट छोटारीपत (बिहार)

अंग्रेजी जी० एन० ९३९४ से, तथा सी० डब्ल्यू० ५३३९ से भी।
सौजन्य मीराबहन

१. साबरमतीमें।

२. मीराबहनने उत्तर बिहारके एक छोटे गांवमें रामेश्वरबाबू और राजेन्द्रबाबूके मुजफ्फरपुर आश्रमके कुछ नौजवानोंकी मददसे खादीका काम शुरू किया था।

५०८. पत्र : छगनलाल जोशीको

२ फरवरी, १९२९

चि० छगनलाल,

तुम्हारा भेजा हुआ तार सिद्धपुरमे मिल गया था। मारवाड जंक्शनपर भी तार मिला। आशा तो कम ही है।[1] वा और कान्ति दिल्ली जानेके लिए उतर गये है। ऐसे प्रसग हमे नम्र और अधिक कार्य-परायण बनाते है। सिद्धपुरमें स्वामी और येहाभाई मिले थे रमणीकलाल सिद्धपुर जाये और देखे कि वहाँ आसपास क्या ऐसी गरीव वहने है जो कातने-पीजनेका काम करनेको तैयार है। हो तो इनके वारेमे वतलाये। दान करनेके इच्छुक पूजाभाईके कोई स्नेही है। उनकी इच्छा है कि सिद्धपुरमे ही खादी-कार्य किया जाये।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

५०९. गुजरात कालेजके विद्यार्थी

गुजरात कालेजके छात्र-छात्राएँ दिनो-दिन अपने प्रभावमे जैसे-जैसे वृद्धि करते जाते है, वैसे-वैसे उनकी जिम्मेदारी भी वढती जाती है। उनकी हड़ताल ज्यो-ज्यो लम्बी खिचती जाती है तथा विद्यार्थियोकी दृढताके कारण पूरे देशके अधिकसे-अधिक लोगोका ध्यान अपनी ओर खीचती जाती है त्यो-त्यो उनके सम्वन्धमे जनताकी आशा भी वढती जाती है। वारडोलीके सम्वन्धमे जो हुआ वैसा ही यह भी है। ऐसा कहा जा सकता है कि शुरूमें तो हडतालसे विद्यार्थियोका ही सम्वन्ध था किन्तु अब उसका सम्वन्ध पूरे हिन्दुस्तानसे हो गया है। अत· अव उसमे शिथिलता आनी ही नही चाहिए। चारो ओरसे यह सुननेमे आ रहा है कि अधिकाग विद्यार्थी कही अपनी प्रतिज्ञाको तोड न दे। इस अफवाहके वावजूद 'चौकस आदमी सदा सुखी' के अनुसार विद्यार्थी सतर्क रहे तथा वे किसी प्रकारके लालच अथवा भयके सामने न झुके, यह चेतावनी देनेमे मैं अविनय नही मानता।

इस हडतालका अच्छेसे-अच्छा परिणाम तो तभी निकलेगा जव कि विद्यार्थी सगठित रूपसे कोई रचनात्मक काम करेगे। ऐसे वहुतसे काम है। इसी अंकमें

१. रसिकके वचनेकी।

अहमदाबादके एक नागरिकका शहरकी गन्दगीसे सम्बन्धित पत्र[1] प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रमे शहरकी गन्दगीका हूबहू वर्णन किया गया है। इसके साथ ही बालकोकी मृत्युके आँकडे भी पत्र-लेखकने दिये थे। हमारे लिए वे शर्मनाक आँकडे है किन्तु मैने उन्हे नही दिया है क्योकि ये आँकडे तो प्रसिद्ध ही है। युवक सघके प्रधान श्री हरिप्रसाद देसाईने स्वयं इन्हे विज्ञापित किया है। इस गन्दगीको दूर करनेका काम विद्यार्थी आसानीसे कर सकते है। लोगोको इस गन्दगीको दूर करनेके उपाय सुझाकर वे शहरियोका स्वास्थ्य सुधार सकते है। इस काममे परोपकार तो है ही। इससे विद्यार्थियोको यश भी मिलेगा। इस तरहके कुछ काम किए जाये तो वह हिन्दुस्तानके प्रत्येक विद्यार्थीके लिए दृष्टान्त रूप बन जाएगा। शहरके लोग उन्हे आशीर्वाद देगे। मै मानता हूँ कि हडतालको जल्दी समाप्त कर देनेका यह एक अच्छा रास्ता है। जबतक विद्यार्थी किसी भी काममे जुटे नही है तबतक उनके हारनेका भय है और शिराज साहब[2] भी उन्हे तबतक हरानेका प्रयत्न करते रहेगे।

इतना तो स्पष्ट ही है कि विद्यार्थीगण केवल भाषणो और तकरीरोके बलपर अधिक समय नही बिता सकेगे। अब तो हडताल लम्बी चलेगी ऐसा मानकर ही हमे अगला कदम उठाना चाहिए। समझौतेके लिए तैयार रहना तो उचित है और आवश्यक भी है। यह मानकर कि कभी समझौता हो ही नही सकता, हम कोई गलत कदम न उठाये। उसी प्रकार हम रोज समझौतेकी आशा करते हुए बैठे भी न रहे। उचित समय आनेपर समझौता तो होगा ही, ऐसा मनमे निश्चय करके उस ओरसे निश्चिन्त रहकर, अब विद्यार्थियोको काममे जुट जाना चाहिए। ऐसा करनेसे ही समझौता जल्दी हो सकता है। क्योकि विद्यार्थियोके काममे जुट जानेको उनके बलकी निशानी माना जायेगा, उनके बलका ज्ञान होते ही उन्हे फोडनेकी कोशिशे बन्द हो जायेगी और उन्हे मनानेकी ही कोशिश की जायेगी।

अहमदाबादकी गन्दगीको दूर करनेका काम तो एक दृष्टान्तस्वरूप है। यह काम बहुत आवश्यक है। इस कामको थोडे समयमे निपटाया जा सकता है। स्थानीय कार्य होनेके कारण उसमे अधिक रस भी आना चाहिए। स्थानीय कार्य होनेके कारण ही शहरके लोगोको विद्यार्थियोसे उसके बारेमे आशा रखनेका अधिकार है। यह कार्य तो ऐसा है जिसका मजूरी देकर सफाई करनेवाले लोगो द्वारा कराया जाना कठिन ही है। स्वयसेवक उसे सुविधानुसार कर सकते है इसीलिए मैने उनका ध्यान उस ओर खीचा है। किन्तु यदि विद्यार्थीगण अपनी इच्छानुसार और अपनी रुचिका कोई दूसरा काम खोजे तो वह भी पर्याप्त होगा। मुख्य बात तो सामूहिक रूपसे जनसेवाका कोई रचनात्मक काम करना ही है। काग्रेसके कार्यक्रममे सम्मिलित खादी आदिके कामकी तरफ तो मैने ध्यान आकर्षित किया ही है और मेरी दृष्टिमे ये सभी काम अच्छे और आवश्यक है। मै आशा करता हूँ कि विद्यार्थियोको अनायास ही जो सुअवसर प्राप्त हुआ है उसे वे हाथसे जाने नही देगे। कहा जा सकता है कि विद्यार्थियोने

१. देखिए "टिप्पणियाँ" का उपशीर्षक "अहमदाबादकी गन्दगी", ३-२-१९२९।
२. गुजरात कालेजके प्राचार्य।

अपनी शक्तिका जो रूप देखा है, उसे सगठित किया जाये तभी वह शक्ति राष्ट्रके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ३-२-१९२९

५१०. टिप्पणियाँ

दालमें काला

वढवानसे एक गृहस्थ लिखते हैं :[1]

यह मान लेना कि मै वढवान राज्य या वहाँके नेताओको समझा सकता हूँ, लिखनेवालेका भोलापन जाहिर करता है। जिन्होने उल्लिखित प्रतिबन्ध लगाया है मेरी टीका उनकी नजरोसे गुजरेगी या नही, मै तो सो भी नही जानता। किन्तु यह लेख उनके हाथ पडेगा, इस आशासे मै इतना तो अवश्य कहूँगा कि इस शुद्धिके युगमे जिन्हे हमने अस्पृश्य माना है, उक्त स्तम्भमे उनके प्रति अकारण ही अन्याय किया गया है। ढेढ, भगी, चमार हमारे ही तो भाईबहन है। वे हमारे अपने ही तो अग है। उनकी अवगणना करनेमे हमारी अपनी ही अवगणना है। उन्हे अपनेसे अलग मानकर हम ससारको अपनी ही निन्दा करनेके लिए आमन्त्रित करते है। यदि वढवानकी प्रजा जागृत है तो उसे इस वातका विरोध करना चाहिए। अगर उसके विरोधका ध्यान न किया जाये तो ऐसा भेदभाव रखनेवाली नगरपालिकाका वहिष्कार कर दिया जाना चाहिए। नागरिक ऐसा करे या न करे, अस्पृश्य भाई-बहनोको तो मेरी यही सलाह है कि वे 'स्पृश्य' प्रतिनिधि चुननेका अपराध कभी न करे।

अहमदावादकी गन्दगी

डा० हरिप्रसाद द्वारा प्रेपित 'अहमदावादकी गन्दगी'के वारेमे एक नागरिक निम्नलिखित लिखते हैं।[2]

सभी नागरिकोको फिर चाहे वे स्त्री हो, या पुरुष, इस पत्रको जरूर पढना चाहिए। इसमे कोई नई बात नही है। जानी हुई वात नई रीतिसे भी नही वताई गई है। फिर भी यह पत्र जानी हुई बातकी ओर ध्यान खीचता है। अहमदावादकी गन्दगीपर सफाई विभाग और नागरिकोको शर्म आनी चाहिए। इसलिए उसकी

१. पत्र यहाँ नही दिया जा रहा है। इसके अनुसार वढवानमें चुनाव द्वारा नगरपालिकाका संचालन प्रजाको सौंपनेका निर्णय किया गया था। इस प्रस्तावसे सम्बन्धित एक मुद्दा यह था कि अस्पृश्य एक 'स्पृश्य' प्रतिनिधिका चुनाव करें।

२. यहाँ नहीं दिया जा रहा है। लेखकने अहमदावादकी गन्दगी और उसे दूर करनेके अपने प्रयत्नोंका वर्णन किया था। उनका सुझाव था कि प्राथमिक पाठशालाओंके बच्चोंको सफाईका प्रशिक्षण दिया जाये।

ओर जितना ध्यान खीचा जाये, उतना कम ही होगा। यदि हम अपना आँगन ही साफ नही रख सकते, तो फिर हम पूरे भारतको साफ रखनेमे मदद कैसे कर सकेंगे। हम यदि अपने ही आँगनमे दुर्गन्ध सहेजे रहे तो सम्भव है कि हम जो स्वराज्य प्राप्त करेंगे वह भी दुर्गन्ध-युक्त ही होगा। इस कारण सफाई विभागको और नागरिकोको अहमदाबादकी गन्दगी दूर करनेका उपाय सोचना चाहिए। यह सम्भव है कि गन्दगीको देखते चले आनेके कारण हम उसके अभ्यस्त हो गये है और सम्भव है इस कारण बहुत-से लोग उसे सहन कर लेते है। किन्तु इस शुद्धिके युगमे हमारा ऐसी निद्रामे पडा रहना तो शर्मकी बात होगी। अहमदाबादके धनी नागरिकोको यह समझ लेना चाहिए कि गन्दगी बनाये रखनेसे आर्थिक हानि भी है। गन्दगीसे बीमारी बढती है और बीमारीसे लोक-शक्तिका नाश होता है। एक जड इजन रुक जाता है तो हम उससे होनेवाले नुकसानका हिसाब करने बैठ जाते है। मनुष्य तो जिन्दा इजन है। उसके निश्चेष्ट हो जानेसे दुहरा नुकसान होता है। बीमारीके कारण उसका कामकाज बन्द हो जाता है, यह एक नुकसान है, और फिर दवादारूमे उसका पैसा जाता है यह दूसरा नुकसान है। एक व्यक्तिके पैसेकी हानि भी अन्तत. सारी प्रजाके पैसेकी हानि समझी जानी चाहिए। उपर्युक्त पत्रमे विद्यार्थियोको शालाओमे आरोग्यके विषयमे शिक्षा देनेकी जो सूचना है वह अपनाने योग्य है। यदि अहमदाबादमे उपयुक्त आयुके सभी विद्यार्थियोको गन्दगी दूर करनेके कामके लिए आमन्त्रित किया जाये और उनकी टुकडियाँ बनाकर शिक्षक हाथमे झाड़ू और डोल लेकर निकल पडे तो अहमदाबादका रूप थोड़े ही समयमे बदला जा सकता है और इससे विद्यार्थियोको भी अनायास ही सच्ची और व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हो सकती है।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ३-२-१९२९

५११. एक युवककी समस्या

एक पाटीदार युवक लिखता है :[1]

ऐसा सकट बहुत-से युवकोके सामने आया दिखाई देता है। बाईस वर्षका जवान तो शास्त्रोके अनुसार माता-पिताके लिए मित्र-समान माना जा सकता है। उसके ऊपर बलात्कार नही हो सकता। किन्तु आजकल माता-पिता मानते हैं कि चाहे पुत्र कितनी बडी उम्रका हो गया हो वह उनके विचारके अनुसार चलनेके लिए बद्ध है। विशेषतया विवाहादि कामोंके सम्बन्धमे। और यदि अधिकाश माता-पिता पुत्रके लिए ऐसी मान्यता रखते हो तो कन्याओका तो कहना ही क्या? ऐसे कठिन प्रसगमे तो मुझे लगता है कि ठीक आयु प्राप्त करनेपर लडको या लडकियोका यही कर्त्तव्य है कि वे अपनी अन्तरात्माके कहे अनुसार चले। ऐसा करनेका उन्हे अधिकार तो है ही। माता-पिता क्लेश करेगे, इससे डर जानेकी कोई बात नही है। मैंने अनुभवसे यह देखा है कि जहाँ पुत्र या कन्या न्यायके मार्गपर हो और अपने निर्णयके विषयमे पूर्णतया दृढ रहे वहाँ क्लेश नही होता अथवा हो भी तो कमसे-कम होता है। अपनी सन्तानके निश्चयको जब माँ-बाप समझ जाते है तब शान्त होकर बैठ जाते है। क्लेशके पीछे अपनी इच्छा मनवानेकी आशा हमेशा छिपी रहती है। यह आशा निर्मूल हो जानेपर क्लेश करनेका कोई आधार ही नही रह जाता। इसलिए प्रस्तुत पत्रके लेखक घरमे चाहे जितना क्लेश हो तो भी वह एक बच्चीके साथ विवाह करनेका पाप न करे, साटा करनेके बुरे रिवाजको न माने, उपजातिसे बाहर विवाह करनेमे पुण्य समझे और यह विश्वास रखें कि 'नवजीवन' मे मैंने विधवा-विवाहके बारेमे जो मर्यादाएँ बताई थी उनको मानते हुए विवाह करना परोपकार होगा। इस पाटीदार युवकको ठीक शिक्षा प्राप्त हुई है। उसमे अच्छा-बुरा सोचनेकी शक्ति है। ऐसे युवकके लिए जैसा ऊपर बताया है वैसे सकटमे से निकल जानेमे जरा भी सकोच नही करना चाहिए।

[गुजरातीसे]

नवजीवन, ३-२-१९२९

१. यहाँ नहीं दिया जा रहा है। इस २२ वर्षीय युवकने लिखा था कि 'साटा' की प्रथा माने बिना उसका विवाह नही हो पा रहा है। बाल-विवाहका प्रचलन होनेके कारण दस सालकी लडकीसे उसका विवाह हो सकता है। माता-पिता दूसरी जातिमें या विधवासे विवाहकी बात नहीं मानते इसलिए उसे क्या करना चाहिए।

५१२. पत्र : कुसुम देसाईको

कराची
रविवार, ३ फरवरी, १९२९

चि० कुसुम,

स्त्री-विभागमे सफाई अधिक रहनी चाहिए। सब बहने मिलकर कामका बँटवारा कर ले। अन्दरके चौकमे बहुत पानी फैलता है, यह बन्द होना चाहिए। अब बाहर नहानेकी दो कोठरियाँ हो गई है तो सबका अधिकतर उन्हीमे जाना ठीक रहेगा। यशोदाबहन[1] जिस कोठरीमे रहती है, वह भी साफ रहनी चाहिए। पानीका बन्दोबस्त कर लेना। आखिरी दिनोकी कमजोरी मुझे खटकती है। उसे मै समझ नही सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १७७५)की फोटो-नकलसे।

५१३. पत्र : छगनलाल जोशीको

रविवार [३ फरवरी, १९२९][2]

चि० छगनलाल

तुम्हे एक पोस्टकार्ड मारवाड़ जक्शनसे भेजा था वह मिला होगा।

देवदाससे प्राप्त तारके अनुसार रसिकके बचनेकी आशा कम ही है। हम जिस ज्ञानको रोज तोतेकी तरह रटते रहते है, उसपर ऐसे समय ही अमल करना चाहिए।

रमणीकलाल सिद्धपुर जाकर, आसपासके गाँवोका निरीक्षण करे। वहाँकी बहनोकी हालत जाचे। उसका कहना है कि यह दो या तीन दिनका काम है। सामान्यतया जो दर हम देते है वही इन बहनोको दे। उन्हे पीजनेका काम सीखनेको तैयार होना चाहिए। वहाँ छोटूभाई है जो इस कामको लेनेके लिए तैयार है। मुझे नही लगता कि इससे कुछ परिणाम निकलेगा। परन्तु हमारा पडताल कर लेना ही ठीक होगा।

१. अम्बालाके एक खादी-कार्यकर्ता सूरजभानकी पत्नी।
२. देखिए "पत्र : छगनलाल जोशीको", २-२-१९२९।

चौकी और आफिसके पास किसीके सोनेका प्रबन्ध किया ही जाना चाहिए। इस बारेमें देखना। रसोईका सारा काम सीधा-सरल हो जाना चाहिए। शाक-सब्जी पर ध्यान देना और घीके बारेमें भी देखना।[1]

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने

५१४. पत्र : प्रभावतीको

रविवार [३ फरवरी, १९२९][2]

चि० प्रभावती

तुमारे खूब दृढ बनना है और वीरता प्राप्त करनी है। स्वाश्रयी बननेकी पूरी कोशीश करो।

रसिकके बारेमें सब छगनभाईसे जानो। अब बीमार नहिं होना है।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३१८की फोटो-नकलसे।

५१५. भाषण : कराची नगरपालिकाके मानपत्रके उत्तरमें

३ फरवरी, १९२९

गांधीजीने मानपत्रका[3] उत्तर हिन्दीमें देते हुए नगरपालिकाको उसके स्नेह और हार्दिकता-भरे मानपत्रके लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने उन पारसी महिलाओंको भी धन्यवाद दिया जिन्होंने खादीकी सुन्दर माला और गुलदस्ते भेंटके लिए तैयार किये थे। उन्होंने कहा कि मैं जहाँ-जहाँ भी गया हूँ वहाँके पारसी लोगोंसे मुझे सदा ही बड़ा स्नेह मिला है। इसलिए इन प्रेमपूर्ण भेंटोंको पाते हुए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ है।

गांधीजीने नगरपालिकाके प्रशासकोंसे कहा कि अध्यक्षके पदपर श्री जमशेद मेहताका आसीन होना अपने-आपमें नगरपालिकाके काममें ठीक कार्य-क्षमता और

१. आशय गायके घीका प्रबन्ध करनेसे है।
२. रसिककी बीमारीके उल्लेखसे।
३. मानपत्र कराची नगरपालिकाके अध्यक्ष, जमशेद मेहताने पढ़ा था।

नीतिमत्ताकी पक्की गारंटी है। उन्होंने इस बातपर खुशी प्रकट की कि नगरपालिकाने जनताके लिए मताधिकार पानेकी शर्तें काफी नरम रखी हैं, परन्तु साथ ही उन्होंने नगरपालिकाके सदस्यों द्वारा व्यक्त की गई इस आशाको फलीभूत बनानेकी बात भी कही कि वह दिन ज्यादा दूर नहीं जब बालिग मताधिकार दे दिया जायेगा। क्योंकि सभी जगह अब इस बातको अधिकाधिक मान्यता मिलती जा रही है कि वित्तीय हैसियत की शर्त कितनी ही नरम क्यों न हो वह एक ऐसी उपेक्षापूर्ण, अपर्याप्त और अस्थायी व्यवस्था तो है ही जो संसारके अनेक नागरिकोंको नगर पालिकाके लिए अपने प्रतिनिधि चुनने और उनके जरिए नगरपालिकाका प्रशासन चलानेके निर्विवाद अधिकारसे वंचित किये रहती है। उन्होंने इस बातपर प्रसन्नता प्रकट की कि नगरपालिका नागरिकोंकी बुनियादी जरूरतोंका ध्यान रखती है।

नगरमें शुद्ध दूध सुलभ करानेके लिए की जानेवाली कोशिशोंका जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उनको पूरा भरोसा है कि कराची नगरपालिकाके पास एक समुचित डेरी-व्यवस्थाको शुरू करने लायक योग्यता और धन, दोनों ही मौजूद हैं। भारतीय शहरोंमें, खासकर वृद्धों और बच्चों, दोनों ही के लिए शुद्ध दूध और शुद्ध घीका अभाव रोज ही महसूस किया जाता है। अगर कराची इस दिशामें भारतकी सभी नगरपालिकाओंका नेतृत्व कर दिखाये तो वह सचमुच बड़ी खुशीकी चीज होगी। शुद्ध दूध और शुद्ध घी जुटानेकी समुचित व्यवस्था न कर पाना किसी भी नगरके लिए शर्मकी बात समझी जानी चाहिए। उन्होंने नगरपालिकाके पूरी तरह सफल होनेकी कामना की।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ५-२-१९२९

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

डा० विधानचन्द्र रायका पत्र

शिलांग
२८ अक्तूबर, १९२८

प्रिय महात्माजी,

मैने कुछ महीने पहले आपको कांग्रेसके ४३ वे अधिवेशनके समय की जानेवाली प्रदर्शनीके सम्बन्धमे आपकी हिदायते जाननेके लिए पत्र लिखा था। मै मानता हूँ कि मुझे आपकी ओरसे ऐसी स्पष्ट हिदायते नही मिली जिनपर हम अमल कर सके, आपका पत्र अस्पष्ट था और उसकी भाषामे सतर्कता थी। कृपया अब (आशा है, अब भी समय है) आप मुझे हिदायते भेज दे। यदि आप मुझे ठीक-ठीक सूचित कर दे कि कलकत्ता कमेटीके कौनसे निर्णय है जिन्होने आपको सकोचमे डाल दिया है तो मै आपका बडा आभार मानूँगा। कलकत्तासे रवाना होनेके थोडे ही पहले श्री खण्डेलवालने मुझे बतलाया था कि आप कांग्रेस अधिवेशनके दिनोमे कलकत्ता आनेका निश्चय नही कर पाये है।

कलकत्ता कांग्रेस कमेटीने अबतक ये निर्णय लिये है (मै इन्हे याददाश्तके बल पर लिख रहा हूँ) -

१ विदेशी सूतसे बने सूती वस्त्र या किसी दूसरे देशमे बनी किसी वस्तुको प्रदर्शनीमे नही रखा जायेगा,

२ ऐसी वस्तुओके विज्ञापनोकी अनुमति नही दी जायेगी;

३. किसी भी तरहके ब्रिटिश मालको प्रदर्शनीमें रखनेकी अनुमति नही दी जायेगी;

४. ऐसे मालके विज्ञापनकी अनुमति नही दी जायेगी,

५. कुटीर उद्योगोके लिए उपयोगी (गैर-ब्रिटिश) छोटी-छोटी मशीने प्रदर्शित की जा सकेगी।

६ मिलके बने वस्त्रोको प्रदर्शनीमे रखनेकी अनुमति तभी दी जायेगी जब कमेटीको पक्का यकीन हो जाये कि वे भारतीय सूतके बने है।

कमेटीने ये निर्णय तो लिये है, लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि यदि हमे पता चल जाये कि इनमे से किसी भी निर्णयपर आपको आपत्ति है तो कमेटीका कोई भी सदस्य इनमे से किसी एक या अनेक शर्तोके पालनका आग्रह नही करेगा।

प्रदर्शनीके मैदानका एक काफी बडा भाग हमने खद्दरके वस्त्रोके लिए अलग रख छोड़ा है। और अब पण्डित मोतीलालजी लिखते हैं कि अ० भा० च० संघने प्रदर्शनीमें भाग न लेनेका फैसला कर लिया है। यह बड़ा दुःखजनक निर्णय है। कांग्रेसका एक विनम्र पदाधिकारी होनेके नाते मेरा कर्त्तव्य हो जाता है कि मैं प्रदर्शनीमें सघके प्रतिनिधित्वको निश्चित तौरपर सम्भव बनाऊँ और अपनी कमेटीके आदेशोका भी पालन करूँ। कृपया मुझे इस दुविधाकी स्थितिमें न छोडें। कलकत्ता आनेके बारेमें अपने निर्णयको बदलनेकी कृपा कीजिए। हम आपके इन्कारको स्वीकार नही करेंगे। यदि जरूरत पड़ी तो मैं प्रदर्शनी ही बन्द करानेकी कोशिश करूँगा। कृपया लिखिए कि आपकी क्या इच्छा है; मैं उसपर अमल करनेमें कुछ उठा नही रखूंगा। अनुरोध इतना ही है कि कृपया आवश्यकतासे अधिक कठोर न बनें।

मैं दो दिन बाद कलकत्ता पहुँच रहा हूँ और बडी व्यग्रतासे आपके उत्तरकी राह देखूंगा; उसमें आप मुझे स्पष्ट हिदायतें दें। 'सेवा-सदन' ठीक चल रहा है। आशा है, कलकत्ता आनेपर आपको नये चिकित्सा-खण्डोका उद्घाटन करनेका समय मिलेगा। हम उसकी प्रतीक्षामें हैं।

हृदयसे आपका,
वि० च० राय

अंग्रेजी (एस० एन० १४८५२) की माइक्रोफिल्मसे।

परिशिष्ट २

शौकत अलीके पत्रके कुछ अंश

सुलतानी मैन्शन
डोंगरी, बम्बई
२३ अक्तूबर, १९२८

प्रिय महात्माजी,

आपका २४ सितम्बरका पत्र मुझे ठीक वक्तपर मिल गया था। . . . समाचारपत्रोंके लेखोंसे मुझे पता चला है कि लोगोंको मेरे खिलाफ भड़कानेके लिए आपका नाम इस्तेमाल किया जा रहा है। . . . कोहाट सम्बन्धी हमारे मतभेदों और कुछ अन्य बातोंका भी उल्लेख किया जा रहा है। इसलिए मुझे यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ कि महादेवने शिमलामें भी उसकी कुछ चर्चा सुनी। मैंने आपके बारेमें जो भी कुछ कहा था वह मैं आपको बतला रहा हूँ। और मैं आपको आश्वस्त कर दूँ कि घटनाका जो ब्योरा मैं आपको लिख रहा हूँ उसकी बिना सिर्फ मेरी अपनी याददाश्त नहीं है; शुएबको भी यह बात काफी अच्छी तरह याद है; और डा० अन्सारी, यहाँतक कि पण्डित मोतीलाल भी, मेरे इन तथ्योंको गलत नहीं कह सकते। . . . अम्बालाल साराभाईके यहाँ पण्डितजीके साथ सचमुच मेरी कसकर झड़प हो गई थी और नौबत जैसे हाथापाई तक पहुँचनेवाली थी, क्योंकि हम "अपरिवर्तनवादियों" को जब वे मेरे सामने ही जी-भर कर बुरा-भला कहने लगे तो मेरा खून खौलने लगा था। . . . आपने उनको माफ कर दिया है और आप उनकी ज्यादतियोंको शायद भूल भी चुके होंगे; लेकिन हममें से अधिकांश तो ऐसा नहीं कर सकते। . . . आपके क्षेत्र अनेक हैं, इसलिए आप तो सक्रिय राजनीतिसे अवकाश ग्रहण भी कर सकते हैं, लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हम ऐसा नहीं कर सकते; और मुझे तो अपने मुसलमान भाइयोंको अंग्रेजोंके फन्देमें पड़नेसे बचाना ही पड़ेगा, नहीं तो वे बिलकुल ही खतम हो जायेंगे और उससे इस्लामको बहुत नुकसान पहुँचेगा; फिर मैंने अपना समूचा जीवन इस्लामकी सेवाके लिए अर्पित कर दिया है। . . . श्रीनिवास आयंगारको मैंने हमेशा पसन्द किया है। वे भावुक व्यक्ति हैं; किन्तु उनके मनमें दुराव-छिपाव नहीं रहता; यह भी सम्भव है कि वे बातपर अड़े न रहें, पर वे सच्चे और अच्छे स्वभावके व्यक्ति हैं। मैं नहीं कह सकता कि मद्रासके प्रस्तावका विरोध पण्डितजीने केवल इसलिए किया या नहीं कि प्रस्ताव श्री आयंगारकी ओरसे आया था। . . . सर्वदलीय परिषदके साथ मेरा सम्पर्क पहली बार पिछले वर्ष मईके महीनेमें बम्बईमें ही हुआ था और आप जानते ही हैं कि आपकी मौजूदगीमें ही मोतीलालजी और मेरे बीच कैसा तीव्र मतभेद खड़ा हो गया था। . . . मुसलमानोंके लिए 'स्थान' सुरक्षित करनेके प्रश्नके विरोधमें उन्होंने बड़ी दृढ़तासे

अपने विचार व्यक्त किये थे और इस विषयमे हमारे विचार भी उतने ही दृढ थे। आप मोतीलालजीके विचारोसे सहमत थे और आप चाहते थे कि बहुमतवाले और अल्पमतवाले दोनो ही तरहके प्रान्तोमे स्थान सुरक्षित रखनेकी कोई गुजाइश ही न रखी जाये। . . . काग्रेस कार्य-समितिने इस प्रश्नको लेकर लगातार तीन दिनोतक बहस की थी और बहुमत इस पक्षमे नही था कि मद्रासवाले प्रस्तावपर फिरसे विचार किया जाये। इस कारण यह एक बडी आशका पैदा हो गई थी कि कही सर्वदलीय परिषद ठप ही न हो जाये और उस गतिरोधको दूर करनेके लिए ही आपने मद्रासके प्रस्तावकी भावनाके अनुरूप सविधानका एक मसविदा तैयार करनेके लिए इस समितिके गठनका सुझाव रखा था। पण्डितजीने आपसे समितिके सदस्योके नाम भी माँगे थे और आपने ये चार नाम रखे थे — डा० अन्सारी, पण्डित मोतीलाल नेहरू, पण्डित जवाहरलाल नेहरू और श्री अणे। डा० अन्सारीने इसपर कहा था कि मैं निजी तौर पर हमेशासे स्थान सुरक्षित रखनेके विरोधमे तो रहा हूँ, पर इस बातपर आम मुसलमान जनता मुझसे सहमत नही है। मुझे इस समितिमे काम करनेके लिए समय निकालना मुमकिन नही दिख रहा है। . . . श्रीमती नायडू और मैंने डा० अन्सारीके स्थानपर शुएबका नाम समितिकी सदस्यताके लिए सुझाया था, लेकिन आपने कहा था: "नही, शुएब नही।" उसपर मुझे थोडा ताज्जुब भी हुआ था और मैंने पूछा था. "क्यो साहब, शुएब क्यो नही? मुसलमानोका दृष्टिकोण रखनेवाला कोई तो होना चाहिए, और शुएब उसके लिए सबसे बढिया रहेगे।" आपने उत्तर दिया था कि वह काम नही करेगा और समय नही दे सकेगा, या ऐसा ही कुछ आपने कहा था। फिर मेरे यह आश्वासन देनेपर कि वह काम करेगा, आपने अपना ऐतराज वापस ले लिया था और तब शुएबका नाम और मेरा ख्याल है कि सुभाष बोसका नाम भी जोड दिया गया था। मैंने लखनऊ सम्मेलनसे लौटनेके बाद ४ सितम्बरको दिल्लीमें जो बयान जारी किया था, उसमे इसी घटनाका उल्लेख किया था। आपने २४ तारीखके अपने पत्रमे इस घटनाका जिक्र करते हुए खुद लिखा है "मुझे तो याद तक नही कि मैंने उनके और दूसरे लोगोके बारेमें क्या कहा था।" मैंने अपने बयानमें यह बिलकुल भी नही कहा कि आपने शुएबको शामिल न होने देनेकी हर तरहसे कोशिश की थी। मैंने तो उस वक्त जो हुआ, उसकी एक सच्ची तस्वीर खीच दी थी और कहा था कि आपने शुएबके नामके प्रस्तावपर आपत्ति की थी, पर बादमे यह कहते हुए उसे स्वीकार कर लिया था कि शुएब अगर काम करनेका वायदा करता है तो मुझे कोई और ऐतराज नही। आपके बारेमे मैंने बस इतना कहा था। तब मैंने यह जरूर कहा था और अब भी कहता हूँ कि आपने समितिकी सदस्यताके लिए पहले जो चार नाम — अन्सारी, मोतीलाल, जवाहरलाल और अणे — सुझाये थे, वे सभी लोग ऐसे थे जो मुसलमानोके लिए स्थान सुरक्षित रखनेके पक्षमे नही थे, परन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सर्वदलीय परिषदकी खुली सभामे समितिके सदस्योमे कुछ और नाम भी जोड दिये गये थे, सर अली इमाम, सर तेज बहादुर सप्रू, श्री जयकर, श्री जोशी, सरदार मगलसिंहके नाम। चूँकि ये

सभी मुसलमानोके लिए स्थान सुरक्षित रखनेके पक्षमे नही थे, इसलिए सिर्फ शुएब ही एक ऐसे रह गये थे, या शायद सुभाष बोस भी, जो मुसलमानोका दृष्टिकोण पेश करते।

मुझे लगता है कि इस सिलसिलेमे जो सब चल रहा है उससे आपका अधिक सम्पर्क नही रहा है। आपने डा० अन्सारीके नाम अंग्रेजीमें लिखा मेरा पत्र तो देखा, लेकिन आपने डा० अन्सारीका वह बयान नही देखा जो उन्होने 'हमदर्द' मे प्रकाशित ४ सितम्बरका मेरा बयान पढनेके बाद जारी किया था, और जिसके उत्तरमे मैंने वह पत्र लिखा था। जाहिर है, आप नही चाहेगे कि दो सगे भाइयो जैसे हम दोनो लोग — डा० अन्सारी और मै — किसी बातको लेकर आपसमे उलझें। . . . दर-असल मेरा मतभेद अन्सारीसे नही, बल्कि पण्डित मोतीलालसे है, जो यह जानते हुए भी मेरी बातपर कान नही दे रहे थे कि मै लाखो-लाख मुसलमानोका नजरिया पेश कर रहा हूँ, उनके दिलकी बात रख रहा हूँ। . . . संयुक्त निर्वाचक मण्डलकी बात उनसे मनवाना एक बडा मुश्किल काम था — जो हमें पूरा करना था, और जिसे मनवा लेना मेरी समझमें अपने आपमे एक बहुत बडी बात हुई। . . .

मुझे अफसोस है कि यह पत्र लिखना पडा . . . अन्सारी एक शरीफ और ईमानदार आदमी हैं और मुझे उनसे प्यार है, लेकिन उनमें मजबूती नही है।

. . . मेरे किसी कामसे आज आप नाराज हो जाये . . . या आपके किसी कामपर मुझे गुस्सा आ जाये — यह कोई अहमियत नही रखता। हम दोनोने कधे-से-कंधे सटाकर संघर्ष किया है और संघर्षमे हमने साथ रहते हुए जो जख्म खाये हैं वे कब्रतक हमारे साथ रहेगे। वे ही हमे जोडनेवाली कडियाँ हैं लेकिन मेरा आपसे अनुरोध है कि मैंने जो आगाही दी है, आप उसको अनदेखा न करे। हम हालातको किसी भी तरह यों ही नही छोड सकते, क्योकि उसमे एक भारी खतरा है और उस रास्ते जाने देनेका निहायत खतरनाक नतीजा गृह-युद्ध तक हो सकता है, जिसका मतलब है भाई-भाई एक-दूसरेके खूनमे अपने हाथ रंगने लगें। अपने तरीकेसे मुझे उसे रोकनेकी कोशिशमे लगे रहना चाहिए; मेरा अनुरोध है कि आप भी अपने तरीकेसे इसे रोकनेकी कोशिश करें। . . .

आपका गहरे दु:खका साथी,
शौकत अली

अंग्रेजी (एस० एन० १३७१०) की फोटो-नकलसे।

सामग्रीके साधन-सूत्र

गांधी स्मारक संग्रहालय, नई दिल्ली : गांधी साहित्य और सम्बन्धित कागजात-का केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय। देखिए खण्ड १ (द्वितीय संस्करण), पृष्ठ ३५५।

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली।

साबरमती संग्रहालय : पुस्तकालय तथा संग्रहालय जिसमें गांधीजीके दक्षिण आफ्रिकी काल तथा सन् १९३३ तकके भारतीय कालसे सम्बन्धित कागजात रखे हैं। देखिए खण्ड १ (द्वितीय संस्करण), पृष्ठ ३५५।

'अमृत बाजार पत्रिका' : कलकत्तासे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'आज'. वाराणसीसे प्रकाशित हिन्दी दैनिक।

'इंग्लिशमैन'. कलकत्तासे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'ट्रिब्यून' : अम्बालासे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'नवजीवन' : (१९१९-१९३२) : गांधीजी द्वारा सम्पादित और अहमदाबादसे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक। १९ अगस्त, १९२१ से हिन्दीमें भी प्रकाशित।

'प्रजाबन्धु' : अहमदाबादसे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

'फॉरवर्ड' : कलकत्तासे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'यंग इंडिया' (१९१८-१९३२) : गांधीजी द्वारा सम्पादित और अहमदाबादसे मोहनलाल मगनलाल भट्ट द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी साप्ताहिक।

'साबरमती' : खण्ड ७, अंक ३; गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित विद्यार्थियोंकी त्रैमासिक पत्रिका।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' : नई दिल्लीसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' : मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ४३ वें अधिवेशन, कलकत्ताकी रिपोर्ट।

'ए बंच ऑफ ओल्ड लैटर्स' (अंग्रेजी). जवाहरलाल नेहरू, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई १९५८।

'बापुना पत्रो : आश्रमनी बहेनोने' (गुजराती) · सम्पादक — काका कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४९।

'बापुना पत्रो : ग० स्व० गंगाबहनने' (गुजराती) : सम्पादक — काका कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुना पत्रो · श्री छगनलाल जोशीने' (गुजराती) : सम्पादक — छगनलाल जोशी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६२।

'बापुना पत्रो : श्री नारणदास गांधीने' (गुजराती) : सम्पादक — नारणदास गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६४।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती), संग्रहकर्त्ता — मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१ नवम्बर १९२८ से ३ फरवरी १९२९ तक)

१९२८

१ नवम्बर: 'सिविल ऐंड मिलिट्री गजट'के विशेष प्रतिनिधिसे भेंट।

४ नवम्बर: 'नवजीवन'में "सत्याग्रह आश्रम" शीर्षक लेखमें आश्रमका नाम 'उद्योग मन्दिर' बदल देनेके बाद वहाँ किये गये फेरफारोंकी चर्चा की।

१७ नवम्बर: लाला लाजपतरायका देहान्त। इस सम्बन्धमें गांधीजीने एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिसे बात की।

१८ नवम्बर: अहमदाबादमें लाला लाजपतरायकी मृत्युपर हुई शोक-सभामें भाषण दिया।

२१ नवम्बर: श्रमिक संघकी सदस्यता शुल्कके सम्बन्धमें निर्णय।

२३ नवम्बर: अहमदाबादसे वर्धाके लिए प्रस्थान।

२४ नवम्बर: वर्धा पहुँचे। २० दिसम्बरतक आश्रममें ठहरे।

२६ नवम्बर: लाजपतराय स्मारक कोषके लिए अपील जारी की गई। इसपर अन्य लोगोंके साथ गांधीजीके हस्ताक्षर भी थे।

२९ नवम्बर: लाजपतरायकी मृत्युपर मनाये जानेवाले राष्ट्रीय शोक दिवसके अवसरपर आश्रमवासियोंके समक्ष भाषण दिया।

२० दिसम्बर: कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशनमें भाग लेनेके लिए वर्धासे रवाना हुए। नागपुरमें खादी कार्यकर्त्ताओंसे भेंट की।

२१ दिसम्बर: सम्बलपुर पहुँचे।

२२ दिसम्बर: सम्बलपुरमें सवेरे एक आम सभामें भाषण, सायंकाल महिलाओंकी सभामें भाषण; कलकत्ताके लिए रवाना हुए।
कलकत्तामें सर्वदलीय अधिवेशन आरम्भ हुआ।

२३ दिसम्बर: प्रातः कलकत्ता पहुँचे।
पंजाबसे आये शिष्टमण्डलसे भेंट की।

२६ दिसम्बर: विषय समितिकी बैठकमें नेहरू रिपोर्टपर एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

२७ दिसम्बर: सांडर्सकी हत्यापर 'यंग इंडिया'में एक लेख लिखा।

२८ दिसम्बर: विषय समितिकी बैठकमें नेहरू रिपोर्टपर समझौतेका प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

२९ दिसम्बर: कलकत्तामें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन आरम्भ हुआ।
गांधीजीने विषय समितिके समक्ष रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
सायंकाल राष्ट्रभाषा सम्मेलनकी अध्यक्षता की।
औपनिवेशिक स्वराज्य बनाम स्वतन्त्रताकी चर्चा करते हुए "नाम महत्त्वपूर्ण नहीं है" नामक लेख 'यंग इंडिया'के लिए लिखा।

३१ दिसम्बर : कांग्रेसके खुले अधिवेशनमें नेहरू रिपोर्टपर प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

१९२९

१ जनवरी : कलकत्तेमें खादी भण्डारका उद्घाटन किया।
कांग्रेसके खुले अधिवेशनमें रचनात्मक कार्योंसे सम्बन्धित प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन समाप्त हुआ।
सर्वदलीय अधिवेशनमें साम्प्रदायिक समस्याओंपर समझौतेके बारेमें एक प्रस्ताव रखा। सर्वदलीय अधिवेशन अनिश्चित कालके लिए स्थगित कर दिया गया।

२ जनवरी : 'इंग्लिशमैन' और 'डेली टेलीग्राफ' के प्रतिनिधियोंसे भेंट की। नेहरू रिपोर्ट सम्बन्धी कांग्रेस प्रस्तावपर अपने विचारोंको स्पष्ट किया।
चितरंजन सेवा सदनमें नये खण्डका उद्घाटन किया।
सोदपुरके खादी प्रतिष्ठानको देखने गये।
विश्वकोष भवन गये और नागेन्द्रनाथ बसुसे भेंट की।

३ जनवरी : दिल्लीके रास्ते अहमदाबाद जानेके लिए रातको कलकत्तासे रवाना हुए।
अहमदाबादके गुजरात कालेजमें छात्रोंकी हड़ताल आरम्भ हुई।

४ जनवरी : गांधीजी थोड़े समयके लिए दिल्ली रुके और डा० जाकिर हुसैनसे भेंट की।

५ जनवरी : रात्रिको अहमदाबाद पहुँचे।

९ जनवरी : गुजरात जिनिंग मिलके झगड़ेसे सम्बन्धित पंच-मण्डलकी बैठकमें भाग लिया।

१० जनवरी : युवक सप्ताह समारोहमें भाषण दिया।

११ जनवरी : गुजरात विद्यापीठके सातवें दीक्षान्त समारोहकी अध्यक्षता की; जी० भ० कृपलानीको खादीकी थैली भेंट करनेके लिए आयोजित समारोहमें भाषण दिया।

१२ जनवरी : विद्यापीठके स्नातकोंके तीसरे सम्मेलनको सन्देश भेजा।

१४ जनवरी : पंच-मण्डलकी बैठकमें भाग लिया।

१७ जनवरी : 'तब और अब' शीर्षकसे 'यंग इंडिया' में लिखे लेखमें कांग्रेसके वर्तमान और १९२०-२१ के कार्यक्रमोंकी तुलना की।

१९ जनवरी : 'नवजीवन' के लिए लिखा गांधीजीका लेख 'प्रान जाहिं बरु बचनु न जाई' गुजरात कालेजके विद्यार्थियोंकी बैठकमें पढ़ा गया।

२४ जनवरी : "सविनय अवज्ञाका कर्त्तव्य" और "खादीके जरिए विदेशी वस्त्रके बहिष्कारकी योजना" सम्बन्धी दो लेख 'यंग इंडिया' में प्रकाशित हुए।

३० जनवरी : गुजरात कालेजके विद्यार्थियोंके समक्ष भाषण दिया।

३१ जनवरी : 'यंग इंडिया' में अपने लेख "क्षमा प्रार्थना" द्वारा अपनी यूरोप यात्रा रद करनेकी घोषणा की।

१ फरवरी : अगले वर्ष अहिंसा और असहयोग आन्दोलन चलानेके लिए कांग्रेसका पुनर्गठन करनेके हेतु जवाहरलाल नेहरूको लिखा।

२ फरवरी : सिन्धके दौरेके लिए रवाना हुए।

३ फरवरी : दोपहर बाद कराची पहुँचे। नगरपालिका द्वारा दिये मानपत्रके उत्तरमें आम सभामें भाषण दिया।

शीर्षक-सांकेतिका

विविध

सांकेतिका

आ

इ

ई

उ

ए

ऐ

औ

क

ख

घ

च

त

थ

द

प

भ

म

य

स